वंश भास्कर

(द्वितीय खंण्ड)

[बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित]

मूल लेखक :
सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक
स्वर्गीय पंडित रामकर्ण आसोपा
भूतपूर्व प्राध्यापक
इतिहास विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक
बाफना बुक डिपो
चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौडा रास्ता, जयपुर-३

॥ श्री ॥

तृतीयराशिप्रारम्भः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ तृतीय ३ राशिप्रारम्भस्तत्र चण्डासिमधिकृत्य तन्मुख्याऽन्ववायविस्तरवर्णनम् ॥

शुद्धशौरसेनीभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

इध कइवय्यं पिअरं चण्डीआणं णमं परणाणं ॥
करिदूण जास थवणं भोदि जडो पण्डिदो पहयराओ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डवदीसो जं गुरुं हड्डवदीवि कधेदि ॥
सो तत्तंसिपवोहिरो चारणणाधो जेदि ॥ २ ॥

॥ शुद्धमागधीभाषा ॥

गश्चिय णवरि चउब्भुये१इन्दपस्तणयलम्मि ॥
अप्पुणोव्व कयवं पहू खन्धावालं तम्मि ॥ ३ ॥

जिनकी स्तुति से मूर्ख भी उत्तम पंडित होजाय ऐसे परमज्ञानी, कवियों में श्रेष्ठ पिता चंडीदान को प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥ जिनको हाडोती के स्वामी हड्डपति रामसिंह भी गुरु कहते हैं वे "तत्त्वमसि" इस महावाक्य के जाननेवाले, चारणों में मुख्य चंडीदान सर्वोत्कर्ष करके वर्तमान हैं ॥ २ ॥ तदनन्तर चतुर्भुज(चहुवाण)ने दिल्ली नगर में जाकर अपनी राजधानी स्थापित करी ॥३॥

इह कविवर्यं पितरं चण्डीदानं नमामि परज्ञानम्। कृत्वा यस्य स्तवनं भवति जडः पण्डितः प्रभावराजः ॥१॥ हड्डवतीशो यं गुरुं हड्डपतिरपि कथयति ॥ स तत्त्वमसिप्रबोधशीलश्चारणनाथो जयति ॥२॥ गत्वाऽथ चतुर्भुज इन्द्रप्रस्थनगरे। स्वयमेव कृतवान् प्रभुः स्कन्धावारं तस्मिन् ॥३॥ एष कृतवान् निश्चितं कर्कोटकनागकन्यकावरणम् ॥ तमिममपि कथयाम्यहं तातपदोपान्तध्यानलेशात् ॥४॥

गीतिः ॥

एशे काही अबले कक्कोडअणाअकअकावलणं ॥
तामिमंवि कधेमि हगे ताहपदावंतधाणलेशाह ॥ ४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

इंद्रप्रस्थ[1] चहुवान१राजधानी निज रक्खिय ॥
सत्तहि[2]७प्रकृति सम्हारि महत[3] बिरचन पर[4]पक्खिय ॥
साधन तप सिव अर्थ गयो मिहिका[5] धरनीधर[6] ॥
असन[7] १पान२तजि अधिप होय अविचल[8] ध्याये हर[9] ॥
धर[10] चरन इक्क१अंगुट्ठ[11] धरि बरस बीस२०व्रत निव्वह्यो[12] ॥
ध्रुव ढिग उपेंद्र[13] जिम सूलधर[14] है अपिहित[15] मंगहु कह्यो ॥५॥
पलन[16] खुल्लि परि पयन भंग[17] बंदे तब भूपति ॥
आक्खिय[18] इतरन इष्ट मंडहिं[19] न तजहिं मदीयं[20] मति१ ॥
सेवक्की प्रभुशक्ति[21] सवन दब्बहिं२करि सासन[22] ॥
सुच्छम[23] धरम स्वभाव सुपै जानौं३पटुता[24] सन ॥
अर्बुद अगेस[25] हरि१अप्प[26]२अज[27]३विरंचि मोहि बैठन दयो ॥
पुर इंद्रप्रस्थ रहि तहँ प्रथित[28] भुग्गें भुव सुप्रज[29] भयो ॥ ६ ॥
सु[30] सुनि अस्तु[31] कहि संभु नृपहिं पुनि कहिय पिक्खि नंत[32] ।

इसने कर्कोटक नागकन्या का वरण (विवाह) करना निश्चित किया, उसका भी पिता के चरणों के ध्यान लेश की कृपा से वर्णन करता हूं ॥४॥
१ दिल्ली नगर में २ राजा को आदि लेकर राज्य के सात अङ्गों को सात प्रकृति कहते हैं ३ नाश करने को ४ शत्रुओं का ५ हिमालय ६ पर्वत में ७ भोजन ८ चलायमान नहीं होकर ९ शिव को १० भूमि पर ११ अंगूठा १२ निवाहा १३ विष्णु १४ शिव १५ प्रत्यक्ष (खुले) होकर ॥५॥ १६ पलकों को खोल कर १७ महादेव को नमस्कार किया १८ कहा कि और कोई वांछा नहीं है १९ महादेव को २० मेरी बुद्धि २१ अमोघ आज्ञा को प्रभुशक्ति कहते हैं २२ आज्ञा २३ सूक्ष्म (बारीक) २४ चतुराई से २५ पर्वतराज २६ आप [शिव] २७ ब्रह्मा ने २८ प्रसिद्ध २९ श्रेष्ठ प्रजावाला अथवा श्रेष्ठ सन्तानवाला होकर ॥ ६ ॥ ३० सो ३१ ऐसा ही होओ ३२ नम्रता.

कार्द्रवेय कर्कोट[1] सुता सुमना मुहिँ सेवत ॥
कष्ट सहत कन्या सु इष्ट धव[2] चहत अयोनिज[3] ॥
ऐहैं तव ढिग अज्ज नारि ह्वैहैं पटु जोनिज२ ॥
अरु जोग[4] तोहि फुरिहै अतुल२सिद्धि३रु सेवधि[5]४नाग[6]५नव[7] ९॥
भक्तहिँ समप्पि इम वर अभय भये पिहित[8] भगवान भव[9] ॥७॥

॥ दोहा ॥

सुमनाकौं समुझाय सिव, पठइ सुपहु[10] समीप ॥
कांत[11] अयोनिज यह कह्यो, मामक[12] भक्त महीप ॥ ८ ॥
जो अंगज[13] प्रिय ज्वलन[14] को, विबुधन[15] व्यसन[16] विदार ॥
वपु चतुर्थ[17]४मम वन्हि है, काको तव सुकुमार[18] ॥ ९॥

षट्पदी ॥

सु[19] मम भक्त मम[20] भक्त सुतन मारक[21] मख[22] १ श्रुतिमय,
इहिँ आसापूरनि उमाहु तिहिँ हुव लखि सुतनय[24] ॥
सो नृप मोहि प्रसन्न करन आयउ तुषार[25] अग[26] ॥
तव आश्रम सन[27] कोस तीन ३ मन्नहु पूरब मग ॥
वर विहित रूच्य[28] जाय सु वरहु सुनि सुमना तपवेस[29] ताजि ॥
धव[30] पहँ सबेग निजरूप धारि जातभई पसुनाथ[31] जाजि ॥ १० ॥

दोहा

हर[32] निदेश लहि लखत हो, सुमना सरनि[33] नरेस ॥
कन्या रतनहि लखि कह्यो, कित आवत राकेस[34] ॥ ११ ॥

१कर्कोटक नामक सर्प की२पति ३ योनि से उत्पन्न नहीं हुआ होवै ऐसा ४ योगविद्या ५ धन ६ नव कुल के ७ सर्प ८ अन्तर्धान ९ महादेव १० श्रेष्ठ राजा के पास ११ पति १२ मेरा १३ अग्नि का प्यारा १४ पुत्र १५ देवताओं के १६ दुःख का विदारण करनेवाला १७ अग्नि मेरा चौथा शरीर है १८ तब वह कुमार किसका है अर्थात् मेरा ही है १९ सो २० चहुवाण राजा मेरा भक्त है २१ मेरे भक्त बाणासुर के पुत्रों को मारने वाला २२ यज्ञ २३ देवी २४ श्रेष्ठ पुत्रवाली हुई २५ हिमालय २६ पर्वत पर २७ से २८ वांछ [वर] वरने योग्य २९ तपस्विनी का ३० पति के पास ३१ शिव को पूजकर ३२ शिव की आज्ञा ३३ सुमना का मार्ग ३४ चन्द्रमा.

कोन समुद्र १ पवित्र किय, कोन कुमुद २ गुनगोर ॥
अरु सुभको सिसुमार अरि ३, कोन सुदिष्टि चकोर ४ ॥ १२॥
कर्कोटक १ सुमना कह्यो, उदधि १ अथाह उदार ॥
कुमुद २ इंद्रप्रस्थक प्रकृति २, भोगवती ३ सिसुमार ३ ॥१३॥
मम तप भक्तिप्रसन्न मृड, यह सूचन किय आज ॥
बनिहै तोर चकोर ४ बिधु, राज चतुर्भुजराज ४ ॥ १४ ॥
सु मम अग्नि ४ बपु सुतहुहै, अयोनिजहु तव इष्ट ॥
सो सुनि मैं लहकी लता, सुरतरु तव भुज सिष्ट ॥ १५ ॥
कथन इमहिं भूपहु कह्यो, ईस प्रसाधित एह ॥
धर्मसहायहि होहु धरि, नागसुता मम नेह ॥ १६ ॥
मुनि लच्छन नृप गोत्रके, वसत हुते जहँ वच्छ ॥
व्रती विरंचि पहिलैं नृपहि, उन पथ सद्धिय अच्छ ॥ १७ ॥

हरिगीतम्

आन्विक्षिकी १ तिमही त्रयी ३।२ वार्ता ३ रु नीति४पढायकैं,
चंगडासिकों मुनि वत्स पुनि सुमना दई परिनायकैं ॥
सब धर्म दोउन २ कों सुनाय बहोरि आश्रम रामके ॥

१कुमोदिनी [रात्रिविकाशी कमल]॥११॥हे गुनगौरि कौनसा शुभ शिशुमार चक्र है कि जिसमें तेरे जैसा चन्द्रमा उदय हुआ ३ श्रेष्ठ दृष्टि रूपी कौन सा तेरा चकोर है ॥ १२ ॥ ४ सुमना नामक स्त्री ने कहा कि कर्कोटक नाम क सर्प तो मेरे उत्पन्न होने का अथाह समुद्र है और इन्द्रप्रस्थ के राज्य की प्रकृति [राजा को आदि लेकर राज्य के सात अंग] रात्रि विकाशी कमल है ५ सर्पों की पुरी मेरे उदय होने का शिशुमार चक्र है॥१३॥ मेरे तप और भक्ति से प्रसन्न होकर६शिव ने आज यह जनाया है कि हे७चन्द्रमा चार हाथोंवाला शोभायमान राजा तेरा चकोर बनेगा॥१४॥सो[चहुवान]अग्निरूपी मेरे चौथे८शरीर का पुत्र है९योनि से नहीं उपजनेवाला१०तेरा प्रिय है. यह सुन कर११बेलि रूप में प्रफुल्लित हुई. हे आर्य१२कल्पवृक्ष रूपी तुम्हारे भुजों में लिपटने के अर्थ॥१५॥१३महादेव के वरदान का१४राजा के गोत्र के लक्ष्मण नामक मुनि१५वत्स नामक मुनि१६व्रत धारण करने वाला बनाकर १७न्याय शास्त्र१८ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद१९कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य इन तीनों को वार्ता कहते हैं. अथवा इतिहास विद्या२०चहुवान को२१परशुराम के

धनुवेदकौं पढिबे यहै पठयो महातप धामके ॥ १८ ॥
कहि यौं दयो नृप सिक्खि सो अब जाय राज्यहिं अद्दरो॥
सबही [1]फुरैं तुमकौं [2]तथापि कह्यो [3]गृहस्थनको करो ॥
धनुबेद सुनि नृप सिक्खयो [4]जमदग्निसुत सन जायकैं ॥
[5]आलीढ १ [6]प्रत्यालीढ २ [7]लघुवैसाख ३ [8]मंडल ४ लायकै ।१९।
गुरुदक्खिना करि [9]इष्ट अर्पित वत्सकौं [10]वंदि वंदिकैं ॥
सुमना [11]सची सह इंद्र आयउ इंद्रप्रस्थ अनंदिकैं ॥
करि [12]और्व [13]अंगजकौं पुरोहित धौम्य [14]धीधन [15]धर्म ज्यौं ॥
करिबे लग्यो हि सम्हारि राज्यविधेय बेदन धर्म ज्यौं ॥ २० ॥
[16]आसाप्रपूरनि ईश्वरी कुलदेवि [17]आलय थप्पिकैं ॥
किय [18]अष्टि १६ अंग उपेत [19]अर्चन [20]पुष्फ अंजलि अप्पिकैं ॥
निज पौर १ [21]जानपदादि आश्रम ३ वर्ण ४ मारग आनिकैं ॥
त्रय ३ लोक त्यौं अतिदान कित्तिबितान [22]सन्निभ तानिकैं ।२१।
पुनि अंग सप्तक ७ शुद्धकैं [23]द्रुतही [24]दिसाजयकौं चढ्यो ॥
[25]रविबंसमंडन ज्यौं [26]मरुत्त विरुद्ध [27]व्यालनपैं बढ्यो ॥

---

१ याद है २ तोभी ३ गृहस्थियों के करने का जो धर्म कहा है सो करो ४ परशुराम से ५ युद्ध समय में वाम पग को समेट कर दाहिने पग को फैलाना ६ दाहिने पग को समेट कर बायें पग को फैलाना अर्थात् दाहिना और बांयां पैंतरा बदलना ७ एक बेंथ (बिलस्त) की छेटी से दोनों पग रख कर युद्ध करना ८ गोलाकार फिर कर युद्ध करना ये सब धनुर्विद्या के पदन्यास हैं॥१९॥ ९ इच्छानुसार देकर १० पुनि वत्स मुनि को नमस्कार करके ११ सुमना रूपी इन्द्राणी सहित १२ और्व मुनि के १३ पुत्र को १४ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसे विद्वान् धौम्य को १५ युधिष्ठिर ने किया जैसे ॥२०॥ १६ आशापूरण नामक देवी को १७ अपने घर में स्थापन करके १८ सोलह अंग सहित १९ पूजन २० पुष्पाञ्जलि देकर अपने पुर के और २१ देश आदि के लोगों को ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थ और संन्यासी इन चारों आश्रमों में चारों वर्णों को लाकर कीर्ति को डेरा के २२ सदृश (जैसा) तान कर ॥ २१ ॥ फिर राज्य के सातों अंगों को शुद्ध करके २३ शीघ्र ही २४ दिग्विजय करने को चढा. जैसे २५ सूर्य वंश का मंडन २६ मरुत्त नामक राजा २७ सर्पों पर चढा था.

दृगगोल ठाननतैं विलोल कटाच्छ घोटक निक्खसे ॥
वह व्योम बारनतैंहु बारिद उच्च बारन उक्खसे ॥ २२ ॥
नृपहू कढ्यो यह अठ ८ सारथि सेव्यमान सु सज्जही ॥
दुव २ चक्कके रथ अक्क जो यहँ हाँस भुग्गन अज्जही ॥
छिति तो पताकनतैं छई लखि लोक बागन वीसरैं ॥
पिक बंसि खेह पराग जो बिनु अंब भृंगन भा करैं ॥ २३ ॥
मनि मंजु भूषन पुष्प बल्लरि गुल्म आश्रय त्यों तजैं ॥
हिंदोलके तरु थंभही नाहे भिंदिपालन जो रजैं ॥
विनु स्रोत जो जल दान के न प्रनाल अद्भुत व्है बहैं ॥
करपत्र पत्र विहीन भल्लन केतकी सुम को कहैं ॥ २४ ॥
गजकुंभ जंगम रुक्ख खंध वढैलसस्यन जो लसैं ॥
वमथू वनैं जलजंत्र चित्रविचित्र जो नचि निक्खसैं ॥
गजदंत केतकके सिरे विनु तिक्ख अग्रन जो बनैं ॥

गोल नेत्रवाले चपल घोड़े ठानों में से ऐसे निकसे कि जैसे नेत्रों में से कटाक्ष निकसता है. ऐरावत से और मेघों से भी ऊंचे वहुत से हाथी निकले ॥ २२ ॥ राजा भी आठ सारथियों से सेयाहुआ सझ कर दो पहियों के रथ पर वह सूर्य आज ही उस सूर्य की वरावरी की हाँस को भोगने के लिये चढ़ा. तब भूमि को तौ ध्वजाओं से छा ली, जिसको देख कर लोग बागों को भूलनेलगे. अब यहां सेना और बाग का रूपक अलंकार कहते हैं. सेना में वंसी है वही तौ कोयल है; रज (धूलि) है वही पुष्परज है सो विना ही आम् वृक्ष के भ्रमरों को शोभित करती है; यहां सेना पक्ष में भ्रमर वीर और बाग पक्ष में भ्रमर मधुप हैं ॥ २३ ॥ वेलें और पसरे हुए वृक्षों के आश्रम को छोड कर सुन्दर मणियों के भूषण ही पुष्प हैं; वृक्ष के खंभों विना के गोफण [पत्थर फैंकने का चर्मयंत्र] के हिंडोले शोभायमान हैं; विना ही झरनों के हाथियों के दान के जल से अद्भुत परनाले वहते हैं; करवत हैं वही केतकी के पत्र हैं. विना बाण के भाल [तीर का फल] है वही केतकी का पुष्प है ॥ २४ ॥ हाथी रूपी चलतेहुए वढल नामक वृक्ष के कंधे रूपी शाखा पर कुंभस्थलों रूपी फल शोभित हैं; हाथियों की सूंडों से जलकण निकलते हैं वेही नानाप्रकार के फुहारे नच कर निकलते हैं; हाथियों के दंत ही केतकी के से सिरे हैं; जिनका अग्रभाग तीखा नहीं है; छोटी ध्वजाओं के दंड हैं सोही सरू के वृक्ष हैं; उनके वस्त्र

लघु केतुदंडन जो सरू पटपत्र तंडवकों तनैं ॥ २५ ॥
तनुभल्ल जो नहि मल्लिका कलिकादि सोभित स्याम व्है ॥
असि जो सुदर्सनपत्र उद्गत नीर अच्छ ललाम व्है ॥
न लताबिगुंफित जालिका नरबीर वेष्टन जो करैं॥
नारंग के फल अर्द्ध गोलक जोन घंट प्रभा करैं ॥ २६ ॥
विनु अंघ्रि चामर १ हंस २ बार्ह२मयूर २ जोन किलोलकैं ॥
वर कुंतदडन इच्छु जो अध उर्द्ध लास्य विलोलकैं ॥
मखतूल फुंदन मोचिकाफल सप्त ७ रूप दिखाय जो ॥
सुभछत्र १ चर्मन कंजके बिनु पुष्प पत्र सुहाय जो ॥ २७ ॥
खुर खुराग पंथ प्रनालिका बहु तोय संग न जो तजैं॥
वड केतुदंड खजूरकै छद इक्क जोन छबी छजैं ॥
संदेह निर्णय गर्भ जो प्रतना वखानन धी धरैं ॥
नृप राम तो दल तास उपबन सत्य गोचरही करैं ॥ २८ ॥

है वही सरू के पत्तों के समान नाच करते हैं ॥ २५ ॥ श्याम रंग को धारण करनेवाली छोटी भालें (तीरों के फल) हैं सोही बेला के वृक्ष की कलियां शोभित हैं तरवार है सोही सुदर्शन वृक्ष से उत्पन्न हुए पत्ते और उसी खड्ग में आबी (नीर) है वही सुन्दर गीलापन है; गुथीहुई जाली (शिर पर बांधने का फतेपेच) ही नल है जिसको वीर पुरुष अपनी पाघ बनाते हैं, अथवा पाघ पर बांधते हैं. घंटा है सोही नारंगी के आधे गोले की शोभा को धारण करती है ॥ २६ ॥ चमर है सोही विना पगों के हंस और मोरछल हैं सोही मयूर किलोल करते हैं. श्रेष्ट भाला के दंड हैं सोही नीचे और ऊपर के दोनों भाग सांठा (गन्ना) के समान चपलता के साथ नाच करते हैं. और रेशम के फूंदे ही केले सात रूप दिखाते हैं [केले सात प्रकार के होते हैं] छत्र और ढालें ही विना पुष्प के कमलों के पत्ते शोभित हैं ॥ २७ ॥ खुरों से खूंदेहुए मार्ग ही पानी का संग नहीं छोडनेवाले धोरे हैं. बड़े ध्वजदंड हैं सोही एकपत्र के खजूर की शोभा से शोभित हैं. गर्भ का निर्णय करने में, गर्भ में लडकी है अथवा लडका है, बुद्धि में संदेह ही रहता है इसी प्रकार इस सेना के वर्णन में भी (यह सेना है कि बाग है) यह संदेह ही है तो हे राजा रामसिंह! उस चहुवान की सेना के बाग की सत्यता दृष्टि से देखे ही होती है, जैसे गर्भ की सत्यता दृष्टि से देखे ही हुआ करती है अथवा निर्णय है बीच में जिसके ऐसे संदेह अलंकार को इस सेना के वर्णन के बीच में बुद्धि धारण करनी है. जैसे—

आराम[1] रसिक सु भूप सरदहु माँहिं बागनसैं चल्यो ॥
यह वस्तु प्रतिनिधि[2] आहि द्वापर[3] तो न है हमरो छल्यो ॥
पहिलैं पुरी मथुरा चतुर्भुज[4] १ आय जद्दव[5] बुल्लये ॥
तिन हारिकैं अधिके उपायन[6] संग लै द्रुतहीं[7] दये ॥ २९ ॥
विजयाश्व पुष्कर भूप जद्दव आयकैं पुनि बिंट्यो[8],
अजपालकी स्थितिकौं[9] मनो गरदाय[10] नागगिरी[11] लयो ॥
विजयाश्वनैं नृपकौं स्वकीय[12] सुताहि इंदुमती २ दई,
ससिबंस[13] १ पाटव[14] वंस २ कै यह पुब्ब उद्वहता[15] भई ॥ ३० ॥
आवंत्य[16] १ अर्बुद २ जित्ति बलि[17] सौराष्ट्र३तैं बलि[18] लै चल्यो,
आनूप ४ सूर्यारक ५ सुमील ६ रु कालवन ७ जयकैं दल्यो ॥
मनु[20] १भानु २ चंद्र ३ कृसानु ४ के कुल यौं प्रतीचिय[19] १ के जये ॥
आटव्य १ सावर २ पांड्य ३ केरल ४ जित्ति कुंतल ५ त्यौं लये॥ ३१॥
मरहट्ट६ केतुक ७ चोल ८ सूसिक ९ बिंध्य १० वासक ११ जेर[21] कैं
रु विदर्भ १२ जुत कर्णाट १३ द्रविड १४ हु जित्तये न[22] अवेरकैं ॥

"गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः ।
पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः ॥"

माघ काव्य में नारद के आने के वर्णन में शंका हुई कि यह सूर्य है. फिर निर्णय कियागया कि सूर्य की गति तौ तिरछी है और सारथि अनूरु है, इससे यह सूर्य नहीं है. फिर संदेह हुआ कि यह अग्नि है, तब निर्णय कियागया कि अग्नि तौ ऊर्ध्वज्वलन है और यह तो सब ओर फैलनेवाला तेज नीचे को पडता है, इससे अग्नि नहीं है ॥ इसी प्रकार यहां भी सेना और बाग के वर्णन में निर्णय है बीच में जिसके ऐसा संदेह अलंकार जानो ॥२८॥

१ इसप्रकार बाग का रसिक २ यह वस्तु प्रतिनिधि (एक वस्तु के स्थान में अन्य वस्तु को स्थापन करना) है, इससे हे राजा रामसिंह ! हमारा छल रूपी आपको कोई३संदेह तौ नहीं है. ४चहुवाण ने ५ यादवों को ६ भेट (नजराना) ७ शीघ्र ॥२९॥ ८ घेर लिया ९अजमेर को जैसे १० नाग पहाड ने११घेर रक्खा है १२ अपनी बेटी १३ चंद्रवंश और १४ अग्निवंश के यह प्रथम ही १५ विवाह हुआ ॥ ३० ॥ १६ उज्जैण का प्रांत १७ पुनि १८ कर (खिराज) १९ पश्चिम दिशा के २० मनुवंशी, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी और प्रमार आदि अग्निवंशियों को इस प्रकार जीता ॥ ३१ ॥ २१ दबाकर २२ देरी नहीं करके.

आभीर १५ अरु तैलिंग १६ देस कलिंग १७ आदिक जे सबै,
दिस यों अवाचियं १ जित्ति प्राचियं२मैं मिलानं३ दये तबै ॥ ३२ ॥
गोनर्द१ अंग२ सवंग३ आंध्र४ रु कामरूप ५ हु जित्तिकैं,
पुनि ताम्रलिप्त ६ विदेह ७ मागध ८ मद्र ९ आदिक कित्तिकैं ॥
इम दक्खि पूरब३कौं उदीचियं४माँहिं भूपति आतभो,
तहँ चीन१वाल्हिक२अर्ब३ऊर्ण४तुखार५दावद६दबातभो ॥ ३३ ॥
लंपाक७पुनि काश्मीर८तंगण९केरुप्रस्थल१०के जई,
स्तवकार११मूलिक१२जित्तिकैं भुव लै दसेरक१३लौं लई ॥
प्रत्यंत जित्ति समस्त उत्तर४कौंहु यों अपनायकैं,
पुनि मध्यदेशन जित्तिकैं सबपैं तप्यो नृप आयकैं ॥ ३४ ॥
सिवं६आसपूरनि अंबिकाँ७कुलदेविकौं नतिसौं८ नम्यौं,
सुमना११रु इंदुमती१२उभै९रसरत्त रानिनमैं रम्यौं ॥
करि राजसूय१ रु अश्वमेध२समस्त भूपति बुल्लये,
इन आदि औरहु सत्त तास घनैं जमींतटपैं गये ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

कनकजप१वेदी२कलित, अद्रिन सम उपहार३ ॥
द्विज दुर्मदकरि दक्खिना, जिहिं मख अतुल उदार ॥ ३६ ॥
कोसन लग जमुना जुगल२, पुलिन भये मखपूत ॥
कहन कित्ति उदधिन अवधि, दोरयो तस नदि दूत ॥ ३७ ॥

---

१ दक्षिणदिशा २ पूर्वदिशा में ३ मुकाम ॥ ३२ ॥ ४ उत्तरादिशा में ५ म्लेच्छ देश (यहां पर जितने देश गिनाये हैं उन सबका यथार्थ पता नहीं लगता कि कौन देश कहां है. और इनमें बहुधा देशों के पर्याय नाम भी नहीं मिलते कोशों में भी इन देशों के नाम येही मिलते हैं कि जो मूल में लिखे हुए हैं. जिनका लिखना व्यर्थ है; और कितनेक देशों के पर्याय नाम और पते मिलते हैं वे इतने प्रसिद्ध हैं कि जिनका लिखना उपयोगी नहीं, इस कारण से देशों के नाम की टीका हमने छोडदी है सो पाठक लोग क्षमाकरें) ।३४। ६ महादेव को और आशापूरण नामक ७देवी को ८ नम्रता से ९ यज्ञ ॥३५॥ जिस अत्यंत उदार राजा के यज्ञ में सोना के यज्ञस्तंभ, प्रसिद्ध वेदी, पर्वतों के समान सामग्री और ब्राह्मणों को प्रमत्त बनानेवाली दक्षिणा थी ॥ ३६ ॥ यमुना नदी के किनारे दोनों यज्ञ से पवित्र होगये और समुद्र की अवधि

शुद्ध ब्रजदेशीया प्राकृतभाषा ॥

मनोहरम् ॥

निकसी हिमालयतैं सूचक कलिंद करि,
इन्द्रप्रस्थहीसौं लाह जवतैं लयोकरी ॥
हेमजूप १ बेदी २ पात्र ३ प्रमुख पुरातन,
पदार्थ परि काली कांति कपिस भयोकरी ॥
संकलप पूरनव्है बिप्रनन लीनैं छत्र१,
चामर२व्यजन३दत्तपत्र४न छयोकरी ॥
भानुजा समुद्रनलौं भूकौं भूपतीके भूरि,
सत्रनके खबरि निरंतर दयोकरी ॥ ३८ ॥

गीर्वाणभाषा गीतिः ॥

चण्डासेरपि तनुजः सुमनसि सामन्तदेव२इति जातः॥
तनया तथेन्दुमत्यां जातैका सा समाख्यया श्यामा१ ॥३९॥
दत्ताभूत्पुरुरवसे साऽवन्तीशप्रमारतनुजनुषे ॥
या राष्ट्रसेनजननी पितामही धुन्धुमारभूभर्तुः ॥ ४० ॥
इन्दूदय इव सिन्धुर्ववृधे सामन्त२देव ऊर्जस्वी ॥
अधिगतसमस्तविद्यः स्ववीर्यसुखमन्वबीभवज्जनकम् ॥४१॥

तक उसकी कीर्ति कहने के लिये उस (चहुवाण) का नदी रूपी दूत दौड़ा ॥ ३७ ॥ सूर्य है जनानेवाला जिसका ऐसी यमुना नदी हिमालय से निकली जब से दिल्ली नगर से लाभ लेती रही, और सोने का यज्ञस्तंभ, वेदी, यज्ञ के पात्र आदि प्राचीन पदार्थों के भीतर पड़ने से काली कान्तिवाली यमुना काले पीले मिश्रित रंगवाली होतीरही. उस चहुवाण का संकल्प पूर्ण होकर ब्राह्मणों को छत्र चमर पंखे और दानपत्र दिये जिनसे छाईहुई रही, ऐसे सूर्य की पुत्री (यमुना नदी) समुद्रों तक भूमि को चहुवान राजा के बहुत यज्ञों की निरंतर खबर देती रही ॥ ३८ ॥ चंडासि (चहुवान) के भी सुमना नाम स्त्री में सामंतदेव पुत्र हुआ तैसे ही इन्दुमती में श्यामा नाम की एक कन्या हुई ॥ ३९ ॥ वह कन्या उज्जीण के पति पँवार राजा पुरूरवा को दीगई, जो राष्ट्रसेन की तो माता, और धुंधुमार राजा की दादी हुई ॥४०॥ चन्द्रमा के उदय होने पर समुद्र बढे इसीप्रकार पराक्रमी सामंतदेव बढा जि

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

षट्पदी

सब विद्या बुधसूर[1] कुमर सामंतदेव२हुव,
जनक[2] मग्ग अनुगामि[3] भयो अति विदित जित्ति भुव॥
जदुबर अर्जुन कुलज द्रविड नृप केतुमान जहँ,
सुता स्वयंबर रचिय गयउ चराडासि सुतहु तहँ॥
कार्मुक[4] सहाय रनचराड करि जित्ति सबन कन्या जयो,
प्रभु राम[5] अपर[6] ताको प्रकट भुव प्रचराड२नामहु भयो॥४२॥

दोहा

केतुमानकी कन्यका, धन्य सुरुचि२।१अभिधान॥
आनि कुमार प्रचराड२इम, व्याही निगमबिधान॥ ४३॥

षट्पदी

अवनिईस चहुवान१समा सत१००भुग्गि अवनि सुख,
करि प्रचण्ड अभिषेक राज्य दै तिहिं दिलीप[10] रुख॥
आसापूरनि[11]१ईस[12]२अरचि[13] जाया दुव[14]२संजुत,
जोग तुहिनगिरि[15] जाय निरंत[16] सद्धो सिद्धन[17] नुत[18]॥
पथ ब्रह्मरन्ध्र[19] तजि असु[20] पवन भव[21] प्रधान विरहित[22] भयो,
पति देह संग रानिन२प्रनत[23] देह जुगल२[24]दहनाहिं दयो॥४४॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे तृतीय३राशौ चडा-

इने सम्पूर्ण विद्या पाकर पिता को अपने पराक्रम के सुख का अनुभव कराया।४१।
१ पंडित २ पिता के ३ पीछे चलनेवाला ४ धनुष के ५ हे प्रभु रामसिंह ६ दूसरा ७ नाम ८ वेद की रीति से ९ संवत् १० राजा दिलीप ने अपने पुत्र को राज्य दिया जिसप्रकार ११ आशापूरण नामक कुलदेवी और १२ शिव को १३ पूजकर १४ दोनों स्त्रियों सहित १५ हिमालय पर्वत पर १६ निरंतर १७ सिद्ध लोगों से १८ स्तुति कियाहुआ १९ शिर के मार्ग से (कपाल फूटकर) २० प्राणवायु को छोड कर २१ संसार में प्रकृति के जन्म मरण से २२ विरक्त (मुक्त) हुआ २३ विशेष नम्रता के साथ २४ दोनों ने २५ दोनों शरीर अग्नि को दिये, अर्थात् राजा के शरीर के साथ जलगई.

सीन्द्रप्रस्थस्कन्धावारस्थापन-वामदेववरवितरण-तत्काद्रवेयककोंटकसुतासुमनोमिलन-वत्साधीतविद्यतद्विवाहन-समात्तधनुर्वेदनिजभवनाऽऽगमनौर्वाङ्गजर्चीकाऽनुजपुरोधीकरण-कुलदेव्यर्चन-वर्णाश्रम्यव्यवस्थापन-दिग्विजयप्रस्थान-पुष्कराधिराजयादवावतंसविजयाश्वतनयेन्दुमतीपरिणायन-कृतदिग्जयनिजराज्यमहामखाऽनुष्टान-तत्संततितानकसूनुसामन्तदेव२श्यामो१द्गमन-चातुर्भुजी१ प्रामारिपुरूरवो२विवहन-समधिगताऽध्येतव्यचाहुवाणकुमारस्वयम्बरस्थद्रविडेन्द्रकेतुमत्कन्यासुरुचिर१प्रसह्यपरिणायन-कृततद्भिषेकपरिणामतत्सपत्नीकचण्डासि१परिव्रजन-तत्समाहिततनुत्यजनं प्रथमो१ मयूखः ॥ १ ॥ आदितस्त्रिचत्वारिंशत्तमः ॥ ४३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सामंतादिक देव २ हू, भयो सवन सिर भूप ॥
चवण चलाय प्रचंड २ पन, किन्नो उदित अनूप ॥ १ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में चहुवाण का दिल्ली को राजधानी बनाना, महादेव के वरदान से उस कर्कोटक नामक सर्प की पुत्री सुमना का मिलना, वत्स मुनि से विद्या पढना और उसका विवाह होना, धनुर्वेद पढकर घर आना, ऊर्व के पुत्र और ऋचिक के छोटे भाई को पुरोहित करना, कुलदेवी का पूजन करना, वर्ण और आश्रम धर्म का स्थापन करना, दिग्विजय पर चढाई करना, पुष्कर के स्वामी यादवकुल के मुकुट विजयाश्व की बेटी इन्दुमती से विवाह करना, दिग्विजय करके अपने राज्य में बडे यज्ञ का अनुष्टान करना, उस (चण्डासि) की सन्तति को फैलानेवाले पुत्र सामन्तदेव और श्यामा नामक पुत्रिका का उत्पन्न होना, और चहुवाण की पुत्री श्यामा का पँवार पुरुरवा के साथ विवाह होना, पढने योग्य विद्याओं को पढकर चहुवाण के पुत्र का स्वयंवर में स्थित द्रविडदेश के अधिपति केतुमान की कन्या सुरुचि से बलात्कार विवाह करना, उस सामन्तदेव का राज्याभिषेक करके अन्त में स्त्रियों सहित चहुवाण का वानप्रस्थ होना और उस राजा का समाधि से शरीर छोडने का प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तेंतालीस मयूख हुए ॥ ४३ ॥

१ सामन्त है आदि में जिसके ऐसा देव अर्थात् सामन्तदेव २ चवण ( )

नृप प्रचंडकै सुत भयो, महादेव ३ अभिधान[1] ॥
वीतिहोत्र[2] नृप जामि[3] जानि[4], वीतिहोत्र[5] कुल भान ॥ २ ॥

षटपात

महादेव ३ हुव मरुप[6] देवँराजहिँ[7] रन दंडक ॥
अरि गिरि खंडन असनि[8] खलन दंडन खिजि खंडक ॥
अपर[9] नाम कर अधिप प्रथित[10] सो हुव परभंजन ॥
रक्ख्यो जिहिं मरुराजे[11] अटकि चालीस ४० अहर्गन[12] ॥
सामंतदेव २ तजि राज्यसुख परभंजन ३ हित अप्पि[13] भुव ॥
संजमी[14] सुरुचिर।१।रानी सहित हरि धरि हृदय गतायु[15] हुव ॥ ३ ॥

दोहा

परभंजनके हत्थतैं, इकदिन रमत सिकार ॥
होमधेनु मुनि प्रमतिकी, मरी दइव अनुहार ॥ ४ ॥
इहिं निमित्त भार्गव[16] दयो, बंसनासको साप ॥
जब जान्यौं तब नृप सजव[17], आनिपरयो पय आप ॥ ५ ॥
विनुजानैं हुव बिन्नती, किय इम नम्र नरेस ॥
सदय[18] मुनिहु दोस न समुझि, आक्खिय[19] समुचित[20] एस ॥६॥
संतति व्हैहैं इक्क सुत, तव कुल प्रथित[21] प्रसंस ॥
पीढिन कछु अंतर परत, बिस्तर[22] पैहैं बंस ॥ ७ ॥

सोरठा

रैवत गिरि अधिराज[23], निमि विदेहकुल सुंदमपटु[24] ॥

१नामवाला २ सूर्यवंशी राजा की अथवा वीतिहोत्र नामक राजा की ३ बहिन है ४ माता जिस की ऐसा ५ अग्नि कुल का सूर्य ॥ २ ॥ ६ मारवाड़ देश का पति ७ देवराज को रन में दण्ड देनेवाला ८ शत्रुरूपी पर्वतों को तोड़ने में वज्र ९ वह महादेव दूसरे नाम से परभंजन १० प्रसिद्ध हुआ ११ मारवाड़ के राजा को १२ दिन १३ भूमि देकर १४ संयम रखनेवाला (ध्यान धारणा और समाधि इन को संयम कहते हैं) १५ मरा ॥ ३ ॥ ४ ॥ १६ भृगु के पुत्र ने १७ शीघ्र ॥ ५ ॥ १८ दयालु १९ कहा २० यथायोग्य ॥ ६ ॥ २१ प्रसिद्ध प्रशंसा योग्य २२ विस्तार पावेगा ॥७॥ २३ स्वामी २४ इन्द्रियों को रोकने

सोरठ ऋद्द[1] समाज, जनपद[2] बाहु अधीन जिहिँ ॥ ८ ॥
सुता तदीय सुजान, परभंजन ३ आनी पराने ॥
रूपवती ३।१ अभिधानँ[4], ज्यौँ राघवरवि[5] जानकी ॥ ९ ॥
रूपवती ३।१ उरजात, रुँद्रभ[6] ६ के पहिले चरन ॥
हुव कुबेर ४ विख्यात, महादेव ३ नृपकै कुमर ॥ १० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

सचरणगद्यम्

प्रचंडपुत्र राजाधिराज महादेव ३ नैं या राजकुमार कुबेर ४ कौँ दिव्यतेजा लखि अपर[7] नाम करि देवमहा ४ हू मान्यौँ ॥ ताकौँही वाक्[8]चातुरी करि कितेक कवि [9]मागधादि लोकन[10] काव्य[11]वंसादिनमैं महोतदेव४नाम करि बखान्यौँ ॥ या देवमहाकौँ स्वजनक[12] सासनीय प्रतिहारराज नप्ता धन्वध रेस देवराजनैं अपनैं ऊर्जा४।१अभिधानके अक्षरनकौँ उदितका रिका आत्मजा विबाहि दई ॥ धर्मभंजाके साहस करि कुबेरनैं कविनकी[13] कोटिन कलित कीर्ति लई११ राजा महादेव धर्म१नीति२को धुरंधर[14] प्रजा१दिन१[15]कौँ मृगमुख १०राशिको रवि राजमान ॥ अरु या पुरुषकारपर सूर्यके सासन करत तहाँ अधिकमासलौँ

(चतुर) १ बहुत ऋद्धिवाला सोरठ नामक २ देश जिस के भुजों के अधीन है ॥ ८ ॥ ३ उसकी बेटी ४ रूपवती नामक ५ रघुबंशियों के सूर्य (रामचन्द्र) ने सीता को आनी ऐसे ॥ ९ ॥ ६ रूपवती के पेट से पैदा हुआ आर्द्रा नक्षत्र के पहिले पाये में (आर्द्रा नक्षत्र में जन्मलेनेवालों के नाम "कु-घ-ङ-छ" इन अक्षरों पर होते हैं) होने के कारण कुबेर नाम प्रसिद्ध हुआ ७ दूसरा ८ वचन की चतुराई से १० बड़वा भाट आदि लोकों ने ११ काव्य और वंशावलि आदि में १२ अपने पिता के आज्ञाकारी, पड़िहार राजा के दोहिते मारवाड़ के राजा देवराज ने अपने नाम के अक्षरों का उदय करनेवाली ऊर्जा (बलवान् का नाम है) नामवाली पुत्री ब्याह दी. १३ कवियों की कोटि में प्रसिद्ध कीर्ति प्राप्त की. १४ धुर खींचनेवाला १५ प्रजारूपी दिन का मकर राशि का शोभायमान सूर्य. इस देवमहा रूपी सूर्य के पुरुषार्थ पर शासन करते समय वहां अन्य राजाओं रूपी चंद्रमा भाग्य के भरोसे पर,

अपनौं बढिबो बोयबैठे इतर नृप देवपर कलानिधान ॥
या प्रभुके पुण्य१पावक१कौं पुहवीपैं प्रसरत अखिल अघ अं-
र्क अर्पित हैहयार्जुन सर समासादित स्थावर सृष्टि जानी ॥
अरु याके बर्द्धक इंदु१ औरअवनीस१नआपवमुनिकीनहाँसआनी १२
जाके हस्तनैं संकल्पनके सलिल करि सदाही मदकल महा
करीके करको बानिक लयो ॥
अरु दीक्षा करि दंपतीके मख मख प्रति महाफलकी बधाईमैं
अंचलग्रंथी कैदी बारंवार छूटत भयो ॥
तदनंतर महीस महादेवनैं देवमहा४प्रगल्भपुत्रके प्रतापसौं प्रस
न्न होय वैखानस वृत्ति३लई॥
त्यौंही रूपवतीनैं मानौं मुख दिखाईहीमैं-शुद्धांत स्वामिपनकी
सुखमा अपनी लालित बधू ऊर्जा४।१कौं अप्पिदई ॥ १३ ॥

अधिक मास के समान अपना वढना डुबो बैठे क्योंकि अन्य महीनों में तौ संक्रान्ति से अमावास्या सदैव आगे रहती है परंतु अधिकमास में संक्रान्ति के दिन अधिक और चंद्रमा के दिन न्यून होने से अमावास्या पर समाप्त हो नेवाला चंद्रमा संक्रान्ति तक नहीं पहुंचसक्ता, अर्थात् अमावास्या को लो प कर संक्रान्ति आगे निकल जाती है इसीकारण से यहां पर अधिक मा-स के चंद्रमा की वृद्धि का डुबो वैठना लिखा है . १ हैहयार्जुन के बाणों से प्राप्त अर्थात् हैहयार्जुन बाण संधान करता था जिस समय संपूर्ण सृष्टि ज ड़वत् होजाती थी उसीप्रकार इस देवमहा के पुण्य रूपी अग्नि के पृथ्वी पर फैलते समय संपूर्ण पाप सूर्य में अर्पित होकर जड़वत् होगये . और इस देवमहा के बढानेवाले चंद्र रूपी अन्य राजाओं ने वसिष्ट मुनि की हांस नहीं की (ये दोनों कथा किसी पुराण की हैं परंतु हम को उपलब्ध नहीं हुई) जिस देवमहा के हस्त ने संकल्प के जल से सदैव मद टपकतेहुए बड़े गज-राज के शुण्ड का अनुकरण किया (मस्त हाथी की शुण्ड सदैव टपकती र हती है इसीप्रकार देवमहा के हस्त से संकल्पका जल टपकता रहा) और यज्ञ की दीक्षा से स्त्रीभर्तार के यज्ञ यज्ञ में बड़े फल की बधाई के निमित्त गठजोड़े रूपी कैदी वारंवार छूटे (जब बड़े फल की बधाई आती है तब कै दी छोडजाते हैं यह लोकप्रथा है) इस पीछे राजा महादेव ने देवमहा जै से प्रौढ (होश्यार) पुत्र के प्रताप से प्रसन्न होकर वानप्रस्थ आश्रम धारण किया . २ जनाने के स्वामिपन की ३ परमशोभा ४ सुन्दर ५ वहू (जनाने का मालिकपन अपनी वहू ऊर्जा

सूत्रसरणि[1] सरणीवृत्ति[2]के समान विदेहराज सुदमकी सुताहू स्वामीके साथ सधर्मिणी[3]भावकों सफल कीनों ॥

अरु समयके अंत दोउन्न उचित अगाध[3] अर्थके[4] उपमेय[5] संपन्न लोकनको लाह लीनों ॥

ऊर्ज्जा४।१सहित अभिषिक्त[6] राजा देवमहा४हू अद्वितीय ऊर्ज्ज[7]स्वी भयो ॥

जाके जसनैं विनाही तरंड[8] लोकालोक[9]लौं निवास लयो ॥ १४॥

देवमहा४सौं उर्ज्जा४।१में राजकुमार विंदुसार५नैं जन्म पायो । सोही मंत्रसंक्ति[10]तैं महाप्रभाव इतरै[11] अभिख्या[12] करि मंत्रसहाय५ तथा मंत्रजय५हू कहायो ॥

या मंत्रजय५कों अनुद्रुह्यु अन्वय[13] अवतंस[14] वैरोचनि बलिवंसवर्द्धक[15] कलिंगराज कृतसेननैं कन्या विभावरी५।१विवाही॥

सूरिलोकनैं[16] जाकी सुसीलता सवही सतीनसौं सिवाय सिराही१५

राजा कुवेर४तो ऊर्ज्जा ४।१ सहित अरण्य[17]कौं आवास[18] करत भयो अरु याको अंगज[19] राजा विंदुसार ५ विभावरी५।१सहित राज्यभारकौं धरत भयो॥

राजा विंदुसार५सौं विभावरी५।१में राजकुमार सुधन्वा६नैं उद्भव[20] लह्यो जासमयमैं सूकरपति[21] चालुक्य रूप४के अंगज राजा पृथु ५ नैं

(..देकर रूपवती भी अपने पति के साथ गई) ॥ १३ ॥ १डोरा सूई के सा(थ) ...जाता है जैसे २ मार्ग चलनेवाले की वृत्ति के समान पति के साथ रहना ...धर्म जिस का इस (स्त्री) भाव को सफल किया ३ अथाह अर्थ (मो(क्ष)) ...ओं ४ उपमा लगनी है जिस को ऐसे ५ समृद्धिवाले (स्वर्गादि) लोकों का ला(भ) लिया ६ अभिषेक कियाहुआ ७पराक्रमी ८ नाव ९ पुराणों के मत (से) ...समुद्रों के पार सम्पूर्ण पृथ्वी के जिस पर्वत का घेरा है उसका नाम लोका(लो)क पर्वत है ॥ १४ ॥१०राजा की तीन शक्तियों में एक का नाम मंत्रशक्ति ...जिसका भावार्थ है सलाह में कुशल ११दूसरे १२नाम से १३अनुद्रुह्यु के वंश का १४मुकुट १५विरोचन के पुत्र बलि के वंश का बढानेवाला कलिंग देश के राजा कृ(त)सेन ने विभावरी नामक अपनी कन्या बिन्दुसार को विवाही १६पण्डितों ने ॥१५॥१७ वन का १८ निवास १९ पुत्र २० जन्म २१ सूकर नाम क्षेत्र का पति.

अपनौं दिग्विजय चह्यो ॥ १६ ॥
जानैं*प्रतीचीके विजयमैं पहिलैं इंद्रप्रस्थ पुरही आय घेर्‍यो ॥
अरु चो४मुनौं पृतनासौं[1] प्रगल्भ[2] होय उपायन[3] आनिबेको आदेस[4] गेर्‍यो
तब मंत्रजय५ नैं सद्योधारण सचिवें[5] सहित मंत्रमैं[6] अँरिका[7] असंधि१
सील उग्रयान[8]२आसन[9]३विधेय विग्रह४दुराप[10] द्वैधीभाव[11]५जान्यौं ॥
अरु आश्रय[12]६कौं अनुचित अपनैं आश्रम[13]२कौं पुत्रफल मानि सिद्धां-
तमैं समरसज्जा सोयबो ही श्रेय मान्यौं ॥ १७ ॥
सुधन्वा६के पट्टमैं[14] दोय२सिखा[15] सिवाय करि सन्नद्ध होय मंत्रजय ५
महारण चलायो ॥
अरु स्यंदन[16]१सिंधुर[17]२सप्ति[18]३पत्ति[19]४संकुलित[20] अनीकिनी[21] उभय२को स
माज समुद्रसो नजरि आयो ॥
रथनकी रथ्या[22] करि बीरन[23] पहिलैं वसुमती[24] पुंधिनके[25] प्रहार सहनलगी ॥
अरु बाननके पूर्वही चक्री[26] चक्रवाककौं[27] पार जावनकी कहनलगी ॥१८॥

---

* पश्चिम दिशा १ सेना २ प्रौढ (बडप्पन) पन को प्राप्त होकर ३ भेट (नजराना) ४ हुकुम दिया ५ सद्योधारण नामक कामदार के साथ ६ सलाह में ७ सन्धि (मिलाप) नहीं करनेवाला ८ चढाई करने में उग्र ९ आसन (शत्रु को दबाने के लिये पास ही पडाव डाल कर रहनेवाला) करनेवाला १० लडाई में दुर्लभ अर्थात् जिससे विजय मिलना दुर्लभ है ११ द्वैधीभाव (ऊपर से मित्र और भीतर से शत्रु होकर रहना) और १२ आश्रय (शरणागत होकर रहने) को अनुचित समझकर १३ अपने घर में पुत्र मोजूद है, यह गृहस्थाश्रम का फल मान कर ॥ १७ ॥ १४ अपने पुत्र सुधन्वा के पट्ट अर्थात् सिंहासन में १५ दो शिखा (सिंहासन के पांच शिखा [कलश] होते हैं जिनमें अपने पुत्र की अधिकता के लिये दो कलश) अधिक लगाकर १६ रथ १७ हाथी १८ घोडे १९ पैदल २० इनसे अवकाश रहित २१ सेना २२ दोनों राजाओं का समूह समुद्र सा दीखा. रथों की गलियां (मार्गों) से २३ वीरों के पहिले ही २४ पृथ्वी २५ पूठियों के प्रहार सहने लगी, अर्थात् अभी तक वीरों ने तौ प्रहार सहे ही नहीं, परंतु रथों के इधर उधर फिरने से पहियों की पूठियों के प्रहार भूमि सहने लगी. इसीप्रकार बाण तौ वीरों के शरीर में पार हुए ही नहीं, जिससे पहले ही २६ चकवी २७ चकवे को पार (दूर) चलने की कहनेलगी कि यहां अंधेरा होनेलगा ॥ १८ ॥

भीरुनके[1] पूर्वही दिसानके महामदं[2]कल मातंगं[3]नके गाढ गिरन लगे ॥
अरु फेरंडं[4]नसौं प्रथमही समुद्रनके सलिल[5] फिरन लगे ॥
ऐसे समय राजा बिंदुसार ५ करंड[6] उपासंग[7]सौं नागनाराच[8] निकारे।
अरु सिंजनीपैं[9] समारोप[10]सौं सत्रुनके समूह समासम प्रसरि डारे ।१९।
सचिव सद्योधारणानैं चालुक्यराजको मंत्री सुमति मारिलयो ॥
अरु महीस मंत्रजय ५ नैं सामंतनको संघट्ट[11] तोरि सपत्न[12] पृथु- पैंही दाव दयो ॥
दोऊ २ धर्म धरेस जुद्ध करि स्पंदन १ सप्ति २ सारथी ३ सत्त्व ४ बिहीन होय नियुद्धं[13]को निपुणत्व[14] दिखावत भये ॥
अरु अपनैं अपनैं सूरनकौं समरमैं साहसही उचित सिखावत भये।२०।
जहाँ पृथ्वीपति पृथु ५ को प्रकर्षण[15] प्रहार प्राबल्य[16]सौं पर्‌यो॥
जासौं चंडासिकुलके[17] चंद्र बसुधेश्वर बिंदुसार५ नैं अस्तअद्रि[18] अ- मरालय[19] आवास[20] कर्‌यो ॥
तदनंतर[21] मंत्री सद्योधारणा स्वकीय[22] स्वामिकौं सिसु जानि उचित उपायनं[23] उपहारं[24] आनि अर्पित[25] करि आत्मीयं[26] अरिको उत्सारण[27] करायो ॥

---

१ कायरों के गाढ तौ छूटे ही नहीं, अर्थात् युद्ध प्रारंभ हुआ ही नहीं, इस से पहले ही २ मदोन्मत्त ३ दिग्गजों (दिशा के हाथियों) के गाढ छूटने लगे. युद्धस्थल में मांस भक्षण करने को ४ शृगाल तौ फिरे ही नहीं जिनसे पहले ही (सेनाओं के चलने से) समुद्रों का ५ जल फिरनेलगा. ऐसे समय में राजा बिंदुसार ने ६ टिपारे रूपी ७ भाथों से सर्प रूपी ८ बाण निकाले ९ प्रत्यंचा पर १० बाणों के चढाने से सब शत्रुओं के समूह को असम करके फैलादिया, अथवा जो सम (अपनी बराबरी के) थे उनको असम (समता हीन) करके बिखेर दिया ॥१९॥ ११ उमरावों का समुदाय १२ शत्रु १३ बाहु युद्ध १४ कुशलता ॥ २० ॥ १५ विशेष करके १६ प्रबलता से १७ अग्नि कुल के चंद्र भूपति बिन्दुसार ने १८ अस्ताचल रूपी १९ स्वर्ग में २० निवास किया २१ जिस पीछे २२ अपने मालिक को बालक जान कर २३ भेट २४ सामग्री २५ नजर २६ अपने शत्रु का २७ कूँच कराया.

अरु सुधन्वा ६ कै अभिसेक करि पठनीय[1] पढाय पितांहीकी पद्धति[2] पर लायो ॥ २१ ॥

दोहा

बिंदुसार ५ चालुक्यबल, खग्गन[3] बल बल[4] खाय ॥
खाय गिरयो कलि[5] ज्यौं करन, करन देवनुत[6] काय ॥ २२ ॥

मनोहरम्

पृथुसे प्रतापी इंद्रप्रस्थमैं उपरि आये,
डारयो व्है निसंक भाँगधेयहीको भर[7] है ॥
संधि यान विग्रह दुराप देखि आश्रयकौं,
उचित न देख्यो भूप ऐंची असि अर[8] है ॥
तृन गिनि भोगनकौं रोचंकसे[9][10] रोगनकौं,
छत्र छोरि कीनैं छत्र गिद्धनके पर है ॥
मंत्रजय ५ रायनीति धर्म अधिकाय बीर,
प्रान दीनो करपे[11] न जान दीनौं कर[12] है ॥ २३ ॥

दोहा

प्रविसी बँन्हि[13] बिभावरी ५।१, स्वामि अंग लै संग ॥
सिसु हि सुधन्वा ६ भूप भो, जयकारक जुरि जंग ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ सुरुचि५।१सामन्तदेव २ रूपवती ३।२ महादेवो ३ र्जो ४।१ देवमहो ४ बिभावरी

१पढने योग्य२मार्ग.देवताओं से अपने शरीर को६स्तुतियोग्य करने के लिये पाण्डवों की सेना को खाकर५युद्ध में कर्ण गिरा था उसीप्रकार बलवान् बहुबल वान बिन्दुसार सोलंखी पृथु की४सेना को३तलवारों के बल से खाकर गिरा ॥२२॥७कर लेने का भार डाला८संधि, यान और विग्रह में तौ उस पृथु को दुर्लभ जाना, और उसके आश्रित होने को उचित नहीं समझा ९ शीघ्र तरवार खींची, भोगों को तृण के समान समझा१०और रोगों को क्षुधा (भूख) के समान माना, कि अंत में तौ वे खावेंहीगे.११कर (खिराज) पर प्राण तौ दिये परंतु१२खिराज नहीं जानेदिया १३ अग्नि में ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में सुरुचि, सामन्तदेव, रूपवती, महादेव, ऊर्जा, देवमहा, विभावरी, बिन्दुसार के चरित्र और

५।१ बिन्दुसार ५ चरित्रसुधन्वा ६ऽ भिषेकवर्णनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ आदितश्चतुश्चत्वारिंशत्तमः ॥ ४४ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

सघरणागद्यम् ॥

राजा सुधन्वा६कुलीर१४के रविकी रजनी जिम वृद्धि पाय समस्त सस्त्र१सास्त्र२मैं सावधान भयो ॥

अरु सचिवसिरोमणि सद्योधारण सहित अपनैं चंडचक्र२को चलाय चालुक्यराज पृथु५को पुर घरदाय लयो ॥

तहाँ राजा पृथु५दीक्षित४होय अग्निष्टोमको यजमान कितनोंक कर्म तो करन पायो ॥

अरु एकादस११कपालमय विष्णुको चरु१बनाय विभा७करनको चरू२बनावत सुधन्वा६के संदेसहारकन जाय आहवको आह्वान लगायो ॥ १ ॥

याहि अध्वरको विस्तरसौं विधान तो उत्तर१२ अयनके अंतर१३ प्रथम१पुरुषार्थ१के प्रपंचमैं प्रमानिये ॥

परंतु पृथु५नैं प्रारंभही कीनौं हो यातैं बन्यौं कर्म यहाँहु समास१६ करि जानिये ॥

जाके कुलमैं सोमयाग भयो होय सोहि अग्निष्टोमको अधिकार पावैं अरु नहीं भयो होय तो पहिलैं इंद्र१अग्नि२के निमित्त पसुकरि पीछैं या अध्वरको आरंभ चलावैं ॥ २ ॥

सुधन्वा के राज्याभिषेक वर्णन का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से चवालीस मयूख हुए ॥ ४४ ॥

१ कर्क संक्रान्ति की रात्रि बढे जिस प्रकार बढ कर २ प्रचण्ड सेना को ३ सोलंखी राजा पृथु के नगर को घेरलिया ४ यज्ञ की दीक्षा लेकर ५ यज्ञ विशेष ६ बारह सूर्यों का ७ चरु (हविष्यान्न, होमने का अन्न) बना रहा था उस समय ८दूतों ने ९ युद्ध करने का१०बुलावा (आवाहन) ॥१॥ ११इस यज्ञ का विस्तार तो इस ग्रन्थ के १२ उत्तरायण के१३भीतर१४धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इनमें से प्रथम धर्म का वर्णन करेंगे उस रचना में जानना परन्तु यहां १६संक्षेप से

दोहा ॥

यातैं उत्तर१पच्छ यह, रचि पृथु५चालुकराज ॥
करनलगो श्रुतिगेय क्रतु, लहि द्विज सूरि समाज ॥ ३ ॥
प्रथम मातृ१अर्चन१करि रु, आभ्युदयिक किय श्राद्ध२॥
तदनु बरे यजमान तिहिं, ऋत्विज३सोलह१६राद्ध ॥४ ॥
सर्व बेद बुध च्यारि४ऋक१, वेद तत्व बुध च्यारि४॥
यजुर्वेद२बुध च्यारि४अरु, च्यारि४साम३बुध धारि ॥ ५ ॥

अथ तद्दत्विङ्नामानि ॥ गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुब्युग्माविपुला ॥

ब्रह्मा१च ब्राह्मणाच्छंसी२पोता३चाग्नीध्रक४स्तथा ॥
एते४सम्पूर्णवेदज्ञा वृताऽस्मिन् पृथुना क्रतौ ॥ ६ ॥
ग्रावस्तोता१ततो होता२तथाच्छावकसा३ऽऽह्वयः ॥
मैत्रावरुण ४ इत्येते वृतास्तेनर्ग्विदो बुधाः॥ ७ ॥
नेष्टा१चाध्वर्य्यु२रुन्नेता३प्रतिप्रस्थातृ४संयुताः ॥
यजुर्वेदविदो विप्राश्चालुक्येन वृता इमे ॥ ८ ॥

इस कारण से पृथु ने १ उत्तर पच्छ का आरंभ किया, अर्थात् सोलंखी पृथु ने पहिले सोमयज्ञ नहीं किया था इस कारण से प्रथम इन्द्र और अग्नि के निमित्त पशु का बलिदान करके फिर इस अग्निष्टोम यज्ञ का आरंभ किया २वेद में कहीहुई रीति से ४यज्ञ ५ पण्डितों का ॥३॥ पहिले मातृ (देवी) पूजन किया और फिर आभ्युदयिक (जिससे अभ्युदय अर्थात् प्रताप बढ़े उस श्राद्ध को आभ्युदयिक कहते हैं) श्राद्ध किया६जिस पीछे उस यजमान (सोलंखी पृथु) ने ऋत्विजों (यज्ञ करनेवालों) की वरणी की जो वहां पर मिले उन्हीको वरा ॥४॥ चार ऋत्विज तो सब वेदों को जाननेवाले और चार ऋत्विज ऋग्वेद के तत्त्व को जाननेवाले, यजुर्वेद को जाननेवाले चार, और सामवेद के जाननेवाले चार॥५॥इसप्रकार सोलह ऋत्विज होते हैं, जिनका क्रम और नाम आगे बताते हैं ॥ उस यज्ञ में चारों वेदों के जाननेवाले ब्रह्मा, ब्राह्मणाच्छंसी, पोता और आग्नीध्र नाम के इन चार ऋत्विजों की वरणी करी॥६॥ और ऋग्वेद के जाननेवाले ग्रावस्तोता, होता, अच्छावाकस और मैत्रावरुण इन चारों की वरणी की ॥७॥ चालुक्य राजा ने यजुर्वेद के जाननेवाले नेष्टा, अध्वर्यु, उन्नेता और प्रतिप्रस्थाता नामवाले ऋत्विजों की वरणी करी ॥८॥

उद्गाता १ प्रतिहर्ता २ च प्रस्तोताऽपि तृतीय३कः ॥
सुब्रह्मरय४श्च तत्रैते४ समात्ताः सामसूरयः ॥ ९ ॥
येन्येऽप्यस्मिन् क्रतौ योग्या वृतास्तेन महीभृता ॥
श्रोतव्या रावराट् तेऽप्येकादश११तत्क्रतूचिताः ॥ १० ॥
एकः १ सोमप्रवाको१ ऽन्ये चमसाऽध्वर्यवो१०दश१० ॥
सभ्यत्वे मुनयः शेषा वृताश्चालुक्यभूभुजा ॥ ११ ॥

अथर्त्विग्वरणविधिः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पदी

ऋत्विज पूरब सुमुख बैठि चालुक उत्तरमुख,
इष्ट बंधु अरु प्रथम बेर खट६ देवरीति रुख ॥
होता१सुचि२अध्वर्य्यु२होहु मम रवि२जगत्राता ॥
ससि३ब्रह्मा३पर्जन्य४होहु मामक उद्गाता४ ॥
जिम होत्राच्छंसी५होहु जल५चमसाध्वर्य्यु६मयूख मम ॥
इम बरि समंत्र सुर विप्र बलि कथित२७ बेर सो सुनहु क्रम ।१२।

सामवेद के पण्डित उद्गाता, प्रतिहर्ता, प्रस्तोता और सुब्रह्मण्य नाम को धारण करनेवाले इन चार ऋत्विजों की वरणी की ॥ ९ ॥ उस राजा ने इस यज्ञ में और भी जो योग्य थे उन ब्राह्मणों की वरणी की, हे रावराजा रामसिंह ! इस यज्ञ के योग्य वे भी ग्यारह सुनने योग्य हैं ॥१०॥ एक तो सोमप्रवाक और बाकी के दश चमसाध्वर्यु. चालुक्य राजा ने बाकी के मुनियों की वरणी सभासदों में की ॥११॥ ऋत्विज लोग पूर्व को मुख करके बैठे और सोलंखी राजा उत्तरदिशा को मुख करके बैठा, प्रिय बान्धवों को और प्रथम छः देवताओं को रीति पूर्वक वरे सो बताते हैं, कि अग्नि तो होता (ऋग्वेद का ऋत्विज) और संसार की रक्षा करनेवाला सूर्य मेरा अध्वर्यु (यजुर्वेद का ऋत्विज) होओ, चन्द्रमा ब्रह्मा (चारों वेदों के जाननेवाला ऋत्विज) और मेघ मेरा उद्गाता (सामवेद का ऋत्विज) होओ, जल है सो मेरा होत्राच्छंसि (चारों वेदों को जानने वाला) होओ, और अग्नि की ज्वाला है सो ही चमसाध्वर्यु होवै, इसप्रकार सब की वरणी मंत्र सहित करके ऊपर कहेहुए देवता और ब्राह्मणों को फिर वरे सो क्रम सुनो ॥१२॥

दोहा

स्फिग[1]हि वाम करकंज[2]लै, अक्षत कर अपसव्य[3] ॥
ऋत्विज दक्खिन जानु[4] छ्वै, भूप वरन किय भव्यँ[5] ॥ १३ ॥
ब्रह्मा १ कौं प्रथमहि वस्यो, इम कहि पृथु ५ अभिधान[6] ॥
भारद्वाज सगोत्र मैं, वरत तुम्हैं विधिथानँ[7] ॥ १४ ॥
पुरट[8] १ गज २ रु कौशेय[9] पट ३, सप्ति[10] ४ समीर जँवज्ञ[11] ॥
दीजै जिहिं बिच दच्छिनामैं विरचत वह यज्ञ ॥ १५ ॥
तत्थ विरंचन[12] थान तुम, स्रष्टा[13] १ होवहु स्वामि ॥
इम सुनि चालुक अर्थना[14], भाख्यो द्विजहु भवाँमि[15] ॥ १६ ॥

षट्पदी

उद्गाता[16] २ होता[17] ३ रु तदनु[18] अध्वर्यु[19] ४ वरे मुनि ॥
तदनु ब्राह्मणाच्छंसि[20] ५ तदनु प्रस्तोता[21] ६ कौं पुनि ॥
वरि नृप मैत्रावरुण[22] ७ तदनु प्रतिप्रस्थाता[23] ८ करि ॥
पोता[24] ९ प्रतिहर्ता[25] १० बहोरि अच्छावाकस[26] ११ बरि ॥
नेष्टा[27] १२ आग्नीध्र[28] १३ हिं बरि तदनु सुब्रह्मण्य[29] १४ हु पृथु ५ बरिय ॥
वरि ग्रावस्तोता[30] १५ मुनि वहुरि उन्नेता[31] १६ वरणी करिय ॥ १७ ॥

---

१ स्फिग (डांडी का मूल भाग) ही २ कमल ३ दाहिने हाथ से ४ घुटने को छूकर ५ शुभ ६ नाम (राजा पृथु ने इस प्रकार नाम कह कर पहले सब वेदों को जाननेवाले प्रथम ऋत्विज ब्रह्मा को वरा) ७ ब्रह्मा की जगह. ८ सोना ९ रेशमी वस्त्र ११ पवन के वेग को जाननेवाले १० घोड़े. १२ यहां ब्रह्मा के स्थान पर हे स्वामी ! तुम १३ ब्रह्मा होओ. १४ इस प्रकार चलुक्य राजा की याचना सुन कर १५ होऊंगा. १६ ब्रह्मा को वरे पीछे सामवेद के प्रथम ऋत्विज को १७ ऋग्वेद के दूसरे ऋत्विज को १८ जिस पीछे १९ यजुर्वेद के दूसरे ऋत्विज को २० सब वेदों को जाननेवाले दूसरे ऋत्विज को २१ सामवेद के तीसरे ऋत्विज को २२ ऋग्वेद के चौथे ऋत्विज को २३ यजुर्वेद के चौथे ऋत्विज को २४ सब वेदों को जाननेवाले तीसरे ऋत्विज को २५ सामवेद के दूसरे ऋत्विज को २६ ऋग्वेद के तीसरे ऋत्विज को २७ यजुर्वेद के प्रथम ऋत्विज को २८ सब वेदों को जाननेवाले चौथे ऋत्विज को वर कर जिस पीछे २९ सामवेद के चौथे ऋत्विज को राजा पृथु ने वरा और ३० ऋग्वेद के प्रथम ऋत्विज को वर कर फिर ३१ यजुर्वेद के तीसरे ऋत्विज को

दोहा

ब्रह्मा १ को जो बरण विधि, त्यौं इन १५ सौं कहि व्यस्त ॥
सोलह १६ ही भव कहि बरे, भनैं भवामि समस्त ॥ १८ ॥
यौं वरि किय मधुपर्क करि, सवनकोहि सनमान ॥
तहँ ऋत्विज १६ पुण्याहमिति, स्वस्ति पढहि सुजान ॥ १९ ॥
दक्षिणाऽर्थ संकल्प पुनि, कीनौं चालुक जत्थ ॥
पृथु ५ कौं किय इन ऋत्विज १६ न, सोम समर्पन तत्थ ॥ २० ॥

सोरठा

दै आसिख सुभवादि, दीक्षितकैं किय ऋत्विज १६ न ॥
मंगल सब तिलकादि, तदनु भयो जो सुनहु क्रम ॥ २१ ॥
दीक्षित पृथु ५ आचम्य, सुरन १ ऋत्विजन २ नरन ३ सौं ॥
प्रार्थन करिय प्रणम्य, अमर सत्र आरंभको ॥ २२ ॥
सुचिमुख पूर्व छ ६ देव, बरे भूप तिनसौं सविधि ॥
किय मार्गण कृत सेव, प्रार्थन सुनहु सु राम २०।२४ पहु ॥ २३ ॥
मम होता १ जु कृसानु १; देवयज्ञ सो देहु मुहि ॥
यौं सबसौं यजमानु, कहिय उपांशु परोक्षवत ॥ २४ ॥

वरणी करी ॥ १७ ॥ यहां पर ऋत्विजों की वरणी करी जिनका स्पष्ट क्रम आगे के अंकों से जानो. सब वेदों के जाननेवाले १।२।३।४. सामवेद के १।३।२।४. ऋग्वेद के २।४।३।१. यजुर्वेद के २।४।१।३.
जों ब्रह्मा के वरने की रीति बताई उसीप्रकार इन प्रत्येक (एकएक) को कहा. यजमानने कहा 'भव' (होओ) और सब ऋत्विजों ने कहा 'भवामि' (होवेंगे) ॥ १८ ॥ ४ दही, घृत, जल, सहत और खांड इन पांचों वस्तुओं के मिलाने को मधुपर्क कहते हैं. ५ मंगलीक कार्यों में तीन वेर 'पुण्याहम्' यह कह कर फिर स्वस्तिवाचन पढते हैं सो पढा ॥ १९ ॥ ६ सोलंखी राजा ने दक्षिणा के लिये संकल्प करा, तहां पर ऋत्विजों ने पृथु को ७ सोम लता का रस दिया. ८ जिसपीछे ९आचमन करके१०देव११यज्ञ. १२ अग्नि को १३आदि लेकर पहले कहेहुए छः देवताओं से १४ याचना करी १५ सो १६हे राजा रामसिंह ॥ २३ ॥ १७अग्नि, जो मेरा होता है वह मुझको देवयज्ञ देवै१८जपविशेष (समीपवाला भी नहीं सुनैं इसप्रकार धीमे जप करनेको

मम होता १ सुचि १ जोहि, देहु यज्ञ इम सबनसौं ॥
बुल्ल्यो दीक्षित सोहि, पुनि स्वर उच्च समक्षवंत[1] ॥ २५ ॥

दोहा

अग्नि आदि सुर[2] षट्क ६ इम, जचि निजगृह जजमान ॥
सह ऋत्विज पुनि सत्रथल[3], सोधन किन्न प्रयान ॥ २६ ॥
अपनैं अंतिकं[4] देश जे, तिनसौं उच्च प्रमानि ॥
सम अरु पाउस[5] सलिलसौं[6], क्लेदनँ[7] पावत जानि ॥ २७ ॥
पूरब वा उत्तर प्रवण[8], सबन सिराह्यो जाहि ॥
ऐसो मखथल हेरिकैं, बिधि बेदोक्त[9] निबाहि ॥ २८ ॥
जथारीति करि सुद्ध जिहिं, तासौं पश्चिम ओर ॥
दस१०[10] अरत्नि द्वादस१२तथा, कीनो थल चोकोर ॥ २९ ॥
अध्वरकी[11] विमिता[12]ऽऽख्य यँह, साला यौं रचि सुद्ध ॥
बिच पूर्वा[13]ऽऽयंत[14] मध्यबल्ल, धरयो बंश[15] इक १ उद्ध[16] ॥ ३० ॥
रोपी थूणाँ[17] लंब जे, ते दिस पूर्ब सुधारि ॥
दुव२कर चोरे द्वार त्रय३, किय उत्तर दिस टारि ॥ ३१ ॥

सोरठा

तासौं उत्तर ओर, सम रु विमित[18]सौं वद्ध[19] मित ॥
दीक्षित गृह चोकोर, पूर्वद्वार किय परिवृत[20] सु ॥ ३२ ॥

उपांशु कहते हैं) अप्रत्यक्ष [पीठपिछाड़ी] कहे जिस माफिक ॥२४॥ १ रावरू कहे इस माफिक २ छः देवताओं से याचना करके ३ यज्ञ का स्थल सोधने को गये. ४ समीप के ५ वर्षा के ६ जल से ७ कीचड़ नहीं होवे ऐसा ॥ २७ ॥ ८ लम्बा चौड़ा ९ वेद में कहीहुई रीति ॥ २८ ॥ १० मुड्डुत हाथ (मूठी बन्ध कियाहुआ खूणीं तक हाथ)॥२९॥ ११ यज्ञ की १२ विमित नामवाली शाला रची जिसके बीच १३पूर्व दिशा में १४मोटा और बीच में बलवाला १५ऊंचा १६वांस रोपा॥३०॥ १७ लम्बी थूणीं रोपी उसको पूर्वदिशा में रखकर दो दो हाथ के चौड़े तीन दरवाजे उत्तरादिशा को छोड कर तीनों दिशाओं में बनाये, अर्थात् उत्तरदिशा में द्वार नहीं रक्खा ॥ ३१ ॥ १८ ऊपर कहीहुई विमित नाम की शाला से १९ विमित से वडा दीक्षित के लिये घर किया २० चौतरफ से ढकाहुआ पूर्व दिशा में दरवाजा बनाया ॥ ३२ ॥

दीक्षित गेह प्रमान, वरु[1]नदिसा पर विमितसौं ॥
पुनि परि[2]वृत अभि[3]धान, सुभ प[4]तनीसाला रचिय ॥ ३३ ॥

दोहा

यौं पतनी१ यजमान २ के, गृह दुव २ परिवृत नाम ।
पश्चिम उत्तर विमितसौं, विहित बनाय ललाम ॥ ३४ ॥
देवयजं[5]नसौं बरुनदिस, दुव २ परिवृत मित[6] दच्छ ।
बिरचिय साला वा[8] विमित, अपर[9] सोधि भुव अच्छ ॥ ३५ ॥

षट्पात्

यौं अध्व[10]रथल बिरचि गेह चालु[11]क्य आय करि,
यू[12]पाहूति निमित्त अग्नि आहवनीयहि वरि ।
उद्धरि समि[13]दाधान परिस्त[14]रणादि जुक्त जिम,
स[15]य दक्खिन गहि स्रुक[16]हिं आ[17]ज्यसंस्कार पूर्व इम ॥
आहूति च्यारि४यजमान पृथु५या स्रुक करि मंत्रित उचित,
सुचि आहवनीयक[18] कुंड बिच होमिय जूपाहूति हित ॥३६॥
सौम्य आज्यकों मध्य थप्पि गुप्तहि[19] तदनंतर,
भूमि पंच संस्कार समारोपं[20]ण हित विधिवर ।

---

१ विमित शाला के पश्चिम दिशा में २परिवृत ३नामवाली यजमान की स्त्री के लिये शुभ शाला रची॥३३॥ इसप्रकार स्त्री और यजमान के लिये परिवृत नाम के दो घर विमित नाम की शाला से पश्चिम और उत्तर दिशा में उचित और सुन्दर बनाये ॥३४॥ ५देवपूजन के स्थान से पश्चिम दिशा में परिवृत के ६नाप समान ८अथवा विमित के समान ९दूसरी सुन्दर भूमि सोध कर ७ चतुरों ने दो घर बनाये ॥ ३५ ॥ १०यज्ञ का स्थल ११सोलंखी वंश के राजा १२यूप की आहूति के निमित्त आहवनीय (होम के लिये संस्कार करके इकट्ठा कियाहुआ अग्नि) अग्नि को वरा और अग्नि जलाने का काष्ट आदि १३इंधन स्थापन किया हुआ था उसको उठाया और १४आच्छादन युक्त किया अर्थात् मण्डप तना, फिर दाहिने १५हाथ में १६स्रुवा लेकर संस्कार (शोधन) कियेहुए १७घृत से यजमान पृथु ने चार आहूति इस स्रुवे से उचित मंत्रों के साथ आहवनीय १८अग्नि के कुण्ड में यूप (यज्ञ खंभ) के निमित्त होमी ॥ ३६ ॥ सोमलता के रस और घृत को बीच में गुप्त रख कर जिसे पीछे श्रेष्ठ रीति से आरोपण करने के [illegible] पांच वार [illegible] की, होम का अग्नि

उद्धरि आहवनीय १ [1]गार्हपत्य २ हिं समंत्र जहँ,
[2]अरणी दुव आरोपि तदनु[3] नृप सुनहु कृत्य तहँ ॥
अरणी [4]मुख मख उपहारें[5] सब सकटन[6] बिच धरि मुदित मति।
सुभ सांतिपाठ मंगल सुनत पहुँचिय [7]सत्र निकेत[8] प्रति॥३७॥
जाय तत्थ जजमान विरचि कर पद प्रक्षालन[9],
सोम १ रु अरणी २ स्वकर[10] गहे करि उचित आचमन ।
पूर्वद्वारसाला प्रवेसि सह सोम [11]अरणी [12]संरि,
पूर्वसाल तरुथंभ परसि दक्षिण [13]कराग्र करि ।
पढि मंत्र तदनु[14] मखसाल बिच उच्चथान सोमहिं धरिय,
[15]खर१[16]गार्हपत्य१बिच पंच५छिति संस्कार५हु [17]अध्वर्यु किय ।
गार्हपत्य १ मथि [18]थप्पि तदनु तासों आधानेव[19],
[20]प्रक्रमं अष्ट ८ प्रमान देस तजि [21]अंतराल लव ।
खर २ करि आहवनीय २ तीन प्रक्रम पुनि भुव तजि,
दक्षिणाग्नि ३ खर ३ करिय भूमिसंस्कार उक्त ५ भजि ।
संकल्य विहित हवनीय१अरु दक्षिणाग्नि२विहरण करिय,

और गार्हपत्य[1] (गृहपतिर्यजमानस्तेन संयुक्तः गार्हपत्यः) अग्नि विशेष को मंत्रों सहित उठा कर दो अरणी[2] (दो लकडिओं को परस्पर रगड कर होम के लिये अग्नि पैदा करते हैं उन काष्ठों का नाम अरणी है) स्थापन करी जि[3]से पीछे जो काम हुआ सो हे राजा सुनो. अरणी को आदि[4] लेकर यज्ञ की सब सामग्री[5] प्रसन्न मन से [6]गाडों में भर कर मङ्गलदायक शान्तिपाठ सुनते हुए [7]यज्ञघर में गये ॥ ३७ ॥ ९हाथ पग धोये १०अपने हाथ में ११अरणी को १२ चलाकर १३पूर्व कीशाला में वृक्ष का खंभा था जिसको हाथ के अग्रभाग से स्पर्श किया १४जिस पीछे यज्ञशाला में ऊंचे स्थल पर सोम लता को रक्खा और तेज[15] [16]गार्हपत्य अग्नि में [17]अध्वर्यु (यजुर्वेद के ऋत्विज) ने भूमि को पांच वार शुद्ध की ॥ ३८ ॥ मथन कीहुई गार्हपत्य अग्नि का रख[18] कर उसीसे अग्नि को स्थापन[19] किया और उसके भीतर[20] थोडी सी जगह छोड कर आठ [21]प्रदक्षिणा की, फिर आहवनीय अग्नि का तेज करके तीन पैंड भूमि को छोड कर ऊपर कहे अनुसार भूमि को शोध कर दक्षिणाग्नि [होमाग्नि विशेष] को तेज़ किया फिर संकल्प करके आहवनीय और दक्षिणाग्नि का विहार कराया जिस पीछे अध्वर्यु ने सोम के अर्थ पृथु राजा को मांस के बिना

पल बिनु हविष्य अध्वर्यु तहँ पृथुप्कौं सोम निमित्त दिय ॥३९॥

दोहा

यह पूर्वान्हिक कर्म करि, अब अपरान्ह विशिष्ट ॥
दीक्षित दंपति २ किय असन, पायसादि जो इष्ट ॥ ४० ॥
ही रुचि तो माहेय बिनु, करि पललहु आहार ॥
मख निमित्त धन काहु कर, दीक्षित दिन्न उदार ॥४१ ॥
दीक्षासौं उत्तर तरफ, परिवृत मंदिर माँहिं ॥
भरि कीलाल करीर इक, अग्गहि थापित आँहिं ॥ ४२ ॥

रोला

चंडिल तहँ चालुकहिं आय बैठाय पूर्वमुख,
उत्तरमुख रहि अप्प नखरहरनी गहि विधि रुख ।
दक्खिन सय अंगुष्ट करज पहिलें छेदन करि,
पुनि प्रदेसिनी प्रमुख चउन ४ के महाराज हरि ॥ ४३ ॥
तदनु सव्य कर नखर तदनु दाहिन पयके पुनि,
वाम चरनके विहित लये मुंडक उतारि लुनि ॥
पुनि सिर दक्खिन देस केस कंकत सँवारि सब,

हविष्य [होम ने योग्य, अथवा भोजन विशेष) दिया ॥ ३९ ॥ यह मध्यान्ह से पहिले का कर्म करके अब मध्यान्ह से पीछे के काम में युक्त हुए और दीक्षा लिये हुए पति पत्नी ने दूध आदि जो इच्छा थी वह भोजन किया ॥४०॥ और जो रुचि हुई तो भैंसे को छोड कर अन्य भक्ष्य पशु के मांस को भी भोजन किया और यज्ञ में खर्च करने के निमित्त उस उदार दीक्षित (यजमान) ने किसी के हाथ में धन दिया ॥ ४१ ॥ दीक्षा लेने के स्थान से उत्तर तरफ परिवृत नामक स्थान में पानी का घड़ा पहिले ही भराहुआ था ॥ ४२ ॥ वहां पर नाई ने सोलंखी राजा को पूर्व की ओर मुख करके बिठाया और नाई ने उत्तरमुख रहकर रीति के अनुसार नहरणी लेकर पहिले दाहिने हाथ के अंगूठे के नख काटे और फिर अंगूठ के जोड़े की अंगुली आदि चारों अंगुलियों के नख काटे ॥ ४३ ॥ इस पीछे बायें हाथ के नख, जिस पीछे दाहिने पग के और फिर बायें पग के नख छेदन करके उतारे फिर माथा के दाहिनी ओर के केसों को कंघे (काँघासिये) से सँवार कर

मंत्रसहित तिहिं कलस तोय करि करिय आर्द्र तब ॥ ४४ ॥
तदनु ईसिकाअग्र जुदे काति तीर्थवाक करि ॥
तिनपर दर्भ समंत्र दै रु छेदे छुराग्र धरि ॥
मस्तक उत्तर देस केस सुविहित भिजोय पुनि ॥
बिरचि रीति पूर्वोक्त चतुर कट्टेहि तेहु चुनि ॥ ४५ ॥
कुंतल तदनु सुरीति सिखावर्जित समस्त हरि ॥
बलि भ्रू१पक्ष्म२विहीन कूर्च छेदे छुराग्र करि ॥
कक्ख१गुज्झ२तजि रोम उचित इतरन करि कर्तित ॥
तदनु करिय चालुक्य सुनहु चहुवान हेरि हित ॥ ४६ ॥

॥ सोरठा ॥

मसकी तरुसौं जत्थ, रदधावन जाजक बिरचि ॥
त्रिदसनतटिनी तत्थ, अचवन करि न्हायो समनु ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

पूरब वा उत्तर तरफ, रह्यो निकासि तजि बारि ॥
सुद्ध१अरोमक२अल्प दस३,क्षौम४अहत५पट धारि ॥ ४८ ॥
यौं परिवृत प्रातीच्य विच, प्रतिप्रस्थाता आय ॥

मंत्र हुए घड़े के पानी से केसों को गीला किया॥४४॥जिस पीछे बाण के फल (भाल) के अग्रभाग से कितनेक केस दूर करके उन पर मंत्रा हुआ डाभ देकर पाछणा के अग्रभाग से काटे, फिर मस्तक के बाँई ओर के केसों को भिगो कर पहिले कहीहुई रीति से उनको भी काटे ॥४५॥ इस पीछे चोटी को छोड कर सब मस्तक के केस काटे फिर भुँवारे और नेत्रों की पलकों के बिना बाकी के केस पाछणा के अग्रभाग से काटे और कांख और गुह्यस्थान के केसों को छोड कर दूसरे केसों को उचित रीति से काटे, जिस पीछे सोलंखी राजा ने क्रिया सो हे चहुवाण रामसिंह हित के साथ सुनो ॥४६॥ वह यज्ञ करनेवाला उदुम्बर (ऊमर) वृक्ष का दातन करके गंगानदी में आचमन करके न्हाया ॥४७॥ जल को छोड कर पूर्व अथवा उत्तर तरफ खड़ा रहा और शुद्ध बिना केस लगीहुई नवीन पीताम्बर (रेशमी वस्त्र) की छोटी धोवती (अधोवस्त्र) धारण की ॥४८॥ इस प्रकार परिवृत और पश्चिमदिशा की शाला के बीच में आकर प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज ने यजमान की स्त्री को

दीक्षा जाजक नारिकौं, मंत्र बिहीन लिवाय ॥ ४९ ॥
तदनु तास नख करनके, नापित सातित ठानि ॥
अंघ्रिनके नखरहु हरे, बपन विकल्प प्रमानि ॥ ५० ॥
तानैं मंजन साऽऽचमन, थावर जल बिच कीन ॥
पति पट तुल्यहि धारि पट, उत्तरीय जुत लीन ॥ ५१ ॥

॥ रोला ॥

तदनु आय अध्वर्य्यु गह्यो जाजक चालुक कर,
प्रविसि पूर्वके द्वार जाहि जान्यौं जातक घर ॥
प्रतिप्रस्थाता आय पकरि पतनी मृदु पानी,
पश्चिम द्वार प्रवेसि तास साला तिहिं आनी ॥ ५२ ॥
दीक्षणीयि पुनि इष्टि विरचि निगमोक्त मंत्र नय,
विष्णु चरुव तिहिं वीचि कियउ ग्यारह११कपालमय ॥
हवि विकल्प करि चरु द्वितीयर्पुनि आदित्यन हित,
करत करत चहुँ कोद हाक हाहा हुव जित तित ॥ ५३ ॥

दोहा

इम विरचत आदित्य चरु, १अरहि अचानक आय ॥

विना मंत्र के दीक्षा लिवाई ॥४९॥ जिस पीछे नाई ने उसके हाथों के नख काटे और चरणों के नख भी लिये, मुण्डन होता भी है और नहीं भी होता इसमें विकल्प है ॥५०॥ यजमान की उस स्त्री ने आचमन के साथ ठहरे हुए जल में स्नान किया, नदी में नहीं; और पति के वस्त्र समान ही वस्त्र धारण किया परन्तु शरीर के ऊपर ओढने का वस्त्र सिवाय धारण किया ॥५१॥ इस पीछे अध्वर्यु नामक ऋत्विज ने यजमान चालुक्य का हाथ पकड़ा और पूर्व के द्वार में होकर घुसे, जिसको शुभाशुभ निर्णय करने का घर जाना और प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज यजमान की स्त्री का कोमल हाथ पकड़कर पश्चिम द्वार में प्रवेश करा कर उस स्त्रीशाला में उसको लाया ॥ ५२ ॥ दीक्षा लीहुई उस स्त्री ने वेद के कहेहुए मंत्रों की नीति से यज्ञ किया और ग्यारह कपालमय विष्णु का चरु (होमने का अन्न) करके होमने के पदार्थों को विकल्प करि दूसरा चरु बारह सूर्यों के लिये करते करते ही जिधर देखें उधर चारों ओर हाहाकार हुआ ॥५३॥ १ शीघ्र

चलहु लरन चहुवानके, दूतन कहिय दबाय ॥ ५४ ॥
बिंदुसार५को वैर अब, रकस्यो जात न रंच ॥
सुपहुं[1] सुधन्वा६तास सुत, जच्चत प्रबल प्रपंच ॥ ५५ ॥
सुनत एह पृथु द्विजन सन, पुच्छिय कोन उपाय ॥
कहिय मुनि न जुद्धहि करहु, अब बन्यों सु विधि आय॥५६॥
मख[3] प्रत्यूहज मेटनों, दुहिता[4] तौ तिहिं देहु ॥
विधि इहिं तव इष्टहु बनैं, अरिपन छोरैं एहु ॥ ५७ ॥
सुनि यह नय[5] चालुक सुमति[6], सचिव सुमति[7] सुत बुल्लि ॥
पठयो नृप चहुवान पँहँ, खलु[8] उत्तर यह खुल्लि ॥ ५८ ॥
कुंत[9]१थंभ१मण्डप२करी[10]२,सर३जव[11]३विष्टर[12]४बाजि४ ॥
आये व्याहन अप्पतो, आये न करन आजि[13] ॥ ५९ ॥
उचित रूच्य[14] मम आत्मजा[15], व्याहहु वैर विहाय ॥
प्रतीकार[16] यह धर्मपथ, सास्त्र कहत दरसाय ॥ ६० ॥
अरु जो जंगहि इष्ट तो, होन देहु मख पूर्ण ॥
हम लरैं न अवभृथ[17] अवधि, तुम भल मारहु तूर्ण ॥ ६१ ॥
सुनि मंत्री यह सुमति सुत, आयो अपर[18] अनीक[19] ॥
स्वामिकथित[20] बुल्ल्यो सुपहुं, मन्नहु तजहु समीक[21] ॥ ६२ ॥
सद्योधारन तब सचिव, लहि एकांत नरेस ॥

१श्रेष्ठ राजा २ब्राह्मणों से ३यज्ञ का विघ्न मेटना होवे तौ ४पुत्री ५नीति ६श्रेष्ठ बुद्धिवाला ७सुमति नामक कामदार के पुत्र को बुलाकर ८ निश्चय ९भाले हैं सोही थंभ हैं, और आप के साथ में १०हाथी है वही मंडप है, वाण हैं सो ही ११जवारे हैं, और घोड़े हैं सोही १२आसन (बाजोट) हैं, इस सामग्री से आप विवाह करने को आये हो १३युद्ध करने नहीं आये हो. मेरी १५बेटी के उचित आप १४वर हो सो वैर छोड कर विवाह करो; यह धर्ममार्ग का १६वैर धोना (अपकार करनेवाले का पीछा अपकार करना) है सो शास्त्र दिखा कर कहता है॥६०॥ १७अवभृथ[यज्ञ समाप्त करके अंत में स्नान करैं उसको अवभृथ स्नान कहते हैं] की अवधि तक हम नहीं लड़ेंगे तुम भले ही शीघ्र मारो ।६१। १८दूसरी १९सेना में २०अपने स्वामी का कहा हुआ बोला कि हे राजा २१ युद्ध ॥ ६२ ॥ तब सद्योधारण नामक कामदार ने राजा सुधन्वा को एकान्त में

बुल्ल्यो यह हितकी बनी, देखत काल रु देस ॥ ६३ ॥
मेरे अग्गहि पति जनक, पठये इन परलोक ॥
न लरे मथुरा १ नागपुर २, अंग ३ अयोध्या ४ ओक ॥ ६४ ॥
औसो चाल्लुक पृथु ५ इहां, रचतो जो पहु रारि ॥
मरतो आयो चहि मरन, नृप मैं तुम्हहिं निवारि ॥ ६५ ॥
तुम सन होतो अनृण तब, पै अब समय प्रतीप ॥
मंडलेसको मारिबो, हो श्रमसाध्य महीप ॥ ६६ ॥
ए अवभृथ लग नहिं लरैं, जो तुम सस्त्र बिहीन ॥
मारहु तौ पातक महत, यह नहि धर्म अधीन ॥ ६७ ॥
बिट्टी अप्पत वैरमैं, सोहि करहु स्वीकार ॥
जिय संदेहहि एह जो, साजिहैं कटक प्रसार ॥ ६८ ॥
सद्योधारण सचिवको, मन्न्यौं नृप यह मंत्र ॥
आय सुमति सुतसौं कह्यो, सुहि हम करहिं स्वतंत्र ॥ ६९ ॥
मुंडित मुख पुब्बहि भयो, तुमरो नृप लखि तोर ॥
करखि मुच्छ मंडै कलह, वहहि जेयैं नहिं और ॥ ७० ॥
सुनि अंगीकृत पृथु ५ सचिव, इत अक्खिय सब आय ॥
उनमन्नी कहि लरहिं अब, क्यों वह मुच्छ कटाय ॥ ७१ ॥

सोरठा ॥

लेकर कहा कि देश काल देखते यह अपने लाभ की बात हुई है ॥ ६३ ॥ हमारे स्वामी और १ आप के पिता को मथुरा आदि प्रसिद्ध २घर (घराने) हैं परन्तु कोई नहीं लड़े ॥ ६४ ॥ ३ हे राजा ४ मैं तो मरना चाह कर ही आया था सो तुमको लड़ाई से मना करके मरता ॥ ६५ ॥ तब तुमसे उऋण होता ५ परन्तु अब समय ६ उलटा है ७ हे राजा मण्डलेश्वर पृथु का मारना परिश्रम से होनेवाला था ॥ ६६ ॥ ८ यज्ञ के अन्त के स्नान तक ९ बड़ा पाप है ॥ ६७ ॥ १० बेटी ११ देता है ॥ ६८ ॥ १२ सलाह ॥ ६९ ॥ हमारा १४ प्रताप देखकर तुम्हारा राजा पहिले ही १३डाढी मूंछ कटा कर मुण्डित होगया है और जो मूंछ खींच कर युद्ध करै वही १५ जीतने योग्य है दूसरा नहीं ॥ ७० ॥ पृथु के कामदार ने यह सुन कर १६ स्वीकार किया और सब बात इधर पृथु से कही उनने भी मानली कि अब मूंछ कटा कर क्यों लड़ें ॥ ७१ ॥

पृथु५को पट्टप पुत्र, कटु वच सुनि निज रिपु कथित ॥
नाथ ६ सुधारि *तनुत्र, लरन होन संमुह लग्यो ॥ ७२ ॥
जनक कह्यो तब जाहि, उनको बरसत बैर इत ॥
अध्वर पुनि घर आहि, बच्छ बिगारहु यह बिधि न ॥७३॥
जय लहतोहि जरूर, चाहुवान चालुक्यसों ॥
को मानत यह कूर, वारिधि चलनक भूमि बिच ॥ ७४ ॥
बुल्ले जे कटु बोल, ऊन करत तेहू उनहिं ॥
न करत को मख नोल, मुंडित मुख चंडासि जिम ॥ ७५ ॥
नाथ ६ हिं जनक ५ निहोरि, सूनु बिसंधादि ४९ न सहित।
जेई जदपि हित जोरि, नई तदपि कीनों नृपति ॥ ७६ ॥
वेग सुधन्वा६बुल्लि, विधि नीराजन मुख विरचि ॥
खूब नेह हिय खुल्लि, व्याही तिहिं स्वसुता विभा६।१॥७७॥
दै दायज बहु द्रव्य, विहित प्रेम कीनी विदा ॥
भूप परनि इम भव्य, विभु आनी रानी विभा ६।१ ॥ ७८ ॥
अर्थि द्विजनके ओघ, इंद्रप्रस्थपति आढ्य करि॥
मारि दरिद्रहिं मोघ, सहज सुधन्वा६करत हुव ॥ ७९॥

शत्रु के कहेहुए कड़वे वचन सुन कर नाथ नामक पृथु के पुत्र ने * कवच धारण किया और लड़ने को सन्मुख होने लगा ॥ ७२ ॥ तब १ पिता ने उससे कहा २ फिर अपने घर में यज्ञ ३ है ४ हे वत्स [पुत्र] मत बिगाड़ो यह विधि नहीं है ॥ ७३ ॥ ५ समुद्र ही है लहँगा जिसके ऐसी भूमि में कौन कुटिल यह मानता कि सोलंखी से चहुवाण जरूर विजय पाता ॥ ७४ ॥ उन्होंने जो कड़वे वचन कहे वे उनको ही ६ हलका करते हैं, ७ नोल्या रूपी ८ चहुवान के समान यज्ञ में मुण्डित मुख कौन नहीं करता है अर्थात् सभी करते हैं ॥ ७५ ॥ १० विसंध को आदि लेकर उनचास ९ पुत्रों सहित नाथ नामक पुत्र यद्यपि ११ विजय पानेवाला था १२ तोभी उस पिता पृथु राजा ने नाथ को समझा कर मिलाप करके यह नई बात की ॥ ७६ ॥ १३ आरती १४ आदि १५ विभा नाम अपनी पुत्री को ॥ ७७ ॥ १६ बहुत बडप्पनवाली ॥ ७८ ॥ याचना करनेवाले ब्राह्मणों के १७ समुदाय को दिल्लीपति सुधन्वा ने सहज ही १८ धवान् कर दिये, और दारिद्र्य को मारकर १९ दीन कर

किन्नैं मखं मुख काम, कामं सकल दैं जाचकन ॥
इहिं कारन इहिं नाम, हुव उदारहार४हु अपर ॥ ८० ॥
भप सुधन्वा६गेह, कलह५जई प्रकट्यो कुमर ॥
६अरणि बिभा६१सुचि एह, नाम बीरधन्वा७निडर ॥ ८१ ॥
याहि तरुन लखि अप्प, द्रुतहि उचित निज पट्ट दै ॥
बोध अमित लहि बप्प, वपु रहि बन तियजुत तज्जिय ॥८२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे तृतीय३राशौ वप्तृवैरोद्धरणार्थसूनुसुधन्वप्रस्थानानियतदीक्षचालुक्यपतिपृथुपुत्रीविवाहनप्राप्तस्वपुरप्रवेशमहामखदक्षिणादिदानाऽनुष्ठानकुमारवीधन्वोद्भवनबिभासहितबपूर्जवितरितबिभवबैन्दुसारिवपुस्त्यजनं तृतीयो३मयूखः ॥ ३ ॥आदितः पंचचत्वारिंशत्तमः ॥ ४५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम् ॥

भूप बीरधन्वा७हुभयो बर, चालुकपृथु५दोहित्त धर्मधर ॥
अर्थी करे११असोक१२जनक जिम,याको नाम असोक७हु हुव इम१

दिया ॥ ७९ ॥ सुधन्वा ने १ यज्ञ २ आदि कार्य किये और याचक लोगों की जो ३ कामना थी वह सब दिया, इसकारण इसका ४ दूसरा नाम उदारहार हुआ ॥ ८० ॥ ५ युद्ध जीतनेवाला ६ सुधन्वा की बिभा नामक राणी रूपी अरणि (यज्ञ की अग्नि निकालने का काष्ठ) से ७ अग्नि रूपी वीरधन्वा युद्ध जीतनेवाला निडर पैदा हुआ ॥ ८१ ॥ इस वीरधन्वा को युवा देख कर आप (सुधन्वा) ने ८ शीघ्र ही अपना पाट देकर अत्यंत ज्ञान के साथ ९ पिता ने वन में रह कर स्त्री के साथ १० शरीर छोडा ॥ ८२ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में पिता के वैर का उद्धार करने के लिये सुधन्वा का जाना, और यज्ञ की दीक्षा में नियत सोलंखी वंश के पति पृथु की पुत्री बिभा से विवाह करके अपने पुर में प्रवेश करना, और बडे यज्ञ दक्षिणा और दान का अनुष्ठान करना, कुमर वीरधन्वा का होना, और बिभा सहित पुत्र को दिया है वैभव जिसने ऐसे बिन्दुसार के पुत्र (सुधन्वा) के शरीर छोडने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ और आदि से पैंतालीस मयूख हुए ॥ ४५ ॥
११श्रेष्ठ१२याचना करनेवालों को शोक रहित किया १३पिता ने किये जिस

इकदिन गो मृगया दिस उत्तर, सर आघात हनैं मृग सूकर ॥
तहँ पिपासु खोजत जल उत्तम, अटत लह्यो कोउक मुनि आश्रम॥२॥
आसन१पाद्य२प्रमुख[6] तव आदर, मन्नि उचित याको किय मुनिबर॥
जहँ सोमा अच्छरि उरजाई, सुता अनघ गंधर्व सुहाई ॥३॥
पुत्री सम पाली मुनि जाकौं, दिय भद्रा७।१सु बीरधन्वा७कौं ॥
परनि असोक७मोद अति पायो, इंद्रप्रस्थ भद्रा७।१जुत आयो॥४॥
भयउ वीरधन्वा७सुत भूपति, जयधन्वा८अभिधान[10] महामति ॥
जो पंडित वाँचस्पति[11] जैसो, एककाल अपर[12] न हुव ऐसो ॥ ५ ॥
भ्रम कट्टत सबको याको भुव[13], अपर नाम संकाविदार८हुव ॥
नृप जदुतनय क्रोष्टु कुल दीपक, कालंजर प्रति नाम प्रतीपक[14]॥६॥
सुता तास रुचि८।१नाम सयानी, इहिं८नृप जित्ति स्वयंबर आनी॥
बिस्तर[15] करत आयु लघु वित्तैं, जु[16] कवि समास[17] रचैं सुहि जित्तैं ॥७॥
जयधन्वा८नृपसौं रुचि८।१मैं सुव[18], वीरसिंह९अभिधान[19] वीर हुव॥
करि करि विजय सु विजय९कहायो, प्रतिरन सुजस अपूरब पायो॥८॥
पाँटलिपुत्र[20] नगर रविकुल बर, धर्मकेतु नृप हुतो धर्मधर ॥
तास सुता कमला९।१चित चाह्यो, विजय९हु जित्ति स्वयंबर व्याह्यो॥९॥
कमला९।१मैं हुव बीरसिंह१०सुत, जो घरसिंह१०नाम निजगुन जुत॥
अरु कन्या गौरी१०।१अभिधानी[21], निपुन भई सिक्खी गुन नाना॥१०॥
कमलसेन९प्रामार राज सुत, प्रेम१०हिँ जो व्याही विधान जुत॥

प्रकार १ गया २ शिकार ३ बाण की चोट से ४ प्यासा ५ फिरते हुए ने ६ अर्घ पाद्य ७ आदि ८ सोमा नामक अप्सरा के पेट से जन्मी हुई ९ पाप रहित १० नामवाला ११ बृहस्पति १२ उसके समय में दूसरा ऐसा नहीं हुआ १३ पृथ्वी पर इसका दूसरा नाम शंकाविदारण हुआ. यदु के पुत्र क्रोष्टु के कुल को प्रकाशित करनेवाला कालंजर नगर का पति, जो कालंजर से १४ उलटा नामवाला (कालंजर का नाम कालिमा सहित है, और यह शंका रूपी कालेपन को मिटानेवाला है) है ॥६॥ इसका १५ विस्तार से वर्णन करने में मेरी थोड़ी सी उमर है सो इसी में बीत जावे इस कारण १६ जो कवि १७ संक्षेप से वर्णन करै वही विजय पावे १८ पुत्र १९ नामवाला २० पटना शहर में सूर्य वंशियों में श्रेष्ठ २१ नामवाली

प्रँम१०हु मंडलेस हुव सुप्रजं[1],जमदच्छा[2]११ऽऽदि३जास हुव अंगज[3]।११।
चाहुवान वरासिंह१०नरेश्वर, हुव अतिजई रिपुन सिर जँजि[4] हर ॥
उडि उडि दूर दूर रन पायो, जँव[5] करि मारुत१०नाम कहायो॥१२॥
प्रामारी यह पाय रमनिमानि[6], हुव जामिप[8] जामिप[7] जामि[9] परनि ॥
कमला१०।१स्नुषा[10]१०।१कमलसेन९सुता,आई यह रानी निखिल[11]नुता[12]
सोमा १०।१नाम पतिव्रतसागर,मारुत१०महिषी[13] अतिगुनआगर ॥
वरासिंह१०हु याजुत मख बहु जजि,सुर१मुनि२पितर३प्रसन्न करे भँजि[14]
सोमा१०।१जठर[15] भयो मारुत१०सन[16],वीरदंड११नरनाह महामन[17] ॥
सालिसिरा गंधर्वसुता यह, व्याह्यो बिरजा११।१नाम बडे मह[18]।१५।
नृप वरासिंह१०तनूज[19] विदित भुव,अपर[20]२अभिख्या[21] करि सुमेरु११हुव।
बिरजा११।१विचया११तैं अभिरामक[22],भो अरिमंत्र१२जयंत१२द्विनामक

षट्पदी

तच्छसिलापति सुरथ सोम सोमक[23] कुल मंडन,
तनया[24] बरुनी१२।१तास परनि अरिमंत्र१२धराधन[25] ॥
कल्पविटपि[26] बुध[27] कविन द्विजन जाजक[28] श्वेत कि[29] हुव,
या१२कै सुत मानिक्यराज१३सुहि सूर१३नाम दुवर ॥
कुंतलनरेस हैहय तिलक रुक्म कवच तनया जया१३।१,
मानिक्यराज१३महिषी लहि रु प्रति आश्विन परसिय गया।१७॥

१श्रेष्ठ संतानवाला२आदि३पुत्र४महादेव को पूज कर५वेग के कारण६स्त्रियों में मणि रूपी पँवार वंश की स्त्री को पाकर और ७ बहिनोई (बहिन का पति) की ९ बहिन को परण कर पीछा उसका ८ बहिनोई हुआ. कमला की १० बहिन और कमलसेन की बेटी ११ यह रांणी १२ सब से १३ स्तुति की हुई आई ॥ १३ ॥ १४ सेवन करके १५ सोमा के पेट से १६ से १७ वीरदंड नामक बडा मनस्वी राजा, सालिशिरा नामक गंधर्व की बेटी बिरजा का विवाह।१८बडे उत्सव के साथ १९पुत्र २० दूसरे २१ नाम से २२ सुन्दर तक्षशिला का पति २३ चन्द्रवंश के मंडन सोम नामक राजा की २४ पुत्री बरुनी को२५राजा अरिमंत्र परण लाया यह राजा २७पंडित और कवियों का२६कल्पवृक्ष और२९किधूं श्वेत राजा के समान ब्राह्मणों का२८यजमान हुआ.

प्रकटयो पुष्कर१४नाम सुनहु मानिक्यराज१३सुव ॥
बिथरिय याको बिजयपाल१४अभि[1]धान अपर भुव ॥
सो मरु[2]पति प्रतिहार भूप मल्लकरम१३तनया ॥
पद्मावति१४।१हिं बिबाहि नि[3]लय आनी हतअ[4]नया ॥
या१४कैहु भयो बसुधा विदित असमंजस१५अभिधाम सुत
गोनर्दराज तनया कला१५।१व्याह्यो रविकुल जानि नुत[5] ।१८।
असमंजस१५ कै तनय कला१५।१बिच प्रेमपूर१६हुव ॥
दूरथको दौहित्र धीर भो यहहु बीर ध्रुव ॥
निजमातुल[6] नलकेतु सुता ललिता१६।१सु बिवाह्यो ॥
या१६कै सुत हुव भानुराज१७चतुरन मन चाह्यो ॥
सो पै स्वँकीय मातुल सुरथ सुता सुमध्या१७गो परनि ॥
भो मानसिंह१८ताकै तनय चउ४भुज कुल चक्कनतँरनि ॥ १९॥

दोहा

ध्वज महीप प्रतिहारसौं, गयो तबहि मरुदेस ॥
बिंबस्थल अभिधा[11]न पुर, बिरचि रह्यो तहँ एस ॥ २० ॥

षट्पदी

मालवपति परमारबंस२०तनया कल्यानी१८।१ ॥
मानसिंह१८महिपाल परनि आनी पटरानी ॥
हुव ताकै हनुमान१९धर्मपाल१९ हु सु कहायउ ॥
सो मा[12]तुल धीहर२१सुताहि कमला१९।१बारि लायउ ॥
हुय चित्रसेन२०ताकै तनय सो सु बीरपाति सलसुता ॥
चंद्रिका२०।१नाम परन्यौं चतुर ससिकु[13]लभूषन संजुता[14] ॥२१ ॥

१ दूसरा नाम भूमि पर २ मारवाड़ का पति ३ घर में ४ अनीति को अथवा आपदा को मिटानेवाली ५ स्तुति योग्य ६ अपने मामा की बेटी ७ वह भी अपने ८ मामा सुरथ की पुत्री मध्या को परण गया ९ चहुवाण के कुल के १० गणों का सूर्य बिम्बस्थल है ११नाम जिसका १२ धीहर नामक अपने मामा की बेटी को ही १३चंद्रकुल रूपी भूषण के १४साथ अर्थात् चंद्रकुल ही है भूषण जिसका

भपति बेणु महीप२१ बिंबथलपुरप[1] महाबल ॥
प्रातिहार कुलदीप लग्यो जित्तन भुव मंडल ॥
तानैं यह नृप चित्रसेन२० चहुवान हन्यौं लरि ॥
चित्रसेनकैं तनय संभु२१ नृप हुव सुपुराय करि ॥
भीमादि च्यारि४ पुत्रन सहित बेणु महीप२१ हु जिहिं हन्यौं ॥
ताकीहि परनि तनया[2] प्रभा२१।१ बिदित संभु२१ दुल्लह बन्यौं ॥२२॥
स्वर्ण महीपक२४ नाम स्वीय[3] सालर्क सतके हित ॥
अखिल बिंबथल अप्पि[5] अप्प[6] आयउ आलय[7] इत ॥
महासेन२२ अभिधान संभु२१ नृपकैं तनूज हुव ॥
जाहि पद्मनिधि अप्पि सखा धनपतिहु भयौ ध्रुव ॥
ऋद्धीस२२ नाम नृपको अपर[10] निधि कारन करि वित्थरिय ॥
जिहिं स्वर्ण महीपक२४ की स्वसा[11] जया२२।१ परनि जग जस करिय॥
महासेन सुत सुरथ२३ भयो नृप धर्मधुरंधर ॥
सो परमार धरा विधार२५ तनया तारा२३।१ बर ॥
सुरथ सूनु नृप रुद्रदत्त२४ सुहि कर्णपाल२४ हुव ॥
राष्ट्रसेन मातुले[12] सुता सु सत्ता२४।१ ब्याह्यो ध्रुव ॥
तामाँहिं तास हुव हेमरथ२५ सेनपाल२५ सुहि महिपमनि ॥
पुष्कर नरेस जद्दव बिघस सुता सांति२५।१ यह गो परनि ॥२४॥
तत्थ हेमरथ तनय भयउ चित्रांगद२६ भूपति ॥
पाटलिपुत्रपं[13] भीम की सु ब्याह्यो सुता सुमति२६।१ ॥
नाम सुमतिको अपर[14] सुन्यौं भुति२६।१ हु कछु ग्रंथन ॥
किते नाम कलिका२६।१ हु जंपत[16] तीजो३ मांगधजन ॥
यामाँहिं चित्ररथ२७ नाम सुत चित्रांगद नृपतैं भयो ॥
अभिधान[17] याहि समुचित[18] अपर२ द्विजन चंद्रसेन२७ हु दयो ॥२५॥

१ पति २ पुत्री ३ अपने ४ शाले के बेटे के लिये ५ देकर ६ आप ७ घर ८ नव निधियों में से पद्म नामक निधि देकर ९ कुबेर भी मित्र हुआ १० उस राजा का दूसरा नाम ऋद्धीश (ऋद्धियों का स्वामी) निधि के कारण से फैला ११ बहिन १२ मामा की बेटी १३ पटना १४ दूसरा १५ कहते हैं १६ भाट लोग १७ इसका दूसरा नाम १८ उचित.

दोहा

जदु१हैहय२अर्जुन३जनन, द्रविड भूप दुर्योध ॥
ताकी तनया चित्ररथ२७।१, व्याही बल्गु[2]२७।१सुबोध ॥ २६ ॥
भूप चित्ररथकै भयो, सुत बाल्हीक२८सुजान ॥
वत्सराज२८याको विदित, अवनि[3] अपर२[4]अभिधान ॥ २७ ॥

षट्पदी

कालंजरपति जदुकुलीन[5] रुचिसेन नरेश्वर ॥
तनया विरजा२८।१तास व्याहि बाल्हीक२८लई बर[6] ॥
धृष्टद्युम्न२९तनूंज[7] भयो याकेहु महाबल ॥
अपर२तास अभिधान विदित बरुन२९हु बसुधातल[8] ॥
बिद्याधरेस[9] बसुमानकी प्रिय दुहिता[10] अलका२९।१परनि ॥
बरुन२९हु नरेस सुरतरु[11] बुधन[12] धन्वी[13] हुव अनुपम धरनि ॥२८॥
बरुनतनय उत्तम३०नरेस विद्याधर दोहित ॥
विश्वाची३०।१जिहिं गेह रही अच्छरि मति मोहित ॥
उत्तम सूनु सुनीक३१हीर हुव जिहिं जठराकर[14] ॥
वितल[15] जाय इहिं बीर हनै दानव हल१कूबर२ ॥
दानवी[16] सुता[17] हलकी दसा[18]३१।१सती परनि आनी सुपहु[19] ॥
जिहिं ब्रत करंत सब जुवतिजन[20] विलसन विभव सुहाग बहु॥२९॥

दोहा

सूनु सुबाहु३२सुनीकसौं[21], दसा उदर अभिराम[22] ॥

१वंशों में २वल्गु नामक श्रेष्ठ ज्ञानवाली ३भूमि पर ४ दूसरा नाम ५ यादव वंशी ६ श्रेष्ठ ७ पुत्र ८ भूतल पर ९ विद्याधरों (देवयोनि विशेष) के स्वामी वसुमान् की प्यारी १० पुत्री ११ कल्पवृक्ष १२ पंडितों का १३ धनुषधारी१४ जिसके पेट रूपी खान से हीरा उत्पन्न हुआ१५भूमि के नीचे के लोक में जाकर१६हल नाम दानव की१७ बेटी १८ दशा नामवाली पतिव्रता को १९श्रेष्ठ राजा ने २०सब स्त्रियां (दशा माता के व्रत के नाम से) विभव और सुहाग भोगने के लिये जिसका व्रत करती हैं ॥ २९ ॥ २१राजा सुनीक से दशा के उदर में सुबाहु नामक२२सुंदर पुत्र हुआ, जिसने अत्यंत रूप के

भयो अतुल्ल जिहिँ रूप लहि, पायो मोहन३२नाम ॥ ३० ॥
तिहिँ छत सब भपन तजिय, जान स्वयम्बर जत्थ ॥
मोहन३२तहँ पॅत्तो[1] कॅसमल[2], सोहि लगी इहिँ सत्थ ॥ ३१ ॥
कन्या इतरन[3] बरनकी, दोखन लग्गी दिष्ट[4] ॥
कह्यो क्यौं न बाहुज कर, मिलितो मोहन३२इष्ट[6]॥ ३२ ॥

शुद्ध ब्रजदेशीया प्राकृतभाषा ॥

मनोहरम् ॥

वारह१२विदर्भनकी बंगनकी बीस२०पांड्य,
पत्रि की पचास५०च्यारि४चेदिनकी प्रीति पगि ॥
सत्रह१७विदेहकी रु मागधकी सात७चोल,
पतिकी चतुर्दश१४मनोभँवकी ज्वाल आगि ॥
कोसल१कलिंग२करनाट३नकी एक१एक१३,
सोलह१६सुवीरकी रु द्रविडकी दोय२दागि ॥
दोरि दोरि तोरि लाज लंगर स्वयम्बरतैं,
आई राजकन्या इती१४५मोहनकी लार लगि ॥ ३३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा

दोहा

सर कृत भू १४५मित नृप सुता, इम लखतहि अकुलाय ॥
इन्द्रप्रस्थ आई उलटि, नाँह सुबाहु बनाय ॥ ३४ ॥
जब मथुरापति जद्दवन, कुरुबंसिन पुनि कुप्पि ॥
मृगयारत[11] मोहन हन्यौं, रोस स्वयम्बर[12] रुप्पि ॥ ३५ ॥

कारण मोहन नाम पाया ॥ ३० ॥ जिस स्वयंवर में २ सुंदर (रूपवान्) मोहन १ पहुंचा, वही कन्या इसके साथ होलई ॥ ३१ ॥ क्षत्रियों के सिवाय ३ दूसरें वर्णों की कन्या भी अपने ४ भाग्य को दोष देने लगी कि हमको ५ क्षत्रिय क्यों नहीं किया जो मोहन ६ पति मिलता ॥ ३२ ॥ ७ कामदेव की अग्नि प्रज्वलित होने से ८ अरु ९ कामदेव की ज्वाला से जली हुई । ३३। अष्ट भुजोंवाले मोहन को १० पति बना कर ॥३४॥ ११ शिकार में तत्पर १२ स्वयंवर के रोष को आरोपण करके । ३५ ।

सब१४५नारिन किय सहगमन[1], सुनि यह मारक[2] सँप्पि[3] ॥
बीस२०अनूढा[4] बाहुजा[5], अग्गि[6] जरी वपु[7] अप्पि ॥३६॥
कोसलराज सुसंधिकी, सुता मालिनी३२।१नाम ॥
जिहिँ सुबाहु३२रानी जन्यौं, सूनु[8] सुरथ३३उद्दाम[9] ॥३७॥
जनानिन जुत अपनैं जनक[10], पावत इम परलोक ॥
पट्ट[11] सुरथ३३लहि पंचसिख, अधिप भयो निज ओक[12] ॥३८॥
सतधन्वा सौवीर[13]पति, राजा रविकुल दीप ॥
तनया तास प्रभावती३३।१, परन्यौं सुरथ३३महीप ॥३९॥

षट्पदी ॥

भयउ सुरथकै भरत३४सोहि मदसेन३४कहायउ ॥
कांचीपति दिनकर[14] कुलीन संखसुता पायउ ॥
रानी तिलका३४।१नाम भरत सन हुव तिहिँ जाठर[15] ॥
कृतसुख राजकुमार नाम सात्विक३५वीरनवर ॥
अभिधान[16] या दुवहुरदिय इतर[17] सुकविन सत्यक३५सत्यकी३५॥
व्याह्यो यहै हु तनया विश्वा३५।१पुष्करराज महत्त्य[18]की ॥४०॥
केसरिदेव३६कुमार बीर सात्विक नृपकै हुव ॥
सो लहि पट्ट सजोर भूप जित्तन लग्गो भुव ॥
मोहन ३२ के मारक महीप तिनके सुत नाँती ॥
सर[20] कोदंड सहाय हनैं रन अखिल[21] अराती[22] ॥
याकोहि नाम इहिँ गुन अपर[23] विदित सत्रुजित ३६ बित्थरिय ॥

१ साथ जल गई २ मारनेवाले को ३ आप देकर ४ बिना विवाही ५ क्षत्रियों की कन्या ६ अग्नि में ७ शरीर देकर ८ पुत्र ९ निरंकुश १० अपने पिता को ११ सिंहासन (पंचशिख नाम सिंह का है सो पट्ट शब्द का अन्वय पंचशिख के साथ लगाने से "पंचशिखपट्ट" अर्थात् सिंहासन यह अर्थ होता है; अथवा पांच हैं शिखर (कलश) जिसके ऐसा सिंहासन). १२ अपने घर (राजधानी) में १३ सौवीर देश (शूरसेन से पूर्व और गंडकी नदी से पश्चिम, जिसको अधमाधम मानते हैं) का पति १४ सूर्यवंशी १५ उदर से १६ नाम १७ दूसरा १८ महत्त्य नामक राजा की पुत्री को १९ पाने २० धनुष बाण के सहाय से २१ सब २२ शत्रु २३ दूसरा कारण से इसका दू-

कांबोजनाथ कपिलाश्वकी सुता जया ३६।१ जिहिं नृप बरिय ।४१।
सुपहु सत्राजित सूनु प्रथित विक्रम ३७ हुव भूपति ॥
सो ससिकुल आनर्त भूप सुंगसुता सम्मति ३७।१ ॥
व्याहि भयउ जग विदित कलह निजजनक तुल्य करि ॥
कौरवराज प्रतीप कटक बहुबेर हन्यों लरि ॥
सहदेव ३८ भयउ याकैं सुवन जहँ संतनु भीषम जनक ॥
याकँहँ निकारि जनपद सहित इंद्रप्रस्थ लिय धारि धक ॥ ४२ ॥

दोहा

नृप सुबाहु ३२ के हननतैं, बढि बढि अतुल विरोध ॥
कुरु १ जदु २ कुल १ चंदांसिकुल२, बैरी हुव रिस बोध ॥ ४३ ॥
इम संतनु दिगजय अनखि, इंद्रप्रस्थ लिय आय ॥
भीरु मर्‍यो नहि जात भुव, सो सहदेव ३८ सिटाय ॥ ४४ ॥
लहि सहाय सहदेव३८तब, निज मातुल अरिघाट ॥
मारि सुनाभ महीपकों, लयो देस करनाट ॥ ४५ ॥
नृप आनर्त सहाय पुनि, पौंड्रदेस लिय जित्ति ॥
दोहू २ जनपद दाब्बि इम, किय सहदेव ३८ हु कित्ति ॥ ४६ ॥
मगधराज बसुकी सुता, चतुर ऊर्मिला ३८ चाहि ॥
कुरुकुल वारिधि रतन यह, लिय सहदेव ३८ विवाहि ॥ ४७ ॥
भयो तनय सहदेवके, वीरदेव ३९ अभिधान ॥
नाम अपर ताको कहत, भीमसेन ३९ मतिमान ॥ ४८ ॥
कामरूप नृप कर्णकी, सुता विजोहा ३९।१ शुद्ध ॥
रविकुलजा व्याह्यो रसिक, बीरदेव ३९ रनबुद्ध ॥ ४९ ॥
याके सुत पौंड्रक ४० भयो, सुहि वसुदेव ४० कहाय ॥

सरा नाम १ पुत्र २ प्रसिद्ध ३ चन्द्रवंशी आनर्त देश के राजा सुंग की पुत्री संमति को परण कर. ४ सेना ५ भीष्म का पिता ६ देश सहित ७ क्रोध धारण करके दिल्ली शहर को लेलिया ८ चहुवाण कुल ९ कायर १० अपने मामा की ११ कुरु कुल रूपी समुद्र का रत्न १२ नामवाला १३ दूसरा नाम १४ कामरू देश के राजा कर्ण की १५ सूर्य वंश में उत्पन्न १६ रण में पंडित

वृद्धकर्म कारूसकी, स्वसा विबाह्यो जाय ॥ ५० ॥
दंतवक्त्रकी पितुसिया, निपुन गुनवती ४० नाम ॥
श्रुतदेवाकी जो ननँद, कहियत लोक ललाम ॥ ५१ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणो तृतीयराशौ बीरधन्व७भद्रा७।१जयधन्व८रुचि८।१बीरसिंह ९कमला ९।१ चरित्रवर्णनबीरसिंहसुतागौरी१०कामलसेनिप्रामाररराजप्रेम १० परिणयन बीरसिंहात्मजबरसिंह१०सोमा१०।१तद्बीरदण्ड११बिरजा११।१जयंत१२वरुणी१२।१माणिक्यराज१३जया१३।१पुष्कर१४पद्मावती१४।१त्यसमञ्जस१५कला१५।१प्रेमपूर१६ललिता१६।१भानुराज१७सुमध्या१७।१मानसिंह १८ कल्याणी १८।१ हनुम१९कमला१९।१चित्रसेन२०चन्द्रिका२०।१सम्भु२१प्रभा २१।१महासेन२२जया२२।१सुरथ२३तारा२३।१रुद्रदत्त२४सत्ता२४।१हेमरथ २५सान्ति२५।१चित्राङ्गद२६सुमति २६।१चित्ररथ२७वल्गु२७।१वाल्हीक२८विरजो२८।१धृष्टद्युम्ना२९ऽलका२९।१त्तम३०विश्वाची३०।१सुनीक३१दसा३१।१सुबाहु३२मालिन्याऽऽदिपञ्चचत्वारिंशोत्तरशत १४५ सुरथ३३प्रभावती३३।१भरत३४ तिलका३४।१सात्विक ३५विभा३५।१केसरिदेव३६जया३६।१बिक्रम३७सम्मति३७।१ कुलकथनवैक्रमिसहदेवे ३८न्द्रप्रस्थच्यवनतन्मातुलाऽरिघाटसहायकर्णाट १

१करूष देश के राजा वृद्धकर्म की २ बहिन को ३ भुवा ४ सुन्दर.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में वीरधन्वा–भद्रा, जयधन्वा–रुचि, बीरसिंह- कमला के चरित्र का बर्णन और वीरसिंह की पुत्री गौरी को कमलसेन के पुत्र पँवारराज प्रेम को विवाहना, और वीरसिंह का पुत्र वरसिंह-सोमा, उसके पुत्र वीरदण्ड-विरजा, जयंत-वरुणी, माणिक्यराज-जया, पुष्कर-पद्मावती, असमञ्जस-कला, प्रेमपूर-ललिता, भानुराज-सुमध्या, मानसिंह-कल्याणी, हनुमान-कला, चित्रसेन-चन्द्रिका, सम्भु-प्रभा, महासेन-जया, सुरथ-तारा, रुद्रदत्त-सत्ता, हेमरथ-शांति, चित्राङ्गद-सुमति, चित्ररथ-वल्गु, वाल्हीक-विरजा, धृष्टद्युम्न-अलका, उत्तम-विश्वाची, सुनीक-दशा, सुबाहु-मालिनी आदि एक सौ पैंतालीस १४५ सुरथ-प्रभावती, भरत-तिलका, सात्विक-विभा, केसरिदेव-जया, विक्रम-सम्मति के कुल का

पौंड्रदेश२प्रापणम् मागधेशवसुसुतोर्मिलो३८।१द्वहनतत्सुतबीरदेव३९ विजोहा३९।१पुण्ड्रक४०गुणावती ४०।१ पर्यन्तवंशवर्णनं चतुर्थो४ मयूखः ॥ ४ ॥ आदितः षट्चत्वारिंशत्तमः ॥ ४६ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

राजन तीजे३राशिको, व्यासागम अनुसार ॥
कहियत अब पंचम५किरन, जत्थ कृष्ण अवतार ॥ १ ॥
सर मुनि गज गुन तर्क वसु८६३८७५,अब्द इते गत अत्थ ॥
द्वापर अष्टाविंस२८के,सप्तम७मनु मिति तत्थ ॥२॥
इन अग्गैं वच्छर लग्यो, जो ईश्वर अभिधान ॥
असित भद्द तस अष्टमी८,हरि हुव जदुसंतान ॥ ३ ॥

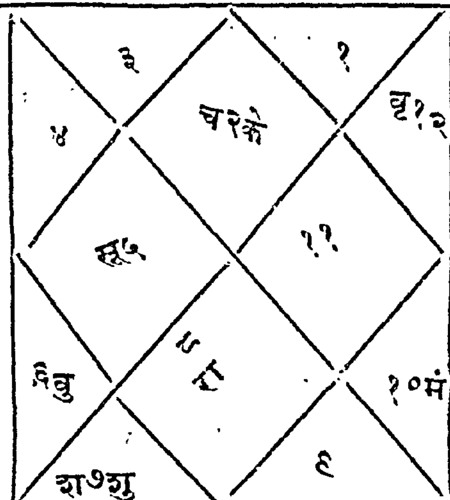
षट्पदी

पक्ख असित भाद्रपद सुभग अष्टमि८दिन ससि सह,
त्रेपन५३घटिका तत्थ पलहु अग्गैं पुनि पंद्रह१५ ॥
रोहिनी भैं चोवन५४घटी रु तेरह१३पल जानहु,
धुति हरखन छप्पन५६घटी रु पल बीस२०प्रमानहु ॥
तिथि अपर अर्द्ध कौलव करन रजनी दल जहँ खिल्ल रहत

कथव और विक्रम के पुत्र सहदेव का दिल्ली से पतन (उससे दिल्ली का छुटना) और उसके मामा अरिवाट के सहाय से कर्णाटक और पौंड्रदेश का मिलना और मगध देश के पति वसु की पुत्री ऊर्मिला से विवाह होना उसके पुत्र वीरदेव-विजोहा, पुंड्रक-गुणवती पर्यन्त चहुवाण वंश वर्णन का चौथा४मयूख समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ और आदि से छियालीस मयूख हुए ॥ ४६ ॥

१ हे राजा रामसिंह इस तीसरे राशि का पांचवां मयूख अब कहते हैं जिसमें वेदव्यास के शास्त्र (विष्णुपुराण) के अनुसार कृष्ण के अवतार की कथा है ॥ १ ॥ सातवीं गणना के (वर्तमान वैवस्वत) मनु के अठाईसवें द्वापर युग के ८६३८७५ वर्ष यहां पर गये ॥ २ ॥ ७ वर्ष ८ उस वर्ष का ईश्वर ९ नाम था. १० भादवा के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को ॥ ३ ॥ भादवा वदि अष्टमी ११ सोम वार घड़ी(५३)पल(१५)रोहिणी१२ नक्षत्र घटी(५४)पल (१३) हर्षण १३ योग घड़ी[५६]पल[२०]और तिथि के १४ दूसरे भाग में कौलव करण

सर बेद ४५ रु गुन कृत ४३ इष्ट पर विजय मुहूरत वृखर वहत॥४॥
सूर*सूनु जदुवंस दुंदु**पतनी अट्ठारह १८॥
देवकी सु तिनमाँहिं मुख्य धरि उदर महामह ॥





उदित लग्न वृख २ अंस जास बारह १२ बित्ते जहँ ॥
जो देवी सब जनक त्रि ३ गुनपति जनत भई तहँ ॥
लखि गर्ग विधिभ ४ दूजे २ चरन वासुदेव अभिधान दिय ॥
अवतीर्ण असुर भूपन उपरि इम मधुपुर हरि अवतरिय ॥५॥
सिखी ९ ससी २ वृख २ सीस ब्रध्न १ मृगराज ५ कनी ६ बुध ४॥

(एक तिथि में दो करण होते हैं, सो यहां उत्तरार्ध में कौलव करण है) आधी रात्रि बाकी रहते पैंतालिस घड़ी और तैंतालीस पल के इष्ट में विजय नाम मुहूर्त और वृष लग्न में ॥ ४ ॥ यदु वंश में*सूरसेन के पुत्र** वसुदेव के अठारह स्त्रियां थीं जिनमें बड़ी देवकी के उदर में १ बड़े तेजवान् उदित हुए, वृष लग्न के बारह अंश बीते जहां देवी (देवकी) ने सब संसार के २ पिता और ३ सत-रज-तम-तीनों गुणों के पति को जना, गर्ग मुनि ने ४ ब्रह्मा के नक्षत्र (रोहिणी) के दूजे चरण में जन्म हुआ जानकर वासुदेव ५ नाम दिया (रोहिणी के चार चरणों में जन्म लेनेवालों के नाम में आदि अक्षर क्रम से "ओ-वा-वी-वु" आते हैं अवकहोड़ाचक्र के अनुसार यह (वासुदेव) नाम दिया, असुरों के अंशों से अवतार लिये हुए राजाओं पर ६ मथुरापुर में विष्णु ने अवतार लिया ॥ ५ ॥ ७ केतु और ८ चन्द्रमा वृष राशि पर, ९ सूर्य १० सिंह राशि पर, बुध ११ कन्या राशि पर

तुला७सनि७रु कवितात६आत तम८रासि अलायुध८॥
मकर१०आर३गुरु५मीन१२उच्च ससि२बुध४सनि७मंगल३॥
इत्यादिक जगदीश जनम पल खेटं महाफल ॥
ससि२लग्न२बीच यातैं यहहि कुंडलिका ससिकी रहिय ॥
नृप रामसिंह इम मधु नगर हरि अनादि उद्भम लहिय ॥६॥

॥ दोहा ॥

प्रभु तुमरे कुल परपुरुख, बरन्यौं जो बसुदेव४० ॥
तनय तिन दिनन ताहुकै, दुर्मति सुनहु तसु देव ॥ ७ ॥
जननि गुनवती४०।१सी जहाँ, पितु पुंड्रक४०सुप्रसंस ॥
वासुदेव४१तिनकै भयो, असुर बली नरअंस ॥ ८ ॥
उन दिवसन बहु अवतरे, दैत्य दनुज नरदेह ॥
लिखत तेहु जिन करि लह्यो, अवनी भार अछेह ॥ ९॥

॥ पज्झटिका ॥

मगधेस जरासंधाख्य १भूप, हुव विप्रचित्ति१दानव स्वरूप ॥
सिसुपाल२चेदिपति बलअपार,सु हिरण्यकसिपु२दितिसुतवतार१०
बलि भूप सल्य३बाल्हीक वंस,प्रल्हाद दनुज संल्हाद३अंस ॥
नृप धृष्टकेतु४अनुल्हाद४जानि,द्रुम५भूप भयो सिवि५दैत्य आनि११

शनि और १ शुक्र तुला राशि पर, राहु २ वृश्चिक राशि पर ३ मङ्गल मकर राशि पर, बृहस्पति मीन राशि पर है और उच्च राशि के चन्द्रमा, बुध शनि और मंगल हैं, इनको आदि लेकर जगत् के ईश [कृष्ण] के जन्म समय में पड़े फल के देनेवाले ८ ग्रह हैं, और लग्न में चंद्रमा है, इसकारण से यही कुंडली चंद्रमा की भी रही. (जातक शास्त्र से लग्नकुंडली और चंद्रकुंडली से फल कहाजाता है परंतु यहां चंद्रमा लग्न में आगया इससे चंद्रमा की जुदी कुंडली नहीं की) हे राजा रामसिंह ! इस प्रकार मथुरा नगर में अनादि विष्णु ने ५ जन्म लिया ॥ ६ ॥ ६ हे स्वामी रामसिंह ! ७ दुर्मति (खोटी बुद्धिवाला) हुआ सो हे देव (राजा) उसको सुनो ॥ ७ ॥ गुनवती जैसी जिसकी माता और पौंड्रक (वसुदेव) जैसा श्रेष्ठ प्रशंसनीय पिता तिनके बलवान् नर नामक असुर के अंश से वासुदेव हुआ ॥ ८ ॥ ८ भूमि में ९ जरासंध नामक१० दुनि

भगदत्त६भुप वाष्कल६अदेवं, इम उग्रसेन७स्वर्भानु७एव ॥
असितौजा८नृपहुवकेतुमान८,रु असोक९नृप असुर अश्व९थान१२
हार्दिक्य१०अश्वपति१०जो सुरारि,दीर्घप्रज११वृषपर्वा११अनुकारि
नृपसाल्व१२सुआसुरअजक१२छोवँनृपचोरमान१३खलअश्वग्रीव१३
रु वृहद्रथ१४नृप सूक्ष्म१४सु नृसंसं,नृप सेनाविन्दु १५तुहुंड१५अंस।
नृपनग्नजित१६सुइषुपा१६ऽवँतारप्रतिविंध्य१७एकचक्र१७सुभर्यार१४
तैसैँहि चित्रवर्मा १८ नरेस, सु विरूपाक्षाऽभिध १८ असुर बेस ॥
राजासुबाहु१९दानवहराख्य१९वाल्हीकमहीपति२०सुअहराख्य१५
नृपमुंजकेस२१असुर सु निचंद्र,२१देवाधिप२२जु निकुंभ२२सुअतंद्र॥
पौरवनरेस२३हुवसरभ२३आयभूपतिसुपार्श्व२४खलकुपथ२४भाय१
वाल्हीक कुलज प्रल्हाद२५भूप,सु द्वि२तीयसरभ२५आसर स्वरूप॥

नृप पार्वतेय २६ क्रथ२६ ऋषिक २७ अर्क२७,
द्रुमसेन २८ गरिष्ठ २८ सु अघउदर्क ॥ १७ ॥

कांबोज चंद्रवर्माऽभिधानं २९, सो असुर चंद्र२९अवतारवान ॥
पश्चिमअनूपपति३०जोनरेस, विभु सो यहँमृतपा३०असुरवेस॥१८॥
भूपाल विश्व३१असुरसु मयूर३१,नृप कालकीर्ति३२सु सुपर्ण३२सूर
भूपाल सुकन३३हुव चंद्रहंस३३जानकि३४सु चंद्रहंता३४नृंसंस ॥१९॥
कासोस३५दीर्घजिव्ह३५सुसुरारि,नृपक्राथ३६राहु३६विधुतादकारि।

वसुमित्र ३७ दनायुज विक्षराख्य ३७,
पांड्येस३८विक्षरानुज३८अनाख्य॥२०॥

त्रिय माल्ल्यवान३९वपु वृत्र३९धारि,हुव चंड४०क्रोधहंता४०सुरारि
नृपपार्वत४१क्रथन४१रु दंडधार४२,हुव असुर क्रोधवर्द्धन४२वतार२१

१ दैत्य २ राहु ३ देवताओं के शत्रु (दैत्य) ४ अनुकरण (नकल) करनेवाला ५ मदोन्मत्त ६ क्रूर ७ अवतार ८ भयंकर ९ विरूपाक्ष नामवाला १० अहर नामवाला ११ जो १२ अनालसी [आलस्य रहित] १३ भविष्यत् (आनेवाले समय में) पापी १४ नामवाला १५ क्रूर १६ चंद्रमा को पीड़ा करनेवाला १७ विक्षर नामवाला १८ विक्षर का छोटा भाई १९ विना नामवाला, अर्थात् उसका नाम मालूम नहीं हुआ

सूर्याक्ष४२भूप सुक्रनाय४३तांम, बाल्हीक दरद४४नृप सूर्य४४नाम
कालेय जाति जे असुर अष्ट८,ते सुनहु भये भुव दैन कष्ट ॥२२॥
पहिलो४५।१सुजयत्सेन४५मगधेस,दूजो४६।२हुव अपराजित४६नरेस
तीजो४७।३निषादपति४७जयानिधान,
चोथो४८।४हुव नरपति श्रेणिमान ४८ ॥२३॥
पंचम४९।५सुमहौजा४९भूमिपाल,छट्ठो५०।६अभीरु५०नृप रनकराल
सप्तम५१।७भूपाल समुद्रसेन५१,अष्टम५२।८सुवृहन्नामा५२धरेस२४
पैंतीस ३५ क्रोधवस असुर यौंहि, उतरे ति सुनहु उद्देससौंहिं ॥
मद्रक ५३।१ रु कर्णवेष्टक ५४।२ नरेस,
सिद्धार्थ ५५।३ बहुरि कीटक ५६।४ धरेस ॥ २५ ॥
त्यौंही सुवीर ५७।५ रु सुबाहु ५८।६ जानि,
बाल्हीक ५९।७ महाबीर हु बखानि ॥
क्रथ ६०।८ पुनि बिचित्र ६१।९ सुरथ ६२।१० हु कुंसील,
श्रीमान त्यौंहि नरनाह नील६३।११ ॥२६॥
चीराबास६४।१२अरु भूमिपाल६५।१३,
तिमि दंतवक्त्र६६।१४दुर्जय६७।१५कराल ॥
रुक्मी६८।१६जनमेजय६९।१७बहुरि जानि,
आषाढ७०।१८वायुवेग७१।१९हु प्रमानि ॥२७॥
भूरिस्तेजा७२।२०अरु एकलव्य७३।२१,
रु सुमित्र७४।२२वाटधानाख्य७५।२३भव्य ॥
गोमुख७६।२४रु बहुत कारूप भूप७७।२५,
त्यौं क्षेमधूर्ति७८।२६उद्धव७९।२७अनूप ॥२८॥
क्षेम८०।२८रु श्रुतायु८१।२९कुहल८२।३०हु सुजान ॥
ईश्वर८३।३१रु वृहत्सेन८४।३२मतिमान८५।३३,
त्यौंही कलिंग भूपति८६।३४कितेक ॥

१ तहां अथवा भयंकर. २ भूपति३ते (वे) ४अनुसंधान (कथन क्रम) ५खोटे शीलवाला६चरदधान नामक ७.योग्य.

अरु अप्रतीर्थ८७।३५इम हुव अनेक ॥ २९ ॥

दोहा

अश्वसिर८८।१रु अयस्सिर८९।२, अयःसंकु९०।३अघअंच ॥
बहुरि गगनमूर्द्धा९१।४ तथा, बेगवान९२।५ए पंच५ ॥ ३० ॥
भये पंच५कैकेय९२नृप,बहुरि बलीनर९३ताम ॥
पुंड्रक कै सुत हुव असुर,बासुदेव४१जिहिं नाम ॥ ३१ ॥
पूर्बपुरुख जो रावरो,रामसिंह नरराय ॥
ऐसैं तिन दिवसन असुर, अंसन उतरे आय ॥ ३२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वाऽयणे तृतीय ३ राशौ श्रीकृष्णजन्मपञ्चाङ्गसूचनपूर्वकपौण्ड्रकबासुदेवा ४१ द्यसुरांशाऽवतरणकथनं पञ्चमो मयूखः॥ ५ ॥ आदितः सप्तचत्वारिंशत्तमः॥४७॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

इम असुरनके अवतरन, भुम्मि लह्यो अतिभार ॥
अजं इंद्रादिक सुरनसौं,किन्नी जाय पुकार ॥ १ ॥
सुरहु मखादिक नासतैं,हे पुब्बहि बेहाल ॥
अवनि सहित संत्रस्त अब,पहुंचे जहँ गोपाल ॥ २ ॥
नारायन सुनि दुख निजन,दिन्नौं सदय निदेस ॥
अमरहु भूतल अवतरहु,संकट मिटन असेस ॥ ३ ॥
तुमरैं हित धरिहैं नृतनु,मम कच जदुकुल माँहिं ॥

---

१ पाप ही है शोभा जिसकी २ तहां अथवा भयंकर ३ हे नृपति रामसिंह ! वह वासुदेव आप का पूर्वपुरुष (बडेरा) था ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में श्रीकृष्ण के जन्म का पंचांग जनाना आदि, पौंडूक वासुदेव आदि असुर अंशों के जन्म के कथन का पांचवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ आदि से सैंतालीस मयूख हुए ॥ ४७ ॥

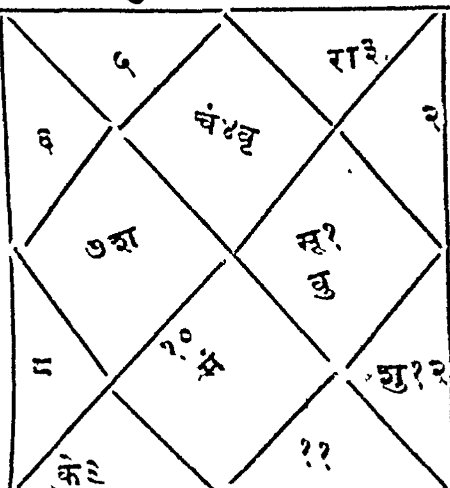
४ ब्रह्मा और इंद्र आदि देवताओं से भूमि ने पुकार की ५ यज्ञ आदि के नाश होने से देवता भी ६ भूमि सहित ७ भयभीत होकर ८ विष्णुभगवान् थे ९ अपने जनों का १० दया पूर्वक ११ देवता भी १२ मनुष्य शरीर १३ मेरे केश

असित१९ सित२९ तुम उभय२,लेहु बिलंबहु नाँहिं ॥ ४ ॥
अग्गैं जिम चोईस२४मे,त्रेतामैं अवतार ॥
मैं लीनौं रघुबंसमैं,कुल रक्खस खयकार ॥ ५ ॥
त्रेताके हायन गये,नव सहस्र९०००परिमान ॥
इन अग्गैंको अब्द जँहँ,सित मधु पख सुभवान ॥ ६ ॥

षट्पदी

सित मधु पख सुभवान पुनर्बसु७नवमि९चंद्र१दिन ॥
लगन कर्क४लव पंच५इष्ट दुव२जाम चढत इन ॥
इनकुलपति अवनीअधीस दसरथके आलय ॥
कौसल्याकी कुक्षि जन्म मैं लिन्न करन जय ॥







गुरु५चंद्र२लग्न४सनि७ग्रह बनिज७चाप९केतु९मृग१०भौम३जँहँ॥
झख१२सुक्र९भानु१बुध४मेस१पर मिथुन३राहु८हुव राम तँहँ ॥७॥

काला और धोला (श्वेत) वाल, ये तुम लो देरी मत करो ॥ ४ ॥ आगे-जिस प्रकार सातवें (वैवस्वत) मनु के चौबीसवें त्रेता युग में राक्षसों के कुल का नाश करने के लिये रघुवंश में मैंने अवतार लिया था ॥ ५ ॥ त्रेता युग के नव हजार वर्ष गये जिनके आगे के वर्ष के चैत्र सुदी शुभ पक्ष में ॥ ६ ॥ चैत्र मास के शुभ शुक्ल पक्ष में पुनर्वसु नक्षत्र नवमी सोमवार कर्क लग्न के पांच अंश गये इष्ट, दो पहर सूर्य चढे सूर्यवंशियों के पति भूपति दशरथ के घर में विजय करने को मैंने जन्म लिया था. बृहस्पति और चंद्रमा तो लग्न स्थान में, शनैश्चर ग्रह तुला राशि पर, केतु धनु राशि पर, मंगल

दोहा

भालु[3] बलीमुख[2] तब भये, अवनीतल तुम आय ॥
अखिल हनैं रक्खस असुर, दिय श्रुतिमग्ग चलाय ॥ ८ ॥
वालि१ इंद्र१ सुग्रीव२ रवि२, नील३ अनल३ अवतार ॥
नल४ सु विश्वकर्मा४ निपुन, मारुति५ अनिल५ उदार ॥ ९ ॥
सतबली६ सु पासी६ सुमति, हुव गवाक्ष७ जमराज७ ॥
द्विविद८।१ मैंद९।२ ए दस्र२ दुवर, करन भये श्रुतिकाज ॥ १० ॥
इत्यादिक सब अवतरे, तुम कपि रिच्छ स्वरूप ॥
मैं तव नर अवतार लिय, भवन कोसला भूप ॥ ११ ॥
तुम जुत कछुक निमित्त तकि, जातुधान खलजात ॥
पापनिरत असुरहु प्रबल, हनैं अखिल उमहात ॥१२॥
त्यौंही सब अब अवतरहु, अवनीतल तुम आय ॥
मैं हु कृष्ण ह्वै मारिहौं, सब खल होय सहाय ॥ १३ ॥

पज्झटिका

इम सुनत सेससायी[10] निदेस, वसुमति[11] तल उतरे सुर[12] बिसेस ॥
देवक१ नरेस गंधर्बराय, गुरुद्रोन२ बृहस्पति अंस आय ॥१४॥
सिव१ काम२ क्रोध३ जम४ च्यारि४ अंस, इक१ अश्वत्थामा३ सुप्रसंस[13]
वसुअष्ट८ अष्ट८ संतनुकुमार११, गोतम कृप१२ रुद्रगणा[15]ऽवतार ॥
कृतबर्मा१३ सात्यकि१४ पांडु१५ भूप, द्रुपद१६ रु विराट१७ गने मरुत[16] रूप
सकुनी१८ जुग द्वापर नाम अंस, धृतराष्ट्र१९ भयो गंधर्व हंस ॥१६॥
कलिजुग दुर्योधन२० विदुर२१ काल, हुव धर्म जुधिष्ठिर२२ भूमिपाल ।

मकर राशि पर, शुक्र मीन राशि पर, सूर्य और बुध मेष राशि पर, राहु मिथुन राशि पर था, उस समय रामचंद्र हुए ॥ ७ ॥ १ रीछ २ वानर ३ वेदमार्ग ४ अग्नि का ५ पवन का अवतार हनुमान् हुआ ६ वरुण का ७ अश्विनी कुमारों का ८ राक्षस ९ नियुक्त १० शेष नाग पर शयन करनेवाले (विष्णु) का ११ भूमितले पर १२ देवता १३ प्रशंसा योग्य १४ भीष्म आठ वसुओं में से आठवें वसु का अवतार हुआ १५ कृपाचार्य रुद्रगण का अवतार हुआ. १६ मरुत्गण ॥ १६ ॥

प[2]वमान भीम२३ जय[3]२४ इंद्रजानि, हुव दस्र[4] नकुल २५ सहदेव २६ आनि १७
हुव धृष्टद्युम्न २७ सोमक कृसानु[5], नारायण २८ कृष्ण २९ रु कर्ण ३० भानु
प्रद्युम्न ३१ कुमर सु सनत्कुमार, त्यों सीरपानि[6] ३२ सेसाऽवतार ॥ १८ ॥
अभिमन्यु ३३ सुवर्चा सोमजात, क्रव्याद[7] सिखंडी ३४ द्रुपद तात[8] ॥
प्रातिबिंध्य ३५।१ तथा श्रुतसेन ३६।२ जानि,
श्रुतकीर्ति ३७।३ सतानीक ३८।४ हु बखानि ॥ १९ ॥
श्रुतसेन ३९।५ पंच ५ ए द्रौपदेय[9], हुव विश्वदेव पंचक अजेय ॥
क्रम सन जुजुच्छु मुख[10] १०० अंधपुत्र, पौलस्त्य[11] भये हे श्रुतितनुत्र[12] ।२०।
दुर्योधन अनुज जुजुच्छु १ नाम, दुस्सासन २ दुस्सह ३ दिव्यधाम ॥
दुस्सल ४ पुनि दुर्मुख ५ बिहितबर्ण, तैसैंहिं बिबिंसति ६ अरु बिकर्ण ७ ।२१
जयसंध ८ सुलोचन ९ बिंदु १० जानि,
अनुविंद ११ तथा दुर्धर्ष १२ मानि ॥
रु सुबाहु १३ दुष्प्रदर्शन १४ कुमार, दुर्मर्षण १५ दुर्मख १६ विजयकार ।२२।
दुष्कर्ष १७ कर्ण १८ अरु चित्र १९ ताम[13], उपचित्र २० तथा चित्राक्ष २१ नाम
चारु २२ रु चित्रांगद २३ दुर्मद[14] आख्य २४, त्यों दुष्प्रहर्ष २५ रु विवित्सु २६ सांख्य[15]
विकट २७ सम २८ ऊर्णनाभ २९ रु सनाभ ३०,
नंद ३१ रु उपनंद ३२ हु अतुल[16] आभ[17] ॥
सेनापति ३३ बहुरि सुसेन ३४ ज्यौंहिं, कुंडोदर ३५ रु महोदर ३६ हु त्यौंहिं ॥
पुनि चित्रबाहु ३७ जानहु कुमार, ऐसैंहि चित्रवर्मा ३८ उदार ॥
सुनिये[18] वसुबर्मा ३९ नामधेय[19], ऐसोंहि दुर्बिमोचन ४० अजेय ॥ २५ ॥
रु अयोबाहु ४१ महाबाहु ४२ जानि, तिहिं अग्ग चित्रचाप ४३ हु बखानि ॥
अभिधान[20] सु कुंडल ४४ भीमबेग ४५, भीमबल ४६ बलाकी ४७ तरल[21] तेग ॥

२ पवन ३ अनुज ४ अश्विनीकुमार ५ अग्नि ६ बलदेव ७ असुर ८ द्रुपद का पुत्र ९ द्रौपदी के पुत्र १० जुजुत्सु आदि धृतराष्ट्र के पुत्र ११ राक्षस १२ हे वेद की रक्षा करनेवाले रामसिंह १३ तहां १४ दुर्मद नामक १५ विवित्सु नाम के साथ १६ अत्यन्त १७ कान्तिवाले १८ अथ १९ नामवाला २० नाम २१ चपल तरवारवाला

वल्लबर्द्धन४८उग्रायुध४९सुधाम, पुनिभीमसर५०रुकनकायु५१नाम
तैसैंहि दृढायुध५२साभिधान,दृढबर्म५३दृढक्षत्र५४हु सुजान। २७।
पुनिसौम्यकीर्ति५५रुअनूदर५६रुय,तैसैंहिजरासंध५७इतिसाऽऽख्य
दृढसंध५८सत्यसंध५९बलबाहु, अरुमद६०सुवाक६१उग्रश्रवा६२हु ॥
अरुउग्रसेन६३त्यौंक्षेममूर्ति, ६४अपराजित६५पंडितक६६रणमूर्ति ॥
रुबिसालाक्ष६७दुराधर६८सुतेग, दृढहस्त६९सुहस्त७०रुबातवेग७१ २९
रु सुवर्चा७२तिम आदित्यकेतु७३, बव्हाशी७४बंधुनबैरहेतु ॥
पुनि नागदंत७५धृतराष्ट्रजात,तस अनुज उग्रयायी७६हु ख्यात ।३०
कवची७७रु निषंगी७८नामधेय, पासी७९रु दंडधार८०हु अजेय ॥
रु धनुर्ग्रह८१उग्र८२अरि ससि राहु ॥
भीमरथ८३बीर८४अरु बीरबाहु८५ ॥ ३१ ॥
रु अलोलुप८६अभय८७रु रौद्रकर्म ८८ ॥
दृढरथ८९रु अनाधृष्य९०हु सुवर्म ॥
तैसैंहिं कुंडभेदी९१कुमार, तिहिं अग्ग बिरावी९२नाम धार ॥३२॥
तस अनुज दीर्घलोचन९३बखानि, पुनि दीर्घबाहु९४तस अग्ग जानि
तैसैंहि महाबाहु९५मतिमान, व्यूढोरा९६कनकत्स रु९७सुजान।३३
कुंडल९८अरु चित्रक९९त्यौं कुमार,इम अखिल जातुधानाऽवतार॥
नन्न्यानव९९ए धृतराष्ट्रजात, दुर्योधन नृप के अनुज भ्रात ॥ ३४ ॥
दुहिता इन अग्गैं दुस्सला१हु, रु जुजुत्सु१सु वैश्यासुत सुबाहु ॥
भीष्मकसुता१सु लच्छी स्वरूप, कृष्णा२सची सु हुव तत्थ भूप ॥३५॥
माद्री३धृति कुंती४सिद्धिकाय, मति हुव गांधारी५अवनि आय ॥

१नाम के साथ२ श्रेष्ठ तरवारवाला ३भाइयों के वैर का कारण ४ धृतराष्ट्र से उत्पन्न ५ प्रसिद्ध ६ नामवाले ७ नहीं जीतने में आवे ऐसा ८ शत्रुरूपी चन्द्रमा का राहु ॥ ३१ ॥ ९ इसप्रकार सब १० राक्षसों के अवतार ॥३२-३४॥ ११दुःसला नामक पुत्री १२धृतराष्ट्र से बनियानी के पेट से उत्पन्न १३पुत्री १४ रुक्मिणी लक्ष्मी का स्वरूप हुई १५ द्रौपदी इन्द्राणी का अवतार हुई ॥३५॥ माद्री धृती का, कुन्ती सिद्धि का और गांधारी बुद्धि का *भूमि पर आकर हुई.

हरिनारि॥*इतर सोलहहजार१६०००अच्छरि सब जानहुतेउदार ३६॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे१तृतीय३राशौ भार-भीतभूमिसहितद्रुहिणादिदेवशेषशायिप्रार्थनकथितरामजन्मकाला दि नारायणसर्वाऽवतरणोपदेशनदेवाद्यंशाऽवतरणकथनंषष्ठो६मयूखः ॥ ६ ॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशत्तमः ॥ ४८ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पज्झटिका ॥

नारायनके सित१असित२केस२, जदुबंस आय इम लिय नृवेस ॥
पहिलैं हि कंस यह जानिलिन्न, बसुदेव१देवकी२कैद किन्न ॥१॥
प्रल्हाद दैत्यके छ६मित³ भ्रात, पाताल हु ते जे⁴अवरजात ॥
क्रमसन ते देवकि उर प्रवेस, किय माया नारायन निदेस ॥ २॥
जे⁶जातमात्र सब कंस जानि, पारँद्धि हने न दया प्रमानि ॥
उपजे पुनि सप्तम७गर्भ सेस, रोहिनि पिचंड तिन किय प्रवेस॥३॥
जान्यौं⁹च्युत देवकि गर्भ एह, आचिरज खल कंस हु किय अछेह ॥
आखिलेश्वर अष्टम८गर्भ आय, सूचित¹⁰ मुहूर्त जनमैं सुभाय ॥ ४ ॥
सुभरूप चतुर्भुज सघनस्याम, श्रीवच्छ¹¹ वच्छ¹² लच्छन ललाम॥

और कृष्णकी दूसरी सोलह हजार राणियोंको हे उदार रामसिंह अप्सरा जानो.

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में भार से डरेहुए भूमि सहित ब्रह्मा आदि देवताओं का विष्णु की प्रार्थना करना, और कहे हुए रामचन्द्र के जन्मसमय आदि नारायण का सब को अवतार लेने का उपदेश करना, देवताओं को आदि लेकर अंशों से अवतार लेने के कथन का छठा मयूख समास हुआ ॥ ६ ॥ और आदि से अड़तालीस मयूख हुए ॥ ४८ ॥

१ स्वेत २ स्याम केसों ने यदुवंश में आकर मनुष्य वेस लिया ॥१॥ ३ प्रमाण ४ पीछे से पैदा होनेवाले [दैत्य] ५ विष्णु की आज्ञा से ॥२॥ ६ जन्मते हीं ७ शिकारी[क्रूर कर्म करनेवाले]ने ८ पेट में ॥३॥ ९यह जाना कि देवकी का यह गर्भ गिरगया १०ऊपर कहे हुए मुहूर्त में ॥४॥ ११विष्णु भगवान् का सुन्दर चिन्ह [दुर्वासा ने क्रोध करके भगवान् के लात मारी थी उसकी रेखा अथवा छाती पर केसों की दक्षिणावर्त भँवरी जिसको महापुरुष का लक्षण मानते हैं] १२ छाती पर जिनके

पट पीत कंठ कौस्तुभ प्रकास, कर दर[1] अरि[2] पद्म[3] गदा बिलास ।५।
मनिमय किरीट सिर रोचमान[4], कांची[5] कटि कुंडल मकर[6] कान ॥
जननी रु जनक[7] लखि कृष्ण जात, नुति[8] करत भये मस्तक नमात ।६।
जामिक[9] प्रभु हैं यहँ जागरूक[10], बदिहैं द्रुत[11] कंसहिं बावदूक[12] ॥
इहिं हेतु छिपावहु रूप एह, सुनि ग्रै हैं दुष्ट सु बिनु सनेह ॥७॥
करि गुप्त दिव्य बिग्रह[13] कृपाल, बिसराय[14] तिनहु हुव अप्प बाल ॥
बसुदेव तबहि लै सिसु सनाथ, हुव उठत हतकरी रहित हाथ ।८।
अंघ्रिन[15] झरि बेरी अकसमात, जामिक सोवत खुलि अरर[16] जात ॥
गिनत सु कंसाऽहंत[17] पूर्वगर्भ, आनकदुंदुभि[18] लै चलिय अर्भ[19] ॥९॥
द्रुन तबहि चल्यो रहि पिट्ठिदेस, फनछाया टारत सलिल[20] सेस ॥
गोकुल इत गोपति नंदगेह, इहिं काल भयो वृत्तांत एह ॥१०॥
हरिसासितैं[21] माया जगहिताय[22], अवतरिग जसोदा उदर आय ।
उतहू तब निद्रा मोहमग्न, गोकुल हुव जानत कहु न लग्न ॥११॥
वसुदेवहिँ नदि बिच गोपव्रात[23], नंदादि मिलै कर दैन आत ॥
तहँ जानुदघ्न[24] नदि उतरि छन्न, असुदेव सजैव[25] गोकुल प्रपन्न[26] ।१२।
थित सुप्त[27] जसोदा तत्थ थान, सिसु धर कन्या लै किय प्रयान ॥
ज्यौं पूर्व[28] रहयो त्यौं स्वगृह आय, जामिक[29] तब माया दिय जगाय ।१३।
सिसु रुदन सुनत दोरेऽतिबेग[30], कंसहिं कहि आन्यौं तरल[31] तेग ॥

१शंख २चक्र ३कमल ४कान्तिवाला ५कटिमेखला [कणगती] ६मकर की आकृति के कानों में कुण्डल ७पिता ८स्तुति हे प्रभु यह ९पहरायत १०जागता हुआ है सो ११जलदी ही १२बहुत बकनेवाले कंस से कहेगा १३शरीर १४उन बसुदेव देवकी को भी भुलावा देकर आप बालक होगये १५पगों से अचानक बेड़ी झड़ पड़ी १६ किवाड़ खुल गये और पहरायत सोगये १७कंस को मारनेवाले १८वसुदेव १९बालक को २०वर्षा के जल को शेषनाग अपने फणों से टालता हुआ २१विष्णु की आज्ञा से माया ने २२जगत् के हित के लिये यशोदा के उदर में अवतार लिया २३समूह २४घुटनों तक २५जलदी २६प्राप्त हुए २७सोती हुई २८पहिले जिस प्रकार हथकड़ी बेड़ी थी उसी प्रकार अपने घर में आकर रहे २९पहरायतों को माया ने जगा दिया ३०ते (वे पहरायत) ३१चपल तरवार सहित

*पूथम देवता पैदा हुए उनके पीछे दैत्य पैदा हुए इससे उनको अवरजात लिखा हैं.

लै कन्या तिहिं दिय सिल पछारि, छुटि, *नभ सु गई भुज अष्ट८धारि
बोली खल मारे व्यर्थ बाल, तब मारक हुव हेरहु उताल ॥
इत नंदबधू निद्रा बिहाय, देख्यो स्वअंस सिसुवर सुभाय ॥ १५ ॥
पछिताय कंस ढुंढुहुं सजाय, कारासन काढ्यो हित मनाय ॥
तब ढुंढु गोप नंदादि हेरि, पठये मधुपुर[३]तैं गृह निवेरि ॥ १६ ॥
घर आय नंद लखि जात बाल, किय जातकर्म विधि उचित काल ॥
इत कंस बुल्लि केसी१स्वइष्ट, सपलम्ब२बकी३धेनुक४अरिष्ट५ ।१७।
सुनियत मम मारक बाल जात, इम कहतभयोदर्प्पहिं दिखात ॥
जजमान१तपस्वी२गर्भ३आदि, सब हनहु सुरन अपकार सादि ।१८।
यह सुनत प्रलंबादिक असेस, बिरचे खल जोजन देस देस ॥
गोकुल[१०] वंकी[११] हु रजनी अनेह, आई नंदालय[१२] लखन एह ॥ १९ ॥
जिहिं सिसुहिं रत्ति[१३] दै यह उरोज[१४], सुहि होत भस्म जिम अनल[१५] ओज ॥
जिहिं नंदलाल मुख स्वकुच देत, पिन्नौं सु कन्ह प्रानन समेत ।२०।
पलनाँ सन पुनि दुव२पय उछारि, हरि सकट[१६] अधोमुख दियउ डारि ॥
गोपी जब बंधिय उदर दाम[१७], किय इक दामोदर[१८] तबहु काम ॥२१॥
निज दाम बद्ध ऊखल डिगाय, अर्जुन[१९] तरु जुग२बिच अटकि जाय ॥
ऐंच्यो गुंन ऊखल जबहि जोरि, तरु अर्जुन डारे उभय२तोरि ॥२२॥
प्रत्यूहन[२१] तब सब भीति पाय, निवसे वृंदाबन गोप जाय ॥
वढि तत्थ वच्छ[२२] सुरभिन[२३] चरात, बयके क्रम सिसु हुव दुव२हि ख्यात[२४] ॥

*आकाश में १ वसुदेव को २ कैद से ३ मथुरा से निवेड़ा करके घर (गोकुल) भेजे ४ जन्मा हुआ बालक ५ प्रिय ६ घमंड ७ देवताओं के अपकार ८ सहित ९ सब १० बकी नामक राक्षसी ११ रात्रि समय में १२ नन्द के घर में यह ढूंढनी आई १३ रात्रि में १४ स्तन १५ अग्नि अथवा वड़वा अग्नि के प्रताप से जलें जिसप्रकार उस नन्दलाल (कृष्ण) के मुख में स्तन देते ही कृष्ण ने प्राण सहित पीलिया १६ शकट (गाड़े) का रूप करके राक्षस आया था जिसको १७ रस्सी से १८ कृष्ण ने अपनी रस्सी से बंधेहुए ऊखल को डिगाकर १९ अर्जुन (ककुभ) नामक दो वृक्षों के बीच में अटक जाने से २० रस्सी को २१ विघ्नों २२ से भय पाकर २३ बछड़े २४ गौओं को, बलदेव और कृष्ण दोनों

बिनु राम कन्ह इक दिन बिहारि, कालिय द्रह आये दमनकारि॥
गिनि यह अगम्य[1] थल नाग दोस,[2] बिनु दोस करन किय कन्ह रोस२४
पीवॅल्ल[3] पट परिकर कटि लपेटि, भुजसौं भुज फोटन[4] काज भेटि॥
सत्वर चढि आयत[5] साख नीप,[6] लिय मलपि झंप मधुकुल[7] महीप२५
इहिं झंप अतुल द्रह जल उछारि, जद्दव बिदूर[8] तरु दिय उजारि॥
ह्रद बिच आस्फोटन[9] करि बहोरि, दर्पित[10] अहीस बुल्ल्यो सु दोरि२६
सो पै प्रचंड निजकुल समेत आयउ उरंग[11] विक्रम समेत॥
हालाहल[12] बाडव बमनहार,[13] फन फन कराल दृग ज्वाल फार[14]॥२७॥
हरि वेठि सु कुल जुत लेलिहान,[15] पुनि डसन लग्यो बपु अतुल प्रान॥
यह सुनि तहँ गोपी गोप आय, बिलपत अनेक अतिदुख बताय।२८।
बल[16] तब सुमिराई हरिहिं बात, तुम कोन दुष्ट यह कोन तात॥
बपु निज तब सम्मित[17] हरि बढाय अहिबंध[18] तोरि सब दिय छुराय।२९।
कालिय मध्यम फन चरन चंपि,[19] झट नटन लगे आरोहि झंपि॥
प्रभु चरनकमल पातन्न[20] प्रहार, फटि घाय भोग[21] चलि रुधिर फार३०
सत्वर[22] असत्व[23] हुव दंदसूक,[24] कर जोरे भुजगिन ओडि चूक॥
अब नाथ लखे तुम अखिल ईस, सैय[25] निज छमि आगेस[26] धरहु सीस३१
बिभु[27] तुमहि रचे हम कीटबर्ग, सुहि वृत्ति बहत तामस निसर्ग॥

---

१ नहीं जाने योग्य २ सर्प के दोष से ३ पीतांबर को युद्ध करने योग्य कमर पर दृढ लपेट कर ४ ताल ठोक भिड़ने के लिये जल्दी ६ वृक्ष की ५ मोटी शाखा पर चढे ७ मधुकुल (यादवों में मधु नामी राजा प्रसिद्ध हुआ था) के राजा यादव ने ८ बहुत दूर के वृक्षों को * जलाशय (द्रह) के बीच में ९ फिर ताल ठोक कर१०घमण्ड में आयाहुआ सर्पराज बोला॥ २६ ॥ ११ सर्प १२ वड़वाग्नि रूपी जहर को १३ उगलनेवाला १४समूह ॥ २७ ॥ कृष्ण को घेर कर, अपने कुल सहित१५सर्प, अतुल पराक्रमवाला फिर अपने शरीर को डसने लगा ॥२८॥ १६बलदेव ने१७अपने सदृश (विष्णु का शरीर होवे ऐसा) शरीर बढाकर१८सर्प के ॥ २९ ॥ ... पाकर१९कूदकर चढके नाचने गले२०पड़ने के प्रहार २१ फ... समूह चला ॥ ३० ॥ २२ जल्दी २३पराक्रम रहित २४ सर्प ... फ करके २५ आप का हाथ माथे पर धरो ॥ ३१ ॥ २७ हे व्य...

इम तियन रचत बिन्नति अपार, कालिय हु हरैं[1] किय नमस्कार ३२
हरि कहिय दीन गिनि सदय[2] होय, तुम सिंधु[3] रहहु यह उचित तोय[4] ॥
पिक्खत[5] तव सिर मम पद प्रकास, न गरुड तव कुलको करहिं नास
निकस्यो तब सबके लखत नाग, सकुटुंब वस्यो सागर सुभाग ॥
करि जल सुचि निकसे कैटभारि, लखि बंधु जनन लिय लोनवारि
थिर आये वृंदाबिपिन थान, निकसे पुनि प्रातहि गो चरान ॥
ते फिरत कबहु देखत प्रदेस, तृनराज बिपिन पहुँचे असेस ॥ ३५ ॥
बालेय[10] रूप धेनुक[9] सुरारि, निबसत जहँ मृग पल अर्दनकारि[11] ॥
भंगे जहँ मित्रन फल निहोरि, कहि खलहिं[12] अनादरि[13] देहु तोरि ॥
बलभद्र१कृष्ण१दुव२सुनि सु बात, प्रभु करनलगे फल ताल पात[14]
फल गिरत जानि चिर मेंहि[15] बेस, आयोहि असुर कंपंत[16] असेसैं[17] ॥
द्रुतं[18] पच्छिम चरननकी दुलत्त, मारी सिरायुध[19] हृदय मत्त ॥
सीरिहुं[20] पकारि फेर्यो सु दुष्ट, जवं[21] लियउ प्रान चिरं[22]कालजुष्ट[23] ॥

दोहा

सजातीय ताके अवर, आये जे बल धारि ॥
तेहु इहाँ बल[24] कृष्ण सब, मारे प्रबल पछारि ॥ ३९ ॥
धेनुकके मरतहि भयो, ताल बिपिन सब भोग्य[25] ॥
चरत भई नव तृन सुरभि[26], अखिल[27] पाय आरोग्य ॥ ४० ॥

हमको कीड़े बनाये हैं इसी कारण से तामसी वृत्ति के स्वभाव को धारण करते हैं १ काली नाग ने भी धीरे से नमस्कार किया ॥ ३२ ॥ २ दयावान् होकर ३ समुद्र में रहो यह तो उचित (छोडने योग्य अथवा नाप में आजाये इतना थोड़ा) ४ पानी है ५ देख कर ६ सर्प ७ कैटभ दैत्य के शत्रु (विष्णु) ८ वन ९ धेनुक नाम राक्षस १० गधे का रूप धर कर मृगों के मांस को ११ भक्षण करनेवाला १२ इस दुष्ट का १३ अनादर करके तोड़ दो १४ ताल वृक्ष के फलों को पटकने लगे १५ गर्दभ के वेस को धारण करनेवाला १७ सब को १६ धुजाताहुआ १८ शीघ्र १९ मस्तक ही है आयुध जिसके ऐसे धेनुक नाम असुर ने (धेनु के मस्तक ही आयुध होता है) २० बलदेव ने भी २१ य २२ बहुत समय से २३ सेवन कियेहुए प्राण लिये २४ बलदेव और कृष्ण ने वह तालवन भोगने योग्य होगया २६ गैयां २७ सब आरोग्यता को पाकर

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराऽशौ वीतिहोत्रचाहुवाणपौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यकालसमानाधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे श्रीराम१कृष्ण२महामाया३जन्माऽऽदिकथनश्रीकृष्णपूतना१शकट२यमलाऽर्जुन४निपातनवृंदाऽटवीनिवसनकालीयदमनतालाङ्कतालकान्तारधेनुकसुराऽरिसूदनं सप्तमोऽमयूखः॥७॥आदित एकोनपञ्चाशत्तमः ॥४९॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

यौं विहरत भांडीर बट, इक्क समय सब पंत ॥
रमनलगे अन्योन्य रचि, आरोहॅन अनुरत्त ॥१॥

षट्पात् ॥

तहँ प्रलंब तिनमाँहिं मिलिग खल्ल गोप बेस करि ॥
श्रीदामाके सिसुन भीर जो हुव अमरख भरि ॥
जित्यो जब सुहि पच्छ कन्ह श्रीदामाकौं बहि ॥
बल प्रलंब कौं बहि रु चले भांडीर अवधि चहि ॥
बल१कन्ह२पच्छ जित्यो बहुरि तब प्रलंब बहि हलधरहिं ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आधार जिनका अर्थात् वासुदेव चहुवाण और श्रीकृष्ण का एक समय है ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में श्रीराम (बलदेव) कृष्ण महामाया के जन्म आदि का कथन, और श्रीकृष्ण का पूतना, शकटासुर, यमलार्जुन को पटकना (नाश करना), और वृंदावन में वास करना, कालीनाग को दंड देना, और बलदेव का ताड़ वन में धेनुक असुर को मारने का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से उनचास मयूख हुए ॥ ४९ ॥

१ पहुंच कर २ परस्पर ३ एक दूसरे पर चढ़ने में ४ प्रीतिवाले (यह बालकों का एक खेल है, जिसको राजस्थान प्रांत में 'सीदमसीदी' कहते हैं ॥ १ ॥ प्रलम्ब नामक असुर गोप का वेस करके श्रीदामा नामक गोप के बालकों की मदत होगया, जब वही पक्ष जीता, तब श्रीकृष्ण श्रीदामा को और बलदेव प्रलंब को उठाकर भांडीर वट की सीमा तक लेगये; फिर दूसरी बेर में बलदेव और कृष्ण का पक्ष जीता, तब प्रलम्ब अपना रूप धर कर बलदेव को

लै जानलग्यो निजरूप करि, कहिय राम तब कन्ह रहि[१]॥
कृष्ण कृष्ण अच्युत अनादि सब असुर निसूदन ॥
लै मोकँहँ खल जात कहा करिये वें अद्यतन ॥
सुनि यह सिथिल स्वरूप जानि अग्रज को हरि जब,
अक्खिय तुमहिं अनंत कष्ट बिच इम पुच्छत कब ॥
सुहि सुनत तत्व अपनौं सुमिरि मुट्ठि मारिदिय असुर सिर,
जिहिं घात गयउ कढि दग जुगल[२]मरिग प्रलंब नकिन्न चिर[३]

दोहा

मटकीतैं नवनीत जिम, बल प्रलंब को गोद ॥
कढि बिसे वृंदाबिपिन, माधव जुत अति मोद ॥ ४ ॥

षट्पदी

इम बिहरत इक समय भयउ घन मिटि सरदागम,
बाचंयम हुव बरहि सारगाहक योगी सम ॥
तान घनन बहु गनन तज्यो लहि बोध बिसदपन,
तनु पल्वल मीनादि तपिग ममता जुत जिम मन ॥
गृहरत गृहीव सुक्किय सरनि हुव थिर सागर मुनि हृदय,
ससि उडु बिकास नभ इम लसत जिम सुपुत्र करि कुल सजय ॥५॥

उठाकर लेचला, तब बलदेव ने कृष्ण से कहा ॥ २ ॥ १ मारनेवाले २ अब ३ इस समय अथवा रात्रि के आदिप्रहर (संध्या समय) में ४ हे शेषावतार ५ देरी ६ मक्खन की भांति ७ बलदेव ने ८ मस्तिष्क (भेजा) ९प्रवेश किया १० वृंदावन में ११ लक्ष्मीपति (कृष्ण) सहित ॥४॥ इसप्रकार विहार करते एक समय में घन (बादल) मिट कर शरद ऋतु का आगम हुआ, तहां सारग्राही योगी के समान मयूर मौनी हुए (बोलना बंध किया) और बहुत समूहवाले मेघों ने विस्तार को छोड कर ज्ञान रूपी उज्वलता धारण की, और ममता (यह मेरा है) के साथ जैसे मन तपायमान होता है ऐसे छोटे तलावों में मछली आदि जीव तपने लगे . इसीप्रकार घर के कार्यों में तत्पर हुए गृहस्थी के समान मार्ग सूख गये . और मुनियों के हृदय के समान समुद्र भी चपलता को छोड कर स्थिर हुआ . और श्रेष्ठ पुत्र से विजय के साथ कुल शोभायमान होता है ऐसे ही चंद्रमा और तारों से आकाश शोभित हुआ ॥ ५ ॥

नभ१बारिद२भुव१पंक२सलिल१कालिमल इम छोरिय,
प्रत्याहारहिं अक्षगोचरनतैं कि निहोरिय ॥
पूरक छवि जलपूरि रोकि रक्ख्यो कुंभक२छवि,
पुनि रेचक३छवि प्रचुर रक्खि कढ्योहि जती रवि ॥
सर१सरित२झील३पुष्कर४सुभग लगे कुमुद सुखमा धरन,
मुख सूर घाय सत्रन मनहुँ सरनागत रक्खत सरन ॥६॥
सकल गोप ऐसे अनेह नंदोपनंद मुख,
इंद्र इष्टि उपहार लगे अर्जन सुवृष्टि सुख ॥
कहिय कृष्ण सब करहिं इष्टि गोवर्द्धनकी अब,
नहिं कर्षुक नहिं बनिक नियति गोपहि किन्नैं तब ॥
सुरभी१अरएय२पर्वत३सुभग ए परदैवत अप्पनैं,
पुनि सुनत ऋद्ध गिरि इह पिहुल स्वैररूप बिहरत बनैं॥७॥

दोहा

आकाश में बादलों ने और भूमि पर कमल और जल ने कालेपन को इसप्रकार छोडा कि जैसे योगाभ्यास (अपने अपने विषयों से इंद्रियों को खींचने) से आत्मा इंद्रियों के विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) को छोड देता है, और योगविद्या के जाननेवाले जती के समान सूर्य ने पूरक (श्वास को खींच कर भीतर भर लेने) की रीति से जल को अपनी किरणोंमें भर कर कुंभक (भीतर भरेहुए श्वास को निश्चल करके रोकने) की रीति से रोक रक्खा. फिर रेचक (रुकेहुए श्वास को बाहिर छोड़ने) की भांति अत्यंत रख कर निकाला और सुंदर तलाव, नदी, झील और कठिनाई से खोद कर कियाजावे ऐसे जल में कुमोदिनी (रात्रिविकाशी कमल) परम शोभा को धारण करने लगे, जैसे कि वीरपुरुषों का मुख शस्त्रों के घावों से और शरण आयेहुओं को शरण रखने से शोभायमान होता है ॥ ६ ॥ ऐसे समय में नंद उपनंद आदि सब गोप अच्छी वर्षा के सुख के लिये इंद्र का यज्ञ करने की सामग्री इकट्ठी करने लगे तब कृष्ण ने कहा कि हम लोग नतो करसे हैं और न बनिये हैं भाग्य ने अपने को गोप बनाया है, इसकारण से गोवर्धन पर्वत के निमित्त यज्ञ करना चाहिये; क्योंकि अपने गैयां, वन, पर्वत येही सुंदर देवता हैं. और फिर यह भी सुनते हैं कि इस पर्वत में बहुत समृद्धि है, इसकारण से स्वतंत्रता से विहार करना बने ॥ ७ ॥

गोन रहैं बिनु बन गिरिन, इन जुत गो इम इष्ट ॥
इनहित मखबर याहितैं, देखहिं ह्वैहि जु दिष्ट ॥ ८ ॥

षट्पदी

मत अखिलन यह मन्नि अदि[1] हित मख आरंभिय,
पय१दहि२पलल[2]३अपूप[3]४बिबिध ओदन[4] पकाय लिय ॥
सो सकटन[5] सब सज्जि गये ब्रजजन गोवर्द्धन,
तिहिं[6] सिर सब उपहार[7] भरे नानाबिध भोजन ॥
करि अन्नकूट अर्चन[8] करिय सिसु गोपिन संजुत सबन,
इक रूप अपर हरि[9] धरि अतुल मैं गिरि कहि किय सब असन[10]
गउन पुज्जि गिरि एह सबन करवाय प्रदक्खिन ॥
सहँसन द्विजन जिमाय बहुरि आये सब स्वबिपिन[11] ॥
यह गिनि दर्प[12] अपुब्ब[13] सक्र[14] बुल्लिय[15] संबर्तक[16],
अक्खिय सठ आभीर[17] कछुन जे हुव मखकर्तक[18] ॥
किय इष्ट धेनु अर्भानुमत[19] तिन धेनुन[20] जुत ब्रज सहित,
मैं भीर प्रचुर[21] बरखहु मुदिर[22] अब गोपन बोरन उचित ।१०।
संवर्तक[23] गन जलद[24] सुनत छाये व्रज उप्पर,
अभ्रमुप्रिय[25] आरोहि[26] भीर हुव संग पुरंदर[27] ॥
पवन १ सलिल[28] २ करका[29] ३पखान[30] ४संपा[31] ५असनिन[32]६सह,
उपडि घोर आसार[33] लगे डारन अति आग्रह ॥

गैयां वन और पर्वत विना नहीं रहती, इसकारण से इन (वन और पर्वत) सहित गैयां अपने प्रिय हैं, इसीकारण से पर्वत के अर्थ यज्ञ करना श्रेष्ठ है, जो भाग्य होगा सो होगा, करके देखें ॥ ८ ॥ १पर्वत के लिये २मांस ३आटा ४अन्न ५छकड़ों में ६उस पर्वत के ७ सामग्री ८ पूजन ९ कृष्ण अपना बड़ा भारी दूसरा रूप धारण करके 'मैं पर्वत हूं' यह कह कर सब सामग्री १० भोजन कर गये ११ अपने वन(वृंदावन)में १२घमंड १३अपूर्व १४इंद्र ने १५मेघों को १६बुला कर कहा कि मूर्ख १७अहीर कुछ भी नहीं वे भी यज्ञ को १८काटनेवाले होगये और १९बालक की सलाह से गैयाओं को अपना इष्ट करलिया २०उन गैयाओं सहित २१अत्यंत २२जल २३मेघों के समूह २४बादल २५एरावतपर २६चढकर २७इंद्र २८जल २९ओला (गडा) ३० पाषाण (पत्थर) ३१बिजुली ३२ वज्र ३३मेघधारा

बहु सुरभि पिक्खि प्रानहु तजत जानि वइर बासव[2] करिय
साँवलै बाल सत्तम ७ बरस इक १ नख वह गिरि उद्धरिय[3]॥११॥
तरुन[4] छल्लि करकान[5] छुलत साखाभर[6] तुट्टत,
असनिन पाँत लदाव गुमट मंडप गृह फुट्टत ॥
पवन फेट गिरिकूट[8] लगत लुंबत लहरावत,
बिज्जुन[9] पात दरारि पुहवि[10] नैंक न जैंक[11] पावत ॥
कहि सुनि न सकैं कहुँ कोउ किहैं कतिन त्राहि मैन[12] करि करिय,
साँवलै बाल सत्तम ७ बरस तदिन[13] अद्रि[14] नख उद्धरिय ॥१२॥
बाँसबसे[15] बनि संग प्रबल संवर्तक प्रेरेत,
वृंदावन पर बैर बिरचि बज्जन भट भेरत ॥
ब्रजके सब जन बुल्लि[16] अखिल[17] धन जुत गिरि अंतर,
रक्खि रु तिहिं करि अभय छाय लिय दूर दिगंतर[18] ॥
नहिं छुवन नीर नैंकहु दयो करि करि घन थक्के गहर,
साँवलै धरिय सत्तम ७ बरस पब्बय नख छप्पन पहर ।१३।

दोहा

यह लखि कछु बिगरयो न गिरि, परयो हरि[19] हु हरि[20] पाय
नुति[21] बिधाय[22] दिन्नौं सकल, हेलन[23] माफ कराय ॥१४॥
कहिय बहुरि गोलोकके[24], गोगन[25] अक्खिय मोहि ॥
तातैं मम गजघंट जल, सिंचो माधव तोहि ॥१५॥
इम कहि सित इभ घंटलै, पूरि पुरयजल[27] ताहि ॥

---

१ बहुत गैयाओं को प्राण छोडते देख कर २ इंद्र ने वैर किया है यह जान कर ३ उठाया ४ वृक्षों पर ५ओलों ६ से भार से ७वज्र के पडने से ८शिखर ९ बिजुलियों के पडने से १० भूमि ११ चैन १२ कितनेक अपने मन में ही रक्षा करो यह कहने लगे १३ उस दिन १४ पर्वत नख पर उठाया १५ इंद्र के सदृश १६ बुला कर १७ संपूर्ण धन सहित १८ दिशाओं के अंतर तक १९ इंद्र भी २० कृष्ण के २१ स्तुति २२ करके २३अपराध २४कृष्ण के लोक में२५ गैयाओं के समूहों ने २६ अभिषेक करने को कहा है ऐरावत की २८ को २७ पवित्र जल से भरकर.

करि अभिसेकन कन्ह कौ, संक्र[1] कहिय पुनि चाहिं ॥ १६ ॥
अर्ज्जुन पांडव अंस मम, कुंती जाँठर[2] जात[3] ॥
हरि ताकौं रक्खहु सदा, अपनौं जानहु तात ॥ १७ ॥
तव सहाय ह्वैहैं वहहु, भार उतारन माँहिं ॥
हरिकी[4] इम सुनि कहिय हरि[5], यह सब स्वीकृत[6] आँहिं[7] ॥१८॥
जयहिं[8] न कोऊ जित्तिहै, मैं रहिहौं भुव जाव[9] ॥
इम कहि संक्रहिं[10] सिक्ख दिय, श्रीपति[11] सदय स्वभाव । १९ ।
करि आलिंगन कन्हको अभ्रँ[12] द्विरद आरूढ ॥
प्रविस्यो त्रिदिव[13] पुरंदरहु[14], गति प्रभुकी लखि गूढ[15] ॥ २० ॥
हरिहु गोप गोपिन सहित, आये व्रज अखिलेस[16] ॥
इक्क समय विहरत इमहि, विलसत सरद बिसेस ॥ २१ ॥
कामपाल जुत[17] बेणु[18] कल, ईस[19] राका[20] बन अंत ॥
छाँडि हरि सस्मरस्वश्वर[21] मधुर, ललित त्रिभंग[22] लसंत ॥ २२ ॥

हरिगीतम्

यह वेणु कल[23] सुनि गोपिका व्रज छोरि सम्मुह ही चली,
अवरोध[24] बंधुन लंघिकैं न रुकी गई स्मरउज्झली[25] ॥
न दई जु[26] जान सु[27] पुण्य१अघ१दुव२भुम्मिमुक्त हि ह्वै गई ॥

१ इंद्र ने २ उदर से ३ पैदाहुआ ४ इंद्र की ५ कृष्ण ने ६ मंजूर ७ है ८ अर्जुन को ९ जब तक १० इंद्र को ११ लक्ष्मी के पति (कृष्ण) ने दयालु स्वभाव से १२ ऐरावत पर चढ कर १४ इंद्र १३ स्वर्ग में गया १५ छिपीहुई १६ सब के स्वामी १७ बलदेव सहित १८ वंसी का मधुर शब्द १९ आश्विन की २० पूर्णिमा २१ काम सहित २२ शरीर में सुंदर तीन बल शोभायमान होकर २३ वंसी का मधुर स्वर २४ जनाने से २५ कामदेव से उलझी हुई २६ जिनको नहीं जाने दी २७ वे पुण्य पाप दोनों बराबर होजाने से अर्थात् कृष्ण के पास जाने की उत्कंठा मन में रहने से पुण्य, और नहीं जाने से पाप, ये दोनों बराबर होजाने से भूमि पर ही मोक्ष को प्राप्त होगई (पुण्य अधिक रहने से पुण्यफल, और पाप अधिक रहने से पापफल भोगना पडता है, और जब ये दोनों बराबर होजाते हैं तभी मोक्ष होना मानते हैं) और जो कृष्ण के पास गई उनकी शिक्षा पाकर

रु गई सु कन्हहि पास सिक्खतही अहम्मतिमैं भई ॥ २३ ॥
हरि अन्य देस गये तहाँ सब कृष्ण ह्वै रमनैं लगी,
पदचिन्ह खोजत औरके पद संग देखि चली ठगी ॥
अवचाय * पुष्पनको कर्यो हरि सो लख्यो कहुँ जायकैं,
कहुँ संगकी तियको कलाप गुथ्यो सु ठौरहु पायकैं ॥ २४ ॥
पुनि संगकीहु सगर्ब जानि टरे जनार्दन ताहुसौं,
इत्यादि सब लखतीभईं थल चुंबि चिन्हन बाहुसौं ॥
गहनाटवी[2] पुनि अग्ग जानि मुरी सबै बनि बावरी,
रहिकैं जमी तट[3] कृष्ण चेष्टित गानकी रचना करी ॥ २५ ॥
तँहँ भक्ति कातर[4] कन्ह आय बिलासि गोपिनकौं लई,
रचि रास लास[5] प्रसन्नता सबकोहि मानसकौं[6] दई ॥
प्रतिगोपिका बनि कृष्ण हत्थन हत्थ बंधन दे नचे,
मनि मंजु भूखन भूरि[7] सिंजित[8] सोर संकुल[9] ह्वाँ[10] मचे ॥ २६ ॥
फरके अधोपट[11] घेर घुम्मि बनाय डेरन लौं भये,
सिर चीर बेग समीरसौं[12] बिथुरे बितानन[13] लौं छये ॥
कटिसूत्र[14]१नूपुर२घंटिका[15] झननंकि झल्लरि लौं बनीं,
करफूल[16] कंकन कूजना[17] तरु चंपके पिक[18] ह्वै तनीं ॥ २७ ॥
स्वर मंद१मध्य२रु तार३मग्गनहार ग्रामनमैं फिरे,

ब्रह्मस्वरूप (अहंब्रह्म) होगई ।२३। दूसरे स्थल में कृष्णके चरणोंके चिन्ह खोजते स मय उनके साथ दूसरे पदचिन्ह देखकर *पुष्पोंका छेदन १माथा गूंथा ।२४। साथ की स्त्री को घमंड सहित जानकर श्रीकृष्ण उससे भी जुदा होगये, इत्यादिक स्थलों को देखती और चिन्हों को हाथों से चूमतीहुई आगे २ गहन वन जान कर बावली सी बन कर पीछी फिरी, और ३ भूमिक्षेत्र में कृष्ण के समान चेष्टा करके गाने लगी ॥ २५ ॥ ४ भक्ति के कायर ५ नृत्य ६ मन को प्रसन्नता दी ७ बहुत ८ भूषणों के शब्द का सोर ९ अवकाश रहित होगया १० वहां पर ११ लहँगे १२ आधे के चीर पवन से फैलेहुए १३ डेरे (सामियाना) के समान छागये १४ कटिमेखला [कणगती] १५ घूघरों का झनकार १६ हथफूल और कड़ों के १७ शब्द ने चंपे के वृक्ष की १८ कोयल के समान विस्तार किया ॥ २७ ॥ मंद, मध्य और उच्च तीनों प्रकार के स्वर याचकों के

तउ दुस्थ तीन३हिमैं थके न चतुर्थ४सौं कबहू भिरे ॥
परिवर्तके श्रम काहु कन्हर कंध बाहु लता दई,
अवलंबके हित वल्लरी तनु कल्पपादपपैं गई ॥ २८ ॥
कटिनम्र अंग त्रिभंगको करकंज काहुक चुंबयो,
कुचभार लंक बिसंक तुट्टत जानि आश्रयकै लयो ॥
इकसार भेद प्रकार बर्जित रासको फिरनौं लस्यो,
आवर्त अद्भुत जानि यह शृंगार बारिधि मैं बस्यो ॥ २९ ॥
तार्तीय१सप्तक७मूर्च्छना जमुना प्रतिध्वनि पूर्ण व्है,
बढिवेलगी सु बिथारि बीचिन ज्यौं छकी सिर घूर्ण व्है ॥
बक्षोज चूचुकतैं उडैं मनिहार हारन बल्लरी, ॥
मनु चक्रबाकन चंचुतैं हुव दूर सैवल मंजरी ॥ ३० ॥
बलि झँकु झँकुत झँकु झँकुट धुंकु धुंकुट बिल्थरैं,
धित्था तथुंग तथुंग तत्ता थेइ थेइ धुने परैं ॥
बिछिया१अनोट२जराय जेवर३पाय पायल४त्यौं बजैं,

समान ग्रामों में (संगीत में सात स्वरों के साथ षड्ज, मध्यम और पंचम ये तीन ग्राम हैं) फिरने लगे तोभी वे याचक तीन ग्रामों में ही थक गये, चौथे से कभी नहीं भिड़, अर्थात् तीनों ग्रामों को छोड़ कर स्वर बाहिर नहीं गये. फिरने के श्रम से किसीने कृष्ण के कंधे पर अपनी भुजलता दी, सो मानों सहारा लेने के लिये छोटी बेलि कल्पवृक्ष पर गई ॥ २८ ॥ नम्र क ... र्ल किसी गोपी ने त्रिभंग (कृष्ण) के कमल रूपी हाथ का चुम्बन किया सो मानों कुचों के भार से कमर टूटजाने की विशेष शंका से सहारा लिया है. भेद भाव से रहित होकर अथवा नाच में त्रुटि न होने देकर एकसां रास का फिरना शोभायमान हुआ. इसप्रकार का अद्भुत गोलाकार फिरना देख, शृंगार लज्जित होकर मानों समुद्र में घुस गया. भावार्थ यह है कि समुद्र में जो आवर्त भ्रमर पड़ते हैं वे मानों शृंगार का कियाहुआ इसी का अनुकरण (नकल) है ॥ २९ ॥ १ तीसरी और सातवीं २ मूर्छना [सात रागों के साथ इक्कीस मूर्छना हैं] की प्रतिध्वनि से यमुना नदी पूर्ण होकर ३ लहरों को ४ मस्तक घुमाकर ५ कुचों की बींटाणियों से मणियों की मनोहर हारलता उडती है सो मानों चकवी की चोंच से शैवाल (जलनीली) की मंजरी दूर होगई है ॥ ३० ॥ पुनि झँकु से लेकर थेई थेई पर्यंत जितने शब्द हैं वे

करडाल[1] १ अंगद[2] २ नोगरी ३ चटसाल दर्पक[3]की सजैं ॥ ३१ ॥
मखतूल[4] मेचक[5] गुंफ[6] पिठि कलाप[8] कुंतल उच्छरैं,
नथमोरके भय जोर कातर पन्नगी पलटाकरैं ॥
जिनके अलाप बसंतभव परपुष्ट पंचम ५ ढंकयो ॥
श्रुति १ जाति २ ताल ३ प्रबंध सम्मलि भास मन्मथको भयो। ३२।
मम नाथहू पर हाथ व्है जँहँ साथ सर्बहिको करयो,
कटपैं छुटयो पट लंबमान[9] किरीट कानन लौं ढरयो ॥
कित कृष्ण लास्यज[10] १ केकिचंद्रक[11] २ बांसिका ३ रु बिखाने[12] ४ व्है,
बनमाल ५ वेत्र[13] ६ बिकीर्ण बिप्लुत कर्णाकार ७ न कान व्है ।३३।
जिम गोप नारिननैं चह्यो तिम व्हैरह्यो रु करयो कह्यो,
सबनैं गह्यो सबकी सह्यो सबठौं लह्यो इम उम्मह्यो ॥
वृंदा[14]ऽऽटवी जिहिं रत्ति संकुल रागके भरसौं भरयो,
लखि ताहि देवन छाकलै निज नाक[15] नच्चहु बीसरयो ॥ ३४ ॥
कबलौं करौं नृप राम बर्णन काव्य जो मम छंद व्है,

सव वाद्य के अनुकरण के शब्द हैं १ हाथ की डाल (भूषण विशेष) २ भुज बंध ३ कामदेव की पाठशाला सभते हैं ॥ ३१ ॥ ५ काल ४ रेशम से ६ गुथा हुआ ८ केसों का ७ समूह (वेणी, आदी) पीठ पर उछलता है, सो मानों बेसर (नथ) में मोर बनाहुआ है, उसके भय से कायर होकर सर्पिणी पलटा करती है (मयूर का सर्प को खाजाना प्रसिद्ध है) जिन गोपियों के पंचम स्वर की आलाप ने वसंत ऋतु में होनेवाले कोयल के (कोयल काक के बच्चों को अपना समझ कर पाला करती है, इससे इसका नाम परपुष्ट है) शब्द को ढकदिया. राग में श्रुति जाति और ताल के प्रबंध के शामिल कामदेव का आभास हुआ ॥ ३२ ॥ ग्रंथकर्ता [सूर्यमल्ल] कहते हैं, कि मेरे स्वामी कृष्ण ने पराये हाथ में होकर सब का साथ किया ९ लंबा १० [ ] ११ मयूरपंख के चंदवे जो कृष्ण के मुकुट में रहते हैं १२ सींग का धनुष १३ वेत की लकडी, ये सब विव्हल होजाने के कारण बिखर गये और कर्णभूषण कानों में नहीं रहा ॥ ३३ ॥ १४ वृंदावन उस रात्रि में अवकाश रहित राग के भार से भर गया १५ अपने स्वर्ग का ॥ ३४ ॥ हे राजा रामसिंह ! इसका कहां तक वर्णन करूं यदि काव्य मेरे स्वाधीन होवे और अन्य राजाओं की श्रधा अल्प [कम] होवे तभी बुद्धि के अनुसार कुछ वर्णन करना बनै. परन्तु

तवहीं वनैं कछु बुद्धिलौं रु कथा महीप न मंद व्है ॥
पर अन्न भुज्जत रावरो सु निदेस व्यर्थ न होन दै,
रु वनैं यहै नय तो न पण्डित और कानहु कोन दै ॥३५॥
प्रभु सर्वको प्रभु रावरोहि निदेस पूरन ठानिहै,
अरु सुद्ध मो हिय तो यहैहि मदीय है यह मानिहै ॥
इसं मासकी निस पूर्णिमा१५इम रास माधवनैं रच्यो,
न तज्यो स्वसुंक्र मनोर्थ पूरि समस्तके मनमैं मच्यो ॥३६॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचतुर्भुजपौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यसमयसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे भाण्डीरवटस्थलविहरद्रेवतीरमणप्रलम्बाऽसुरनिपातनवासुदेववासवेष्टिविध्वंसनप्रकुपितपुरुहूतसंवर्तकाऽऽसारप्रस्तारणगोपालगोवर्द्धनगोत्रोद्धरणशरणाऽऽगतशङ्कितशक्रसमाश्वासनरासविहारवर्णनमष्टमो८मयूखः ॥ ८ ॥ आदितः पञ्चाशत्तमः ॥ ५० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

आप का अन्न खाताहूं सो आप की आज्ञा को व्यर्थ नहीं होने देता, अर्थात् आप के वंश का ही विशेष वर्णन करता हूं और जो केवल आप के वंश का ही वर्णन करने की नीति बनै तो और पंडित कोई कान ही नहीं देवै कोई सुनै ही नहीं ॥३५॥ हे स्वामी रामसिंह ! जो सब का स्वामी परमेश्वर है वह आप की आज्ञा को ही पूर्ण करावेगा और मैं [ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल] जो शुद्ध हृदय से वर्णन करता हूं तो आप भी यही मानोगे कि यह [जो औरों का वर्णन कियाजाता है वह] भी मेरा ही है॥ १ आश्विन मास की २ अपना वीर्य नहीं छोडा अर्थात् व्यभिचार नहीं किया ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में भांडीर वट के स्थल में विहार करते समय बलदेव का प्रलम्बासुर को मारना, श्रीकृष्ण का इंद्र के यज्ञ को विध्वंस करना, क्रुद्ध हुए इंद्र का मेघधारा को फैलाना, कृष्ण का गोवर्धन पर्वत को उठाना, शरण आयेहुए शंकित इंद्र को आश्वास करना (विश्वास देना) और रासविहार वर्णन का आठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से पचास मयूख हुए । ५०

दोहा

ऐसैंही हरि इक समय, बिहरत अप्पन इट्ठ ॥
धुतबिखान वृख रूप धर, आयो असुर अरिट्ठ ॥ १ ॥
स्रावत सुरभिन गर्भ सठ, नीरद छबि रवि नैंन ॥
खुरन बिदारत भुम्मि खल, बाढत अखिल अचैंन ॥ २ ॥
बिटपि घात अंकित बदन, बाधत तापस ब्रात ॥
लम्बकंठ ओठन लिहंत, उच्च ककुद उमहात ॥ ३ ॥
देखत गोपी गोप द्रुत, किय हरि कृष्ण पुकार ॥
सिंहनाद करि तिँहिँ सम्मुख, हुव बसुदेवकुमार ॥ ४ ॥
सिंह निनद्द अरु प्रतल ध्वन, वहहु सुनत इत आय ॥
उदर सिंग मारन लग्यो, जोहि कह्यो जदुराय ॥ ५ ॥
जाँनु मचक दै तिँहिँ जठर, वहहि बिखान उपारि ॥
ताहि हन्यौं हरि ताँहि करि, ब्रजजन अभय बिथारि ॥ ६ ॥

षट्पदी

पूतना१रु धेनुक२प्रलंब मारित अरिष्ट४अब,
गोवर्द्धन गिरि धरत दमत भुजगादि दुष्ट सब ॥
ऐसहिँ नारद कहिय तत्थ्य जिम हुव उदंत जिम,
दुष्ट सुनत वसुदेव कुप्पि तरज्यो सु रुकैं किम ॥
संसदि विनिंदि सब जादवन अक्खिय बुल्लि स्वफल्कसुत,
अक्रूर जाय आनहु ध्रैरहि जु अरि कृष्ण बल बंधुजुत॥७॥

१ कंपातेहुए सींगों से २ वृषभासुर ३ गैयाओं के गर्भों को पटकता हुआ ४ मेघ की सी छवि और सूर्य सरीखे नेत्र ५ सबको ६ वृक्षों की घात से ७ चिन्हित (निशान सहित) है मुख जिसका ८ तपस्वियों के समूह को ९ पीड़ा देताहुआ १० ओठों को चाटताहुआ ११ ऊंची खूँदड़ (पीठ के ऊपर का मांस पिंड) १२ शीघ्र १३ हे हरि हे कृष्ण १४ गर्जना १५ थाप (ताल ठोकने) का १६ शब्द सुनकर १७ घुटने की १८ पेट में १९ उसीका सींग उपाड़ कर २० उसी सींग से २१ सत्य २२ वृत्तांत २३ कंस २४ क्रोध करके धमकाया २५ सभा में २६ विशेष निंदा करके २७ अक्रूर को २८ शीघ्रही २९ जो मेरा शत्रु ३० भाई बलदेव सहित

त्रिण्णु अंस बलदेव१कृष्ण२मम मारक[1] कहियत,
मन यातैं मामक[2]हु चपल तिन मारन चहियत ॥
धनु उच्छव ठहैहैं इहाँहु तिथि कल्हि चउद्दसि१४,
मल्ल नियुद्ध[3] निमित्त बेग आनहु तिन हिय बसि ॥
चाणूर१मल्ल मुष्टिक२चतुर तोसल३मम अरि मारिहैं,
वा[4] नाग[5] कुवलयापीड४यह प्रबल निसंक पछारिहैं ॥ ८ ॥
पुनि वसुदेव१रु नंदगोप२मुख[6] खल हम मारहिं,
उग्रसेन३मम जनक[7] मारि भुव आन विथारहिं ॥
तोविनु जादव ओर सत्रु हमरे हनिहैं सब,
यातैं नंद निकेत[8] जाय अर्भक[9]२आनहु अब ॥
दैं सिक्ख दानपति[10]कों इम रु केसी प्रति पठयो हुकम,
सुत गोपबेस वसुदेव के जाय नंद ब्रज हनहु जम[11] ॥९॥
स्वामि कथित अनुसार असुर केसी हय आकृति,
वृंदावन गय बेग सफन[12] दारतैं[13] भुव संप्रति[14] ॥
संटा[15] लोम संहात बारिवाहन[16] विखरावत,
लंघित रवि ससि गैल असह कुद्दत उफनावत ॥
निखिलन[17] डरात हेसा[18] निनदैं[19] पहुँच्यो ब्रज कलकैल[20] करन
गोपी रु गोप कातर[21] गये सब रक्खहु कहि रहि सरन ॥१०॥
वासुदेव तब बेग कह्यो केसी आवहु इत,
तोरों दसन[22] त्वदीय[23] जथा[24] पूषाके[25] स्मरजित[26] ॥
दै इम बचन प्रतोद[27] हत्थ हयमुख दिन्नों हरि,

१ मेरे मारनेवाले २ मेरा भी ३ मल्लों से बाहुयुद्ध के कारण ४ अथवा ५ हाथी ६ आदि ७ पिता ८ घर ९ बालकों को १० अक्रूर को ११ दोनों को ॥ ८ ॥ मालिक के कहने माफिक केशी नाम राक्षस घोड़े का स्वरूप करके १२ खुरों से १३ खोदता हुआ १४ अभी [इसी समय] १६ बादल रूपी १५ गरदन के केसों [केसवाली] का विखेरता हुआ १७ सब को १८ हींसने के १९ नाद से २० ब्रज में कोलाहल करने को २१ कायर २२ दांत २३ तेरे २४ जिस प्रकार २५ पूषा के २६ महादेव ने २७ वचन रूपी चाबुक.

दरी[1] बिच किं[2] दंभोलि[3] झाट रद[4] तास गये झरि ॥
जगदीस बाहु बढि तहँ सजेव[5] खंड दोय खलके करे,
सोनित सफेन बमिते[6]२सकल प्रस्रव[7]१मल२मोचंत[8] परे ॥११॥

दोहा

नुति[9] किन्नी केसी हनत, अखिलन मोद अघाय ।
अंत रहित[10] नारद इहाँ, अक्खिय कृष्णहि आय ॥१२॥
साधु साधु वसुदेव सुत, नर १ हय २ समर[11] बिनोद ॥
अप्प[12] दिखायो दुलभ यह, मम हिय छायो मोद ॥१३॥
केसव अप्प कहायहो, केसी बध करि कर्म ॥
कल्हि कंसबध लखनको, बलि[13] ऐहौं जग[14]वर्म ॥१४॥
रचिहो पुनि रनखेत रन, भुम्मि उतारन भार ॥
सो लखिहौं सब के सरन, अगे[15] जंगम[16] आधार ॥१५॥
इम कहि इत नारद गये, आये घोस[17] अनंत ॥
आरुहि रथ अक्रूरहू, पहुँच्यो व्रज परजंत ॥१६॥
तर्णन[18] बिच निरखे तहाँ, गो दोहत गोपाल ॥
स्मेर[19] सुभग बलभद्र सह, कंसासुरके काल ॥१७॥
दियउ जाय तहँ दानपति, माधव चरनन मत्थ ॥
अक्रूरहिं गिनि भक्त उन, हिय लाग्यो दृढ हत्थ ॥१८॥

॥ पज्झटिका ॥

अक्रूर निजागम[20] अत्थ आय, सब दियउ कंस आसय सुनाय ॥
हरि कहिय दानपति[21]सौं सहास[22], निहचै खल पावहिं कल्हि नास ॥१९॥
बल[23]१मैं२रु इतर[24] सब गोप व्रात[25], पहुँचैंगे मधुपुर[26] तात प्रात ॥

---

१ पर्वत की खाद्री में२किधों३वज्र पड़े इसप्रकार४दांत५शीघ्र६उगलता हुआ७टपकताहुआ ८ छोडताहुआ ९ स्तुति १०मृत्यु से रहित [नारद को अमर मानते हैं) ११ मनुष्य और घोड़े के युद्ध का १२ आपने १३ पुनि १४ हे संसार के रक्षक १५ अचर [जड़] १६ चर [चैतन्य] के आधार १७ अहीरों के घरों में कृष्ण आये१८बछड़ों के बीच में१९मंदहास्य२०अपना आना २१ अक्रूर से २२ हास्य पूर्वक २३ बलदेव २४ दूसरे २५ समूह२६मथुरा.

रचिस्वागत*इमकहि रक्खिरत्ति, स्यंदनजुतपाति[1]हि किन्नसत्ति[2]।२०।
लै गोप सकल नंदादि ल्लार, बिरचिय प्रयान दानव बिदार ॥
रोदन भवं गोपिन सुनत राव[3], छोरि रु चलेहि बसुदेव छाव[4] ॥२१॥
अक्रूर सहित इक१रथ अरोहि, माधव१बल२हंकिय सबन मोहि॥
कालिंदि पुलिन[5] पहुँचत कृपाल, किय दानपतिहु मध्यान्हकाल।२२।
जमि[6] सलिल[7] निमज्जत न्हात जत्थ, तक्कयो स्वफल्कसुत[8] चित्र[9] तत्थ॥
फन सहँस१०००कुंद[10]अवदात[11] फीत[12], प्रभु सेव्यमान देवनपुनीत ।२३।
वासुकि[13] मुख नागन बेष्ठमान, पट नील श्रवन कुंडल प्रधान ॥
अंभोज[14] नयन पत्राऽवतंस[15], सब सत्वन[16] सेवित सुप्रसंस ॥ २४ ॥
इहिं दिव्यरूप बलदेव एहि, अक्रूर सलिल अंतर लखेहि ॥
बलभद्र अंक श्रीवच्छ[17] बच्छ[18], अंभोज[19] नयन घनस्याम अच्छ ॥२५॥
पंकज[20]१गदा२रु दर[21]३चक्र४पानि, माधव लये ति[22] अक्रूर मानि ॥
सनकादि महामुनि सेव्यमान, निरखत भयो सु विस्मय निधान।२६।
स्यंदन[23] पर छोरे मैं सुहाय, इत कित उभै२हि जलमध्य आय ॥
इम जानि निकासि चितये उदार, दीसे तब रथ पर दुव२कुमार॥२७॥
व्है जल निमग्न[24] पुनि लक्खिय हाल, पहिलैं जिम दीसे तब कृपाल॥
बाहिर पुनि आवत रथ विसिष्ट[25], अक्रूर लखे अखिलेस[26] इष्ट ॥२८॥
कर्त्तार[27] जानि किय नमसकार, बलि[28] सबन किन्न पुरग[29]मं बिहार ॥

*आये का आदर १घोड़े[घोड़ों को रथ में जोते]२हुआ३शब्द४पुत्र५यमुना के कनारे ६ यमुना के ७ जल में डुब की [गोता] लगा कर स्नान करते समय ८ अक्रूर ने ६ आश्चर्य देखा कि १० मोगरे के समान ११ स्वेत और १२ विकसे हुए हजार फणवाले प्रभु का पवित्र देवता सेवन करते हैं १३ वासुकि आदि सर्पों से घिरेहुए १४ कमलनयन १५ पत्र का है मुकुट जिनके १६ सब प्राणियों से सेवन कियेहुए श्रेष्ठ प्रशंसा युक्त ॥ २४ ॥ इस दिव्य रूप से अक्रूर ने इन्हीं बलदेव को जल में देखा और बलदेव की गोदी में १७विष्णु का चिन्ह है जिनकी १८छाती पर और १९ कमल के समान नेत्र, सुन्दर घनस्याम स्वरूप २० कमल २१ शंख २२ तिन को अक्रूर ने लक्ष्मी का पति मान लिया २३ रथ पर २४ डूबकर २५ युक्त २६ सब के इष्टदेव २७ कर्तार २८ पुनि २९ आगे जानेवालों ने.

*चरमाचल पहुँचत चंडधाम, मधुपुर सबैहि पत्ते ललाम ॥ २९ ॥
अक्रूर कहिय हरि१बल२हिं तत्थ, स्यंदन तजो रु न चलौऽवसत्थ ॥
मैं अग्ग नगर प्रविसत उदार, प्रविसहु तुम पिच्छैं चरनचार॥३०॥
वसुदेव गेह जाहु न वहोरि, खल कंस नतो कछु करहिं खोरि ॥
इम कहि स्वफल्कसुत पुर प्रविष्ट, पिच्छैं सन प्रविसे अखिलइष्ट॥३१॥
बल१कृष्ण२लखत मधुपुर बिनोद, दुव२राजमार्ग पहुँचे समोद॥
तहँ कंस रँजक सुहि रंगआर, पिक्ख्यो सु करत पटसंसकार॥३२॥
जँच्चे पट हरि बल तरजि कंस, सुनि रजक कुवँच बुल्ल्यो नृसंस ॥
सिर प्रतल तोरि तस जव समेत, ले वस्त्र गये मालिक निकेत॥३३॥
हसि तत्थ पुष्प मंगे बहोरि, दिन्नैं सुमजीवी इतहि दोरि ॥
किय दंडपतन रचि नमसकार, इहिं तुट्ठि हरिहु दिय बर उदार॥३४॥
न तजैं श्री मालिक कबहु तोहि, कबहू न वित्त बल हानि होहि॥
यहँ भुग्गि भोग बहु आयु अंत, दिवलोक साधु वसिहैं दिपंत॥३५॥
मति तव नहिं पावहिं धर्मभेद, कबहु न व्है संततिकोहु छेद ॥
पृथु आयु होहु तव कुल सुपोस, लहहु न कदापि उपसर्ग दोस॥३६॥
इम ले प्रसून वर अप्पि ताहि, आवंत राजपथ दुव २ उमाहि ॥
कुब्जा कंसासुर चेटिका सु, हुव भेट नैंक वंकाभिधा सु ॥ ३७ ॥

१ सूर्य के * अस्ताचल पहुंचते समय २ पहुंचे ३ अब ४ पैदल होकर ५ दोष ६ अक्रूर ७ कंस का धोबी और वही ८ रंगरेज भी था जिसको वस्त्र ९ सुधारते देखा १० मांगे ११ कंस को धमका कर, कि कौन तेरा कंस है, यह सुन कर धोबी १२ खोटा वचन बोला १३ क्रूर १४ थप्पड़ से उसका शिर तोड़ कर १५ वेग के साथ १६ माली के १७ घर १८ माली ने १९ शीघ्र २० दंड के समान पड़ कर. कृष्ण ने प्रसन्न होकर इसको उदार वर दिया ॥ ३४ ॥ हे माली ! तुझको २१ लक्ष्मी कभी नहीं छोड़ेगी और तेरे २२ धन और बल की हानि कभी नहीं होवेगी २३ स्वर्ग लोक में २४ श्रेष्ठ पुरुष २५ शोभायमान होकर २६ बुद्धि २७ संतान की २८ त्रुटि २९ बड़ी आयुवाला ३० श्रेष्ठ पुत्र ३१ कभी ३२ रोग अथवा उत्पात ३३ पुष्प ३४ कुबड़ी (कमर से झुकीहुई) कंस असुर की ३५ दासी ३६ वक्रा (कुबड़ी) है नाम जिसका

अनुलेपन[1] भाजन[2] जास हत्थ, सो पै मुकुंद मंग्यो समत्थ[3] ॥
कुब्जा सुनि सादर करि प्रनाम, दिन्नौं अनुलेपन हित सकाम ।३८।
दुवरवीरन चर्चिय अप्प देह, यह[4] कृष्ण करिय इक चित्र[5] एह ॥
कुब्जा दुव रचरमन चरन थप्पि, अंगुलि दुवर जाके चिबुक[6] अप्पि।३९।
कछु तमक दई अटतहि उदार, सो सरल भई लहि वपु सुढार ॥
पट खैंचि[7] कांत[8] चलिये स्वगेह, बुल्ली[9] इम भावन भर सनेह ॥४०॥
हरि कहिय वहुरि ऐहौं सहेत, इम तिहिं छुराय किय अग्ग चेत ॥
पुनि किन्न धनुखसाला प्रवेस, देख्यो समस्त फिरि रंगदेस ।४१।
कोदंड[10] लियउ कन्हर उठाय, टंकारि तोरि दिय दल[11] २ गिराय ॥
जिंहिं निनंद भोजपति[12] त्रास जग्गि, लक्खन खल पक्खन कंप लग्गि।
धनु जामिक[15] जुज्झे सकल धाय, ते मारि दये निजपद[16] पठाय ॥
आगंत[17] स्वफल्कसुत[18] प्रथम जानि, पुनि चापभंग निस्वन[19] प्रमानि४३
चाणूर मल्ल मुष्टिक बुलाय, बुल्ल्यो हि कंस दृग लाय लाय ॥
वसुदेवतनय दुव गोपवेस, आये तिन बुल्लहु रंग एस ॥ ४४ ॥
अंदई[22] वनि मारहु रचि नियुद्ध[23], सुनियत मम मारक कृष्ण क्रुद्ध ॥
देहौं तुम्हँहु मम उचित भोग, तुम सहित राज्य करिहौं निरोग।४५।
इम कहि करि मल्लन सावधान, बुल्ल्यो आँधोरन[25] अप्पि दान[26] ॥

---

१ उबटन (शरीर पर लेपन करने का गंध द्रव्य) का २ पात्र, वह भी ३ कृष्ण ने बलवान्पन से मांगा सो कुब्जा ने कामयुक्त होकर लेप करने को दिया ॥ ३८ ॥ ५ यह ४ आश्चर्य की बात करी कि कुब्जा के दोनों पग अपने पगों से दबा कर दो अंगुली उसकी ६ ठौडी (डाढी) के नीचे देकर ॥ ३९ ॥ चलते हुए ने ही थोड़ा सा बल (जोर) देदिया, जिस से उसका कुबड़ापन मिट कर सीधा सुंदर शरीर होगया तब ९ परमेश्वर से स्नेह भरके वस्त्र खींच कर ८ बोली कि हे ७ प्रिय (पति) अपने घर चलिये ॥ ४० ॥ १० धनुष को ११ दो टुकड़े करके १२ उस शब्द से कंस के त्रास जगी और दुष्टों के १४ पक्षवाले १३ लाखों को कंप (धूजनी) लगी ॥ ४२ ॥ धनुष के १५ पहरायत सब आकर लड़े १६ ब्रह्मपद को भेज दिया (मुक्तिदेदी) १७ आना १८ अक्रूर का १९ शब्द २० बोला २१ नेत्रों में अग्नि लाकर [लाल नेत्र करके] २२ निर्दयी २३ बाहुयुद्ध २४ जिस में भोग भोगना २५ महावत २६ हाथी के महावत को दान देकर कहा

अरु कहिय रंगके द्वारभाग, तू रक्खि कुबलयापीड़ नाग*॥४६॥
तिहिँ करि मम मारक गोप बाल, आवहि दुव२मारहु तिन [1]उताल॥
इम कहि समाज बिच कंस आय, बैठो सु मंच [2]परिखद बनाय।४७।
जहँ मंच हजारन सज्जमान, [3]बलि उच्च नीच बैठन [4]बिधान ॥
[5]आसीन भूप सब इक्क ओर, [6]अंतेउर इक्क दिस सुनत सोर ॥४८॥
इक्क ओर मनुज [7]नागर अपार, इक्क ओर [8]ग्राम्यजन लखनहार ॥
इकदिस पुरनारिन बिबिध ब्यूह, इक ओर [9]बारिनारिन समूह ।४९।
बसुदेव १ नंद २ अक्रूर ३ जेहु, बेठे टरि मंचन [10]प्रांत तेहु ॥
सुत मरत जानि सुख लखन आँहिँ, देवकसुताहु पुर तियनमाँहिँ।५०।
सहँसन बादित्तन बनि निघात, मच्चिग तहँ [11]कैलकल [12]अकसमात॥
इहिँ बिच उभै२हि इच्छा बिहार, [13]दाऊ१हरि२आये रंगद्वार ॥५१॥
पिल्लयो सु [14]व्याल तब [15]हस्तिपाल, कोपित [16]कृतांत आयो कराल॥
हनि ताहि दोहु२गहि द्विरद [17]हत्थ, [18]मृगपति२[19]कि रंग प्रबिसे समत्थ५२
किय प्रथम चरित जे जे दुहूगन, ते सुमिरि सबन देखे [20]अनून ॥
[21]वल्गुन लखि मल्लन उभय२बीर, [22]बल्गुने लगे [23]तिं २गतिपथ गभीर॥
चाणूर१कुप्पि लिय कन्ह२खेल, मुष्टिक१लिय [24]दाऊ२दाव मेल ॥
[25]छेपने१रु [26]संन्निपातावधूत२, रचि उभय२उभय२मंडे [27]अभूत ॥५४॥
धुज्जिग दरारि भूतल धमंकि, संकर समाधि छुटि असुर संकि ॥
डगमगिय अद्रि ब्रह्माण्ड डोल, कसमसि भुजंग१कमठस२[28]कोल३
जगबिकल होत कल्पांत जानि, मचि त्रास काल बिकराल मानि॥
[29]पविपात मनहु [30]पंतलन प्रहार, आघात मार प्रसरत अपार ॥५६॥

* अखाड़ा के दरवाजे पर कुवलयापीड़ नामक हाथी को १शीघ्र २ मंचों की सभा३पुनि४रीति५बैठे६जनाना७नगरनिवासी ८ग्रामीण लोग९वेश्याओं का १०मंचों के स्थल से टलकर११कोलाहल१२अचानक१३बलदेव और कृष्ण १४ हाथी को १५महावत ने१६यमराज के समान१७दोनों दंत हाथों में पकड़ कर १८किधों१९बलवान् सिंह रंगभूमि में घुसे२०प्रबल२१सुंदर मल्लों को २२वे मल्ल२३बकरे(अज)के समान लगे२४बलदेव को२५मनोयोग से शरीर मिलाकर२६फेंकदेना२७पहिले नहीं हुए जिस प्रकार२८वराह२९मानों वज्र पड़े जैसे ३०थप्पड़ों

जिमजिमनियुद्ध*हुवअतिअमान, तिमतिमलगिमल्लनघटनमान**
यह जानि कंस मनचित्र धारि, लक्खन वादित्रन दिय निवारि।५७।
हरि पकरि ससंकल मल्ल पाय, चिरकाल गगन रक्ख्यो भ्रमाय ॥
पुनि दियउ रंजक पट भू पछारि, इम लियउ कन्ह चाणूर मारि।५८।
मुष्टिक उर दै बल मुष्टि रीसि, दे जानु हन्यों पुनि पुहवि पीसि ॥
मारिय वलिं तोसल कन्ह रंजि, खिलमल्ल गये यह देखि भज्जि५९
तब कहिय उच्च करि कंस कोप, कहहु समाज अरु उभय गोप॥
गहि लेहु नंद जरि निगडे पाय, बसुदेव हनहु खल कुटिल भाय।६०।
लहि कन्ह जोर यह गोप दुष्ट, सरबस्व हरहु तिनको प्ररुष्ट ॥
इमकहत कंस ढिग मल्लपि आय, श्रीपति सिखाहि पकरी सुभाय।६१।
डारयो उछारि खल अधर देस, ऊपरहि अप्प लै जग असेस ॥
आये सु भयो आघात उंध, उछरे समाधि इहिं पात उग्र ॥६२॥
उठि सजव कन्ह तजि तासु तुंद, सब रंग फिरे अँचत मुकुंद ॥
इम मरत कंस तस अनुज आय, रन रचिय सुवामा बल बढाय।६३।
यह मारि दयो तब भुव अनंत, अंतेउर हाहा हुव अनंत ॥
कंटक जदुकुलको मारि कंस, इम सबन अभय दिय जदुवतंस।६४।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ वीतिहोत्रबाहुवाणपौराङ्कवासुदेवजन्मसमयसामीप्यसमयसमानाऽधि-

के प्रहार*बाहुयुद्ध**बल१सांकल सहित(जो सब को जीतकर दिग्विजयी हो जाता है वह अपने पगमें सॉकल रखता है, अर्थात् अपने समान दूसरा नहीं होने का यह चिन्ह है)२बहुत देर तक३धोबी कपड़े को पटके जिस प्रकार४बलदेव ने५ घुटना देकर ६ भूमि पर ७ फिर कृष्ण ने तोशल नामक मल्ल को ८ मारने में प्रीति करके मारा यह देख कर बाकी के मल्ल भाग गये ९ बेड़ी पगों में जड़ कर १० विशेष क्रोध करके ११ कृष्ण ने १२ श्रेष्ठ रीति से कंस की चोटी ही पकड़ी १३ नीचे के स्थल पर पटका और आप १४ सम्पूर्ण जगत् को लियेहुए ऊपर आये (विष्णु के शरीर में सब जगत् का वास है) १५ बडाभारी शब्द हुआ १६ उसके पड़ने से १७ शिव समाधि से उछल गये १८ शीघ्र १९ पेट को २० कृष्ण ने २१ जनाने में २२ यदुकुल के मुकुट (कृष्ण) ने ॥६४॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

करणकश्रीकृष्णचरित्रे वासुदेवाऽरिष्टनिपातन-नारदाऽवबोधितकं साक्रूर१केशि२गोकुलप्रेषण-मुकुन्दकेशिमारण-कृष्णनारददृष्टय मल्ल१किशोरमाहात्म्य२वाफल्किबल१कृष्ण२मथुराऽऽनयन-वासुदेवोग्रसेनिरजकनिषूदन-मालाकारवरदान-कुब्जाकराऽनुलेपनप्रतिग्रहण-तत्सरलीकरण-कोदण्डभञ्जन-कुवलयापीड१चाणूरा२ऽसुवियोजन-बलभद्रमुष्टिक१सुवाम२ध्वंसन-शौरितोशल१कंस२विमर्द्दनं नवमो९मयूखः ॥९॥ आदित एकपञ्चाशत्तमः ॥५१॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

हरि१बल२सानुज कंस हनि, परे जनकके पाय ॥
माताहू हित जुत मिली, दुव२लिय दुहु२न उठाय ॥१॥
करन लगे वसुदेव नुति, सुमिर जन्म खिन बत्त ॥
तहँ सब माया प्रेरि किय, बंधुभाव अनुरत्त ॥२॥
जननि१जनक२गुरु जदुन जुत, पूजे सब हरि१राम २॥
उग्रसेन गद्दिय धर्‍यो, टारि सुवंधन धाम ॥३॥

पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कृष्ण का वृषभासुर को मारना, नारद से सब बात जान कर कंस का अक्रूर सहित केशी को गोकुल भेजना, कृष्ण का केशी को मारना, नारद के देखेहुए कृष्ण और नवीन उमर का घोड़ा इन दोनों के युद्ध का माहात्म्य, अक्रूर का बलदेव कृष्ण को मथुरा लाना, कृष्ण का कंस के धोबी को मारना, माली को वरदान देना, कुब्जा के हाथ से उबटन लेकर उसके शरीर को सीधा करना, धनुष तोड़ना, कुवलयापीड़ हाथी और चाणूर के प्राणों का वियोग करना, बलदेव का मुष्टिक और सुवाम को मारना, कृष्ण का तोशल मल्ल और कंस को मारने का नवमा मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से इकावन मयूख हुए ॥ ५१ ॥

कृष्ण और बलदेव छोटे भाइयों सहित कंस को मारकर पिता वसुदेव के पगों में पड़े ॥१॥ जन्म समय की बात को याद करके वसुदेव स्तुति करने लगे, तब माया को प्रेरणा करके कृष्ण ने सबको बंधुभाव में प्रीतिवाले करदिये ॥२॥ माता पिता और यादवों के बड़े लोगों ने कृष्ण बलदेव की पूजा की और उग्रसेन को कैदी खाने से निकाल कर गद्दी पर बिठाया ॥३॥

कुल जजातिकें साप यह, राज्य उचित नहिं जोहु ॥
हरि अक्खिय ओछत हुकम, करहु सुरन सिर तोहु ॥४॥
यह सुनाय सुमिरत पवन, आयो आतुर तत्थ ॥
हरि कहि लावहु सक्कसौं, कहि रु सुधर्मा अत्थ ॥५॥
उग्रसेन नृपके तपत, यह न सभा तुम योग्य ॥
अब मथुरा भेजहु अरंहि, भुव पति जदुकुल भोग्य ॥६॥

हरिगीतम् ॥

यह सुनि सुधर्मा इंद्रसौं [2]त आय मारुत[3] मंगई,
सुनि सक्कहु हरिको निदेस[4] सभा वहै द्रुतही दई ॥
पवमानहू द्रुत आनि जो जदुवंस भोग्य सभा करी,
बल१कृष्ण२पुनि नरभाव लै मति अस्त्रसिक्खनकौं धरी ॥७॥
सादीपिनी द्विजपैं स सिक्खन दोहु उज्जइनी गये,
धनुवेद चोसठि ६४ द्यौसमैं सरहस्य[6] संग्रह सिक्खये ॥
लवणोद माँहिं प्रभास तीरथ पुव्व[7] पुत्र हन्यौंगयो,
निज दक्खिना गुरु सोहि दोउ२न देखि दुर्जय मंगयो ॥८॥
बल१कृष्ण२मंगिय सिंधुसौं तव सिंधु अंजलिकैं[10] कह्यो,
दर[11]रूप मारक[12] पंचजन[13] दितिजात[14] मो जलमैं रह्यो ॥
तब कन्ह पैठि समुद्रमैं खल संखरूप सु मारयो,

कृष्ण ने कहा कि ययाति के श्राप से यह (यादव) कुल राज्य योग्य नहीं है तौ भी मैं हूं तब तक देवताओं पर हुक्म करो ॥४॥ यह सबको सुनाकर पवन को याद किया सो जल्दी ही आया, जिसको कृष्ण ने कहा कि इंद्र से कहकर देवताओं की सभा यहां लाओ ॥५॥ १ शीघ्र, वह सभा पृथ्वीपति यादवों के भोगने योग्य है २ शीघ्र ३ पवन ने ४ आज्ञा ५ पवन ने ६ अभिप्राय सहित ७ क्षार समुद्र में प्रभास तीर्थ में कृष्ण के गुरु सान्दीपिनी नामक ब्राह्मण का पुत्र मारागया था सो इन दोनों को दुःख से जीतने में आवे ऐसे जान कर वही अपना पुत्र दक्षिणा में मांगा ॥८॥ ८ समुद्र से ९ हाथ जोड़ कर १०कहा कि ११ शंख रूप को धारण करनेवाला १३ संन्हाद का पुत्र जो पांच जनों से पैदा हुआ है वह१४दैत्य उस ब्राह्मण के पुत्र को१२मारनेवाला मेरे जल में रहा था.

दर[2] पांचजन्य[1] तदीय अस्थि स्वहत्थ पंकज[3] धारयो ॥ ९ ॥
धँमि[4] ताहि बीर अलब्ध[5] द्विजसुत दोउहुँ[6] संजमिनी[7] गये,
जम जित्ति द्विजसुत यातना सन कढ्ढि लै गुरुपै ठये ॥
तिहिँ अप्पि आत्मज तास आसिख पाय मधुपुर[10] आयकैँ,
दिय उग्रसेन नरेसकौ सब राज्यऋद्धि[11] जमायकैँ ॥ १० ॥
खल कंस पूरब[12] द्वै २ सुता मगधेसकी परन्यौँहुतो,
तिन जाय अक्खिय बप्पसौँ[13] हमरो जु ईस हन्यौँ सु तो ॥
सुनि बैन अँस्ति[14] १ रु प्राप्ति २ के मगधेस कोपित व्है चढ्यो,
[15]अँच्छोहिनी तेईस २३ लै दल संग बित्तिरसौँ[16] बढ्यो ॥ ११ ॥
बल १ कृष्ण २ हू यह जानि अप्पन दिव्य आयुध चिंतये,
हल १ मुसल २ चक्र ३ गदा ४ सरासन खड्ग ६ ऊपरतैँ[17] गये ॥
तिन लै लरे बलभद्र १ कन्हर २ भूप मागध जित्तयो,
मधुद्रंग[18] पुनि पुनि ताहुनैँ घेरा बडो बल[19] लै दयो ॥ १२ ॥
इनहू अठारह १८ बेर मागध जित्ति जित्ति बिदा करयो,
सबभाँति दो २ हु समत्थ[20] पै नरभाव[21] कौतुक अद्दरयो ॥
लखिकैँ असंतति[22] गार्ग्य बिप्रहिँ संढ[23] सालकनैँ[24] कह्यो,
सुनि वाक्य सोहि समस्त जदुकुल अट्टहास[25] घनौँ गह्यो । १३ ।
करि कोप जदुकुल सीस तब तप घोर गार्ग्यहु आचरयो,
पाखान चूरन खाय खाय प्रसन्न त्र्यंबक[26] ही करयो ॥
सितिकंठ[27] बारह १२ अँब्दमैँ[28] द्विजसौँ कह्यो वर लीजिये,

उस दैत्य की २हड्डियों का १ पांचजन्य शंख अपने ३हस्त कमल में धारण किया उस शंख को ४बजाकर ब्राह्मणका पुत्र ५नहीं मिला तब ६दोनों वीर ७यमराज की पुरी में गये ८पीड़ा से ९पुत्र को १०मथुरा पुरी ११समृद्धि १२पहिले १३ पिता से. जरासंध की पुत्रियां और कंस की स्त्रियों के नाम १४अस्ति और प्राप्ति था १५अक्षौहिणी १६विस्तार से १७आकाश (स्वर्ग) से १८मथुरा पुरी के १९सेना २० समर्थ २१परंतु. अब यहां पर एक प्राचीन इतिहास कहते है. गार्ग्य नामक ब्राह्मण को २२बिना संतान देख कर उसके २४शाले ने कहा कि तू २३नपुंसक है यह वचन सुन कर सब यदुवंशियों ने २५उच्च स्वर से बहुत हँसी की २६शिव को २७शिव २८वर्ष

द्विजहू कह्यो जदुबंसकेर कृतान्त[1] आत्मज[2] दीजिये ॥ १४ ॥
कहिकैं तथास्तु[3] भये तिरोहित[4] ईस[5] बिप्रहु आतभो,
जवनेस इक निजनारिसौं सुत काज तांहि[6] मिलातभो ॥
जवनी जन्यौं तब गार्ग्यसौं सुत कालजवन सु जानिये,
ति[7]हिं बीर नारदसौं कह्यो हमसौं लरैं सु बखानिये ॥ १५ ॥
तुमसौं करैं रन एरिसो[8] जदुबंस नारद हू कह्यो,
जवनेस सो सुनि इक्क संकु१०००००००००००००अनीक[9] लै
द्रुत[10] उम्महयो ॥
जिहिं आयकैं मथुरापुरी गरदाय[11] जादव झुल्लये,
जवनेस माधव आत पुब्बहि जानि माधवनैं[12] लये ॥ १६ ॥
दिस आय पच्छिम अर्क[13]१२जोजन भुम्मि सागरतैं जँची[14],
जलदुर्ग कैं[15] तहँ द्वारका अभिधान[16] रम्यपुरी रची ॥
नृप उग्रसेन प्रमुख्य[17] सब हरिके निदेस[18] तहाँ बसे,
मथुरापुरी हरि इक्क१आय रु ह्वै निरायुध[19] निक्खसे ॥ १७ ॥
जवनेस भज्जत जानि कन्हहिं पिट्ठि मारनकौं लग्यो,
गिरिकी गुहा[20] जदुनाथ पैठत देखि सो द्रुतही भग्यो ॥
करि अग्ग[21] देव सहाय नृप मुचुकुंद असुरन मारिकैं,
जिहिं ठाम सोवत होगये अखिलेस[22] तत्थ पधारिकैं ॥ १८ ॥
मुचुकुंद भूपतिसौं हु सोवत बेर देवन यौं कही,

---

१ यदुवंशियों का काल२पुत्र३ऐसा ही होओ यह कह कर ४शिव ५अंतर्धान ६ गार्ग्य को ७ कालयवन ने ८ ईदृश (ऐसा) ९ सेना १० शीघ्र ११ घेर कर कालयवन (यह यवन शब्द यूनानियों का वाचक है, मुसल्मानों का नहीं, क्योंकि उस समय मुसल्मानों के मजहब का पेशवा मुहम्मद पैदा ही नहीं हुआ था) और जरासंध के आने से पहिले ही१२कृष्ण ने उसका आना जान लिया था. इसप्रकार से मथुरा को छोड, पश्चिम दिशा में जाय समुद्र से १३ बारह योजन भूमि१४मांगी१५करके१६द्वारका नामवाली १७ आदि१८कृष्ण की आज्ञा से१९वहां कृष्ण अकेले पीछे मथुरा में आये और जब कालयवन ने मथुरा को घेरा तब विना आयुध निकले२०गुफा२१ आगे देवताओं की सहाय करके२२सब के स्वामी (कृष्ण) ॥ १८ ॥ शयन करते समय मुचुकुंद

नृप तोहि जोहि जगायहै सुहि भस्म ह्वै मिलिहै मही ॥
हरि यों[1] गये तिंहिं[2] कंदरा बर संभुदत्त[3] बिचारयो,
वह सुप्त[4] जवनहु आतही हरि जानि पाय प्रहारयो ॥ १९ ॥
खल भस्म जग्गतही भयो मुचुकंद कन्ह[5]रसौं कह्यो,
तुम कोनहो हरिहू कह्यो ससिबंस[6] उद्भव मैं लह्यो ॥
बसुदेव जादवको तनूज[7] रु कृष्ण मा[8]र्मक नाम है,
नृपहू कह्यो तब बिष्णुहो मम बेर बेर प्रनाम है॥२०॥
हमसौं जुगांतरमैं पुरा[9] मुनि वृद्धगर्ग यहै कही,
जदुबंसमैं बसुदेव गृह अवतार हरि लहिहै सही ॥
सुहि अ[10]प्प यौं कहि भूपनैं नुति[11] मंजु[12] माधवकी करी,
निजभक्ति जानि प्रसन्न ह्वै बर एह ताहि दयो हरी ॥ २१ ॥
तुम भोग भुग्गहु भूप अर्जित[13] इष्ट[14] लोकन जायकैं,
पुनि जातिसुमिरन होहु ओरन होहु सत्कुल आयकैं ॥
ब[15]लि मुक्ति पावहु भूप लै हरिसौं यहै बर निक्खरयो,
नर खर्ब[16] पिक्खि रु जानि कलिजुग कालकी गतिकौं हरयो ।२२।
मुचुकुंद प[17]व्वय गंधमादन जायकैं तप आचरयो,
हरि आय मधुपुर[18] मिच्छको[19] सरबस्व द्वारवती धरयो ॥
बिच्छिन्न[20] नेह बढान पुनि बलभद्र[21] गोकुलमैं गये,
सबसौं मिले बनमैंहु सबजुत पुब्ब[22] ज्यौं रमतेभये ॥ २३ ॥
बलदेवकी र[23]ति जानि अ[24]प्पति बा[25]रुनी पठई जहाँ,

से देवताओं ने यह कह दिया था १इसकारण से२गुफा में३गार्ग्य को जो महादेव ने वर दिया था उसको विचार कर४सोतेहुए उस मुचुकुंद को५कृष्ण से६चंद्र वंश में मैंने जन्म लिया है७पुत्र८मेरा६पहिले१०आपहो११स्तुति १२ मनोहर १३ इकट्ठा कियाहुआ १४ जिन लोकों में रहने की इच्छा होवे वहां जाकर फिर तुमको अपनी जाति का स्मरण होकर इसी श्रेष्ठ कुल में आकर पैदा होओ, अन्य जाति में मत होओ१५पुनि१६छोटे मनुष्यों को देख कर, कलियुग को जान कर१७गंधमादन नामक पर्वत पर १८मथुरा में१९कालयवन का२०टूटेहुए स्नेह को२१बलदेव२२पहिले रमे थे इसप्रकार २३ प्रीति २४ वरुण ने २५मदिरा भेजी.

तत[1]काल आय कदंब[2] कोटर[3] बीच [4]है महको तहाँ ॥
[5]बल गंध मोदित नीपतैं छलि वारुनी[6] गिरती लखो,
जुत गोप गोपिन खूब केलि[7] प्रसून[8] पत्रन लै चखो ॥ २४ ॥
बलभद्र तिहिं मद घुम्मि विहरत अंग उज्वल स्वेद भो,
जमुनाहि अक्खिय अत्थ आवहु न्हायहैं कछु खेद भो ॥
[9]गिनि कामपालहिं मत्त जो जमुना अनादरि नाँ मुरी,
तब राम लै हल कुप्पि[10] अैंचत बेग कंपित बाहुरी ॥ २५ ॥
नहि आहु जाहु न आहु यों बल जे कहे ति[11] सहेगये,
जुत गोप गोपिन लांगली[12] द्रुत[13] बोरि पानियमैं दये ॥
तबलों रही हलमैं बिमोचन[14] प्रार्थना पुनि हू करी,
तजिहौं बनाय हजार १००० टूक त्वदीय[15] यों बलउच्चरी ॥ २६ ॥
बलभद्र पायन मैं परी तब छोरि लांगलतैं[16] दई,
छुटि सोहु इक १ अवतंस[17] कंज १ रु एक १ कुंडल १ लै नई[18] ॥
इत्यादि रामहिं दै उपायन[19] भानुजा[20] दुखतैं टरी,
दुव २ माससों बलभद्र केलि बहोरि गोकुल यों करी ॥ २७ ॥
पुर द्वारका पुनि आय रेवत भूपकी परनै सुता,
सुहु रेवती अभिधान[21] सील सुरूप सद्गुण संजुता ॥
सुत रेवती उर निसठ १ उलमुक २ द्वै २ भये हलधारसौं[22],
अब कृष्णकी सुनिये कथा पुहवी[23] सु[24] पुण्यद[25] प्यारसौं ॥ २८ ॥
वैदर्भि[26] कुंडिन नैरमैं[27] नृप नाम भीष्मक हो जहाँ,
रुकमी तदीय[28] तनूज[29] हो अरु रुक्मिणी तनया[30] तहाँ ॥

१ तुरत २ कदंब वृक्ष के ३ कोचरे से ४ बलदेव ने गंध से प्रसन्न होकर ५ वृक्ष से ६ मदिरा ७ क्रीड़ा करते ८ फुलों की पखुड़ियाँ और पत्रों में लेकर चाखी ९ बलदेव को मदमत्त जान कर उनका अनादर करके जमुना नदी नहीं मुड़ी १० क्रोध कर ॥ २५ ॥ मत जा, मत आ, आ, इस प्रकार बलदेव ने कहा ११ वह सब सहन किया और १२ बलदेव को १३ जल्दी १४ छोड़ देने की १५ तेरे १६ हल से १७ कमल का मुकुट १८ नमस्कार किया [झुकी] १९ नजराना २० यमुना २१ रेवती नाम २२ बलदेव से २३ पृथ्वी पर २४ सो २५ पुण्य की देनेवाली प्यार से सुनो २६ विदर्भ देश में २७ नगर २८ उसका २९ पुत्र ३० पुत्री

जिहिं कन्हही मनतैं चहे अरु कन्ह जो मनतैं चही,
पर चेदिराजहि[1] दैनकी मगधेस[2] अग्रजतैं[3] कही ॥ २९ ॥
संबंध रुक्मिनिको तबै सिसुपालसौं रुकमी करचो,
सिसुपालहू मगधेस[4] आदिक लै बरात बडी सँरचो[5] ॥
जहँ दंतवक्क १ करूष पौंड्रक बासुदेव २ महाबली ॥
मगधेस ३ साल्व ४ विदूरथा[6]ऽहय ५ आदि जन्य[7]र्तती[8] चली । ३० ॥
कुल स्वीय संजुत राम १ कन्ह २ हु व्याह देखनकौं गये ॥
इक[9] रत्ति पूरब लग्नसौं हरि रुक्मिणी हरते भये ॥
तबही[10] बिदूरथ १ बासुदेव २ करूस ३ जो सुनि नाँ कही ॥
हुव कन्ह सम्मुह[11] रारिमैं तरवारिमैं न कुमी रही ॥ ३१ ॥
बलभद्र मुख जदुबीर मुरि तब भूप तीनहिं जित्तये ॥
छकि लोह आकुल ऐं रहे बहु दो २ हु ओर हनैं गये ॥
रुकमी कह्यो तब हारि ग्वालनतैं न कुंडिन[12]मैं धसौं ॥
न बिबाहि रुक्मिनि चेदिराजहिं और ठामहिं मैं बसौं ॥ ३२ ॥
तिहिं[13] घाय दै भुव पारि तास[14] समस्त[15] सेनहिं मारिकैं ॥
तिहिं[16] व्याहि रक्खस[17]व्याहसौं गय कन्ह गेह पधारिकैं ॥
सुत रुक्मिणी उर कन्हसौं मदना[18]वतार बली भयो ॥
प्रद्युम्न नामक होतही हरि ताहि संबर[19] लैगयो ॥ ३३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचाहुवाणपौण्ड्रकवासुदेवजन्मकालसामीप्यसमयसमानाऽधि-

जिसने मन से कृष्ण को ही पति करना चाहा और कृष्ण ने भी जिसको मन से चाही ॥ ३० ॥ १ चन्देरी के राजा (शिशुपाल) २ जरासन्ध के ३ बडे भाई को ४ जरासन्ध ५ चला ६ विदूरथ नामक ७ जनेतियों (बरातियों) की ८ पंक्ति ॥ ३० ॥ ९ एक रात्रि पहिले १० आदि ११ रुक्मी आदि पीछा करनेवाले १२ कुण्डिनपुर में १३ उस रुक्मी को १४ उस रुक्मी की १५ सब सेना को १६ उस रुक्मिणी को १७ राक्षसविवाह से विवाह कर (मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह लिखे हैं, ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच) १८ कामदेव का अवतार १९ सम्बर नाम दैत्य चुराकर लेगया ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणके तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

करणाकश्रीकृष्णचरित्रे वासुदेव १ संकर्षण २ पित्रभिवादननृपो-ग्रसेनगद्दिकोपवेशनसुधर्मासदःसमाह्वयन-धनुर्वेदोपाध्यायसान्दी-पिनिशिक्षासम्प्रापणकृतपञ्चजनवध १ यमजय २ तन्मृतपुत्रमत्यर्प-णश्रुतजामातृवधजरासंधमथुरावेष्टनतदष्टादश १८ कृत्वःपराजयन-जलदुर्गद्वारकानिर्माणमाथुरस्कन्धावारतन्न्यसनसूचितजनुरुदन्त-कालयवनविदाहनमुचुकुंदवरदानयावनवैभवोग्रसेनाऽर्पण-बलभद्र-पुनर्द्वि २ मासगोकुलरमणपीतवर्णप्रहितवारुणीयकयमुना-हलाकर्षणगृहीतकुण्डल १ कञ्ज २ ऽऽदितदुपायनपुनर्द्वारवत्यागम-नरेवतीपाणिग्रहणबालभद्रिनिषठो १ ल्मुको २ द्भवनजितवासुदेव-१ दन्तवक्र २ विदूरथ ३ रुक्मि ४ साग्रजकृष्णारुक्मिणीहरण-तदौरसकार्ष्णिप्रद्युम्नकुमारोद्भवनं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥

आदितो द्विपञ्चाशत्तमः ॥ ५२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

हरिगीतम् ॥

पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कृष्ण बलदेव का पिता से नमस्कार करना, राजा उग्रसेन को गद्दी पर बिठाना, सुधर्मा (देवताओं की सभा) का बुलाना, धनुर्वेद के अध्यापक सान्दीपिनी से शिक्षा पाना, शंखासुर को मारना, यमराज को जीत कर उस सान्दीपिनी को पुत्र पीछा देना, जमाई का वध सुन कर जरासंध का मथुरा को घेरना, उस जरासंध को अठारह बार पराजित (हरा) कर जलदुर्ग द्वारका बना कर मथुरा की राजधानी से निकलना, कालयवन के जन्म का वृत्तान्त जानकर उस को जलाना, मुचुकुन्द को वरदान देना, और यवन का वैभव उग्रसेन को देना, बलदेव का फिर दो मास तक गोकुल में रमण करना, वरुण की भेजी हुई मदिरा से यमुना नदी को हल से खींचना, और यमुना से कुण्डल कमल आदि भेट लेकर फिर द्वारका जाना, और रेवती से विवाह करना, बलदेव के पुत्र निषठ और उल्मुक का पैदा होना, कृष्ण का वासुदेव, दन्तवक्र, विदूरथ और रुक्मिणी के बड़े भाई रुक्मी सहित जीत कर रुक्मिणी को हरना और कृष्ण के पुत्र रुक्मिणी के औरस प्रद्युम्न कुमर का जन्म होने का दशवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १० ॥ और आदि से बावन मयूख हुए ॥ ५२ ॥

प्रद्युम्न संबर[1]नैं छठे६दिन सूतिकागृह[2]तैं हर्यो,
दिय सिंधु डारि गिल्यो सु मच्छ तहाँहु बालक नाँ मर्यो॥
सुहि मच्छ धीवर[3] मारि भुंज्जन[4] जाय संबरकौं दयो,
तस[5] गेहिनी[6] झख[7] फारि छन्न कढ्यो सु बालक लैलयो॥१॥
मायावती[8] मनमाँहिं है यह कोनको सिसु यौं चही,
तव[9] कांत कृष्ण तनूज[10] कामवतार[11] नारद व्हाँ कही॥
मायावती तब प्रीतिसौं प्रद्युम्न पोखि बढायकैं,
माया जु संबरसौं लई सु[12] दई समस्त पढायकैं॥२॥
सिव काम दग्ध कर्यो तबै[13] रति[14] जास[15] उद्भव चाहती,
मायामई बपु[16] कैं[17] रही गृह संबरासुरकै सती॥
मायावती अभिधान[18] जो प्रद्युम्नको इम पारिकैं[19],
जब भो जुवा[20] तबही रही करि हावभाव निहारिकैं॥३॥
प्रद्युम्न अक्खिय[21] मातृता[22] तजि क्यौं यहै कुटिलावती[23],
बिधिपुब्ब[24] तव हरणादि[25] सर्ब उदंत[26] ताहि कह्यो रती॥
सुनतैंहि दर्पक[27] कुप्पि जुज्झन काल संबर बुल्लयो,
माया बिथारि चमू समेत वहैहु गज्जतही गयो॥४॥
तब सप्त७माया आसुरी प्रद्युम्न गंजि महाबली,
निज[28] अष्टमी८करि मारि संबर[29] खूब दुष्ट चमू दली॥

---

१ प्रद्युम्न को सम्बर दैत्य ने २ जापा के घर से ३ नाव चलानेवाले[कैवर्तक] ने वही मच्छ निकाल कर ४ भोजन करने को ५ उस सम्बर की ६घरवाली (स्त्री) ने७मच्छ का पेट फाड़ कर भीतर से बालक निकाला सो छाने लेलिया ॥ १ ॥ ८ कामदेव की स्त्री ने. वहां पर नारद ने कहा कि ९ तेरा पति और कृष्ण का १० पुत्र ११ कामदेव का अवतार है १२ सो. ॥ २ ॥ महादेव ने कामदेव को जलाया जब से१३रति (कामदेव की) स्त्री१४उस कामदेव का१५ जन्म होना चाहती थी१६शरीर१७करके १८ जिस का मायावती नाम है उसने१९ पालन करके २० जवान ॥ ३ ॥ २१ प्रद्युम्न ने कहा कि २२ मातापन को छोड़ कर २३ कुटिलपन करती है २४ विधिपूर्वक २५ सम्बरासुर हर लाया जिस आदि २६ वृत्तान्त २७ कामदेव (प्रद्युम्न) ने ॥ ४ ॥ २८ अपनी आठवीं माया २९ सम्बरासुर को

मायावती जुत कन्हको सुत यों नभोमग* ह्वै संरच्यो[1],
द्वारावती सुद्धांत[2] अंतर जाय मोदित उत्तरयो ॥ ५ ॥
सहसाहि[3] तिहिं लखि कृष्णा नारिन लज्जि घुंघटही लयो,
पुनि कृष्णा नारदके कहे प्रद्युम्न आगत[4] जानयो ॥
वलि[5] पट्टरानिय सत्त७व्याहिय कन्हनैं तिन्ह जानिये,
क्रम तो न[6] है पर[7] वैष्णावाऽऽख्यपुरान[8] वत्त प्रमानिये ॥६॥

अचरणगद्यम्

निघ्नके पुत्र यादव सत्राजितनैं अंभोधिकी[9] नीर महास्तवन[10] पूर्वक त्रयीतनु[11] तपनको[12] उपस्थान[13] कीनौं ॥ ७ ॥

तासौं प्रसन्न होय आदित्य एक रूपसौं अवनितल[14] उतरि आये॥८॥

तब कह्यो जैसैं उहाँ रहैं स्तुति करतहो ऐसैंहीं अब करिहौं परंतु इहाँ आयैंकी बिसेस प्रसाद[15] चहतहौं यातैं प्रभुके तेजकौं सहिकैं दासके नेत्र निजस्वरूपकौं देख्यो चाहैं॥९॥

यह सुनि मार्तंडनैं[16] स्यमंतक नाम महामणि अपनैं कंठसौं उतारि दूर धर्यो तब आताम्र[17] दीप्यमान कछुक पिंगलनेत्र[18] नारायनके रूपकौं सत्राजित नीठि नीठि देखि बहोरि महास्तवसौं[19] प्रसन्न करत भयो ॥१०॥

आदित्यसौं बरं[20] ब्रूहि सुनि सोही महामणि मंगि उनको ऊर्ध्व गति[21] विसर्जन[22] करि वाकौं[23] धारन किये अकूपार[24] अंकुस[25] अवनी[26] कौं उज्वल करत द्वारका आयो ॥११॥

---

* आकाश मार्ग १ चला २ जनाना में ३ अचानक ४ आना ५ पुनि ६ विवाह नं का क्रम तो नहीं है ७ परंतु ८ विष्णुपुराण से लिखा है सो उसकी बात प्रमाण मानो ॥ ६ ॥ ९ समुद्र की १० स्तुति ११ सूर्य के १२ तप करने को १३ नमस्कार किया ॥ ७ ॥ १४ भूमितल पर ॥ ८ ॥ तब सत्राजित ने कहा कि आप ऊपर थे तब स्तुति करता था वैसे ही अब भी करूंगा परंतु आप यहां नीचे उतर आये जिसकी विशेष १५ प्रसन्नता ॥९॥ १६ सूर्य ने १७ लाल वर्ण से प्रकाशमान १८ पीले नेत्रवाले (सूर्य) १९ स्तुति से ॥ १० ॥ २० वर मांग २१ ऊपर जाने की गति से २२ छोड कर २३ स्यमंतक माणि को २४ समुद्र ही है २५ लहँगा जिसके ऐसी २६ भूमि को ॥

तहाँके जनन भूमिभारकौं नी[1]तावतार वासुदेवसौं कह्यो आ-ज आपके दर्शनकौं आदित्य आवतहै तिनको आतिथ्य करिये।१२।

तब कृष्ण कह्यो सत्राजितकौं सूर्यनैं स्यमंतक महामणि दीनौंहै ताकौं धारन किये वाहीकौं आवत जानौं ॥१३॥

ऐसैं सत्राजित मनि पाय आलय[2] आयो जाके प्रभाव करि वा जनपद[3]मैं उपसर्ग[4]१वृष्टि२व्याल[5]३अग्नि४तोय[6]५दुर्भिक्ष आदि काहू को भय न होत भयो ॥ १४ ॥

अरु आठ८भार[7] सुवर्णकौं प्रतिदिन स्रावित[8] करि करि सत्रा-जितकौं सर्वाजित[9] करत भयो ॥१५॥

तहाँ[10] भार प्रमान. पंच५गुंजा[11]५एक१मास[12]१सोलह१६मास१६एक१कर्ष१ च्यारि४कर्ष४एक१ पल१ सत१०० पल१०० एक१तुला१ बीस२०तुला२०एक१भार१ऐसे आठ८भार८अष्टापद[13] नित्य मणि सौं निकसत रह्यो ॥१६॥

तहँ सत्राजितसौं कन्हनैं कह्यो अपनैं अधिराज[14] उग्रसेनके उचित यह महारत्नहै यातैं उनहीकौं उपहार[15] करिये ॥ १७ ॥

तब सो तो सुनि रह्यो परंतु कबहुक कृष्ण मंगिलैहै या लोभ करि अपनैं अनुज[16] प्रसेनको वह महामनि देदयो ॥ १८ ॥

या रत्नकौं जो सुचि[17] धारन करैं तो पूर्वोक्त[18] सब गुन प्रकट करैं रु[19] असुचि धारक[20]को नास करैं ताकौं धारन करि अस्वारूढ[21] प्रसेन सिकार गयो ॥ १९ ॥

याकौं मारि कोऊ सिंह मुखासक्त[22] करि महामनि लैजात

---

१ उतारनेवाले २घर ३देश में ४रोग तथा उपद्रव ५सर्प ६जल ७तोल विशेष जिसका प्रमाण आगे मूल में स्पष्ट लिखाहुआ है ८ टपक टपक कर ९यज्ञ में जीतने में नहीं आवे ऐसा अर्थात् उस धन से सत्राजित ने इतने यज्ञ किये कि इतने दूसरे नहीं कर सके १० यहां भार का प्रमाण बताते हैं ११ चिरमी १२ मासा १३ सोना १४ स्वामी १५ भेट १६ छोटा भाई १७ पवित्र होकर १८ ऊपर कहे अनुसार १९ अरु २० धारण करनेवाले को २१ घोड़े पर चढ़कर २२ मुख में पकड़ कर

देख्यो ताकौं मारि रत्नकौं महा[1]जरठ भल्लूकराज[2] जाववान निजबित्त लैजाय अपनैं सुकुमार नाम बालकको खिल्हौनाँ करत भयो।२०।

इतकौं सत्राजित कृष्णाहूकी जाचना सुनि लोभतैं प्रसेनहीकौं मनि दीनौं यातैं अब वाके घरन आय पौरजन[3] जादव कप्रसेचन मारिबेको बासुदेवहीकौं अभिसाप[4] देत भये ॥ २१ ॥

ताहि टारिबेकौं दामोदर[5] जदुकुल समेत वा परासुके[6] निस्सरण[7] सरणिके[8] हय[9] खोजन लागि अग्गैं सिंह हत वह कुणप[10] भल्लूक हत पञ्चानन[11] देखि जांबवानकी पदवी[12] लगि एक अद्रिके[13] कटक[14] कटक[15] खरो राखि ऊपर चढि कृष्ण बिलमैं प्रवेस करत सुकुमारकी धात्री[16]तैं उल्लापनमैं[17] स्यमंतककौं सुनि दोरि वाके करतैं मानि लेत धात्रीको त्राहि त्राहि सुनि जांबवान आय त्रिलोकके तपनतैं[18] एक बीस२१अहोरात्र[19] महानियुद्ध[20] करत भयो ॥ २२ ॥

बाहिर बरूथिनीके[21] आठ८अहोनिस आयबेकी राह देखि द्वारवती[22] जाय भल्लूक[23] भंग संखधरको[24] सुनावत बसुदेव मुसली[25] मुख[26] बंधुजनन प्रेतकर्म करि दयो ॥ २३ ॥

बावीसमैं२२दिन अपनी उत्तरोतर प्रानैंहानि[27] जानि जांबवानने मुकुंदकौं[28] रामचंद्रही मानि[29] स्यमंतक सहित कन्या जांबवतीकौं कृष्णाके अर्थ दीनी ॥ २४ ॥

ताहुकौं पट्टरानी करि दामोदर द्वारका आय अपनैं अवरोधको[30]

---

१ बूढा २ रींछों का राजा ३ पुर के लोग ४झूठा दोष ५कृष्ण ६मुरदा. प्रसेन के ७निकलने के ८ मार्ग में ९ घोड़े के खोजों में लगकर१० सिंह का माराहुआ वह मुरदा और रींछ का माराहुआ११सिंह को देख कर१२पगडंडी [गैली]१३ पर्वत के १४ घेरे में १५ सेना का ॥ जाम्बवान् के पुत्र सुकुमार की १६ धाय के १७ बत्ती अथवा रस्सी में १८ तीनों लोकों के सूर्य से १९ दिन रात २० बाहुयुद्ध ॥ २२ ॥ २१ सेना के लोगों ने २२ द्वारका २३ कृष्ण को २४ रींछ ने मार डाले, यह सुनाया तब २५ बलदेव २६ आदि ॥ २३ ॥ २७ बल (पराक्रम) की २८ कृष्ण को रामचन्द्र ही जाना कि जैसे वे परमेश्वर के अवतार थे वैसे ही ये हैं और जाम्बवान् रामचन्द्र का भक्त था इस कारण से ॥ २४ ॥ २९ कृष्ण ने ३० जाम्बवती को अपने जनाने का भूषण बनाय

अलंकार बनाय सत्राजितकौं स्यमंतक सौंपि अभिसाप[1] उतारत भये
सत्राजितनैं हू खिसानौं होय कन्याके संबंधकी पहिलैं औरनतैं
घात करीही तथापि सत्यभामा त्रिभंगललित[2]कौं बिवाही ॥ २६ ॥

तब अक्रूर कृतवर्मा दोऊ जादवन सतधन्वासौं कह्यो पहिलैं
अपनी प्रार्थना[3] की तिनहूकौं पेलि कन्या कन्हकौं दई यातैं सत्रा
जितकौं मारिये तो हम सहाय हैं सो सुनि सतधन्वानैं प्रसेनके
अग्रजको मारिबो बिचार्यो ॥ २७ ॥

याही बेला[4]के व्यतीत बासरनमैं[5] धृतराष्ट्रके धूर्तनैं[6] पांडवनकौं
जतु[7] जटित[8] निकेत[9]मैं जारे सुनि जीवते जानतहू जनार्दन[10] तो दुर्जो
धनके जत्ननको जोर जारिबेकौं बारणावत पधारे ॥ २८ ॥

पिछारी सतधन्वा सत्राजितकौं मारि महामनि लैलयो जाकौं
जानि रोवत रथारूढ[11] सत्यभामानैं बारणावत जाय प्रार्थना करि
कृष्ण द्वारका आनै ॥ २९ ॥

तब सतधन्वा अक्रूरकौं प्रच्छन्न[12] मनि दैकै सत१००जोजन बाँ-[13]
हिनी बडवापैं[14] बैठि पलायित[15] भयो ॥ सो जानि बासुदेव१बलभद्र२
सैव्य[16]१ सुग्रीव२ मेघपुष्प३ बलाहक४या हयचतुष्टय[17]४संजुक्त स्यंदन[18]
समारूढ[19] होय पहुँचे ॥ तिननैं मिथिलाके महावनमैं मरी बडवाकौं[20]
तजि पदाति[21] होय पलावत सतधन्वाकौं निहार्यो ॥ ३० ॥

तब कृष्ण बडवा मरी देखि बलसौं[22] कह्यो यह भूमिभाग हय[23]
दोसकारक है यातैं आप यहाँ रथारूढ रहिये मैं पदाति होय दुष्ट
कौं मारि मनि लावत हौं ॥ ३१ ॥

यह कहि कन्ह रथ छोरि वाकी पिछि लागि एक१गव्यूति[24] पर

---

१ झूठादोष २कृष्ण को ३ मँगनी (मांग) ४ इसी समय के बीते हुए५दिनों में ६ धृतराष्ट्र के पुत्र ठग दुंर्याधन ने ७ लाख से ८ जड़े हुए ९ घर में १० कृष्ण ११ रथपर चढ कर ॥ २९ ॥ १२ छांनें १३ एक दिन में चार सौ कोस चलनेवाली १४घोड़ी पर १५भागा १६कृष्ण के घोड़ों के नाम हैं१७चौकड़ी १८रथ पर१९ अच्छी प्रकार बैठ कर २० घोड़ी को २१ पैदल ॥ ३० ॥ २२ बलदेव से २३ घोड़ों को बीमारी करनेवाली ॥ ३१ ॥ २४ दो कोस

जाय दूरस्थ[1] सतधन्वाको सिर सुदर्सनसौं सातन[2] करि वाके वस्त्रादि हेरि अलब्ध[3]मनि पीछे आय सपथ[4] सहित कामपालसौं[5] कह्यो रत्नतो यापै निकस्यो नहीं ॥ ३२ ॥

सो सुनि महामनि चक्रीनैं[6] चुराय राख्यो जानि कोप करि कौंलिंदीभेदन[7] कह्यो रे धिक्कार तोहि महालोभी भाई जानि सहौंहों जाहु अपनी इच्छातैं न मेरैं द्वारकातैं तोसे बंधुनतैं काम है क्यौं अलीक[8] सपथ करिये ऐसी सुनाय वासुदेवके वरजत हू बलभद्र विदेहपुरीमैं प्रविष्ट होय वरस तीन३ रहत भये रु जनकनैं आदर करि निज पस्त्य[9] पधराये इन अब्दनमैं[10] धार्तराष्ट्र[11] दुर्योधन हलीसौं[12] गदायुद्धकी सिक्षा लेत भयो ॥ ३३ ॥

अरु कन्ह द्वारका पधारे तदनंतर[13] हायन[14] त्रय३ बीतैं माधवनैं मनि न लीनौं जानि उग्रसेनादि जादवन जनकपुर जाय सीरी[15]कौं समुझाय द्वारका आनैं ॥ ३४ ॥

दीक्षित[16] क्षत्रिय१ वैश्य२कौं कोऊ हनैं सो ब्रह्महा[17] होय यह नीति आश्रय करि स्यमंतक स्रावित[18] सुवर्णके बलसौं अक्रूर हू निरंतर सत्र[19]दीक्षाहीमैं रहत भयो ॥ ३५ ॥

पीछैं अक्रूरके पच्छके[20] भोज जादवननैं सात्वनको नाती[21] सत्रुघ्न मारयो ताकै वैरके भयसौं स्वकीयनैं[22] सहित स्वफल्कसुत[23] को छोरि पलाय[24] गयो तबही या देसमैं उपसर्ग[25]१ व्याल[26]२ मारी[27]३ अनावृष्टि[28]४ प्रमुख उपद्रव होनलगे जानि सबन सहित वासुदेव१ बल

१ दूर पर ठहरा हुआ २ काटकर ३ मणि नहीं मिला ४ सोगन खाकर ५ बलदेव से ॥ ३२ ॥ ६ कृष्ण ने ७ बलदेव ८ झूठे सोगन ९ घर में १० वर्षों में ११ धृतराष्ट्र का पुत्र १२ बलदेव से ॥ ३३ ॥ १३ जिस पीछे १४ वर्ष १५ बलदेव को ॥ ३४ ॥ १६ यज्ञ की दीक्षा लिये हुए १७ ब्राह्मण को मारनेवाला १८ टपका हुआ १९ यज्ञ की. भावार्थ यह है कि मैं भी यज्ञ की दीक्षा लेतारहूं तो मुझे कोई नहीं मारै ॥ ३५ ॥ २० पक्षवाले २१ पोता २२ अपने लोगों २३ अक्रूर २४ भागगया २५ रोग, भय २६ सर्प २७ महामारी (मरी) की बीमारी २८ आदि

भद्र२उग्रसेन मंत्र*करत भये, तहाँ अंधक नाम एक१जदुवृद्ध बुल्ल्यो या अक्रूरको जनक**स्वफल्क जहाँ रह्यो तहाँ ए उपद्रव नहोतभये पहिलैं स्वदेसमैं अनावृष्टि जानि कासिराजनैं स्वफल्क बुलायो ताके जातही उहाँ सुभिक्ष भयो ॥ ३६ ॥

कासिराजकी रानीके कन्या गर्भ हो सो बारह१२वरसलौं निकस्यो नहीं तब पिताके पूछैं गर्भ कह्यो द्विजनकौं देवेकों नित्य एक१ धेनु मिलै तो निकसौं सो स्वीकृत करैं कासिराजकै कन्या गांदिनी भई सोहु स्वफल्कहीकों बिबाही यावज्जीव***प्रतिज्ञा पालन करत भई ऐसं प्रभाव के जनक१जननी१सों यह अक्रूर भयो ताके गयैं ए उपद्रव होनलगे यातैं अपराध छमा करि वाकों इहाँ आनिये ॥३७॥

तब केसव१कामपाल२उग्रसेन३सब बंधुन सहित जाय अक्रूर कौं लाये तबही सब उपद्रव नष्ट होतभये तब केसव विचारि स्वफल्क१गांदिनी२के जनिवेसौं ही अक्रूर को ऐसो प्रभाव नहीं निश्चै ही याके पास स्यमंतक है यह सिद्धांत करि कन्ह सबनकौं अपनैं निकाय इकट्ठे करि अक्रूरसे बोले हे दानपति! सुधन्वानैं तुमको मनि दीनों है सो तो तुम ही राखो याको फल तो सबके भोग्य है परंतु बलभद्रनैं मेरी संका करी सो मिटायबेकों दिखाय दयो चहिये ॥ ३८ ॥

तब भीत होय अक्रूर सुवर्णसंपुटतैं स्यमंतक निकासि कृष्णसौं कह्यो याके राखिबेसौं मोहि अलप सुख हू को अनुभव नहीं पवित्रता ही के प्रयत्नमैं पर्‌यो हों यातैं अब पवित्र होहु सो याकों लेहु ऐसी सुनि अग्रजैं अर्पित अभिसाप मिटाय कृष्ण कह्यो ब्रह्मचर्य पूर्वक प्रचुर पवित्रतावारेके धारिबे योग्य यह है ताकों प्रभूतपत्नीक मैं१तथा वारुनी व्यासक्त बलभद्र१कैसें धारिहैं

*सलाह**पिता ***जीवन पर्यन्त १ पिता २ बलदेव ३ अक्रूर की माता का नाम है ४घर में ५ सोना के डिब्बे से ६ पवित्र रहने के यत्न में हीं ७बड़े भाई (बलदेव) के ८ दिये हुए ९ मिथ्या दोष को १० बहुत ११बहुत स्त्रियोंवाला १२ मदिरा के १३वशीभूत.

जदपि स[1]त्याको ज[2]नककथन है त[3]थापि तुमारी सुचितामैं सावधानी अपूर्व है यातैं तुमही राखो ऐसैं कहि मनि अक्रूर ही कौं देदयो तबतैं दानपतिहू प्रकटही वाकौं कंठभूखन करि धारतभयो ।३९।

यह बासुदेवके अभिसापको [4]क्षालन कोऊ सुनैं ताको अभिसाप नष्ट होय॥ ऐसैं कृष्णनैं जांबवती२सत्यभामा३बिबाहि और हू कालिंदी४मित्रविंदा५नाग्निजिती६माद्री७लक्ष्मणा८ रुक्मिणी१ प्रमुख ए आठ८पट्टरानी विवाही तिनमैं रुक्मिणीकै प्रद्युम्न१चारुदेष्ण२सुदेष्ण३चारुदेह४सुसेन५चारुगुप्त६भद्रचारु७चारुविंद८चचारु ९ चारु १० ए दस १० पुत्र चारुमती १ एक १कन्या भई॥४०

जांबवतीके सांब १ प्रमुख१०।१,सत्यभामा कै भानु१प्रमुख १०।१, मित्रविंदाके संग्रामजित १ प्रमुख१०।१,नाग्निजितीके भद्रविंद१॥ प्रमुख१०।१,माद्रीके वृक १ प्रमुख १०।१, लक्ष्मणाके गात्रवान१ प्रमुख१०।१ ऐसैं दस दस पुत्र एक एक कन्या सबनके होत भये

और हू एकसतोत्तर सोलह सहँस्र१६१००राजकन्या भौमासुर के बंधनतैं छुराय बासुदेवनैं विवाही तिन हू के संतान याही क्रम तैं जानिये परंतु जैसे विवाही सो हू उदंत कहियत ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचाहुवाणपौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यसमयसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे कालशम्बरप्रद्युम्नहरणशम्बरमारणमायावतीसहितद्वारकाऽऽगमनतोपितसूर्यसत्राजितस्यमंतकप्रापणभारप्रमाणकथनश्रुतोग्रसेनार्थमुकुन्दमार्गणनैघ्रिनदनर्पणधारितमणिप्रसेनसिंहमारणातजाम्बवन्निपातहरिनियुद्धतत्पराभवनसमणिविवोढजाम्बवतीकगदाग्रजगेहाऽऽगमनरत्नप्रत्यर्पणसत्यभामोद्वहनपे-

१सत्यभामा का२ पिता३तोभी तुम्हारी पविवता में४मिथ्या दोष५मिटना६ आदि७आदि८वृत्तान्त कहते हैं

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौण्ड्रक वासुदेव के जन्म समय के नजीक है समय का आधार जिन का ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कालसम्बर का प्रद्युम्न को हरना, और प्रद्युम्न

तृप्वस्त्रीयसहायशौरिवारणावतगमनकृतवर्मा १ ऽक्रूर २ सम्पाठि-
तसुधन्व३सत्राजित ध्वंसनपरितप्तसत्याकृष्णाऽऽनयनदत्ताऽक्रूरमणि
सुधन्वपलायनत्यक्त कृष्णारथचक्रतन्मारणारुष्टमिथिलागतबलदुर्यो-
धनगदारणशिक्षाऽनुष्ठानकृष्णप्रत्यागमनशरत्त्रया ३ ऽनन्तररामाऽ-
पराधसकुलाक्रूरऽपलायनमहोपद्रवोद्विग्नश्रुततत्पितृमहिमसर्वयदुसै
न्यश्वाफल्किप्रत्यानयनकृष्णप्रबोधिततन्मणिप्रकटीकरणवासुदे-
वपट्टराज्ञ्यष्टक८सूचनतत्पुत्रादिसमासोद्देशनमेकादशो मयूखः॥११॥

आदितस्त्रिपञ्चाशत्तमः ॥ ५३ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

समय इक १ राजि स्वर्ग इंद्र आरुहि ऐरावत ॥

का सम्बर को मारना, मायावती सहित प्रद्युम्न का द्वारका आना, सूर्य को प्रसन्न करके सत्राजित का स्यमन्तकमणि लेना, और भार के प्रमाण का कहना, उग्रसेन के अर्थ कृष्ण का मणि मांगना सुनकर नैघ्री (निघ्री के पुत्र सत्राजित) का उस मणि को नहीं देना, और मणि धारेहुए प्रसेन को सिंह का मारना, उस सिंह को जाम्बवान् का मारना, कृष्ण और जाम्बवान् के बाहु युद्ध में जाम्बवान का हारना, मणि और विवाही हुई जाम्बवती सहित कृष्ण का घर आना, रत्न देकर सत्यभामा से विवाह करना, और अपने पिता की बहिन (भुवा) की सहाय के अर्थ कृष्ण को वारणावत जाना, कृतवर्मा और अक्रूर के सिखायेहुए सुधन्वा का सत्राजित का मारना, दुखी होकर सत्यभामा का कृष्ण को लाना, अक्रूर को मणि देकर सुधन्वा का भागना, रथ को छोडकर कृष्ण का चक्र से सुधन्वा को मारना, बलदेव का रूस कर मिथिला पुरी जाना, और दुर्योधन को गदायुद्ध सिखाना, कृष्ण के पीछे आने के तीन वर्ष पीछे रामा स्त्री (सत्यभामा) के अपराध से अर्थात् सत्यभामा के पिता सत्राजित को सुधन्वा के हाथ मरवाडाला था जिस अपराध से अपने कुल सहित अक्रूर का भागना, और महा उपद्रव से घबराये हुए अक्रूर के पिता की महिमा सुनके यादवों की सेना का अक्रूर को पीछालाना, और कृष्ण के समझाने से अक्रूर का मणि को प्रकट करना, कृष्ण की आठ पटरानियों की सूचना करना, और उनके पुत्रादि का संक्षेप से कथन करने का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ। ११। और आदि से त्रेपन मयूख हुए॥ ५३ ॥

१ चढकर

द्वारवती[2] द्रुत[3] आय कहिय प्रभुसौं सब संगत[4] ॥
नरक नाम यह असुर करत अनुचित अवनीसुत[5] ॥
श्रुतिमारग[6] सत्रादि[7] हौंन नहिं देत जोरजुत ॥
पाताल १ नाक[8] २ नरलोक ३ की वर[9] कन्या १ आनी पकरि ॥
मंदर[10] महीध्र[11] मनिशृंग २ अरु बरुन छत्र ३ लिय प्रबल हरि ।१।

दोहा

उग्गोलक[12] दुव २ अमृतके, लीन छीन सपत्न ॥
कुंडल माता अदितिके, अब मम गज पर जत्न ॥ २ ॥

षट्पदी ॥

अनौखि[13] उट्ठि सक्रहित[14] सिक्खदिय त्रिदिवं[15] यहै सुनि ॥
सत्याजुत[16] श्रीरमन[17] चिंति गरुडहि आरोहि पुनि ॥
दुष्ट नरकके दुर्ग प्रागज्योतिस[18] पहुँचे जहँ ॥
सत १०० जोजन छुरे[20] अंत पास मौरवि[19] पसरे तहँ ॥
करि सुगम कट्टि तिन्ह चक्रकरि अग्गैं हरि पहुँचत हरखि ॥
मुर नाम असुर आयउ समुख कुपित गज्जि मुच्छन करखि ।३।

दोहा

कट्टे केसव खेल करि, मुर के तीन ३ सिर मत्थ ॥
सत्त सहँस ७००० मुर के सुतहु, समर रहे पितु सत्थ ।४।
इतरहु[21] पंचजनादि[22] खल, हनि पैत्ते[23] तिहिं मेर[24] ॥
मायावी[25] नरकहु जुर्यो, संजि अनीक[26] अतिबेर ॥

---

२ द्वारका में ३ शीघ्र ४ मित्रता के साथ ५ पृथ्वी का पुत्र ६ वेदमार्ग ७ यज्ञ आदि ८ स्वर्ग ९ श्रेष्ठ १० मंदर नामक ११ पर्वत से मणियों का शिखर और वरुण का छत्र जबरी से लेलिये १२ अमृत के ( ) उस शत्रु ने छीन लिये. १३ क्रोध करके उठे १४ इंद्र को १५ स्वर्ग की सीख दी १६ सत्यभामा सहित १७ लक्ष्मी के पति (कृष्ण) १८ प्राग्ज्योतिष नाम पुर में १९ प्रत्यंचा पर चढ़ाये २० बाण (चार सौ कोस तक कल से रचेहुए धनुष पर चढ़ेहुए बाण ऐसे रक्खेहुए थे कि उस देश में जानेवाला अनजान मनुष्य उनसे बिंधजावे, अर्थात ये बाण आप से आप चल कर मार लेवें) २१ और भी २२ पंचजन को आदि ले दुष्टों को मार कर २४ उस नगर में २३ पहुँचे २५ राक्षसी माया को जाननेवाला २६ सेना.

भूसुतके* सहँसन सुभट, समर असुर संहारि ॥
सस्त्र सकल[1] तस मोघ[2] करि, लीन्नों नरकहु[3] मारि ॥६॥

षट्पदी ॥

भौम[4] जननि जब भूमि अदितिकुंडल लै आई ॥
करि विन्नति कर जोरि दोरि नति[5] अमित[6] दिखाई ॥
किरि[7] तनु[8] जब हरि अप्प[9] लियउ उद्धरि[10] मुहिं आनी ॥
तब[11] तुम सपरस तनय[12] नरक मम हुव अभिमानी ॥
तुमरोहि दयो तुमही लयो ए कुंडल प्रभु लेहु अब ॥
खिल[13] कुलहिं देहु जदुपति आश्रय सिर हम धरहिं निदेस[14] सब ।७।

दोहा ॥

हरिहुं तथा कहि भौमके, लिन्नैं रतन समस्त ॥
सत उत्तर सोलह सहँस१६१००, कन्या१ कमन[15] प्रसंस्त[16] ।८।

षट्पदी ॥

बहु वारन[17]२ चउ४ दंत तुरग३ छहजार६००० खेतभव[18] ॥
अरु तुरंग[19] कांबोज४ लक्ख इकवीस२१००००० महाजव[20] ॥
मनिमय मंदरकूट[21]५ बरुन छत्ता६ऽऽदि कछुक तति[22] ॥
नरकहिके किंकरन संग पठई द्वारावति ॥
कछु अप्प[23] गरुड पर थप्पि थिर स घनस्याम[24] सत्या[25] सहित ॥
अदितिके दैन कुंडल अरहि[26] गये त्रिदिव[27] आहत[28] अहित[29] ।९।

दोहा ॥

जाय त्रिदिव देवन जजित[30], दर[31] धमि[32] विजय दिखात ॥

---

*भूमि के पुत्र के १ सब २ निष्फल ३ नरकासुर को ४ भौमासुर (नरकासुर) की माता ५ नम्रता ६ बहुत ७ सूवर (वराह) का ८ शरीर ९ आपने १० उठाकर ११ तब आपके स्पर्श से १२ पुत्र १३ बाकी के कुल को १४ आज्ञा ॥७॥ १५ सुन्दर १६ प्रशंसा योग्य ॥८॥ १७ हाथी १८ अच्छे खेत के पैदा हुए १९ कम्बोज देश के घोड़े २० वेगवाले २१ मन्दराचल का शिखर २२ पंक्ति २३ आपने २४ घनश्याम स्वरूप [कृष्ण] २५ सत्यभामा सहित २६ शीघ्र २७ स्वर्ग में २९ शत्रुओं को २८ मारकर ॥९॥ ३० देवताओं से पूजित ३१ शंख ३२ बजाकर

अप्पे[1] कुंडल आदितिकौं, नुत[2] कहि नरक निपात॥१०॥
अति नुति[3] जब किन्नी आदिति, आक्खिय[4] हरिहु अखर्ब[5]॥
करहु जननि अविरत[6] कृपा, संतति[7] तव हम सर्व[8]॥११॥
आसिख तब दिन्नौं आदिति, अखिलन[9] होहु अजेय॥
सची[10] सहित सत्याहुकौं[11], पुनि दिन्नौं वर प्रेय[12]॥१२॥
बंधू[13] जरा[14] रु[15] विरूपता[16], कबहु न व्यापैं तोहि॥
मम प्रसाद[17] निर्भय रहहु, सुभगापन[18] घन सोहि॥१३॥
इम कहि कहि सक्रहि[19] अदिति[20] क्रम पूजन करवाय॥
रक्खे अति अनुरति[21] हरिहि, दिवँ[22] सब सहल दिखाय॥१४॥

षट्पदी॥

नंदन[23] क्रीडंत[24] निरखि पारिजातहिं[25] सत्या कहि॥
लै मम गृह इहिं चलहु नाथ[26] ओ और प्रिया नाहि॥
सुनत पारि वह पारिजात थप्पत खगपति[27] पर॥
जहँ आक्खिय[28] जौमिकन[29] करहु अनुचित न चक्रधर[30]॥
मथि सिंधु सुरन[31] कढ्ढिय यह सु त्रिदिव[32] उचित नहिं भूमितल।
लैजाहु सोहु सुनि हरि चलिय लै सुरतरु निज बाहुबल।१५।

सचरणागद्यम्॥

रच्छक[33]नकी यह सुनि सत्या कह्यो सिंधुके मंथनतैं सुरा१ चंद्र२ लच्छी[34]३हू निकसे ते जैसे सर्व सामान्य भोग्य[35] हैं तैसैं ही पारिजात४कों जानौं॥

---

१ दिये २ स्तुति के साथ ३ स्तुति ४ कहा ५ बहुत ६ निरन्तर ७ सन्तान ८ सबसे ९ नहीं जीतने में आवे ऐसा १० इन्द्राणी ११ सत्यभामा को १२ प्यारा १३ हे यदु १४ बुढापा १५ और १६ कुरूपता १७ प्रसन्नता से १८ सुहाग १९ इंद्र से २० आदिति ने २१ प्रीति सहित २२ स्वर्ग की २३ इंद्र के नंदन नामक बाग में २४ क्रीडा करते सत्यभामा ने कहा २५ कल्पवृक्ष को २६ हे स्वामी! मेरे जैसी तुम्हारे और प्यारी नहीं होवे तौ (सब से विशेष प्यारी) मैं ही हूं तो) २७ गरुड पर रखते हुए २८ कहा २९ पहरेवालों ने ३० हे कृष्ण! ३१ देवताओं ने ३२ स्वर्ग के उचित है ३३ रक्षा करनेवालों की ३४ लक्ष्मी ३५ सबके बराबर भागने योग्य है.

अरु सचीकै सक्रसे पतिको गर्ब है तो वांके[1] अधीसकौं[2] इहाँ आहवकौं[3] आनौं ॥

शक्रकौं जानतहू मर्त्यलोक[4]बसिनी[5] मैं पारिजातकौं लिवाय जातहौं ताको लज्जा करि जो बलिष्ठ[6] होहु सोही निवारन करहु।

तैसैंही रच्छकनकी सुनि सचीनैं सब सुरन[7] सहित सक्र संग्राम कौं पठायो ताके हु बर्णनमैं श्रवन धरहु ॥१६॥

तहां पास[8]१परिघ[9]२प्रास[10]३कृपान[11]४पट्टिस[12]५दुघन[13]६दंड७भुसुंडी[14]८भिंदिपाल[15]९सतघ्नी[16]१०सूल११गदा१२खट्वांग[17]१३कुंत[18]१४कोदंड१५परसु१६प्रमुख[19] सब सस्त्र धारत सुरनके[20] सैन्यनैं बासुदेव बेढि[21] लये ॥

अरु आहवमैं उदग्र[22] होय अपने आयुधनके आघात दये ॥

तहाँ बरुनके पासकौं गरुडनैं चंचु करि खंड खंड कीनौं ॥

अरु गदाधरनैं[23] गदासौं दंडधरके[24] दंडकौं प्रहत[25] करि पुहवीपैं[26] गिराय दीनौं ॥ १७ ॥

श्रीदकी[27] सिबिकाकौं[28] चक्रसौं चूर्ण करि सरनसौं सप्त[29]७कीलकौं सतधा करि डार्‌यो ॥

अरु सुदर्सन छिन्न सूल रुद्रगनकौं गिराय बसु१साध्य२बिश्वेदेव३मरुत४गंधर्ब५गनकौं सारंग[30] संधेय[31] सरन करि सैंवरके[32] तूल[33] तुल्य आकासमैं उछार्‌यो ॥

तहाँ उरग।सनसौं[34] ऐरावत बासुदेवसौं[35] बासव[36] कराल कलह करत भयो ॥

---

१ उस इंद्राणी के २ पति ३ युद्ध करने को ४ नरलोक में ५ वास करनेवाली ६ बलवान् ७ देवताओं सहित ८ पास (जाल) ९ लोहाँगी १० लोहेकी बरछी(सांग) ११ तरवार १२ कटारी १३ मुद्गर १४ अग्नियंत्र[बंदूक] १५ गोफण १६ तोप १७ महादेव के रखने का [दंड के शिर पर मनुष्य का मस्तक लगाहुआ] आयुध १८ भाला १९ आदि २० देवताओं की सेना ने कृष्ण को २१ घेर लिया २२ शस्त्रों को ऊंचा कियेहुए २३ कृष्ण ने २४ यमराज के दंड को २५ तोड़ कर २६ भूमि पर २७ कुबेर की २८ पालखी को २९ अग्नि के सौ टुकड़े करदिये ३० शार्ङ्गधनुष से ३१ सांधेहुए बाणों से ३२ कमल की डंडी के भीतर की ३३ रुई की भांति ३४ गरुड़ से ३५ कृष्ण से ३६ इंद्र भयंकर युद्ध करनेलगा

अरु अपनैं सस्त्र अस्त्र सब कटे जानि कुपित करमैं कुलिस[1]कौं धरत भयो ॥ १८ ॥

तापर चक्रीनैं चक्र चलायो देखि त्रिलोकमैं हाहाकार होयरह्यो। अरु वासवनैं वज्र चलायो ताहि क्रीडाही करि गर्जित गोविंदनैं गह्यो। यह देखि पुरंदर[2] पलायनपर[3] जानि सत्यानैं[4] सुनाई; पौलोमीके[5] प्रिय पाकसासनकौं[6] कलहमैं कातरता[7] उचित नही ॥

अरु सदन आयैंहू[8] सचीनैं[9] स्वागतके स्थान[10] मोहि दर्प[11] दिखायो यातैं पारिजातकौं[12] हराय मैंही तोसौं विग्रहकी[13] चही ॥ १९ ॥

सो सुनि सक्रहू कह्यो चंडी चराचरके करतातैं हारिवेसौं तो लज्जा काहूकौं न आवैं ॥

ऐसी नम्रता जानि कृष्ण कह्यो हे देवराज[14] मानव जे हम तिनको कियो अपराध छमा करि वज्र पीछो लेहु यह सस्त्रसिरोमनि तो तुमारेही सय[15] सोभा पावैं ॥

इंद्र कह्यो मानव बनि मोहि मोहित क्यों करहु सत्याके[16] निष्कुटमैं[17] निवास करिबेकौं ईसके[18] आदेससौं[19] देवद्रुम[20] द्वारकाको अलंकार[21] व्है हैं ॥

अरु पापके परलोक पधारैं स्वच्छंदही[22] यह अमरालय[23] आयजैहैं ॥ ऐसी सुनि वासुदेव[24] वासवकौं[25] वज्र दे द्वारका आय सत्याके निष्कुटमैं निलिंपिनग[26] रोपिदयो ॥

जाकौं देखतही जनकै[27] पूर्वजन्मको चिंतन होय ताके गुच्छनके

---

१ वज्र को २ इंद्र का ३ भागने पर ४ सत्यभामा ने ५ इंद्राणी के प्यारे ६ इंद्र को युद्ध में ७ कायर होना ८ घर आये भी ९ इंद्राणी ने १० आयेहुए का आदर करने के स्थान में (जहां आदर करना चाहिये था वहां पर) ११ घमंड १२ कल्पवृक्ष का हरण कराकर, १३ युद्ध १४ हम मनुष्य हैं जिनके किये अपराध को क्षमा करके यह तुम्हारा वज्र पीछा लो १५ हाथ में १६ सत्यभामा के १७ बगीचे में १८ स्वामी की १९ आज्ञा से २० कल्पवृक्ष २१ आभूषण २२ स्वतंत्र [आप से आप] २३ स्वर्ग में २४ कृष्ण ने २५ इंद्र को वज्र देकर द्वारका आके सत्यभामा के बगीचे में २६ देवतरु को रोप दिया, जिसके देखने से २७ मनुष्य के पूर्वजन्म की ध्यान याद आती है

गंध करि तीन तीन जोजन बसुधातल बासित भयो ॥

ऐसैं अमरतरुकौं आनि नरकके निलयतैं पठई जे सतोत्तर सोलहसहस्र१६१००कन्या तिनकौं एक१ही लग्न पर बासुदेव बिबिध बपु करि बिबाहत भये ॥

अरु प्रत्येक तिनहूकै पूर्वहीके क्रमतैं एक१एक कन्या दस१०दस१०पुत्रनके प्रकर ठये ॥ २१ ॥

ऐसैं एक लाख इकसठि हजार अस्सी१६१०८०कृष्ण के पुत्र सोलह हजार एकसो आठ१६१०८कन्या सहित एक लाख सतंतरि हजार एक सत अठ्यासी१७७१८८समस्त जानिये ॥

अरु बासुदेवकै आठ रानी भई तिनमैं व्यासाऽवतारनैं बैष्णव पुरानमें एक१रोहिनीहू लिखी तहां श्रीधरनैं तो यह जांबतीकोहि पर्याय ठहरायो परंतु यह आठन८मैं काहूकै स्थानापन्न खटावल जानी नहीं यातैं अबके अवतारके यह नवमी९पट्टरानी मानिये ॥

रोहिनीकैंहू दीप्तिमान १ प्रमुख दस १० पुत्र एक१कन्या भई ॥

अरु त्रिलोकेसके तनयनमैं बडो प्रद्युम्न भयो ताहूनैं अपनैं मातुल रुक्मीकी सुता स्वयंबरमैं बाहुबलसौं जित्तिकैं बिबाहि लई ॥ २२ ॥

तासैं प्रद्युम्नके कुमार अनिरुद्ध भयो ताहूको संबंध मातामह रुक्मीके तनुजकी तनयासौं कीनौं ॥

अरु बिबाहके समय कृष्ण १ कामपाल २ प्रमुख जादवन बरूथिनीकी बरात बनाय भोजकट पत्तन जाय बलात्कारसौं

१भूमितल सुगंधित होगया २ कल्पवृक्ष को ३नरकासुर के ४ घर से ५नाना प्रकार के शरीर धारण करके ६ उन हरएक के, पहिले कहेहुए क्रम के अनुसार ७ समूह ८ हुए ९ वेदव्यास ने १० टीका करनेवाले श्रीधर पंडित ने ११ दूसरा नाम १२एवजी १३ इस कल्प में जो कृष्णावतार हुए जिनके (पुराणों के मत से प्रत्येक महायुग में कृष्णावतार होता है) १४आदि १५तीन लोक के पति (कृष्ण) के १६ पुत्रों में १७ मामा रुक्मी की १८ पुत्री को १९ नाना २०पुत्र की २१ पुत्री से २२ बलदेव आदि २३ सेना की २४भोजकटपुर २५बल पूर्वक

*बैदर्भीकों अनिरुद्ध परिनाय दीनों ॥
बिबाहके+अनंतर कलिंगराजनैं रुक्मीसौं कह्यो बलदेव⊛दुरोदर मैं÷दच्छ नहीं है यातैं बडो**ग्लह लगाय जित्तिकैं याको मान मारैं सोही सिद्धांत रुक्मी हू हृदय धरयो ॥

अरु बलभद्रकों बुलाय द्यूतमैं दोय २ बेर हजार १००० निष्क[1] लगाय लगाय जदुवरसौं जित्त्यो तहाँ कलिंगराजहू दंत दिखाय अट्टाट्टहास करयो ॥ २३ ॥

तदनंतर अयुत १००००निष्क ग्लह[3] लगाय बलभद्र जित्ते तथापि रुक्मी १ कलिंगराज२हमही जीते ऐसैं हसित पूर्वक बदत भये॥

तबही कुपित कामपाल कोटि १००००००० निष्कको ग्लह लगाय बहोरि जई[5] भये तदपि[6] दोहू २ दुष्ट हमही जीते ऐसैं कहि अट्टाट्टहासी नर्दत भये ॥

तहाँ उनको अलीकत्व[9] बलको[10] विजयीपन[11] व्योमबानीनैं[12] कह्यो सो सुनि रणारसिक रुष्ट[13] रेवतीरमणनैं[14] वाही खेलके अष्टापदसौं[15] बिदर्भ बसुधेस[16] १ को बध करि कुटिल कलिंगके[17] दसन[18] तोरि सभाको एक१थंभ उपारि उनके पच्छपाती अनेक राजा मारि डारे॥

ऐसैं अनिरुद्धकों बैदर्भी[19] बिबाहि बरातमैं बिराजमान बलदेव बासुदेव द्वारका पधारे ॥ २४ ॥

कोऊ समय दैत्यराज बाणकी दुहिता[20] उषा जंगके[21] जनक पर-

---

*विदर्भ देश के राजा की पुत्री से + पीछे ⊛ जुआ खेलने में ÷ चतुर नहीं है**बडा दाव लगा कर १ मुहर (शास्त्र में लिखे हुए तोल से सोलह मासा सोना को निष्क कहते हैं) २ जिस पीछे ३ दाव ४ बलदेव ५ जीते ६ तोभी उच्च स्वर से ७ हसनेवाले ८ गर्जना करने लगे ॥ कालिंगराज और रुक्मी का ९ झूठापन और १० बलदेव का ११ विजय पाना १२ आकाशवाणी ने १३ क्रोधित होकर १४ बलदेव ने १५ शार से १६ विदर्भ देश के भूपति १७ कालिंग देश के राजा के १८ दांत तोड़ कर १९ विदर्भ देश के राजा की बेटी ॥ २४ ॥ २० पुत्री २१ संसार के पिता महादेव और पार्वती का

मेश्वर १ पार्वती २ कौं रमत देखि [1]रुच्य साहित [2]रिरंसा करत भई जाकौं जानि [3]कात्यायनी कह्यो पुत्री तोकौं सोघ्रही [4]कमनीय [5]कांत मिलिहै जो बैसाख [6]बिसद बारसो १२ के [7]बासर स्वप्नमें तेरो [8]अभिभव करिहै सोही तेरो भर्ता जानि ॥

तदनंतर [9]वाहीदिन स्वप्नमैं अनिरुद्धनैं याकौं [10]अभिभूत करी ताहीमैं मनको लय करि जाग्रतहूमैं सखीसौं तू कहाँ गयो असैं कहत भई उनमत्तकी अवस्था आनि ॥

तहाँ बाणके मंत्री कुभांडकी कन्या उषाकी सखी चित्रलेखा कह्यो कोनसो कहियत जाँनैं तो बनैं असैं पूछैं नीठि नीठि [11]उँमा [12]आदेस आदिक बिरहको वृत्तांत कह्यो ॥

तब [13]कलाकोबिद चित्रलेखा हू देव१दैत्य२दानव३गंधर्व४बिद्याधर ५ पन्नग ६ [14]जँच्छ ७ [15]गुज्झक ८ सिद्ध ९ चारण१०किन्नर ११ नर १२ आदि [16]अखिल [17]सर्गके पुरुषनकी [18]प्रतिमा पट्टमैं चित्रित करि दिखाई तिनकौं देखत उषाके [19]अंबकन [20]त्रिदसादि तजि चतुर [21]नरपंतिहीको [22]चितैवो चह्यो ॥ २५ ॥

तिनहूमैं जदुबंस बिलोकत [23]अंधक वृष्णि बीर[24]वृंद [25]वेष्टित [26]बैकुंठ१ [27]बल २ प्रद्युम्न ३ कौं [28]पिक्खि लज्जाजड होय अनिरुद्धलौं आँखि आवतही [29]आली यहै यहै एह असैं [30]उँच्चरयो ॥

जब [31]जोगगामिनी चित्रलेखा हू इहाँ अनिरुद्ध आनिबेकौं [32]पुरुषोत्तमपुरीमैं प्रवेस कस्यो ॥

अग्गैं बानासुरहू [33]भक्तिकातर [34]भवकौं अपनैं [35]पत्तनपाल बनाय

१वर (इसी प्रकार वर के साहित रमण करने की२इच्छा(चाहना)३पार्वती ने ४सुन्दर५पति६शुक्ल पक्ष की द्वादशी के७दिन८जय[तुझको जीतेगा]९जिस पीछे१०जीती११पार्वती की१२आज्ञा१३कला जानने में पण्डित१४यक्ष१५गुह्यक १६सम्पूर्ण१७सृष्टि१८मूर्तियां(चित्र)१९नेत्रों ने २० देवता आदि को छोडकर२१ मनुष्यों की पंक्ति को ही २२ देखना २३ अन्धक वंशी और वृष्णि वंशी यादवों के२४समूह से२५घिरे हुए२६श्रीकृष्ण२७बलदेव२८देख कर लज्जा में जड हो कर२९हे सखी३०कहा३१योगविद्या से चलने वाली३२द्वारका३३भक्ति के कायर३४महादेव३५अपने पुर की रक्षा करनेवाले (कोटवाल)

बाहुबल *दर्पित **बुल्ल्यो हे नाथ दासकै हजार १००० हाथ क्यौं करे इनको फल ***आहव है ता विनाँ वृथा हैं यातैं एक बहु सफल हु दोय रहिहैं ॥
तब हँस्मित गंभीरगिरीसँ कह्यो जब तेरे निकेतनके मयूरकेतनको भंग व्हैहै तबही तू महाप्रतिभटकौं लहिहै ॥ २६ ॥

सो अब या समय मयुरध्वजको भंग देखि बलिबंसबिभाकर बानहू महामुदित भयो ॥

इतकौं जोगबिद्याके बलसौं अच्छरी चित्रलेखा अनिरुद्धकौं उषाके आवासमैं आनि अन्योऽन्य आलिंगन कराय दयो ॥

तहाँ पृष्टक १ बिद्धक २ उद्घृष्टक ३ पीडितक ४ लतावेष्टितक ५ वृक्षाऽधिरूढक ६ तिलतंडुलक ७ क्षीरनीरक ८ प्रमुख प्रकट मिहित आठ ८ ही मुख्य आलिंगनमैं उभय २ अनुरक्त भये ॥

अरु ललाट १ नयन २ कंठ ३ कपोल ४ ऊरु ५ उरोज ६ ओठ ७ अंतर्मुख ८ आठ ८ ही अंगनमैं चुंबनके लाह लये ॥ २७ ॥

आच्छुरितक १ अर्द्धचंद्र २ मंडल ३ व्याघ्रनखांक ४ मयूरपदक ५ शशप्लुतक ६ स्मारणीयक ७ उत्पलपत्रक ८ आठ ८ ही मुख्य नखचित्र चतुर चतेरेकी तूलिकाकों तिरस्कार करि रचे ॥

अरु गूढक १ उच्छूनक २ प्रवालमणि ३ मणिमाल ४ बिंदु ५ विंदुमाला ६ खंडाऽभ्रक ७ बराहचर्वितक ८ आठ ८ ही रदच्छेद

*भुजबल के घमंड से **बोला ***युद्ध है, उस युद्ध के विना इतने हाथ वृथा हैं इस कारण से एक ही बहुत है और जो एक हाथ भोजनादि व्यवहार के लिये और दूसरा शौचादि के लिये सफल समझे जावें तो दो रहने चाहिये॥ १हसते हुए २महादेव ने कहा कि ३घर की ४मयूर के चिन्हवाली ध्वजा आप से आप टूट पड़ेगी ५सामना [मुकाबिला] करनेवाले वीर को पावेगा ६ बलि दैत्य के वंश का सूर्य ७ घर में ८ परस्पर ९ मिलाप [प्रीति पूर्वक दोनों की देह का मिल जाना] करा दिया ॥ १०अब यहां पर आठ प्रकार का आलिङ्गन, आठ प्रकार का चुम्बन, आठ प्रकार का नखच्छेद, आठ प्रकार का दन्तच्छेद, आठ प्रकार का सम्वेशन, आठ प्रकार का सीत्कार और तेरह प्रकार का पुरुषायित, लि

चिंतनमैं मोद मचे ॥

उद्धुग्नक१विजृंभितक२पीडितक३प्रसारितक४वेणुदारितक ५ शूलाचितक६कार्कटिक७परावृत्तक८इत्यादि सुवर्णनाभोक्त संवेशन प्रकार अनुष्ठित करे ॥

त्योंही हिंकार१स्तनित२कूजित३रुदित४सीत्कृत५सूत्कृत६फूत्कृत७दूत्कृत८आठ८ही सीत्कार भेदनमैं श्रवन धरे ॥२८॥

उपसृप्तक१मंथन२हुल३अवमर्द्दन४पीडितक५निर्घात६वराहघात७वृषाघात८चटकविलासित९संपुटक१०संदंश११भ्रमरक१२ प्रेंखोलितक१३इत्यादि पुरुषायित प्रयोगहु चहत भये ॥

कोऊ समय सौविदल्ल जन तिनकौं रमत देखि द्रुतही दैत्यराजबानसौं जाय कहत भये ॥

यातैं सुनतही जे जे प्रबीर पक्करिबेकौं पठाये ते सब अनिरुद्धनैं मारे सुनि कुपित होय दैत्यराजही गहिबेकौं गयो ॥

तैंथापि रणरसिक प्रद्युम्नके पुत्रनैं पच्छे पग दिवाये तबही असुरनके इंद्रनैं माया प्रसार पन्नगास्त्रसौं अनिरुद्धकौं बंधि कारामैं डारि दयो ॥ २९ ॥

द्वारका अनिरुद्धको सोक करत जादुवनसौं नारदनैं निदान पूर्वक अनिरुद्धको निग्रह कह्यो ॥

तब बासुदेव१बल२प्रद्युम्न३प्रमुख जादवन चतुरंग बानके विजयकौं सोनितपुरकी सरनि बह्यो ॥

पुरीके परिसंरलौं पहुँचत पसुपतिके प्रेरे प्रमथ आय बासुदेवकी

ये हैं इनका विवरण [व्याख्या, अर्थ का स्पष्ट करना]करना बहुत ही अश्लील [लज्जा उत्पन्न करनेवाला] है इसकारण से हमने यहां इस प्रकरण की टीका करना छोड दिया है सो यदि पाठकों को इनके जानने की रुचि होवे तो वात्स्यायन कृत कामसूत्र के साम्प्रयोगिक अधिकरण के दूसरे अध्याय के प्रारम्भ से देखलेवैं ॥ १नाजर लोगों ने २शीघ्र ३तो भी ४नागपास से ५कैद में ॥ २९ ॥ ६ कारण पूर्वक ७ बन्धन ८ आदि ९ हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल यह चार प्रकार की सेना शोणितपुर के मार्ग में चली १० पुर के समीप की भूमि में ११ शिव के भेजेहुए १२ गण १३ कृष्ण को

वाहिनी[1]सौं लरत भये ॥

तिनकौं गिराय जदुवीर दैत्यराजके [2]दुंगके समीप गये ॥३०॥

तहाँ तीन३चरन तीन३मस्तक धरत [3]महेश्वरको [4]महाज्वर आय [5]केसवसौं कलह करि बलभद्रपै अपनो भस्म सस्त्र डारत भयो ॥

ताके तापतैं [6]निमीलितनयन [7]नीलांबरनैं [8]अच्युतकें अंग संग करि नीठि नीठि [9]स्वास्थ्य लयो ॥

[10]तदनंतर [11]माहेश्वरको अपनैं अंगमैं [12]आवेश जानि तापैं बासुदेवनैं वैष्णव ज्वर चलायो तानैं अच्युतके अंगतैं माहेश्वर निकासिदयो॥

अरु [13]वैष्णवके बढतही ब्रह्मादि [14]बिबुधन प्रजाके पालनकी प्रार्थना करी सो सुनि अपनौं ज्वर अपनैंही अंगमैं अच्युतनैं लीन करि लयो ॥ ३१ ॥

तदनंतर [15]जुद्धकौं जे चिंतन करिहैं ते [16]बिज्वर व्हैहैं ऐसैं अच्युतसौं अरज करि माहेश्वर [17]पलाय गयो ॥

तब [18]आहवनीय१[19]गार्हपत्य२[20]दक्षिणाग्नि३[21]सभ्य४[22]आवसथ्य५ए पंच५ही अग्नि आय लरे तिनकौं जीति प्रभुनैं [23]पलचारनकौं असुरनको [24]अनीकैं चूरि दयो ॥

तबही भक्तकी भीर होय [25]सक्तिधर सहित [26]कपाली केसवसौं आय लरे ॥

अरु [27]अनंतके [28]उत्तमांगतैं [29]अवनीकौं डगात दोहू २ रसिक रन-

---

१ सेना से २ पुर ॥ ३० ॥ ३ महादेव का पैदा किया हुआ ४ बडा ज्वर [बुखार] ५ कृष्ण से युद्ध करके ६ मिचे हुए नेत्रों से ७ बलदेव ने ८ कृष्ण के अंग के संग से ९नैरोग्यपन १०जिस पीछे ११शिव के ज्वर को १२घुसा हुआ जानकर १३विष्णु के उत्पन्न किये हुए ज्वर के बढते ही १४देवताओं ने १५इस युद्ध को जो याद करैं उनको १६ज्वर नहीं चढै; कृष्ण से यह अरज करके शिव का ज्वर १७भाग गया १८आहवनीय१९गार्हपत्य२०दक्षिणाग्नि, ये तीन तो होम की अग्नि हैं और २१ सभ्य २२ आवसथ्य ये दोनों अग्नि विशेष हैं२३ मांस खानेवाले पशुपक्षियों को २४ सेना का चूर्ण कर दिया २५ स्वामिकार्तिक सहित २६ महादेव आकर कृष्ण से लड़े २७ शेष नाग के २८ मस्तक से २९ भूमि को डिगाते हुए ॥ ३२ ॥

सरमैं झुकि परे ॥ ३२ ॥

तहाँ बासुदेवनैं*जृंभण चलायो तासौं÷जृंभाकरि+अभिभूत ईस[1] लरिबेकौं समर्थ न भये ॥

अरु कन्हके हुंकार करि सक्तिकौं[2] पटकि गरुडके घायल म-यूरकौं लै प्रमथन सहित पार्वतीनंदहू[3] पलायगये ॥

जहाँ जटाधरकौं[4] जृंभितें[5] बर्हिबाहनकौं[6] बिद्रुत[7] जानि बडी ब-रूथिनीसौं[8] बानासुर आय तुमुल[9] बिस्तर्यो ॥

ताके सैन्यकौं सीरीनैं[10] सीरसौं[11] अैंचि अयोग्रसौं[12] अवपोथित[13] कर्यो ३३

तदनंतर[14] बाण १ बासुदेव २ अस्त्र अंबुकौं[15] उझलाय बरखाके बलाहक[16] बनैं

अरु कवचनकौं काटि काटि उभै २ ही ओरके अजिम्हग[17] जा-लीमैं मयूरनके माफिक गात्रनकौं छेकि[18] छोनीं छनैं ॥

तब कृष्णहू बानके बाननतैं अपनैं आयुध बौवरीके[19] कलस हो ते जानि मारिबेकोहीं मन करि महाऽसुरपैं[20] चक्र चलायो ॥

तहाँ मंत्रमय असुरनकी कोटवी नाम विद्या कुलदेवी दिगंबर[21]-र रूपसौं बानके आगैं होय अपनौं दुर्दर्सन देह देवैंकौं[22] दिखायो।३४।

ताकौं देखतही हरि नैंन मींचि असुरके उद्देसैं[23] पूर्बक कुटिल[24]-के करनकौं कबौरी[25] करि सुदर्सन तो प्रेरिही दयो ॥

*जिस से आलस्य होकर जंभाई(उवासी)आने लगै ऐसा अस्त्र चलाया ÷जंभाई (भङ्ग आदि का नशा उतर कर उवासी)आने से+व्याकुल होकर महादेव १ महादेव के गणों सहित २ स्वामिकार्तिक भी ३ भाग गया वहां पर ४ शिव को ५ उवासियें लेते हुए और ६ मयूरवाहन(स्वामिकार्तिक)को ७ भागा हुआ जानकर ८ सेना से ९ भयंकर युद्ध फैलाया १० बलदेव ने ११ हल से १२ मूसल से १३ नाश किया (कूटा) ॥ ३३ ॥ १४ जिस पीछे १५ अस्त्र रूपी जल को उझला कर १६ मेघ (बादल) १७ बाण १८ भूमि पर १९ बावली स्त्री अपने मस्तक के घडे को जहां तहां डालदेवे इसप्रकार अपने आयुधों को जहां तहां निष्फल गिरते देख कर २० बडे दैत्य पर २१ नग्न होकर २२ कृष्ण को ॥ ३४ ॥ २३ बाणासुर के कहने माफिक(बाणासुर ने पहिले महादेव से कहा था कि मेरे हजार हाथ व्यर्थ हैं सो दो ही रहने चाहिये उस कथन के अनुसार) २४ उस कुटिल बाणासुर के हाथों को २५ कवाडा(घर छाने के लिये बांस आदि)रखनेवाले के समान करके

तानैं दैत्यकों दुव २ घटि सहस्र ९९८ बाहुनको अंत बालुकी-की बिधि बाढि लयो ॥
दूजी २ बेर चक्र चलावत चंडनेत्र चेत पाय मेरे बरनैं पढ्यो है ऐसैं कहि बासुदेवकौं बानके बधतैं निवारि दये ॥
अरु दोऊ२ नके प्रीति पूर्बक परस्पर प्रसंसाके संल्लाप भये।३५।

दोहा

अंतर आवत गरुड रैय, पन्नग पास पलाय ॥
उषा सहित अनिरुद्धकौं, लै हरि पैंत्त निकाय ॥ ३६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रबाहुबाणपौण्ड्रकवासुदेवजन्मवेलासामीप्यकालसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे कृष्णमुर१ नरका २ दिमारणतत्कीलितकन्याऽऽदिद्वारकाप्रेषणस्वयंस्वर्गगमनसुरसवित्रीकुण्डलप्रत्यऽर्पणसत्योक्तचिकीर्षुचक्रिपारिजातहरणशक्रादिसुरपराभवनद्वारकागतदामोदरनरकनिग्रहनिष्कासितशतोत्तरषोडशसहस्र १६१०० कन्यापरिणयनसर्वसन्ततिसमुच्चयसङ्ख्यासूचनप्राद्युम्निरुक्मिपौत्रीविवहनदुरोदराऽलीककुपितकामपालकालिङ्गदशनत्रोटनरुक्मिप्रमुख-

---

१ समूह २ बालूकाककड़ी के समान काट लिये ३महादेव सचेत होकर ४ वार्तालाप ५ गरुड़ के वेग से ६सर्पों की पास भाग गई ७पहुँचे ८ घर पर

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी बहु बाण पौण्ड्रक वासुदेव के जन्म समय से नजीक है समय का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कृष्ण का मुर, नरक आदि को मारना, उस नरकासुर की कैद की हुई कन्याओं को द्वारका भेजना, खुद कृष्ण का स्वर्ग जाना, देवताओं की माता (अदिति) को कुण्डल देना, सत्यभामा का कहना करने की इच्छावाले श्रीकृष्ण का कल्पवृक्ष को हरना, इन्द्र आदि देवताओं का पराजय, द्वारका जाकर कृष्ण का नरकासुर की कैद से निकाली हुई१६१००कन्याओं से विवाह करना, इन सबकी सन्तान की इकट्ठी गिनती का कहना, प्रद्युम्न के पुत्र का रुक्मी की पोती से विवाह करना, जून में झूठेपन से क्रोधित होकर बलदेव का कलिंग देश के राजा के दांत तोड़ना और रुक्मी आदि राजाओं को मारना, विवाह कियेहुए अनिरुद्ध को घर

पृथ्वीशपौत्रपरिणीताऽनिरुद्धानेकायानयनबाणपुत्रीप्राद्युम्निहरणबाणतन्निग्रहणबल १ वासुदेव २ विजयनबाणबाहुविच्छेदनपरमेश्वरप्रार्थनात्यक्तबाणप्राणपरमेश्वरसोषाऽनिरुद्धप्रत्यानयनं द्वादशो १२ मयूखः ॥ १२ ॥ आदितश्चतुःपञ्चाशत्तमः ॥ ५४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा

दोहा

हरि१बल२हुव बसुदेवकै, सुहि लहि समय समीप ॥
पांडुतनय पांडव भये, पंच५भ्रात कुलदीप ॥ १ ॥
अभिजित नाम मुहूर्तमैं, ज्येष्ठा१८उडुमैं जात ॥
प्रथम जुधिष्ठिर१धर्मसौं, कुंती औरस ख्यात ॥ २ ॥
रहत बृहस्पति५सिंह५पर, मघा१०त्रयोदसि१३पाय ॥
कुंती औरस भीम२हुव, अनिल अंस अतिकाय ॥ ३ ॥
इंद्र अंस अर्जुन३भयो, फालगुनी११।१२उडु एव ॥
दस्र२न सैन माद्री जने, सुत नकुल४रु सहदेव५ ॥ ४ ॥
वासुदेव जयसौं बडे, मास तीन३परिमान ॥
या३ही मित हरिसौं अधिक, सीरी समर सयान ॥ ५ ॥
भीमसेन बलसौं बडो, या३ही क्रम अति जोर ॥
ऐसैं छेत्रज पांडुकै, पञ्च५भये रनघोर ॥ ६ ॥
सोलह१६पन्द्रह१५सकरी१४, बरस त्रयोदस१३वेस ॥

लाना, बाणासुर की पुत्री उपा को प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का हरना, उस अनिरुद्ध को बाणासुर का कैद करना, बलदेव कृष्ण का विजय और बाणासुर के हाथों को काटना, महादेव की प्रार्थना से बाणासुर के प्राणों को छोडना, कृष्ण का उपा सहित अनिरुद्ध को पीछा लाने का बारहवां १२मयूख, समाप्त हुआ ॥१२॥ और आदि से चौवन ५४ मयूख हुए ॥

१कृष्ण बलदेव २ ज्येष्ठा नक्षत्र में ३ पैदाहुआ ४ कुन्ती के उर से ५ प्रसिद्ध ६ पवन के अंश से ७ बडा पराक्रमी अथवा बडे शरीरवाला ८ अश्विनीकुमारों ९ से १० कृष्ण ११ अर्जुन से १२ इसीप्रमाण १३ बलदेव १४ युद्ध में चतुर १५ बलदेव से १६ ये पुत्र पाण्डु के क्षेत्रज (पाण्डु के क्षेत्र में औरों के वीर्य

क्रमतैं[1] पांडव पञ्चक[2]हि, आयो गजपुर[3] एस ॥ ७ ॥
इनके चरित असेस[4] धरि, बरन्यौं भारत व्यास ॥
नृप सत्रुघ्न४३चरित्र बिच, कहिहैं सोहु समास[5] ॥ ८ ॥
पुब्ब[6] जुधिष्ठिर जन्मतैं, हायन[7] तीस३०प्रमान ॥
भयो मघा१०के प्रथम१पय, बासुदेव४१चहुवान ॥ ९ ॥
पौण्ड्रदेस पुंड्रक४०जनक, यातैं पौण्ड्रक४१नाम ॥
वासुदेव४१वसुदेव४०सुत, यातैं हुव उद्दाम[9] ॥ १० ॥
वृद्धसर्म्म भानेज यह, गुनवति४०।१जांठर[10] जात ॥
मघा१०प्रथम१पय करि भयो, मच्छक४१हू[11] भुव ख्यात[12]॥११॥
दैत्य बली नर अंस जो, मोहन३२बैर सम्हारि ॥
जुब्बन लहि कुरु१जदु२नतैं, रचत भयो अति रारि ॥१२॥
ससिकुलभूखन[13] नृप सुबल, जो जनपद[14] गाधार ॥
लघुतनया[15] ताकी लही, मच्छक४१ज्या रति मार[16] ॥ १३ ॥
माउसिया[17] दुज्जोधकी, छोटी नलिनी४१।१नाम ॥
सकुनीकी अनुजा[18] स्वसा[19], व्याही नृप अभिराम ॥ १४ ॥
बासुदेवकै सुत भयो, नलिनी बिच रनधीर४२ ॥
बीतिहोत्रै[20] अरि तृन बनहिं, बीतिहोत्रै[21] कुल बीर ॥ १५ ॥

से पैदा हुए) हैं ॥ युधिष्ठिर वर्ष का, भीमसेन, वर्ष का, अर्जुन वर्ष का और नकुल सहदेव १३ तेरा वर्ष के थे१ इस क्रम से २ पांच पाण्डवों का समुदाय ३ हस्तिनापुर में [हस्ती नामक राजा का बसायाहुआ होने के कारण उस नगर का नाम हस्तिनापुर था] आया ॥ ७ ॥ ४ सम्पूर्ण ५ संक्षेप से ॥ ८ ॥ ६ पहिले ७ वर्ष ॥ ९ ॥ ८ इसके पिता का नाम पुण्ड्र और देश का नाम पौण्ड्र होने से इसका नाम पौण्ड्रक हुआ. और इसके पिता का नाम वसुदेव भी था इसकारण से इसका नाम वासुदेव हुआ ९ निरङ्कुश १० पेट से पैदा. मघा नक्षत्र के प्रथम पाये में जन्म होने के कारण भूमि पर ११ मच्छक नाम भी १२ प्रसिद्ध हुआ १३ चन्द्रकुल १४ देश १५ छोटी पुत्री १६ काम देव को रति मिली जैसी १७ जो दुर्योधन की मासी थी १८ छोटी १९ बहिन शत्रुओं रूपी तृणों पर २० अग्नि रूपी २१ अग्निकुल में प्रविष्ट करके जो

वासुदेव चहुवानकौं, मनुज[1] अविद्या मूढ ॥
कहनलगे हरि अप्पहो[2], लै अवतार अगूढ ॥ १६ ॥
सोहि मन्नि हरि चिन्ह सब, किय मच्छक४१निज काय ॥
दूत पठायो द्वारका, हरि[3] पहँ एह कहाय ॥ १७ ॥

मुक्तादाम

दई नृप मच्छक४१एह कहाय, अहं[4] हुव विष्णु इहाँ नर आय ॥
सुन्यौं हरि चिन्हहि धारत तोहि, न जोग्य यहै तजि सो[5] भजि[6] मोहि॥१८॥
गदा१दर२आदिक लच्छन टारि, तथा निज नामहु देहु निवारि ॥
कह्यो सुनि दूतहिं केसव[10] एह, रावै तजिहौं ढिग आय सनेह॥१९॥
न होय जथा[11] तुमसौं भय मोहि, तथा करिहौं कहिहो सब सोहि॥
पहै कहिकैं दिन होत द्वितीय२, चढे उरगासन[12] कन्ह गरीय[13]॥२०॥
चले इनकौं सुनि कासिय राय, सज्यो उत पौंड्रक४१मित्र सहाय॥
भये मदघुम्मत सज्ज[14] मतंग[15], तरारन लेत विनीत[16] तुरंग[17] ॥२१॥
रथी१रथ घोरन सादि२समूह, जुरे गजपिट्ठिनि सादि३न जूह[20] ॥
घनी मचि पक्खर घंटन घोर, अरे पलचार[21] भरे चहुँ ओर ॥२२॥
उमा[22]१सिव२आनि खरे लहि आस, त्वरा[23] करि तक्कन चक्क[24] तमास॥

१मूर्ख लोग थे वे वासुदेव चहुवान को कहने लगे कि २ आप विष्णु हो और प्रसिद्ध अवतार लिया है. विष्णु के सब चिन्ह अपने शरीर पर धारण करके ३ कृष्ण के पास द्वारका में दूत भेजा ४ मैंने ५ विष्णु के चिन्ह तुमको धारते सुना है सो छोडकर ६ मेरा सेवन करो ७ शंख ८ फिर ९ अपना नाम हरि आदि है सो भी छोड दो १० कृष्ण से यह सब कहा तब कृष्ण ने उत्तर दिया कि तुम्हारे पास आके ही सब स्नेह पूर्वक छोडूंगा ११ जिस प्रकार १२गरुड़ पर १३सब से बडे हैं वे ॥ २० ॥ काशी का राजा भी अपने मित्र पौण्ड्रक की सहाय पर तैयार हुआ, मद में घूमते हुए१५हाथी १४तैयार हुए१६शिक्षा पायेहुए१७घोड़े छलाँगें लेतेहुए निकले ॥ २१ ॥ रथों पर रथी और घोड़ों पर१८घोड़ों के चढनेवालों का समूह और हाथियों पर १९हाथियों के चढनेवालों का२०समूह २१ मांस खानेवाले ॥ २२ ॥ २२ पार्वती और शिव मुण्डमाला की आशा से आ खडे हुए २३ शीघ्रता करके २४ सेना को

ढमंक्किय ढोल्ल नगारन नद्द, चमंक्किय आयुध ओज[1] विहद्द[2] ॥२३॥
धमंक्किय भुम्मि सबै हय[3]धार, ठमंक्किय अच्छरि घुग्घर मार ॥
पलट्टिय फट्टिय आकुल भोग[4], उलट्टिय सिंधु प्रलै[5] जनु जोग ।२४।
करक्किय कंटक[6] बंधन सत्थ, खरक्किय खप्पर जुग्गिनि हत्थ ॥
छरक्किय अभ्भ[7]घटा बर्मथून[8], झरक्किय बीरन नैंन जनून[9] ॥२५॥
थरक्किय पब्बय थाल[10] थरक्क, फरक्किय झंडनपैं[11] बहरक्क ॥
भरक्किय[12] कातर प्रानन चाहि, अरक्किय[13] पिक्खन देव उमाहि ॥२६॥
मुरक्किय कच्छप ज्यों ढरि ढाल, बरक्किय दंतुलि कोल[14] बिहाल ॥
ढरक्किय दिग्गज जानुन[15] जंकि[16], लरक्किय अंड[17]कटाह उचक्कि ॥२७॥
बढ्यो रज चक्किय[18] चक्क बिछोहि, चढ्यो नभ एहि[19] दिवाकर[20] रोहि[21] ॥
बराणसिराज[22]१रु पौंड्रक२बीर, हले[23] इम सज्जि चमूं[24] हमगीर ।२८।
विरांज[25] चढे इततैं हरि[26] आय, लये दल दोउ२न द्वै२गरदाय ॥
जुरे हरि१मच्छि[27]क२दारुन जुद्ध, उभै२निज आयुध छावत उद्ध[28] ।२९।
उभै२मकरा[29]कृत कुंडल कान, उभै२अरि[30]१कंज[31]२गदा३दर[32]४वान ॥
उभै२श्रिय[33] बच्छ बिराजित बच्छ[34], उभै२गलकौस्तुभ[35] रंजित[36] अच्छ ३०
उभै२कसि पीत निचोलन[37] तंग, उभै२घनस्याम रहे रुपि रंग ॥
उभै२लहि गोहिर[38]लौं बनमाल, उभै२दल नीरज[39] नैंन विसाल ।३१।

---

१ प्रताप २ बिना हद (अत्यन्त) ३ घोड़ों की दौड़ से ४ शेष नाग के फण ५ मानों प्रलय होने का योग आगया होवे ऐसा ६ कवच ७ आकाश को ८ हाथियों की सूंड के जलकणों की घटा से ९ क्रोध १० थाल में भराहुआ पानी थरके इस प्रकार पर्वत थरकने लगे ११ ध्वजा १२ कायरों के प्राण भड़के (चौंके) १३ अड़े (इकट्ठे हुए) १४ वराह की १५ घुटनों (गोडों) के बल १६ गिरे १७ ब्रह्मांड १८ चकवी चकवा के वियोग कराकर १९ वही रज २० सूर्य को २१ रोक कर २२ काशी का राजा २३ चले २४ सेना २५ पक्षियों के राजा (गरुड़) पर २६ कृष्ण २७ वासुदेव चहुवान २८ ऊपर की २९ दोनों के कानों में मकर की आकृति के ३० चक्र ३१ कमल ३२ शंखवाले ३३ दोनों की छाती पर ३४ विष्णु का (भृगुलता) चिन्ह ३५ दोनों के गलों में कौस्तुभ मणि ३६ शोभायमान ३७ पछेवड़ा (प्रच्छदपट) को काठा कस कर दोनों के ३८ पगों के टखने [गिरियों] तक वनमाला ३९ दोनों कमल नेत्र

उभै२उरगासन[1] केतन[2] अंक[3], उभै२रुचि रम्य[4] किरीट निसंक ॥
उभै२धनु तद्धित[5] भृंग बिकार, उभै२भुज च्यारि४स्यमंतक[6]वार॥३२॥
उभै२बसुदेव तनूज[7] समान, उभै२पलचारन[8] पोखन प्रान ॥
उभै२बिरदावलिरावनमार[9], उभै२मधुकैटभ बच्छ[10] बिदार ॥३३॥
उभै२रथ फेरत मंडलमान[11], उभै२कुल जद्दव ओ चहुवान ॥
उभै२सिव दारिद मुंडन[12] जानि, उभै२कलिकार[13] हसावत आनि॥३४॥
उभै२रनबीर मिले इम आय, उभै२करलाघव[14] दाव दिखाय ॥
लगे दुव२गैन[15] गुरावन जत्थ, मिलावन छावन मत्थन मत्थ ॥३५॥
चलै सर१तोमर[16]२सांगि३त्रिसूल४, त्रसे[17] हुव कातर[18] सैंबर[19] तूल ॥
छिकैं दुव२घाँ[20] पटपीत सरीर, भई हलमल्ल भई भट भीर ॥३६॥
नचैं उठि रुंड तथुंग[21] तथेइ, करैं भरि बत्थ विपोथन[22] केइ ॥
कटैं रथ१कूबर[23]२चक्र[24]३बरूथ[25]४,फटैं प्रधि[26]५नाभि६जुगंधर[27]७जूथ॥३७॥
उडैं ध्वज८अंबर रोपन[28] रीस, करैं जनु देवनकौं बखसीस ॥

२ध्वजा में १ गरुड़ के ३ चिन्ह ४ मनोहर ५ दोनों के हितके लिये सींग के धनुष ६ दोनों चार हाथवाले, और हाथ में स्यमंतक मणिवाले ७ पुत्र ८ मांस खानेवालों के प्राणों को पोषण करनेवाले दोनों ९ रावण को मारनेवाले [विष्णु के अवतार] हैं ऐसी स्तुति करानेवाले १० छाती को फाड़नेवाले ॥ ३३ ॥ ११ गोलाकार १२ महादेव के मस्तकों का दरिद्र जाननेवाले अर्थात् इस दरिद्र को हम मेटेंगे इस बात को जाननेवाले १३ दोनों नारद (युद्ध करानेवाले नारद को युद्ध बहुत प्रिय था, इसकारण से इधर की वार्ता उधर, और उधर की इधर कह कर युद्ध करा देते थे, इस से नारद को कलिकार कहते हैं) को हसाते [प्रसन्न करते] हैं ॥ ३४ ॥ १४शीघ्रता से१५आकाश गुड़ाने लगे (अत्युक्ति में आकाश का गिराना बहुधा कहा जाता है) और माथों से माथे मिला कर आकाश को छाने के लिये१६भाले१७डर कर१८कायर१९कमल नाल की रुई के समान हुए २० दोनों ओर पीताम्बर सहित शरीर छिके२१ये नाचके अनुकरण के शब्द हैं२२गिराना (कितने ही बाथ भरके गिराते हैं) २३ रथ के ओदण २४ पहिये २५ रथ के ऊपर का लोहे का कवच (खोली) २६ पूठी २७ जुआ (जूड़ा) रहने की जगह २८ बाणों से (ध्वजा का वस्त्र क्रोध पूर्वक बाणों से उडता है सो मानों वह वस्त्र देवताओं को बखसीस किया जाता है

गिरैं भुव खाय कुलट्टन सूंत९, मनौं नट पट्ट क्रिया मजबूत ॥ ३८ ॥
हबक्कत घायनमैं लगि घाय, छुलक्कत रत्त उबक्कत आय ॥
चटक्कत चापन चंड बिरॉव, सु ज्यौं चटकारि खिलावन सॉव । ३९ ।
करैं सर सोदरह्रू अर एह, हजारन बंट परैं इक१देह ॥
सिखावत पच्छ बिमूढ बहोरि,
न पै बिसवास करो हित कोरि१००००००० ॥ ४० ॥
कहैं सठ तून प्रसू सन तून, लहैं इक१भागहु क्यौं हम ऊंन ॥
अरे करिहो इक१भाग सिवाय, सुही मुहिं देहु कहैं इम माय । ४१ ।
सु पै नहि मन्नि वदैं फट बैंन, कढैं निज ज्यौं तजि ज्यौं पर लैन ॥
कटैं उर१ जॉलिक२जत्रु३कपाल४, बनैं बढि चापल अंत्रन व्याल । ४२ ।
रमैं चंडसट्ठि६४चढावतें रत्त, वदैं दुवपंच५२मलंगत वत्त ॥
डकारत डाकिनि अंस्र अघाय, हकारत साकिनि पारत हाय । ४३ ।

१ सारथी २ फटेहुए घाव के बोलने का अनुकरण है ३ रक्त४जोर से खींचे हुए धनुष के शब्द का अनुकरण है५भयंकर शब्द६सो, जैसे चुटकी बजाके ७बालक को रमाते हैं ॥३९॥ अब यहां रूपक अलंकार से वर्णन करते हैं कि सगे भाइयों की भांति बाण (तीर) भी शीघ्र अथवा (अड़ हठ से) ही एक शरीर के हजारों बंट पाड़ते हैं जिनको अपनी पच्छ के मूर्ख लोगों के समान तीर के पंख सिखाते हैं कि क्रोड़ बातों से भी इन [भाइयों] का विश्वास मत करो ॥ ४० ॥ एक बाण दूसरे बाण से कहता है कि हे मूर्ख तू भाथा रूपी माता से निकला हुआ नहीं है इससे तुम्हारे कारण से हम एक हिस्सा कम क्यों लेवैं ? इसके उत्तर में वह कहता है कि अरे ? मैं एक भाग अधिक करूंगा, यह सुनके माता (भाथा, और उधर काली देवी) कहती है कि वह अधिक भाग मुझे देना ॥४१॥ इस बात को नहीं मानकर धिक्कार का अथवा फाटा (निर्लज्जता का) वचन बोलता है. बाण जब प्रत्यंचा से छूटता है तब "फट" ऐसा शब्द होता है और अपनी माता को छोड कर पराई भूमि लेने को जाता है (यहां पर ज्याशब्द माता और भूमि दोनों का वाचक है और ज्या का अर्थ प्रत्यंचा भी है कि अपनी प्रत्यंचा को छोड कर शत्रु के धनुष की प्रत्यंचा काटता है) १५ जाली १६ गला और धड़की सन्धि (गले की हसली का स्थान) १७ चपल १८ आंतों के सर्प ॥ ४२ ॥ १९ चौसठ जोगनियां२०रक्त २१बोलते हैं २२बावन वीर [भैरव] २३ रक्त से तृप्त होकर

सिराहत संभु उठावत सीस, कटावत यौं जिम रक्खस[1] कीस[2] ॥
सिराहत बुल्लि उमा[3] रन सूरि, भरैं तिन्ह लोहित[5] खप्पर भूरि[6] ।४४।
चटच्चट पात गदा चउ[8]कोद[7], मच्यो हिय गिद्ध सिचानन मोद ॥
पटक्कत रत्त[9] गुरैं गजराज, झरैं जनु पब्बय बज्जन[10] बाज ॥४५॥
नचैं कहुँ भूत बिनाँ बिधि तत्त[11], फिरैं कि[12] बजारनमैं उनमत्त ॥
सि[13]लैं घट तोमर होय दुसाँर[14], करैं कि तुला क्रय[15]१ विक्रय२कार ।४६।
भ्रमैं ध्वजदंडन सुंडिन भाग, नमैं जनु चंदन चुंबन नाग ॥
खरे लखि रीझत नारद खेत, परेहु कहौं भट पारत प्रेत ॥४७॥
बली दुव२चंद्र१धनंजय[16]२बंस, अरे इम बिष्णु१बलीनर[17]२अंस ॥
कह्यो तहँ पौंड्रकसौं जदुनाथ, कहे तुमते[18]ऽबँ तजौं सब साथ ।४८।
दये कहि यौं हरि सस्त्र चलाय, कटे तिन पौंड्रकके सब जाय ॥
निरायुध व्है बिनु स्यंदन[19] बाजि, अर्‌यो पुनि सम्मुह मच्छक४१ आजि[20]
हनैं बहु जद्दव मुट्ठिन मारि, दये अवनी[21] गज डुंगर डारि ॥
हनी अनिरुद्ध हिये दस१०मुट्ठि, प्रहारिय काम२के फोगिन[22] रुट्ठि।५०।
रु उल्मुक३साम्ब२हनैं तलघात[23], गिरायउ दारुक[24]५दे उर लात ॥
बलाहक१सैव्य२तुरंग[25] जैंकाय, गह्यो हरिको कटिबंध[26]हि जाय ।५१।
भये तँहँ लोक चउद्दह१४भीत, बढ्यो सुँच[27] काल गिन्यौं विपरीत ॥
कह्यो नँभ[28] देवन कंपि पुकारि, रचो यह कौतुक[29] ना[30]ऽबँ मुरारि ।५२।

राम और रावण के युद्ध में १ राक्षस और २ बन्दर कटते थे ऐसे ३ देवी ४ युद्ध में पण्डित ५ उनके लोही से ६ बहुत गदा के ७ पड़ने का चटचट शब्द चारों ८ दिशा में होता है ९ रक्त; मानों वज्र से पर्वतों के १० पंख झड़ते हैं ११ तहां पर १२ मानों बजार में बावला फिरे जिस माफिक, शरीर भालों से १३ छिदते हैं १४ पार फूट कर १५ मानों मोल लेने और बेचनेवाले ने ताकड़ी (तराजू) कर रक्खी है. चन्द्रवंशी और १६ अग्निवंशी १७ नर नामक दैत्य के अंशवाला वासुदेव चहुवाण १८ अब १९ बिना घोड़े रथ और मच्छक चहुवाण २० युद्ध में ॥ ४९ ॥ २१ भूमि पर हाथियों रूपी पर्वत पटककर २२ प्रद्युम्न के कोहणी, खूर्णी (भुजमध्यग्रन्थी) ॥५०॥ २३ थप्पड़ की चोट से २४ कृष्ण के सारथि के २५ बलाहक और सैव्य नाम कृष्ण के घोड़ों को गिरादिया २६ कमरबन्धा ॥५१॥ २७ शोक २८ आकाश में २९ खेल ३० अब ॥५२॥

सबै विधिसर्ग[1] जमालय[2] जात, हनौं प्रभु पौंड्रककौं तसमात[3] ॥
यहै सुनि कन्ह गदा घन घाय, हन्यौं पुनि पौंड्रक४१चक्रचलाय॥५३॥
वँराणसिराजहिं[4] मारि बहोरि, पठायउ तास पुरी सिर तोरि ॥
गदाधर[5] यौं अरिगंज गिराय, बिजै करि द्वारवतीपुर आय ॥५४॥
परयो उत कासियमैं नृप सोस, रची तस पुत्रहु सो लखि रीस॥
त्वरा[6] करि छेत्र गयो अविमुक्त[7], प्रसन्न करे हर[8] लै बर युक्त॥५५॥

दोहा

कासिराज सुत संभुसौं, यह बर लिय उत्ताल[9] ॥
ईस उठावहु घोर इक१, कृत्या[10] केसव काल ॥ ५६ ॥
ताके हवन[11] निकेतमैं, सिव सासन लहि एह ॥
उठी दक्खिन अग्गितैं[12], कृत्या दीपित देह ॥ ५७ ॥
ज्वाला करि जारत जगत, अकुलावत अब ओक[13] ॥
द्वारवती उप्पर गई, भीत भये लखि लोक ॥५८॥
तापर पठयो चक्र हरि, कहि यह बिघ्न मिटाय ॥
याहि चलावनहार पुनि, पुर जुत जारहु जाय ॥ ५९ ॥

षट्पदी

जबहि सुदर्सन जाय दये आघात दुरासद[14],
भजि कृत्या तब भीत मुरी निज मग परिहरि[15] मद ॥
पिछि चक्र चलि प्रबल बिघन कासिपपुर बारयो,
तब तस नृपको सैन सहित प्रमथन[16] संहारयो ॥

१ब्रह्मा की सृष्टि २ जम के घर ३ इस कारण से ॥ ५३ ॥ ४ काशी के राजा को ५ कृष्ण ने ॥ ५४ ॥ ६ जल्दी करके ७ काशी क्षेत्र (नहीं छोडा जावे ऐसा क्षेत्र) ८ महादेव को ॥ ५५ ॥ ९ शीघ्र १० यज्ञ देवता विशेष, अथवा अग्नि विशेष जो कृष्ण का काल होवै ॥ ५६ ॥ उस राजा के ११ यज्ञघर से महादेव की आज्ञा लेकर १२ दक्षिणाग्नि से कान्तिमान् शरीर वाली कृत्या उठी ॥ ५७ ॥ १३ घर ॥ ५८ ॥ १४ दुर्दर्प आघात दिया अथवा दुष्टों पर आघात दिया १५ घमण्ड छोडकर १६ महादेव के गणों सहित

चंडी रिझाते मिले बिंद१चोहान२,दंडी मनौं फग्गके चर्च्चरी दान॥
तालीं[3] खुली ईसकी रीसकी रारि,नैबेलगी सेसके सीसकी बारि
खैबेलगी जुग्गिनी टूक के टारि, गैबेलगी डाकिनी प्रेतकौं गारि॥
कट्टैं कलावा खुलैं के करीकंध, तुट्टैं उडैं राति के बीति के बंध१५
भेजाकढैं खुप्परी उच्छटैं भिन्न, खुल्लैं दहीसौं रज्यौं गग्गरी खिन्न
बज्जैं मनौं प्रातकी झल्लरी तेग, गज्जैं घनैं वैरकौं बाहुरैं बेग१६
पीवैं भरैं साकिनी अस्त्रसौं टोप,जी वैं भजैं भीरु के अर्जुनी ओप॥
झूलैं करी अंत्रके हिंडुलैं प्रेत, खिल्लैं भरी हेतसौं खेचरी खेत१७
जैपाल व्हाँ विंदु भूपालको पुत्त, आयो रिसायो महानंदके हुत्त॥
तापैं भयो भूपके हत्थको वार, जैपालको व्है पर्‍यो मत्थ चोफार
चडाँसिको बंस जुज्झे महाकाल,मार्‍यो महानंद यौं बिंदु भूलपा॥
फेरी तहाँ संगही जित्ति चोहान,साकंभरी देसमैं अप्पनी आन१९

(दोहा)

नरबाहन१मार्‍यो नृपति, सुत जयपाल२समेत ॥
साकंभरि जनपद सकल, पायो विजय उपेत ॥ २० ॥

पादाकुलकम्

साकंभरि मंदिर१अति सुंदर, बनवायो नूतन धरनीवर ॥

देवी को १ प्रसन्न करते हुए, फाल्गुन मास में गेहर (पुरुषों का नृत्य विशेष) खेलनेवाले २डांडिये देवें जैसे तरवारों के प्रहार करते हुए विन्दें और चहुवाण मिले जिससे शिव की ३ समाधि खुलगई और शेषनाग के मस्तकों की ५ बाह ४ नमनेलगी ॥ १४ ॥ ६ गानेलगी ७ गाली ८ हाथियों के कन्धे, धंध (तंगआदि) टूटकर रीते होकर कितने ही ९ घोडे उडते हैं ॥ १५ ॥ गागर फूटकर १०मक्खन निकले ऐसे ॥ १६ ॥ टोप में ११ रुधिर भरकर, कितने ही १२ कायर १३ गौवों के समान भागकर जीते हैं १४ हाथियों की आँतों के १५ हिंडोले बनाकर प्रेत झूलते हैं ११ प्रसन्न होती हैं ॥ १७॥१७पुत्र. क्रोध करके महानन्द को१८होम करने आया ॥ १८ ॥ १९ चहुवाण वंशी ॥ १९ ॥ २० .विजय२१साहित पाया ॥ २० ॥२२ साक का २३

भयो नृपति रनधीरकै, तनय सत्रुघन ४३ सूर ॥
करन विदित चंडासिकुल, पन १ बितरन २ रन ३ पूर ।४।

पट्पदी ॥

इत दुरजोधन नृपति सुता[3] हित किन्न स्वयंवर ॥
तहँ सांवहु हरि तनय[4] गयउ दर्पित[5] रनदुर्द्धर[6] ॥
वलकर रथ बैठाय लग्यो कन्या लैजावन ॥
भीष्म १ द्रोन २ कृप ३ कर्ण ४ जुरे सुनतहि रनरावन[7] ॥
पुनि जिति दयो कारा[8] पटकि सु[9] सुनि[10] लगे जदुभट सजन ॥
बल कहिय[11] तत्थ[12] क्यों सब चलहु मैं जावत यह मन्नि मन ।५।

सत्वरगाग्यम् ॥

वलभद्र बंधुनसौं ऐसैं आखि[13] हलहेति[14] हस्त हस्तिनापुर गये ॥
अरु वाहिरके उपवनमैं[15] रहि कौरवनतैं अपनों आगम कहावत भये
सो सुनि सवन सहित सुजोधननैं अर्चनके[16] उपहार[17] आय अनंतकै[18] अर्पन करे ॥
तिनको ग्रहन करि तालांकहू सांव संबंधी उपालंभनतैं[19] सवनके श्रवन भरे ॥ ६ ॥

दोहा

कहिय राम तुम सिर करत, उग्रसेन आदेस[20] ॥
सांव तजहु कन्या सहित, असु[21] चहि मन्नहु एस[22] ॥ ७ ॥
यह सुनि जनु[23] बारूद विच, दिन्नों खदिर[24] दमंग[25] ॥
सह परिकर[26] धृतराष्ट्रसुत, भो जनु कुपित[27] भुजंग[28] ॥ ८ ॥

१चहुवाण कुल को २दान में और युद्ध में पूरे पणवाला ३पुत्री के लिये ४कृष्ण का पुत्र साम्ब ५घमण्ड में भरा हुआ ६ रण में दुस्तर ७ रावण के समान रण में लड़नेवाले ८ कैद में ९ सो, सुनकर १० बलदेव ने कहा ११ तहां १२ कहकर १३ हल शस्त्र को हाथ में लेकर १४ बाग में १५ पूजा की १६ सामग्री १७ शेषावतार (बलदेव) के १८ बलदेव ने भी १९ ओलंभा ॥ ६ ॥ २० आज्ञा २१ प्राणों को २२ इस वार्ता को मानो २३ मानों २४ खैर की लकड़ी का २५ तिणगारा [अग्निकण] २६ परगह २७ क्रोधित २८ सर्प ॥ ८ ॥

षट्पदी ॥

द्रोन१सुजोधन२करन३कृप४रु बाल्हीक ५ महाव्रत ६ ॥
बुल्ले सब सुन विदित बली जद्दव कबतैं बेत ॥
दरितैं बापुरो उग्रसेन यँहँ अरज लिखावत ॥
पुनि जजातिके साप पट्ट नृपता किम पावत ॥
कुरुकुल सदाहि सब सिर तपत सुहि सासन अप्पन सहज॥
तुम गिने असन१ आसन२ उचित ताको यह फल बजँहु ब्रजा९।
कुरु दर्पित इम कहि रु गये निजपुर बढाय बल ॥
नीलांबर इत अनखि हनिय लांगल निज भूतल ॥
फटि दरार मचि नाद करे पूरन दिस अंतर ॥
पुनि चिंतिय बलदेव हनौं कुरुकुल सब संगर ॥
जान्हवी बोरि हत्थीनपुर घन प्रतीपन घायहौं ॥
लछमनाँ सहित सांबहि सजैव बंधुन बिदित दिखायहौं।१०।
यह हठकारि धँकि अनख लंबभुज मुख गहि लांगल ॥
कौरवपुर प्राकार वप्र अग्रक ऐंच्यो बल ॥
ऊरध कुट्टिम अधर पटल नर पात्र अधोमुख ॥
उठ्यो नगर अरराय गिरन गंगा ऐंचन रुख ॥
गांगेय १ द्रोन २ गोतम ३ प्रमुख माफ करायउ नुति महित ॥

१ भीष्म २ बोले ३ यह वार्ता कब से है कि यादव बलवान् हैं ४ डरा हुआ विचारा उग्रसेन ५ यहां सदैव अरजी लिखता है फिर उसको यया ति का श्राप है इसलिये राजापन का पाट किस प्रकार पासक्ता है हे बलदे व तुमको ६ भोजन और आसन के उचित समझे उसका यह फल है सो ७ मार्ग में ८ चलो अर्थात् विदा होओ ९ कौरव घमण्ड में भरेहुए १० बलदेव इधर ११ क्रोध करके १२ अपना हल भूमि में मारा १३ युद्ध में १४ हस्ति नापुर को १५ गंगा में डुबो कर घने १६ शत्रुओं को मारूंगा और १७ दुर्योधन की पुत्री लछमना सहित साम्ब को १८ शीघ्र १९ क्रोध में तप्त होकर २० हाथ के अग्र भाग में लंबे हल को लेकर कौरवों के २१ कोट (शहरपनाह) और २२ धूलकोट के आगे से बलदेव ने खींचा जिससे २३ ऊपर नीचे और नीचे २४ छत और मनुष्य; बरतन सब नीचे मुख होगये २५ भीष्म २६ कृपाचार्य २७ आदि २८ स्तुति के साथ.

शृंगारि सांब पठयो सबन दै दायज दुलहनि सहित ॥ ११ ॥

दोहा

*बलि पूजन बलभद्रको, करि [1]अतिनम्र**असेस ॥
जोरि करन जामातृ[2] जुत, पहुँचाये निज देस ॥ १२ ॥

॥ षट्पदी ॥

नरक असुरको मित्र जरठ[3] इक द्विविद बलीमुख[4] ॥
सखा कन्हहतं[5] सुनत दैन लग्गो देवन दुख ॥
मख बिगारि जन[6] मारि श्रौत[7] बिप्रन सातर्न[8] रत ॥
साधु[9] सरनि[10] सब रुक्कि लयो मनुजन[11] मारन ब्रत[12] ॥
सब जारि दये पुर देस वन गिरिन डारि जग चूर्ण किय ॥
पाथोधि[13] मज्झ रहि मारि पय[14] जल बिथारि सब बोरि दिय॥१३॥

॥ दोहा ॥

कामरूप[15] अति दर्प कपि, अन्नादिक उपहार[16] ॥
भंजि तोरि सब भूमि भव, किन्नैं प्रहत[17] करार ॥ १४॥
वषटकार[18] अरु अध्ययन[19], रोके बानर सर्ब ॥
भुव आयो आयो भयो, खल बल गर्ब अखर्ब ॥ १५ ॥
इक्क समय रेवति[20] प्रमुख[21], लै बनिता[22] बहु ब्रात[23] ॥
रैवत गिरि पर बल[24] सुरा, लग्गे पीवन ख्यात ॥ १६ ॥

॥ षट्पदी ॥

वह बानर तहँ आय चंड[25] बपु करि बिरोध चहि ॥

---

*फिर**सम्पूर्ण १दोनों हाथ जोड़ कर २जमाई के सहित ॥१२॥ ३बूढा ४बन्दर ५अपने सखा को कृष्ण का मारा हुआ सुनकर ६मनुष्यों को ७वेद कर्म करनेवाले ब्राह्मणों को ८ मारने में तत्पर ९ श्रेष्ठ १० मार्ग सब रोक कर ११ मनुष्यों के मारने का १२ नियम १३ समुद्र में १४ पग पीटकर ॥ १३ ॥ १५ इच्छानुसार रूप कर लेनेवाले ने १६ सामग्री १७ नाश ॥ १४ ॥ १८ होम १९ वेदों का पढना, भूमि पर भय के मारे वह आया वह आया, ऐसा होगया॥१५॥ बलदेव की राणी २० रेवती २१ आदि २२ स्त्रियों का बहुत २३ समूह २४ बलदेव प्रसिद्ध मद्य पीने लगे ॥ १६ ॥ २५ भयंकर शरीर

मदिरा भाजन[1] फोरि हस्यो बल ढिग सम्मुह रहि ॥
दारुन दंत दिखाय जदपि तरज्यो[2] हल प्रहरन[3] ॥
बहुन तदपि बिध्वंस[4] करि रु किन्नौं सब कनकन ॥
जब राम मुसल लिन्नौं स्वकर[5] कपि मुक्किय[6] सिल दिग्घ तब ॥
ताकहँ अयोग्र करि चूर्ण करि हुव जद्दव अति उग्र अब ।१७।
बहुरि मुसल अतिबेग छुट्यो बलको बानर पर ॥
लंघि ताहि खल [8]सलपि थाप डारिय हिय हलधर ॥
[9]बलहु कुप्पि तस बेग मुट्ठि मारिय मस्तक पर ॥
बलि[10]मुख लोहित बमतँ[11] धुज्जि बनि कुणप[12] पस्यो धर ॥
जिहिं परत अद्रि चूरन भये बहुरि तास सत१००टूक करि ॥
[13]सुर [14]सुमन बुट्ठि बिलसत सहज हलिय चलिय भुव भार हरि ।१८।

दोहा

इम हरि१बल२लिन्नौं [15]अखिल, [16]अवनी भार उतारि ॥
[17]अच्छोहिनि धृति१८धृति१८[18]अहन, माधव[19] पुनि लिय मारि।१९।
अब आगम अवसान[20]के, देवन पठयो दूत ॥
चउ४भुज निज आलय[21] चलहु, प्रभु जच्चतँ[22] पुरहूत[23] ॥२०॥
जगदीसहु दे सिक्ख जिहिं, आवत इम इम अक्खि ॥
करत भये कुलबध जतन, रंचैक[24] सेसँ[25] न रक्खि ॥२१॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहो

१मद्य के पात्र २हल शस्त्र से ३ डराया तोभी ४ बहुतों को मार कर बिखेर दिया५अपने हाथ में ६ बडी शिला छोडी ७ मूसल से ॥ १७ ॥ ८ कूद कर९ बलदेव ने भी क्रोध करके १० बन्दर ११ लोही उगलता हुआ१२मुरदा होकर१३देवताओं की १४ फूलों की वर्षा को बिलसते हुए बलदेव भूमि के भार को हर कर चले ॥ १८ ॥ १५सम्पूर्ण १६भूमि का१७अक्षोहिणी १८ अठारह दिन में १९ कृष्ण ने ॥ १९ ॥ २० अन्त समय का आगम होने पर २१ हे चार हाथवाले अपने घर (स्वर्ग) चलो आप को २२ इन्द्र २३ मांगता है ॥ २० ॥ २४ कुछ भी २५ बाकी नहीं रख कर ॥ २१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

त्र चाहुवाणधीरजीवितकालसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे मत्स्यकराज्ञीनलिनीसहगमन-रणधीरपितृगद्दिकोपविशन-ग्रामारीसुविन्दो ४२।१द्वहन-तदौरसरणधीरिशत्रुघ्न ४३प्रसवन-कौरवराजसाम्बनिग्रहण-सङ्कर्षणसीरस्तामजपुरसमाकर्षण-सुयोधनसपत्नीकसाम्बसम्प्रेषण-नीलाम्बरद्विविदवानरनिपातन-देवदूतद्वारकाऽऽगमन-प्रेपिततद्वासुदेवस्वकुलोत्सादनयत्नाऽऽरम्भणं चतुर्दशो१४मयूखः ॥१४॥ आदितः षट्पञ्चाशत्तमः ॥ ५६॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पट्पदी

इक्क १ समय द्विज अखिल गये तीरथ पिंडारक ॥
विश्वामित्र १ वसिष्ट २ अत्रि ३ नारद ४ अघहारक ॥
दुर्वासा ५ भृगु ६ कण्व ७ अंगिरा ८ वामदेव ९ पुनि ॥
त्रित १० कश्यप ११ इत्यादि मिले चिद्बोध महामुनि ॥
जादवकुमार तहँ साम्बकोँ गर्भ समेत बनाय तिय ॥
पूछे मुनीस व्हैहैं कहा याके यह सुनि उन कहिय ॥ १ ॥

धीर के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अर्थात् समकालीन श्रीकृष्ण के चरित्र में मच्छक [वासुदेव चहुवान] की राणी नलिनी का सती होना, रणधीर का पिता की गद्दी पर बैठना, ग्रामारी सुविन्दा से विवाह करना, उस सुविन्दा के उर से रणधीर के पुत्र शत्रुघ्न का जन्म होना, कौरवों के राजा दुर्योधन का साम्ब को कैद करना, बलदेव का हल से हस्तिनापुर को खेंचना, सुयोधन का स्त्री सहित साम्ब को भेजना, बलदेव का द्विविद वानर को मारना, देवताओं के दूत का द्वारका में आना, उस दूत को पीछा भेज कर कृष्ण का अपने कुल को नाश करने का उपाय आरम्भ करने का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १४ ॥ और आदि से छप्पन मयूख हुए ॥५६॥

१ सब २ द्वारका में पिण्डारक नामा तीर्थ है यहां पर ३ पाप को मिटानेवाले ४ मुनि विशेष ५ आत्मज्ञानी यादवों के कुमारों ने कृष्ण के पुत्र साम्ब को गर्भवती स्त्री का स्वांग कराकर मुनियों से पूछा कि इसके क्या होवेगा ६ उन मुनियों ने कहा.

दोहा

याकै इक १ व्है हैं मुसल, जासौं जदुकुलनास ॥
इम कहि मुनि कोपित गये, पर्‌यो द्वारका त्रास ॥ २ ॥
सांब उदर[1] सैन हुव मुसल, चूरन तास कराय ॥
उग्रसेन जो कहि अखिल, दयो उदधि[2] पटकाय ॥ ३ ॥
रह्यो खंड कछु[3] भल्ल मित[4], जव चूरन हुव नाँहिं ॥
सोहु गिरायो सिंधु बिच, पर्‌यो सफर[5] मुख माँहिं ॥ ४ ॥
चूरनको एरक[6] भयो, व्याध[7] जरा वह मच्छ ॥
मार्‌यो भल्ल[8] कढ्यो सु निज, बान बनायो अच्छ ॥ ५ ॥
तदनु[9] बनैं उतपात बहु, नगर द्वारका आय ॥
पठयो हरि बदरी बिपिनैं[10], उद्धवकौं समुझाय॥ ६ ॥

षट्पदी

सबन हितुं[11] हरि कहिय होत उतपात महाभय ॥
निह्चै जदुकुल नास रच्यो आगामि[12] काल रय ॥
पहुँचैं सबहि प्रभास[13] करैं दानादि बिहित[14] क्रम ॥
सुनि यह हरि १ बल[15] २ सहित गये तत्थहि[16] जदुउत्तम[17]॥
करि न्हान१दान२ केसव हुकम रचि आपान[18] बिनोदरस ॥
आसव असेस पीवनलगे वंस बिघातक[19] कालबस ॥ ७ ॥

दोहा

---

१ से २ समुद्र में उस मूसल का थोड़ा सा ३ टुकड़ा ४ तीर की भाल के माफिक रहगया ५ वह टुकड़ा मच्छ के मुख में पड़ा ६ लोहे का चूर्ण जो समुद्र में डाला था उसका एरा (बिना गांठ का तृण विशेष) हुआ और जो लोहे का टुकड़ा मच्छ के मुख में पड़ा था उसी मच्छ को जरा नामक ७ व्याध (शिकारी) ने मारा उसके पेट से वह भाल ८ निकला सो अपने बाण के लगाया ९ जिस पीछे१० बद्रिकाश्रम नामक वन में११सब से१२आनेवाले समय ने वेग से१३द्वारका के समीप ही प्रभास क्षेत्र है वहां पर१४उचित१५बलदेव१६वहीं (प्रभास क्षेत्र में) १७ यादवों में श्रेष्ठ पुरुष थे सो१८मद्य पीने की सभा (मतवाले) १९वंश का नाश करनेवाला.

पीवत पीवत परसपर, बढ्यो सबन अति बाद ॥
लगे उट्ठि सब्बन लरन, मच्च्यो कलह प्रमाद ॥ ८ ॥
तुट्टे प्रहरन सकल तब, एरक वेहि उपारि ॥
कुलतैं कुल लग्गे कटन, तेहु भये तरवारि ॥ ९ ॥

षट्पदी

कृतबर्मा १ सैनेय २ सांब ३ प्रद्युम्न ४ दानिसुत ५ ॥
अनिरुद्ध ६ रु पृथु ७ विपृथु ८ चारुधर्मा ९ चारुक १० जुत ॥
चारुदेष्ण ११ वृक १२ भानु १३ अनिसठ १४ उल्मुक १५ इत्यादिक ॥
एरक असनि चलाय कटे सब प्रचुर प्रमादिक ॥
गोबिंद बहुत बरजे तदपि करत पच्छ यह बुद्धि करि ॥
संख्या अतीत जद्दव सकल मदवस गये प्रभास मरि ॥ १० ॥

दोहा

नहि मानत कन्हहु कुपित, तोरी एरक मुट्ठि ॥
मुसल सोहु हुव लोहमय इम मारे वहु उट्ठि ॥ ११ ॥
तरु इक तर तालांक तब, करि उज्झित नरकाय ॥
सेसरूप निकसे सितगु, जलनिधि प्रविसे जाय ॥ १२ ॥
अंबुधि आयो लै अरघ, संमुह बंदन सत्थ ॥
याके जलमग सेस इम, स्वनिलय पत्त समत्थ ॥ १३ ॥

षट्पदी

---

१ युद्ध २ उन्मत्तपन से ३ शस्त्र ५ वेही ४ एरे जो लोह के चूर्ण से ऊगे थे ६ वे ही एरे तरवार रूप होगये ७ एरा रूपी वज्र को चलाकर ८ बहुत ९ मदिरा के मद से उन्मत्त १० कृष्ण ने ११ तोभी यह जाना कि ये १२ पक्षपात करते हैं १३ संख्या से बाहर (गिनती में नहीं आवैं जितने) सब यादव नशा के वश होकर १४ प्रभास क्षेत्र में मर गये कृष्ण का कहना नहीं माना तब कृष्ण ने भी क्रोध करके एरा की मुट्ठी तोड़ी वह लोहे का मूसल होगया जिससे उठ कर बहुतों को मारा १५ एक वृक्ष के नीचे १६ बलदेव ने मनुष्य के १७ शरीर को १८ छोड़ कर १९ स्वेत किरणोंवाले २० समुद्र में जाकर २१ प्रवेश करगये २२ समुद्र २३ नमस्कार के साथ २४ इस समुद्र के मार्ग से वह समर्थ २५ अपने घर को २६ पहुंचे

हलधर गमन निहारि कन्ह अक्खियं[2] दारुक[3] कँहँ ॥
कुल १ बल २ निपतन कहहु पुरी जावहु पितरन[6] पहँ ॥
काय मैंहु जोग करि अबहि तजिहौं अरु अज्जुन ॥
अहँ यहँ तस संग सबहि निकसहु खिल रहहु न ॥
द्वारकापुरहिं बिनु मम निलय[9] अंबुधि[10] बोरहिं फैलि इम ॥
जयसौंहु[11] कहहु खिल[12] मम जनन[13] पालहु कौरव जनक[14] जिम ॥१४॥

॥ दोहा ॥

दारुक पठयो द्वारका, श्रीहरि इम समुझाय ॥
अच्युत[15] किन्न बिचार अब, करन त्याग नर काय[16] ॥ १५ ॥
माधवको जैत्राम[17] रथ, हय सैंब्यादि[18]४समेत ॥
पाथोनिधि[19] बिच गो प्रबिसि, पहुँच्यो निजहि निकेत[20] ॥ १६ ॥
गदा१चक्र२सारंग[21]३पुनि, नंदक[22]४संख५निखंग[23]६ ॥
हरिहिं प्रदक्खिन करि गये, व्हैं रवि[24] मग सब संग ॥ १७ ॥
रनतैं[25] इक१दारुक बच्यो, पुर गो छोरि प्रभास[26]॥
उग्रसेन बसुदेवसौं, सब अक्ख्यो[27] कुलनास ॥ १८ ॥
करि पय[28] पर पय कन्हहू, बैठे ब्रह्म[29] विलीन ॥
जहँ लुब्धक[30] आयो जरा[31], मृगमुख गिनि पय[32] पीन ॥ १९ ॥

१बलदेव का जाना देख कर कृष्ण ने अपने सारथी ३दारुक से २कहा कि द्वारका पुरी में जाकर ६माता पिता से ४ बलदेव और सब कुल का ५नाश कहो मैं भी योगविद्या से शरीर को ७ उस अर्जुन के साथ ८ बाकी मत रहना ९ मेरे मकान के बिना १०समुद्र डुबो देगा ११अर्जुन से कहना कि १२बाकी के मेरे १३लोगों को १४ कौरवों के पिता (धृतराष्ट्र) का पालन किया इसप्रकार पालना १५ कृष्ण ने १६ नरदेह का त्याग करने का कृष्ण का १७ जैत्राम नामक रथ १८ सैब्य आदि चारों घोड़ों सहित १९ समुद्र में प्रवेश कर गया २० अपने घर (स्वर्ग) में पहुंचा २१ शार्ङ्ग धनुष २२ नन्दक नाम खड्ग २३ भाथा २४ आकाश मार्ग से २५ उस युद्ध से २६ प्रभास क्षेत्र को छोड कर पुर में गया २७ कहा २८कृष्ण भी पग पर पग रख कर २९ ब्रह्म में लीन होकर बैठे जहां पर ३१ जरा नामी ३० शिकारी आया जिसने कृष्ण के पुष्ट ३२ पग को मृग का मुख जाना.

कढ्यो सफर[1] सन भल्ल जो, सोहि चलायो व्याध ॥
पंयतल बिच प्रभुकैं[2] लग्यो, इहिँ[3] मन्न्योँ अपराध ॥ २० ॥
जँरा[4] न सोचहु हरि कह्यो, हुव जानैं विनु एह ॥
जावहु चारु[5] बिमान चढि, भुग्गहु स्वर्ग सनेह ॥ २१ ॥
आयो तबहि विमान तहँ, लिन्नों व्याध चढाय ॥
बुठ्ठत सुम[6] दुंदुभि बजत, पहुँच्यो दिवँ[7] मुद पाय ॥२२॥
हरिहु होय निज रूप मय, छोर्‌यो मानव देह ॥
द्वारवती[8] इत अर्जुनहु, आय सुन्योँ सब एह ॥ २३ ॥

॥ षट्पदी ॥

सबनकोहि सिर बज्र आय दारुक पटाकिय जब ॥
उग्रसेन१बसुदेव२ आदि जदुवृद्ध जरे तब ॥
रोहिनी[9]१रु देवकसुता[10] २हु हुव भस्म हुतासन[11] ॥
पारथ सहित प्रभास[12] गये जदुवंस जुवंति[13] जन ॥
रुकमिनी प्रमुख[14] पटरागिनी[15] जरी आठ८हरिदेहँ[16] जुत ॥
रेवती[17] राम बिग्रह[18] सहित अनलँ[19] प्रवेसिय निखिलँ[20] नुंत[21] ॥२४॥

॥ दोहा ॥

सोचि विजय दाहे सकल, प्रेत करम विधि ठानि ॥
जान्योँ अब सूनों जगत, अति बिराग मन आनि ॥ २५ ॥
पारिजात[22]१पहुँच्यो त्रिदिवँ[23], सभा सुधर्मा२जुष्ट[24] ॥

---

१ मच्छ के पेट में से भाल (तीर का फल) निकला था २ कृष्ण की पगतली में लगा इसको ३ उस जरा नामक व्याध ने अपना अपराध माना ४ हे जरा ५ सुन्दर ६ पुष्प वर्षते हुए नगारे बजते हुए आनन्द पाकर ७ स्वर्ग में पहुंचा ८ द्वारका में ९ बलदेव की माता १० देवकी (कृष्ण की माता)११अग्नि में१२अर्जुन के साथ प्रभास क्षेत्र में यादवों की१३स्त्रियें१४आदि१५पटराणियें१६कृष्ण के देह के साथ आठों जल गईं१७बलदेव की राणी रेवती बलदेव के १८ शरीर के साथ१९ अग्नि में प्रवेश कर गई २० सब से २१ स्तुतियोग्य २२ कल्पवृक्ष २३ स्वर्ग में२४ प्रीति के साथ सुधर्मा नामक देवसभा भी गई

तक्कत[1] भुव केसव तजत, दब्बी कलिजुग दुष्ट ॥ २६ ॥
एक१तनय अनिरुद्धको, बच्यो[2] बज्र अभिधान ॥
ताजुत[3] सब सुद्धांत[4] लै, पत्थ[5] कियउ प्रस्थान[6] ॥ २७ ॥
सत उत्तर सोलह सहँस१६१००, हरि ललना[7] लहि[8] संग ॥
निकस्यो अर्जुन बज्र जुत, कसि असि१चाप२निखंग३ ॥ २८ ॥
इतरहु[9] पुरजन कड्ढि[10] सब, रह्यो[11] पंचनद आय ॥
प्रभु गृह बिनु सागर पुरी, दिन्नी अखिल[12] डुबाय ॥ २९॥
तसकर[13] तहँ सुंदर तियन, जयँ[14] लैजावत जानि ॥
नारिन१बसनन[15]२भूखनन३, लग्गे लुट्टन आनि ॥३०॥
जीव लहहु बुल्ल्यो बिजय[16], मरहु न जावहु मूढ ॥
सु[17] सुनि तरजि[18] बुल्ले हसित[19], अतुल[20] दर्प[21] आरूढ[22] ॥ ३१॥

॥ षट्पदी ॥

कलह जयद्रथ१करन२बिंद३भगदत्त४महाव्रत५ ॥
मारि बढ्यो अभिमान मुधा[23] अर्जुन तावक[24] मत ॥
ग्राम्य जननको ओर कबहु न लख्यो कुंतीसुत ॥
टरि जावहु[25] नहि[26] टारि अर्धचंद्रक[27] देहैं[28] हुंत ॥
कियसज्ज्य[29] पत्थ गांडिव धनुख निट्ठि निट्ठि सो पै[30] चढ्यो॥
पुनि सिथिल भयो अरु अस्त्रहू[31] न कछु फुर्यो बिस्मय बढ्यो ॥३२॥

१कृष्ण के इस भूमि को छोड़ते ही दुष्ट कलियुग, ताक रहा था जिसने दबा ली२ वज्र नामवाला अनिरुद्ध का एक पुत्र बचा३उस वज्र सहित४जनाने को लेकर५ अर्जुन ने६ गमन किया ७ कृष्ण की स्त्रियों को ८ भाथा ९ और भी१०निकाल कर११अर्जुन पंचनद में आकर रहा१२सब १३ चोरों ने १४अर्जुन को ले जाता हुआ जानकर १५ वस्त्रों को १६ अर्जुन ने कहा कि १७ सो सुनकर १८धमका कर १९ हसते हुए बोले २० बहु २१ घमंड पर२२चढे हुए॥ हे अर्जुन२४तेरे विचार में यह२३वृथा (झूठ) अभिमान बढगया है, हे कुन्तीपुत्र ग्रामीणलोगों का बल तुमने कभी नहीं देखा है इस कारण से टलजाओ२५ नहीं तो२७गलहूंपा (अंगुष्ठ और तर्जनी अंगुली को फैलाने से अर्धचन्द्राकार होजाता है वह गले में देकर२८शीघ्र२६टाल देवेंगे२९ अर्जुन ने गांडीव धनुष को ज्या (प्रत्यंचा) सहित किया३०परन्तु वह धनुष३१अस्त्र स्मरण नहीं

दोहा

नैंकहु*जयके सरनतैं, भिदे न [1]उनके अंग ॥
गोपिन तिय [2]गोबिंदकी, [3]भुग्गी करि [4]व्रतभंग ॥ ३३ ॥
बज्रहिं [5]लै रु बिगारि मुख, अर्जुन मथुरा आय ॥
[6]ताँकी गद्दिय ताँहिं धरि, गो [7]गजदंग सिटाय ॥ ३४ ॥
व्यास मिले मग [8]बिजयकौं, बुल्ले क्यौं [9]गत रोचिं ॥
[10]पत्थ कह्यौ [11]जदुनास पुनि, स्त्रीजन लुट्टन सोचि ॥ ३५ ॥
कालपुरुखको यहहि क्रम, बिजयहिं [12]आक्खिय व्यास ॥
लुट्टे [13]मिच्छन जुवतिजन, इक तहँ कारन [14]आँस ॥ ३६ ॥
[15]सुबरनगिरि पर इक समय, करि असुरन बधकाज ॥
[16]सुरन महा उच्छव सज्यो, [17]संजुरि बिबिध समाज ॥ ३७ ॥
मग बिच अष्टावक्र मुनि, जहँ अच्छरिगन जात ॥
लखे [18]सलिल थित कंठ लग, ब्रह्मसमाधि बनात ॥ ३८ ॥
अतिआदर मुनिकी [19]प्रनति, करी सबन कर जोरि ॥
व्है प्रसन्न मंगहु कह्यो, बर कछु विप्र [20]बंहोरि ॥ ३९ ॥
तिलोत्तमा १ रंभा २ [21]प्रमुख, कह्यो भयो जु [22]प्रसाद ॥
सब बर लैबो सोहि है, लैबो [23]इतर [24]प्रमाद ॥ ४० ॥
अपर किते अच्छरिगनन, मंगे हरि [25]भत्तार॥

---

*अर्जुन के १ चोरों के २ कृष्ण की स्त्रियों को ३ भोगी ४ पातिव्रत्य व्रत भंग करे ५ वज्र की गद्दी पर ६ वज्र को ७ हस्तिनापुर गया ८ अर्जुन को मार्ग में वेदव्यास मिले ९ गई हुई कान्ति से १० अर्जुन ने ११ यादवों का नाश अर्जुन को व्यास ने १२ कहा कि कालपुरुष (यमसहाई)का यही क्रम है कि जो जन्म लेता है वह मरता है और जो १३ म्लेच्छों (नीच लोगों) ने स्त्रीजनों को लूटा इसमें एक कारण १४ है १५ सुमेरु पर्वत पर १६ देवताओं ने १७ एकत्रित होकर मार्ग में अष्टावक्र मुनि १८ जल में ब्रह्मसमाधि बनारहे थे वहां अप्सराओं का गण गया जिन्हों ने बड़े आदर से मुनि से विशेष १९ नम्रता करी २० फिर ब्राह्मण ने कहा कि कोई वर मांगो २१ आदि ने कहा कि आप की २२ प्रसन्नता हुई सो ही सब वर लेना है इस प्रसन्नता को छोडकर २३ और ले १ है सो २४ भूल है २५ भर्तार

सो दै निकसे नीरसौं, अष्टावक्र उदार ॥ ४१ ॥
तबहिं अष्टधा[1] बंक[2] तनु[3], निरखि हसी दिवनारि[4] ॥
दयो साप मुनि कुप्पि[5] द्विज, निज अपमान निहारि ॥ ४२ ॥
पाय तुमहु गोविंद[6] पति, भोग भुग्गि हरि सत्थ ॥
[7]ह्वैहो मिंच्छन भोग्य पुनि, परि चोरनके हत्थ ॥ ४३ ॥
बज्र परत यह नम्र बनि, परी सकल मुनि पाय ॥
अक्खिय तब नवनीत[8] हिय, बलि[9] बसिहो दिवं[10] आय ॥४४॥
इम द्विजबरके[11] सापतैं, जित्ति तोहि आभीर[12] ॥
लै हरि नारिन लूट करि, गये बिचारहु बीर ॥ ४५ ॥
अर्जुन यह सुनि इम नगर, जवी[13] बिकलमन जाय ॥
रोवत जदुकुल नास मुखं[14], दिन्नी सकल सुनाय ॥ ४६ ॥
अप्पि[15] परिच्छितकौं अखिल[16], पांडव राज्य प्रबीन ॥
गये बिपिन[17] हरिभक्ति गहि, भये छोरि भव[18] लीन ॥ ४७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणरणधीरजीवितसमयसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे यदुकुमारदुर्वासःप्रमुखमुनिवञ्चनतद्यदुकुलोत्सादशापक्षेपणसाम्बोदरमुसलपतनासिन्धुक्षिप्ततच्चूर्णैरकोद्भवनशल्यजराविशिखन्यसनप्रभासाऽऽपानस्थितयदुकुलक्षयनशेषरूपबलभद्रस्वलोक

१आठ जगह से २बांका ३शरीर ४स्वर्ग की स्त्रियां ५क्रोध करके अष्टावक्र ने कहा कि तुम ६विष्णु को पति पाकर ७फिर भील आदि नीच लोगों के भोग्य होओगी वचन रूपी यह वज्र पड़ते ही ८मक्खन के समान कोमल हृदयवाले मुनि ने कहा कि ९फिर १०स्वर्ग में इस कारण से ११ब्राह्मण के १२भील लोग १३वेग सहित १४ यादवों के कुल के नाश आदि (आदि पद से स्त्रियों का लूटना जानो) परीक्षित को १६ सम्पूर्ण १५ देकर १७ वन में १८ संसार को छोडकर विष्णु में लीन होगये ॥ ४७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण रणधीर के जीवित समय के समान समय वाले श्रीकृष्ण के चरित्र में यादवों के कुमारों का दुर्वासा आदि मुनियों को ठगना, उन मुनियों का यदुकुल के नाश का शाप देना, साम्ब के उर से मूसल का पड़ना, समुद्र में डाले

गमन-दारुकद्वारकाप्रविशनजराबाणाबिद्धचरणातत्प्रेषितशस्त्रादिश्री-कृष्णास्वपस्त्यप्रस्थानकलियुगभूतलस्पर्शनश्रुतकुलनाशोग्रसेन१व सुदेव२देवकी१रोहिणी२प्रमुखयदुवृद्धपावकप्रविशनरुक्मिणी१रेवती२प्रमुखस्त्रीजनसहगमनकृतसर्वसंस्कारधनञ्जयसवज्र१शुद्धांत२ पौरजननिष्कासनसिन्धुद्वारकाप्लावनचौराभीरप्रभुपरिग्रहलुण्टन-मथुराराज्यसमभिषिक्तवज्रव्यासबोधितवृत्तान्तबीभत्सुगजसाव्हयनगरगमन-परीक्षिताऽर्पितराज्यपाण्डवपरिव्रजनं पञ्चदशो१५मयूखः॥ ॥१५॥ आदितः सप्तपञ्चाशत्तमः ॥ ५७ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भार हरयो सब भुम्मिको, इम हरि लै अवतार ॥
वासुदेव४१ मारयो बिदित, कलह कन्है२ जयकार ॥ १ ॥
वासुदेव नलिनी३ ४१।१ तनय, भयो नृपति रनधीर ॥
बज्र भयो अनिरुद्ध सुत, मथुरा पालक वीर ॥ २ ॥
भूप परिच्छित राज्य इत, करत हस्तिपुर४ धाम ॥

हुए उनके चूर्ण से एरा का होना, बाकी रहे हुए शल्य का जरा नामी व्याध के बाण में ठहरना (लगना) प्रभास तीर्थ में मद्य पीने की गोष्ठी में बैठे हुए यादवों के कुल का नाश होना, शेष नाग के रूप से बलदेव का अपने लोक में जाना, दारुक सारथी का द्वारका में जाना, जरा नामक व्याध के बाण से चरण का बिंधना, कृष्ण के भेजे हुए शस्त्र आदि और श्रीकृष्ण का अपने घर (गोलोक) जाना, कलियुग का भूमि को स्पर्श करना, कुल के नाश को सुनकर उग्रसेन वसुदेव देवकी रोहिणी आदि यदुवृद्धों का अग्नि में प्रवेश करना, रुक्मिणी रेवती आदि स्त्रियों का सती होना, सब का अग्नि संस्कार करके अर्जुन का वज्र सहित जनाना और पुर के लोगों को निकालना, समुद्र का द्वारका को डुबोना, चौर भीलों का कृष्ण के निज के लोगों को लूटना, मथुरा के राज्य पर वज्र का अभिषेक होना, व्यास के समझाये हुए वृत्तान्त से अर्जुन का हस्तिनापुर जाना, परीक्षित को राज्य देकर पाण्डवों के जाने का पन्द्रहवां मयूख समाप्त हुआ १५ और आदि से सत्तावन मयूख हुए ।५७।

१-वासुदेव चहुवाण को २ युद्ध में जय करने वाले कृष्ण ने ३ नलिनी नामक स्त्री में वासुदेव चहुवाण से ४ हस्तिनापुर में

नगर अयोध्या इत नृपति, वृहतखत्र* ३ जिहिं नाम ॥३॥
मगधराज सोमावि ४ इत, देवगिरीस अभंग ॥
इंद्रकेतु ५ प्रामार इत, तपत अवंतिय द्रंग ॥ ४ ॥
धृष्टकेतु ६ सोमक नृपत्ति, इत पंचाल अधीस ॥
एक काल इत्यादि छतें[2], हुव रनधीर[3] महीप ॥ ५ ॥
इक्क समय अभिमन्यु सुत, गो अभिमत[4] आखेट[5] ॥
ताडत[7] गौ[6] जुग २ उग्र तहँ, भयो सूद्र इक भेट ॥ ६ ॥
बरज्यो नृप तब तिहिं बंद्यो, आयो मैं कलि अत्थ[10] ॥
कट्टि धर्मपय[11] करत हूँ, सतत अधर्म समत्थ[12] ॥ ७ ॥
हैं हम जोलग नृप कह्यो, तोलग आवहु नाँहिं ॥
कछुतो मोहिहु कलि कह्यो, वखसहु पकरहु बाँहिं ॥ ८ ॥
तबहि द्यूत[13] १ सूना[14] २ सुरा[15] ३, स्त्री[16] ४ कनक[17] ५ ए पंच ५ ॥
कलिकौं दिन्नैं रहनकौं, रीति काल गिन रंच ॥ ९ ॥

षट्पदी

यह सुनि नृपकै छत्र कनकमय[18] तहँ कलिजुग रहि,
करतभयो निज अमल सदा नृप संग रहन चहि ॥
इक १ दिन नृप जलकाम[19] फिरत बन लहि मुनि आश्रम ॥
मंग्यो जल तब द्विज समाधिथित कछु न कह्यो क्रम[20] ॥
मृत इक १ भुजंग नृप कुप्पि[21] तब मुनि गल डारि पयान किय ॥
तस[22] बालै[23] नृपहिं सत्तम७दिवस तच्छक[24] दंसन[25] साप दिय ॥१०॥

---

*वृहत्क्षत्र १ अवंतीपुर में २ एक समय में इतनों के होते हुए ३ रणधीर चहुवाण राजा हुआ ४ अपनी ही सम्मति से अथवा इच्छा से ५ शिकार ६ दो गौवों को ७ पीटता हुआ क्रूर कर्म करनेवाला ८ उसने कहा ९ कलियुग १० यहां पर धर्म के पगों को काटकर अधर्म को ११ निरन्तर १२ समर्थ करताहूं १३ जूआ १४ हिंसा १५ मद्य १६ और १७ सोना (स्वर्ण) १८ राजा के सोने का छत्र था जिस में १९ जल की कामना से २० उत्तर देने का जो क्रम था वह कुछ नहीं कहा २१ राजा ने क्रोध करके एक मरा हुआ सर्प २२ उस २३ उस मुनि के बालक ने राजा को सातवें दिन २४ तक्षक नामी सर्प २५ डसेगा

दोहा

नृप यह सुनि सोच्यो ×निपट, +पै सु अवधि दिन पाय ॥
तच्छक दैव ÷निदेस डसि, कियउ भस्म *तस काय ॥११॥
भये परिच्छितके **तनय, जनमेजय १ श्रुतसेन २ ॥
उग्रसेन३अभिधान पुनि, भीमसेन४चउ४मेन ॥ १२ ॥
भयो तनय रनधीरकै, सो सत्रुघ्न४३सनाम ॥
इंद्रकेतु भानेज यह, अतिबल रन उद्दाम ॥ १३ ॥
सुता मगध सोमाविकी, कलना४३।१नाम अनूप ॥
जित्ति स्वयंबर जो लई, परनि सत्रुघन४३ भूप ॥ १४ ॥
जनमेजय इत जनकको,सुनि तच्छकसौं नास ॥
रच्यो कुपित अहिसत्र तँहँ, बरन्यौं भारत व्यास ॥ १५ ॥
सु सुनि सूत नैमिष गयो, जानत भारत जानि ॥
पूछ्यो मुनि सौनक प्रमुख, लग्गो कहन प्रतानि ॥ १६ ॥

॥ षट्पदी ॥

छेत नैमिसारराय बिप्र सौनक कुलपति तँहँ ॥
भृगुकुलभव मख रचत समा द्वादस १२ व्रत लै तँहँ ॥
बडे ब्रह्मऋषि वृंद सकल राजत जिहिं अवसर ॥
उग्रश्रवा अभिधान सूत उन ढिग आयो बर ॥
सब मुनिन तास आदर रचिय दिय आसन सनमान जुत ॥
कल्ल्यान पुच्छि पुच्छिय बहुरि कितत्तैं आयउ सूतसुत ॥१७॥
सुनत सूत उच्चारिय नाग होमिय जनमेजय ॥
व्यास रचित सुनि तत्थ पुरय भारत कथान चैय ॥

यह श्राप दिया × बहुत + परन्तु ÷ दैव की आज्ञा से * उस राजा परीक्षित के शरीर को ** पुत्र १ चारों मदन अर्थात् कामदेव रूप २ पुत्र ३ युद्ध में निरंकुश ४ अपने पिता परीक्षित का ५ तक्षक सर्प से ६ सर्पयज्ञ ७ उस महाभारत को सुनकर सूत पौराणिक नैमिषारण्य क्षेत्र में गया ८ शौनक आदि ९ विस्तार करके १० भृगुकुल में जन्म लेकर ११ बारह वर्ष का १२ शोभायमान १३ उग्रश्रवा नामक श्रेष्ठ सूत १४ कथाओं का १५ समूह.

अरु तीरथ[1]आयतन[2]बहुत परसत न्हावत इत ॥
लखि समंत[2]पंचक[4]सनाम छेत्रहु सुरसेवित[3] ॥
जिहिँ ठाम घोर अग्गैँ भयउ कौरव पांडव रन अँमित ॥
तिहिँ तीर्थ होय आयो इहाँ ब्रह्मऋषिनके दरस हित ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्थ होहु सब आसनन, सावधान द्विजराज ॥
अब तुम पुच्छहु सो कहौं, सुंदर कथन[5] समाज ॥ १९ ॥
तब मुनि बोले सूत[6] जो, भाख्यो व्यास पुरान ॥
सुरन मुनिन पूज्यो सु सुनि, कहि विचित्र आख्याँन ॥ २० ॥
जाके सुंदर पर्व[1]पद[2], अर्थ[1]न्याय[2]उद्दार्म ॥
वेदतत्त्व भूखन रुचिर, अघहर भारत नाम ॥ २१ ॥
जनमेजय नृपसौं कही, बैसंपायन विप्र ॥
सोहि व्यासकी संहिता, सुनी चहत हम छिप्र[9] ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ बीतिहोत्रचहुवाणरणधीरजीवितसमयसमानाऽधिकरणकवज्र१परीक्षिता२ऽऽदिनृपोद्देशनकलिकुमतिपरीक्षिदनुचितकरणबालद्विजशापतक्षकतद्दशनजनमेजयकौरवप्रभूभवनरणधीराऽनन्तरशत्रुघ्नपौण्ड्रादिराज्यसमासादनमगधेशसुताकलनोद्वहनसमारब्धसर्पसत्रमहाभा

१ तीर्थों का घर २ समन्तपञ्चक नाम क्षेत्र ३ देवताओं से सेवन किया हुआ ४ अत्यन्त ५ कथाओं का समूह ६ सूत पौराणिक से ७ कथा जिस भारत के अठारह पर्व और पद तो सुन्दर और अर्थ का रचना ८ गंभीर है, वेद का सार है सो ही उसका सुन्दर भूषण है और पाप को हरनेवाला भारत नाम है ९ शीघ्र

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण रणधीर के जीवित समय के बराबर है समय जिनका ऐसे वज्र और परीक्षित आदि राजाओं का कथन, कलियुग की खोटी बुद्धि से परीक्षित का अनुचित करना, बाल ब्राह्मण का शाप देना, तक्षक नाग का परीक्षित को डसना, जनमेजय का कौरवों का पति होना, रणधीर के पीछे शत्रुघ्न को पौण्ड्र आदि देशों का प्राप्त होना, मगध के राजा की पुत्री कलना

रतश्रवणश्रुततल्लोमहर्षणिनैमिषाऽरण्यदीक्षितशौनकादिभारतशुश्रूषणं षोडशो१६मयूखः ॥ १६ ॥ आदितोऽष्टपञ्चाशत्तमः ॥ ५८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

हरिगीतम्

तब सूत आचरि मंगलादि कहंत भारतकी कथा,
जब लोक अप्रभ तामसाऽऽवृत हो तहाँ सुनिये जथा ॥
गुरु अंड हुव ब्रह्मंड नामक बीज अव्यय सर्गको,
जुग आदि दिव्य निमित्त जानहु मूल प्राकृत वर्गको ॥ १ ॥
ता माँहिं सुनियत ब्रह्म१ सत्य सनातनाऽभिध ज्योति जो,
अव्यक्त अद्भुत ओ अचिंत्य समाख्य सुच्छम हेतु सो ॥
तसमांत जो प्रकट्यो प्रजेस हिरण्यगर्भ२ सु जानिये,
ब्रह्मा१ रु सुरगुरु२ रुद्र३ ए तसमांत उद्गत मानिये ॥ २ ॥
परमेष्टि१ मनु२ तिमही प्रचेतस३ दच्छ४ ए प्रकटी भये,
हुव सत्त७ दच्छ तनूज नाम तदीय हे नृप ए ठये ॥
तम१ अंगिरा२ विक्रीत३ कर्दम४ अश्व५ दम६ अरु क्रोध७ये,

से विवाह करना, सर्पयज्ञ का आरंभ होना, महाभारत का सुनना, उस महाभारत को सुनकर लोमहर्षण नामक सूत के पुत्र उग्रश्रवा का नैमिषारण्य में यज्ञ की दीक्षा लिये हुए शौनक आदि से भारत की प्रशंसा करने का सोलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१६॥ और आदि से अठावन मयूख हुए ॥ ५८॥

तब सूत पौराणिक १मंगलाचरण आदि करके भारत की कथा कहने लगा कि जिस समय लोक २ विना कान्ति ३ तमो गुण से घिरा हुआ था सो सुनो। ब्रह्माण्ड नामक एक४बडा अंडा पैदा हुआ जो ५ परमेश्वर की ६ सृष्टि का ७ कारण और दिव्य युग आदि का भी कारण और ८ प्रकृति (जगत् का कारण) का मूल है उसी ब्रह्मांड में सत्य, सनातन ९नामवाले ब्रह्म को ज्योति स्वरूप सुनते हैं, वह ब्रह्म१० दीखने में नहीं आवे ऐसा अद्भुत ११ विचार में नहीं आवे ऐसा१२इन नामोंवाला सब का सूक्ष्म कारण है१३ उस ब्रह्म से जो१४प्रजा का पति प्रकट हुआ उसका नाम हिरण्यगर्भ जानो उसीसे ब्रह्मा, बृहस्पति और इन्द्र १५ पैदा हुए जानो. फिर कमल से पैदा होनेवाला १६ ब्रह्मा१७ दक्ष १८ दक्ष के सात पुत्र हुए १९उनके नाम ये हुए

पुनि मनु१ मरीचक२ आदि१४।७ सृष्टिप एकवीस२१ सुबोध ये ।३।
परमाख्य पुरुख जु अप्रमेय अनादि आत्मक सोधिये,
आदित्य१२ बिश्वेदेव१३ पुनि वसु८ दस्त्र२ जन्म प्रबोधिये ॥
बलि साध्य१२ पितर१ पिशाच२ गुह्यक३ जच्छ४ त्यौंहु वशिष्ट जे,
बुध ब्रह्मऋषि१ अरु राजऋषि२ गुनगंज पूर्ण प्रविष्ट जे ॥४॥
नभ१ वात२ तेज३ रु नीर४ भू५ हुव अंतरिच्छ१ दिसा२ जथा,
हायन१ अयन२ ऋतु३ मास४ पच्छ५ रु द्यौंस६ रत्ति७ भये तथा ॥
इम औरहू खिल सर्व सम्यक लोकसाक्षिकँ होत भो,
दीसैं जु थावर१ जंगमा२ऽऽदिक सो असेस उदोत भो ॥ ५ ॥
बहुरचौं जुगच्छयमैं यहै जग पक्कि पावत नासकौं,
मधु अंत ज्यौं जव ऊर्जमैं पुनि तेहि लेत प्रकासकौं ॥
निजकालमैं ऋतुचिन्ह ज्यौं पुनि होत जग यह जानिये,
अरघट्ट घट जिम सर्वभाव१ अभाव२ संतत मानिये ॥ ६ ॥
यह यौं अनादि अनंतभूत विनासचक्र१ भ्रम्यौ रहै,
यापैं चढे सब जौनि जे चउरासि लक्ख८४०००००तिन्हैं गहैं ॥

---

१ प्रजापति २ श्रेष्ठ ज्ञानवाले ३ परम पुरुष नामवाला ४ जिसका प्रभाव जानने में नहीं आता ऐसे अनादि (परमेश्वर) के ५ आत्मा से बारह आदित्य, तेरह विश्वेदेव, आठ वसु, दो ६ अश्विनीकुमारों का जन्म जानो. फिर बारह साध्यदेव ७ आत्मज्ञानी ८ गुणों के समूह में ९ प्रवेश करनेवाले इसीप्रकार १० आकाश ११ पवन १२ अग्नि, जल और भूमि हुए १३ नक्षत्र मंडल स्थल १४ वर्ष १५ पक्ष १६ बाकी के १७ श्रेष्ठ प्रकार से १८ सूर्य से अथवा लोक ही है साक्षी जिसका ऐसे परमेश्वर से १९ स्थावर और जङ्गम आदि सम्पूर्ण प्रकाशित हुए फिर २० प्रलय में २१ चैत्र मास में जव (धान्यविशेष) का अन्त होकर २२ कार्तिक में फिर प्रकाश होना है और अपने अपने २३ समय में ऋतुओं के २४ चिन्ह फिर पीछे होजाते हैं इसीप्रकार प्रलय हुए पीछे यह संसार पीछा उत्पन्न होता है जिसप्रकार २५ रहँट (कूप से पानी निकालने का यंत्र) का २६ घट (पात्रविशेष) वारंवार बाहर आकर भीतर जाता है ऐसे ही इस संसार का २७ निरन्तर होना और मिटना मानो २८ संसार के प्राणियों का विनाश करने का चक्र फिरता रहता है इस चक्र पर जो चढ़जाता है वह चौरासी लाख २९ योनियों को पाता है ये नरलोक की योनियां कहीं. अब इकीस हजार तीनसौ तेतीस प्रकार की

तेंतीस संख्यसहस्र३३०००सततेतीस३३००अरुतैतीस३३ए ३६३३३

संछेप[1] लच्छन सुरन[2]की इम सर्ग[3] सम्मिति[4] दीसये ॥ ७ ॥

दिव[5]पुत्र जानहु वृहदभानु१ रु चच्छु[6]२ आत्मा३ नामतैं,

बलि[7] विश्वावसु४ सविता५ ऋचीक६रु अर्क७पूरनधाम[8]तैं ॥

रवि८ भानु९ आसावह१० इतेक विवस्वदात्मज[9] धारिये,

इनमाँहिं वरं[10] मनु१ तास आत्मज[11] देवभ्राट२ विचारिये ॥ ८ ॥

सुभ्राट३ तास तनूज[12] तास तनूजहू अर्बचीन[13] ए,

दसज्योति४।१अरु सतज्योति४।२नाम सहस्रज्योति४।३हु तीन३ए ॥

दसज्योतिकेर हजार दस१००००सतज्योतिकेर हजार सो १००००० रु सहस्रज्योतिकके तनय[14] दसलक्ख१००००००संचय फैर सो ।९।

तिनसौंहि जदु१ कुरु२ भरत३ अन्वय[16] लोक अंतर ख्यात[17] हे,

इक्ष्वाकु४ के रु जजाति५ के तिनसौंहि ए कुलजात[18] है ॥

कुल यों सु बिस्तर[19] भूत सर्ग[20] अनेक ओरहु जानिये,

रवि मूल एह[21] त्रिलोक यों रविमैं चराऽचर[22] मानिये ॥ १० ॥

तिनही रहस्य[23] त्रिधा[24] रु ए सब आँहि[25] भूतन धाम जे,

विज्ञान[26]१ जुत बलि[27] वेद२ जोग३ रु धर्म४ अर्थ५ रु काम६ जे ॥

त्रैवर्ग[28]सास्त्र१ रु लौकिजात्रिक[29]२ सर्ब व्यास विचारिकैं,

दिय व्यास[30]सौं रु समास[31]सौं यह भरतकुल विसतारिकैं ॥ ११ ॥

इतिहास१श्रुति२व्याख्या[32]३समेत सु ग्रंथ भारत नामही ॥

२देवताओं की ३सृष्टि का ४ प्रमाण है जिनका स्वरूप १ संक्षेप से जानो ५स्वर्ग के पुत्रों (देवताओं) के नाम बताते हैं ६ चक्षु ७ पुनि ८ लोक को पूर्ण करनेवाले ९ ये सूर्य के पुत्र जानो १० श्रेष्ठ ११ पुत्र १२ पुत्र १३ देखो १४ पुत्र १५ समूह १६ वंश १७ लोक में प्रसिद्ध है १८ पैदा हुए हैं १९ फैल कर २० प्राणियों की सृष्टि २१ इस त्रिलोकी का मूल सूर्य है २२ जङ्गम और स्थावर (जड़, चेतन) इसी सूर्य में मानो इन की ही २४ तीन प्रकार की [ब्रह्मा, विष्णु, महेश. अथवा मनसा, वाचा, कर्मणा]२३ उपासना है और ये [सूर्य] प्राणिमात्र के धाम२५ हैं वेदव्यास ने विचार के साथ२६ब्रह्मज्ञान सहित२७पुनि२८अर्थ, धर्म, काम२९लौकिक यात्रा [लोकव्यवहारमें चलना] और ३० विस्तार से और३१ संक्षेप से इस भरतकुल को फैला दिया ३२ अर्थ

विरच्यो महाफल बादरायन[1] सर्वगुनगनधामही ॥
जानैं पढैं जु[2] सु[3] सर्बकोबिदैं[4] पंडिताऽधिपती[5] बनैं ॥
कितनैं पढैं[6] मनुआदि १ आस्तिक आदि २ भारतके मनैं ॥१२॥
कितनैं उँपरिचरसौं[7] ३ कहैं इम व्यास भारत बिस्तर्यो ॥
पर[8] सिस्यपाठनैं[9] कोन रीति बनैं बिचार यहै धर्यो ॥
सु बिचार जानि मरालआसँन[10] व्यास आश्रमपैं गये ॥
अरजी तिन्हैं कर जोरि पूजि रु व्यास यौं करते भये ॥ १३ ॥
प्रभु काव्यभारतमैं रच्यो न परंतु[11] लेखक तास को ॥
बिनु लेख जो बिथरैं न लेखहि एक हेतु[12] प्रकासको ॥
जामाँहिं सांग[13] १ रहस्य २ श्रुति[14] १ इतिहास २ और पुरान ३ है ॥
अरु भूत१ भव्य[15]२ भविष्य३ बिस्तृत[16] तीन३ कालँन[17] ज्ञान है ॥१४॥
मरनौं१ जरा[18]२ भय३ व्याधि[19]४ भाव[20]१ अभाव[21]२ निश्चय जुक्तही ॥
रु पुरान अर्थ १ रु वर्ण१ आश्रम २ धर्म ३ लच्छनता[22] कही ॥
तप१ ब्रह्मचर्य२ मही३ रु रबि४ ससि[23]५ तार[24]६ का८ जुग७ मानसौं[25] ॥
ऋक[26]१ साम[27]२ यजु३ अध्यात्म[28]४ हू बरनैं समस्त बिधानसौं[29] ॥ १५ ॥
दान१ रु चिकिच्छा[30]२ पासुपत[31]३ बलि[32] न्याय सिच्छा[33]४ हू जथा,
कहि लक्ष्य[34]१ लच्छन[35]२ जुत ए सब पुण्यतीर्थ१ कहे तथा ॥

---

१ बादरायण नामक वेदव्यास ने २ जो ३ सो ४ सब विषयों में पण्डित ५ पंडितों का भी पति ६ एक महाभारत के पढने से मनु स्मृति आदि धर्मशास्त्र और वेदानुयायी आस्तिक ग्रन्थों का पढना मानाजाता है ७ विमान में बैठ कर ऊपर भ्रमण करते हुओं ने भारत को फैलाया ८ परंतु ९ शिष्यों का पढाना कैसे बनै अर्थात् पुस्तकाकार हुए विना पढना नहीं होसकै १० अच्छा ११ परंतु इसको लिखनेवाला नहीं मिलता १२ प्रकाश करने का मुख्य कारण १३ लिखना ही है अङ्गों सहित और अभिप्राय सहित १४ वेद है १५ वर्तमान १६ विस्तार सहित १७ तीनों काल [समय] का ज्ञान है १८ बुढापा १९ रोग २० होना २१ मिटना २२ लक्षण [स्वरूप] २३ चन्द्र २४ तारा और युग २५ प्रमाण से कहेगये हैं २६ ऋग्वेद २७ सामवेद यजुर्वेद २८ आत्मतत्त्व २९ रीति पूर्वक ३० रोग निवारण उपाय [इलाज] ३१ पाशुपत [शैव] धर्म ३२ पुनि ३३ न्याय शिक्षा ३४ ये सब लक्ष्य [वस्तु] का स्वरूप बताकर उसको बताना ३५ लक्षण स्वरूप

बहुधा[१] नदी२ बन३ सैल[२]४ सागर५ देस६ पत्तन[३]७ बर्णगे,
कहि कल्पनिर्णय[४]१ जुद्धपाटव[५]२ बाक्यजाति[६]३ सबै दये ॥१६॥
सह लौकयात्रिक[७]१ बस्तुसबर्ग[८]२ जो सु आक्खियै खुल्लिकैं[९],
पैर[१०] तास लेखक नाँ मिल्यो सु कहो जथातथ तुल्लिकैं ॥
बोले पितामह[११] व्याससौं तपवृद्ध मुनिचयँ श्रेष्ठ मैं,
विज्ञानगूढहिँ[१२] जानिवे सन तोहि जानत ज्येष्ठ मैं ॥ १७ ॥
तैं सत्यवादिक व्यास मोसन काव्य मैं किय यों कही,
तसमात[१३] काव्यहि होहु यह विख्यात बिस्तरसौं मैंही[१४] ॥
याकौं बिसेसन देनमैं कवि कोउ नाँहिँ समर्थ हैं,
ज्यों द्वितीयाऽऽश्रमके[१५] बिसेसन आश्रमत्रय[१६]३ व्यर्थ हैं ॥१८॥
इहिँ काव्यकौं लिखनार्थ चिंतहु बिघ्नपति[१७] हित धारिकैं,
सुनि व्यास चिंतिय एकदंत[१८] गये बिरंचि[१९] पधारिकैं ॥
स्मृतमात्र[२०] भक्तमनोर्थपूरक वारणानन[२१] आयकैं,
उपरिष्टे[२२] अर्चित[२३] व्है दई सुनि हार्द[२४] एह सुनायकैं ॥ १९ ॥
खिन लेखिनी थिर जो रहै न ततो लिखैं हम ग्रंथकौं,
सुनि बादरायन[२५] हू कह्यो संकेत इक यह पंथकौं[२६] ॥
बिनु अर्थबोध[२७] लिखो न यों सुनिकैं बिनायक[२८] व्यासकी,

---

१ अक्सर २ पर्वत ३ पुर ४ प्रलय का ५ युद्ध की चातुरी ६ जाति के वाक्य (जिसमें अनेक विभक्तियें होवे उसको वाक्य कहते हैं) ७ लोकयात्रा के साथ ८ वस्तुओं के वर्ग अर्थात् कौन वस्तु किस वर्ग की है [अपनी जाति के समूह को वर्ग कहते हैं अथवा समान धर्मवाले को वर्ग कहते हैं] ९ सब खोल करके कहे हैं १० परंतु ११ ब्रह्मा बोला कि तप वृद्ध श्रेष्ठ मुनियों के समूह में १२ छिपाहुआ ब्रह्मज्ञान जानने से मैं तुमको बड़ा मानता हूं १३ इसकारण से १४ भूमि में विस्तार पूर्वक प्रसिद्ध होओ १५ गृहस्थाश्रम के विशेषण विना १६ ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास व्यर्थ है इसप्रकार १७ गणेश को १८ गणेश को १९ ब्रह्मा २० याद करने मात्र से ही २१ गणेश २२ ऊपर ठहरे हुए ही २३ पूजित होकर २४ अभिप्राय सुन कर मेरी कलम कुछ भी बन्ध नहीं रहै तो २५ वेदव्यास २६ इस मार्ग का एक संकेत है कि २७ विना अर्थ समझे लिखो मत. २८ गणेश ने व्यास की बात सुन कर

स्वीकार करि लखिबे लगे दृढ धारि अर्थ प्रकासकी ॥२०॥

दोहा

ग्रंथमाँहिँ अति गूढ तब, रचि रचि ग्रंथ[2] समाज[3] ॥
लै संधा[4] पुनि यौं कही, वासवेय[5] मुनिराज ॥ २१ ॥
अष्टसहस्र८०००रु अष्टसत८००, भारत वृत्त[6] प्रमान ॥
मैं जानत जानत सुकहु, संजय जानत वा[7] न ॥ २२ ॥
गनपति जोलौं खिनकि ढंबि, जानैं कूटन अर्थ ॥
व्यासहु तोलौं बहु रचैं, त्वरैं वृत्त समर्थ[11] ॥ २३ ॥
करि इम यह भारत कियउ, सट्ठि लक्ख६०००००० समुपेत[12] ।
लक्ख तीस३०००००० सुरलोक जो, पंद्रह१५०००००पितर निकेत[13] २४
लक्ख चउद्दह१४०००००ग्रंथ यह, धर्यो लोक गंधर्व ॥
लक्ख इक्क१००००० नरलोकमैं, किन्नौं प्रकट सुपर्व[13] ॥ २५ ॥
देवनसौं नारद कहत, सुक गंधर्वन सत्थ ॥
पितरनसौं देवल असित, वैसंपायन[14] इत्थ ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकजनमेजयस

२ गुथे हुए समूह अथवा ग्रन्थ का समूह ३ प्रतिज्ञा ४ वासवी के पुत्र [वेदव्यास] ५ भारत में आठ हजार आठ सौ छन्दों का अर्थ मैं जानता हूं और शुकदेव [वेदव्यास का पुत्र] जानता है ६ संजय जानता है अथवा नहीं जानता ७ गणेश जब तक ८ क्षण मात्र९ ठहर कर १० शीघ्रता से, छन्द रचना में समर्थ ११ संप्राप्त १२ पित्रीश्वरों के घर में १३ श्रेष्ट पर्वों वाला १४उपरोक्त महाभारत की कथा देवताओं को तो नारद मुनि कहते हैं गन्धर्वों को व्यास के पुत्र शुकदेव कहते हैं, पित्रीश्वरों को व्यासदेव के शिष्य देवल मुनि और असित मुनि कहते हैं और इस लोक में व्यास के शिष्य वैसंपायन मुनि कहते हैं [नारदादि मुनियों को पुराणों के मत से अमर मानते हैं इस कारण से यहां वर्तमान किया है] ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान शत्रुघ्न के जीवित समय के समान (बराबर) है समय का आधार जिनका अर्थात् समकालीन (एक समय में होनेवाले) जनमेजय के सर्पयज्ञ में महा

र्षसत्रश्रुतमहाभारतलौमहर्षणिशौनकाऽऽदिश्रवणाऽऽरम्भणसमाऽऽचरणमङ्गलपूर्वकसर्ववर्णानचेतोनिर्मितभारतब्रह्मोक्तव्यास१गणपति२समयस्थापनग्रन्थगूढग्रन्थिसङ्ख्यासूचनविभाजितप्रबन्धचतुर्लोक४विन्यसनतद्वक्तृउद्देशनंसप्तदशो१७मयूखः ॥ १७॥ आदितएकोनषष्टितमः ॥ ५९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मुक्तादाम

भयो नृप पांडु सु भारत वंस, जयो[1] बहु देस स्वविक्रम[2] अंस ॥
रह्यो वन बीच सदार[3] नरेस, रम्यो मृगया[4] रस मत्त विसेस । १ ।
तहाँ मुनि दंपति[5] व्है मृगरूप, व्यवाय[6] प्रसक्त[7] लखे इहिं भूप[8] ॥
दयो मृगकै जब बान धरापै, लग्यो तब सो इहिं कुप्पि[9]ससाप[10] । २ ।
जबै करिहै नृप तूहु व्यवाय, तबै इमही मरिहै अकुलाय ॥
लह्यो यह पांडु प्रदुस्सह[11] साप, तज्यो तियसंग गह्यो दुख आप । ३ ।
कह्यो पुनि कुंतियसौं नृप एह, तज्यो रत मैं[12] अनु पुत्र न गेह ॥
कहैं पतिकै जु रमैं पर पास, न व्है खलु[13] भंग पतिव्रत तास । ४ ।

भारत सुन कर लोमहर्षण के पुत्र (उग्रश्रवा सूत पौराणिक) का शौनक आदि मुनियों को सुनाने का आरंभ करने के समाचार, मंगलाचरण पूर्वक सम्पूर्ण भारत का चित्त में बनाना, ब्रह्मा के कहने से वेदव्यास का गणेश के समय का स्थापन करना, महाभारत ग्रन्थ की छिपीहुई गांठों (गूढार्थ) की गिनती की सूचना करना, विभाग कियेहुए ग्रन्थ का चार लोकों में क्रम से स्थापन करना और उनके वक्ताओं(कहनेवालों)के कथन का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १७ ॥ और आदि से उनसठ ५९ मयूख हुए ॥

१ जीता (विजय किया) २ अपने पराक्रम के अंश से ३ स्त्रियों सहित ४ शिकार ५ स्त्री पुरुष दोनों मृग का रूप करके ६ मैथुन करने में ७ आसक्त ८ भूपति पांडु ने ९ क्रोध से १० शाप दिया. मुनि ने कहा कि हे राजा तू भी जब मैथुन करेगा तब घबराकर इसी (हमारी) तरह मरेगा ११ बहुत दुस्सह १२ मैं ने तो स्त्रीसंग छोडदिया और पीछे घर में पुत्र नहीं है और जो स्त्री पति के कहने से पर पुरुष के पास रमै तो १३ निश्चै ही उसका पतिव्रत भंग नहीं होता

जनौं सुत छेत्रजहीं[1] तसमात[2], मिटैं ऋन पैतृक[3] तो मम सात ॥
दयो मुनि[4] जो सु जप्यो तव मंत्र, बुलायउ कुंतिय १ धर्म स्वतंत्र ।५।
जुधिष्ठिर१ गर्भ लह्यो तसमात[5], कहैं नृपकै पुनि बुल्लिय[6] बात[7]२॥
भयो तिहिँ भीम२ प्रभंजन[8] अंस, भयो जय[9]३ बासव[10]३ तैं सुप्रसंस[11] ।६।
रु[12] माद्रियके हित दस्र[13]२ बुलाय, कह्यो तिहिँ[14] कुंति तुहू उपजाय ॥
लहे तब माद्रिय हू दुव२ बाल, तहाँ रहतैं बितये कति काल ।७।
भयो पुनि पांडुहिँ कामज[15] ताप, रम्यौं गहि माद्रिय बीसरि साप॥
मर्‍यो ततकाल महीप मृगारि[16], गई सह माद्रिय कुंति निवारि ।८।
पृथा तब पोखि बडे किय बाल, रही मुनि आश्रम कोउक काल॥
तिन्हैं मुनि लै गजपत्तन[17] आय, दये सिसु स्वीय[18] कुटुंब मिलाय।९।
किते तिनकौं लखि बुल्लिय मूढ, न ए सिसु पांडुज[19] एम अगूढ[20] ॥
बँदे[21] कति पांडुजही इम बत्ति, बदे कतिही तिँहिँ साप बिपत्ति[22]।१०।
बसे इम पांडव गैपुर[23] थान, भई सुमबुष्टि[24] सदुंदुभि ध्वान[25] ॥
पढे श्रुति[26]४ सांग[27]६ रु सास्त्र[28]६ अनेक, रहे अकुलोभय[29] आत विबेक[30]।११।

१ इस कारण से २ क्षेत्रज (अपने क्षेत्र में औरों के वीर्य से पैदा हो वे उसको क्षेत्रज कहते हैं) पुत्र जनों तो सुख पूर्वक मेरा ३ पितृऋण मिट जावे ४ कुन्ती को कुमारपन की अवस्था में मुनि ने एक मंत्र दिया था कि इसका जप करके जिस देवता को तू अपने पास बुलावेगी वही आवेगा उसी मंत्र को जपा ५ उस धर्म से और राजा (पांडु) के कहने से फिर ७ पवन को ६ बुलाया ८ उस पवन के अंश से भीमसेन हुआ और ९ इन्द्र के अंश से १० प्रशंसा करने योग्य ११ अर्जुन हुआ १२ और पांडु की छोटी राणी माद्री के लिये १३ अश्विनीकुमारों को बुला कर कुन्ती ने १४ उसको कहा कि इनसे तू भी पुत्र पैदा कर १५ कामदेव से पैदा हुआ ताप १६ मृग रूपी मुनि का शत्रु राजा पाण्डु मरा तब कुन्ती को रोक कर माद्री सती हुई १७ हस्तिनापुर १८ अपने कुटुम्ब से १९ पाण्डु से पैदा हुए नहीं हैं २० इस प्रकार प्रसिद्ध कहने लगे २१ कितनोंकने कहा २२ कितनोंकने पाण्डु की आप की आपदा कही (आपद्धर्म जुदा ही है उसके अनुसार पांडु ने अनुचित नहीं किया) २३ हस्तिनापुर में २४ पुष्पों की वर्षा २५ नगारों के शब्द के साथ॥ ये पांचों पांडव २७ अंगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) के साथ २६ वेद पढे २८ और अनेक शास्त्र भी पढे पांडवों को जब तक २९ ज्ञान नहीं आया तब तक अपने हिस्से की ३० भूमि का अलोभ रहा, दुर्योधन से अपनी भूमि

लही पुनि अर्जुन द्रौपदि जाय, धनुर्धर दुष्कर[1] कर्म बिधाय[2] ॥
भयो तबतैं वह पूजित लोक, जयो[3] बहुजुद्ध हनैं अरि थोक ।१२।
धनंजय जित्ति लई दिस च्यारि४, लयो सबसौं कर[4] धर्म बिथारि ॥
रच्यो नृपसूय[5] समाभिध[6] सत्र[7], जुधिष्ठिर दीक्षित[8] भो नृप तत्र ।१३।
भई हरिकैं[9] नयसौं[10] इक ओर, धनंजय[11]१भीम२पराक्रम जोर ॥
हनैं नृप मागध[12]१ओ सिसुपाल२, रच्यो इम अध्वर[13] धर्म[14] बिसाल ।१४।
जहाँ मनि१हाटक[15]२रत्न३अपार, रु[16] गो४गज५बाजि६बिचित्र प्रकार ॥
बनैं बहुधा[17] पट[18]७कुंतल[19]८व्यूह, जथाक्रम रांकव[20] आसन९जूह[21] ।१५।
निमंत्रित[22] तत्थ[23] सुजोधन आय, लखी सब दिव्य सम्रद्धि सुभाय ॥
सभा मयनिर्मित[24] जो मतिहीन[25],सुजोधन भो लखि मत्सर[26] लीन ।१६।
हस्यो हरिके लखतैं जब भीम, सुजोधन रुट्ठि[27] तजी श्रुति[28] सीम ॥
कह्यो धृतराष्ट्रहिं यौं तब जाय, तिन्हैं[29] हम जीतत द्यूत हराय ।१७।
भन्यौ सुत लोभित अस्तुहि[30] भूप, रच्यो तब द्यूत महाछल रूप ॥
जुधिष्ठिरको सरवस्वहि जीति,सभा बिच द्रौपदि किन्न सभीति ।१८।
बिपत्ति घनी लहि पांडव५एम, भये पुनि सज्ज लयो रन नेम ॥
अठारह१८द्यौंस[31] भई तब रारि, लयो इनैं[32] राज्य सुजोधन मारि ।१९।
कियो धृतराष्ट्र तदुत्तर[33] ताप, गवल्गणपुत्रहिं[34] अक्खिय[35] आप ॥

लेने का लोभ नहीं किया) १ कठिनाई से किया जावे ऐसा कर्म २ करके ३ विजय पायगा ४ खिराज ५ राजसूय ६ नामक ७ यज्ञ ८ उस यज्ञ की दीक्षा युधिष्ठिर ने ली ९ कृष्ण की १० नीति से एक और बात भी हुई ११ अर्जुन १२ जरासन्ध १३ यज्ञ १४ युधिष्ठिर ने १५ स्वर्ण १६ अरु १७ अनेक प्रकार के १८ वस्त्र १९ केसों का समूह (नाना प्रकार के केस भी भेट आये थे) २० मृगों के रोमों के बने हुए वस्त्र २१ समूह २२ न्योंता हुआ २३ तहां पर २४ मय दानव की बनाई हुई २५ निर्बुद्धि (दुर्योधन) २६ वैर (दूसरे की सम्पत्ति का असह होना) में कृष्ण के देखते हुए जब भीमसेन हसा तो दुर्योधन ने २७ क्रोध करके २८ वेद की मर्यादा को छोडी २९ पांडवों को ३० ऐसा ही होवे ३१ अठारह दिन तक ३२ पांडवों ने ३३ जिस पीछे धृतराष्ट्र ने बहुत शोक किया और ३४ संजय को ३५ कहने लगा कि

बरी जब संजय द्रौपदि पत्थ१, तजी तबही जय आस अनत्थ ।२०।
सुन्यौं जब खांडव दाह२गभीर, निवारिय अर्जुन बानन नीर३ ॥
सुन्यौं जतुभौंन विरोचन दाह४, गये बचि पांडव कानन राह५।२१।
सुन्यौं जब संकरसौं जय जुद्ध६,दिये सिव पत्थहिं अस्त्र७विसुद्ध ॥
सुन्यौं दिवलोक गयो८जब पत्थ,पुरंदरसौं लिय उत्तम अत्थ९।२२।
सुनी जब मैं इम अंबक्क हीन, कुबेर समागम पांडव कीन१० ॥
सुनी पुर मच्छ जबै रन रीति, लये मम पुत्र धनंजय जीति११।२३।
सुनी हरिहू हुव पांडव सत्थ१२,सुनी पुनि एक१हि माधव१पत्थ२।१३।
सुनी जब मोसुत१कर्ण२समेत, कियो हरि बंधन मंत्र१४कुचेत।२४।
सुनी जब भीष्महिं अकिंचिय कर्ण, लरौं नहिं तो छत मैं१५इम वर्ण ॥
सुनी हरि१पत्थ२रु गांडिव चाप३, मिले त्रय३।१६विक्रम उग्र अमाप ॥
सुनी जब मोह रह्यो जय पाय, दये हरि लोक१४स्वबक्र दिखाय१७॥
सुनी जब पांडवकौं रन बीच, बतायउ भीखमहू निज मीच१८ ।२६।
सुनी जब पत्थ सिखंडिय ओट, हनै रन भीखम सायक चोट १९ ॥

१ हे संजय २ अर्जुन ने जब द्रौपदी को वरी तभी हमने इस ३ अनर्थ वाली जय की आशा को छोडदी और खांडव वन का गंभीर दाह सुना जिस में अर्जुन ने बाणों से मेघ के पानी को रोकदिया तभी से हमने जयकी आश छोड दी "तभी से हमने जय (जीतने) की आश छोडदी" इस पद को आगे प्रत्येक कार्य के अन्त में लगालेना चाहिये. ४ लाखागृह में ५ वन के मार्ग से महादेव से ६ अर्जुन का युद्ध सुना ७ विशेष शुद्ध (निर्मल) ८ स्वर्ग में अर्जुन गया तब ९ इन्द्र से उत्तम १० फल पाये सुझ११नेत्रहीन ने सुना कि पांडव कुबेर से मिले और जब मच्छ के पुर(वैराट) में युद्ध की रीति सुनी कि मेरे पुत्र को १२ अर्जुन ने जीत लिया तब ही विजय की आश छोड दी१३फिर सुना कि कृष्ण और अर्जुन एक ही हैं तभी से विजय की आश छोड दी. खोटी बुद्धिवाले मेरे पुत्र ने कर्ण के साथ१४कृष्ण को कैद करने की सलाह की सो सुनी. जब सुना कि भीष्म से कर्ण ने इस प्रकार१७अक्षर१५कहे कि१६ तुम जीवित रहोगे तब तक मैं युद्ध नहीं करूंगा तभी मैंने विजय की आश छोड दी१८धनुष२०अर्जुन को१९मोह प्राप्त होगया था तब कृष्ण ने अपने२१मुख में चौदह लोक दिखा कर अर्जुन का मोह मिटाया २२भीष्म ने अपनी मृत्यु बता दी कि इस उपाय से मैं मरूंगा अर्जुन ने अपनी ओट

सुनी जब द्रोनहु जुद्ध विचित्र, न मारत पांडवकौं२०जिम मित्र।२७।
सुनी जब पत्थ सुसंध[1] प्रवीर, जयद्रथ मारि लयो२१तकि तीर ॥
सुनी हुव भीमहु मोह विवर्ण[2], छुई धनुकोटि[3] हन्यौं नहि२२कर्ण।२८।
सुनी वृर्ख[4] वासव[5]सक्ति सुभाय, घटोत्कच उप्पर मुक्किय२३आय ॥
सुनी जब द्रौपद[6] दुष्ट चलाय, हनैं गुरु द्रोन निरायुध[7]२४हाय । २९ ।
सुनी जब जुद्ध वृकोदर[8] सक्त[9], पियो हठि[10] कंठ दुसासन रक्त[11]२५॥
सुनी पुनि कर्ण महारथ वीर, हन्यौं२६जय[12] दै रन तिच्छन तीर ।३०।
सुनी नृप सल्य हन्यौं२७जब धर्म[13], हन्यौं सकुनी२८सहदेव सुवर्म[14] ॥
सुनी हरि सम्मत[15] भीम बकारि, लयो मम पुत्र गदा[16] रन मारि२९ ।३१।
सुनी जब द्रौणि[17] गयो निस गुप्त[18], हन्यौं परसैन्य३०अखोहिनि[19]१सुप्त[20]॥
सुनी सर ब्रह्म[21]हु भो रन मोघ[22]३१, लयो जय[23] झेलि स्वअस्त्रन ओघ[24]।३२।
सुनी गुरुके सुतहू भयभिन्न, निकासि स्वमस्तकको मनि दिन्न३२॥
भई सुबलेस[25]सुता बिनु पुत्र, न को पितु१बंधु२ कुटुंब३ तनुत्र[26] ।३३।
कियो इम पांडु तनूजन[27] जत्न, गयो पुनि राज्य लयो असपत्न[28] ॥

---

१ प्रतिज्ञा के साथ वीरता से जयद्रथ को मार दिया जब सुना कि भीमसेन मूर्छा पाकर २ मलिन होगया था उसके धनुष का ३ अग्रभाग तो लगाया परन्तु कर्ण ने उसको नहीं मारा तब ही मैंने विजय की आशा छोड दी ४ कर्ण ने ५ इन्द्र की दी हुई शक्ति (यह अमोघ शक्ति कर्ण ने अर्जुन को मारने के लिये इन्द्र से ली थी) को घटोत्कच पर छोड दी ६ द्रुपद के पुत्र (धृष्टद्युम्न) ने ७ विना आयुध ८ भीमसेन ने युद्ध में ९ आसक्त होकर १० हठ पूर्वक दुश्शासन का ११ लोहू पिया १२ अर्जुन ने महारथी कर्ण को तीखे बाणों से मारा १३ युधिष्ठिर ने राजा शल्य को मारा १४ श्रेष्ठ कवचवाले सहदेव ने १५ कृष्ण की सलाह से भीमसेन ने मेरे पुत्र (दुर्योधन) को१६गदायुद्ध में मारलिया १७ अश्वत्थामा १८ छिप कर १९ शत्रु की एक अक्षौहिणी२०सूती हुई सेना को मारी२१अश्वत्थामा का ब्रह्मास्त्र भी२२व्यर्थ होगया उसको२३अर्जुन ने अपने अस्त्रों के२४समूह से झेल लिया अश्वत्थामा ने भय से अपने मस्तक का मणि काटकर देदिया और२५सुबल राजा की पुत्री (गान्धारी) विना पुत्रवाली होगई इस गान्धारी के कोई२६रक्षा करने वाला नहीं रहा पांडु के २७ पुत्रों ने इस प्रकार का उपाय किया कि अपना गया हुआ राज्य विना शत्रुओं के ले लिया अर्थात् अब कोई शत्रु नहीं रहा

रहे दस१०जीवित भारत भीर, उतैं खिल सत्त७इतैं त्रय३वीर।३४।
भयो मम संजय२ विव्हल चेत, बढ्यो अतिमोह स्वपुत्रन हेत ॥
सुन्यो इम संजय अंधं बिलाप,लग्यो बिसवासि निवारन ताप।३५।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहो त्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावित-महाभारतसमासे पाण्डवोद्भवनमृगमुनिशप्तपाण्डुमरण-सपुत्रपृथा हस्तिनापुराऽऽगमन-सङ्क्षिप्तपाण्डवचर्यासूचन-चिन्तितभूतवृत्तधृ-तराष्ट्रपरिदेवनमष्टादशो१८ मयूखः ॥ १८॥ आदितः षष्टितमः ॥६०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

सुनि संजय इम कहिय नृपहिं बिस्वासि जोरि कर ॥
भये पुँव्व नृप बहुत गये मरि सबहि काल सर ॥
सैव्य १ महारथ बीर बहुरि सृंजय २ धरनीपति ॥
कक्षीवान ३ सुहोत्र ४ रंतिदेव ५ हु बिसालमति ॥
वाल्हीक६दमन७इक्ष्वाकु८गय९अजिन१०चैद्य११सर्य्याति१२नल१३
नाभागअंबरीस१४हु नृपति विश्वामित्र१५प्रगल्भ बल ॥ १ ॥
मनु१६मसुत्त१७पुनि भरत१८राम१९दसरथनंदन अँथ ॥

भारत में इतनी भीड़ थी जिस में दश जीवित रहे १ बाकी रहे. तीन वीर इधर रहे २हे संजय मेरा चित्त विव्हल होगया है ३ धृतराष्ट्र का विलाप

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिसका ऐसे सूत पुत्र का महाभारत सुनाना, संक्षेप मे पाण्डवों का जन्म, मृगरूप को धारण किये हुए मुनि के शाप से राजा पाण्डु का मरना, पुत्रों सहित कुन्ती का हस्तिनापुर आना, संक्षेप से पाण्डवों के आचरण का जनाना, गये हुए वृत्तान्त को याद करके धृतराष्ट्र के विलाप करने का अठारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१८॥ और आदि से साठ मयूख हुए ॥६०॥

धृतराष्ट्र का इस प्रकार का विलाप सुन कर संजय ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे राजा४पहिले बहुत राजा हुए वे भी काल के वस होकर सभी मरगये ५ बडी बुद्धिवाले ६ बडे बलवान् ७ अब

महाभाग कृतवीर्य२०भूप ससबिंदु२१भगीरथ२२ ॥
तिम ययाति२३मंखसील महाविक्रम जनमेजय२४ ॥
अरु रघु१कुरु२जदु३पूरु४बिश्वगश्व५हु पहुँचे छ्यु ॥
अन्वह६ककुत्स्थ७युवनाश्व८बलि बीतिहोत्र९अरु अंग१०भव११ ॥
विजयाख्य१२वृहद्गुरु१३कंक१४त्यौं श्वेत१५उसीनर१६धरनिधव॥२
दंभोद्भव१७पर१८वेन१९सगर२०सतरथ२१दुलिदुह२२द्रुम२३ ॥
संकृति२४निमि२५रु अजेय२६परसु२७पुनि पुंड्र२८सुनहु तुम ॥
देवावृध२९नृप संभु३०वृहद्रथ३१बलि देवाह्वय३२ ॥
सप्रतीक३३सुप्रतिम३४अनघ३५सब काल करे छय ॥
प्रभु३६दीप्तकेतु३७सुक्रतु३८बहुरि महोत्साह३९निषधेसनल ४० ॥
अर्क४१रुसुमित्र४२तिमसांतभय४३सत्यव्रत४४चपल४५रुसुबल४६।
जानुजंघ४७अनरण्य४८धूर्त४९प्रियभृत्य५०सुचिव्रत५१ ॥
निरामर्द५२बलबंधु५३वृहद्बल५४केतुशृंग५५ गत ॥
वृहत्केतु५६पुनि धृष्टकेतु५७कृतबंधु५८ निरामय५९ ॥
दृढेषुधि६० रु संभाव्य६१अयउ इत्यादि सबन खय ॥
तव पुत्र दुष्ट चाहिजे मरे तिनहि न सोचहु भूपबर ॥
जिन बुद्धि होत सास्त्रानुगत ते नहि पावत मोह नर ॥ ४ ॥

दोहा

यौं सुतसोकसमुद्रमैं, मग्न अंध रौ भाखि ॥
स्वस्थ कियउ संजय सुमति, दै पूरब नृप साखि ॥ ५ ॥
जो भारतके वृत्तको, चरनहु पढत सुचेत ॥
सर्व दुरित सन मुक्त सो, होत मुक्तिके हेत ॥ ६ ॥

१ यज्ञ करने में ही है शील जिस का २ भूपति ३ पुनि ४ सब काल ने नाश कर दिया इनको आदि लेकर सब का नाश होगया और तुम्हारे दुष्ट लोभ करके मरे जिनकी चिन्ता मत करो जिन की बुद्धि शास्त्रों के पीछे चलनेवाली होती है वे मोह नहीं पाते ६ पुत्र के शोक रूपी समुद्र में डूबे हुए धृतराष्ट्र से कह कर ७ स्वभाव को स्थिर किया ८ पहिले राजाओं की साक्षी देकर महाभारत के ९ छन्द का एक चरण भी जो श्रेष्ठ चित्त से पढता मुक्ति के अर्थ सब १० पापों से छूट जाता है

देव१ देवऋषि२ ब्रह्मऋषि३, सिद्ध४महोरग५ जच्छ६ ॥
भारतको कीर्तन करत, कृष्ण चरित जहँ अच्छ ॥ ७ ॥
द्विजन सुनाये श्राद्ध बिच, एक१हु चरन प्रसन्न ॥
भारतको तो तस पितर, पावैं अच्छय अन्न ॥ ८ ॥
च्यारि४हु बेद रहस्य जुत, तोलत इक१ आधार ॥
इक१घाँ राख्यो एक१हू, भारत धारत भार ॥ ९ ॥
बहुरि लोमँहरखन सुतहिं, अक्खिय मुनिगन एह ॥
तैं समंतपंचक कहिय, सु किम हनहु संदेह ॥ १० ॥
सूत कह्यो करिये श्रवन, उत्तर तास उदार॥
त्रेता१ द्वापर२ संधि हुव, परसुराम अवतार ॥ ११ ॥

षट्पदी

जनकं वैर द्विज राम कुप्पि इकवीस२१ वेर करि ॥
सब छत्रिय संहार गये तिन रुधिर ताल भरि ॥
तहँ तिहिं तर्पन करत पितर आये ऋचीक मुख,
तिन अक्खिय यह कर्म तजहु बर लेहु इष्ट रुख ॥
द्विजराम कहिय ए अश्रके ताल पञ्च५तीरथ बनहु ॥
सुहि दै मुनीस वे सब गये रामहु छोरिय वैर वहु ॥ १२ ॥

---

१ यक्ष. जो प्रसन्न होकर महाभारत के छन्द का एक चरण भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य (इन तीनों की २ द्विज संज्ञा है) को श्राद्ध में सुनावे तो उसके पित्रीश्वर अक्षय अन्न पाते हैं चारों वेद अभिप्राय सहित तराजू के एक पलड़े में रख कर एक ३ तरफ महाभारत को रक्खा तो भारत में भार विशेष है. फिर४लोमहर्षण नामक सूत पौराणिक के पुत्र (उग्रस्रवा) को मुनियों ने ५ कहा कि तुमने समंतपंचक तीर्थ से आना कहा सो वह तीर्थ कैसा है यह सन्देह मिटाओ ६ पिता के वैर से क्रोध करके परशुराम ने इक्कीस बेर क्षत्रियों का नाश किया जिनके रुधिर से ७ तलाव भर गये. ८ ऋचीक को आदि लेकर ९ उन्होंने कहा कि१०जैसी तुम्हारी इच्छा होवे ऐसा वर लो तब परशुराम ने कहा कि ११ रुधिर के ये पांचों तलाव हैं सो तीर्थ होजावे सो यही वर देकर वे मुनि तो सब गये और परशुराम ने भी क्षत्रियों से वैर छोड दिया

दोहा

यों समंतपञ्चक भयो, थल नामहु तदधीन ॥
अच्छोहिनि अट्ठारहीं१८, छत्रिय जहँ हुव छीन ॥ १३ ॥
बहुरि मुनिन पुच्छिय कहहु, अच्छोहिनि परमान ॥
सु सुनि सूत आक्खिय सुनहु, संख्या प्रश्न सयान ॥१४॥

षट्पदी

द्विरद१इक्क१रथ१इक्क१पंच५पदचार५तीन३हय३ ॥
पत्ति१नाम तस गिनहु गिनहु सेनामुख३।३।१५।९तंत्रय३ ॥
सेनामुख त्रय ३ गुल्म ९।९।४५।२७
गुल्मत्रय३गन२७।२७।१३५।८१ पहिचानहु ॥
बाहिनी८१।८१।४०५।२४३सु गन तीन३,
तीन३पृतना२४३।२४३।१२१५।७२९ते जानहु ॥
पृतना सु तीन३कहियत चमू७२९।७२९।३६४५।२१८७,
तीन३चमू सु अनीकिनिय२१८७।२१८७।१०९३५।६५६१॥
एकत्र होय इनको दसक१०तबहि एक१अच्छोहिनिय॥१५॥

दोहा

प्रकृति२१सहस्र रु अष्ट८सत, सत्तरि२१८७०बहुरि प्रमानि ॥
एते रथ एते२१८७०हि गज, अच्छोहिनि बिच जानि ॥१६॥

---

१ उन तलावों के कारण से उस स्थल का नाम समन्तपञ्चक होगया है जहां पर क्षत्रियों की अठारह २ अक्षौहिणी का नाश हुआ है फिर मुनियों ने अक्षौहिणी का प्रमाण पूछा सो सूत पौराणिक ने कहा एक३हाथी, एक रथ, पांच पैदल और तीन घोड़े इनके समूह का नाम पत्ति है। ४ इनको तिगुना करने से सेनामुख कहलाता है। सेनामुख को तीन गुना करने से गुल्म कहलाता है। गुल्म को तिगुना करने से गण कहलाता है। गण को तिगुना करने से वाहिनी; और वाहिनी को तिगुना करने से पृतना कहलाती है। इस पृतना को तीन गुना करने से चमू कहलाती है और तीन चमू इकट्ठा करने को अनीकिनी कहते हैं और इस अनीकिनी को ५ दश गुना करने से अक्षौहिणी होती है एक अक्षौहिणी में इकीस हजार आठ सौ सत्तर हाथी, इतने ही रथ, एक लाख नौ हजार तीन सौ प-

एक१लक्ख अरु नव९सहँस, तीन३सत रु पंचास१०९३५०
ए नर हय पैंसठि६५सहँस, खट६सत अरु दस६५६१०तास ॥१७॥

यह अच्छोहिनि एक१जे, अष्टादस१८परिमान,
३९३६६०।३९३३६०।१९६८३००।११८६८० ॥
रन कौरव पांडव रचत, निधन गये तिँहिं[1] थान ॥ १८ ॥

दस१०[2]बासर भीसम१लरे, पंच५द्रोन२गुरु बेस[3] ॥
दिवस दोय२रन कर्ण३किय, दिवस अद्ध½मदेस४ ॥ १९ ॥

अद्ध½दिवस कुरुराज[5]१अरु, भीम२गदारन किन्न ॥
इम अट्ठारह१८[6]अहनमैं, भयो छत्रकुल भिन्न[7] ॥२०॥

याही दिनके अंतमैं, द्रौणि१सगोतम२भोज३ ॥
हन्यौं सुप्त[11] विस्वस्त[12] दल, पांडवको अति ओज ॥ २१ ॥

पट्पदी

यह भारत इतिहास पर्व अष्टादस१८संजुत,
आदि१सभा२बन३अरु विराट४उद्योग५भीष्म६नुत[13] ॥
द्रोण७कर्ण८कहि सल्य९पर्व सौप्तिक१०पुनि जानहु ॥
स्त्री११पर्व रु तिम सांति१२पर्व अनुसासन१३मानहु ॥
हय[14]मेध१४रु आश्रमबास१५सह मुसल१६महाप्रस्थान१७जिम ॥
स्वर्गादिरोह१८[15]अवसान बिच अष्टादस१८अभिधान इम॥२२॥

दोहा

चास पैदल और पैंसठ हजार छःसौ दश घोड़े होते हैं यह एक अक्षौहिणी का प्रमाण है ऐसी अठारह अक्षौहिणी कौरवों पांडवों के युद्ध रचने से उस स्थान (समन्तपञ्चक) में १ नाश को प्राप्त हुई हैं २ दश दिन भीष्म लड़े, पांच दिन ३ श्रेष्ठ गुरु द्रोणाचार्य लड़े, दो दिन कर्ण ने युद्ध किया और आधा दिन मारवाड़ ४ का राजा सल्य लड़ा आध दिन में ५ दुर्योधन लड़ा और भीमसेन से गदायुद्ध भी हुआ ६ दिनों में ७ चत्रियों के कुल कटे ८ रात्रि में, अश्वत्थामा ९ कृपाचार्य १० कृतवर्मा ने १२ विश्वास युक्त (निःशङ्क) ११ सूती हुई पांडवों की प्रतापवाली सेना को मारी १३ स्तुति योग्य १४ अश्वमेध १५ अन्त में १६ अठारह पर्वों के इस प्रकार नाम हैं

पर्व नाम संग्रह कह्यो, यौं *प्रत्येक गिनाय ॥
अब पर्वन मैं जे कथा, ते भाखत हित लाय ॥ २३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ वीतिहोत्रचहुवानशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारतसमासेसञ्जयधृतराष्ट्रसमाऽऽश्वासनमहेतिहासमाहात्म्यसमन्तपञ्चकोद्भवसूचनाऽक्षौहिणयाऽऽदिपरिसङ्ख्यानयुद्धदिनयोधाऽऽदिविवेचनपर्वनामसंग्रहणमेकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥ आदित एकषष्टितमः ॥ ६१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पज्झटिका

उत्तंक चरित१पहिलैं उदार, भृगुवंस२बहुरि विस्तर प्रकार ।'
आस्तीक चरित३आख्यान जुक्त, जहँ गरुड१नाग२उतपत्ति४उक्त
सुर१असुर२छीरसागर मथान५, उच्चैश्रवोऽश्व उद्भव६विधान ॥
पुनि दंदसूकमखहोनबात७, भारतकथाँनिका चलन८ख्यात ॥२॥
बलि विविध नृपनके जन्मबंस९, श्रीव्यासजन्म१०अवतार अंस ॥
पुनि देव१दैत्य२दानव३रु जच्छ४,रक्खस५रु नाग६अहि७बंस८अच्छ

इस प्रकार *हर एक पर्व के जुदे जुदे नाम गिना कर सब पर्व इकट्ठे कहदिये हैं और इन पर्वों में जो कथा है वह अब स्नेह करके कहते हैं ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अर्थात् समकालीन सूत पुत्र (उग्रस्रवा) का महाभारत सुनाना, संक्षेप से संजय का धृतराष्ट्र को आश्वासन करना, महाभारत का माहात्म्य, समन्त पञ्चक तीर्थ के पैदा होने की सूचना, अक्षौहिणी की गिनती, युद्ध के दिन में योद्धा आदि का विवेचन, पर्वों के नामों के संग्रह का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ । १९ । और आदि से इकसठ मयूख हुए । ६१ ।

१ विस्तार से २ कही ३ क्षीरसमुद्र का मथना ४ उच्चैःश्रवा नामक घोड़े के ५ जन्म का ६ सर्प यज्ञ होने की वार्ता ७ कथा का ८ पुनि ९ यक्ष १० राक्षस ११ सर्प (वासुकि को आदि लेकर बहुत फणोंवाले अथवा मनुष्य के आकारवाले फण और पूंछवाले सर्प) १२ सामान्य सर्प

गंधर्व[1]१ विहंग१ भव[2]भूत भाय, अंसावतार हुव सर्व आय१२ ॥
पुनि विपिन[3] कण्वमुनि राज धाम, चलि आय भूप दुक्खंत[4] नाम१३।४।
तँहँ इक१ सकुंतला नारि पाय१४, सुत भरतनाम ताविच बिधाय[5]१५॥
जिहिं भरतहिं[6]तु यह भुम्मि ख्यात, भारतकुल प्रकट्यो गिनहु तात।५।
संतनुकै पुनि वसु सप्त७पुत्र१६, गंगा विच[7] है पहुँचे अमुत्र१७ ॥
ताकै हि महाव्रत हुव१८ बहोरि, लै ब्रह्मचर्य दिय राज्य छोरि१९॥६॥
व्रत निज करि पालन भीष्म वीर, चित्रांगद रच्छा कियउ२० धीर॥
गंधर्व[9] हन्यौं चित्रांग देस२१, तब किय विचित्र[10] विजंहिं नरेस२२।७।
लहि पुनि मुनि अणि मांडव्य साप, अंतक[11] वतार हुव विदुर२३ आप ॥
द्वै[12]पायनसौं हुव तदनु[13] ख्यात[14], धृतराष्ट्र१ पांडु२ए उभय२ भ्रात२४ ।८।
पुनि धर्म१ सुजोधन२ आदि सर्व, लै जन्म बढे२५ जित देवगर्व ॥
जतु[15]निलय वारणावत पठाय, किय कपट सुजोधन२६ दहनकाय।९।
जँहँ बिदुर म्लेच्छ[16]भाखा समर्थ, उपदेस कियउ नृप धर्म[17] अर्थ२७॥
तिहिं खोजि सुरंग[18]द्वार धर्म, सकुटुंब विपिन[19] विहरिय२८ सुकर्म॥१०॥
सुत पंच५ सहित भिल्ली[20]१ समेत, हुव भस्म बिरोचन२९ कुटिलचेत ।

---

१ पक्षी २ संसार के प्राणियों की रीति से सब अंशावतार हुए ३ वन में कण्वमुनि के स्थान पर ४ दुष्यन्त नामक राजा गया जिसने सकुन्तला नामक स्त्री को पाकर उसमें भरत नामक पुत्र पैदा ५ किया उसी भरत ६ से यह भूमि भरत खण्ड नाम से प्रसिद्ध हुई और उसी भरत से भरतकुल प्रकट हुआ राजा शन्तनु के गंगा में सात पुत्र वसु नामक देवता हुए सो ७ परलोक पहुंचे जिस पीछे उसी शन्तनु के गंगा में ८ भीष्म हुए जिन्होंने ब्रह्मचर्य लेकर राज्य छोड दिया भीष्म ने अपना व्रत पालन करके छोटे भाई चित्रांगद की रक्षा की ९ इसी चित्राङ्गद को गन्धर्व ने मार डाला तब १० विचित्रवीर्य को राजा बनाया अणिमांडव्य नामक मुनि का श्राप लेकर ११ यमराज का अवतार विदुर पैदा हुआ १२ जिसपीछे १३ वेदव्यास से १४ प्रसिद्ध धृतराष्ट्र और पांडु दोनों भाई हुए १५ लाक्षागृह में वारणावतपुर भेज कर जहां पर विदुर ने १६ म्लेच्छ भाषा में १७ युधिष्ठिर को उपदेश किया कि दुर्योधन तुमको मारने के लिये वारणावत भेजते हैं सो सावधान रहना इत्यादि, तहां युधिष्ठिर ने १८ सुरंग का दरवाजा खोज कर कुटुम्ब सहित श्रेष्ठ कर्म करनेवाले १९ वन में विहार कर गये उस लाक्षागृह में पांच पुत्रों सहित एक २० भीलणी

वनबिच हिडंब लिय भीम मारि३०, परनी सु हिडंबा३१समयपारि।११।
हैडंब जनम अत्रैव आस३२,अत्रैव आय दिय दरस व्यास३३ ॥
तिन बचन एकचक्रानिवेस३४, द्विजगेह रहिय सब गुप्त बेस३५॥
पुनि भीम हनियबकं३६रन प्रचार, नागरजन बिस्मितहुव३७अपार॥
अरु धृष्टद्युम्न उद्भव३८अनूप, सहजाहि तास कृष्णा९३सुरूप॥१३॥
तदनंतर अर्जुन गंगतीर, अंगारपर्ण जीत्यो ४० प्रबीर ॥
रु सुनें उदंत४१करि सुहृद ताहि, तापत्य१ ओर्व२वासिष्ठ३चाहि।१४।
पुनि जाय पत्थ सब नृप निषेधि, कृष्णालिय४२भुजबल लक्ष्य बेधि॥
अरुसल्य१कर्ण२मुखजित्तिसर्व,जय१भीमकियउबिक्रम४३अखर्व।
सुहि देखि राम१कृष्ण२हु उदार,पांडुवन होय इम किय बिचार४४ ॥
मिलिपंच५भ्रातकियएक१नारि४५,यहजानिद्रुपदलिय कोपधारि४६
हुव पंच५इंद्र आख्यान तत्र४७, करिदैवव्याहसु लहिय कलत्र ४८॥
बिदुरागमहुव४९पांडवनपास,बल१कृष्ण२मिले५०रचिहियहुलास॥
किय बहुरि जाचना रहन काज, पावहिं स्वकीय हम अर्द्धराज ५१ ॥
तदनंतर नारद हुकम अप्पि, दिय द्रुपद सुता संकेत५२थप्पि॥१८॥

और खोटा चित्तवाला विरोचन भस्म होगये भीमसेन के पुत्र हैडंब का जन्म१वहीं पर २ हुआ और वहीं पर वेदव्यास मिले जिनके कहने से ३ एक चक्रा नामक पुर में वास करके ब्राह्मण के घर में छिप कर रहे ४ बकासुर को ५ नगर निवासी लोग ६ आश्चर्य युक्त हुए फिर धृष्टद्युम्न का अनुपम ७ जन्म होना और उसके ८ साथ ही ९ द्रौपदी का होना १० जिस पीछे अर्जुन ने गंगा की तीर पर अंगारपर्ण को जीता११और१२अर्जुन ने १३उर्व मुनि के पुत्र और्व को और वशिष्ठ को १४मित्र बनाकर १५वृत्तांत सुने फिर१६ अर्जुन ने द्रुपद के पुर में जाकर सब राजाओं को हटा कर अपने भुज बल से लक्ष्य वेध करके १७ द्रौपदी प्राप्त की १८ आदि १९ अर्जुन और भीमसेन ने २० बडा पराक्रम किया२१बलदेव ने वहां पांच इन्द्र की कथा कह कर द्रुपद को समझाया और दैव (आठ विवाह जो ऊपर लिख आये हैं उनमें से दैव नामक) विवाह करके पांच भाइयों ने एक२२स्त्री ली २३ विदुर का आना २४ बलदेव २५ अपना आधा राज्य पाने की याचना की फिर नारद ने आज्ञा देकर द्रौपदी के पास एक एक वर्ष तक एक एक भाई रहै यह संकेत पांडवों में स्थापन कर दिया

सुंदो[1]पसुंद[2]आख्यान५३साक्खि, परनारि संग अवरोध५४आक्खि ॥
इक समय जुधिष्ठिर निज निकेत[3], एकांत लसत[4] कृष्णा समेत॥१९॥
श्रुत[5] द्विज पुकार जय तत्थ जाय, निज सस्त्र लैरु किय द्विज सहाय५५॥
बलि[6] व्है[7] व्रतस्थ[8] लिय बिपिन[9] वास५६, इहिं तत्थ उलूपी[10] संग आस[11]५७२०
जयपुण्यतीर्थ अभिगम[11]न५८जानि, बलि बभ्रुवाह उद्भव[12]५९बखानि ॥
पुनि बिप्र साप धृत नक्र[13]काय, अच्छरि[14]न मुक्ति बर्णन६०सुभाय ॥२१॥
हरि १ पत्थ २ मिले तीरथ प्रभास ६१, हरि हुकम सुभद्राप्राप्ति६२तांस[15]।
हरि आत्तह[16]रन मिलिहुवसहाय६३, अभिमन्युजनम६४पुनि अवधि पाय
हुवद्रौपदेय[17] पंच५हि६५उदार, बलि[18] हरि[19]१जय[20] जमुनातट बिहार६६ ॥
तहँ आश्रै[21]यास द्विजरूप आय६७, तिहिं पांडव दिय खांडव चराय६८॥
मय१असुर दियउ दवतैं उबारि६९, सारंग[22]४भुजंग[23]१हु दियउ टारि७०॥
इत्यादि कथा बिच आदिपर्व१, अध्याय वृत्त[24] संख्या ऽब[25] सर्व ॥२४॥

॥ दोहा ॥

सत दुव सत्तावीस २२७ है , यहँ अध्याय अमंद[26] ॥
अष्ट८सहस्र रु अष्ट८सत, चउरासी८८८४ सब छंद ॥ २५ ॥

१सुन्द और उपसुन्द नामक दो भाई एक स्त्री पर लड़कर मारेगये थे उनकी कथा सिखा कर कहा कि ऊपर के नियम के विरुद्ध २जनाना में जाना है वह परस्त्री के साथ गमन करना है ऐसा जानो, इस पीछे एक समय युधिष्ठिर अपने ३घर में द्रौपदी के साथ एकान्त में४शोभायमान था सो एक ब्राह्मण की पुकार ५सुन कर उसकी सहाय के लिये अपने शस्त्र लेने को वहां अर्जुन चलागया इस कारण से ब्राह्मण की सहाय किये पीछे ६ फिर ७ नियम में स्थित होकर ८ वनवास लिया तहां पर अर्जुन से ९ उलूपी नामक नागकन्या का संग१०हुआ. अर्जुन का पुण्यतीर्थों में११जाना और अर्जुन के पुत्र बभ्रुवाहन का १२जन्म कहागया है. एक ब्राह्मण के शाप से पांच१४अप्सरायें१३मगर रूप होकर पंचतीर्थों में रहतीं थीं जिनका अर्जुन से उद्धार होने का वर्णन१५अर्जुन को कृष्ण के हुकुम से सुभद्रा की प्राप्ति हुई और उस हरण१६ करने में सुभद्रा को पकड़ते ही कृष्ण अर्जुन के सहाई होगये१७द्रौपदी के पुत्र १८फिर १९ कृष्ण और२०अर्जुन का२१अग्नि ब्राह्मण का रूप करके आया जिसको अर्जुन ने खाण्डव वन चरादिया २२ सारंग पक्षि २३ सर्प को भी बचादिया २४ छन्दों की गणना २५ अब सब कहते हैं २६ मन्दता करके रहित

अब, दूजो २ आरंभियत, सभापर्व २ अभिधान॥
बहुत रुचिर वृत्तांत जुत, बंधुन बैर निदान ॥ २६ ॥

॥ पज्झटिका ॥

गिनि प्रथम क्रिया परिखंदविधान१, पुनितहँकिंकरंदरसनकथान२
लोकेस सभा आख्यान३तत्र, पुनि राजसूय आरंभ सत्र ४ ॥२७॥
मगधेस नास बलि भीम किन्न५, अरु रुद्ध नृपन हरिमुक्त दिन्न६ ॥
पांडवन चउ ४ न दिगविजय कर्म ७, सब नृपन सत्र आगमं ८ससर्म॥
तहँ अर्घ बाद बिच गिनि कुभाँस, हरि किय निसंक सिसुपाल नास९
कुरुराज सुजोधन तत्थ आय१०, लखि पर सम्रद्धि अमरख नमाय११
दिगमूढ भयो१२परिखंद विलास, किय सु लखि भीम अट्टाट्टहास१३
तिहिँ अनख सुजोधन रचिय द्यूत१४, सरबस्वहिं जीत्यो सुबलपूत१५
कृष्णाहिँ दुखित तहँ देखि अंध, कीनौं पुनि पांडव मुक्तबंध१६ ॥
यह जानि सुजोधन हुय उदास१७, पुनि द्यूत जीति दिय बिपिन बास१८
इत्यादि कथा आख्यान सर्व, संजुक्त सभा२ अभिधान पर्व ॥
यासैंहु वृत्त अध्याय मान, संख्या समस्त सुनिये सुजान ॥ ३२ ॥
अध्याय अठंतर ७८ मित अमंद, दुव२ सहँस पंच५ सत रुद्र२५११छंद

१सभापर्व नामक २ सुन्दर ३ भाइयों के वैर का कारण ४ पहला काम सभा रचने का है और फिर उस सभा को अपने ५ सेवकों का दिखाने की ६ कथा है वहां पर ७ ब्रह्मा की सभा की कथा है और फिर राजसूय ८ यज्ञ का आरंभ है ९ जरासन्ध को भीम ने मारा और जरासन्ध के१० कैदी राजाओं को कृष्ण ने छोडे और सब राजाओं का यज्ञ में १२ सुख पूर्वक ११ आना प्रथम १३ पूजा किसकी की जावे इस वाद में १४ खोटे वचन बोलने से कृष्ण ने शिशुपाल को मारा ॥१६सभा को देखने में१५दिशाभूल होगया १७ उसको देख कर भीमसेन उच्च स्वर से हसा उस १८ क्रोध से १९ शकुनि वहां पर २० द्रौपदी को दुखी देख कर२१धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को उस द्यूत में हार जाने के२२बन्धन से छोड दिया अर्थात् उनका सर्वस्व पीछा उनको देदिया२३फिर द्यूत में जीत कर पांडवों को वनवास दिया२४इनको आदि लेकर कथा और आख्यानों सहित सभा २५ नामक पर्व है जिस में २६ छन्दों का २७ प्रमाण २८ प्रमाण

इम पर्बसभा२ नामक बखानि,अब बिपिन३पर्ब आरंभ जानि ।३३।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारतसमासे प्रथम१सभा२पर्बकथासमसनं विंशतितमो मयूखः॥ २० ॥ आदितो द्विषष्टितमः ॥ ६२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पज्झटिका ॥

पौरानुगमन नृप धर्म संग१, रवि आराधन२ ब्रत३ होत भंग॥
धौम्योपदेस३ अरु रवि प्रसाद४, हुव अन्न ऋद्धि५मेटन बिखाद६।१।
धृतराष्ट्र बहुरि सुत लोभ धारि, छत्ताँ हित भाखत दिय निकारि६
वह गयउ पांडुपुत्रन समीप७,पुनि लियउ बुल्लि८अनयन महीप।२।
पांडव बनस्थ हनिये स्वतंत्र, इम कियउ सुजोधन१ करन२ मंत्र ९।।
यह दुष्टभाव लखि व्यास आय१०,किय रोध१२सुरभि आख्यान गाय११
मैत्रेय मुनिहु कोपित अमाप, दिय भिदन१३ सुजोधन सक्थि१४ साप ॥
रन भीम हनन किर्मीर१२घाय,पांचाल१५वृष्णि१६पुनि मिलन आय१३

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अर्थात् एक समय में होनेवाले सूतपुत्र (उग्रश्रवा) के संक्षेप से महाभारत सुनाने में आदिपर्व और सभापर्व की कथा के संक्षेप का बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥२०॥ और आदि से बासठ मयूख हुए ॥ ६२ ॥

अब आगे वनपर्व की कथा कहते हैं कि १ पुर के लोगों का २ युधिष्ठिर के साथ जाना और सदैव ब्राह्मण भोजन कराते थे उस ३ व्रत का भंग होते देख कर धौम्य ४ मुनि के उपदेश से सूर्य की आराधना करना जिस से सूर्य ने ५प्रसन्न होकर एक पात्र दिया उस पात्र में ६दुक्ख को मेटनेवाली अखूट अन्न की समृद्धि होना, हित की बात ८कहते हुए ७ विदुर को निकाल दिया वह विदुर पाण्डवों के पास चला गया जिसको ९ अंधे राजा (धृतराष्ट्र) ने पीछा बुलाया १०वन में ठहरे हुए ११ सलाह १२रोका, कामधेनु और इन्द्र का आख्यान कह कर (इस आख्यान से यह सिद्ध किया है कि संसार में पुत्र से प्यारी कोई वस्तु नहीं है) मैत्रेय मुनि ने दुर्योधन की १४ जंघा१३ टूटने का श्राप दिया, भीमसेन ने किर्मीर को मारा१५और धृष्टद्युम्न आदि

सकुनी ठगि जीते सुनि समस्त, हरि कोप[२] किय सुकिय पत्थ[४] ध्वस्त १४
कृष्णा परिदेवन[६] सुनि कृपाल, हरि दिय विसास १५ सुनिये नृपाल ।५।
लै संग सुभद्रा सुत समेत, पहुँचे मुकुंद अपने निकेत १६ ॥
भानेज पंच५ लै अप्प संग, बेदीजहु[१२] पहुँच्यो द्रुपद दंग १७ ॥ ६ ॥
पुनि द्वैत विपिन[१३] पांडव प्रवेस १८, संवाद १९ द्रौपदी सह नरेस २ ॥
इम धर्म१ भीम२ संवाद २० आस[१४], दरसन दिय तत्थहि आय व्यास २१
उपदेसन[१५] विद्या २२ दुल्लभ दान, जिम पांडव काम्यक विपिन जान २३
अरु अस्त्र अर्थ अर्जुन विवास[१६] २४, सबराकृति[१७] शिवसहँ जुद्ध २५ तास ।८।
पुनि लोकपाल दरसन २६ प्रसंग, इम अस्त्र मिलन २७ पत्थहिं अभंग
जय[२०] गयउ अस्त्र हित इंद्रलोक २८, पुनि हुव नृप अंधहिँ अधिक सोक
बृहदश्व दरस ३० नृप व्यसन वत्त ३१,
दमयंती २ नल १ आख्यान ३२ तत्त ॥
पुनि दत्तहृदय पांडव प्रवेस ३३, तँहँ आय त्रिदिव[२१] सन लोमसेस[२२] ३४
तिनतैं सुनि जय[२३] दिवि[२४] विद्यमान[२५] ३५, अजमीढ कारियतीरथ प्रयान ३६॥
दिनकर[२६] सुत कुंडल२ कवच१ त्याग ३७, गय नृपको कीर्तन विभव जाग[२८] ३८

पंजाबवाले और कृष्ण आदि वृष्णिवंशी यादवों का पांडवों से मिलने को जाना १ कृष्ण ने क्रोध किया २ जो ३ अर्जुन ने ४ मिटाया और ५ द्रौपदी का ६ विलाप सुन कर कृष्ण ने विश्वास दिया ७ कृष्ण अपनी बहिन सुभद्रा को अभिमन्यु सहित ८ द्वारका ले गये और अपने भानजों (द्रौपदी के पुत्रों) को १० धृष्टद्युम्न ९ अपने संग ११ द्रुपद पुर ले गया १२ द्वैत वन में १३ युधिष्ठिर के साथ द्रौपदी का सम्वाद और इसीप्रकार युधिष्ठिर और भीमसेन का संवाद १४ हुआ दुर्लभ विद्या का १५ उपदेश देना १६ अस्त्रों के लिये अर्जुन का विदेश जाना (दूर वास करना) १७ भील की आकृतिवाले १८ महादेव से १९ अर्जुन का युद्ध होना फिर अर्जुन से लोकपालों का मिलना और अभंग अस्त्रों का मिलना २० अर्जुन का इन्द्रलोक जाना और धृतराष्ट्र को अधिक शोक होना बृहदश्व नामक ऋषि का दर्शन होना और युधिष्ठिर की आपदा का कथन और नल दमयन्ती का आख्यान २१ स्वर्ग से २२ लोमश नामक मुनि से २३ अर्जुन २४ स्वर्ग में २५ वर्तमान है यह सुन कर अजमीढ नामक तीर्थ को गये २६ कर्ण का कुण्डल और कवच २७ देना और २८ यज्ञ ही है विभव जिनका ऐसे नृप हैं तो गया.

पुनि पुनि अगस्ति आख्यान३९जानि, बातापि असुर मारन४०बखानि
तत्थहि अगस्तिसुत लोभलीन, लोपामुद्रा अभिगमन कीन४१ ।१२।
वलि ऋष्यशृंग मुनि चरित बात४२, द्विजराम कुपित हैहय निपात४३
पुनि मिलन कृष्णा१ पांडव२ प्रभास४४, आख्यान तत्थ सौकन्य४५ आस
दस्रन दिवाय जँहँ सोमभाग, हुव तरुन च्यवन४६ सर्याति जाग ॥
मांधातृ भूप आख्यान४७ ज्यौंहिं, तँहँ रुचिर जंतु आख्यान४८ त्यौंहिं ।१४।
सेन१ रु कपोत२ आख्यान४९ सार, अरु कथन भूप सिवि५० अति उदार॥
मिलि जनक सत्र बिच अपमाद, वंदी१ अरु अष्टावक्र२ बाद५१ ।१५।
दकराजतनय जँहँ न्यायदच्छ, बंदी वह जित्तिय बाद५२ अच्छ ॥
जवक्रीत१ रैभ्य२ आख्यान५३ गान, अरु अद्रि गंधमादन प्रयान५४
नारायन आश्रम तिम निवास५५, पुनि आंजनेय दरसन५६ प्रकास ॥
जुज्झन क्रव्यादन भीम जोध५७, मणिमान आदि जच्छन बिरोध५८

फिर वारंवार अगस्ति ऋषि का आख्यान है. जिसमें अगस्ति का वातापि असुर को मारना और पुत्र उत्पन्न करने के लोभ से १ लोपामुद्रा नामक अपनी स्त्री से २ भोग करना ३ परशुराम ने क्रोध करके ४ हैहय को ५ मारा फिर ७ प्रभास तीर्थ में ६ कृष्ण और पांडवों का मिलना और राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या का च्यवन ऋषि को मिलने का आख्यान ८ हुआ. च्यवन ऋषि का वृद्धावस्था से तरुण होना और राजा शर्याति के ११ यज्ञ में ९ अश्विनीकुमारों को १० अमृत का भाग दिलाना, फिर मान्धाता का आख्यान और राजा सोमक के जन्तु नामक पुत्र हुआ उसको काट कर यज्ञ में होम देने से सोमक के सौ पुत्र होने की सुन्दर कथा है. राजा उसीनर के धर्म की परीक्षा के लिये इन्द्र ने श्येन पक्षी का और अग्नि ने कपोत का रूप धारण किया जिसकी कथा का सारांश और राजा शिवि की उदारता की कथा है; फिर जनक के १२ यज्ञ में सावधान अष्टावक्र मुनि और बन्दी के शास्त्रार्थ में १३ वरुण के पुत्र उस बन्दी को जो न्याय में १४ चतुर था अष्टावक्र ने जीत कर समुद्र में डुबो दिया जिसकी कथा है और यवक्रीत का रैभ्य ऋषि की पुत्री वधू से भोग करना और रैभ्य ऋषि का क्रोध करके यवक्रीत के मारने को एक स्त्री और एक राक्षस को उत्पन्न करके यवक्रीत को मारना और पांडवों का गन्धमादन पर्वत पर जाना ॥ १५ ॥१६॥ १५ हनुमान् का भीमसेन को दर्शन होना १६ राक्षसों से भीमसेन का युद्ध १७ यक्षों से विरोध होना

रन भीम जटासुर मारि लिन्न५९,कैलास[1] अद्रि आरोह[2] किन्न६० ॥
मृड[3] मित्र सहित पांडव मिलाप६१,बंधुन तहँ दिविगत[4] पत्थ[5] प्राप[6]६२
पौलोम[7] कालकेयादि जंग, जय सब निवातकवच[10] किय भंग ६३॥
पुनि धर्मराजकौँ सबहि पत्थ, आनैं सु दिखाये अत्थ[11] अत्थ[12]६४ ।१९।
निगस्यो[13] पारींद्रहु[14] भीम६५चाहि, कहि प्रश्न छुरायउ धर्म[15] ताहि ६६॥
पांडवसुनिकाम्यकबिपिनैं[16]आय६७,श्रीकृष्णसमागमतहँ६८सुभाय॥
अग्गैं मृकंडसुत सुनि उदंत[17]६९, श्रीपृथु आख्यान७०हु सुखद संत'
संबाद७१सरस्वति१गरुड२सुद्ध,पुनि मत्सक आख्यान७२हु प्रबुद्ध[18]२१
जिम इंद्रद्युम्न आख्यान७३जानि,नृप धुंधुमार आख्यान७४मानि ॥
निकटहिपतिव्रता[19]ऽऽख्यान७५नाम,आख्यानआंगिरस७६पुनिललाम[20]
सत्या[21]१ कृष्णा[22]२ संबाद७७अेय, बन द्वैत गये पांडव७८ अजेय ॥
पुनि सुनहु घोषयात्रा७९ प्रभूत[23], पकस्यो गंधर्बन अंधपूत[24]८० ॥ २३ ॥
तव बद्ध सुजोधन लज्जमान, जयनैंहिं छुरायो८१वह अजान ॥
मृगस्वप्ननिदर्सन[25]८२नृपहिंतत्थ,अरुकाम्यकवनप्रबिसन८३समत्थ।

---

१ कैलास पर्वत पर २ चढे ३ महादेव के मित्र (कुबेर) से पांडवों का मिलना और वहीं पर ४ स्वर्ग में गये हुए ५ अर्जुन का भाइयों से ६ मिलना ७ पौलोम और ८ कालकेय आदि दानवों से युद्ध होना और ९ अर्जुन का १० निवातकवचों को नष्ट करना फिर अर्जुन जो ११ अस्त्र लाया उसको १२ यहाँ पर युधिष्ठिर को दिखाना ॥ १९ ॥ भीमसेन को १४ अजगर सर्प ने १३ ग्रस (गिट) लिया जिससे प्रश्न करके १५ युधिष्ठिर ने भीमसेन को छुडाया १६ वन में ॥ २० ॥ मार्कंडेय ऋषि का युधिष्ठिर से अनेक १७ वृत्तान्त कहना १८ पंडिताई का ॥ २१ ॥ १९ पतिव्रता का आख्यान २० सुन्दर ॥ २२ ॥ २१ सत्यभामा और २२ द्रौपदी का सम्वाद अपने पति को वश में करने के विषय में हुआ फिर घोष यात्रा (गायों की संभाल करने के मिस से पांडवों को अपना वैभव बताने के अभिप्राय से) में २३ बहुतों के साथ [विभव सहित] २४ दुर्योधन गया जिसको गन्धर्वों ने पकड़ लिया उस लज्जा पाये हुए बंधुए दुर्योधन को अर्जुन ने ही छुडाया २५ द्वैतवन के मृगों की राजा युधिष्ठिर से प्रार्थना करना और उसी उदाहरण से पांडवों का द्वैतवन छोड कर काम्यकवन में जाना

जँहँ ब्रीहिद्रौणिका ऽऽख्यान८४जानि, दुर्वाससत्राख्यान८५हुप्रमानि
कृष्णाकौं सिंधुप मूढ चौरि, लैजात वृकोदर पिट्ठि दोरि ॥ २५ ॥
गहि लियउ जयद्रथ भीम जाय, छोरयो सु पंक्ष५सिख करि८६कुभाय
पुनि रामायन आख्यान८७नाम, रावन जँहँ मारिय भूप राम८८।२६।
सावित्री आख्यान८९हु अभंग, पुनि अति उदार रबिसुत प्रसंग९०॥
वृखं दान तुष्ट सुरराज चाहि, दिय एक१घातिनी सक्ति ताहि९१ ।२७।
निम आरणेय आख्यान९२जानि, पश्चिमदिस पांडव गमन९३मानि
इत्यादि कथा आरण्य३पर्ब, अध्याय वृत्त संख्याऽबै सर्ब ॥ २८ ॥

दोहा

दुवरसत गुनहंतरि२६९गिनहु, आरण्यक३अध्याय ॥
छंद सहँस ग्यारह११छ६सत, सचउसठि११६६४समुदाय।२९।

नराचः

लग्यो बिराट पर्ब पांडवेयँ बेस लुप्त व्है१ ॥
समी मसान तिष्टमैं छिपाय सस्त्र२गुप्त व्है ॥
प्रछन्न नैर मैं प्रबेसि मत्सपैं रहे३सबै,
कुमार्ग सील कीचकाऽऽख्य भीमनैं हन्यौं४तबै ॥ ३० ॥

एक १ द्रोण [धान्य का तोल विशेष, सोलह सेर, मतांतर से बत्तीस सेर को द्रोण कहते हैं] २ धान्य का दान किया था उसकी कथा और दुर्वासा पांडवों को श्राप देने गये वह आख्यान और ३ द्रौपदी को ४ जयद्रथ हर कर लेगया जिसके पीछे दौड़ कर ५भीमसेन ने पकड़ लिया और ७बुरी तरह से ६ मुंडन करके छोड़ा राजा अश्वपति की कन्या सावित्री के प्रताप से उस के मरे पति का जीवित होना आदि कथा ८ कर्ण के पास से इन्द्र का कवच, कुंडल मांगना ९ कर्ण के दान से प्रसन्न होकर १० इन्द्र का कर्ण को एक वीर को११मारनेवाली बरछी देना॥२७॥द्वैतवन में एक मृग के सींग में ब्राह्मणों के अरणी का काष्ठ उलझ गया उसे लेकर जो मृग चला गया उस को पांडवों ने मारा जिसका आख्यान और पांडवों का पश्चिम दिशा में जाना, इनको आदि लेकर वनपर्व में कथा है १२ छन्दों की संख्या १३ अब ॥ २८ ॥ १४ पांडु के पुत्र वेस छिपा कर श्मशान भूमि में १५ खड़े हुए १६ खेजड़ी के वृक्ष पर १७ नगर में १८ खोटे मार्ग में है शील जिसका ऐसे कीचक

रु पांडवेय सोधकों दुजोध चार थप्पये५ ,
महाबली तथापि काल जानि ख्यात नाँ भये७ ॥
बहोरि व्है त्रिगर्त सज्ज धेनु मत्सकी हरी८,
तहाँहु भीम गो छुराय जीत मत्सकी करी८ ॥ ३१ ॥
हरी बहोरि धेनु भीष्म द्रोन आदि आयकैं९,
तहाँ समस्त पत्थनैं जये कलंब घायकैं१० ॥
विराट भप पत्थकों सुता जु उत्तरा दई११,
सुधर्म धीर पत्थनैं स्वकीय पुत्रकों लई१२ ॥ ३२ ॥

दोहा

यँहँ चतुर्थ४वैराट४बिच, सडसठि६७मित अध्याय ॥
दुवसहस्रपंचास२०५०मित, सुंदर वृत्त सुभाय ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न५३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसोतिश्रावितमहाभारतसमासे वन३विराट ४ पर्व२कथासमसनमेकविंशो २१मयूखः ॥ २१ ॥ आदितस्त्रिषष्टि६३तमः ॥ ६३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

नामक को मारा ॥ ३० ॥ १ अरु पांडवों को सोधने के लिये २ दुर्योधन ने ३ हलकारे (दूत) ४ तो भी ५ समय को जान कर ६ प्रसिद्ध नहीं हुए ७ सुशर्मा ने (यहां पर उपादान लक्षणा से त्रिगर्त देश के कथन से त्रिगर्त देश का पति जाना) विराट के पति मत्स नामक राजा की गायें८हरीं वहां भी भीमसेन ने ९ गौओं को छुडा कर१०मत्स नामक राजा की विजय करी ॥ ३१ ॥ ११अर्जुन ने जीत लिये१२बाण लगाकर१३विराट के राजा ने उत्तरा नामक अपनी पुत्री अर्जुन को दी१४सो१५अपने पुत्र (अभिमन्यु) के लिये लीं ॥ ३२ ॥१६प्रमाण१७छन्द ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका ऐसे सूत के पुत्र का महाभारत सुनाने के संक्षेप में वन और विराट पुर की कथा के संक्षेप का इकीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २१ ॥ और आदि से तिरसठ मयूख हुए ॥ ६३ ॥

पज्झटिका

अब सुनहु पर्व उद्योग५नाम, संग्राममूल कुरुकुल बिराम[1] ॥
तहँ प्रथम सुजोधन१विजय[2]१दोय२,हरि वरन[3] द्वारका प्राप्त होय॥१॥
पुनि दुहुन२कहिय रन करहु भीर[4], पहिचानि कह्यो हरि भक्ति पीर॥
मैं सचिव[5] निरायुध[6] एक१ओर,इक१घाँ[7] अच्छोहिनि[8] कटक[9] घोर॥२॥
इनमाँहिं कोन किहिं द्यौं१अबार, सेना लिय नृप[10]२तब जानि सार॥
लिय कृष्ण निरायुध सचिव पत्थ३,पुनि अवर नृपन आगम४समत्थ३
कुरुराज हं[11] ल्यो नृप सल्य आत५, दै गुप्तभोग छल हित दिखात॥
पुनि सल्ल्य आय नृप धर्म पास६, तहँ कहिय इंद्र जय७वृत्र[12] नास८॥
दिय द्रुपद पुरोहित उत[13] पठाय९, कहि सुनि गजपुर[14]तैं सोहु आय१० ॥
पठयो पुनि संजय भूप[15] अंध११, मिलि सोहु गयो लखि इन[16] प्रबंध१२
अच्युत[17] अरु पांडव२सुनि अभिन्न[18], धृतराष्ट्र प्रजागर[19] रोग लिन्न१३॥
दिन्नों तहँ अंधहिं बिदुर ज्ञान१४, पुनि सनतसुजातहु दिय१५सुज्ञान॥
प्रभु[20]वहुरि हस्तिनापुर पधारि, हितकहि पत दं[21] पिउन न लियधारि १६॥

अब उद्योग नामक पर्व को सुनो जो संग्राम का मूल और कुरुकुल का १ नाश रूप है उसमें प्रथम दुर्योधन और २ अर्जुन कृष्ण को ३ वरने (स्वीकार करने) को द्वारका गये ॥ १ ॥ ४ सहाय करो, तब कृष्ण ने पांडवों की अपने में भक्ति और उनकी पीड़ा देख कर कहा कि एक ओर तो मैं अकेला ६ विना आयुध ५ मन्त्री (सलाहकार) होकर रहूंगा ७ और एक ओर मेरी एक ८ अक्षौहिणी भयंकर ९ सेना रहैगी ॥ २ ॥ इस समय इनमें से किसको क्या दूं इस पर १० दुर्योधन ने ॥ ३ ॥ ११ मारवाड़ का राजा शल्य पांडवों की मदत पर जाता था जिसको गुप्त रीति से खानपान पहुंचा कर दुर्योधन ने अपनी ओर हरण करलिया. फिर शल्य ने युधिष्ठिर के पास जाकर इन्द्र ने १२ वृत्रासुर को मारा सो कथा कही ॥४॥ १३ कौरवों को समझाने के लिये द्रुपद ने अपने पुरोहित को १४ हस्तिनापुर भेजा सो कह सुन कर पीछा आया फिर १५ धृतराष्ट्र ने संजय को भेजा सो १६ पांडवों का प्रबन्ध देख कर इनसे मिल गया ॥५॥ १७ कृष्ण और पांडवों को १८ एक सुन कर १९ निद्रा नहीं आने का ॥ ६ ॥ २० कृष्ण हस्तिनापुर गये २१ तो भी कौरवों ने नहीं माना

तहँ दंभोद्भव[1] आख्यान१७जानि, मातलि वर खोजन१८पुनि प्रमानि
तदनंतर[3] गालव मुनि चरित्र१९, विदुलासुत अनुसासन२०पवित्र ॥
हरि दुष्ट[5] कर्ण१नृप२मंत्र पाय, दिय सबन जोग[6]प्रभुता दिखाय॥८॥
कर्णहिं[7] वलि निज रथ कन्ह थप्पि, कृष्णा विभाग हित हुकम अप्पि
राज्यादि लोभ दीने अनेक२१, मानी न एक१छ्खर२२वीर टेक।९।
हरि वहुरि पांडवन पास आय, सब हित[10] उदंत[11] अक्खिय२३[12]सुभाय।
सुनि पांडवेय[13] हुव[14] समर सज्ज२४, प्रस्थान[15] रचिय२५करि सिंहगज्ज॥
चतुरंग[16] उभय२हंकिय२६अचूक, पठयो कुरुनृप दूतहु उलूक[17] २७ ॥
पुनि रथ आतिरथ संख्या२८प्रमानि, अंबोपाख्यान[18]२९हु तत्थ जानि।

॥ दोहा ॥

सत रु छिंयासी १८६ कहिय मुनि, उद्यम[19]मैं अध्याय ॥
खट६सहस्र खट६सत नवति, अठ६६९८वृत्त[20] समुदाय॥ १२ ॥
इम उद्योग समाप्त हुव, विग्रह[21]१ संधि[22]२ निधान[23] ॥

यहां परशुराम ने राजा १ दंभोद्भव और नर के युद्ध का आख्यान कहा और फिर वरुण की कन्या के लिये वर खोजने को २ मातलि गया जिसकी कथा है ॥ ७ ॥ ३ जिस पीछे विश्वामित्र के शिष्य गालव की कथा है, और फिर विदला नामक क्षत्रियजाति की स्त्री ने उपदेश देकर अपने पुत्र को वीर बनाया जिसका आख्यान है. ४ कृष्ण ने ५ दुष्ट कर्ण और दुर्योधन की कृष्ण को कैद करने की सलाह का भेद पाकर उनको अपनी ६ योगप्रभुता (वैराटरूप) दिखाया ७ फिर कृष्ण ने कर्ण को अपने रथ पर बिठा कर दुर्योधन को छोड़ कर पांडवों से मिल जाने के अर्थ राज्यादि अनेक लोभ दिये जिस में यह भी कहा कि ८ द्रौपदी एक एक वर्ष एक एक पति के पास रहती है उनकी जब पांचों वारी (ओसरा) पूरी होजावेगी तब छठे वर्ष तुम्हारे पास भी रहेगी परन्तु वीरपन की टेक से ९ कर्ण ने एक नहीं मानी ॥ ९ ॥ १० वृत्तान्त ११ कहा १२ श्रेष्ठ रीति से १३ पांडव १४ युद्ध के लिये तैयार हुए १५ गमन ॥ १० ॥ युद्ध में नहीं चूकनेवाली दोनों सेना १६ चलीं उस समय दुर्योधन ने १७ उलूक नामी पुरुष को दूत करके पांडवों के पास भेजा १८ वहां पर काशिराज की कन्या अम्बा को भीष्म हरलाये थे जिसकी कथा है।११॥१९ उद्योगपर्वमें २० छन्दोंका समूह है॥१२॥ इसप्रकार उद्योगपर्व समाप्त हुआ जो २१ विग्रह (युद्ध) २२ सन्धि [मिलाप] का २३ घर है

भीष्म पर्व ६ आरंभ अब, अर्थ बिचित्र बिधान ॥ १३ ॥

॥ पज्झटिका ॥

तँहँ प्रथमखंड जंबू प्रमान १, पुनि होन धर्म दल सीदमान २ ॥
कलकैलरनमाच्चिगतुमुल३कोह,फाल्गुनहुवतत्थहिमग्नमोह४ ।१४।
हरि मोह हन्यो५ दै ज्ञानगूढ, पुनि भीष्म लख्यो अति बल प्ररूढ६॥
तजि रथ मलंगि जदुबंससक्र, भीसम पर दोरे पकरि चक्र ७ ।१५।
पुनि पत्थ सिखंडी ओट पाय, दै बान महाव्रत दिय गिराय८ ॥
सरसज्जा संतनु सुत सयान ९, उपबर्ह दयो जय मारि बान॥१६॥

॥ दोहा ॥

एक १ सत रु अत्यष्टि ११७ मित, अत्थ कहिय अध्याय ॥
छंद सहँस सर५अष्ट८सत, चउरासी५८८४जुत लाय । १७ ।

॥ पज्झटिका ॥

अब द्रोनपर्व७बर्नान विबेक, तँहँ गुरुहि सैन्यपति अभिषेक १ ॥
संधाहु जुधिष्ठिर गहन लैन२, जय पुनि संसप्तक जुद्ध दैन३ ॥ १८॥
अरु सुप्रतीकै सामंज अरोहि ४,भगदत्त मरयो५,जय संग सोहि ॥
कुरुसेन महारथ समिटि सर्ब, अभिमन्यु हन्यो६विक्रम अखर्व।१९।
लै पत्थ नियम तब हनिय साथ, अक्खोहिनि सप्त७रु सिंधुनाथ८

अथवा विग्रह और संधि ही हैं धन जिसका ॥ १३ ॥
भीष्मपर्व में प्रथम जम्बूद्वीप प्रमाण है फिर १ युधिष्ठिर की सेना का २ कंपायमान होना और युद्ध का ३ कोलाहल४ मच कर ५ भयंकर ६ हाका होना और ७ अर्जुन का मोह में डूबना ॥ १४ ॥ ८ अत्यन्त बल पर आरूढ (सवार) ९ यदुवंशियों के इन्द्र (कृष्ण) ॥ १५ ॥ फिर अर्जुन ने शिखंडी की आड में आकर १० भीष्म को गिरादिया ११ भीष्म शरशय्या में सोये वहां १३ अर्जुन ने बाण मार कर १२ तकिया लगादिया ॥ १६ ॥ १४ द्रोण ने युधिष्ठिर को पकड़ने की प्रतिज्ञा ली और अर्जुन ने संसप्तकों को युद्ध दिया (उनसे युद्ध करना स्वीकार किया) १५ सुन्दर अङ्गोंवाले अथवा ईशान दिशा के दिग्गज के समान१६हाथी पर चढ कर अर्जुन के साथ युद्ध करने में भगदत्त मरा और कैरवों की सेना के अतिरथियों ने १७ इकट्ठे होकर १८ बड़े पराक्रमवाले अभिमन्यु को मारा ॥ १९ ॥ और अर्जुन ने नियम लेकर१९सात अक्षौहिणी सेना और२०जयद्रथ को मारा

*जुजुधान१भीम२पुनि फोज फारि, करि पंथ लये हरि१ जय२निहारि
संसप्तकसंग३मारितीर, नवकोटि९०००००००हनैं९पारथप्रवीर ॥
जलसंध१अलंबुस२जातुधान, वीरहु श्रुतायु३बलि बीर्यवान ॥ २१ ॥
भट सौमदत्ति४द्रुपद५रु बिराट६, धृतराष्ट्र पुत्र बहु बीर बाट ॥
नारायन गन१गोपाल ज्यौंहिं, पाखान सस्त्र२हैडंब१त्यौंहिं ॥ २२ ॥
इत्यादि वहुत या पर्वबीच, तजि देह गये१०करि रुद्दिर कीच ॥
पुनि द्रुपदपुत बिनु सस्त्र द्रोन, मारे११कुबुद्धि किय उचित सो न॥२३॥
गुरुपुत्र कुपित तब बल बिथारि, नारायणाऽस्त्रमाविंचकार१२ ॥
आग्नेय१३रुद्र१४माहात्म्य जानि, द्वैपायन आगम१५पुनि प्रमानि ॥२४॥
हरि१अर्जुन२महिमा कथन१६आप्त, इम द्रोनपर्व७सप्तम७समाप्त७॥
नभतुरगचंद्र१७०अध्यायअत्थ, नवगगनअंकवसु८९०९वृत्तसत्थ२५
अब कर्णपर्व ८ अष्टम ८ अभूत, तहँ मद्रराज हुव कर्ण सूत१ ॥
पुनि त्रिपुर हनन आख्यान२नाम, मद्रेस१कर्ण२संवाद३तांम॥२६॥
आख्यान हंसकाकीयै४जत्थ, गुरुपुत्र समर५अतिघोर तत्थ ॥
नृप पांड्य१दंड२अरु दंडसेन३, मारे द्विज६कैं बहु खंड सेन ॥२७॥

*सात्यकि और भीमसेन ने १ कृष्ण २ अर्जुन को ३ युद्ध में ४ राक्षस ॥ २१ ॥ ५ वीरों के मार्ग में ६ पत्थर ही है शस्त्र जिसके ऐसा ७हिडंबा का पुत्र (घटोत्कच) ॥२२ ॥ ८ रुधिर का कीचड़ करके ९ धृष्टद्युम्न ने ॥ २३ ॥ १० अश्वत्थामा ने पराक्रम फैला कर ११ नारायण अस्त्र को १२ चलाया फिर अश्वत्थामा ने अग्नि अस्त्र चलाया जिसको अर्जुन ने रुद्र (पाशुपत) अस्त्र से व्यर्थ करादिया इसका अश्वत्थामा ने बहुत शोक किया इस कारण से १३ वेदव्यास वहां पर आये और कृष्ण अर्जुन को तत्वज्ञान १४ के जाननेवाले कह कर महिमा की १५ छन्दों के साथ ॥ २४ ॥ २५ ॥ अब आठवां कर्णपर्व १६ हुआ जिसमें मद्र देश का राजा शल्य कर्ण का १७ सारथि हुआ वहां कर्ण और १९ शल्य का संवाद हुआ २० तहां त्रिपुरासुर के १८ मारने का आख्यान है ॥ २६ ॥ वहीं पर हंस और काक २१ का आख्यान है और वहीं पर अश्वत्थामा का घोर युद्ध है २२ सेना के बहुत टुकड़े कर के ॥ २७ ॥

*बलि कर्ण१ जुधिष्ठिर२ रचत रारि७, दृखं धर्म दबायउ त्रास डारि८॥
अरु धर्म१ पत्थ अन्योन्य क्रोध९, बिजयहिं दियके सवउचितबोध१० ॥
राधेय लखत वृखसेन तास, सुत बिजय हन्यौं११ रन रचत रास॥
पर पूर्व भीम रन तुमुल पारि, दुस्सासनको उर जियत फारि ।२९।
अंजलि भरि करि तस रक्तपान, बुल्ल्यो सुधा न याके समान१२
बलिजुरिग१३ करन१ अर्जुन२ बकारि, मद्रेस१ कन्ह२ जुतविसिखमारि
तँहँ पुहवि कर्ण रथचक्र ग्रास१४, पुनि कर्ण बुलायउ नाग१५ पास॥
रविसुत सु नाग निज रक्खि रोप, अर्जुन पर मुक्किय१६ अनल ओप
जिहिं आत जानि हरि मचक मारि, रथ अवनि ग्रसायो१७ डर निहारि
गजकेतु उतरि तब बल गरीय, ईसा गहि अंच्यो रथ१८ स्वकीय।३२।
भूअखिलतजियनागेसभोग१९, जुनचक्रतदपिनिकस्यो२० कुजोग॥
तिहिं अंतर अर्जुन मारि तीर, हरि हुकम हन्यो राधेय बीर ।३३।

दोहा

अंक तर्क६९ संख्या प्रमित, कर्णपर्व८ अध्याय ॥

---

* फिर १ कर्ण ने २ युधिष्ठिर को भय डाल कर दबा लिया और युधिष्ठिर ३ अर्जुन के ४ परस्पर क्रोध हुआ उसमें अर्जुन ने दुर्वचन कहे इस कारण ५ अर्जुन आत्मघात करके मरने लगा तब ६ कृष्ण ने उचितज्ञान ७ दिया ॥ २८ ॥ ८ कर्ण के देखते ९ उस (कर्ण) के पुत्र वृषसेन को युद्ध रूपी रास रचकर अर्जुन ने मारा और १० शत्रु (दुर्योधन) के ११ आगे भीमसेन ने १२ भयंकर युद्ध करके जीतेहुए दुश्शासन की छाती फाड़ कर ॥२९॥ अंजली (धोबा) भर कर लोहू पिया और बोला कि १३ अमृत भी इसके बराबर नहीं है १४ फिर ललकार कर कर्ण अर्जुन लड़े १५ शल्य और कृष्ण के भी १६ बाण मार कर ॥ ३० ॥ तहां १७ भूमि ने कर्ण के रथ के १८ पहिये को ग्रस लिया जहां कर्ण ने नागपाश को बुलाया और १९ कर्ण ने सर्प को अपने २० बाण में रख कर २१ अग्नि के समान अर्जुन पर छोड़ा ॥३१॥ उस बाण को आताहुआ देख कर अर्जुन के मरने का भय देख कर कृष्ण ने मचक लगा कर अर्जुन के रथ को २२ भूमि में घुसा दिया जिससे वह बाण ऊपर होकर व्यर्थ चलागया फिर २३ कर्ण ने उतर कर २४ बड़े बल से अपने रथ के २५ ओदण पकड़ कर खींचा॥३२॥ २७ सम्पूर्ण भूमि ने २८ शेष नाग के २९ फणों को छोड़ दिया ३० परन्तु खोटे योग से वह पहिया नहीं निकसा उस अवकाश में कृष्ण की आज्ञा से अर्जुन ने कर्ण को मारलिया ॥३३॥ ३१ प्रमाण

वेद तर्क नव वेद४९६४बलि, सकल*वृत्त**समुदाय ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारतसमासयुद्योग५भीष्म६द्रोण७कर्ण८पर्व४कथासमसनाध्यायवृत्तसंख्यानं द्वाविंशो मयूखः ॥ २२ ॥ आदितश्चतुःषष्टितमः ॥ ६४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पज्झटिका

अब सल्यपर्व९बर्णन नवीन,कुरुपति निज दलपति सल्य कीन१॥
अभिसेक कर्म याकै२हु अत्थ, कौमार नाम आख्यान३तत्थ ॥१॥
बटि बीर बहुरि रथ जुद्ध वृत्त४, कुरुमुख्य गिरन बहु५बिसिख कृत्त६॥
लरि धर्मराज लिय सल्य६प्रान, सहदेव सुबलपुत्रहिं जघान७ ॥२॥
जलथंभन रचि विद्या विसेस८, किय जाय सुजोधन ऱ्हद निवेस॥
यहखबरिलुब्धकंनभीमजानि,बुल्ल्योसुजायजलतटकुबानि९ ॥३॥
कटुबैन सुनत कुरुपति कराल,इह छोरि कढ्यो जिम कुपित व्याल
नृप१ भीम२ गदारन रचिग१०जत्थ, सीरीहु तत्थ आये११समत्थ॥४॥

---

*वृत्त**छन्दों का समूह ॥ ४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिसका ऐसे सूतपुत्र के संक्षेप से महाभारत सुनाने में उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण पर्व की संक्षेप कथा, अध्याय और छन्दों की संख्या का बाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २२ ॥ और आदि से चौसठ मयूख हुए ॥ ६४ ॥

१ दुर्योधन ने शल्य को अपना सेनापति किया और २ यहां पर शल्य का अभिषेक किया तहां३स्वामिकार्तिक ने देवताओं का सेनापतिपन किया सो आख्यान हुआ ॥ १ ॥ बहुत वीर परस्पर बंट कर युद्ध का ४ वृत्तान्त और ५ बाणों से ६ कट कर कौरवों के मुख्य वीरों का गिरना फिर ७ युधिष्ठिर ने लड़ कर शल्य के प्राण लिये और सहदेव ने ८ शकुनि को ९ मारा ॥२ ॥१० शिकारियों से ॥ ३ ॥ ११ क्रोध किया हुआ सर्प टिपारे में से कढै ऐसे १२ बलदेव भी वहां आगये ॥ ४ ॥

सारस्वत तीर्थन पुराय बात१२, परिबो गदान द्वव२चंडपातं १३ ॥
कुरुपतिहिं भीम घनघात घाय, करि सक्थिभंग दिन्नौं गिराय ॥५॥
औसुहि मर्‍यो न खिल कछुक आयु१४,
बलि बढिय१५ बायुसुत अपर बायु ॥
एकोनसष्ठि५९ अध्याय अत्थ,नभ पक्ष नेत्र गुन३२२०वृत्त सत्थ ।६।

मुक्तादाम ॥

सुनौं अब सौप्तिकपर्व१०सुभोज, जहाँ गुरुपुत्र१रु गोतम२ भोज३
पर्‍यो हत ऊरु सुजोधन पाय, कह्यो हम मारत पांडव जाय१ ।७।
चले कहि तीन३हि यौं छलकाम,लयो मगमैं बटठां बिसराम २॥
लखे तहँ पेचक पातितँ काक३,भयो गुरुपुत्रहु तच्छलभाक४।८।
धसे दलमैं भट तीन३हि गुप्त,अनीक हन्यौं सिविरस्थित सुप्त ५।
कियो द्विजसौं तँहँ रक्खसै जंग६,सुविप्र कर्‍यो सिवके बलभंग७।९।
हनैं सब सोवत द्रौपदि पुत्त८, हन्यौं द्रुपदात्मज बंधुन जुत्त९ ॥

सारस्वत नामक तीर्थों की १ पवित्र कथा हुई और भीमसेन और दुर्योधन के युद्ध में दोनों की गदाओं का २ भयंकर पतन हुआ वहां भीमसेन ने दुर्योधन को घने घावों से घायल करके ३ जंघा तोड़ कर गिरा दिया ॥ ५ ॥ कुछ आयु ९ बाकी होने के कारण ४ शीघ्र नहीं मरा ६ पुनि ७भीमसेन और ८ ऊर्ध्वश्वास बढे अर्थात् विजय पाने से भीमसेन बढा और दुर्योधन के अन्तिम श्वास बढे ९ छन्दों के साथ ॥६॥ १०अश्वत्थामा ११कृपाचार्य१२कृतवर्मा इन तीनों ने १३ टूटीहुई जंघा से पड़े हुए दुर्योधन को पाकर कहा कि हम जाकर पांडवों को मारते हैं ॥ ७ ॥ यह कह कर छल की कामना से तीनों चले और मार्ग में एक१४बड़ के वृक्ष नीचे विश्राम लिया वहां१५ उलूक (घूघू) के१६मारे हुए काकों (कागलों) को देखे १७ वही अश्वत्थामा को१८छल सिखानेवाला होगया अर्थात् इन मरेहुए काकपक्षियों को देख कर अश्वत्थामा ने यह उपदेश ग्रहण किया कि जिस प्रकार सोते हुए काकों को उलूक ने मारा है इसीप्रकार हम भी अपने शत्रुओं को सोतेहुओं को मारें ॥ ८ ॥ १९ डेरों में २० सोती हुई सेना को मारी वहां एक २१ राक्षस ने अश्वत्थामा से युद्ध किया जिसको उस ब्राह्मण ने महादेव के वरदान के बल से मारा ॥ ९ ॥ २२ पुत्र २३ धृष्टद्युम्न को भाइयों सहित मारा, इन (अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा) तीनों वीरों से

रहे तिन सौं खिल पंच५हि भ्रात, तथा हरि१ सात्यकि२ए सब सात७।१०॥
बच्यो द्रुपदात्मजको इक१सूत११, कह्यो तिहिं पांडुन सौं यह भूत१२
सुन्यों जब द्रौपदिपुत्र बिनास१३, तज्यो तब अन्न लह्यो अतित्रास१४
चल्यो धँकि बिप्रहिं मारन भीम१५.भयो द्विजको डर१६,संगर सीम
अपांडव होहु मही यह जंपि, तज्यो द्विज अस्त्र सु ब्राह्म१७प्रकंपि
न होहु कह्यो हरि हूतिहिं पेलि१८, लयो सुहि अस्त्रहि सौं जय झेलि१९
कृपीसुतकौं लखि यौं प्रति पाप, भये द्विज१०व्यास१परस्पर साप२०
सिरोमनि व्हाँ द्विजको जब काढि, दयो सुहि द्रौपदिकौं२१हित बाढि
इहाँ धृति१८मान कहे अधि१२आय, खघोटक वारन८७०वृत्त१३गिनाय।१४।
अबैं स्त्रियपर्व११महादुख ओकैं, भयो नृप अंधहिं पुत्रन सोक १ ॥
मिलावहु भीमहिं१६अक्खिय अंध२, रच्यो हरि रक्खन ताहि प्रबंध३
अयोमय१७लै प्रतिमा१८तिहिं दिन्न४, सुहीमति लोचन चूरन किन्न५॥
दयो अनुजात२०हु अंधहिं ज्ञान६,गये सबही पुनि जुज्झन२१थान७।१६।
भये तहँ बीर२२बधून बिलाप८, तँ२३च्यो महिखी२४जुत अंधहु ताप ९॥

पांचों भाई पांडव, कृष्ण और सात्यकि ये सातों १ बाकी बचे ॥ १० ॥ २ धृष्टद्युम्न का एक सारथि ३ यह बीता हुआ वृत्तान्त ॥ ११ ॥ ४ क्रोध में जल कर ५ युद्ध की सीमा में अश्वत्थामा को भय हुआ इसकारण से धूज कर विना पांडवों के भूमि होजाओ यह६ कह कर ब्रह्मास्त्र छोडा ॥ १२ ॥ कृष्ण ने कहा कि अपांडवी भूमि मत होओ, इस पीछे उस७अस्त्र को८अर्जुन ने अपने अस्त्र से झेल लिया ९ अश्वत्थामा को इसप्रकार अत्यन्त पापी देखकर वेदव्यास ने उसको तीन हजार दिव्यवर्षों तक निर्जन वन में घूमते रहने का शाप दिया और उस अश्वत्थामा ने भी वेदव्यास को पीछा शाप दिया कि हम तुम साथ ही घूमेंगे ॥१३॥ वहां पर अर्जुन ने अश्वत्थामा के१०मस्तक का मणि निकाल कर हित को बढा कर द्रौपदी को दिया ११ प्रमाण१२ अध्याय १३ छन्द ॥१४॥ १४ घर१५ धृतराष्ट्र को १६ धृतराष्ट्र ने कहा कि भीमसेन को मुझसे मिलाओ सो कृष्ण ने भीमसेन को बचाने का पहिले ही प्रबन्ध रच रक्खा था ॥१५॥ १७ लोहमयी१८मूर्ति धृतराष्ट्र को जिसको १९ धृतराष्ट्र ने चूर्ण कर दी वहां पर२० विदुर ने धृतराष्ट्र को ज्ञान दिया फिर२१जहां पर युद्ध हुआ था वहां गये ॥ १६ ॥ २२ वीरों की स्त्रियों का विलाप हुआ वहां २३ राणी सहित धृतराष्ट्र ताप से २३ तबका (सुकुड़) गया.

लखे सुत१भ्रात२पिता३कुल नष्ट१०,दयो हरिबोध११निवारन कष्ट॥
तथा सबको सुचिदाहैं सुधारि१२, लग्यो तिन्ह दैन जुधिष्टिर बारि।
पृथा तँहँ आक्खिय धर्महिं एहु, ममात्मजैं कर्णहुकौं जल देहु१४॥
कियो सुनि तीव्र जुधिष्टिर ताप१५, तदौं निज मातरमेव शशाप१६
अहो अबसौं मम साप प्रपात, रहो मत नारिनके हिय बात १७॥

॥ दोहा ॥

सप्तबीस २७ अध्याय यँहँ, वृत्त सप्त ७ सत ज्यौंहि ॥
पचहत्तरि ७७५ संजुत कहे, सांति पर्ब १२ अब त्यौंहि॥२०॥
मारि पिता १ भ्राता २ स्वसुर ३, सुत४मातुल५सुहृदादि६॥
भो बिरक्त पुनि धर्मनृप १ गिनि अनित्य देहादि ॥
बान कसिपु थित देवब्रत, कहे धर्म आख्यान २ ॥
भूपनकै श्रोतव्य जे, जे सु मुमुक्षु सुज्ञान ॥ २२ ॥
कहिय राज १ आपद २ धरम, मुक्ति धरम ३ नादेय ४॥
दानधर्म ५ आदिक कहे, सांतिपर्व १२ यह श्रेय ॥ २३ ॥
व्यास कहे अध्याय यँहँ, अंकअग्गि गुन ३३९ मान ॥
सप्त गगन मुनि वेद ससि१४७०७,वृत्त बिचित्रविधान॥२४॥
अब अनुसासन १३ आक्खियत, बिबिध कहे जँहँ दान १ ॥
तिनके फल २ अरु जोग ३ पुनि, पात्र विसेस ४ प्रमान ॥

१कृष्ण ने ज्ञान दिया॥१७॥२अग्निमें३ जल देने लगा वहां कुन्ती ने कहा कि कर्ण भी मेरा ४ पुत्र था जिसको भी जलाञ्जलि दो ॥ १८ ॥ ५ उसी समय अपनी ६ माता को ही शाप दिया कि ७ धिक्कार है तुझको जो इस समय तक मुझको यह बात नहीं कही कि कर्ण तेरा भाई है इसकारण मेरे शाप के पड़ने से अब से स्त्रियों के हृदय में बात मत रहो ॥ १९ ॥ ८ मामा ९ मित्र आदि १० शरीर आदि को अनित्य जान कर युधिष्ठिर विरक्त हुआ ॥ २० ॥ ११ वे आख्यान राजाओं के सुनने योग्य और १२ मुमुक्षु (संसार रूपी गांठ को भेदने का प्रयत्न करनेवाले) को श्रेष्ठ ज्ञान देनेवाले हैं ॥ २२ ॥ १३ राजधर्म१४ भीष्म ने ॥ २३ ॥ १५ अग्नि १६ प्रमाण १७ छन्द विचित्र रचना के ॥ २४ ॥ १८ अब अनुशासन पर्व कहते हैं. जिसमें अनेक प्रकार के दान, उनके फल, योग और पात्र विशेष हैं. ॥ २५ ॥

जोग ५ हु पुनि आचार ६ जिम, सत्य परागति ७ जुक्त ॥
महाभाग गो द्विजनके, धर्म रहस्य ८ हु उक्त ॥ २६ ॥
भीसमस्वर्गप्रयान ९ यँहँ, तर्क इंद्र १४६ अध्याय ॥
वृत्त गगन नभ गगन बसु८०००, अनुसासन१३बिच आय ॥ २७ ॥
अश्वमेध १४ आरंभ अब, सुनहु कथा मतिमान ॥
सुभ मरुत्त १ संबर्त २ को, जहँ बिचित्र आख्यान १ ॥२८॥
कनक कोस पावन २ कथन, जनम परिच्छित ३ काल ॥
अस्त्रदग्ध यह गर्भगत, एख्यो ४ कृष्ण कृपाल ॥ २९ ॥
पुनि हय फेरन सत्र हित, भाल बंधि जयपत्त ५ ॥
जत्थँ लयो यह बंधि हय, तुमल्ल भयो रन तत्त ६ ॥ ३० ॥
बभ्रुबाहके समर बिच, भयो विजयँ असुभंग ७ ॥
सिर खोजन ८ जित्तन उरग ९, आनन अमृत १० प्रसंग ॥३१॥
नकुलादिक आख्यान ११ पुनि, इम हयमेध १२ अमंद ॥
गुन नभ भू १०३ अध्याय यँहँ, ख नयन गुनगन३३२०छंद ॥३२॥
आश्रमबास१५ उदंत अब, सुबलसुता१ अरु अंध२ ॥

योग्य,आचार और १ परमेश्वर में गति होना, २ अत्यन्त धन्य गौ और ब्रा ह्मणों का अभिप्राय सहित धर्म ३ कहा है ॥२६॥ अश्वमेध के आरंभ में यज्ञ कराने के विषय में राजा मरुत्त और संवर्त मुनि के श्रेष्ठ संवाद का विचित्र आख्यान है ॥ २७ ॥ २८ ॥ और महादेव की पूजा करके युधिष्ठिर ने बहुत सोना ४ (स्वर्ण) पाकर अपने ५ भंडार को पवित्र किया जिसकी कथा है फिर ६ गर्भ में गये हुए अस्त्र से जले हुए परीक्षित का जन्म हुआ जिसको कृपाल श्रीकृष्ण ने जीवित करके रक्खा ॥ २९ ॥ फिर ८ ललाट पर ९ विजयपत्र बांध कर ७ यज्ञ के घोड़े को फेरा सो १० जहां पर इस घोड़े को बांध लिया वहीं पर घोर ११ संग्राम हुआ ॥ ३० ॥ मणिपुर के राजा अर्जुन के पुत्र बभ्रुवाहन के युद्ध में १२ अर्जुन का १३ मृतक होना और अर्जुन की स्त्री नागकन्या उलूपी का अर्जुन को जीवित करना १४ सर्पों को जीतना ॥३१॥ राजा युधिष्ठिर का यज्ञ समाप्त होने पर एक १५ नोल्या (जंतुविशेष) ने राजा के यज्ञ की निन्दा और एक ब्राह्मण के प्रस्थ (पसेरी) भर अन्न दान की महिमा की उसका आख्यान आदि की कथा है ॥३२॥ अब आश्रमवास पर्व का १६ वृत्तान्त है जिस में १७ गान्धारी १८ धृतराष्ट्र विदुर और

बिदुर३रु कुंती४ बन गये१, तजि सबसौं संबंध ॥ ३३ ॥
अंध लखे पुनि मृतकसुत, जीवत२ व्यास प्रसादं ॥
गयो बंधूजुत परमगति, बलि वह३ छोरि बिखादं ॥ ३४ ॥
संजय१ बिदुर२ हु बपुं तजिय४, नारद१ धर्म२ मिलाप५ ॥
सुरमुनिसौं भूपति सुन्यौं, जदुकुल कदन६ दुरापं ॥ ३५ ॥
नयन बेद४२ अध्याय यँहँ, पद्य सु इक्क१ हजार ॥
पंच५ सत रु खट१५०६ मिति प्रकट, अब मौसल१६ उच्चार ।३६।
तँहँ जादव आपानं रचि, लवणोदधिकी तीर ॥
एरकं संबनसौं सकल, कटे परस्पर१ बीर ॥ ३७ ॥
रामं१ कृष्णा२ अवसेस रहि, निज कुटुंबकौं मारि ॥
छोरि देह संस्कार हित, गये स्वलोकं पधारि२ ॥ ३८ ॥
बिजय आय संस्कार बिधि, देहन किय सुचि दाह३ ॥
सु सुनि जुधिष्ठिर सोक सह, रच्यो बिरक्तन राह४ ॥ ३९ ॥
बसु८ अध्याय रु यँहँ बिदित, कृति गुन३२०पद्य प्रमान ॥
निलय तजिय जँहँ पांडवन, सु अब महाप्रस्थान१७ ॥ ४० ॥
भ्रात पंच५ कृष्णा१ सहित, लगे हिमालय राह१ ॥
पावकं बिच मिलि पत्थसौं, चाप लयो२ निज चाह ॥ ४१ ॥

कुन्ती सब से सम्बन्ध छोड कर वन में गई ॥३३॥ वेदव्यास की १ प्रसन्नता से धृतराष्ट्र ने अपने २ मरे हुए पुत्रों को देख ४ फिर विषाद ५ को छोड कर ३ स्त्री सहित मुक्त होगया ॥ ३४॥ ६ शरीर छोड ७ नारद मुनि युधिष्ठिर से मिले ८ नारद से युधिष्ठिर ने १० काठिनाई से होनेवाला ९ नाश सुना ॥ ३५ ॥ ११ छन्द १२ प्रमाण १३ मूसल पर्व कहते हैं ॥३६॥ १४ पानगोष्ठि (मतवाल) १५ एरा (विना ग्रन्थि तृणविशेष) रूपी १६ वज्रों से ॥ ३७ ॥ १७ बलदेव १८ बाकी रहे १९ अग्नि संस्कार (जलाने) के लिये अपने शरीर को छोड कर २० अपने लोक में पधार गये ॥ ३८ ॥ २१ अर्जुन ने आकर मृतक संस्कार करके २२ अग्नि में दाह किया ॥ ३९ ॥ २३ पांडवों ने अपने घर को छोड कर वन गमन किया उसका नाम २४ महाप्रस्थान पर्व है ॥ ४० ॥ पांचों भाइयों ने द्रौपदी सहित हिमालय पर्वत का मार्ग लिया वहां २५ अग्नि ने बीच में मिल कर अर्जुन से अपना दिया हुआ गांडीव २६ धनुष लीहा

अनुज च्यारि४ अरु अंगना*१, गिरे ति** देखे नाँहिं२ ॥
गयो जुधिष्ठिर देह जुत, महादुर्लभ मग माँहिं ॥ ४२ ॥
गुन३ अध्याय रु छंद गिनि, बिदित तीन सत बीस३२० ॥
स्वर्गपर्व१८अब देवरथ, आय१लैन अवनीस ॥ ४३ ॥
कुकुर[2] बिन भूपति कह्यो, मैंहु चढौं न बिमान२ ॥
लखि धीरज स्वानहु स्ववपु, तजि किय संग प्रयान३ ॥ ४४ ॥
देवदूत दिय व्याजसौं, धर्महिं नरक दिखाय४ ॥
सुनें जुधिष्ठिर भ्रात निज, क्रंदत पीडन पाय५ ॥ ४५ ॥
नभगंगा बिच न्हाय पुनि, परिहरि मानव देह ॥
बसे जुधिष्ठिर धर्मबल, गुन नुत निर्जर गेह६ ॥ ४६ ॥
यह जानहु अष्टारहौं, स्वर्गारोहन१८ नाम ॥
सर५ अध्याय रु दोय सत, अंक२०९वृत्त अभिराम ॥ ४७ ॥
ए धृति१८ सम्मित पर्व इम, जो इनसौं कछु सेस ॥
है सुहि खिल हरिवंस१९मैं, उचित रीति उपदेस ॥ ४८ ॥
इक१ सहँस१०००अध्याय तँहँ, ख नभ गगन रवि१२०००छंद ॥
यहै पर्व संग्रह कह्यो, भारतको सानंद ॥ ४९ ॥

लिया ॥ ४१ ॥ चारों छोटे भाई और अपनी * स्त्री (द्रौपदी) हिम से गल कर मार्ग में गिर गई ** तिनको युधिष्ठिर ने पीछे फिर कर नहीं देखा और इसी शरीर सहित दुर्लभ मार्ग में गया ।४२। अब स्वर्गारोहण पर्व कहते हैं. जिसमें १ राजा युधिष्ठिर को लेने देवरथ आया ॥ ४३ ॥ युधिष्ठिर ने कहा कि मेरे साथ२कुत्ता है इसको भी स्वर्ग में ले चलो तो हम चलें नहीं तो इकले विमान पर नहीं चढें, राजा की यह धीरज देख कर ३ कुत्ते ने भी ४ अपना शरीर छोड कर साथ गमन किया ॥ ४४ ॥ देवदूत ने ६ युधिष्ठिर को ५ मिस से नरक दिखा दिये वहां युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को पीड़ा पाकर ७ रोते हुए सुने ॥ ४५ ॥ ८ आकाश गंगा में स्नान करके १० मनुष्य देह को ९ छोड कर युधिष्ठिर अपने धर्म के बल से ११ स्तुति करने योग्य गुणोंवाले १२ स्वर्ग में बसा ॥ ४६ ॥ १३ छन्द १४ मनोहर ॥ ४७ ॥ १५ गिनती का प्रमाण १६ बाकी १७वह बाकी का उपदेश हरिवंश में है ॥४८॥ १८ उस हरिवंश के एक हजार अध्याय ॥ ४९ ॥

षट्पदी ॥

पढहु सांग६ श्रुति च्यारि४ पढहु उपनिषद अर्थ जुत ॥
भारत बोध३ बिहीन४ नाँहिं५ वह होय चतुर नुत ॥
मंजन पुष्कर नीर करहु क्यों भारत बोधित ॥
धेनु सतक१००क्यों देहु शृंग हाटक जरि सोधित ॥
दिनभूत सकल अजरत दुरितं पश्चिम संध्या जापतैं ॥
निसभूत पूर्व संध्या पढत भारत पुराय प्रतापतैं ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारतसमासे शल्या९ऽऽदिहरिवंशान्तैकादश११पर्वकथासमसनाध्यायवृत्तसङ्ख्यानग्रन्थमाहात्म्यसूचनंत्रयोविंशति२३तमो मयूखः ॥ २३ ॥ आदितः पञ्चषष्टितमः ६५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सूत कहिय इम मुनिन सन, भारत प्रथम समास ॥

अब,माहात्म्य कहते हैं कि छःहों अंगों१साहित चारों२वेद और अर्थ सहित उपनिषद् पढो परन्तु भारत के३ज्ञान४विना५स्तुति करने योग्य चतुर नहीं होसक्ता और जिसको भारत का ७ ज्ञान है वह पुष्कर में क्यों ६ स्नान करे और शुद्ध किये हुए १० सोने (कुन्दन) से जड़ेहुए ९ सींगों की ८ सौ गौयें क्यों देवै क्योंकि ११दिन में पैदाहुए सम्पूर्ण १२पाप सायंकाल में महाभारत के जप करने से, और रात्रि के १३ पैदाहुए पाप १४ प्रभात के जप के पुण्य के प्रताप से जल जाते हैं ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के एक समय में होनेवाले सूतपुत्र के संक्षेप से महाभारत सुनाने में शल्य पर्व को आदि लेकर हरिवंश के अन्त तक ग्यारह पर्वों की कथा का संक्षेप और अध्याय छन्दों की संख्या और ग्रन्थ माहात्म्य के कहने का तेईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥ और आदि से पैंसठ मयूख हुए ॥ ६५ ॥

सूत ने शौनकादि मुनियों १५ से इस प्रकार. महाभारत का १६संक्षेप कहा

तिमहि लोमहरखन तनय[1], वरनन लग्गो व्यास[2] ॥ १ ॥

पज्झटिका

जनमेजय विरचिय दीर्घ[3] सत्र, कुरुछेत्रमाँहिँ सह बंधु तत्र ॥
श्रुतसेन१भीम२अरु उग्रसेन३, त्रय३बंधु सत्र रच्छक बलेन[4]॥ २ ॥
अध्वर[5] निकेत[6] इक आय स्वान, तिन्ह ताडित हुव रोरूयमान[7] ॥
गो पुनि भजि जननी निकट ताहि, सरमाँहु[8] कह्यो क्यौं रुदन[9] आहि।३।
बुल्लियँ[10] तब मंडल[11] बारबार, पारिच्छित[12] बंधुन किय प्रहार ॥
यह सुनत सुनी[13] मखथान आय, रचि अनख[14] नृपहिँ बुल्ली रिसाय ॥४॥
मखधृत[15]हु लख्यो नहिँ मम अपत्य[16], अपकार कछु न किय साधु सत्य ॥
बंधुन मम ताडित तदपि बाल[17], तसमात[18] साप झेलहु नृपाल ॥५॥
ऐहैं अदृष्टभय[19] तव कुकाम[20], इम सप्प[21] दये सरमा[22] जगाम[23] ॥
तव अतिविखाद[24] कुरुराज पाय, मख करि समाप्त इभनगर[25] आय ॥६॥
द्रुत[26] सापत्रास मेटन उदार, मम है न पुरोहित किय विचार ॥
कहुँ समय तदनु[27] मृगया[28] पधारि, बन इक मुनि आश्रम लिय निहारि ७
जहँ द्विज श्रुतश्रवा१नामधेय[29], सोमश्रवा२सु तस[30] तनय श्रेय[31] ॥
तहँ जाय विरचि विन्नति विसेस, कर जोरि कहिय मुनिप्रति[32] नरेस ।८।

इसीप्रकार वहीं लोमहर्षण नामक सूत का १पुत्र (उग्रश्रवा) २ विस्तार करके कहने लगा ॥ १ ॥ ३ बडा यज्ञ ४ बलवान् अथवा तीनों भाई बल करके यज्ञ के रक्षक हुए ॥ २ ॥ उस ५यज्ञ के ६ स्थान में एक कुत्ता आया सो राजा जनमेजय के तीनों भाइयों से पीट खाकर ७ रोया और अपनी माता के पास गया वहां ८ कुत्ती ने कहा कि क्यों रोता ९ है ॥ ३ ॥ तब ११ कुत्ता बारंबार १० बोला कि १२ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) के भाइयों ने मुझे मारा १३कुत्ती १४क्रोध करके राजा से बोली ॥४॥ १५यज्ञ में धरीहुई वस्तु को मेरे १६ पुत्र ने देखी ही नहीं और इस सत्यवादी श्रेष्ठ कुत्ते ने कोई बिगाड़ भी नहीं किया तो भी मेरे १७ बालक को तुमारे बंधुओं ने मारा है १८इस कारण से हे राजा शाप झेल ॥५॥ तुझ२०खोटे काम करनेवाले को १९बिना जाना हुआ भय आवेगा, इसप्रकार २१शाप देकर २२कुत्ती २३ चली गई, तब जनमेजय बहुत२४खेद पाकर यज्ञसमाप्त करके २५ हस्तिनापुर आया ।६। २६जलदी शाप का भय मेटनेवाला २७जिस पीछे २८ शिकार ॥ ७ ॥ २९ श्रुतश्रवा नामवाला ब्राह्मण ३१ श्रेष्ठ ३० उसका पुत्र सोमश्रवा ३२ मुनि

भवदीय पुत्र यह हे मुनीस, मम होहु पुरोहितपन अधीस ॥
सुनि बिप्र कहिय नृप श्रवन[2] धारि, मम रेत[3] पियउ इक सर्पनारि।९।
तामाँहिं भयो यह सुत उदार, विद्या१तप२संजुत दृढ बिचार ॥
याकै नृप है पन गूढ[4] एक, मंगैं सु देत बिप्रन सटेक ॥ १० ॥
जो सकत नियम याको निबाहि, लैजाहु पुरोहित थप्पि याहि ॥
सुहि करि अंगीकृत[5] द्विजहिं संग, आयो लै भूपति द्विरदरंग[6]।११।
बंधुन प्रति तहँ नृप कहिय बात, यह बिप्र कहैं सुनि करहु तात॥
पुनि तच्छसिला जित्तन जगाम, लिय जित्ति वहै जनपद ललाम।१२।
कछु काल पुब्ब[8] आपोदधौम्य, हुव बिप्र महाबुध सील सौम्य ॥
हुव छात्र[10] तीन३ताकै सुधाम[11], आरुणि१उपमन्न्यु२रु बेद३नाम।१३।
आरुणि प्रति इक दिन दिय सुनाय, केदार[12] धसत जल रोकि जाय॥
इहिं सुनत जतन किन्नँ अपार, दर्क[13] तदपि[14] रुक्यो नहिं बेगदार[15]१४
वह सोय भयो केदार ओट[16], रुकि तोय[17] गयो जिम लहत कोट ॥
कतिदिन बिहाय गुरु तत्थ जाय, दै हेलो आरुणि लिय बुलाय।१५।
सुनि बचन उठ्यो आरुणि द्विजेस, गुरु पयन पर्यो अतिनम्र बेस ॥
सो देखि छात्र[18] सेवा प्रसस्त[19], बर दियउ फलहु बिद्या समस्त ॥१६॥

से राजा ने कहा ॥ ८ ॥ हे मुनि ? आप का यह पुत्र मेरा पुरोहित हो-
वै २ हे राजा सुनो, मेरा ३ वीर्य एक सर्पिणी ने पीलिया था ॥ ९ ॥ इसके
एक ४ छिपाहुआ प्रण (नियम) है कि जो ब्राह्मण इससे मांगता है वह उ-
सको हठपूर्वक देदेता है ॥ १० ॥ ५ वही बात स्वीकार करके ६ हस्तिना-
पुर आया ॥ ११ ॥ जनमेजय ने अपने भाइयों से कहा कि यह ब्राह्मण कहै
सो ही करना, यह कहकर जनमेजय तक्षशिला को जीतने गया और वह
सुन्दर ७ देश जीत लिया ॥ १२ ॥ कुछ समय ८ पहिले आपोदधौम्य ना-
मक ब्राह्मण वडा ९ पंडित शीतल स्वभाववाला सौम्यमूर्ति हुआ जिसके
११ श्रेष्ठ धामवाले १० तीन शिष्य हुए. उनमें आरुणि नामक शिष्य से गुरु
ने कहा कि अपने १२ खेत में पानी घुसता है जिसको जाकर रोको, इसने य-
ह सुन कर अनेक उपाय किये १४ परन्तु १५ वेग से वहनेवाला १३ पानी नहीं
रुका ॥ १४ ॥ तब वह आरुणि पानी के आडा सोकर खेत की १६ आड बन-
गया १७ पानी रुक गया ॥ १५ ॥ १८ शिष्य की १९ उत्तम सेवा देख कर । १६ ।

तू उठिय वत्स केदार दारि, ह्वैहै उद्दालक नाम धारि ॥
तिहिं सिक्खदई आसिख सुनाय, आपोदधौम्य पुनि गेह आय।१७।
उपमन्न्यु प्रतिहु गुरु कहिय एह, गो चारन जावहु वन सनेह ॥
उपमन्न्यु सु सुनि गुरुवचन तुष्ट, वनधेनु चरावत देह पुष्ट ॥१८॥
पुनि कहिय ताहि इक दिन स्वभोन, तव देह पुष्ट आधार कोन ॥
भिच्छा लहि जीवत कहिय छात्र, गुरु कहिय देहु हमहिं सु सुपात्र१९
त्यों करत कह्यो गुरु बहुरि ताहि, अब कोन वृत्ति वपु पुष्ट आहि॥
सु वंद्यो भिच्छा दुवबेद लाय, इक देत तुमहिं इक रहत खाय२०।
बुल्ल्यो गुरु दूजें नहिं विधान, इक बेरहि आनहु धर्मवान ॥
तदनंतर इक दिन देखि पीन, गुरु कहिय अवहु वपु क्यों न खीन।२१।
उपमन्न्यु कहिय गोदुग्ध पान, करि मैं वपु धारत हे सुजान ॥
गुरु तवहु कहिय विनु मम निदेस, वच्छन विगार नन करहु एस।२२।
ताको अति पीवर तदपि जानि, बुल्ल्यो अब कहा भोजन बखानि ॥
उपमन्न्यु कह्यो मैं रहत अत्थ, तर्णकें मुख फेननें चाटि तत्थ ॥२३॥

हे १ पुत्र तू खेत की आड को २ तोड़ कर उठा है इससे तेरा नाम उद्दालक होवेगा ॥ १७ ॥ अपने दूसरे शिष्य उपमन्यु से कहा कि वन में स्नेह पूर्वक ३ गौ चराने को जाओ ४ प्रसन्न होकर गाय को चराने गया सो वन में चराते चराते आप ५ ताजा होगया ॥ १८ ॥ गुरु ने एक दिन अपने ६ घर में आयेहुए को कहा कि क्या ७ खाने से तेरा शरीर मोटा होरहा है तब शिष्य ने कहा कि भिक्षा ८ लाकर अपना जीवन करता हूं जब गुरु ने कहा कि हे सुपात्र यह भिक्षा हमको देदिया कर ॥ १९ ॥ उसने भिक्षा देदेने पर भी उसको मोटा ताजा देख कर कहा कि अब किस ९ जीविका से १० शरीर ताजा ११ है जब वह शिष्य १२ बोला कि दोवार भिक्षा लाता हूं जिसमें एक वेर की तुमको देता हूं और एक वेर की मैं खाता हूं तब गुरु ने कहा कि दूजी वेर भिक्षा लाना १३ विधि नहीं है १४ जिस पीछे भी एक दिन १५ पुष्ट देखकर गुरु ने कहा कि अब भी तेरा १६ शरीर १७ दुर्बल क्यों नहीं है ॥ २१ ॥ १८ गौ का दूध पीकर १९ मेरी विना आज्ञा गउवों का दूध पीकर बछड़ों का यह विगाड़ मत करो ॥ २२ ॥ २१ तब भी उसको २० ताजा जान कर गुरु ने कहा कि २२ अब क्या खाता है सो कह जब उपमन्यु ने कहा कि २३ बछड़ों के मुख पर दूध के २४ झाग आते हैं वह चाट कर रहता हूं ॥२३॥

ताकोहु किया गुरुनैं निवार उपमन्यु छुधातुर भव अपार ॥
गो धेनु चरावन बिपिनँ तत्र, जाठर दुख खाये अर्कपत्र ॥ २४ ॥
शिवमल्ली खावत होय अंध, ले धेनु चल्यो गुरुगृह सुसंध ॥
विनु नेत्र रह्यो दिगबोध नाँहिं, मग भुल्लि पर्यो इक अंधुमाँहिं॥२५॥
तौ विनु घर आवत धेनु तामँ, आपोदधौम्य खोजन जगाम ॥
टेर्यो बन जाय रुउच्चनाद, उपमन्यु कूप संगत जगाद ॥ २६ ॥
भो नाथ छुधातुर अधिक तत्त, विनु बोध भखे मैं अक्कपत्त ॥
तिनसौं मम लोचन आहि नष्ट, मग भुल्लि कूपपरि लहत कष्ट ॥२७॥
बुल्लिय प्रसन्न गुरु सुनहु विप्र, नयनन हित सुमरहु दस्त्रछिप्र ॥
सुमरे तब छात्र हु वैद्यराज, तिन इक अपूप दिय असन काज॥२८॥
उपमन्यु कह्यो खैहौं न याहि, बिनु गुरु निदेस ओदन अचाहि ॥
आश्विनेन कहिय पहिले अनेह, किन्नौं तव गुरुहू असन एह ॥२९॥
उपमन्यु तदपि मन्नी न एक, वर दस्त्रन दिन्नौं जुत विवेक ॥
व्है हैं तव गुरुके कृष्ण दंत, व्है हैं तव रद कनकाभ संत ॥ ३० ॥
तू नेत्र लहहु उपमन्यु तात, इम दस्त्र गये करि उचित वात ॥

इसके लिये भी गुरु ने १ मना किया तब उपमन्यु २ भूख से पीडित हुआ और ३ गौ चराने को ४ वन में गया तहां ५ जठराग्नि के दुःख से ६ आक वृक्ष के पत्ते खाये ॥ २४ ॥ ७ आक ८ श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाला ९ दिशा का ज्ञान नहीं रहा १० कुए में पड़गया ॥ २५ ॥ ११ उस उपमन्यु विना गौ घर पर आई १२ वहां १३ गया १४ कुए की संगति करनेवाला १५ बोला ॥२६॥ हे स्वामी भूख से अधिक पीड़ित होगया तब विना समझे मैंने आक के पत्ते खालिये उनसे मेरे नेत्र नष्ट होगये १६ हैं ॥ २७ ॥ जब गुरु बोले कि हे ब्राह्मण नेत्रों के लिये १७ अश्विनीकुमारों (स्वर्वैद्यों) का १८ शीघ्र स्मरण करो तब उस शिष्य ने १९ उन वैद्यराज (अश्विनीकुमारों) को याद किया उन्होंने एक २० चूर्ण २१ खाने के लिये दिया ॥ २८ ॥ उपमन्यु ने कहा कि गुरु की आज्ञा के विना मेरे २२ अन्न की चाहना नहीं है इस कारण से इस चूर्ण को नहीं खाऊंगा इस पर २३ अश्विनीकुमारों ने कहा कि तुम्हारे गुरु ने भी पहिले २४ समय में इसको खाया है ॥ २९ ॥ २५ तो भी उपमन्यु ने एक बात नहीं मानी उस समय २६ अश्विनीकुमारों ने २७ विचार पूर्वक वर दिया कि हे पुत्र उपमन्यु तू नेत्र ले और तेरे २८ दन्त २९ सोने की कान्ति जैसे और

उपमन्न्यु पाय जुग२नेत्र तत्त, कढि कूप[1]हिंतु गुरुगेह पत्त[2]॥३१॥
है गुरु प्रसन्न दिन्नी असीस, लै सिक्ख गयो निजगृह मुनीस॥
गुरुगेह रह्यो अब वेद एक१, सब विधि करि सेवन अह[3] अनेक॥३२॥
ताकौँहि रीझि आपोदधौम्य, विद्या पढाय दिय सिक्ख[4] सौम्य[5]॥
किन्नौं विवाह गृह वेद आय, ताकैहु छात्र त्रय३हुव सुभाय॥३३॥
गुरुगेह लहे दुख चिंति ताम[6], सिस्यन प्रति कछुहु न कहिय काम॥
इम रहत वेद आश्रम अनूप, आये जनमेजय १ पौष्य२भूप॥३४॥
वेदहिं करि विन्नति तँहँ बिसेस, बँरि[7] ताहि गये लै दुव २ नरेस॥
तब वेद[8] अग्नि पूजन[9] सनेह, उत्तंक छात्र रक्ख्यो स्वगेह ॥३५॥
इम होत भये कति दिन अतीत[10], उत्तंक रहत गुरुगृह अभीत॥
इकदिन गुरुपत्नी[11] दिय कहाय, उत्तंक मोहि ऋतुकाल आय॥३६॥
तव गुरु न गेह अरु मैं सकाम, तसँभात[12] देहु रति हे ललाम[13] ॥
उत्तंक दयो उत्तर बलिष्ठ, तिय वचन[14] करैं नहिं धर्म[15]निष्ठ ॥ ३७ ॥
तदनंतर[16] वेदहु आय गेह, उत्तंक लक्ख्यो निज धर्म नेह ॥
गृह जाहु कह्यो मुनि दै असीस, उत्तंक कह्यो इक सुनहु ईस[17]॥

॥ दोहा ॥

तेरे गुरु के दन्त काले होजावैंगे, यह कह कर अश्विनीकुमार तो गये और उपमन्यु दोनों नेत्र पाकर १कुए से निकल कर गुरु के घर २पहुंचा ॥३०॥३१॥ गुरु के घर में अब वेद नामक एक शिष्य रहा जिसने भी अनेक३दिन सेवा की॥३२॥४अनुग्रह करके सीख दी५शिष्य॥३३॥वेद मुनि ने अपने गुरु के घर पर दुःख पाया था उसको याद करके ६ तहां (अपने घर पर) शिष्यों को कुछ काम नहीं कहा ॥ ३४ ॥ वेद मुनि से विनय करके अपने यज्ञ के अर्थ ७ वरणी (स्वीकार) कर गये तब वेद मुनि ८ अपने घर में होम ९ करने के लिये उत्तङ्क नामी शिष्य को रख गये ॥ ३५ ॥ १० व्यतीत ११ गुरु की स्त्री ने कहलाया कि हे उत्तंक! मेरे ऋतुकाल आया है ॥ ३६ ॥ तेरा गुरु तो घर नहीं है और मैं कामदेव सहित हूं १२ इस कारण से हे१३सुन्दर ! मुझे रति दान दे. इस पर उत्तंक ने बलवान् उत्तर दिया कि जिनकी१५धर्म में निष्ठा है वे स्त्रियों का ऐसा १४ कहना नहीं करते ॥ ३७ ॥ १६ इस पीछे उत्तंक ने कहा कि१७हे स्वामी सुनो.

मैं तुमसौं सिक्ख्यो सकल, विद्या बिबिध बिनोद ॥
यातैं गुरु कछु दक्खिना, पावहु प्रकट प्रमोद ॥ ३९ ॥
तब गुरु अक्खियं यह तिमहि, लहि गुरुनारि निदेसं ॥
पावन कुंडल पुष्यपुर, जाय जचेहि द्विजेस ॥ ४० ॥
लै कुंडल उत्तंक मग, आवत तच्छक चोरि ॥
गो बडवामुखं तब यहहु, लायो निढिन दोरि ॥ ४१ ॥
तच्छकको उत्तंक तब, करन महा अपकार ॥
जनमेजय नृपपँहँ गयो, बाढन सर्प बिचार ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारते पारीक्षितदेवसरमाशपनतद्भीतसोमश्रवःपुरोधीकरणतक्षशिलाजयनाऽऽपोदधौम्यछात्रत्रय ३ चर्याकथनवेदमुनिशिष्योत्तङ्कतक्षकनागवैरसमसनं चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥
आदितः षट्षष्टितमः ॥ ६६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ दोहा ॥

बहुरि कहौं विस्तार करि, यहहि कथा उत्तंक ॥

---

१ गुरु ने कहा कि तुम्हारी गुराणी मांगे सो दो तब उत्तंक ने गुरु स्त्री की २ आज्ञा लेकर पुष्यपुर जाकर कुंडल ३ मांगे ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४ पाताल में, कठिनाई से दौड़ कर लाया ॥ ४१ ॥ इस कारण से तक्षक नाग का अपकार करने के लिये ५ सर्प यज्ञ का विचार बढाने को उत्तंक मुनि राजा जनमेजय के पास गया ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिसका ऐसे सूतपुत्र (उग्रश्रवा) के महाभारत सुनाने में परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) को कुत्ती का श्राप देना, उसके डर से सोमश्रवा को पुरोहित करना, तक्षशिला को विजय करना आपोदधौम्य के तीन शिष्यों की चर्या कहना, वेद मुनि के शिष्य उत्तंक से तक्षक नाग के वैर का संक्षेपकथन का चौवीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २४ ॥ और आदि से छासठ मयूख हुए ॥ ६६ ॥

जिम आनैं कुंडल जांचि रु, निजगुरु भक्त निसंक ॥ १ ॥
तच्छक जिम कद्रूतनय, वंचहि करि छल बेस ॥
कुंडल हरि पातालकौं, गो वंचक भुजगेस ॥ २ ॥
अग्गैं जिम उत्तंक हुव अर्बुद जन्म निदानैं ॥
ऐसैं यह सुनिये अपर, चोरदमनैं चहुवान ॥ ३ ॥

पज्झटिका

जो वेद भयो मुनि ब्रह्मवंस, श्रुति सांग निपुन अघतिमिर हंसैं ॥
उत्तंक नाम हुव छात्र तास, वेदादि पढ्यो बानी बिलास ॥ ४ ॥
अवसर घर जावन जवहि आय, जंपिउ तव गुरु ढिग शिष्य जाय ॥
कछु लेहु दक्खिना प्रभु पुनीत, अव मोहिं फुरैं जिम सव अधीतैं ॥५॥
तव वेद कह्यो सुनि वच्छ एहु, गुरुनारि कहैं तव सोहि देहु ॥
सुनि गो गुरुपतनी निकट विप्र, कछु लेहु दक्खिना कहिय छिप्रं ॥६॥
गुरुनारि कह्यो जो ध्रुवहि देयं, तो अम्हकेर वांछित विधेयं ॥
नृप पुष्य वहूकी श्रुतिनं माँहिं, कुंडल अनर्घ हुवरदिव्य आँहिं ॥७॥
उत्तंक मोहि ते देहु आनि, जंपतिके अवर न इष्ट जानि ॥
चौथेरदिन कुंडल देहु लाय, हमरै द्विज भोजन है हितांय ॥ ८ ॥

१ उत्तंक ने जिसप्रकार कुंडल मांग कर आने ॥ १ ॥ २ ठग, सर्पों का पति ॥ २ ॥ हे चोरों को ६ दंड देनेवाले चहुवाण रामसिंह आगे जैसे उत्तंक मुनि ३ आबू पर्वत के जन्म का ४ कारण हुआ तैसे ही यह ५ दूसरा सुनो अर्थात आबू पर्वत के होने की जो कथा पहिले लिखीगई थी वह विष्णुपुराण के मत से लिखीगई थी अब वही कथा महाभारत के मत से फिर लिखते हैं ॥ ३ ॥ ७ ब्रह्मा के वंश में जो वेद नामक मुनि हुआ वह अंगों सहित ८ वेदों में निपुण और ९ पाप रूपी अन्धेरे का १० सूर्य था उसके ११ शिष्य ॥ ४ ॥ जब घर जाने का समय आया तब शिष्य ने गुरु के पास जाकर १२ कहा कि हे १३ पवित्र स्वामी अब कुछ दक्षिणा लो जिससे मुझे १५ पढाहुआ १४ स्मरण (याद) होवे ॥ ५ ॥ १६ हे वत्स (पुत्र) मेरे गुरु की स्त्री कहै सो उसको दो १७ शीघ्र ॥ ६ ॥ १८ निश्चै ही १९ देना है तो २० मेरी चाहना के योग्य २१ कर्तव्य यह है कि राजा पुष्य की २२ स्त्री के २३ कानों में २४ अमूल्य दो दिव्यकुण्डल २५ हैं ॥ ७ ॥ सो हे उत्तंक वे मुझे ला दे हम २६ स्त्री पुरुष के इन कुण्डलों से और कोई प्रिय नहीं है २७ दिन के अर्थ ॥ ८ ॥

तिन पहिरि पुरूसा पंति पंति, करिहौं गहि व्यंजन भंति भंति ॥
दिन चोथे जो यहँ लाय दैं न, बोलि तोहि ततो सापिहौं कुवैन ॥९॥
सुनि बचन लग्यो मग द्विज सुभाय, विच बैल मिल्यो इक दीर्घकाय
तिंहिं पिट्ठि चढ्यो इक पिहुल देह, निरख्यो सु पुरुख बुल्ल्यो अनेह॥
गोमय या वृषको खाय लेहु, उत्तंक कह्यो नहिं उचित एहु ॥
तिंहिं कहिय भख्यो तव गुरु सुजान, तत्त्वमपि विप्र तस्मादसान।११।
गोमय समूत्र सुनि भखिय बिप, ठाढेहि चल्यो आचम्य छिप्र ॥
पहुँच्यो तदनंतर पौष्यपास, आसिख दै बुल्ल्यो इष्ट आस ॥ १२ ॥
अर्थी मैं तव ढिग आय भूप, गुरु हेत जँचत कुंडल अनूप ॥
वर जे श्रुति धारत तुज्झ बाल, ते मे प्रदातुमर्हसि नृपाल ॥ १३ ॥
सुनि पौष्य कह्यो हे द्विज सुभाय, जाया मम अंदर जचहु जाय ॥
सुद्धांत गयो तव द्विजहु संत, रानी न लखी सबठाँ फिरंत ॥ १४ ॥
उत्तंक भयो बिस्मित अपार, आयो नृप अंतिक गिनि लबार ॥
बुल्यो न उचित तव अनृत बैन, महिखी न लखी अवरोध अैन।१५।

भांति भांति की भोजन की तैयारियां लेकर उन कुण्डलों को पहिन कर पंक्ति पंक्ति में पुरुषावणी (पुरूपगारी) करूंगा और जो चौथे दिन नहीं ला देगा तो १ फिर तुझको २ खोटे वचनों से श्राप दूंगी ॥ ९ ॥ यह वचन सुनकर वह ब्राह्मण मार्ग लगा जिसको बीच में एक ४ बडे शरीरवाला ३ बैल मिला जिसकी पीठ पर एक बडे ५ शरीरवाला पुरुष चढा जिसने उत्तंक से ६ कहा कि ७ इस समय इस ९ बैल का ८ गोबर खा ले, जब उत्तंक ने कहा कि यह उचित नहीं है तब उस पुरुष ने कहा कि तेरे श्रेष्ठ गुरु ने भी खाया है १२इस कारण से ११हे ब्राह्मण इसको १०तू भी खा ले ॥ ११ ॥ यह सुनके उस ब्राह्मण ने १४मूत्र के साथ १३ गोबर को खालिया और १५खड़े खड़े ही १६आचमन करके १७शीघ्र चला १८जिस पीछे पौष्य राजा के पास जाकर बोला कि आप का १९ कल्याण २० होओ ॥ १२ ॥ हे राजा मैं २१ धन की इच्छा करनेवाला तुम्हारे पास आया हूं और गुरु के लिये २३ उपमा रहित कुण्डल २२ मांगता हूं २४ जो श्रेष्ठ कुंडल २६ तेरी स्त्री २५ कानों में धारण करती है वे हे राजा मुझे २७दे २८मेरी स्त्री भीतर है जिससे जाकर मांग २९जनाने में ३१ राजा को झूठा जानकर ३०पास आया और कहा कि तुझको ३२झूठ बोलना उचित नहीं मैंने ३३ राणी को ३४जनाने ३५महल में नहीं देखी

यह सुनत पौष्य कछु लवं विचारि,धरनीप कह्यो तिहिं सत्य धारि॥
मम रानी खलु अवरोधमाँहिं,न पवित्र व्है सु तिहिं लखत नाँहिं॥१६॥
देख्यो विचारि तब भूमिदेवं, जान्यौँ स्वदेह अपवित्र एँव ॥
बुल्ल्यो नृप जानिय मैंहु अद्य, आचमन होत ठढ्ढ्रँ अवद्य ॥ १७ ॥
तस्मात देह मम असुचि आँहिं, सुचि व्है वं जात अवरोधमाँहिं ॥
यह भाखि पूर्वअभिमुख विधाय, बैठो पखारि मुख पाँनि पाय ।१८।
विनु सब्द अफेन रु नंदज सीत, लै तोयँ आचमन तीन३पीत ॥
किय दोय२वेर मार्जन द्विजेस, करि अल्ल छिद्र करनन असेस ॥१९॥
व्है सुचि इम अंतेउर जगामं, देखी तब महिखी दिव्यधाम ॥
बुल्ली सु विप्र प्रति हे प्रवीन, तुम अत्थ भलैं आगमन कीन॥२०॥
सेवा जु उचित भाखहु द्विजेस, सो करहिं मन्नि हम श्रुति निदेसं ॥
उत्तंक कह्यो सुनि नृपति नारि,वर कुंडल ए तव श्रव विहारि।२१।
मुहिं देहु जचत गुरु रमनि हेत, इत दिय सुनि रानी हित उपेतं ॥
भूसुर समुझायो विविध भाखि, पहुँचावहु कुंडल जतन राखि॥२२॥
परिहै जो रच्छामंजझ चूक, हरिहै तो तच्छक दंदसूकं ॥

१क्षणमात्र विचार कर२भूपति ने कहा३निश्चै ही जनाने में है परन्तु जो अपवित्र होता है वह उसको नहीं देख सक्ता॥१६॥तब उस४ब्राह्मण ने विचार कर देखा जब अपने शरीर को अपवित्र५ही जाना और बोला कि हे राजा मैंने भी ६इसी समय जाना कि७खड़े होकर आचमन करै वह८अधम होता है॥१७॥९इस कारण से मेरा शरीर अपवित्र१०है क्योंकि मैंने बैल का गोबर खाकर खड़े हुए ने ही आचमन किया था११अब पवित्र होकर जनाने में जाता हूं१२पूर्वदिशा के सामने मुख १३ करके १४ हाथ पग धोकर बैठा ॥ १८ ॥ जिस पानी में शब्द नहीं होता ऐसा विना १५ झाग और १६ नदी का ठंढा १७ पानी लेकर तीन आचमन किये और उस ब्राह्मण ने दो बार१८मार्जन किया और २० कानों के छिद्रों को १९ आले (आर्द्र) किये ॥ १९ ॥ इस प्रकार पवित्र होकर २१ जनाने में २२ गया२३वेद की२४आज्ञा को मान कर२५श्रेष्ठ कुण्डल२६तेरे कानों में विहार करनेवाले॥ २० ॥ २१ ॥२७गुरु की स्त्री के अर्थ मांगता हूं२८हित के सहित२९उस ब्राह्मण को नाना प्रकार से कह कर समझाया कि यत्न रख कर इनको गुरु स्त्री के पास पहुंचाना जो३०रचा में चूक पड़गई है तो ३१ तक्षक नामक ३२ सर्प इनको चोर लेगा॥ २१ ॥

उत्तंक कह्यो राखहु अनंद, मोसों जु नाहिं लैसकत मंद ॥२३॥
इम कहि द्विज निकसत[1] अप्रमोद[2], जिंगमिषु[3] मवनीपति[4] रंपि[5] जगाद ॥
मम श्राद्ध करन मन अज्ज[6] आँहिं[7], द्विज पात्र मिलत चिरकाल[8] माँहिं ॥२४
तसमात[9] करहु भोजन कृपाल, द्विज कहिय सेघ्र[10] आनहु नृपाल ॥
यह सुनत भूप ओदन[11] मँगाय, उत्तंक अर्थ दिय मोद पाय ॥२५॥
वह देखि अन्न सीत रु सकेस[12], भूपहिं ससाप[13] प्रकुपित द्विजेस ॥
दिय असन[14] असुचि[15] तुम किय कुचाल, तसमात अंध होवहु नृपाल ॥२६
सुनि साप नृपति बुल्ल्यो सछोहँ[16], मैं सुद्ध अन्न दिय टारिमोह ॥
कहि असुचि ताहि मुहिं देत साप, तसमात होहु अनपत्य[18] आप ॥२७
उत्तंक कह्यो नृप लखहु अन्न, नहि असुचि होयतो मैं प्रसन्न ॥
यह सुनत अन्न देख्यो नरेस, जान्यौं वह सीतल अरु सकेस ॥२८॥
तब कहिय छमाँ करिये निहारि, काहीं[19] अयाहि कचमुक्त[20] नारि ॥
होऊ न अंध तिम कहहु बैन, द्विज कहिय व्है[21] रु व्है है सनैन[22] ॥२९॥
मम साप हरहु नृप तुमहु व्यर्थ, नृप कहिय मैं न अँचन समर्थ ॥
नवनीत[23] हृदय विप्रन बखानि, छुरधार[24] तीव्र[25] छत्रियन जानि ॥३०॥
द्विज कहिय अन्न तुम लखिय राव, निकस्यो सकेस सीतल सुभाय

१सावधान होकर २ जाने की इच्छावाले ब्राह्मण (उत्तङ्क) से ३भूपति (पुष्य) ने ४ निश्चै करके ५ कहा कि ६ आज मेरी इच्छा श्राद्ध करने की ७ है और पात्र ब्राह्मण ८ बहुत समय में मिलता है ॥ २४ ॥ ९ इसकारण से हे कृपाल भोजन कर जाओ १० ब्राह्मण ने कहा कि हे राजा १० जल्दी लाओ ११ अन्न ॥ २५ ॥ उस अन्न को ठंढा और १२ केस सहित देख कर ब्राह्मण ने क्रोध में होकर राजा को १३ श्राप दिया कि हे राजा तुमने मुझको १४ अपवित्र १५ अन्न देकर कुचाल की है इस कारण से अन्धा होजा ॥ २६ ॥ श्राप को सुनकर राजा ने भी १६ क्रोध के साथ कहा कि मैंने १७ सावधानी से शुद्ध अन्न दिया जिसको अपवित्र कह कर मुझे श्राप देते हो इससे तुम भी १८ विना सन्तानवाले होओ १९ कोई स्त्री २० खुले केसों से चली आई इसकारण से अन्ध मत होओ ऐसा वचन कहा. ब्राह्मण ने कहा कि पहिले अन्धा होकर २१ फिर २२ नेत्रों सहित होजावेगा ॥२९॥ २३मक्खन के समान कोमल हृदयवाले २४पाछणा की धार के समान २५तीखा हृदय क्षत्रियों का जानो ॥ ३० ॥

मेरेहु व्है न तसमात[1] साप, इम कहि लै कुंडल चलिय आप ॥३१॥
मगमाँहिं लख्यो उत्तंक बिप्र, छपनंक[2] इक१आवत नग्न छिप्र[3] ॥
वह तच्छक करि अहि[4]बेस लुप्त, छिन परत दिट्ठि छिन होत गुप्त ३२
भो द्विजहिं सौचं[5] संकाज धर्म, कुंडल धरि गो तब करन कर्म ॥
सु जती[6] यह अवसर इष्ट[7] पाय, कुंडलन चल्यो लै द्रुत[8] पलाय[9] ॥३३॥
उत्तंक लख्यो भजि चोर जात, करि तोयकाज[10] किय पूत[11] गात ॥
कीनौं गुरु देवन नमसकार, दौरयो तदनंतर[12] द्विज उदार ॥ ३४ ॥
गाढैं गहि लीनौं पहुँचि चोर, वह बेस छोरि अहि भो जु घोर[13] ॥
ततकाल[14] बिबर[15] हुव भूमिदेस, तेना[16]हिरधो[17]भुवनं बिबेस[18] ॥ ३५ ॥
उत्तंक भयो अंतर अचैन, सुमिरे सब रानी कथित[19] बैन ॥
पुनि चिंतिय मैं नरदेह[20]वान, बिल तुच्छ[21] यहै किम व्है प्रयान[22] ॥३६॥
लै दंड खनन[23] लगि भूमि लोक ज्यौं भू खुदी न[24] त्यौं हुव ससोक॥
उत्तंक चित्त अति कष्ट मानि, वह बत्त[25] लई पुरहूत[26] जानि ॥ ३७ ॥
[27]कुलिसहिं तब[28] अक्खिय निर्जरेस[29], उत्तंक दंड बिच करि प्रबेस ॥

ब्राह्मण ने कहा कि हे राजा तुमने अन्न को देख लिया वह ठंढा और केस सहित निकला १ इस कारण से मेरे भी श्राप नहीं लगैगा ॥३१॥ उस उत्तंक ब्राह्मण ने देखा कि मार्ग में एक नंगा २ क्षपणक (संन्यासी) ३ शीघ्र आता है वह तक्षक ४ सर्प अपने वेस को छिपा कर क्षण में दीखता और क्षण में छिपजाता है ॥ ३२ ॥ उस समय उत्तंक को ५ दिशा (पाखाने) जाने की आवश्यकता हुई तब कुंडलों को रख कर दिशा गया जब ६ वह संन्यासी अपने ७ अनुकूल समय पाकर कुंडलों को लेकर ८ शीघ्र ९ भागा ॥ ३३ ॥ १० उजलाई करके (आबदस्त लेकर) ११ शरीर को पवित्र करके १२ जिस पीछे ॥३४॥ संन्यासी का वेस छोड कर भयंकर १३ सर्प होगया और भूमि में १४ तुरन्त १५ बिल (छिद्र) हुआ १६ उसमें होकर वह सर्प १७ पाताल में १८ प्रवेश करगया ॥ ३५ ॥ उत्तंक के चित्त में दुःख हुआ और राणी के १९ कहे हुए वचन याद आये, फिर सोचा कि मैं तो २० मनुष्य देह को धारण करनेवाला हूं और यह छिद्र २१ छोटा सा है जिसमें २२ जाना कैसे होसकै ॥३६॥ इसकारण से दंडा लेकर भूमि को २३ खोदने लगा परन्तु ज्यों भूमि २४ नहीं खुदी त्यों उत्तंक शोक सहित हुआ उत्तंक ने अपने चित्त में जब बहुत कष्ट माना वह २५ बात २६ इंद्र ने जानली ॥३७॥ तब २६ इन्द्र ने २७ वज्र से २८ कहा कि

सुनि संब[2] सद्य करि दंड वास, भू[3] भेदि कियो बिल सावकास[4] ॥ ३८ ॥
तिहिं पैठि बिप्र गो नागलोक, बर[5] बिबिध जत्थ बलभीन[6] थोक ॥
प्रासाद[7] हर्म्म्य[8] निर्यूह[9] केक, इत्यादि लखे आलय[10] अनेक ॥ ३९ ॥
उच्चावच[11] क्रीड़ाथल अपार, तत्रोत्तंक[12] स्तवनं[13] चकार[14] ॥
जिनमें ऐरावत[15] करत राज, मैं नमत तिन्हैं निजसिद्धि काज ॥४०॥
पवनेरित[16] संपाजुत[17] छरंत[18], जीमूत[19] जेम जे अति लसंत ॥
जिनके सु रूप बहु रूप जानि, कलमासक[20] कुंडल जे बखानि ॥४१॥
सबिता[21] जिम ऐरावत प्रभूत[22], सब नाकपृष्ठ सोभित अभूत[23] ॥
अरु नागनके आलय बिसेस, गंगातट उत्तर हैं सुबेस ॥ ४२ ॥
तत्थहु रहंत पन्नग महान, तिनकीहु करौं नुति[24] नम्म्रमान ॥
ऐरावत बिनु रविकिरन[25] माँहिं, को जाय सकत यह ख्यात[26] आहिं[27]॥४३॥
सतआसियअठबिंसतिहजार२८०००, इतनैं[28] अहि हरिहयगुन[29] उदार ॥
धृतराष्ट्र[30] करत जिन्ह दीप्यमान, प्रणमामि[31] तिनहु मैं पन्नगान[32]॥४४॥
जे चलत निकट याके भुजंग, अरु दूर रहत केते अभंग ॥

उत्तंक जिस दण्ड से भूमि खोदरहा है उसमें प्रवेश कर. यह सुनते ही १वज्र ने २शीघ्र दंड में वास करके ३भूमि को फोड़कर बिल को ४अवकाश सहित(चौड़ा)कर दिया उसमें घुसकर उत्तंक ब्राह्मण पाताल में गया जहां ५श्रेष्ठ और नानाप्रकार के ६बळींडों से छायेहुए झोंपड़े ७महल ८पक्के मकान ९कई द्वार (दरवाजे) अथवा वलभी आदि सब गृह विशेष जानो. इनको आदि लेकर अनेक १०मकान देखे ॥३९॥ ११ऊँचे नीचे क्रीड़ा करने के अनेक स्थल हैं तहां जाकर १२उत्तंक १३स्तुति १४की १५ऐरावत जाति के सर्प ॥४०॥ १६पवन से प्रेरे हुए १७बिजुली सहित १८टपकते हुए १९मेघ के समान शोभायमान हैं जिनके अनेक प्रकार के स्वरूप. और २०चित्र विचित्र छिड़के (धब्बे)जिनके शरीरों पर हैं वे ॥४१॥ ऐरावत से २१पैदा हुए २२सूर्य के समान तेजवाले जो स्वर्ग में शोभायमान २३हुए और गंगा के उत्तर किनारे जिनके विशेष घर हैं ॥४२॥ वहां भी बड़े सर्प रहते हैं उनकी भी नम्रता पूर्वक २४स्तुति करता हूं, ऐरावत सर्पों के बिना २५सूर्य की किरणों में कौन जासक्ता है यह २६प्रसिद्ध २७है ॥४३॥ अठाईस हजार आठ सौ २८सर्प सूर्य के घोड़ों का २९रस्सी बने हुए हैं जिन को ३० धृतराष्ट्र नामक सर्प प्रकाशमान करता है उन ३२ सर्पों को मैं ३१ नमस्कार करता हूं ॥ ४४ ॥ ॥ जो सर्प धृतराष्ट्र के पास चलते हैं और कितने

ऐरावतके जे ज्येष्ठभ्रात, तिन सबन नमत मम करहु त्रात ॥ ४५ ॥
कुरुखेत्रमाँहिँ जाको निवास, भो खांडवहूमैं प्रथम वास ॥
वह नागराज तच्छक सुनाम, मैं ताहि नमत कुंडल सकाम ॥४६॥
काकोदर तच्छक१ अश्वसेन२, ए दुव रहि नित्य सहचर सुखेन ॥
कुरुखेत भिच्छुमति सरित तीर, जे करत भये सहँवास बीर ॥४७॥
तच्छक जघन्न्य भव नागराज, श्रुतसेन नाम मम करहु काज ॥
इत्यादि बहुत दर्वीकरेस, बंदत मैं तिनकौं नत बिसेस ॥ ४८ ॥
उत्तंक करी इम थुति अदर्प, कुंडल तथापि ल्याये न सर्प ॥
उत्तंक लख्यो इक चरित तत्र, द्वै२नारि बुनत पट व्है इकत्र॥४९॥
सित असित तंतु तानासु कीन,हुव चकित लखि सु कौतुक नवीन॥
इक१चक्र लख्यो पुनि द्वादसा१२र,देखे तिहिँ फेरत खट६कुमार।५०।
लखि एक१पुरुष अरु बीति एक१,सबकौं किय बंदन जुत बिबेक॥
बुल्ल्यो सु पुरुष द्विज प्रनर्त जानि,उत्तंक प्रयोजन कहहु जानि॥५१॥
आकर्ण्य सइनि तं पुरुषमाह, सव सर्प होहु मम बस सदाह ॥

ही दूर चलते हैं तिनको और ऐरावत के बडे भाई इन सब को नमस्कार करता हूं सो मेरी १ रक्षा करो ॥ ४५ ॥ कुरुक्षेत्र में जिसका निवास है और २खांडव वन में जिसका पहिले वास हुआ था उस सर्पों के राजा तक्षक को कुंडल लेने की कामना से नमस्कार करता हूं ॥ ४६ ॥ तक्षक ३ सर्प और अश्वसेन सर्प ये दोनों सदा५सुख पूर्वक४साथ रहनेवाले हैं और जिन्होंने कुरुक्षेत्र में ६ भिक्षुमति नदी के तीर पर७साथ होकर वास किया था।४७। तक्षक से ८ अन्त में होनेवाला श्रुतसेन नामक सर्पराज मेरा कार्य करो, इनको आदि लेकर बहुत ९ सर्पों को विशेष नम्रता के साथ नमस्कार करता हूं ॥ ४८ ॥ उत्तंक ने इसप्रकार ११ घमंड रहित होकर १० स्तुति करी १२ तो भी सर्प कुंडल नहीं लाये वहां पर उत्तंक ने एक चरित्र देखा कि दो स्त्रियां इकट्ठी होकर एक वस्त्र बुनती हैं ॥ ४९ ॥ जिनमें १३ स्वेत और १४ काले रंग के तन्तुओं से ताना किया है, इस नवीन तमाशे को देख कर उत्तंक चकित हुआ, फिर एक चक्र (पहिया) देखा जिसके१५बारह अरे लगेहुए हैं तिसको छः बालक फेर रहे हैं ॥ ५० ॥ फिर एक पुरुष और एक १६ घोड़ा देखा जिन सबको उत्तंक ने नमस्कार किया १७ वह पुरुष उत्तंक को विशेष १८ नम्रतावाला जान कर बोला कि हे उत्तंक तेरा प्रयोजन होवे सो कह ॥ ५१ ॥ १९ यह सुन कर २० वह ब्राह्मण २१ उस पुरुष से बोला कि सब सर्प मेरे

तब पुरुष कह्यो यह [1]आहि [2]अस्व, तदपान[3]मार्गमाँ[4]शुहि धमस्व॥५२॥
सुनि बिप्र धमिय [6]घोटक अपान, तसमात कढ्यो सुचि धूमवान॥
तिहिँ सन [10]प्रतप्त हुव नागलोक, [11]संभ्रांत भयो तच्छक [12]ससोक॥५३॥
लै कुंडल दिय उत्तंक हेत, उत्तंक बिचारिय गमन चेत॥
यह [13]अवधिदिन रु गुरुगेह दूर, किम होय [14]अज्जै जावन जरूर॥५४॥
तब [15]पुरुष कह्यो द्विजप्रति सुबैन, इहिँ हय चढि जैहैं अबहि [16]ऐन॥
उत्तंक सुनत चढि हय [17]ललाम, [18]जवनो [19]गुरूदवासित [20]अगाम ॥ ५५ ॥
कुंडल दये ति गुरुनारि अर्थ, तासौं सुभ आसिख लै समर्थ ॥
गुरु ढिगहु आय किय नमसकार, गुरु कहिय [21]चिरागत क्यौं उदार॥५६॥
उत्तंक कह्यो हुव बिघ्न जाल, कुंडल हरि तच्छक गो पयाल ॥
हरि [22]छात्र गयो तव नागभोन, मैं तत्थ लखे ते कहहु कोन ॥५७॥
दुव२नारि बुनत देखी [23]निचोल, तानि तंतु तंत्र परि [24]असित[25]धोल॥
इक१चक्र लख्यो मैं [26]द्वादसार, [27]परिबर्तक ताके खट६कुमार ॥५८॥
इक१पुरुख लख्यो इक [28]बीति तत्थ, हे कोन सबन कहिये समत्थ॥
जावतहु लख्यो मैं हे [29]अयेह, इक१पुरुष चढ्यो [30]वृषं दीर्घ देह ॥५९॥
बुल्ल्यो वह मोप्रति हे सुजान, [31]वृषजातमूत्रगोमय[32]मशान ॥
खाये जे तव गुरु पूर्वकाल, यह सुनत मैंहु खाये कृपाल ॥६०॥

वश में होजावें तब उस पुरुष ने कहा कि यह घोड़ा १ है जिसकी २ गुदा में ३ शीघ्र ४ फूँक मार ॥५२॥ यह सुनकर ब्राह्मण ने ५ घोड़े ६ की गुदा में फूँक मारी ७ जिसमें से धूम सहित ८ अग्नि निकला ९ जिससे नाग लोक १० तप गया इस से ११ उद्विग्न तक्षक १२ शोक सहित होगया १३ जाने की अवधि का यही दिन है १४ आज ही तब उस १५ पुरुष ने ब्राह्मण से श्रेष्ठ वचन कहा कि इस घोड़े पर चढ़ कर अभी १६ घर जावेगा १७ सुन्दर १८ वेग से गुरु के १९ घर में २० गया हे उदार तू २१ देरी से क्यों आया. २२ आपका शिष्य हठ करके नागलोक में गया वहां पर मैंने देखे वे कौन थे सो कहो २३ वस्त्र २४ काला २५ स्वेत २६ बारह अरोंवाला २७ उसके फेरनेवाले छः बालक तहां पर एक पुरुष और एक २८ घोड़ा देखा सो वे कौन थे और हे २९ श्रेष्ठ बुद्धिवाले एक पुरुष बड़े शरीरवाले ३० बैल पर चढ़ा था उसने मुझसे कहा कि हे सुजान इस ३१ बैल से पैदाहुआ मूत्र और गोबर ३२ खा, तेरे गुरु ने भी पहिले समय में खाया था.

को कोन वहै कहिये महंत, तब बेद कह्यो सुनि सकल संत ॥
पाताल लखी तैं दोय२नारि, धाता१रु बिधाता२ते बिचारि ॥६१॥
अरु तंतु लखे असिताऽवदात, रजनी१रु दिवस२ते गिनहु ख्यात ॥
अरु चक्र कह्यो तैं द्वादसार, वह अब्दचक्र जानहु उदार ॥६२॥
प्रेरित तिहिं देखे खट६कुमार, खट६ऋतु तिन्ह जानहु धर्म धार ॥
जे पुरुख लख्यो तैं सर्पथान, पर्ज्जन्य[2] गिनहु वह गुननिधान ॥६३॥
वह तुरग वन्हिं[3] जानहु प्रसस्त[4], अपरहु उदंत[6] अब सुनि समस्त ॥
जो वृषभ[7] मिल्यो मग विच द्विजेस, ऐरावत वह दंतावलेस ॥६४॥
जो पुरुष लख्यो आरूढ[9] ताहि, उत्तंक जानि पुरहूत[10] वाहि ॥
लीनों तैं गोमय[11] तास खाय, पीयूख[12] जानि वह मोदपाय ॥ ६५ ॥
तासौंहि बच्यो अहिलोकमाँहिं, मघवा[13] वह मेरो मित्र[14] आँहिं ॥
कीनों अति सेवन तैं सुभाय अब जाहु वच्छ[15] अपनैं निकाय[16] ॥६६॥
इम कहि असीस गुरु बेद देत, उत्तंक चल्यो कुरुपति निकेत[17] ॥
क्रूम[18] नाग तच्छकहिं करन छार, अति कोप गह्यो द्विज हे उदार[19] ॥६७॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

वे कौन कौन थे सो हे कृपाल कहिये, तब वेद नामक मुनि ने कहा कि हे संत सब सुनो, पाताल में तुमने दो स्त्रियें देखीं उनको धाता और विधाता जानो और काले और स्वेत तंतु देखे तिनको रात्रि और दिन मानोऔर बारह अरोंवाला जो पहिया तुमने देखा वह १ वर्ष का चक्र जानो और उस चक्र को चलाते छःबालक देखे उनको हे धर्म को धारण करनेवाले उत्तंक छहों ऋतु जानो और जो नागलोक में तुमने पुरुष देखा उसको गुणों का घर२इन्द्र जानो और जो घोड़ा तुमने देखा उसको४प्रशंसायोग्य ३ अग्नि जानो ५ और६वृत्तांत भी अब सब सुनो मार्ग में जो७बैल मिला था वह ८ हाथियों का पति ऐरावत था और उस पर ९ चढाहुआ पुरुष देखा उसको हे उत्तङ्क १० इन्द्र जानो और उस बैल का तैंने ११ गोबर खाया उसको १२ अमृत जानो उसी अमृत से तू नागलोक में बचगया, वह १३ इन्द्र मेरा मित्र १४ है १५ हे पुत्र अब अपने १६ घर को जा इसप्रकार कह कर वेद मुनि के आशीर्वाद देते ही उत्तंक कौरवों के पति (जनमेजय) के १७ स्थान पर चला, तक्षक के १८ अपराध से सर्पों को भस्म करने के लिये हे उदार रामसिंह उस ब्राह्मण (उत्तंक) ने अत्यंत कोप ग्रहण किया

वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौति श्रावितमहाभरते वेदमुनिछात्रोत्तङ्कपौष्यनृपपत्नीकुण्डलमार्गणतत्तक्षकहरणजितनागलोकनीतकुण्डलोत्तङ्कगुरुपत्नीप्रसन्नीकरण-विचारिततत्तकदाहजनमेजयपुरगमनं पञ्चविंशो २५ मयूखः॥२५॥

आदितः सप्तषष्टितमः ॥ ६७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पज्झटिका ॥

रचि तच्छक सिर उत्तंक रीस, आयो जहँ जनमेजय अधीस ॥
उत तच्छसिला नृप जित्ति आय, संसचिव जय उच्छव किय सुभाय ॥१॥
यह अवसर लहि उत्तंक छिप्र, पारिच्छित परिखद प्रविसि छिप्र॥
दै नृपहिँ उचित आसिख द्विजेस, बुल्ल्यो सु बचन रचना बिसेस॥२॥
नहिँ करत भूप करतव्य काज, बालक जिम औरहि करत आज॥
यह सुनत पुज्जि बिप्रहिँ नृपाल, बुल्यो मुनि मैं किम बुद्धिबाल॥३॥
जुतधर्म प्रजापालन तजौं न, करतव्य कौंन मैं करत हौं न ॥
कहिये जु होय भवदीय काज, करिहौं तथापि दुष्कर दराज ॥४॥
उत्तंक सु सुनि अक्खिय धराप, अपनौंहि निवरहु काज आप ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समकालीन (एक समय में होनेवाले) सूतपुत्र उग्रश्रवा के महाभारत सुनाने में वेद मुनि के शिष्य उत्तंक का पौष्य राजा की स्त्री से कुण्डल मांगना, उन कुण्डलों को तत्तक का हरना, नागलोक को जीत कर कुण्डल प्राप्त करके उत्तंक का गुरु स्त्री को प्रसन्न करना, तत्तक को भस्म करना विचार कर उत्तंक का जनमेजय के पुर में जाने का पच्चीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥२५॥ और आदि से सड़सठ मयूख हुए ॥६७॥

तत्तक सर्प पर क्रोध करके उत्तंक राजा जनमेजय के पास आया उधर राजा भी १ तक्षशिला नामक देश को जीतकर आया और इस विजय का अपने २ कामदारों सहित उत्सव किया ॥१॥ ३ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय की ४ सभा में ५ शीघ्र प्रवेश किया हे राजा राजाओं के ६ करने योग्य कार्य तो नहीं करता और बालक के समान और ही कार्य करता है ७ हे मुनि मैं बालक बुद्धिवाला कैसे हूं ८ आपका कार्य होवे सो कहो १० बड़ा ११ दुष्कर (कठिनाई से करने योग्य) होवेगा ९ तोभी करूंगा १२ हे भूपति आप अपना ही कार्य

तव जनक[1] हन्यौं तच्छक अहीस[2], मख रचहु ताहि होमन महीस
मोस्यो द्विज कास्यप[3] मगहि बीच, नृप आय डस्यो जिहिं नाग नीच॥
भो डसत परिच्छित भस्म भूप, रय[4] बज्रपात हत बिटपि[6]रूप ॥६॥
जाकै अति दर्प सु ज्वलित जाग, निहचैहि दुष्ट हवनीय नाग ॥
मेरोहु कियो अपराध मंद, कुंडल हरि लैगो कलुष[10] कंद[11] ॥ ७ ॥
कुरुराज सुनि सु तच्छक कुचाल, कुप्यो जनु भैरव प्रलयकाल॥
मंत्री निज पुच्छिय छिप्र छोहिं[12],मम जनक नास किम कहहु मोहि

दोहा

सौनक बीचहि प्रश्न किय, बदि भृगुकुल बिस्तार ॥
सुनत सूत[13] सानंद ह्वै, आरंभिय उच्चार ॥ ९ ॥
बरुन जग्यके बन्हि[14]मैं, ब्रह्मासौं भृगु१ जात[15] ॥
च्यवन२भयो ताके तनय, प्रमति३तास सुत ख्यात[17] ॥१०॥
भयो घृताची उदरतैं, प्रमति पुत्र रुरु४नाम ॥
सुनक५भयो रुरुकै तनय, जिहिं कुल सौनक जाम[18] ॥११॥
इक द्विजकै पुत्री भई, नाम पुलोमा जास ॥

निबेड़ो, तुम्हारे १ पिता को २ सर्पों के राजा तक्षक ने मारा है उसके हो-मने को हे राजा यज्ञ रचो जिस नीच सर्प ने ३ काश्यप नामी ब्राह्मण को जो परीक्षित को मंत्रबल से जिलाने को आता था धन देकर बीच से ही पीछा मोड़ दिया और राजा को आकर डसा उसके डसते ही राजा परीक्षित भस्म होगया जैसे वज्र के ५ पड़ने के ४ वेग से ६ वृक्ष भस्म होजाता है ॥ ६ ॥ जिसके बहुत ७ घमंड है वह सर्प निश्चै ही होम की अग्नि में ८ होमने योग्य है, उस ९ मूर्ख ने मेरा भी अपराध किया है कि वह १० पापों का ११ समूह कुंडल हरकर ले गया ॥ ७ ॥ १२ क्रोध करके. इस कथा के बीच में ही शौनक मुनि ने सूत पौराणिक से प्रश्न किया कि भृगुवंश का विस्तार से वर्णन करो१३सूत पौराणिक ने प्रसन्न होकर कहना प्रारम्भ किया ॥९॥ वरुण यज्ञ की १४ अग्नि से १५पैदा हुए१६पुत्र च्यवन के प्रमति नामक१७प्रसिद्ध पुत्र हुआ घृताची नामक अप्सरा के पेट से प्रमति का पुत्र रुरु हुआ, रुरु के शुनक नामी पुत्र हुआ उस शुनक के कुल में शौनक१८जनमे ॥११॥ एक ब्राह्मण के पुत्री हुई जिसका नाम पुलोमा रक्खा

जाहि बालपनमैं जनक, दयो हसी करि त्रास ॥१२॥
अरे पुलोमा तू असुर, मम तनया लैजाहु ॥
तदनु बढत बय ताहिकौं, बिरच्यो भृगुसौं व्याहु ॥१३॥

पज्झटिका॥

भृगु सदन एकदा चौर भाय, सुहि असुर पुलोमा नाम आय ॥
आतिथ्य कियउ भृगुनारि तत्त, दिय पुजि असन फल मूल पत्त॥१४
तिहिं लखत चित्त कंदर्प छाय, आसुर सुहि चोरन किय उपाय॥
पूछ्यो कृसानु वह नय उचारि, भृगुकी वा मेरी कहहु नारि॥१५॥
पहिलैं मुहिं दीनी जनक जाहि, बलि सठ दई सु भृगुकौं बिबाहि
देवनको आनन तू कहात, बुल्लहु कृसानु ऋत उचितबात ॥१६॥
सुनि बचन अग्नि सोच्यो दुरओर, इक होत अनृत इत साप घोर॥
इम चिर विचार सुचि ओजऐन, बुल्ल्यो करि निश्चित पुव्व बैन॥
तैं प्रथम बरी बिधिमंत्रहीन, पीछैं भृगु बिधिजुत परनलीन ॥
यह सुनत गयो हरि असुर ताहि, ह्वै त्रस्त करयो तिय पाहि पाहि॥

उसको उसके पिता ने बालपन में हसी से १डराया कि ॥ १२ ॥ अरे पुलोमा राक्षस तू मेरी पुत्री को लेजा, यह बात पुलोमा नामी राक्षस सुनता था २ जिस पीछे ऊमर बढने पर उस पुलोमा नामक कन्या का भृगु से विवाह किया ॥ १३ ॥ ४ एक समय भृगु के ३ घर में चोर की ५ भांति वही पुलोमा नामक असुर आया जिसका भृगु की स्त्री ने आतिथ्य किया और पूजन करके भोजन के लिये फल मूल और पत्ते दिये ॥ १४ ॥ उस स्त्री को देखते ही ६ कामदेव छागया और असुर ने उस स्त्री को चोरने का उपाय किया और ७ अग्नि से पूछा कि नीति से कहो कि यह स्त्री भृगु की है या मेरी ॥ १५ ॥ इस के ८पिता ने पहिले मुझे दी थी ९ फिर उस मूर्खने भृगु को विवाह दी, हे अग्नि तू देवताओं का १० मुख कहलाता है सो ११ सत्यवार्ता होवे वह कहो ॥ १६ ॥ यह वचन सुन कर अग्नि ने सोचा कि उधर तो १२ झूठ बोलने का पाप और इधर आप का भय है इस प्रकार १३ बहुत देर तक सोच कर प्रताप के घर १४ अग्नि ने पहिले का वचन निश्चय करके कहा ॥ १७ ॥ तैंने विना रीति और विना मंत्रों के पहिले वरी है और पीछे भृगु ने विधि सहित परणी है, यह सुनते ही उस स्त्री को असुर हर कर लेगया तब स्त्री ने डर कर १५ रक्षा करो रक्षा करो यह

हो गर्भ तास सो तहँ सुधाम, च्युत होय पर्‌यो तिँहिँ च्यवन२नाम ॥
भो भस्म पुलोमा तेज तास, लै बाल चली वह निज निवास ।१९।
संत्रस्त जानि इम स्वसुत नारि, विस्वस्त करी ब्रह्मा पधारि ॥
जो परिय पुलोमा नेत्र तोयं, ह्रदिनी बाहे निकसिय तास होय ।२०।
विधि तिँहिँ बधूसरा नाम दीन, इम च्यवन२जन्म जानहु प्रबीन॥
निजगेह गई जब भृगु कलत्र, कोपित मुनि पूछी तमंकि तत्र ॥२१॥
रक्खसकी कोनैं कहिय तोहि, मोतैं न डरत को कहहु मोहि ॥
सुनि भीतँ पुलोमा कहिय हेतु, मैं तोहि बताई धूमकेतु ॥ २२ ॥
सुनि भृगु प्रकुप्पि तिँहिँ साप दीन, सबभक्खहु होहु पावक मलीन।
सुचि कहिय भृगुहि सुनि घोर साप, अपराधबिनाँ कियप्रसभ आप॥
जे संतत धर्म संगत रहंत, ते सक्खि नाँहि मिथ्या कहंत ॥
भाखत अलीक जे सक्खि काल, ते रहत पापपीडित बिहाल।२४।
भावी पुनि सात७रु भूत सात७, इतनैं कुलपुरुखन करत घात ॥
तुहिँ दैन साप मैंहू समर्थ, पै पूज्य बिप्र यह बेद अर्थ॥२५॥
मैं बिरचि जोगबल बहुत देह, सबमाँहिँ रहत भृगु जानि एह ॥

कहा ॥ १८ ॥ उसके गर्भ था सो उसी स्थान पर १ गलित होकर पड़ गया इसी से उसका नाम च्यवन हुआ उसके तेज से पुलोमा नामक असुर भस्म होगया, वह स्त्री उस बालक को लेकर अपने ३ घर गई ॥ १९ ॥ ४ अपने पुत्र की स्त्री को डरी हुई जान कर ब्रह्मा ने आकर ५विश्वासी, उस पुलोमा स्त्री के नेत्रों से ६ पानी पड़ा उसकी ७ नदी वह निकली ॥२०॥ उस नदी का ८ब्रह्मा ने वधूसरा नाम दिया, इसप्रकार हे प्रवीण (शौनक) च्यवन का जन्म जानो, भृगु की ९ स्त्री जब अपने घर में गई तब क्रोध किये हुए मुनि ने १० ताण कर (विशेष क्रोध से) पूछा ॥ २१ ॥ ११ राक्षस की १२ डर से १३ कारण १४ अग्नि ने मुझको राक्षस की पहिले वरी हुई बताई ॥ २२ ॥ १५ विशेष कोप करके अग्नि को श्राप दिया कि हे१७अग्नि तुम१६सर्वभक्ष होकर मलीन होओ १८ अग्नि ने घोर श्राप सुन कर भृगु से कहा कि आपने बिना ही अपराध १९ हठ किया है ॥ २३ ॥ जो २० निरंतर धर्म के साथी रहते हैं वे २१ साक्षी में झूठ नहीं कहते जो साक्षी के समय २२ झूठ बोलते हैं वे पाप से पीड़ित होकर बिहाल रहते हैं ॥ २४ ॥ और सात पीढ़ी २४पहिले और सात२३पीढ़ी पिछले कुल पुरुषों की घात करते हैं ॥२५॥

समन जिवावहु सुंदरी, दल आयुख रुरु देत ॥ ४ ॥
श्राद्धदेव[1] अक्खिय सु सुनि, उचित न्याय जो एह ॥
प्रमदवरा तो पाय पिय, नवहित बंधहु नेह ॥ ५ ॥
वैवस्वत[2] इम बुल्लतहि, प्रमदवरा असुपाय[3] ॥
उठी मनहु सोवत जगी, अब व्याही रुरु आय ॥ ६ ॥
रुरु तबतैं पकरी अदय[4], व्याल बिनासन टेक ॥
वन विच देख्यो चरम बय, ऊँघत डुंडुभ एक ॥ ७ ॥
देखतही रुरु दंड लै, बिरचन लग्गो बाध[5] ॥
हरि डुंडुभ रुरुसौं रख्यो, रंचक कहि अपराध ॥ ८ ॥

षट्पात् ॥

प्रमति पुत्र तव कहिय डसिय मम नारि भुंजगन ॥
जिंहिं कारन अहिजात सत्र तजिहौं न दंड इम ॥
डसत न डुंडुभ जाति कह्यो रुरुसौं डुंडुभ जब ॥
रुरु अक्खिय किम कहहु सोहु तव जन्म हेतु सब ॥
डुंडुभहु कह्यो मैं पूर्वभव हो मुनि नाम सहस्त्रपद ॥
द्विज दरित साप डुंडुभ भयो वलि रुरु अक्खिय सोहु वद॥९॥
डुंडुभ अक्खिय खगम नाम मम मित्त अग्ग हुव ॥
मैं सिसुपन वस मंद धूर्त तृन सर्प बिरचि ध्रुव ॥

रुरु अपना आधा आयु देता है ॥ ४ ॥ १ धर्मराज ने कहा ॥५॥ २ धर्मराज के इस प्रकार बोलते ही ३प्राण पाकर ॥ ६ ॥ ४ निर्दयता. सर्पों के नाश करने की टेक पकड़ी, वन में कभी बुढापे में ऊंघताहुआ एक डुंडुभ जाति का (जलसर्प) सर्प देखा ॥७॥५वध. कुछ तो अपराध बता मुझे क्यों मारता है ॥ ८ ॥ रुरु ने कहा कि मेरी स्त्री को सर्पों ने डसा है इस कारण से इग सर्प जाति को दंडे से दण्ड देने से नहीं छोडूंगा जब डुंडुभ ने कहा कि डुंडुभ जाति के सर्प नहीं डसते हैं तब रुरु ने कहा कि यह कैसे कहता है तुम्हारे जन्म का कारण सब कहो, डुंडुभ ने कहा कि पूर्वजन्म में मैं सहस्रपाद नामक मुनि था ब्राह्मण के श्राप से डराहुआ डुंडुभ सर्प हुआ, फिर रुरु ने कहा कि वह भी कह ॥ ९ ॥ मूर्खता के वश होकर धूर्तता से तृणों का सर्प बनाकर अग्निहोत्र में बैठेहुए खगम नामक के पास डाल कर उसको ड-

अग्निहोत्र थित आय डारि वह खगम डरायउ ॥
अहि डरि तिँहिँ निश्चेष्ट होय पुनि चेतन पायउ ॥
करि कोप खगम मोसौं कह्यो जिते जोर यह सर्प किय ॥
तैसोहि पराक्रम पाय तू सर्प होहु इम साप दिय ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मैं तब अक्खिय खगमसौं, हसीमाँहिँ यह साप ॥
आगस[1] अल्प रु दंड अति, उचित छमाकै[2] आप ॥ ११ ॥
कह्यो खगम मेरो कथन, नैंक अलीक[3] न होय ॥
सापहु छुट्टहिँ अवधि सिर, धीर होहु अघ[4] धोय ॥ १२ ॥
प्रमतिपुत्र रुरु नाम इक, व्हैहै मुनि भृगुबंस ॥
ताहि लखत अहिरूप तजि, पैहै निजसुप्रसंस[5] ॥ १३ ॥
सो रुरु तू अरु मैंहु सो, बदत ताहि इम बैन ॥
तजि डुंडुभपन विप्र तनु, इहिँ पायो गुन ऐन ॥ १४ ॥
बच्यो प्रमतिसुतसौं बहुरि, सो द्विजवर सिख ठानि ॥
धर्म अहिंसा परम धन, जो रुरु निश्चित जानि ॥ १५ ॥
बिनय सहित सूतहिँ बहुरि, सौनक अक्खिय सार ॥
कुरुभूपति अहिसत्र किय, बदि सुहि करि बिस्तार ॥ १६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत सूत उच्चरिय भयउ इक जरतकारु द्विज ॥

राया सो सर्प से डरकर खगम मूर्छित होकर फिर चेता और मुझसे कहा कि जितने जोर (पराक्रम) का यह सर्प बनाया है वैसा ही पराक्रम पाकर तू सर्प हो ॥ १० ॥ १ अपराध न्यून २ आप क्षमा करने योग्य हो ॥ ११ ॥ ३ मिथ्या ४ पापों को धोकर ॥ १२ ॥ ५ श्रेष्ठ प्रशंसा योग्य अपना रूप पावेगा । १३ । ॥ १४ ॥ उस श्रेष्ठ ब्राह्मण ने शिक्षा के अर्थ रुरु से कहा कि हे रुरु अहिंसा धर्म ही परम धन है सो यह निश्चय जानो अर्थात् सर्पों को मारने की हिंसा मत करो ॥ १५ ॥ इस पीछे नम्रता पूर्वक शौनक ऋषि ने सूत पौराणिक से कहा कि राजा जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया उसीको विस्तार करके कहो ॥ १६ ॥ सूत बोले कि जरत्कारु नामक एक ब्राह्मण हुआ जो स्त्रियों में

नारिन विच निष्प्रेम भजत व्रत ब्रह्मचर्य निज ॥
गर्त माँहिं जिहिं पितर लखे अपनैं अवलंबित ॥
उद्धचरन अधबदन गहैं इक तंतु विकल चित ॥
तिनप्रति उवाच तुम कोन यह सहत दुक्ख विपरीत क्रम ॥
यह सुनत विकल बुल्ले अखिल जरतकारुके पितर हम॥१७॥

॥ दोहा ॥

न करत वह पानिग्रहन, नष्ट होत संतान ॥
ताके पाप अधोबदन, झूलत हम इहिं थान ॥ १८ ॥
जरतकारु जो तुम कह्यो, सो मैं आक्खिय विप्र ॥
अब जो तुमहित अप्पनो, कहो करौं सुहि छिप्र ॥ १९ ॥
सुनि पितरन तासौं कह्यो, विरचि प्रजा करि व्याह ॥
यातैं हम व्है हैं अनघ, जैहैं ससुतन राह ॥ २० ॥

॥ षट्पदी ॥

जरतकारु तब कहिय नाम मेरै मिलिहै तिय ॥
तो करिहौं उपयाम कथित तुमरो विचारि हिय ॥
तिम तिन प्रति दृढ आक्खि चल्यो तिय हेत चित्त धरि ॥
बन बिच कन्या देहु कहिय इम तीन ३ बेर करि ॥

कुछ स्नेह नहीं रखता था और ब्रह्मचर्य सेवन करता था उसने अपने पितरों को एक खड्डे में लटकते हुए देखे जो एक तन्तु को पकड़े हुए ऊपर चरण और नीचे मुख किये हुए विकल चित्त से थे, उनसे जरत्कारु बोला कि तुम उलटे क्रम से दुख सहनेवाले कौन हो, यह सुनकर सब बोले कि हम जरत्कारु के पितर हैं ॥ १७ ॥ वह विवाह नहीं करता इससे हमारी सन्तान नष्ट होती है उसके पाप से हम ऊंधे मुख झूलते हैं ॥ १८ ॥ जरत्कारु बोला कि जिसको तुम जरत्कारु कहते हो वह मैं ही हूं अब जो तुम अपनी भलाई चाहो सो कहो मैं उसको शीघ्र करूंगा॥ १९ ॥ १सन्तान पैदा कर२पाप रहित सन्तानवाले पितर जिस मार्ग जाते हैं उसी मार्ग हम भी जावेंगे ॥ २० ॥ मेरा नाम (जरत्कारु) है इसी नाम की स्त्री मिलजावेगी तो हृदय में तुम्हारा कहना विचार कर ३विवाह करूंगा वन में जाकर तीन बेर यह कहा कि मुझे कन्या दो, इस बात को वासुकि नाग ने सुनकर जलदी से

सुहि सुनत नाग वासुकि सजव लै निज भगिनी संग वह ॥
करि बिनय जरतकारुहिँ कहिय अप्प नाम तिय लेहु यह।२१।
कुल निज रक्खन काज जामि वासुकि दिन्नी जब ॥
जरतकारु निज नाम जानि तिय लिय बिवाहि तब ॥
जरतकारु सन जरतकारु आस्तीक जनिय सुत ॥
पठित बेद बेदांग बिसद बिद्याबिनोद जुत ॥
जनमेजय अहिमख जत्थ किय तत्थ जाय आस्तीक द्विज॥
भूपहिँ निवारि बर मंगि सब रक्खिय मातुल बंस निज।२२।
सौनक अक्खियं बहुरि कहहु बिस्तारि कथा यह ॥
इम सुनि सूत उवाच सुनहु मुनिराज महामह ॥
प्रथम देवजुग माँहिँ दच्छतनया प्रकटी दुव२ ॥
कद्रू१विनता२नाम लई कश्यप बिबाहि धुव॥
वर लेहु कह्यो कद्रू सु सुनि नाग सहँस१०००सुत मंगि लिय॥
तिनसौं वलिष्ठ विनता तनय दुव२मंगिय मुनि तेहु दिय ।२३।
दोहद लच्छन दुहुँन२ बढे लहि काल महाबल ॥
कद्रू अंड हजार जनैं बिनता निज जामल२॥
सोपऽवेदक भांडमाँहिँ कद्रू रक्खिय जव ॥

अपनी बहिन को साथ लेकर नम्रता के साथ जरत्कारु से कहा कि आपके नामवाली यह स्त्री लो ॥ २१ ॥ जनमेजय के यज्ञ में होम होनेवाले अपने कुल की रक्षा के अर्थ वासुकि नाग ने अपनी बहिन दी जब जरत्कारु ने अपने नामवाली स्त्री जानकर ली और जरत्कारु नामक स्त्री ने आस्तीक नामक पुत्र जना. वेद वेदांग सहित निर्मल विद्या चमत्कार सहित पढे हुए आस्तीक ब्राह्मण ने जहां जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया वहां जाकर वर मांग कर राजा को यज्ञ करने से मना करके अपने मामा (सर्पों) के वंश की रक्षा की ॥२२॥१बोला२बडे उत्सव के साथ ॥ सतयुग में दक्ष प्रजापति के कद्रू और विनता नामक दो कन्या हुई जिनको कश्यप ने ब्याही, इनको कश्यप ने कहा कि वर मांगो सो सुनकर कद्रू ने हजार पुत्र सर्प मांगे और विनता ने उन सर्पों से बलवान् दो पुत्र मांगे सो कश्यप ने दिये ॥ २३ ॥ समय पाकर दोनों के गर्भ बढे. कद्रू ने हजार और विनता ने दो

अब्द पंच सत५०० अंड नाग तिनमैं जनमैं सब ॥
तिन देखि दुखित बिनताहु इक१अंड अपक्क बिदीर्ण किय ॥
पूर्वाऽर्धकाय तिहिं व्है अरुन१दासी होवहु साप दिय ॥२४॥
पुनि हायन सत पंच५००गयैं यह अंड द्वितीयकर२ ॥
पक्कि जनहिं जो पुत्र मात तव साप बिमोचक ॥

(यक१ चक२ अन्त्यानुप्रासः १)

इम बिनता प्रति अक्खि आप स्वच्छंद अरुन गय ॥
कद्रू१विनता२ कवहु लख्यो उच्चैश्रवा सु हय ॥
जो कढ्यो अमृत मंथानतैं तुरगरत्न उरुतेज ध्रुव ॥
यह सुनत वहुरि सौनक कहिय किम समुद्र मंथान हुव ।२५।
सूत कहिय इक समय अमर सब रत्नसानु पर ॥
अमृत हेत किय मंत्र होन पीवर अरु निर्जर ॥
श्रीनारायन कहिय मथहु सुर१असुर२पयोनिधि ॥
औषध१रत्न२असेस डारि तिंहिं बिच बिसेस विधि ॥
तसमात अमृत व्हैहैं प्रकट सो लहि होहु बलिष्ठ सब ॥
असुरन मिलाय किन्नों सुरन मथन सिंधु आरंभ तब ॥२६॥

अंडे जने. १वर्ष२विना पके एक अंडे को फोड़ा जिसमें से ऊपर के आधे अंग सहित अरुण उत्पन्न हुआ जिसने श्राप दिया कि कच्चे अंडे को फोड़ कर मुझको अंगहीन किया इसकारण से तू दासी हो ॥२४॥ और हे माता फिर पांच सौ वर्ष गये पीछे यह दूसरा अंडा पककर पुत्र जनेगी वह तुझको श्राप से छुडानेवाला होवेगा इसप्रकार विनता को कहकर अरुण स्वतंत्र होकर गया जिस पीछे कभी कद्रू और विनता ने उच्चैःश्रवा नामक सूर्य के घोड़े को देखा जो समुद्र से (जल के मथने से) वडा तेजस्वी रत्नरूप घोड़ा निकला था, यह सुनकर शौनक बोले कि समुद्र का मथन कैसे हुआ ॥ २५ ॥ सूत पौराणिक ने कहा कि एक समय देवताओं ने सुमेरु पर्वत पर पुष्ट और जरा (बुढापा) रहित होने के लिये अमृत के अर्थ सलाह की जब विष्णु ने कहा कि देवता और असुर मिल कर विधिपूर्वक औषधि और रत्न सब डालकर समुद्र को मथो, उससे अमृत प्रकट होवेगा उसको लेकर बलवान् होओ. तब देवताओं ने असुरों को सामिल करके समुद्र मथने का आरंभ

अभ्र सिखर आकार शृंग सोभित गिरि मंदर ॥
लता जाल संकुलित विविध पतगन कूजित बर ॥
विविध दंष्ट्रि संपन्न सहित किन्नर अच्छरिगन ॥
अंतर१बाहिर२तुल्ल्य सहँस एकादस११०००जोजन ॥
वह अद्रिराज मंथान थपि उत्पाटन किय जोर अति॥
तदपि न उठाय कोऊ सकत कहिय बिष्णु तँहँ सेस प्रति।२७
तुम अनंत उद्धरहु अद्रि मंदर अतुल्ल्य भर ॥
सुनि उठाय लिय सेस गये सब अब्धि कूल पर ॥
जहँ बासुकि किय नेत्र कहिय सागर तहँ असहन ॥
धरहु अंस मोमाँहिं सहौं मंदर अवघट्टन ॥
तदनंतर कच्छपराजसौं सुर असुरन करि नति कहिय॥
आधार अप्प अगके बनहु सु सुनि कमठ तस तल रहिय।२८।
सुरन पुच्छ संग्रहिय फटा असुरन ऐंचिय जब ॥
लगत मथन छीरोद भयउ उत्कट बिराव तब ॥
नागराज मुख पवन कढे ज्वालाजुत धूमित ॥

किया ॥ २६ ॥ मेघशिखर के समान शोभायमान है शिखर जिसका ऐसा मंदर नामक पर्वत लताजाल से सघन (अवकाश रहित) नानाप्रकार के पक्षिगणों से शब्दायमान, नानाप्रकार के डाढवाले पशुओं से युक्त, किन्नर और अप्सराओं के गण सहित, भीतर और बाहर से समान ग्यारह हजार योजन के उस पर्वतराज को मथने का दंड (रई) बनाकर उसको उखाड़ने में बहुत जोर किया तोभी उसको कोई नहीं उठासका तब विष्णु ने शेषनाग से कहा ॥ २७ ॥ मंदर नामक पर्वत अतोल भार सहित है इसको हे शेषनाग तुम उठाओ, यह सुनकर शेष ने उठालिया और समुद्र के किनारे पर लेगया जहां वासुकि सर्प का नेता किया तहां समुद्र ने कहा कि यह मुझसे सहन नहीं होसका मुझसें सबका अंश रक्खो तब मंदराचल की टक्कर सह सकूं जिस पीछे कमठराज से सुर असुरों ने नम्रता करके कहा कि आप पर्वत के आधार बनो यह सुनकर कमठ उस पर्वत के नीचे रहे ।२८। जब देवताओं ने पूंछ को पकड़ी और दैत्य फण को खींच कर क्षीरसागर को मथने लगे तब तीव्र शब्द हुआ, नागराज के मुख से ज्वाला और धुएँ

मुदिर होय तिन महत बुट्ठि बिरचिय प्रसांति हित ॥
गिरि हलन पिष्ट जल जीव हुव बरुनराज बैभव बिगरि ॥
शृंगस्थ विटपिपतगन सहित भ्राम्यमान च्युत गयउ झरि २९
अवघट्टन भव आग्गि छुट्टि पब्बय किय छादित ॥
सिंह गजादिक सत्व भये सब तत्थ भस्म मित ॥
अभ्र सलिल करि इंद्र सोहु दवदाह समायउ ॥
स्रावित तरुन निर्य्यास उदधि अंतर झरि आयउ ॥
मिश्रित समस्त औषध रसन छीर भयउ सागर सकल ॥
एकांत मथन आकूल इम भयउ आज्य नीरोधि जल।३०।
तदनंतर सब सुरन कहिय हुव हीनसक्ति हम ॥
अँचि नेत्र नहिँ सकत करहु बल होय जथाक्रम ॥
हरि सन लहि बल बृद्धि करिय अंबुधि आकुल घन ॥
पाय अवधि परिनामैं भ्रमत प्रकटिय रतनन गन ॥
कुमुदेस१ आज्य सन तँहँ कढिय श्री २ पुनि पांडुर बासिनिय ॥
देवी सुरा३हु प्रकटिय बहुरि सुभ्र सप्ति४सुरराज प्रिय।३१॥
कौस्तुभ मनि ५ पुनि कढिय हुव सु हरिबच्छ बिभूखन॥

सहित पवन निकला उसकी शान्ति के अर्थ मेघ ने उन (देवता और दैत्यों) के पूजनीय होकर वृष्टि करी, पर्वत के हिलने से जल के जीव पिस कर वरुण राज का वैभव बिगड गया और शिखर पर ठहरे हुए वृक्ष और पक्षी चक्कर (भँवल) खाकर छूट कर गिरगये ॥ २९ ॥ टक्कर (परस्पर की रगड़) से पैदा हुई अग्नि ने छूट कर पर्वत को छालिया जिससे सिंह हाथी आदि जीव जहां पर भस्म होगये तहां इन्द्र ने मेघ के पानी से इस अग्नि की दाह को भी मिटाया, वृक्षों से बह कर गूंद समुद्र में झड़ गया और सब औषधि और रसों के मिल जाने से सम्पूर्ण समुद्र दूध का होगया और अत्यन्त मथने से किनारों पर्यन्त समुद्र का पानी घृत होगया ॥३०॥ १जिस पीछे देवताओं ने कहा२समुद्र को३अन्त में४उस घृत से चन्द्रमा निकला और फिर स्वेत वस्त्रोंवाली लक्ष्मी, फिर देवी मदिरा प्रकट हुई और स्वेत रंग का घोड़ा निकला जो इन्द्र को प्यारा है ॥३१॥ ५विष्णु की छाती का भूषण हुआ

पारिजात ६ पुनि कढिय कामसुरभी ७ अच्छरिगन ८ ॥
द्विरदराज चउ४दंत ९ कल्पपादप१० कपिला११ जिम ॥
कर निज अमृत करीर १२ कढे धन्वंतरी १३ हु तिम ॥
अति मथन होत प्रलयानुचर उफानि धूमजुत जनु अनल ॥
निजगंधमूढ त्रिभुवन करत कालकूट१४प्रकटिय प्रबल।३२।

॥ दोहा ॥

मंत्रमूर्ति सिव कंठ निज, धरयो गरल करि पान ॥
भाल तिलक हित किन्न भव,निज सासि अमृत निधान।३३।
श्री१कौस्तुभ२हरि उर बसे, हय१गज२गो३तरु४हत्थ ॥
वासवके लगतहि बढे, सुधा असुर लहि तत्थ ॥ ३४ ॥
महादर्प रचि रन तुमुल, लग्गे लुट्टन रत्न ॥
माधव व्है तब मोहिनी, जोरयो मोहन जत्न ॥ ३५ ॥
माया मूढन मिलतही, दयो सुधाघट ताहि ॥
पीवहिं हम बिध सो प्रथम, जिहिं तुम पावहु चाहि॥ ३६ ॥
पायो सब कहि पंति करि, असुर सुरन दुहुँ२ओर ॥

फिर देवतरु, कामधेनु और अप्सराओं का गण प्रकटा, चार दांतवाला ऐरावत हाथी कल्पवृक्ष (वांछित फलदायक देवतरु) कपिला नामक (पीले रंग की) गौ और हाथ में अमृत का घड़ा लिये हुए धन्वन्तरि निकले. अत्यन्त मथने से प्रलय के साथ चलनेवाला मानों धूम के साथ अग्नि होवे इसप्रकार उफण कर अपनी गन्ध से तीनों लोकों को मूर्छित करता हुआ प्रबल विष (जहर) प्रकट हुआ ॥ ३२ ॥ उस विष को शिव ने पीकर मंत्र से प्रतिमा के समान अपने कंठ में धरा और अमृत ही है धन जिसके ऐसे चन्द्रमा को महादेव ने अपने ललाट का तिलक किया अर्थात् चन्द्रमा को ललाट पर रक्खा ॥३३॥ लक्ष्मी और कौस्तुभ मणि विष्णु के उर में बसे, और घोड़ा, हाथी, गौ और कल्पवृक्ष इन्द्र के हाथ लगते ही अमृत लेकर दैत्यों का साथ बढा ॥ ३४ ॥ बडा घमंड रचके भयंकर युद्ध करके रत्न लूटने लगे तब विष्णु ने मोहिनी रूप होकर असुरों को मोहने का उपाय जोड़ा॥३५
१अमृत का घड़ा ॥३६॥ दैत्य और देवताओं की दोनों ओर पंक्ति करके स को पाया जिसमें राहु ने समझा कि अमृत तो देवताओं को पिलाते

समुझि राहु पावत सुरन, चोरयो सुर बपु चोर ॥ ३७ ॥
सूर १ सीतकर २ सैन सन, हरि सो अरि अरिं मारि ॥
दिन्नौ ग्रहपन कारि दलित, अमृत न भोग्य उचारि ॥३८॥

॥ षट्पदी ॥

सुधा कलस तब सजव झपटि असुरन हरि सन लिय ॥
प्रहरन सुरन प्रहारि कलह अवमर्द प्रचुर किय ॥
नारायन १ निजचक्र चाप २ नर १ अतुल चलावत ॥
सो घट पायउ सुरन विजय सम्मद छक छावत ॥
दस दिसन कंपि आसुर दुरिय सुर प्रसन्न दिव संचरिय ॥
हरि१बल्ल भजाय असुरन हुलसि सुरन सुधा इम उद्धरिय ॥

दोहा

तब जो निकस्यो सित तुरग, तिहिं निमित्त पण बाद॥
विनता कद्रूकै बन्यौं, सु कहौं सुनहु प्रमाद ॥ ४० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रा

इसकारण से उस चोर ने देवताओं का शरीर चुराया अर्थात् देवताओं का स्वरूप करके उसकी पंक्ति में जाबैठा ॥ ३७ ॥ जब सूर्य चन्द्रमा ने सैन से कहा कि यह असुर है तब विष्णु ने अमृत तुमारे भोग लायक नहीं यह कह कर चक्र से उस शत्रु को मार कर टुकड़े करके ग्रहपन दिया (मस्तक का केतु और धड़ का राहु इन नामों से दोनों ग्रह बने) ॥ ३८ ॥ तब असुरों ने विष्णु से जलदी झपट कर अमृत का घड़ा ले लिया जब देवताओं ने शस्त्र चला कर युद्ध में बहुत पीड़ित किये और नारायण ने अपना चक्र और नर ने अपना धनुष चलाया इस से देवताओं ने विजय के हर्ष के उत्साह में छाकर वह घड़ा पाया, असुर धूज कर दशों दिशा में छिपे और देवता प्रसन्न हो कर स्वर्ग में गये, इसप्रकार विष्णु के बल से असुरों को भगाकर देवताओं ने अमृत को निकाला ॥ ३९ ॥ उस समय जो स्वेत रंग का घोड़ा निकला उसके निमित्त भूल से कद्रू और विनता के पण (सर्त, होड) का विवाद हुआ वह कहता हूं सो सुनो ॥ ४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समकालीन सूतपुत्र के महाभारत सुनाने

वितमहाभारते प्रमद्वरामृत्युज्जीवनरुरुविवहनडुण्डुभशापमोक्षण
जरत्कारुदंपत्युपयमनाऽऽस्तीकजननानागाऽरुणगरुडोद्भवनसुराऽ
सुरसमुद्रमन्थनसुधा१सप्ति२मुख्यमहारत्ननिष्कसनगिरीशगरल
ग्रसनप्रभुपूर्वदेवपराजयनसप्तिसुधासुरभीसिन्धुराऽऽदिसुरेशाऽर्प-
णां सप्तविंशति २७ तमो मयूखः ॥ २७ ॥ आदित एकोनसप्त-
तितमः ॥ ६९ ॥ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

विनतासौं कद्रू कहिय, उच्चश्रवा किहि रंग ॥
विनता तब अक्खिय बिसद, यानैं मेचक अंग ॥ १ ॥
कहैं अनृत सो किंकरी, होय परस्पर हाल ॥
किय दोउन१संकेत इम, कद्रू कुहक कुचाल ॥ २ ॥

षट्पदी

तब कद्रू निज तनय अखिल बुल्लि रु बुल्लिय इम ॥
होयं असित कच रहहु जु हय मेचक दिखाय जिम ॥
नटे सुनत सब नाग होय हमतैं अधर्म नन ॥

में प्रमद्वरा का पीछा जीना और रुरु का विवाह होना, डुंडुभ सर्प का श्राप छूटना, जरत्कारु नामक स्त्री पुरुष का विवाह, आस्तीक का जन्म, सर्प अरुण और गरुड़ का पैदा होना, देवता और दैत्यों का समुद्र मथना, अमृत और घोड़ा है मुख्य जिनमें ऐसे महारत्नों का निकलना, शिव का विषपान करना, प्रतापी दैत्यों का पराजय होना, घोड़ा अमृत कामधेनु ऐरावत आदि इन्द्र के अर्पण होने का सत्ताईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २७ ॥ और आदि से उनहत्तर मयूख हुए ॥ ६९ ॥

उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा किस रंग का है. विनता ने कहा कि स्वेत रंग का है. कद्रू ने कहा कि श्याम रंग का है ॥ १ ॥ इनमें जिसका वचन झूठा निकले वह अभी एक दूसरी की दासी होवे, इसप्रकार जालसाज कद्रू ने अपनी खोटी चाल से दोनों में संकेत किया ॥ २ ॥ तब कद्रू अपने सब पुत्रों को बुला कर बोली कि तुम श्याम रंग के केस होकर घोड़े के लगजाओ जिससे वह घोड़ा श्याम रंग का दीखे. ?हम से यह अधर्म नहीं होता

सुनि कद्रू दिय साप करन संहार स्वपुत्तन ॥
जनमेजय नृपके जाग बिच तुमहिं ज्वलित खै हैं अनल ॥
सुनि असह कहिय सर्पन करहिं कछुक स्याम हय बुद्धिबल ३
तब भुजंग कच स्याम होय यह लूम मध्य रहि ॥
आये दोउन दिट्ठि जीत मेरी कद्रू कहि ॥
विनता किय किंकरिय गरुड पुनि अवधि पाय हुव ॥
जातमात्र उडि गगन त्रस्त किन्नैं निर्जर ध्रुव ॥
सब कंपि गये पावक सरन इन्ह नुति सुनि बुल्ल्यो अनल॥
जिन डरहु गरुडमम तेजसन सुर हितकर यह हुव प्रबल ।४।
गरुतमान यह सुनत सुरन संतत बिरुदायउ ॥
सुनि नुति कश्यप सूनु दिव्य निज तेज समायउ ॥
अग्रजात निज अरुन रह्यो रवि संग अटन रति ॥
गृह पुनि आवत गरुड कहिय कद्रू विनता प्रति ॥
वहि हमहिं सहल हित लैचलहु सिंधुकोन अहिलोक जहँ ॥
वहि ताहि सुनत विनता चलिय गरुड अहिन वहि गयउ तहँ।५।

---

१ यज्ञ में तुमको जलता हुआ अग्नि खावेगा यह असह श्राप सुन कर सर्पों ने कहा कि हम बुद्धिवल से घोड़े को थोड़ा सा श्याम करेंगे॥३॥तब सर्प श्याम रंग के बाल होकर घोड़े की पूँछ में लग गये, वही पूँछ का भाग दोनों की दृष्टि आया जब कद्रू ने कहा कि मेरी जीत हुई, यह कह कर विनता को दासी बना ली. जिस पीछे अवधि पाकर विनता का दूसरा पुत्र गरुड उत्पन्न हुआ जन्मते ही आकाश में उडकर देवताओं को निश्चै ही भयभीत किया तब सब धूज कर अग्नि के शरण गये जब इन (देवताओं) की स्तुति सुनकर अग्नि बोला कि मत डरो यह गरुड़ मेरे तेज से देवताओं का हित करनेवाला प्रबल हुआ है ॥ ४ ॥ यह सुनकर देवताओं ने गरुड़ की निरन्तर स्तुति की. वह स्तुति सुनकर कश्यप के पुत्र (गरुड़) ने वह दिव्यतेज अपने आप में शान्त कर लिया. गरुड़ का बड़ा भाई अरुण फिरने में प्रीति करके सूर्य के साथ रहा और जब गरुड़ पीछा घर पर आया तब कद्रू ने विनता से कहा कि हमको उठाकर सहल कराने को समुद्र के कोने में सर्पलोक है वहां लेचलो. तब विनता कद्रू को और गरुड़ सर्पों को उठाकर लेगये ॥ ५ ॥ फिर

पुनि गरुडहिं तिन कहिय लोक यातैं इक अद्भुत ॥
तहाँ हमहिं वहि चलहु दुक्ख गरुड सु बिचारि द्रुत ॥
विनता पुच्छिय जाय मात इनकैं क्यौं किंकर ॥
जिहिं अक्खिय इन कोल जित्ति अप्पुन किय अनुचर ॥
तब गरुड अहिन प्रति उच्चरिय चेटकपन मोचन करहु ॥
जो लेहु मंगि देहौं सजव इष्ट सोहि हित अनुसरहु॥६॥
अहिन गरुड प्रति कहिय देहु पीयूख आनि जब ॥
दासभाव सन छुटहु तक्ख तामहिं बुल्ल्यो तब ॥
अमृत लैन मैं जात छुधा आतुर परंतु अति ॥
असन बतावहु अंब कहिय बिनता तब सुत प्रति ॥
है सिंधुकुक्षि बिच लोक इक बसत तत्थ सहँसन सबर ॥
बिनु विप्र खाय तू तिन सबन आनहु अमृत अपत्यबर ॥७॥

दोहा

किम जानौं खगपति कह्यो, छन्न चिन्न्ह द्विज छिप्र ॥
करत असन बिनता कह्यो, बन्न्हि बनैं सुहि बिप्र॥८॥

पज्भटिका

सुनि गरुड गयो उडि सबरलोक, खाये निषाद सकुंटुंब थोक ॥

सर्पों ने गरुड़ से कहा कि इससे भी एक दूसरा लोक अद्भुत है वहां हम को लेचलो यह सुनकर गरुड़ ने यह दुःख विचार कर शीघ्र ही माता से पूछा कि हम इनके दास क्यों हैं जब विनता ने कहा कि कद्रू ने मुझको एक कोल में जीत कर अपने को दास बनाया है तब गरुड़ ने सर्पों से कहा कि हमको दासपन से छोड़ो. जो तुमको प्रिय होवे वह मांगो सो जलदी देऊँगा यह हमारा हित करो ॥६॥ सर्पों ने गरुड से कहा कि अमृत ला दो तब दासपन से छूटोगे. जब गरुड बोला कि अमृत लेने को तो मैं जाता हूं परन्तु भूख से बहुत पीडित हूं सो हे माता भोजन बता. समुद्र के बीच में हजारों भील बसते हैं उनमें ब्राह्मण को छोड के सब को खाना और हे श्रेष्ठ पुत्र अमृत लाओ ॥ ७ ॥ गरुड़ ने कहा कि भीलों के सामिल रहनेवाले छिपेहुए चिन्हों के ब्राह्मण को जल्दी कैसे पहिचानूं तब विनता ने कहा कि खाते समय गले में अग्नि लगजावे उसीको ब्राह्मण जानो ॥ ८ ॥ १ स्त्री सहित

सबरीपति हो द्विज एक तत्र, खग सोहु गिल्यो संजुत कलत्र॥९॥
जब जरन लग्यो गल पन्नगारि, तब वह अलात उगिल्यो सनारि॥
खगराज जदपि खाये निखाद, नहिं तदपि छुधा मिटि भो प्रसाद॥१०॥
कश्यप समीप तब गरुड जाय, बल्लि कहिय देहु भोजन बताय॥
यह खगहु सरोवर कहिय तात, दुव२ अत्थ द्विरद कच्छप दिखात॥११॥
जिनके जनमातरसौं बिरोध, सुनि सोहु दुवरहि खावहु सुबोध॥
हुव बिप्र बिभावसु१ नामधेय, अनुजात प्रतीक२ हु भो अजेय॥१२॥
द्विज अनुज कहिय वसु बंटि देहु, विश्वावसु बुल्ल्यो अनृत एहु॥
धनभाग करैं नहिं साधु भ्रात, तू कहत एकता छोरि बात॥१३॥
तसमात अनुज मातंग होहु, सुनि देत भयो जिहिं साप सोहु॥
बनि कच्छप तुम जल करहु बास, तिन लहिय परस्परसाप त्रास॥
तबतैं दुव२ बारन१ कमठ२ काय, यह सुनि सुपर्ण सर निकट आय॥
दुव१ नखनबीच गहि दुहुन२ आप, उडि द्रुत सुमेरु शृंगहिं अपाप१५
निज गरुत बात लखि द्रुमन भीत, पुनि अग्ग चलिय खगपति पुनीत।
इम उडत लख्यो न्यग्रोध एक, हाटकमनिसाखा फल अनेक॥१६॥

---

१ गरुड का गला जलने लगा २ उस अग्नि के अंगारे (खीरे) को ३ भूख मिट कर प्रसन्न नहीं हुआ॥ १०॥ फिर गरुड को पिता ने कहा कि यह तालाब है तहां हाथी और कछुआ दोनों दीखते हैं॥ ११॥ जिनके कई जन्मों से वैर है. विभावसु नाम का ब्राह्मण आगे हुआ था उसका छोटा भाई प्रतीक भी किसीसे जीतने में नहीं आवे ऐसा था॥ १२॥ छोटे भाई ने कहा कि धन बांट दो विश्वावसु ने कहा कि तूने यह मिथ्याभाषण किया है. श्रेष्ठ भाई धन के बंट नहीं करते॥ १३॥ इसकारण से हे छोटे भाई! तू हाथी हो. यह सुनकर प्रतीक ने भी कहा कि तू कच्छप होकर जल में वास कर, इसप्रकार उन्होंने परस्पर श्राप का भय लिया॥ १४॥ जब से दोनों हाथी और कच्छप का शरीर धारण करते हैं, यह सुनकर गरुड तालाब के निकट आकर दोनों नखों में दोनों को पकड कर सुमेरु पर्वत के शिखर पर प्राप्त हुआ॥ १५॥ अपने पांखों के पवन से वृक्षों को भय होता देख कर वह पवित्र गरुड आगे चला, इसप्रकार उडते हुए ने एक वट (बड) का वृक्ष [illegible] जिनके सोने की शाखा और मणियों के अनेक फल थे॥ १६॥ जिस

जोजन सत१००अवयव प्रतत जास,पाथोधि छुवत छाया प्रकास ॥
सतकारि गरुड बुल्ल्यो सु सोहि,इभ१कूर्म२भखहु मम सिर अरोहि॥
जब गरुड चरन कछु परस जात,साखा सु चली तुटि अकसमात॥
लग्गे जँहँ अधमुख लंबमान, मुनि बालखिल्य तपदमनिधान ।१८।
लखि तिन्ह खगेस भयसोकलीन,लिय झेलि न साखा गिरन दीन ॥
उडि ताहि चंचु गहि चलिय आप, मुनिजनन कह्यो विक्रम अमाप ॥
उड्डीन एह गहि भर गरिष्ट, तसभात गरुड नामा वरिष्ट ॥
उडि आय गंधमादन अगेस, तहँ तात लखे कश्यप खगेस ॥२०॥
बुल्ले मुनि यौं लखि वैनतेय,साहस यह छोरहु न कछु श्रेय ॥
सुन कहिय तजत साखा स्वभाय,निज बालखिल्य व्है पिष्ट जाय२१
प्रभु कश्यप तब मुनि किय प्रसन्न,तिहिं छोरि भये हिमगिरि प्रपन्न ॥
बलि गरुड कश्यपहिं कहिय बैन, साखा यह डारौं कोन ऐन ।२२।
इक गिरि तब कश्यप दिय बताय,डारी तहँ साखा गरुड जाय ॥
इभ१कमठ२भखे तिहिं शृंग वैठि,पब्बय दरारि भुव गयउ पैठि ॥२३॥

के अंग सौ योजन तक फैले हुए और जिसकी छाया समुद्र को स्पर्श करती थी वह बट वृक्ष गरुड़ का सत्कार करके बोला कि मेरे ऊपर बैठ कर हाथी और कच्छप को भोजन करो ॥ १७ ॥ जब गरुड़ ने अपना चरण लगाया तब उसकी शाखा अचानक टूट कर चली. जिसमें इन्द्रियों को रोकना और तप ही है धन जिनका ऐसे बालखिल्य नामक ऋषि नीचे मुख किये लटक रहे थे ॥ १८ ॥ उनको देख कर गरुड़ शोकलीन हुआ और उस शाखा को भी अपनी चोंच में झेल कर गिरने नहीं दी जिसको देख कर मुनियों के गण ने कहा कि इसका अमाप विक्रम है ॥ १९ ॥ इस शाखा को पकड़ कर बडा उडाण भरा इसकारण से सब से श्रेष्ठ गरुड नाम हुआ, गंधमादन नामक पर्वत राज पर उड कर आया तहां पिता कश्यप ने गरुड़ को देखा ॥ २० ॥ इसकारण गरुड़ को देख कर कश्यप मुनि बोले कि यह हठ छोड दो इसमें कुछ लाभ नहीं यह सुनकर पुत्र (गरुड़) ने कहा कि शाखा को छोडते ही अपने बालखिल्य ऋषि चून होजावेंगे ॥ २१ ॥ जब कश्यप ने बालखिल्य मुनियों को प्रसन्न किया. तब वे उस शाखा को छोड कर हिमालय पर्वत के शरण में गये फिर गरुड़ ने कश्यप से कहा कि किस स्थान में डालूं ॥ २२ ॥
१ हाथी २ गंधमादन पर्वत के शिखर पर बैठकर ॥ २१ ॥ देवताओं के

उडि चलिय गरुड तब अमृत हेत, उतपात मचे अमरन निकेत ॥
सुरगुरु बुलाय पुच्छिय सुरेस, उतपात व्रात किम होत एस ॥२४॥
इंद्रहिं गुरु अक्खिय तव प्रमाद, पुनि पाय बालखिल्यन प्रसाद ॥
कश्यप तनूज यह गरुड नाम, अमरालय आवत अमृतकाम ।२५।
अमरन प्रति अक्खिय सक्र एहु, दृढ रत्न सुधा नहिं जान देहु ॥
हुव ससुर सज्ज इम कहि सुरेस, सुनतहि यह पुच्छिय सौनकेस २६
किम किय प्रमाद सुरराज सूत, किम बालखिल्य तप गरुड भूत ॥
किम हुव सकुंत कश्यप अपत्य, सब हेतु सावयव कहहु सत्य ।२७।
सुनि कहिय पुब्ब कश्यप समर्थ, मख रचत भये बर पुत्र अर्थ ॥
दीनैं सुर इंधन हित पठाय, ऋषि बालखिल्य जुत देवराय ॥ २८ ॥
तहँ सक्र सहज अतिबल निधान, आयो लै इंधन अग प्रमान ॥
गन बालखिल्य अति अल्पगात्र, सब एक१पर्व अंगुष्टमात्र ॥ २९ ॥
पालास बिंट इक१लिय उठाय, सब तदपि रहे भर खेद पाय ॥
मगमैं कहुँ गोपद पूर्ण नीर, तामाँहिं गिरे सब अणु सरीर ॥३०॥

(स्वर्ग) में वृहस्पति को बुलाकर इन्द्र ने पूछा यह उत्पातों का समूह क्यों होता है ॥२४॥ वृहस्पति ने इन्द्र से कहा कि तुम्हारी भूल और बालखिल्य मुनियों के वर से कश्यप का पुत्र यह गरुड़ नामक हुआ जो अमृत लेने को स्वर्ग में आता है ॥ २५ ॥ देवताओं से इन्द्र ने कहा कि अमृत अपना दृढ-रत्न है जिसको मत जाने दो, यह कहकर देवताओं के सहित इन्द्र सज्जीभूत हुआ, यह सुनकर शौनक मुनि ने सूत पौराणिक से पूछा कि ॥ २६ ॥ हे सूत इन्द्र ने कैसे भूल की और बालखिल्य मुनियों के तप से गरुड़ कैसे पैदा हुआ और पक्षी कश्यप का पुत्र कैसे हुआ, सबका कारण अंग उपांग सहित सत्य कहो ॥ २७ ॥ यह सुनकर सूत ने कहा कि पूर्वकाल में समर्थ कश्यप ने श्रेष्ठ पुत्र के लिये यज्ञ रचा जिसमें इंधन लाने को देवताओं को भेजा और वालखिल्य ऋषियों सहित इन्द्र भी गया. बडा बलवान् इन्द्र सहज से ही पर्वत के समान इंधन उठालाया और वालखिल्यों का समूह बहुत छोटे शरीरवाला सब अंगूठे के एक पेरावामात्र थे ॥ २९ ॥ ढाक के पत्ते का एक बींट सब ने मिलकर उठाया तो भी भार से खेद युक्त होगये और मार्ग में कहीं गौ के खुर में पानी भरा था उसमें अणु के समान शरीर वाले गिर गये ॥ ३० ॥

हसि लंघि तिनहिँ बासव जगाम, हुव मुनिहु ताहि जित्तन सकाम॥
किय सवन अग्निबिच होम आय, कहि बचन इन्द्र असहन सुभाय॥
सत१००गुनित इंद्रतैं बल बिसेस, रन जो प्रचारि जित्तैं सुरेस ॥
इक१इंद्र होहु असो बलिष्ट, यह सुनत सक्र हुव सो कनिष्ट॥३२॥
कश्यप प्रति आक्खिय विनुबिसास, मुनि बालखिल्य मम करत नास
कश्यप सुनि तिन प्रति कहिय जाय, कसमात हवन करियत श्रमाय॥
यह इंद्र रच्यो लोकेस आप, जग अखिल त्रान कारन प्रजाप ॥
तुम अपर इंद्र हित जत्नवान, बिधि बचन व्यर्थ न करहु सुजान।३४।
संकल्प स्वीय नहिँ अनृत आज, तिहिँ होहु होमफल बिहगराज
कश्यप प्रति आक्खिय तब मुनीन, मख रचत तुमहु सुत लोभ लीन
संकल्प सत्य तो होहु सत्य, वह बिहगराज तावक अपत्य ॥
इम सूत गरुड भव हेतु गीत, अब कहत गरुड जिम अमृत नीत॥
लिय सजव सुधा सुरलोक जाय, सक्रादि सुरन सन विजय पाय
पुनि सक्र गरुड मित्रत्व आस, बलि किय खगेस हरिकेतु वास३७

जिनको उल्लंघन करके हस कर इन्द्र चलागया इससे मुनियों ने क्रोध करके इन्द्र को जीतने की कामना की ॥ ३१ ॥ युद्ध में ललकार कर इन्द्र को जीतै ऐसा बलवान् एक दूसरा इन्द्र होवे, यह सुनकर इन्द्र शोक में श्रद्धा रखनेवाला (शोक सहित) हुआ ॥ ३२ ॥ अपने बल में विश्वास रहित होकर कश्यप से कहा कि बालखिल्य मुनि मेरा नाश करते हैं, कश्यप ने बालखिल्य ऋषियों से जाकर कहा कि किसकारण परिश्रम करके होम करते हो ॥ ३३ ॥ इस इन्द्रको स्वयं ब्रह्मा ने रचा है और सब जगत् की रक्षा करने को प्रजापति किया है, तुम दूसरे इन्द्र का यत्न (उपाय) करते हो सो हे सुजान ब्रह्मा के वचन को व्यर्थ मत करो ॥३४॥ आपका संकल्प भी आज झूठा नहीं होता इसकारण से आप के होम का फल पक्षिराज होओ. यह सुनकर मुनियों ने कश्यप से कहा कि तुम भी पुत्र के लोभ में लीन होकर यज्ञ करते हो ॥ ३५ ॥ सो हमारा संकल्प सत्य है तो वह पक्षिराज सत्य ही तुम्हारा पुत्र होवे, इसप्रकार सूत ने गरुड़ के जन्म की कथा कहकर अब जिसप्रकार गरुड़ ने अमृत प्राप्त किया सो कहते हैं ॥ ३६ ॥ १ शीघ्र २ अमृत ३ इन्द्र को आदि लेकर देवताओं को जीतकर ४ मित्रपन ५ हुआ ६ फिर७गरुड़ ने ८विष्णु की ध्वजा में वास किया ॥ ३७ ॥

नागन समीप पुनि अमृत लाय, दिय जननि दासभावहु छुराय ॥
सौनक पुनि पुच्छिय सूत श्रेय, नागनके अक्खहु नामधेय ।३८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारते कद्रू१विनता२पणबदनसवित्रीनागशपनकौहक्य कद्रूपणजयनविनताकिङ्करीकरणगरुडोद्भवनतन्निषादाऽदनविभावसु१सुप्रतीका २ऽऽख्यानगरुडनामप्रकटनकरि१कमठ२भक्षणबालखिल्यप्रसादनताक्ष्र्यजन्महेतुकथनसुपर्णसुधानयनसुरेशतत्सौहार्दविरचनगरुत्मद्गदाधरध्वजनिवसनसमानीतसुधास्वसावित्रीदासत्वमोचनशौनकनागाऽभिधानप्रश्नकरणमष्टाविंशतितमो२८ मयूखः ॥ २८ ॥ आदितः सप्ततितमः ॥ ७० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पज्झटिका

सुनिसूत कहिय हुव बहुत नाग, कछु नाम कहत सनिये सुभाग[1]॥

सर्पों के नाम कहो ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के बराबर है समय का आधार जिसका ऐसे सूतपुत्र के महाभारत सुनाने में कद्रू और विनता का होड (सर्त) लगाना, माता का सर्पों को श्राप देना, इन्द्रजाली कद्रू का पण में जीतना, विनता को दासी बनाना, गरुड का पैदा होकर भीलों को खाना, विभावसु और सुप्रतीक नामक ब्राह्मणों का आख्यान, गरुड नाम का प्रकट होना, गरुड का हाथी और कछुए को खाना, बालखिल्य ऋषियों की प्रसन्नता से गरुड के जन्म के कारण को कहना, गरुड का अमृत लाना, इंद्र का गरुड के साथ मित्र होना, गरुड का विष्णु की ध्वजा में वास करना, लायेहुए अमृत से अपनी माता का दासीपन छुडाना, शौनक का सर्पों के नाम का प्रश्न करने का अट्ठाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २८ ॥ और आदि से सत्तर मयूख हुए ॥ ७० ॥

१ हे श्रेष्ठ भाग्यवाले

कद्रू तनूज[2] हुव प्रथम सेस१, वासुकि२पुनि ऐरावत३वलेस ॥१॥
तत्तक४कर्कोटक५नाग नाम, गिनिये ऽ[3]वै धनंजय६गरलग्राम ॥
कालीय७वहुरि मणिनाग८जानि,प्रकटितवल आपूरण९प्रमानि।२।
पिंजरक १० रु एलापत्र ११ जात,
वामन १२ अनील १३ अरु नील १४ ख्यात[6] ॥
कल्माष१५शबल१६आर्यक१७भुजंग,
उग्रक१८रु कलसपोतक१९अभंग ॥ ३ ॥
रु शुनामुख२०अधिमुख२१बिमल२२[8]व्याल,
पिंडक२३रु सप्त२४कोपन कराल ॥
पुनि सुनहु कोटरक२५संख२६नाम,
बलि सिख२७रु निष्ठानक२८हु [9]ताम ॥ ४ ॥
हेमगुह२९नहुप३०पिंगल३१वखानि,
जिम वाह्यकर्ण३२हस्तिपद३३जानि ॥
[10]वलि मुद्गरपिंडक३४नाम व्याल,
कंबल३५रु अश्वतर३६पर कृपाल ॥ ५ ॥
जे२सिक्खि सरस्वति उक्तगान,
शिवके हुव कुण्डल बुद्धिमान ॥
कालीयक३७वृत्त३८रु पद्म४०दोयर,
संवर्त्तक४१अरु संखमुख४२होय ॥ ६ ॥
कूष्मांडक४३क्षेमक४४काद्रवेय,
पिंडारक४५ विल्वक ४६ नामधेय[11] ॥
करवीर ४७ पुष्पदंष्ट्र ४८ हु अहीस[12],
पुनि विल्वपाण्डुर ४९रु संखसीस ५० ॥ ७ ॥
आहिकर्णभद्र ५१ वलि मूपकाद ५२,



२ पुत्र ३ अत्र ४ विप का समूह ५ अरु ६ प्रसिद्ध ७ सर्प ८ तहां ९ पुनि १० सरस्वती का कहा हुआ गाना सीख कर वे बुद्धिमान् सर्प महादेव के कानों के कुण्डल हुए ११ नामवाले १२ सर्पों के पति

रु हरिद्रक५३ अपराजित५४ बिषाद५५ ॥
ज्योतिक५६ तथाहि श्रीबह५७ भुजंग,
सहसंखापिंड५८ कौरव्य५९ संग ॥ ८ ॥
बिरजाश्रव६० बहुरि धृतराष्ट्र६१ व्याल[1],
रु[2] सुबाहु६२ सालिपिंड६३ हु बिसाल ॥
जिम हस्तिपिंड६४ पिठरक६५ हु जानि,
बलि सुमुख६६ कौणपासन६७ बखानि ॥ ९ ॥
कुंजर६८ रु प्रभाकर६९ कुठर७० सर्प,
कुमुदाक्ष७१ कुमुद७२ तित्तिरि७३ सदर्प[3] ॥
कर्दम७४ बहुमूलक७५ हल्लिकाख्य[4]७६,
कर्कर७७ रु अकर्कर७८ इति समाख्य[5] ॥ १० ॥

समहोदर७९कुंडोदर८०सुराग,सूचीमुख८१इति मुख[6] बहुत नाग ॥
तिनमाँहिं मुख्य शेषनाम, तप तपिय पाय बिषयन बिराम[7]॥११॥
बरलेहु कहिय[8] ... धें होय तुष्ट[9], अक्खिय अनंत[10] मम भ्रात दुष्ट ॥
तिनमाँहिंरहौं नाँहैं मैं कृपाल, विधि कहिय धरहु छितिरहि[11]पताल१२
यह भुम्मि धरत तबतैं अनंत, बासुकि[12] मुख नागन अब उदंत[13] ॥
सब दुखित होय कद्रू प्रसप्त[14],बिधिलोक गये अतिसोक तप्त।१३।
अक्खिय प्रसादैं[15] अज करहु आप,जिम टरहिं नाथ हम नास पाप ॥
लखि अहिन[16] दीन अज कहिय बैन, जे धर्मनिष्ट[17] ते तँहँ जरैं न ।१४।
जो पापनिष्ट बलि[18] दुष्ट जेहि, ताचिहै[19] जनमेजय सत्र[20] तेहि ॥
पुनि सुनहु एक१ अपरहु[21] उपाय,बाचिहो कितेक वह बिधि विधायँ[22] १५

१सर्प२अरु३घमंड सहित४हल्लिक नामवाले५इन नामोंवाले६ इनको आदि लेकर ७ विषय भोग से निवृत्त होकर ॥ ११ ॥ ८ब्रह्मा ने ९ प्रसन्न होकर१० शेषनाग ने कहा कि मेरे भाई दुष्ट हैं ११ भूमि को धारण करो ॥ १२ ॥ जब से इस भूमि को शेष धारण करते हैं, अब वासुकि १२ आदि सर्पों का १३ वृत्तान्त है १४ कद्रू के श्राप से ॥ १३ ॥ हे ब्रह्मा आप १५ कृपा करो १६ सर्पों को दीन देख कर ब्रह्मा ने वचन कहे १७ जो धर्म में निश्चै करके स्थित हैं वे वहां नहीं जलेंगे ॥ १४ ॥ जो पाप में स्थित हैं १८ और दुष्ट हैं जनमेजय २० यज्ञ में १९ जलेंगे २१ दूसरा २२ वह रीति करके ॥ १५ ॥

याथावर कुलविच चित्त चारु, ह्वैहैं द्विजपुंगव जरतकारु ॥
खोजहिं सु बिप्र निज नाम नारि,वासुकि स्वसाहु सुहि नाम धारि १६
वह ताहि देहु यह मत मदीयं, आस्तीक पुत्र ह्वैहैं तदीयं ॥
सो जाय निवारहिं सर्प जागं,आये अज सासन सु सुनि नाग।१७।
जब जरतकारु हुव वह प्रबीन,वासुकि बिबाहि जिहिं जामि दीन ॥
आस्तीक पुत्र ताविच विधाय,बन जरतकारु गय बिरति पाय।१८।
इत विष्णुरात सुत कुपित अंग, उत्तंक वचन प्रेरित अभंग ॥
मंत्रिन प्रति पुच्छिय जनकं नास, अक्खिय उन तच्छक अनयं आस।
इक समय गयो मृगया नृपाल,मुनि गल तँहँ डारयो मृतक व्याल।१९।
तस छात्र नाम शृंगी सताप, सो देतभयो नृपहेत साप ॥ २० ॥
चक्री जिहिं गुरुगल धरिय चाहि,तच्छक दिन सत्तम७डसहु जाहि॥
जब भूप सुनिय यह बज्र बात,इक१थंभमहल किय बिष्णुरात।२१।
नहिं पवन जान कहुँ छिद्र तास,किय तत्थ परिच्छित सतत बास ॥
आयउ जब सप्तम७दिवस छिप्र, तच्छकहु चल्यो ह्वै बृद्ध बिप्र।२२।

यायावरों (कहीं घर बांध कर नहीं रहते और अमावास्या व पूर्णिमासी को होम किया करते हैं उन ब्राह्मण विशेषों को यायावर कहते हैं) के कुल में श्रेष्ठ चित्त वाला ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जरत्कारु नामक होवेगा वह अपने नाम की स्त्री को खोजैगा, १उसी नाम (जरत्कारु) को धारण करनेवाली वासुकि नाग की बहिन ॥ १६ ॥ वह उस जरत्कारु को देना यह २ मेरा मत है ३ उसके ४ सर्प यज्ञ को रोकेगा ५ ब्रह्मा की यह आज्ञा सुन कर ॥ १७ ॥ ६ बहिन को ७ विरक्तपन पाकर ॥ १८ ॥ ८ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) ९, अपने पिता के नाश का कारण मंत्रियों से पूछा उन्होंने कहा कि तक्षक सर्प की ही १० अनीति हुई ॥ १९ ॥ शिकार गया वहां एक मुनि के गले में मराहुआ सर्प डाल दिया उस मुनि के शृंगी नामक शिष्य ने क्रोध सहित राजा को श्राप दिया ॥ २० ॥ कि जिसने जानकर गुरु के गले में सर्प डाला है उसको सातवें दिन तक्षक नाग डसो. जब यह वज्र पड़ने के समान वार्ता सुनी तब राजा परीक्षित ने एक थंभे का महल बनाया ॥ २१ ॥ जिसमें पवन जाने को छिद्र भी नहीं था उसमें परीक्षित ने निरंतर वास किया, जब सातवां दिन आया तब तक्षक भी बूढा ब्राह्मण होकर शीघ्र चला ॥ २२ ॥

दोहा

तच्छकसौँ मगमैँ मिल्यो, कास्यप नाम द्विजेस ॥
कोन अप्प[1] जावत कहाँ, भाख्यो तिहिँ भुजगेस[2] ॥ २३ ॥
डसिहै तच्छक कौरवहिँ, तँहँ द्विज आखिय जात ॥
लैहौँ ताहि जिवाय मैं, बलि लैहौँ बसु ब्रात ॥ २४ ॥
वटतरु डसि तच्छक कह्यो, भस्म भयो यह जानि ॥
याहि जिवावहु हम नृपहिँ, लैहैं जीवत मानि ॥ २५ ॥
तोयहि कास्यप मंत्रि तब, छिरकिय भस्म असेस ॥
ततखिन बढि न्यग्रोध तरु, बन्यौँ जथातथ बेस ॥ २६ ॥
जान्यौँ तच्छक बिप्र यह, लैहै ध्रुवहि जिवाय ॥
कह्यो बित्त[3] हित जात तुम, प्रचुर काज[4] कछु पाय ॥२७
द्रव्य सु हमतैं लैहु द्विज, आखिय तच्छक एह ॥
तासौँ लै बसु[5] बिप्र[6] तब, गो बाहुरि निज गेह ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

तब तच्छक बहु नाग बेस तजि बिप्र बनाये ॥
फलबिच कृमि हुव अप्प लै सु नृप पँहँ जुरि आये ॥
दै आसिख फल ताहि दंभ द्विजगेह गये सब ॥
इत नृप फलहिँ बिदारि मध्य कृमि देखि कह्यो अब ॥
सप्तम७हु आज बित्यो दिवस ठैह ऋत जो द्विजबैन ननु ॥

१ आप कौन हो और कहां जाते हो यह २ तक्षक ने उस कश्यप नामी ब्राह्मण से कहा ।२३। ब्राह्मण ने कहा कि राजा परीक्षित को तक्षक डसैगा उसको मैं जिवा लूंगा और फिर धन का समूह लूंगा ।२४। तक्षक ने वड़ के वृक्ष को डस कर कहा कि यह भस्म होगया है जिसको जिवा लो तो हम राजा को जियाहुआ मान लेंगे. काश्यप ब्राह्मण ने पानी को मंत्र कर सब भस्मी पर छिड़का सो तुरंत बढ कर वड़ का वृक्ष जैसा था वैसा उत्तम बन गया ॥२६॥ ४ कोई कार्य पाकर ३ बहुत धन के लिये तुम जाते हो ॥२७॥ ६ वह ब्राह्मण तक्षक से ५ धन लेकर अपने घर को पीछा फिर गया ॥ २८ ॥ तब तक्षक ने बहुत सर्पों को अपना वेस छोड कर ब्राह्मण बनाया और फल के भीतर आप कीड़ा होकर रहा. कपटी ब्राह्मण अपने घर गये. जो निश्चै ही आप देनेवाले

ता डसहु होय अहि यह कहि रु कृमि सु छुवायउ स्वीय तनु ।२९।

॥ दोहा ॥

छुवतहि तच्छक होय कृमि, डस्यो परीच्छित अंग ॥
भस्म भयो प्रासाद जुत, गो निज गेह भुजंग ॥ ३० ॥
यहै सुनत मानहुँ भयो, ज्वलन आज्य संजोग ॥
जनमेजय अहि जागही, मन्यौं भूपन भोग ॥ ३१ ॥
द्विज बुध करि इक्कत द्रुतहि, अरु अमेय उपहार ॥
भूपति तव दिच्छित भयउ, करन काद्रवन छार ॥ ३२ ॥

॥ षटपात् ॥

च्यवन वंस अवतंस चंड१ भार्गव होता१ हुव ॥
मुनि जैमिनि २ सांगरव २ भये ब्रह्मा २ विदग्ध ध्रुव ॥
ऋषि पिंगल३ अध्वर्यु३ कौत्स४ द्विजवर उद्गाता ४ ॥
व्यास ५ छात्रगन सहित सभ्य ५ हुव संविददाता ॥
उद्दालक१ नारद२ कालघट३ स्वेतकेतु४ पर्वत५ जठर ६ ॥
आत्रेय७ कुंड८ देवल९ असित१० बलि ऋत्विज इत्यादि वर ॥३३॥
औषट वौषट वषट स्वधा स्वाहादि सब्द रचि ॥
अनल कुंड आहूति हवन सर्पन समंत्र मचि ॥

ब्राह्मण का वचन सत्य होवे तो यह कीड़ा है वह सर्प होकर डसो यह कहकर उस कीड़े को अपने शरीर से छुआया ॥ २९ ॥ १ महल सहित ॥ ३० ॥ यह सुनते ही मानों अग्नि से घृत का संयोग हुआ इसप्रकार तेज होकर जनमेजय ने सर्प यज्ञ करना ही राजाओं के करने योग्य विषय माना ॥ ३१ ॥ पंडित ब्राह्मणों को शीघ्र इकठ्ठे करके उपमा रहित (अत्यन्त) सामग्री इकठ्ठी करके फिर राजा ने यज्ञ की दीक्षा ली. सर्पों को भस्म करने के लिये।३२। च्यवन वंश के मुकुट चंड मुनि होता (ऋग्वेद के जाननेवाले) हुए. संगरव के वंश के जैमिनि मुनि ब्रह्मा(सब वेदों के जाननेवाले) हुए. पिंगल ऋषि अध्वर्यु (यजुर्वेद के ऋत्विज) और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कौत्स मुनि उद्गाता(सामवेद के ऋत्विज) हुए. और वेदव्यास अपने शिष्यों सहित ज्ञान के देनेवाले सभ्य (सभासद) हुए. २मुनि, इनको आदि लेकर और भी श्रेष्ठ ऋत्विज हुए।३३। औषट् से लेकर स्वाहा पर्यन्त के शब्द आहुति देने के समय बोलने के हैं

तच्छक बासव सरन जाय किन्नौं अभिवंदन ॥
स्वागत भाख्यो सक्क डरहु जिन कस्यपनंदन ॥
इत सहँसन अयुतन अर्बुदन भुजग मंत्र ऐंचित जरिय ॥
तिन्हकहतवर्ण कुल नाम जे बासवेय कछु कछु करिय।३४।
कोटिस१मानस२पूर्ण३चक्र४सल५पाल६हलीमक ७॥
पिच्छल८कौणप९शरण१०कालदंतक११पुनि तच्छक१२ ॥
कालवेग१३रु हिरण्यबाहु१४पुनि नाग प्रकालन१५॥
एते वासुकिपुत्र जरिय कुंडोदर ज्वालन ॥
पारावत१पांडुर२हरिण३कृश४पारियात्र५मोद६रु सरभ७ ॥
रु विहंग८हंसतापन९बहुरि भयों प्रमोद१०हु भस्मप्रभ।३५।
ए ऐरावततनयँ बहुरि तत्तकसुत जानहु ॥
पुच्छांडक१मंडलक२पिंडसेक्ता३हु प्रमानहु ॥
सरभ४रभेणक५भंग६बिल्वतेजा७रु विरोहन८ ॥
उच्छिक९सलकर१०मूक११शिली१२सुकुमार१३प्रवेपन१४
मुद्गर१५सिसुरोमा१६महाहनु१७बहुरि सुरोमा१८बन्हिहुत ॥
तच्छकतनूँज इतनैं जरिय अब एदार्कु कौरव्यसुत ॥३६॥
एरक१कुंडल२शृंगवेग३वेणी४रु कुमारक५ ॥
वाहुक६वेणीस्कंध७प्रांतक८रु अंतक९धूर्तक१०॥
(रक१तक२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥)
धार्त्तराष्ट्र अब गिनहु संकुकर्ण१रु अहि पिठरक २ ॥
पूर्णांगद३पूर्णमुख४कुठारानन५पुनि सेचक ६ ॥
हरि७सकुनि८प्रमाहठ९कामठक१०बलि सुषेण११भैरव१२वलिय

जिसको रचके सर्पों को होमने की मंत्रों सहित अग्निकुंड में आहुति मची उस समय तक्षक ने इन्द्र के शरण जाकर नमस्कार किया जिसका आदर करके इंद्र ने कहा कि हे कश्यप के पुत्र डरै मत मंत्रों से खींचे हुए सर्प जले उनके वर्ण, कुल और नाम कुछ कुछ वेदव्यास ने वर्णन किये हैं सो कहते है ॥ ३४ ॥ १ अरु २ अग्नि कुंड के भीतर अग्नि में जले ३ भस्म की कांति जै से ॥ ३५ ॥ ४ पुत्र ५ अरु ६ अग्नि में होमे हुए ७ पुत्र ८ सर्प ९ पुनि १०जले

अ०पय१३महास१४मानस१५ऋषक१६पिंडारक१७पुनि कुंडलिगं॥
बहुरि सुंड बेदांग१८उद्रपारक१९पिसंग२०ननुं ॥
बेगवान२१रक्तांग२२सर्बसारंग२३महाहनु२४ ॥
पुनि बराह२५बीरणाक२६चित्रबेगिक२७पठ२८बासक२९॥
अरुण३०समृद्ध३१सुचित्र३२माणिस्कंध३३रु तिम तरुणाक ३४ ॥
पुनि नाग परासर३५अहि इते धार्तराष्ट्र सुचि भस्म हुव ॥
इत्यादि नाग अँचित अमित धुज्जि गये जमलोक ध्रुव॥३८॥
त्रि३सिर सप्त७सिरनाग किते दस१०सिर हुव जानत ॥
सत्रसालिका द्वार गयो आस्तीक बखानत ॥
होत्रादिक सब बिप्र ज्योंहिं जजमान भूप जँहँ ॥
व्है प्रसन्न सुनि बिरुद ताहि लिन्नौं बुलाय तँहँ ॥
नृप कहिय लेहु आस्तीक बर सु सुनि चंड बुल्लिय सुमति
जोलौं जरैं न तच्छक उरग न बर देय तोलौं नृपति॥३९॥
सक्र सरन तिहिं जानि कहिय चंडहिं महीपमानि ॥
बुल्लहु तिहिं सँदाय तक्षकाय स्वाहा भनि ॥
तबहि चंड तच्छक ससक्र बल मंत्र बुलायउ ॥
इंद्रदान भय आनि ताहि तजि स्वर्ग सिधायउ ॥
कहि तिष्ठ तिष्ठ आस्तीक तँहँ तीन३वेर करि उच्च कर ॥

---

१ सर्प २ निश्चै ही ३ सर्प ४ अग्नि में ५ गणना में नहीं आवें इतने ६ तीन मस्तकवाले ७ होम हुए जानो ८ यज्ञशाला के द्वार पर आस्तीक नामा ब्राह्मण राजा की स्तुति वर्णन करता हुआ गया. होता को आदि लेकर सब ब्राह्मण और यजमान राजा (जनमेजय) ने स्तुति से प्रसन्न होकर उसको भीतर बुला लिया और राजा ने कहा कि हे आस्तीक वर मांग, यह सुन कर श्रेष्ठ बुद्धिवाले चंड मुनि बोले कि हे राजा जब तक तक्षक सर्प नहीं जलै तब तक वर मत दो ॥ ३९ ॥ उस तक्षक को इन्द्र की शरण में जान कर राजा जनमेजय ने चंड मुनि से कहा कि इन्द्र सहित तक्षक भस्म होओ, यह कह कर उसको बुलाओ. तब चंड मुनि ने मंत्रों के बल से इन्द्र सहित तक्षक को बुलाया सो इन्द्र तो अपने जलने के भय से तक्षक को छोड़ कर स्वर्ग में चला गया और आस्तीक ने ऊंचा हाथ करके तक्षक से

इम नाग थंभि नृपसौं कहिय मख न होय यह देहु बर॥४०॥

॥ दोहा ॥

तब वह सत्र समाप्त करि, दयो द्विजहिं वर भूप ॥
पालन हू दिन्नौं सु वर, अब सुनिये अभिरूप ॥ ४१ ॥
यह आस्तीक उदंत सुभ, पढहिं सुनहिं मन लाय ॥
हमरो भय तस होय नहिं, कह्यो अहिन मुद पाय ॥ ४२ ॥
याबिच मंत्रहु जे लिखे, व्यासदेव ऋषिराज ॥
वे समस्त मूलहि लिखे, सर्प अभयके काज ॥ ४२ ॥
असितं चार्तिमन्तं च, सुनीथं चापि यः स्मरेत् ॥
दिवा वा यदि वा रात्रौ, नास्य सर्पभयं भवेत् ॥ १ ॥
यो जरत्कारुणा जातो, जरत्कारौ महायशाः ॥
आस्तीकः सर्पसत्रे वः, पन्नगान्योऽभ्यरक्षत ॥ २ ॥
तं स्मरन्तं महाभागा, न मां हिंसितुमर्हथ ॥
सर्पापसर्प भद्रं ते, गच्छ सर्प महाविष ॥ ३ ॥
जनमेजयस्य यज्ञान्ते, आस्तीकवचनं स्मर ॥
आस्तीकस्य वचः श्रुत्वा, यः सर्पो न निवर्तते ॥ ४ ॥

"ठहर ठहर" ऐसा तीन बेर कह कर उसको आकाश में ठहराकर राजा से कहा कि यज्ञ नहीं होवे यह वर दो ॥ ४० ॥ १ यज्ञ २ सर्पों ने भी आस्तीक को श्रेष्ठ वर दिया सो वह ३ मनोहर वर अब सुनो ॥ ४१ ॥ इस आस्तीक के वृत्तांत को मन लगाकर जो पढैगा या सुनैगा उसको हमारा (सर्पों का) भय नहीं होवेगा, यह सर्पों ने आनन्द पाकर कहा ॥ ४२ ॥ ऋषिराज बेदव्यास ने महाभारत में जो मंत्र लिखे हैं वे सब सर्पों से अभय होने के कारण यहां पर मूल ही लिखदिये हैं. ॥ मंत्र के श्लोकों का अर्थ– असित, अर्तिमन्त और सुनीथ इनका जो दिन में वा रात्रि में स्मरण करै उसको सर्प का भय नहीं होता ॥१॥ जरत्कारु माता में जरत्कारु नामक पिता से पैदा हुए बड़े यशवाले जिस आस्तीक ऋषि ने तुम सर्पों की रक्षा की है॥२॥ उसका स्मरण करनेवाले मुझको हे महाभागो! तुम मारनको योग्य नहीं हो. हे महाविषवाले सर्प! तेरा कल्याण हो तू पीछा जा ॥ ३ ॥ जनमेजय के यज्ञ में जो आस्तीक को सर्पों ने कहे उन वचनों का स्मरण कर आस्तीक के वचन सुन करके

शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृत्तफलं यथा ॥ ५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणवंशवर्णने शत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणक सौतिश्रावितमहाभारतेऽनन्तादिमुख्यकाद्रवेयोद्देशनशेषधरणीधारणनागजामेयाऽऽस्तीकजननश्रुतजनकमरणतत्तककुकृत्यजनमेजयसर्पसत्राऽऽरम्भणाहुतनागसन्तानोद्देशनजारत्कारवाऽऽगमनतक्षकाऽऽदिनागदाहनिवारणमेकोनत्रिंशो२९ मयूखः ॥ २९ ॥ आदितः एकसप्ततितमः ॥ ७१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

नृप सत्रुघ्न४३ अनेहमैं, यहै भयउ अहिसत्र ॥
जनमेजय भूपहु तप्यो, जित्ति सवन इकछत्र ॥ १ ॥
सूत सुतहु भारत सुन्यौं, यहहि होत अहिजाग ॥
मुनिन सुनायो जाय इम, वन नैमिष बडभाग ॥ २ ॥
नगर अयोध्याको नृपति, नाम उरुत्तय जास ॥
ताके अरु सत्रुघ्नकै, अतिहि मित्रपन आस ॥ ३ ॥

जो सर्प मारने से नहीं रुकता उसके मस्तक के शिंशवृक्ष के फल के समान सौ टुकड़े होजाते हैं.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवत समय के एक समय में होनेवाले सूतपुत्र (उग्रश्रवा) के महाभारत सुनाने में शेष को आदि लेकर मुख्य सर्पों का कथन, शेष का पृथ्वी को धारण करना, सर्पों के भाणेज आस्तीक का जन्म, तक्षक के खोटे कृत्य से पिता का मरण सुनकर जनमेजय का सर्पयज्ञ आरंभ करना, होमेहुए नागों की संतान का कथन, जरत्कारु के पुत्र (आस्तीक) का आना, तक्षक आदि सर्पों को जलने से बचाने का उन्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २९ ॥ और आदि से इकहत्तर मयूख हुए ॥ ७१ ॥

चहुवाण राजा शत्रुघ्न के १ समय में यह २सर्पयज्ञ हुआ ॥ १ ॥ सूत पौराणिक लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा ने इसी सर्पयज्ञ होने के समय में महाभारत सुना और उस बडभागी ने नैमिष नामी वन में जाकर शौनक आदि मुनियों को सुनाया ॥ २ ॥ ३ हुआ ॥ २ ॥ जनमेजय राजा ने हस्तिनापुर में

षट्पदी ॥

जनमेजय राजनैर सत्र हयमेध बिचारिय ॥
बिजयपट्ट हयभाल्ल बंधि भुव फिरन निकारिय ॥
उग्रसेन निज अनुज संग पठयो हय रक्खन ॥
पहुँचे जित जित प्रबल लचे तित तित नृप लक्खन ॥
उत अटते उरुच्छय धरनिधव कौसलेस हय रुक्कयो ॥
मित्रकी भीर तहँ सत्रुघन४३ देहनिज सु सस्त्रन दयो ॥४॥

दोहा

तनय सत्रुघनकै भयउ, कलना आकररत्न ॥
नाम शालिबाहन४४ निडर, संगर दलन सपत्न ॥ ५ ॥
मगधराज सुभवानको, भागिनेय यह भूप ॥
जनकमित्र तनया ज्वला४४।१, इहिं परनी अभिरूप ॥ ६ ॥
अर्थिजनन दिन्नौं अनिस, इहिं नृप कनक अमान ॥
तिहिं कारन याको अपर२, हुव सुमेरु४४अभिधान ॥ ७ ॥
कौरवपतिके देसकौं, बंधि चमू बलवान ॥
लुट्टन रन जित्तन लग्यो, थिर उज्जर करि थान ॥ ८ ॥
निडर धीर गंभीर नृप, जनमेजय यह जानि ॥
उग्रसेन सोदर सुता, ताहि दई हित तानि ॥ ९ ॥

अश्वमेध यज्ञ करना विचार और घोड़े के ललाट पर विजयपत्र बांध कर निकाला. १ नमे ॥ २ अयोध्या की ओर फिरते समय उरुत्तय नामक अयोध्या के राजा ने उस घोड़े को बांध लिया वहां मित्र की सहाय होकर चहुवाण शत्रुघ्न ने अपना शरीर शस्त्रों को दिया अर्थात् युद्ध में मारागया ॥ ४ ॥३कलना नामक स्त्री रूपी खान में रत्न रूप४युद्ध में शत्रुओं को दलनेवाला ॥ ५ ॥ यह राजा शालिवाहन मगधदेश के राजा शुभवान् का भांणेज था जिसने अपने पिता के मित्र की ज्वला नामक सुन्दर पुत्री को व्याही ॥ ६ ॥ इस राजा ने याचक लोगों को निरन्तर विना प्रमाण सोना दिया इसकारण से इसका दूसरा नाम सुमेरु हुआ ॥ ७ ॥ वह शालिवाहन बलवान् सेना बनाकर जनमेजय के देश को लूट करके मजबूत स्थानों को ऊजड़ (निर्जन) करके जीतने लगा ॥ ८ ॥ जनमेजय ने अपने सगे भाई उग्र-

कलाकुसल अभिधान करि, गोदा४४।२सुंदरगत्त ॥
व्याहि सालिवाहन४४वन्यौं, अव कुरुकुल अनुरत्त ॥ १० ॥
जनमेजयको पट्ट लिय, सतानीक तस पुत्र ॥
भयो यहहु विख्यात भुव, नय१ जय२ सुकृत३ तनुत्र ॥ ११ ॥
नृप सुमेरु४४सुहि जामिपति, सतानीक सुहि साल ॥
इन दोउ२नकै सुहृदपन, प्रतिदिन बढिग विसाल ॥ १२ ॥
(हिसाल१ विसाल२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥)

पट्पात् ॥

सतानीक नरनाह सालिवाहन जामिप जुत,
जोगेश्वर सन जाय दुव२हि वेदन सिक्खे द्रुत ॥
गोतम कृपसन अस्त्रतत्व बोध सु सौनकसन,
सहित अंग उप अंग पढि रु आये धरनीधन ॥
वय वृद्धि होय लहि समय बलि निज निज पुत्रन राज्य दिय,
रानिन समेत वासि वसि विपिन वीतराग विधि वपु तजिय ॥ १३ ॥

दोहा

वैदेही विकला जरी, सतानीक नृप संग ॥
जिम सुमेरु४४जुत हुव ज्वला४४।१, अरु गोदा४४।२हुत अंग ॥ १४ ॥
अश्वमेध दत्तक लह्यो, सतानीक नृप पट्ट ॥

सेन की बेटी शालिवाहन को दी ॥ ९ ॥ सुन्दर शरीरवाली गोदा नामक कन्या का कलाकुशल नाम रखकर शालिवाहन ने विवाही और अब कुरु-कुल से प्रीति रखनेवाला बना ॥ १० ॥ १ नीति, विजय और २ धर्म का ३ कवच (रक्षा करनेवाला) हुआ ॥ ११ ॥ राजा सुमेरु तो ४ बहिनोई (बहिन-का पति) और शतानीक ५ शाला ६ मित्रपन ॥ १२ ॥ राजा शतानीक अ-पने बहिनोई शालिवाहन सहित याज्ञवल्क्य मुनि से जाकर वेदों को शीघ्र ही सीखा और गोतम वंशी कृपाचार्य से अस्त्र, शौनक से वेदान्त, इसप्र-कार सांगोपांग पढकर दोनों भूपति आये. ७ पुनि ८ वन में विर-क्तों की भांति दोनों ने शरीर छोडे ॥ १३ ॥ विदेह की पुत्री विकला अपने पति शतानीक के साथ जली और सुमेरु (शालिवाहन) के सहित ज्वला और गोदा दोनों स्त्रियों ने शरीर होमे ॥ १४ ॥ शतानीक के पाट पर अश्वमेध

यहहु भयो अतिबल अज्जित, वीर अतुल रनवट्ट ॥ १५ ॥
नृपति सालबाहन तनुज, सतानीक भानेज ॥
भयउ पुंड्र१ कर्णाट२ नृप, कृतवर्मा४५रवितेज ॥ १६ ॥
ससिकुल३ सन आनर्त नृप, सुता राधिका४५।१नाम ॥
कृतवर्मा४५ सु बिबाह करि, आनी गृह अभिराम ॥ १७ ॥
तामैं कृतवर्म्मा तनय, भयउ सुवर्मा४६सूर ॥
मगधराज निरमित्रसौं, पढयो अस्त्र गुनपूर ॥ १८ ॥

॥ षट्पदी ॥

अग्ग नृपति सहदेव३८पुंड्रजनपद जब जित्तिय ॥
ताके नृप तब भजि द्रविड अधिराज सरन लिय ॥
ताकी संतति माँहिं भयउ इक वीर जयद्दल ॥
कृतवर्मा सन आनि सु अब जुज्झ्यो दुद्धर दल॥
हनि समर सालिबाहन सुतहिं जिहिं स्वकीय जनपद लयो॥
कर्णाट अधिप अभिषेक लहि भूप सुवर्मा४६तब भयौ ॥१९॥

॥ दोहा ॥

पुंड्रदेस छुटि इम गयो, रह्यो मुलक करनाट ॥
कियउ सुवर्मा४६राज्य तँहँ, अरिन करन उच्चाट ॥२०॥

॥ षट्पदी ॥

नृपति सुवर्मा४६जाय विदित विंट्यो सु जयद्दल ॥

को गोद रक्खा १ रण के मार्ग में ॥ १५ ॥ राजा शालिवाहन का पुत्र और शतानीक का भाणेज पौंड्र और कर्णाट नामक दोनों देशों का राजा सूर्य के समान तेजवाला कृतवर्मा नामक हुआ ॥ १६ ॥ ३ आनर्त देश के राजा २ चन्द्रवंशी से ४ सुन्दर ॥ १७ ॥ १८ ॥ आगे राजा सहदेव ने जब पुंड्र देश को विजय किया तब पुंड्र देश के राजा ने द्राविड देश के स्वामी का शरण लिया था उसीके सन्तान में जयद्दल नामक वीर हुआ वह दुस्तर सेना लेकर कृतवर्मा से लड़ा. अपना देश पुंड्रक ने पीछा लेलिया तब कर्णाट देश के स्वामीपन का अभिषेक लेकर सुवर्मा राजा हुआ ॥ १९ ॥ ५ उद्वेग ॥ २० ॥ जयद्दल को घेर लिया जब उस कुशल जयद्दल ने सुवर्मा की सेना में दूत

कहि पठई जिहिं कुसल दत मुक्कलि याके दल ॥
हमरी भुव तुम हत्थ करी अनुचित सुहि किन्नी ॥
सोहि बहुरि लहि समय लरि रु तुमसन हम लिन्नी ॥
छोरैं न अवनि जीवत छिनक मंडहु पग दृढकरि मतो ।
बप्पको बैर जो तुम चहहु तनया मम ब्याहहु ततो ॥२१॥

॥ दोहा ॥

सुनत सुवर्मा४६लखि समय, किय सुहि अंगीकार ॥
सुता जयदूवलकी समी४६।१, आनी परनि उदार ॥२२॥
नृप जजाति सुत अनु जनन, नृप हुव सुतपा नाम ॥
असुरराज बलि अवतर्यो, व्है सुत ताके धाम ॥२३॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

वा बलीकी रानी सुदेष्णामैं दीर्घतमा मुनिसौं अंग१वंग२ कलिंग३पुंड्र४सुह्म५ए पंच५पुत्र भये ॥

तिनके नामन करि अंग१वंग२कलिंग३पुंड्र४सुह्म५ए पंच५ देस विदित ठये ॥

तिनमैं चतुर्थ४जो पुंड्र ताके कुलमैं या जयदूवलनैं जन्म लीनौं ॥

तानैं कृतवर्माके बैरमैं कर्णाटराज सुवर्माकौं समी नाम अपनी आत्मजा बिवाहि बिदा कीनौं ॥२४॥

सुवर्मासौं समीमैं राजाधिराज दिव्यवर्मा४७भयो ॥

ज कर कहला भेजा कि हमारी भूमि तुमने अनुचित करके लेली थी वही भूमि फिर समय पाकर तुम से लड़ कर हम ने पीछी ली है सो जीवित रहते जब तक क्षण भर भी उस भूमि को नहीं छोड़ेंगे, लड़ना है तो दृढ विचार करके पग मांडो (खड़े रहो) और जो तुम अपने पिता का वैर चाहते हो तो मेरी पुत्री वैर में देता हूं सो ब्याह लो ॥ २१ ॥ सुवर्मा ने इस बात को स्वीकार करके समय देख कर जयद्वल की पुत्री समी को विवाह ली।२२। यह जयद्वल कौन था सो आगे कहते हैं कि राजा ययाति के अनु नामक पुत्र के वंश में सुतपा नामक राजा हुआ उसके घर में पुत्र होकर दैत्यों के राजा बलि ने अवतार लिया ॥ २३ ॥ उस बलि नामक चन्द्रवंशी राजा की राणी सुदेष्णा में दीर्घतमा नामक मुनि से ॥ १पुत्री.

तानैं कुरुराज अधिसीम कृष्णाकी दुहिता[1] दयावती४७।१ बिबाह सूरिनके[2] समाजसौं सुजस लयो ॥

दिव्यवर्मासौं दयावतीमैं राजकुमार यौवनाश्व४८कन्या रंजनी४८ए दोय२संतान भये ॥

या कन्याकौं दिव्यबर्मानैं अर्कअन्वय[3] अवतंस[4] अयोध्या नगरके अधिराज[5] सहदेवकौं बिबाहि दायजमैं अनेकही द्रव्य दये।२५।

जामैं सहदेवसौं दिव्यबर्माके दौहित्र[6] रघुकुलरवि बृहदश्वनैं जन्म पायो ॥

अरु चहुवाण चक्रचंडभानु राजकुमार यौवनाश्व४८देवगिरीश मगधराज स्वक्षकी सुता सुकला४८।१कौं राक्षस विवाह करि स्वयंवरतें जित्ति लायो ॥

याहीं समयमैं कुरुकुलराजा विवक्षुनैं गजपुरकौं[7] गंगामैं गिरत जानि कौसांबी पुरीमैं जाय राज्य सुख अनुभूत[8] कस्यो ॥

अरु सुकलामैं यौवनाश्वसौं कुमार हर्यश्व४९तथा प्रीतिमती४९चारुमती४९मतिमती४९यह कन्याको त्रय३भयो तिननैं स्वयंबरमैं एक१अवंती अधीस[9] प्रामारराज भीमको कुमार रामसेन ५०ही बरयो ॥ २६ ॥

अरु हर्यश्व कुमार४९नैं सूकरराज[10] चालुक्य हरवाय५२की कन्या करेणुमती४९।१विवाहि आनी ॥

तामैं हर्यश्वसौं राजकुमार अजपाल५०तथा तनया[11] तरणिका५०ए दोय२अपत्य[12] भये तिनमैं तरणिका५०तो जनकनैं[13] मगधराज श्रुतंजयकौं विवाही सो देवगिरी जाय भई पट्टरानी॥

राजा हर्यश्वके अनंतर[14] राजकुमार अजपालनैं किसोरही अवस्थामैं राज्य सम्हारयो ॥

१पुत्री२पंडितों के समाज से३सूर्यवंशी के४मुकुट५स्वामी॥२४॥२५॥६दोहिता, रघुवंशीयों का सूर्य ७ हस्तिनापुर को ८ अनुभव किया. ९उज्जैन के स्वामी १०सूकर नामक क्षेत्र के राजा११पुत्री१२सन्तान१३कन्या के पिता ने१४पीछे

अरु चेदिराज सिसुपालबंस अवतंस राजा द्युमत्सेनकी[1] दु हिता[2] दुर्मिला५०।१कौं बिबाह दिग्विजयपैं प्रस्थान विचार्‌यो॥२७॥

॥ दोहा ॥

लोचन गज पावक३८२प्रमित, कलिजुग हायन[3] जात ॥
पट्ट लहिय अजपाल प्रभु, खल खंडन भुव ख्यात ॥२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचरणासिवंशवर्णने शालिबाहन४४ज्वला४३।१गोदा४४।२कृतवर्म४५राधिका४५।१सुवर्म४६शमी४६।१दिव्यवर्म४७ दयावती ४७।१योवनाश्व४८सुकला४८।१हर्यश्व४९करेणुमती४९।१ समासचर्याबर्णनहर्यश्वानन्तरप्राप्तपट्टविवोढचेदिराजद्युमत्सेनदुहितृकाऽजपाल५०दिग्विजयविचारणं त्रिंशो३०मयूखः ॥३०॥ आदितो द्विसप्ततितमः ॥ ७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ षट्पात् ॥

चाहुवान अजपाल ५०चढिग[4] दिग्विजय विथारन ॥
बीस लक्ख२००००००दल[5] विपुल[6] सहँसबिंसति २००००बडवाँरन[7]
तीन लक्ख३०००००तुक्खार[8] सहँस नासाठि६२०००साजि स्यंदन[9]॥
प्रबल सेस[10]१६१८०००पाइक्क करन अरि[11] नरन निकंदन ॥
कुंतल१बिदर्भ२केरल३द्रविड४चोल५अधिप नमि संग हुव॥

१चंदेरी के राजा शिशुपाल के वंश के मुकुट२पुत्री३कलियुग के वर्ष जाते समय राजा अजपाल ने पाट लिया जो दुष्टों को मारने में पृथ्वी में प्रसिद्ध है ।२८।
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंशवर्णन में शालिवाहन और उनकी स्त्रियें ज्वला और गोदा, कृतवर्म-राधिका, सुवर्म-समी, दिव्यवर्म-दयावती, यौवनाश्व-सुकला, हर्यश्व-करेणुमती के आचरण का संक्षेप वर्णन और हर्यश्व के पीछे पाट बैठ कर चंदेरी के राजा द्युमत्सेन की पुत्री को व्याह कर अजैपाल के दिग्विजय विचारने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३०। और आदि से बहत्तर मयूख हुए ।७२।
४ चढा ६ बडी ५ सेना ७ बीस हजार बडे हाथी ८ घोड़े९रथ १० बाकी के सोलह लाख अठारह हजार पैदल११शत्रुओं के मनुष्यों को नाश करनेवाले

मरहट्ठ६जित्ति पूरबरतरफ किय प्रयान हरिश्रश्वसुव ॥ १ ॥
गंजि मुलक गोनर्द७अंग८बंग९हु द्रुत दब्बिय ॥
बर्म१०उत्कल११अंध्र१२कामरूप१३हु अप्पन किय ॥
ताम्रलिप्त१४करि जेर मगध१५कोसल१६मैथिल१७जुत ॥
कौसंबी कुरुदेस१८दंडि उत्तर३हंकिय द्रुत ॥
बाल्हीक१९चीन२०तंगण२१अरब२२मूलिक२३तूर्ण२४तुखारबलि
लंपाक२६दार्व२७प्रस्थल२८सहित करि नृप जित्तिय तुमुल कलि
निखिल देस नैपाल२९जित्ति जंगल३०सदसेरक३१ ॥
सह सतद्रु३२कसमीर३३अटक३४जित्तिय धमचक्क धक ॥
अरु कंधार३५इरान३६बल्क३७फ्रांस३८रु फिरंग३९जिम ॥
रूस४०मिसर४१सह रूम४२अखिल पच्छिम४जित्तिय इम॥
सोरठ४३सुमील४४आनर्त४५इत अर्बुद४६लग लाये चरन॥
सुनि जग पुकार सत्वर सुपहु पुष्कर बन आयउ लरन ॥

॥ दोहा ॥

(अजैपाल) पूर्वदिशा को चला ॥ १ ॥ पूर्वदिशा में गोनर्द, अंग, वंग, को भी शीघ्र दबाया और वर्म, उत्कल, अन्ध्र, कामरू को भी अपना करके ताम्रलिप्त, मगध, कोशल, मैथिल, कौशांबी नगरी के साथ कुरुदेश को दंड देकर उत्तर की तरफ चला उत्तर में वाल्हीक, चीण, तंगण, अरब, मूलिक, तूर्ण, तुखार, लंपाक, द्रार्व प्रस्थल देशों के साथ भयंकर युद्ध किया ॥ २ ॥ सम्पूर्ण नैपाल देश को जीत कर दशेरक सहित जंगल देश को जीता और शतद्रु नदी के किनारे के देश सहित कश्मीर को और अटक नदी के किनारे के देश को युद्ध करके जीता (यहा पर जिन देशों के प्राचीन नाम आये हैं यही नाम अनेक स्थलों पर आते हैं सो बार बार इनका अर्थ करके पूरा पता देने से टीका के विस्तार का भय है इसकारण से ग्रन्थ प्रारंभ से पहिले सब देशों के पते और जहांतक मिल सकेगा वहां तक उनके पर्याय नाम एक ही स्थान पर लिख देंवेंगे इसीकारण से यहां देशों के नामों की टीका नहीं की गई है सो पाठक लोग इस त्रुटि को चमाकरैं.) सम्पूर्ण पश्चिम के देश इसप्रकार विजय किये और फिर इधर (भारत वर्ष में) के देशों में सोरठ, सुमील, आनर्त और अर्बुद के राजाओं को अपने चरणों में लगाये फिर संसार के लोगों की पुकार सुनकर वह श्रेष्ठ राजा शीघ्र पुष्कर वन में लड़ने को आया ॥३॥

पहिलैं जहँ चंडासि१ किय, बानसुतन सन जंग ॥
हो तहँ सो रावन असुर, भो न आयु बल भंग ॥ ४ ॥
श्री कन्हरके समयमैं, दुरयो रह्यो डरि दुष्ट ॥
सब जगकौं तिहिं इहिं समय, रुवन लगायो रुष्ट ॥ ५ ॥
बसैं जु पुष्कर गहन विच, करि गिरिनाग निकाय ॥
जट नामक निज पुत्र जुत, हनत सबन खल आय ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

जहँ जद्दव ध्रुवसेन हुव सु सकुटुंब मारि लिय ॥
पुष्कर तीरथप्रात कोस चउसट्ठि६४ विजेन किय ॥
रावन तत्थ सु रहत सूनु२ जट सहित महाऽसुर३ ॥
जिहिं दिन्ने सब जारि खेट१ खर्वट२ निवसथ३ पुर ४ ॥
संगी तदीय५ रक्खस६ १असुर२ वक्र१ विडाल२ वकाल३ वक ४ ॥
विकट५ रु विडंब६ इत्यादि जुरि नरन जित्ति खावत अछक ॥७॥
अग्निहोत्र१ मख२ अखिल निलय किन्नैं तर उप्पर ॥
विष्टा१ प्रस्रव२ वरसि समल किन्नैं सरिता१ सर२ ॥
सब तीरथ३ मग रुंधि श्राद्ध१ तप२ विहित विगारत ॥

ऐसी सेना से दक्षिण दिशा के कुन्तल, विदर्भ, केरल, द्रविड़ चोल देशों के राजा नम्र कर साथ हुए और महाराष्ट्र देश को जीत कर हर्यश्व के पुत्र चहुवाण ने बाणासुर के पुत्रों से युद्ध किया वहां रावण नामक असुर था सो आयु के बल से नहीं मरा ॥ ४ ॥ और यही शठ श्रीकृष्ण के समय में छिपा रहा वही रावण क्रोध करके इस समय संसार को रुलाने लगा ॥५॥ वह रावण नाग पहाड़ (अजमेर और पुष्कर के बीच में पर्वत है उसका नाम नाग पहाड़ है) को अपना घर बना कर पुष्कर वन में रहने लगा और अपने जट नामक पुत्र सहित आकर सब को मारने लगा ॥ ६ ॥ १ निर्जन२ पुत्र३ बड़ा असुर रहता था जिसने खेड़े (छोटे ग्राम) पर्वत तथा नदी तट के ग्राम सामान्य ग्राम और पुरों (जिसमें बाजार होवे और आसपास के ग्रामों का जहां व्यापार होता होवे उसको पुर कहते हैं) को जला दिये ५ इसके ४ साथी ६ राक्षस और ७ दैत्य , ॥ ७ ॥ यज्ञ के सब घर नीचे ऊपर कर दिये मूत्र की वर्षा करके नदी और तालावों को मल सहित करदिये

इत उत खावत अटत औत बिप्रन संहारत ॥
प्रति वसति सिला पब्बयं पटकि कुटिल लोक चूरन करत ॥
हा हंतकार सब ठाम हुव ज्वालमाल व्याकुल जरत ॥८॥

दोहा

वरुनदिसाके बिजयमैं, यह दुख पाय अपार ॥
प्रनमि करी अजपालसौं, प्रचुरनं जाय पुकार ॥ ९ ॥

षट्पात्

अनुचित सुनि अजपाल प्रबल हंकिय रावन पर ॥
अरु पुक्खरवन आय बिंटिलिय नागधराधर ॥
सूनु सुभट सब साजि खलहु आयो अनखावत ॥
सकाति१ भुसुंडी२सूल३बान४तोमर५बरसावत ॥
रचि रन बजाय भुज उच्चरिय थिर पय मंडहु लरन थपि ॥
चंडासि दाव बहु करि थक्यो पैं अतिबल न मर्यो तदपि ।१०।

सौराष्ट्री दोहा

प्रभु अजपाल प्रवीन, सुनि अक्खिय चंडासि नृप ॥
सोसे खल गिनि दीन, न हनैं सो अनुचित निपट ॥ ११॥
मलिन जानि तुहिं मंद, नृपति छुवाये सस्त्र नहिं ॥
अब रक्खहु आनंद, मित्र होहु मम सरनको ॥ १२ ॥

षट्पात्

वेद कर्म करनेवाले ब्राह्मणों को, प्रत्येक १ घर पर शिला और २ पर्वत पटक कर ॥ ८ ॥ ३ पश्चिम दिशा के विजय करते समय में ४ बहुत लोगोंने ॥ ९ ॥ ५ पुष्कर तीर्थ के वन में आकर ६ घेर लिया ७ नाग पहाड़ को ८ पुत्र और अपने सुभटों सहित क्रोध करता हुआ दुष्ट (रावण) भी आया और शक्ति आदि शस्त्र अस्त्रों को बरसा कर भुज ठोक कर चहुवाण अनेक दाव करके थक गया तोभी बडा बलवान् रावण उससे नहीं मरा।१०। प्रवीण राजा अजपाल बोला कि चहुवाण(चहुवाणों के आदि पुरुष)ने दुष्टों का पोषण किया और तुझको दीन जान कर नहीं मारा सो बहुत अनुचित किया ॥ ११ ॥ ९ हे मूर्ख तुझको नीच जान कर उस राजा ने शस्त्र नहीं छुवाये १० मेरे बाणों का मित्र हो अर्थात् बाणों से मिल ॥ १२ ॥

इम अक्खत खल अनखि इक्क डारिय गिरि उप्पर ॥
आवत लखि अजपाल [1]सु किय वहु टूक मारि सर ॥
[2]सय धारि [3]तदनु त्रिसूल भूप मुक्किय रावन [4]रुख ॥
धरि खल सम्मुह पैंड गह्यो दंतन [5]उबाय मुख ॥
सर [6]तिक्ख बहुरि [7]मुक्कयो सुपहु कट्टयो तिहिं खल बाम कर॥
नहिं संकि तदपि सम्मुह निडर गयउ गज्जि मंडत [8]गुमर ।१३।
तब रावन इक्क [9]तोम्र पंच भल्लक खिजि प्रेरिय ॥
सायक दै नृप सोहु [10]खमग रज रज करि खेरिय ॥
जटके आयुध कट्टि विकट वक्कहिं करि विव्हल ॥
तिम बिडाल सिर तोरि निकट लिन्नों रावन खल ॥
असुरहु कृपान झारिय उछटि हय रु सूत नृपके हनें ॥
तानैंहु उतरि रथतैं त्वरित घायउ सठ दै [11]असि घनें ॥१४॥
इहिं अंतर जट आय विहसि अजपाल वकारिय ॥
नृपके मंत्रिप नील पकरि असि ताहि प्रहारिय ॥
सोमचूड सामंत सरन मारयो बिडंब सठ ॥
मंडलग्ग नृप मारि हन्यौं रावन रावन हठ ॥
जट१ बक२ [12]प्रमुखँ भज्जिय जवहि भूप बिजय जगजस भरिय ॥
सानंद सुरन वरखे सुमन कहिय अतुल उपकार किय॥१५॥

दोहा

१उस पर्वत को२हाथ में३जिस पीछे त्रिशूल धारण करके रावण की४ओर छोडा ५ चौड़ा करके६तीखा बाण७छोडा तोभी८घमण्ड ॥ १३ ॥ रावण ने पांच फलवाला९भाला चलाया१०आकाश मार्ग में११बहुत बार खड्ग चला कर राजा ने रावण को घायल किया ॥ १४ ॥ इस बीच में जटासुर ने आकर हस कर अजपाल को ललकारा उस समय राजा के नील नामक मंत्री ने खड्ग लेकर जट पर प्रहार किया और सोमचूड़ नामक अजपाल के उमराव ने विडंब नामक असुर को मारा और राजा ने खड्ग मार कर रावण के न मान है हठ जिसका ऐसे रावण को मारा१२आदि देवताओं ने प्रसन्न हो कर पुष्पों की वर्षा की और कहा कि बडा उपकार किया॥ १५ ॥

हनि रावन अजपाल इम, रचि तीरथगुरु न्हान ॥
नागअद्रि तल आय नृप, चिंतिय यह चहुवान ॥ १६ ॥
मही कोस चउसट्ठि६४मित, किय असुरन बन घोर ॥
भयउ तिरोहित तीर्थगुरु, क्रग रचहिँ इहिँ दोर ॥ १७ ॥
यह बिचारि गिरि नागके, कटक अधर अभिराम ॥
प्राची दिस अजमेर पुर, बिरचिय आयत वाम ॥ १८ ॥
सुपहु राम तबतैं बस्यो, यहै नगर अजमेर ॥
पांडव सक मुनि गज अनल३८७,मधु सित बारसि१ रवेर॥
किते कहत रविकुलकलस, भो अजपाल जु भव्य ॥
यह पुर तिहिं विरच्यो रु इहिं,नृप५०।१जीरन किय नव्य २०

षट्पात्

इम बसाय अजमेर मध्यदेसहु किन्नँ बस ॥
अरु अमोघ आदेश जगत बिसतारि लियउ जस ॥
सुनतहि जाको नाम रहत जिमतिम चित्राकृति ॥
तप्यो नृपति इहिं तोर सबन उप्पर धारत धृति ॥
पुहवी प्रसिद्ध याको अपर२जय करि नाम जिगीसु५०हुव ॥
जिन नगर आय मिहिकावतिय किय सोभितकरनाट भुव ॥२१॥

दोहा

नागपहाड़ के नीचे आकर यह विचार किया कि।१६। चौसठ कोस प्रमाण-वाली भूमि को असुरों ने घोर वन कर दिया जिससे पुष्कर तीर्थ छिप गया इसकारण इस फैलाव में नगर बसावें ॥ १७ ॥ नाग पर्वत के शिखर के नीचे पूर्वदिशा में पुण्यकर्मों के भोग से अजमेर नामक चौड़ा शहर बसाया ।१८। हे श्रेष्ठ राजा रामसिंह ! युधिष्ठिर के३८७के संवत में चैत्र सुदि बारस को यह अजमेर पुर बसा है ॥ १९ ॥ कितनेक कहते हैं कि सूर्यवंशियों के कुल का कलश अजपाल नामक राजा योग्य हुआ था उसने अजमेर नगर बसाया है और इस अजपाल चुहाण ने जीर्ण को नया किया है ॥ २० ॥
१पीछा नहीं फिरे ऐसा हुकुम२चित्राम की आकृति के समान३धैर्य को धारण करके भूमि में विजय करने के कारण इसका दूसरा नाम जिगीषु (जीतने

दिव्यवर्म४७नरनाहसौं, बढती संतति जानि ॥
ब्याह च्यारि४किन्नैं बहुरि, प्रनति उक्त[1] पहिचानि ॥ २२ ॥

पट्पात्

प्रथम दुर्भिला५०।१परनि जित्ति पुनि सकल दिगंतर[2] ॥
अब मातुल पुरसानु५३सुता सुगुणा५०।२व्याहिय वर ॥
मधु महीप५२प्रतिहार सुता लावण्यवती५०।३जिम ॥
रविकुल रैवतराज तुंग दुहिता वृंदा५०।४तिम ॥
पंचमी५उमा५०।५मथुरा नृपति सेनपाल तनया परनि ॥
अजपाल५०नगर मिहिकावतिय धन्न्य अखिल भुग्गिय धरनि ॥२३॥

दोहा

याहि समय अजपालको, सालक[3] लुद्दर५३नाम ॥
कोसलेस नृप अश्वरथ, हन्यौं असुत रनधाम ॥ २४ ॥
पितर जाहि प्रतिहास कुल, निखिल गिनत नृप[4] राम ॥
तास पट्ट लिय अनुज[5] तस, बिनय महीपस५४नाम ॥२५॥

रोला

नृप अजपाल तनूज[6] भये तेरह१३प्रसिद्ध भुव ॥
प्रथम नाम भट्टल्लन५१।१महासेन५१।२सु द्वितीय२हुव ॥
महाबाहु५१।३पुनि भीमसेन५१।४धृढधन्वा५१।५जानहु ॥
अश्वपति५१।६रु तिम नृपति५१।७जगतपति५१।८प्रथित[7]प्रमानहु ॥
सुकर्मा५१।९रु भगदत्त५१।१०इंद्रदत्ताख्य[8]५१।११धनेश्वर५१।१२ ॥
विष्णुदत्त५१।१३सब अनुज एहि प्रतिजगति१३[9]वीरवर ॥

की इच्छावाला) हुआ ॥ २१ ॥ दिव्यवर्म नामक राजा से चहुवाणों की सन्तान बढने लगी इस बात को जान कर कि हम अधिक विवाह करेंगे तो हमारी सन्तान भी अधिक बढेगी१कही हुई ॥ २२ ॥ २ दिशाओं के अंत तक ॥ २३ ॥ ३ शाला कोशलेश राजा रामसिंह उस लुद्दर को सब प्रतिहार कुल पितर (विवाह करने से पहिले जो युद्ध में मारा जाता है अथवा विना सन्तान हुए माराजाता है उसको उसके कुलवाले पितर मान कर पूजते हैं) ५लुद्दर के छोटे भाई विनय ने॥२५॥६पुत्र७प्रसिद्ध॥२६॥८इन्द्रदत्त नामक९सब

प्रथम१चतुर्थ४रु नवम९चेदि अधिराज सुता सुत ॥
बहु जामेय२ द्वितीय२षष्ठ६सप्तम७अष्टम८जुत ॥ २७ ॥
तीजो३पंचम५दसम१०जन्यौं चालुक तनयालय३ ॥
प्रतिहारन भानेज इंद्रदत्त५११११सु अतीतभय४ ॥
भ्रात धनेश्वर५११२विष्णुदत्त५११३वृंदा५११४जाठरजानि ॥
इन दोउन२अनुजात सुता रुचि५११तियन सिरोमनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

कुरुपति सुचिरथको कुमर, बुल्लि परिम्लुच नाम ॥
परिनाई अजपाल इहिं, रुचि५१तनया अभिराम ॥ २९ ॥
भटदलनहिं दै राज्यभर, कानन रहि लहि काल ॥
विग्रह छोरयो जोगबल, पुहवीपति अजपाल ५० ॥ ३० ॥
पांडव सक नभ छ चउ४६०मित, जँहँ कलिहायन जात ॥
भूप भयो तँहँ भटदलन५१, बसुधातल विख्यात ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचराडासिवंशवर्णनेऽजपाल ५० दिग्विजयन-रावण१ बिडाल २ बिडम्बा ३ द्यसुररक्षोध्वंसनाऽजमेरनगरनिर्माणमाहिषी-दुर्मिला ५०१ सुगुणा ५०२ लावण्यवती ५०३ वृन्दो ५०४ मा ५०५ सन्ततिभटदलनाऽऽदिसुतत्रयोदश १३ कन्यारुचि १ समुद्भवनकोसलेशाऽश्वरथप्रतिहारलुट्टर ५३ निपातनतद्भुजसु-

---

से छोटा १ चन्देरी के राजा की बेटी के बेटे २ यदुवंश के भाणेज ॥ २७ ॥ सोलंखी की ३ पुत्री ने ४ निर्भय ५ उदर से ६ छोटे ॥ २८ ॥ ॥२९॥ राज्य का भार अपने पुत्र भटदलन को देकर वन में रहकर समय पाकर राजा अजपाल ने योगबल से शरीर छोडा ॥ ३० ॥ युधिष्ठिर के सम्वत् के अनुसार कलियुग के ४६० वर्ष जाते समय भूमितल पर प्रसिद्ध भटदलन नामक राजा हुआ ॥ ३१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में अजपाल का दिग्विजय, रावण-बिडाल-बिडंब आदि दैत्य और राक्षसों को मारना, अजमेर नगर का बसाना, राणी दुर्मिला-सुगुणा-लावण्यवती-वृन्दा-उमा की सन्तान भटदलन आदि तेरह पुत्र और रुचि

तविनयमहीप ५४ विंवस्थलाऽधिपत्यप्रापणवैखानसाऽजपालत नुत्यजनभटदलनराज्यसमासादनमेकत्रिंशो ३१ मयूखः ॥ ३१ ॥

आदितस्त्रिसप्ततितमः ॥ ७३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम पत्तन मिहिकावती, भटदलन ५१ सु हुव भूप ॥
करन कित्ति बितरन करन, रन कपिकेतन रूप ॥ १ ॥
जनक बैर रावन तनुज, तक्कत अवसर पाय ॥
निस सोवत नृपके अनुज, अखिल १२ हनैं जट आय ॥२॥
आसापूरनि स्वप्न दै, सावधान नृप कीन ॥
नतो जनन चंडासिको, खल सु करैं सब खीन ॥ ३ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

कर्णाटराज चहुवान भटदलन ५१ नैं कार्तवीर्य कुलाऽवतंस कुंतलाऽधिराज कमलसेनकी कन्या कांति ५१।१ नाम विवाहि आनी ॥

तामैं चहुवानचक्रचूडामनिसौं लोहराज५२।१निम्मराज५२।२ अनंगराज ५२।३ तीन ३ ही भये महादानी ॥

नामक कन्या का पैदा होना, अयोध्या के राजा अश्वरथ का प्रतिहार लुटर को मारना उसके छोटे भाई राजा विनयका विंवस्थल के स्वामिपन को प्राप्त होना, वानप्रस्थ होकर अजपाल का शरीर छोडना, भटदलन का राज्य प्राप्त होने का इकतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३१ ॥ और आदि से तिहत्तर मयूख हुए ॥ ७३ ॥

इसप्रकार मिहिकावती नामक पुर में भटदलन राजा कीर्ति करने के अर्थ दान देने में कर्ण के समान और युद्ध में अर्जुन के समान हुआ ॥ १ ॥ रावण के पुत्र ने पिता के वैर को देख कर समय पाके रात्रि में सोतेहुए भटदलन के सब छोटे भाइयों को जटासुर ने मार डाले ॥ २ ॥ आशापूरण नामक कुलदेवी ने राजा भटदलन को स्वप्न में सावधान कर दिया नहीं तो वह दुष्ट चहुवाण के सब वंश को ही नाश कर देता ॥ ३ ॥ १ कार्तवीर्य के कुल के मुकुट २ कुन्तल देश के स्वामी ३ चहुवाण गण के शिरोमणि भटदलन से

जिनमैं बडे दोहू[1]२ तो अप्रज[2]ही किसोर अवस्थामैं मातुलके[3] निकेत[4] जावत असुरननैं मारिलये ॥

अरु उभय २ ही धारा तीर्थमैं देह डारि बसुधेश्वरके[5] बंसकै पूजनीय पितर भये ॥ ४॥

(षट्पदी)

लोहराज५२।१ अरु निम्मराज५२।२ सोदरभ्राता[6] दुव२ ॥
जन[7]पद कुंतल जात मग्ग असुरन आहव[8] हुव ॥
रावन सुत जट १ असुर बहुरि बक२ असुर महाबल ॥
लैन बैर हठ लग्गि खिज्जि पहुँचे दकालि[9] खल ॥
बरखे त्रिसूल१ तोमर[10]२ बिसिख[11]३ गदा४ सकति५ घन६ प्रास[12]७ गन ॥
अभिमन्न्यु तरह कट्टत इनहिं रुपे उभय२ चहुवान रन ॥ ५ ॥
तीन३ पहर रन तुमुल[13] जुरत बालक न हटे जब ॥
असुरन माया अतुल तमकि उप्पर प्रेरी तब ॥
न पहि सक्के सिसु अस्त्र खलन बीचहि रन रोहे[14] ॥
माया करि इम बिबस लगे घुम्मन दुव२ मोहे[15] ॥
बक१ जट२ सु पिक्खि अनुक्रम आसि[16]न दुव२ बालन सिर कट्टिलिय ।
भटदलन सुतन बिनु सिर बहुरि कलह पंच५[17]घटिका करिय ॥६॥

पादाकुलकम् ॥

लोहराज५२।१ अरु निम्मराज२ दुव२, रन तीरथ इम पूज्य पितर हुव॥
वपु[18] भटदलन५१ नरेस तज्यो जब, लही अनंगराज५७।३ गद्दिय तब।७।

१ विना सन्तान २ पन्द्रह वर्ष की अवस्था से पहिले ही (दशवर्ष से ऊपर और पन्द्रह वर्ष से नीचे की अवस्था को किशोर कहते हैं) ३ मामा के ४ घर जाते समय दैत्यों ने मार डाला ५ चहुवाण वंश के ॥ ४॥ ६ एक उदर से पैदा हुए भाई ७ कुन्तल देश में जाते हुए दैत्यों से ८ युद्ध हुआ ९ ललकार (प्रचार) के १० शक्ति विशेष (भांग) ११ बाण १२ भाला ॥ ५ ॥ १३ भयंकर १४ युद्ध में रोक लिये १५ मूर्च्छित होगये तब बकासुर ने लोहराज का और जटासुर ने निम्मराज का इस अनुक्रम से १६ तरवारों से शिर काट लिये फिर भटदलन के पुत्रों ने पांच १७ घड़ी तक विना मस्तक युद्ध किया॥ ६ ॥ जब राजा भटदलन ने १८ शरीर छोडा तब अनंगराज ने गद्दी ली ॥ ७ ॥

अर्बुदपति सोमार्क नरेश्वर, ससि जदु क्रोष्टु वंस दीपक वर ॥
सुता तासु ससिभानु५२।१सयानी,परनि अनंगराज५२नृप आनी।८।
रबि अन्वय नेपाल धराधन, कीर्तिसेन अभिधान महामन ॥
सुता तास गुन नाम सिराही,कीर्तिमती५२।२दूजे२नृप ब्याही।९।
चोलदेस हैहय कुल भुखन, बसुधापति अभिधानै बिदूखन ॥
तास सुता आव्हय करि भामा५२।३,
यह ब्याहिय तीजी३ अभिरामा ॥ १० ॥
हुवइकवीस२१ अनंगराजसुत,भीम५३।१रुधर्मपाल५३।२ पाटवजुत
बहुरि धर्मरत५३।३ रत्नपाल५३।४ हुव,
रुक्मरथ ५३।५ रु रुक्मेस ५३।६ धीर ध्रुव ॥ ११ ॥
रुक्मकोस५३।७ पृथ्वीपाल ५३।८ रु पुनि,
रुक्मसेतु ५३।९ हरिभानु ५३।१० लेहु सुनि ॥
चंद्रभानु ५३।११ अरु भानु५३।१२ कित्तिकर,
जगद्भानु ५३।१३ बलि सोमदत्त५३।१४ बर ॥ १२ ॥
जयचंद्र ५३।१५ रु अन्वय चंद्र५३।१६ हु जिम,
देवीचंद्र ५३।१७ त्रिलोकचंद्र५३।१८ तिम ॥
अमर ५३।१९ रु दीपचंद्र५३।२० मन उज्वल,
ब्रह्मदत्त ५३।२१ सब अनुज महाबल ॥ १३ ॥
कीर्तिमती५२।२ औरस पहिले दस१०,
जिम ससिभानु५२।१ तनय खट६ अतिजस ॥
देवीचंद्र५३।१७आदिपंचक५जनि,हुवभामा५२।३हुतनूजरत्नखानि १४

१चन्द्रवंशी यादवों में राजा क्रोष्टु के वंश को प्रकाश करनेवाला ॥८॥ २सूर्यवंशी नैपाल के राजा कीर्तिसेन नामक बडे मनस्वी की बेटी दूसरे विवाह में परणी ॥ ९ ॥ ३ विदूखल नामक ४ भामा नामवाली ५ मनोहर ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ पहिले गिनाये हुए दश पुत्र कीर्तिमती के उदर से पैदा हुए इसीप्रकार बडे यशवाले छः पुत्र शशिभानु के पेट से उपजे, देवीचन्द्र आदि पांच पुत्रों को जन कर भामा नामक राणी भी पुत्रों रूपी रत्नों की खान हुई ॥ १४ ॥

दोहा

वडे भीम५३१जुब्बन लहिय, बीस२०अनुज तस बाल ॥
रावनसुत खल जट बहुरि, किय तहँ कर्म कराल ॥ १५ ॥
परिसर बिच खेलत पकरि, बीसन२० हरि बहिकाय ॥
असुरनकी कुलदेवता, अग्गैं मारिय जाय ॥ १६ ॥
नृप अनंगराज५२ हु तजिय, कानन रहि निज काय ॥
तीन३हि रानिन सहगमन, कियउ पतिब्रत पाय ॥ १७ ॥
तब जनपद करनाट पति, भयउ भीम५३ नरनाह ॥
रिपुगन भंजन मानरन, दान१ कृपान२ दुबाह ॥ १८ ॥
रुक्मी जँनन बिदर्भपति, नगर भोजकट नाम ॥
दुव२ कन्या नृपदेवकै, हुव गुन गनन ललाम ॥ १९ ॥

(षट्पात्)

जेठीमति५३१ अभिधान भीम५३ चहुवान बिबाहिय ॥
अनुजा नीति सु गोडभूप भवदेव परनि लिय ॥
जट खल रावन तनुज तीन३पीढिन लग छल बस ॥
करिय बंस उच्छेद धरिय चहुवान सोक तस ॥
इक दिन सिकार अँद्रिन अटत कंदर बिच किय मुनि दरस॥
आस्तीक बंस उत्तान द्विज सेवन नृप सद्धिय सरस ॥२०॥
हुव प्रसन्न उत्तान कहिय कछु लेहु महीपति ॥

वडा भीम था सो तो युवा होगया और उसके बीस छोटे भाई थे जिनके लिये जटासुर ने भयंकर कर्म किया ॥ १५ ॥ १ ग्राम के समीप (गोरवें में) की भूमि में खेलते हुओं को बहका कर ॥ १६ ॥ २ वन में रह कर अपने शरीर को छोडा ३ साथ जल गई ॥ १७ ॥ कर्णाट देश का पति भीम हुआ जो युद्ध में शत्रुओं का मान मारनेवाला और दान में और युद्ध में दोनों हाथों से वाह (वार) करनेवाला था, यहां दान में दुवाह अर्थात् दोनों हाथों से दान देनेवाला ॥ १८ ॥ रुक्मी के ४ वंश में ५ सुन्दर।१६। मति नामक वडी कन्या को भीम चहुवान ने विवाही और नीति नामक छोटी को भवदेव नामक गोड़ राजा ने व्याही ६ वंश का नाश किया ७ पर्वतों में फिरते समय ॥ २० ॥ राजा ने कहा कि जटासुर हमारी सन्तान को

अक्खिय नृप जट असुर बढन देत न सठ संतति ॥
तातैं एक१हु तनय होय दुष्टन संहारक ॥
दया उदधि यह देहु अप्प जगहित उपकारक ॥
हैं नागराज भानेज हम करहुँ अरज प्रभुसेससौं ॥
कछु दिन बिताय पावहु तनय इम द्विज कहिय नरेससौं॥२१॥

दोहा

कहि इम भूपहिं सिक्खदै द्विज बडवामुख जाय ॥
किन्नी अरज अनंतसौं, असुरन हनन उपाय ॥ २२ ॥
भुवन आय नृप भीम५३हू, चहि अनसन व्रत चंड ॥
आराधन श्रीसेसको अह निस कियउ अखंड ॥ २३ ॥

षट्पात्

उत अक्खिय उत्तान पानि दुव२जोरि सेस प्रति ॥
प्रभुको भक्त नरेस भीम५३बुड्डत तस संतति ॥
इक१ तंतु अवसेस रहिय कछु अप्प अनुग्रह ॥
अद्यावधि सिसु इतर असुर जट भखत खोजि वह ॥
जिहिं त्रास होत व्याकुल जगत रुकि वेदन पद्धति रहिय॥
रावरो सरन पंजर बिरुद सोहि सरन भीम५३हु गहिय।२४।

दोहा

नहीं बढने देता इसकारण से हे दया के समुद्र आप जगत् के लिये उपकार करनेवाले हो सो एक ही पुत्र जटासुर आदि दुष्टों को मारनेवाला होवे यह वर दीजिये, हम नागराज के भाणेज हैं सो आप शेषनाग से अर्ज करो, मुनि ने राजा से कहा कि कुछ दिन बिता कर ऐसा पुत्र पावोगे ॥ २१ ॥१ पाताल में जाकर २ शेष नाग से ॥ २२ ॥ राजा भीम ने भी अपने घर आ कर अनशन (निराहार) भयंकर व्रत करके शेषनाग की दिन रात अखंड आराधना करी ॥ २३ ॥ उत्तान नामक मुनि ने दोनों हाथ जोडकर शेषनाग से कहा कि राजा भीम आप का भक्त है उसकी सन्तान डूबती है, आपकी कृपा से एकतन्तु बाकी रहा है आजतक दूसरे बालकों को हेर कर जटासुर खाजाता है जिसके भय से जगत् व्याकुल होरहा है और वेदों के मार्ग रुकरहे हैं, शरण आयेहुओं की रक्षा करने का आपका विरुद है नहीं शरण

करिय सु सुनि कर्कोटकहु, अरज सेस प्रति एह ॥
जनन वहहु जामेय है, नाथ धरहु तँहँ नेह ॥ २५ ॥
अनुजकी रु उत्तानकी, इम सुनि अरज अनंत ॥
अति आराधन भीमको, सो पुनि जानि सुमंत ॥ २६ ॥
काद्रवेय एकल¹ करि, अक्खिय सब सन सेस ॥
इक्क१जाय तँहँ अवतरहु², असुरहु हनहु असेस ॥ २७ ॥

(नसेस१असेस२अन्त्यानुप्रास)

सबन कहिय श्रीसेस सन, समुझि करहु अघ³ साथ ॥
अब कलिजुग बरतत उहाँ, नरक न डारहु नाथ ॥ २८ ॥

(सचरणगद्यम्)

उत्तानमुनि के समागमके पूर्व चंडासिराज भीमसौं वैदर्भी मैं कनकावती५४नाम एक१कन्या भई ॥

जो चन्द्रवंस भूखन आनर्तराज हरिसेनकौं बड़े विधानसौं बिबाहि दई ॥

जाके उदर अरणीतैं वैरिनके बनकैं बन्हि भागिनेय बाल नैं जन्म लीनौं ॥

याही समयमैं मगधराज सुव्रतनैं देवगिरिको रहनौं तजि ताहीके समीप पाटलिपुत्र⁴ पत्तनमैं आय निवास कीनौं ॥२९॥

(दोहा)

आराधे इक्क१मासलौं, इत नृप सेस उदार ॥
श्रद्धामय निश्चय सहित, अनसन व्रत आधार ॥ ३० ॥

भीम ने गहा है ॥ २४ ॥ यह सुनकर कर्कोटक नाम सर्प ने अर्ज की कि वह वंश अपना भाणेज है सो हे नाथ उस पर स्नेह धरो ॥ २५ ॥ शेषनाग ने अपने छोटे भाई की और उत्तान मुनि की अर्ज सुनकर और राजा भीम का आराधन करना जान कर ॥ २६ ॥ १सर्पों को इकट्ठे करके २ अवतार लो॥२७॥ ३पाप के साथ॥२८॥उत्तान मुनि से राजा भीम मिला जिस पहिले विदर्भ देश के राजा की पुत्री के उदर से उसके उदर रूपी अरणी(होम की अग्नि प्रकट करने का काष्ठ) से शत्रुओं रूपी वन के अग्नि बाल नामक भाणेज ने जन्म लिया४पटना

(षट्पात्)

इत सब नागन नटत कहिय पुनि सेस धराधर ॥
जावहु इक लिपि है न दुरित मामक निदेस डर ॥
भानेजन उपकार होय कृतघन जिन भुल्लहु ॥
जरतकारु कुल जिमहि तिमहि सुमना११कुल तुल्लहु ॥
उत्तान कहत अरु वह करत आराधन अपनौं सतत ॥
जगमाँहिं बहुरि मारत जटहिं मचिहै किंत्ति रु धर्म मत॥३१॥
ऐरावत यह सुनत कहिय कर जोरि सेस प्रति ॥
करहु अल्प संकेत ततो जावन मामक मति ॥
सुनि बुल्लिय श्रीसेस दुवहि तँहँ जान प्रयोजन ॥
इक१संतति विस्तरन१अपर२असुरादि हनन२रन ॥
सिर धरि निदेस हमरो सजव काम अनुज उभयरहि करहु ॥
अरु अश्वसेन तच्छक तनय यह तव वाहन अवतरहु ॥ ३२ ॥

दोहा

ऐरावत अक्खिय असुर, मारन सुगमहिँ आँहिं ॥

नामक नगर में ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ पृथ्वी को धारण करनेवाले शेष ने सर्पों से कहा कि तुम में से कोई एक जाओ उसको मेरी आज्ञा के भय से पाप नहीं लगेगा कृतघ्न (किये हुए उपकार को नहीं मान नेवाले) होकर भाणेज का किया हुआ उपकार (आस्तीक ने जनमेजय के यज्ञ में सर्पों को जलने से बचाया था सो) मत भूलो. अपने समीप जैसाजरत्कारु का कुल है इसीप्रकार सुमना (सुमना नामक नागकन्या जो चहुवाण की राणी थी) के कुल को जानो. इधर तो उत्तान मुनि कहता है और उधर राजा भीम अपना निरंतर आराधन करता है १ जटासुर को मारने से २ कीर्ति ॥ ३१ ॥ यह सुनकर ऐरावत नामक सर्प ने हाथ जोड़ कर शेष से कहा कि वहां पर थोड़े समय तक रहने का जो आप संकेत करें तो मेरा विचार जाने का है ३ सन्तान का फैलाना ४ दूसरा दैत्य आदि को मारने का है सो हमारा हुक्म शिर पर धर कर हे भाई दोनों कार्य शीघ्र करो और तक्षक का मित्र अश्वसेन नामक सर्प है यह घोड़े का अवतार होकर तेरा वाहन बनो ॥३२॥ ऐरावत ने कहा कि असुरों का मारना तो सहज ही है परन्तु

बरस तीस३०लग पै प्रजा, न व्है रहै तो नाँहिँ ॥३३॥

षटपात्

ऐरावत१अरु अश्वसेन२इम सेस हुकम लहि ॥
आये भुव अवतरन चंड असुरन मारन चहि ॥
प्रथम१नाग भीम५३सन रहिय मति ५३।१गर्भ महाबल ॥
अपर२सु बडवा उदर बढे उभय२हि पुनि पल पल ॥
सरअष्टविखय५८५कलिजुगबरस धर्मतनय सक जात ध्रुव॥
अभिधान गोग५४नृप भीम५३सुत ऐरावत अवतार हुव।३४।

दोहा

नवमी९तिथि आधी निसा, मेचक भद्दव मास ॥
मति५३।१जाठर श्रीगोग५४सुत, प्रकटिय प्रसव प्रकास।३५।
अश्वसेनके अंस हुव, वडवाकै हु किसोर ॥
लियउ गोग अवतार इम, चाहुवान कुल मोर ॥३६॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने रावणिजटासुरसुप्रभटदलनाऽनुजमहासेनाऽऽदिद्वादश१२मारणभटदलन५१लोहराज५२।१निम्मराजा-५२।२ऽनङ्गराजो५२।३द्भवनकिशोराऽवस्थाऽग्रजद्वय२वक१जट२-

---

तीस वर्ष में सन्तान नहीं होवे तो इस से आगे मैं वहां पर नहीं रहूं।३३। १ अवतार लेने को २ भयंकर असुरों को ३ पहिला सर्प (ऐरावत) राजा भीम से मति नामक राणी के गर्भ में रहा और दूसरे सर्प (अश्वसेन) ने घोड़ी के गर्भ में जन्म लिया और दोनों क्षण क्षण में बढे. युधिष्ठिर का सम्वत् जाते समय गोग नामक राजा भीम का पुत्र ऐरावत सर्प का अवतार हुआ ॥ ३४ ॥ ४ कृष्णपक्ष भादवा महीने का ५ मति के उदर से जन्म लेकर प्रकट हुआ ॥ ३५ ॥ अश्वसेन सर्प के अंश से घोड़ी के बछेरा हुआ६चहुवाण कुल का मुकुट ॥ ३५

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश के वर्णन में रावण के पुत्र जटासुर का भटदलन के महासेन आदि सोते हुए बारह छोटे भाइयों को मारना, भटदलन के लोहराज-निम्मराज-अनङ्गराज का पैदा होना, किशोर अवस्था में दोनों बड़े भाइयों को

णशय्याशायनभटदलनाऽनन्तरप्राप्तराज्याऽनङ्गराज५२शशिभानु-
५२।१कीर्तिमती५२।२भामा५२।३राज्ञीत्रयो३पयमनभीमाद्येकविंश-
ते२१पुत्रजननजटासुरभीमविहीनताद्विंशति २० निपातकर्णाटराड-
नङ्गराज५२तनुत्यजनराज्ञीत्रय३सहगमनभीम५३गद्दीकोपविशनवै-
दर्भीमति५३।१विवहनपूर्वकन्याकनकावती५४प्रकटनतदानर्तराज
हरिसेनविवाहनदौहित्रबालोद्गमनन्नृपोत्तानमुनिमिलनश्रीशेषाऽऽरा
धनतदाज्ञप्तैरावतनागाऽवतारभौमिगोगदेवो५४द्भवनवडवाश्वसेनां-
शप्रसवनं द्वात्रिंशो३२मयूखः ॥३२॥ आदितश्चतुस्सप्ततितमः॥७४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

(दोहा)

होत तनय नृप भीमनैं, लक्खन द्रम्म लुटाय ॥
जातकरम किय रीति जुत, प्रचुर मोद भर पाय ॥ १ ॥
आय तबहि उत्तान मुनि, नृपसन किन्न निदेस ॥
ऐरावत अवतार यह, सुत तव पठयो सेस ॥ २ ॥
अश्वसेनको अंस यह, है बर तुरग असोक ॥
हनि असुरन रहिहैं थिर न, जैहैं दुवरनिज लोक ॥ ३ ॥

जटासुर का रणशय्यामें सुलाना, भटदलन के पीछे राज्य को प्राप्त होकर अनङ्गराज का शशिभानु-कीर्तिमती-भामा नामक तीन राणियों से विवाह करना, भीम को आदि लेकर इक्कीस पुत्रों का जन्म होना, उन में भीम के विना वीसों को जटासुर का मारना, कर्णाटक के राजा अनङ्गराज का शरीर छोड़ना, तीनों राणियों का साथ जलना, भीम का गद्दी बैठना, विदर्भ देश के राजा की पुत्री मति से विवाह करना, प्रथम कनकावती नामक कन्या का प्रकट होना, जिस को आनर्त देश के राजा हरिसेन का व्याहना, बाल नामक दौहित्र का पैदा होना, राजा भीम का उत्तान मुनि से मिलना, श्रीशेष नाग का आराधन करना, शेष की आज्ञा लेकर ऐरावत नाग का अवतार लेकर नागलोक से गोगदेव का जन्म होना, घोड़ी के पेट से अश्वसेन नाग के अंश से अश्व के पैदा होने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३२॥ और आदि से चौहत्तर मयूख हुए ॥ ७४ ॥

१पुत्र२रूपये३यहूत॥२॥४अशोक नामक श्रेष्ठ घोड़ा अश्वसेन नामक सर्प के

(षट्पात्)

पूजन तँहँ मुनि पाय गये इम कहि निज आश्रम ॥
नृप कुमार इत गोग५४वढिग सित पक्ख कला क्रम ॥
बय लहि सोलह१६बरस रमत मृगया बन अंतर ॥
हय असोक आरूढ हनत मृगपति बराह बर ॥
जट१वक्र२बहोरि खल आय जहँ कहिय तजहु आयुध कुमति ॥
जो यह करो न तो जायहो गोग५४पितृव्यक बीस२०गति ॥ ४॥
सुनि यह गोग५४कुमार कहिय सबही न छुरावहु ॥
तजिहों आयुध उभय२लेहु उभय२हि इत आवहु ॥
वक तब मुक्किय बान कुमर सहजहि वह कट्टिय ॥
अस्व असोक उडाय मदर मारिय कनपट्टिय ॥
वक लियउ मोह सोनित बमत जट अपुव्व घमसान किय ॥
दिय पंच५कुमर छत्तिय मदर हनिय पंच५हयराज हिय ॥५
लगत बान चहुवान जेठ दिनकर हुव जुज्झन ॥
सय दक्खिन तस सतत बन्यों निज श्रुति ढिग बुज्झन ॥
सिर पंचक५दुव२संख अट्ठ८गोधि रु चउ४आनन ॥
त्रय३लागि छत्तिय तीस३०बेधि जट बपु इम बानन ॥

अंश से पैदा हुआ है बहुत नहीं रहेंगे ॥ ३ ॥ १ शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की कला यहँ इस प्रकार बढ़ा२शिकार३सिंह श्रेष्ठ सूवरों को मारता था तहां जटासुर और वक्रासुर असुरों ने आकर कहा कि हे खोटी बुद्धिवाले (गोग) आयुध छोड दे और जो नहीं छोड़े (डाले) गा तो हे गोग तुम्हारे बीस काके (चचे) गये उसी गति तू भी जावेगा ॥ ४ ॥ गोग ने कहा कि मेरे सभी शस्त्र तो मत छुडाओ दो शस्त्र छोड़ूंगा सो तुम दोनों इधर आकर लेलो जब वक्र ने बाण छोड़ा उसको कुमार ने सहज में ही काटडाला और अशोक नामक अपने घोड़े को उड़ाकर वक्र की कनपटी (आंख और कान के बीच की जगह) में बाण मारा सो रक्त उगलते हुए वक्रासुर के मूर्छा लेली तब जटासुर ने अपूर्व युद्ध किया ॥ ५ ॥ युद्ध करने के लिये ज्येष्ठ मास के सूर्य के समान तेजस्वी हुआ उस समय गोग का दाहिना हाथ निरंतर अपने कान के समीप यह पूछने को हुआ कि शत्रु के अङ्ग में कहां पर बाण लगावें

खिजि कहिय हेति छोरन लखहु पुहवि खलहु मूर्छित पखो ॥
बक चेति तवहि माया बहुल करि प्रसार तंडन करयो॥६॥
तहँ बक माया तनत अभ्र छादित हुव अंबर ॥
अतुल फैलि अंधार१ओघ उलका२आडंबर ॥
बिकटभूत१बेताल२निकट डाकिनि३डरान लगि ॥
मार मार रव मचिग काल बिकराल ज्वाल४जगि ॥
त्रिच्छिय१भुजंग२गज३सिंह४बहुफेरव५वृक६चित्रक७फिरत॥
बिज्जुलि१अलात२आयुध३बिटपि४ग्राव५असनि६करका७गिरत॥७॥
कुमर गोग५४तब कलह मारि बानन घन मंडिय ॥
माया[1] अस्त्रन मेटि खूब सस्त्रन खल खंडिय ॥
जटहु मोह[2] तजि ज्वलित अंखि तोमर गहि आयउ ॥
इहिं असोक झपटाय कंठ करवाल चलायउ ॥
गिरिकूट प्रमित जटसिर गिरिय रुंडहु जुज्झिय घोर रन ॥
खुंदाय खुरन जट नाम खल डारिय कुमर प्रवीरपन ॥८॥
टापन मारि असोक करिय जट देह टूक सत१०० ॥

फिर पांच बाण मस्तक में दो बाण कनपटी (कान के समीप की हड्डी) में आठ ललाट में चार मुख में तीन बाण छाती में और तीस बाण जटासुर के बाकी के शरीर में लगाकर इस प्रकार वेधन किया और क्रोध करके कहा कि शस्त्रों का छोड़ना देखो वह दुष्ट भी मूर्छित होकर भूमि पर गिर गया, उसी समय चेत कर बक ने बहुत माया फैलाकर नृत्य किया ॥६॥ आकाश बादलों से छागया और अग्नि के अंगारों के समूह का आडंबर होकर शब्द मचकर काल के समान विकराल ज्वाला जगी. बीछू सर्प स्याल(गीदड़) भेड़िये चीते फिरने लगे. अग्नि के अंगारे वृक्ष पत्थर वज्र ओले (गड़े) गिरने लगे ॥ ७ ॥ १अस्त्रों से माया को मेटकर शस्त्रों से दुष्टों के टुकड़े किये २मूर्छा को छोडकर लाल नेत्र करके भाला लेकर आया, गोग ने अशोक नामक घोड़े को उडाकर जटासुर के कंठ पर खड्ग चलाया सो पर्वत के शिखर के समान जट का मस्तक गिरा. उसके धड़ ने भी भयंकर रण किया जिसको घोड़े के खुरों से खुंदाकर कुमर ने विशेष वीरपन से जट को गिराया ॥ ८ ॥ घोड़े के अगले पैरों की चोट से अशोक नामक घोड़े ने जटासुर के देह के

कुमर मुक्कि सर सट्ठि६०वकहु वेधिय अति उद्धत ॥
जिम छिद्रित घट जाव लसत घावन इम लोहित ॥
असुर परिय अरराय मरम फट्टत वक मोहित ॥
सिर तसहु कट्टि दुवगैंद सम उच्छटावत हैय पयन करि ॥
इम रन भजाय आयउ कुमर छतंविग्रहछत्तीस३६धरि ॥९॥

(दोहा)

बहुल वधाई भीम नृप, कुमर विजय हित किन्न ॥
वारन१हय२भूखन३बसन४, इ०य५सुरभि६भुव७दिन्न ॥१०॥
ससिकुल श्रीधर बंग नृप, तनया गुनन निधान ॥
प्रमा५४।१नाम निजपुत्रकों, परिनाई चहुवान ॥११॥

(षटपात्)

इम गोगहि परिनाय भीम५३नरनाह विरति गहि ॥
करि कुमार अभिसेक अप्पि निज पट्ट समय लहि ॥
वैदर्भी५३।१जुत विपिन जाय अभ्यस्त जोग किय ॥
ब्रह्मरंध्र पथ प्रान तजि रु प्रकृतिहिं वियोग दिय ॥
चहुवान गोग५४भूपति भयउ वीर अठारह१८वरस वय ॥
सुभकर्ण५५भयउ ताकै सुघर तात तुल्य विक्रम तनय॥१२॥

(दोहा)

गोतम कृप गोगहि मिले, तीरथराज प्रयाग ॥
तिनपँहँ सस्त्र१रु सास्त्र२सब, सुतहिं सिखाय सुभाग॥१३॥

सौ टुकड़े करदिये और कुमर गोग ने साट बाण छोडकर अत्यन्त उद्धत प-क्षासुर को बेधा, जिसके घाव छिद्र कियेहुए घड़े के समान रक्त से शोभित हुए और मर्मों के फटने से मूर्छित होकर वह असुर अरराट (गिरने के शब्द का अनुकरण है) शब्द करके पड़ा१घोड़े के पगों से उडाता हुआ२शरीर में छत्तीस घाव धारण करके ॥९॥३अत्यन्त४हाथी५गायें ॥१०॥६चन्द्रवंशी ॥११॥ ७रक्तरत८अपना पाट देकर९वन में योग का अभ्यास किया और१०कपाल मार्ग से प्राणों को छोड कर जगत के कारण (जन्म मरण) को वियोग दिया अर्थात् मुक्त होगया.११ पिता के समान विक्रमवाला सुन्दर पुत्र हुआ ॥१२॥गौतमवंशी कृपाचार्य प्रयाग में गोग चहुवाण से मिले जिनसे ॥१३॥

आयउ पुर सिंहिकावतिय, राज्य कियउ रिपु तोद ॥
सिसु बसहि सुभकर्ण५५६, दिय जनकहिं गुन मोद॥१४॥
मायामह चहुवानके, अप्पहिं अतनय जानि ॥
दियउ भोजकट राज्य सब, गोगहिं हित पहिचानि ॥१५॥
दै गोगहिं भुव देव नृप, जाया जुत बन जाय ॥
तीजो३आश्रम साद्धि तँहँ, किय प्रानन बिनु काय ॥१६॥
गोड नृपति भवदेव इत, अग्ग भीम नृप सत्थ ॥
माउसिया नृप गोगकी, परन्यो नीति समत्थ॥१७॥
ताकै दुव२जनमे तनय, सुर्जन१अर्जुन२नाम ॥
देव मरन तिनहू सुनिय, गोग लहन तस धाम॥१८॥

(षट्पात्)

सुर्जन१अर्जुन२उभय२मरत सुनतहि मातामह ॥
नगर भोजकट आय कहिय, गोगहिं अति आग्रह ॥
दब्बी भुव अजपाल सुपे तुमसौं सब छुट्टिय ॥
मातामहको मुलक लुब्ध तक्कत इत लुट्टिय ॥
दायाद छत न इक्कहिं मिलत सकल बंटि बिरचहु सकल॥
हम तुम समान अधिकार यँहँ गोड कुलहु कबतैं निवल॥१९॥

शत्रुओं को पीड़ा देनेवाला ॥१४॥ चहुवान के नाना ने अपने को विना सन्तान जान कर भोजकट का सब राज्य गोग को देदिया ॥ १५ ॥ देव नामक राजा ने गोग को भूमि देकर स्त्री सहित वन में जाकर तीसरा आश्रम (वानप्रस्थ) का साधन करके शरीर को विना प्राण किया ॥ १६ ॥ गौडवंश का भवदेव नामक राजा राजा भीम के साथ आगे गोग चहुवाण की मासी (माता की बहिन) को परणा था ॥ १७॥ जिसके सुर्जन, अर्जुन नाम के दो पुत्र हुए उन्होंने भी भवदेव का मरना और उसका राज्य गोग को मिलना सुना ॥ १८ ॥ अपने नाना को मरा हुआ सुन कर भोजकट नामक नगर में आकर गोग से हठपूर्वक कहा कि अजपाल ने जो भूमि दबाई थी वह तो तुमसे सब छूट गई और इधर आकर लोभ से नाना के मुल्क को लूटा सो सपिंड(सात पीढी पिता के कुल की और पांच पीढी माता के कुल की को सपिंड कहते हैं) के होते हुए एक को नहीं मिल सक्ता इस कारण से सब राज्य को

(दोहा)

हम अधीस कंबोजके, तुम करनाट नरेस ॥
मातामह वैभव अमित, दुवरमिलि भुग्गहिं देस ॥२०॥
गोग कहिय तब आवते, देते तुमहिं कछूक ॥
वा न बुलाये याहितैं, तुमहि न देते टूक ॥२१॥
देव गये भुव मोहि दै, भाग चहत तुम आज ॥
दान लेहु देहौं अखिल, कछु बलसौं नहि काज॥२२॥
यह सुनि गोडन रन रचिय, सहज जित्ति नृप सोहु ॥
सोदर वे भवदेव सुत, दिय बिडारि तब दोहुर ॥२३॥
सब पुहवीके नृपन सन, करि करि कुक्कि पुकार ॥
भ्रमत थके कोउ न भयो, इन सहाय हुसियार ॥२४॥
उत्तरि तब सरिता अटक, पहुँचे दुवर प्रत्यंत ॥
जिन दिवसन ईरानपति, राजै कटक अनंत ॥ २५ ॥
पेस भरैं जिहिं रूम लग, नाम अबूफर जास ॥
तासौं किन्न पुकार तब, गोडन बंटन ग्रास ॥ २६ ॥
कहिय हमारे मुलकमैं, आवहु अमल जमाय ॥

बांट कर टुकड़ करलो. नाना के राज्य पर हमारा तुम्हारा बराबर अधिकार है और गौड़वंश निर्बल भी नहीं है ॥ १९ ॥ २० ॥ गोग ने कहा कि अपना नाना जीता था तब आते तो कुछ तुम को भी देते परन्तु उस (नाना) ने तुम को अपने मरते समय नहीं बुलाया इस से जानते हैं कि तुम को एक टुकड़ा भी नहीं देते ॥ २१ ॥ राजा देव मुझको भूमि दे गये हैं उस को आज तुम बंटवाना चाहते हो सो बल करने से तो कार्य नहीं हो सक्ता और दान लो तो सभी देदूं ॥ २२ ॥ गौड वंश के क्षत्रियों ने युद्ध रचा जिन को राजा गोग ने सहज में ही जीत कर भवदेव के पुत्र दोनों सगे भाइयों को ताड़ दिया ॥ २३ सब भूमि के राजाओं से कूक कूक कर पुकार करके भ्रमण कर थक गये परन्तु कोई इन का सहाई होने को तैयार नहीं हुआ ॥ २४ ॥ सब अटक नदी उतर कर सुर्जन और अर्जुन गौड दोनों म्लेच्छ देश में गये उन दिनों में ईरान देश का पति अबूफर नामक शोभायमान था जिस के पास अनन्त सेना और जिस को रूम देश तक खिराज देते थे उससे जाकर जीविका बांटने के लिये गौड़ ने पुकार करी ॥ २५ ॥ २६ ॥

हम तुमरे पय पारिहैं, सब हिंदुन समुदाय ॥ २७ ॥
इक्क गोग अजपाल कुल, हमरी भुव किय हत्थ ॥
ताहि दिवावन चलहु तुम, सत्त्रुहि दमन समत्थ ॥ २८ ॥
अग्गैं नृप अजपाल किय, जवन रूस लग जेर ॥
सुनत नाम सुलतान तस, आक्खिय चकित अबेर ॥ २९ ॥
सुर्जन१ अर्जुन२ सुनि कहिय, इम नहिं जिम अजपाल ॥
अब उनकै बल अल्प है, बिनु भुव बित्त बिहाल ॥ ३० ॥
जवनराज तुम जित्तिहो, इम बढाय उच्छाह ॥
कियउ निठि गोडन कहि रु, सज्ज अबूफर साह ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३ राशौ वीति
...ग्निवंशवर्णने राजकुमारगोग५४ सुरारिजट१ बक२निपा-
...भाऽवतंसवङ्गराजश्रीधरसुताप्रमा५४।१ परिणयनसमभिषि
...भ्यस्तयोगभीम५३ पुद्गलपरिहरणवैदर्भी५३।१ वन्हिवि-
...शुभकर्ण५५ हमनपूजितकृपप्रयागतच्छिक्षादापनद
...दौहित्रचहुवाणराज्यसपत्नीकविदर्भराजदेयपरिव्रजनभावेदवित्रौ-

पगों में पटक देवेंगे सब हिन्दुओं के समूह को ॥ २७ ॥ १ शत्रु को दंड देने में तुम समर्थ हो ॥ २८ ॥ यहां जवन शब्द नीच लोगों का वाचक है मुहम्मद मतानुयायी नहीं जानना चाहिये; क्योंकि उस समय मुहम्मद पैदा ही नहीं हुआ था. सुलतान ने उस अजैपाल का नाम सुनते ही चकित होकर कहा कि देरी करना चाहिये ॥ २९ ॥ यह सुनकर सुर्जन अर्जुन ने कहा कि जैसा अजपाल था ऐसा अब गोग नहीं है अब उसके सेना कम है और बिना भूमि और बिना धन बेहाल है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में राज कुमार गोग का दैत्य जट और बक को मारना, चन्द्रवंशियों के मुकुट वंग देश के राजा श्रीधर की पुत्री प्रमा से विवाह करना, कुमार का अभिषेक करके योग का अभ्यास करके भीम का शरीर छोड़ना, विदर्भ देश के राजा की पुत्री का अग्नि में प्रवेश करना, गोग के पुत्र शुभ कर्ण का जन्म होकर पूजा किये हुए कृपाचार्य से प्रयाग में उसको शिक्षा दिलाना, अपने दौहित्र चहुवाण राजा को विदर्भ देश का राज्य देकर स्त्री

डसुर्जनाऽर्जुनप्रसभयबेदर्भविभागमार्गणाभीमिपुत्रतदनुररीकरणा-पराजितसर्वतिरस्कृतलंधितकरतोयसोदरगौडप्रत्यन्तेन्द्राऽबूफरप्रार्थनतत्सज्जीभवनं त्रयस्त्रिंशत्तमो३३मयूखः ॥ ३३ ॥ आदितःपञ्चसप्ततितमः ॥ ७५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(महाचर्चरी ॥ महागीतिकेत्येके ॥)

सज्ज साह इरानको दल लै अबुप्फर उप्परयो इम ॥
संग सोदर गोड नक्क कटायकैं अपसौंन दे जिम ॥
मत्त फीलन पिट्ठिके बहरक्क मेचक रंग खुल्लिय ॥
खेह संकुलि अंधकार अपार चक्किय चक्क डुल्लिय ॥ १ ॥
निक्खसे हय लै तरारन अक्कके हिय लोभ आनत ॥
जे बिनीत तुखार१ ताजिक२ अर्बके३ थकिबो न जानत ॥
बावरी घट मिच्छ्ऽहे कमनैतके हुसियार हंकिय ॥
पंच५ जोजन भुम्मि फोजन फेरके घन घेर ढंकिय ॥ २ ॥

सहित देव का जाना, भवदेव गौड के पुत्र सुर्जन और अर्जुन का हठ पूर्वक वैदर्भ देश का बंट मांगना, भीम के पुत्र (गोग) का उसके अर्थ इनकार करना, पराजित होकर सब से तिरस्कार पाकर अटक नदी को लांघ कर दोनों सगे भाई गोड़ों का ईरान के इन्द्र अबूफर से प्रार्थना करना और उस के सज्जीभूत होने का तेतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३३॥ और आदि से पचहत्तर मयूख हुए ॥ ७५ ॥

दोनों सगे भाई गोड अपना नाक कटा कर दूसरों को अपशकुन देवै इस माफिक साथ हुए. मस्त हाथियों की पीठ पर काले रंग की ध्वजायें खुलीं (ईरानवाले काले वस्त्र रखते हैं इसी कारण से उनका नाम कजलवास मशहूर है) खेह से अवकाश रहित होकर अपार अन्धकार होगया जिस से चकवी चकवा डुल गये (रात्रि में चकवी चकवे का वियोग होजाना प्रसिद्ध है)।१। सूर्य के हृदय में लोभ उत्पन्न करते हुए (ऐसे घोड़े हम को भी मिलें तो अच्छे) घोड़े तरारें लेते निकले; जो शिक्षा पाये हुए, तुखार, ताजिक और अरब देशों के पैदा हुए, थकना जानते ही नहीं. कितने ही बाण विद्या के जाननेवाले म्लेच्छ सावधान होकर बावली स्त्री के घड़े के समान होकर चले अर्थात् बावली (पागल) स्त्री जहां चाहे वहां अपने घट को डाल कर नाश करदेती है ऐसे ही वे वीर भी अपने घट (शरीर) का नाश

चिल्ह गिद्ध सिचान संगहि जुग्गिनीन जमाति लग्गिय ॥
दीपमाल समान है खुरताल ग्रावन ज्वाल जग्गिय ॥
व्है धरातल धुंधि लोकन रुंधिकैं चकचुंधि मंडिय ॥
चायसौं चहकाय चंडिय त्यौं महानट आय तंडिय ॥ ३ ॥
लंघि सिंधु सनाम यौं सरिता अबूफर साह आयउ ॥
और औरन लुट्टि तोर सजोर सोर मही मचायउ ॥
गोग५४हू स्मित पुब्ब सो सुनि मिच्छकौं तृन मान मन्निय॥
छोहि मुच्छन उब्भरे कच रारि रीति रहैं न छन्निय ॥ ४ ॥
गोगको तब भागिनेय जु बाल१सो हरिसेनको सुत ॥
होय मातुल भीर देस बिदर्भ गो दल लक्ख१०००००संजुत ॥
बंगराज तनूजहू पहुँच्यो प्रतर्दन२गोग सालक ॥
भीर पाटलिपुत्रको हु नरेस सुव्रत३गो उतालक ॥ ५ ॥
वंस राघव कोसलेस कुमार किन्नर४गो सहायक ॥
वंस पांडव दीप्र त्यौं पहुँच्यो नृपंजय५सत्रुघायकं ॥
सालिबाहन पारमार कुमार गो जयसेन६गज्जित ॥
प्रातिहार प्रदीप सल्ल महीप७गो नृप भीर सज्जित ॥ ६ ॥

करते देरी नहीं करते. चार कोस का एक जोजन होता है ऐसे पांच जोजन (वीस कोश) के फेर की जमीन मेघ के घर के समान फौज से ढंक गई ॥२॥ पत्थर पर घोड़े की खुरताल की रगड़ लगने से दीपमाला के समान अग्नि उठने लगी और धरातल धूंधला होकर लोकों को रोक कर चकाचौंध होने लगी, रक्त पीने की चाहना से प्रसन्नता का शब्द करके देवी और इसीप्रकार महादेव आकर नाचने लगे ॥ ३ ॥ सिन्धु नामक नदी उल्लंघ कर अबूफर साह आया और चारों ओर लूट करके अपने प्रताप के जोर का शोर भूमि में मचा दिया. हसी पूर्वक उस म्लेच्छ को तृण के माफिक माना. क्रोध से मूछों के केश ऊँचे उठे जिनसे युद्ध रीति छिपी नहीं रहती ॥ ४ ॥ याल नामक हरिसेन का पुत्र जो गोग का भाणेज था वह विदर्भ देश से लाख सेना लेकर मामा की सहाय को आया. गोग का शाला बङ्गदेश के राजा का पुत्र प्रतर्दन नामक आया, पटना का राजा सुव्रत भी शीघ्रता से सहाय को गया ॥५॥ रघुवंशी अयोध्या के राजा का कुमर किन्नर गया. १शत्रुओं को

चोलराज बिदूखनाभिधको हु बिक्रम१नाम नत्तिय ॥
सूर९अर्बुदराज गो ससिबंसि मुच्छन हत्थ घत्तिय ॥
बीरराज१०कलिंगभूप कुबेर११केरलको महीपति ॥
अङ्गको नृप चित्रसेन१२जयंत१३सोरठको महामति ॥७॥
साल्वको ससिबिंदु१४डाहलको सुबाहु१५त्रिगर्तको जय१६
कुंतलेश्वर कर्मसेन१७प्रसेन१८मैथिल भूप निर्भय ॥
दुर्ग१९तर्जिकको प्रतान२०सुबीरको नृप भीम आयउ ॥
केसरी२१टकराज अर्जुन२२मच्छदेस पती चलायउ ॥
चालुक्यान्वय[2] सूकरेश्वरको कुमार रणातिथी२३जिम ॥
मद्रराज[3] सुवर्म२४धन्वधरेस दुर्दम२५सज्जही तिम ॥
मिच्छ आवत जानिके इन्ह आदि भूप बिनाँ निमंत्रन[4] ॥
धर्मके अनुसार नीति सम्हारि सर्ब जुरे महामन ॥ ९ ॥
मिच्छसौं इक१को बनैं सु बनैं समस्तनको पराजय ॥
इक१ कारन एह औ भुव जाय दुष्टनकैं सुपै भय ॥
यौं बिचारि महीप सज्जित व्है भये सब आनि इक्कत ॥
गोग अक्खिय क्यौं लरो तुम मैं घनौं सबही गिनौं मत ।१०।
मोहि जो खल मारिकैं इतकौं बढै तब सर्ब जुज्झहु[5] ॥
हत्थ पिक्खहु गोगके जबलौं[6] यहै रन टेक उज्झहु ॥
सौंह दै सबकौं तहाँ इम रक्खि भो चहुवान सज्जित ॥
सूर नूर बढे भये मुख नीर उत्तरि भीरु लज्जित ॥ ११ ॥

मारनेवाला ॥६॥ १विदूखन नामक चोलदेश के राजा का विक्रम नामक पोता मूछों पर हाथ घाल कर ॥ ७ ॥ ८ ॥२ चालुक्य वंशी सूकरक्षेत्र के राजा का कुमर३मारवाड़ का४विना बुलाये ॥६॥ इस म्लेच्छ से एक का पराजय हुआ तो सभी का पराजय (हार) है एक तो यह कारण और यह भूमि दुष्टों के हाथ में चली जावे यह भी भय है इन दोनों कारणों को विचार कर राजा सज्जीभूत होकर इकट्ठे हुए ॥१०॥५लड़ना,६जब तक गोग के हाथ देखो (युद्ध में कैसे चलते हैं) तब तक युद्ध करने की टेक को छोड़ दो इसप्रकार सब को सोगन दिलाकर सब को वहीं पर रखकर चहुवाण तैयार हुआ उस समय सूरवीरों का रूप बढा और कायरों के मुख का पानी उतर कर लज्जित

यों अबूफर हू कियो दुव२दीहको इक१दीह मग्गहु ॥
धेनु घेरन मुक्कले असवार तीस हजार३००००अग्गहु ॥
जायकैं तिन घेरि गाय बिदर्भकी गन ग्वाल मारिय ॥
त्राहि त्राहि उचारि कोउक जाय भूपतिपै पुकारिय॥१२॥
गोगराज असोक आरुहि सेन सज्जि स्वकीय हंकिय ॥
ज्यौं बितान बितान अंबर अच्छरीन बिमान ढंकिय ॥
कोस पंचक५ जातही चहुवान मिच्छन पिट्ठि दब्बिय ॥
मित्र हूरनके मुरे तहँ सत्रु हूरनके मुरब्बिय ॥ १३ ॥
झल्लरी झननंकि कोचनकी करी रननंकि तुट्टिय ॥
निक्खसे सननंकिं बान सिचाँन ज्यौं भननंकि छुट्टिय ॥
बीर४ हत्तनकौं तजैं लगि वीर पत्तनकौं बसावन ॥
वेधि गत्तनकौं चलैं ६ति निषेधि छत्तनकौं नसावन ॥ १४ ॥
गोगके हु ७कलंब मिच्छन भोगकेहु निदान फुट्टिय ॥
रोगकेहु निदान जे लगि छोगकेहु निदान छुट्टिय ॥
कोटिभाग कटट्ठि चाप चटट्ठि चंड चलात बानन ॥

हुए ॥ ११ ॥ उधर अबूफर ने भी मार्ग में दो दिन का एक दिन ही किया, अर्थात् दो दिन के मार्ग को एक दिन में ही समाप्त (डबल कूँच) किया १गौवें घेरने को ॥ १२ ॥ अशोक नामक घोड़े पर चढकर अपनी सेना सझ कर चला. डेरों के समान अप्सराओं के विमान तण कर आकाश ढक गया. पांच कोश पर जाते ही जहां चहुवाण ने म्लेच्छों की पीठ दबाई तहां हूरों के मित्र (म्लेच्छ) पीछे मुड़े जो शत्रु थे, परन्तु युद्ध के मुरब्बी (बडे) थे ॥ १३ ॥ २कवचों की कड़ियें ३शिकरा (बाज नामक पक्षी) बाण हैं सो ४वीरों के हाथों को छोड कर वीरों के शहर वसाने लगे (अप्सराओं के साथ वीर लोग जुदे शहर वसाते हैं)५ जो शरीरों को वेध कर निकलते हैं ६ वे मुहाल के छाते का तिरस्कार करते हैं अर्थात् मधुमक्षिका के छाते में छेद हैं उनसे भी अधिक छेद शरीर में करके नाश करते हैं । १४ । गोग चहुवाण के भी ७तीर म्लेच्छों का भोजन करने के ८ कारण होकर फैले और वे ही बाण रोग (पीड़ा) के कारण हुए, जिनके लगने से म्लेच्छों के विजय के उत्साह का क[...]ता है गया, धनुष के चटाट (धनुष को खींच ने में जो शब्द होता है [...]त को जा करण है) करते हुए कोणों [गोशों] को खींच कर भयंकर [...]लाप को छोडते

तत्वकौं रु प्रधानकौं लखि ज्यौं अहम्मति देत आनन ।१५
अर्क अंड कटाहमैं जिम रंगसैं चहुवान राजत ॥
जंगमैं बरजोर सत्रुन संगमैं गति घोर साजत ॥
घाय अल्पहु पाय कातर हाय हक्कत माय हारद ॥
ठौरतैं न डिगाय काय सु जानि उंदुरु पीत पारद ॥ १६ ॥
दबि हत्थिन हेठके अकुलात घायल गात मानव ॥
जानि सिंधु मथान मंदर आदिके तल देव दानव ॥
भागिनेय नरेसको वह बाल नामहु संगआयउ ॥
मिलेछबीस हजार२००००दोउ रन मारि गोधनकौं छुरायउ ।१७
सेस भज्जत सेसको अनुजात उब्बत पिट्ठि लग्गिय ॥
वाहिनी जवनेसकी इततैं मिली रन प्रीति पग्गिय ॥
किन्न मंदर गोगके हय मिच्छ सागरको बिलोडन ॥
जानिकैं जमफेट सम्मुह व्है सके दुवर भ्रात गोड न॥ १८ ॥
बालके करहू चले जिम बालके कर खान मोदक ॥
आजिमैं चहुवानकी विथरी दिसा विदिसान ओदक ॥

मानो परमेश्वर को और प्रकृति को देख कर अज्ञान नहीं आने देता अर्थात् पुरुष और प्रकृति की साम्यावस्था होने से मोक्ष होता है सो अज्ञान नहीं होने देता इसीप्रकार धनुष के दोनों कोणों को सामिल नहीं होने देकर बाण छूट जाता है ॥ १५ ॥ ब्रह्मांड में सूर्य है इसीप्रकार युद्ध में चहुवाण शोभायमान है और युद्ध में श्रेष्ठ बलवाला शत्रुओं के साथ भयंकर कर्म को साधता है, छोटे घाव लगने पर भी कायर लोग हाय-माय ऐसे शब्द करके हार (अजय) देनेवाले होकर निकलते हैं परन्तु भय के मारे उनके शरीर पारा पियेहुए चूहे के समान ठौर से नहीं डिगते ॥ १६ ॥ कितने ही हाथियों के नीचे घायल मनुष्यों के शरीर अकुलाते हैं सो मानों समुद्र के मथने के दंड रई रूपी मंदर नामक पर्वत के नीचे देवता और दानव अकुलाते हैं, गोग चहुवाण का भानजा बाल भी साथ आया १ म्लेच्छों को ॥ १७ ॥ बाकी की सेना भगते ही शेष नाग का छोटा भाई [गोग] पीठ लगा २ सेना ३ गोग चहुवाण के घोड़े रूपी मन्दराचल ने म्लेच्छों की सेना रूपी समुद्र को मथन किया सुर्जन और अर्जुन नामक दोनों भाई गोड सामने नहीं होसके ॥१८॥ बालक के हाथ लड्डू खाने पर चले जिस माफिक गोग के

भीर जे हुव भूप इक्कत ते यहै सुनि पिठ्ठितैं चाढि ॥
जंगमैं पहुँचे सबै न रुके रजोगुन बेगमैं बढि ॥१९॥
भो बडो घमसान प्रानन खान ज्यौं कुरुखेत भारत ॥
अष्टमी८ सुचि स्यामसौं मचिगो प्रलै जनु ज्वाल जारत ॥
उच्छटैं कटि गाल भाल कपाल बुल्लत टूक टोपन ॥
विष्णु[2] आरति काल बादन तालमैं हु इतीक ओपन ॥२०॥
फार धार प्रसार सोनित उब्बकै गज गात अंदर ॥
जंबुके रसकी नदी जनु मेरु मंदरकेर कंदर ॥
बात ज्यौं खतमाल यौं करवाल कोचनकौं बिदारत ॥
राधमास पलास पुष्पित भास अंग तुरंग धारत ॥ २१ ॥
प्रास१कुंत२कटार३खग्ग४चलैं गदा५बरछी६विपाटक७ ॥
तुंड[8]मुंड कटैं नचैं उठि रुंड झुंड सु नव्य नाटक ॥
फुट्टि वीरनके सरीरन भुम्मि पैठत तीरकी तति ॥
कूट सक्खिहिं जो भरैं तस पूर्व पूरुख ज्यौं अधोगति ।२२।
मित्र मस्तक१ कंधरा१ दुव२ मेल छोरत पिक्ख संगर ॥
बाजि नालन कीलमैं उरझैं कहौं गज लंबलंबर ॥
अर्द्धचंद कलंबमैं चिपि अंत यौं निकसंत अच्छिय ॥

भाणजचाल के हाथ म्लेच्छों पर चले(आजि)युद्ध में(आदक)भय। १९।प्राणों का खानेवाला बडा युद्ध हुआ१शुक्ल पत्त की अष्टमी की संध्या से २ विष्णु भगवान् की आरती के समय के वाजों में भी इतनी शोभा नहीं अथवा इतनी उपमा नहीं ॥ २० ॥ धारों के समूह फैल कर हाथियों के शरीरों से रक्त उपकता है सो मानों सुमेरु पर्वत की कन्दरा से जांवू के रस की नदी वहती है. जैसे पवन मेघ को विदारण करता है तैसे खड्ग कवचों को काटते हैं और वैशाख मास में ढाक का वृत्त लाल रङ्ग का होजाता है उस कान्ति को गोग के घोड़े के अंग ने धारण की ॥ २१ ॥ ३ सांग (शस्त्र विशेष) ४ भाला ५ वाण ६ मुख और मस्तक कटते हैं और रुंडों के झुंड उठकर नवीन नाच नचते हैं और वीरों के शरीर फूटकर वाणों की पंक्ति भूमि में पैठती है सो मानों झूठी सात्ती भरनेवाले के पूर्व पुरुष (वडाउवे) अधोगति को जाते हैं ॥ २२ ॥ मस्तक और कन्धा दोनों मित्र हैं वे भी मिलाप को छोडते

सर्प अंकुस संगकै वनसी ग्रसी जनु वाम मच्छिय ॥ २३ ॥
कुंभ ज्यौं गजकुंभ उत्तरि जात तेगनकी तराकन ॥
दंत कंडन कुट्ट से बिखरंत अंबरमैं बराकन ॥
कालखंडन खंड होत अदोख ज्यौं अहिफेन बट्टिय ॥
फट्टिजात किंवार छात्तेयके मनौं पयलौंन खट्टिय ॥ २४ ॥
सारथी१रथ२चक्र३केतन४पत्ति५बारन६बाजि७कट्टत ॥
जूह सादिन८के निसादिनके९उडैं नटलौं उलट्टत ॥
खेत्रपाल खुसाल खेलत मोदसौं भरि गोद गल्लन ॥
आसनोट विहीन घोट लगैं परस्पर चोट घल्लन ॥ २५ ॥
जालकौं जिम कीर अंत्रन मालकौं खुरताल ऐंचत ॥
सुंडिकी मुरली बनाय बजात बावन५२नैंन मैंचत ॥
पत्तमैं भरि रत्त पीवन तत्त जुग्गिनि मत्त डोलत ॥
टोप खेटक छत्र लोहित नीर कच्छपलौं किलोलत ॥ २६ ॥
कंधरा हयकी कटी गहि प्रेत बल्लकिका बनावत ॥
कील ह्हाँ नलकीलके करि तंत अंत्रनके तनावत ॥

हैं अर्धचन्द्राकार बाण में छिप कर आंत इसप्रकार निकलती है जैसे अंकुश के संग में सर्प, अथवा वंसी (कांटा) में छिप कर वामजाति की मच्छी निकसै ॥ २३ तरवारों की तड़ाकों से घड़ों के समान हाथियों के कुंभ [कपोल] उतरते हैं और हाथियों के दांत ऊखल में कूटे हुए से होकर आकाश और युद्ध में बिखरते हैं, बिना तूटी हुई अफीम की बट्टी के समान कलेजों के टुकड़े होते हैं और जैसे निमक के पड़ने से दूध फट जाता है तैसे छाती के किवाड़ फटते हैं ॥ २४ ॥ सारथी रथ पहिये ध्वजा पैदल हाथी घोड़े कटते हैं और उडते हुए नट के समान घोड़े के सवारों और हाथियों के सवारों के समूह उलटते हैं. प्रसन्न होकर गालों में गोद भर कर बिना पलानों [जीणों] के घोड़े परस्पर चोटें मारते फिरते हैं ॥ २५ ॥ हाथी की सुंड की वंसी बना कर बावन भैरव नेत्र बंध करके बजाते हैं [पूर्ण आनन्द आने के समय नेत्र मिल जाते हैं] पत्र में ताता [गर्म] रक्त भरकर जोगनियां(देवी की दासियां) मस्त होकर फिरती हैं. रक्त रूपी जल में टोप ढाल और छत्र कच्छप के समान किलोल करते हैं ॥ २६ ॥ कटीहुई घोड़े की गर्दन को लेकर प्रेत वीणा बनाते हैं, उस वीणा के मनुष्यों की नली की हड्डी की खूँटियें बनाकर आंतों के तार

भद्रबारन मत्थ फट्टि गिरंत मुत्तिय ज्यौं पयोघन ॥
यौं गदा सिरपैं बजैं जिम लोह[1]कारनके अयोघन ॥ २७ ॥
गोगको असि च[2]क्खि मिच्छन किन्न गड्डनकी तयारिय ॥
लुत्थिपैं लगि लुत्थि ज्यौं [3]बनिजार लोकन टंड ढारिय ॥
भद्दके झरकी प्रभा चहुवानके सरकी भई जब ॥
चाह लै घरकी अबूफरकी अनी लरकी घनी तब ॥ २८ ॥
नर्मदा तट पारलौं अतिघोर मिच्छनहू कियो रन ॥
वार आवत निट्ठि निट्ठि लगे सबै मुख अग्ग भज्जन ॥
स्रोतके भ्रममैं परे ति कितेक नाव समेत बुड्डिय ॥
वारहू लखि भूपकौं खल तंतितैं जनु तूल उड्डिय ॥ २९ ॥
चम्मली रु बनास आदिक आपगा सब यौंहि उत्तरि ॥
होय सत्थनके हमाल लजेहि मिच्छ भजे त्वरा करि ॥
निट्ठ निट्ठ गये ति बग्गड़ पिट्ठि हिंदुन सत्थ खावत ॥
घोर जंग बहोरि भो हरियान देस मझारि जावत ॥ ३० ॥
मिच्छ एडिनपैं अंगुठन देत उत्तर ओर चल्लिय ॥
आतही हरियानलौं सब मारि भूपन घेर घल्लिय ॥

तनते हैं. १लुहारों के लोहे के घण।२७।२खड्ग चखकर३ वणजारों ने टांडा ढाला हो-वे इस माफिक, चहुवाण के बाणों की क्रान्ति जब भादवा महीने के झड़ के समान हुई तब अबूफर की सेना घर की चाहना करके बहुत नमी(पीछी हटी) ।२८।नर्मदा नदी के वरे आने पर, कितने ही नदी के प्रवाह के भ्रमर में पड़े वे नाव साहित हीं डूब गये और नदी के वरले तरफ भी राजा गोग को देख कर तांत के आगे रुई उडै इस माफिक दुष्ट उडै ॥ २६ ॥ चामल नदी और बनास नदी सब इसीप्रकार उतरे और शस्त्रों के हमाल (बोझा उठानेवाले) होकर लज्जा पायेहुए म्लेच्छ शीघ्रता करके भागे और पीठ पर हिन्दुओं के शस्त्र खातेहुए नीठ नीठ (बडीकाठिनाई से) बागड़ देश में गये, (मालवे के एक प्रान्त का नाम बागड़ है जो इस समय डूंगरपुर और प्रतापगढ के अधिकार में है इस प्रदेश को लांघे पीछे चामल और बनास नदी आती है इसकारण से मुदाफ़र के भागने में भी बागड़ में होकर चामल और बनास नदी उतरने का क्रम जानना चहिये) हरियाणा में जाते फिर भयंकर युद्ध हुआ ॥३०॥ गोग ने घोड़े को झपटाकर अबुफर की छाती में भाला लगाया

गोग है झपटाय कुंत दयो अबूफर साह छत्तिय ॥
वग्गुली तरुकै जथा सु रकाब लंबत भूप पत्तिय ॥ ३१ ॥
गोड अर्जुन सीस कट्टिय कोसलेस कुमार किन्नर ॥
मारिकैं जवनेस पुत्रहिं वाल जामिज हू पर्‍यो धर ॥
वीरराज कलिंग भूप वजीरकौं हनि गो सुरालय ॥
फोजदारहिं मारि पांडव बंसदीप पर्‍यो नृपंजय ॥ ३२ ॥
गोगहू निज देह द्वै सत२००घाय पाय हन्यौं अबूफर ॥
गोड सुर्जन भज्जि गो जय हिंदु भूपनको वढ्यो बर ॥
म्लिच्छ यौं हरियानलौं भजि आत आत हनैंगये सब ॥
बंब[1] आनक[2] क्रोसताल[3] चुहानके जयके बजे अब ॥ ३३ ॥

(दोहा)

उभय२मास आहव[4] भयउ, परे खेत नव लक्ख९००००० ॥
लरत भजत नहिं निज निलय[5], पहुँचि सके परपक्ख[6] ॥३४॥
प्रतिदिन खल पच्छे डिगत, आयुध अतुल प्रहारि ॥
पहुँचि देस हरियान लग, लयो अबूफर मारि ॥३५॥

॥ सोरठा ॥

तीन लक्ख३००००० खट लक्ख६००००००, इत उतके क्रमतैं परे ॥
नृपहु मरे नृप[7] पक्ख, नृप[8] तिनके नामहु सुनहु ॥३६॥
भागिनेय[9] वह वाल१, सुत आनर्त नरेसको ॥
देस कलिंग नृपाल, वीरराज२रनमैं रहिय ॥३७॥

जिससे, वृक्ष के वागल (चमगीदड़) लटके जिस माफिक घोड़े की रकाब से लटकने लगा. उस समय राजा गोग जापहुंचा ॥ ३१ ॥ अर्जुन गोड का मस्तक अयोध्या के राजा के पुत्र किंनर ने काट लिया और अबूफर के पुत्र को मारकर वाल नामक गोग का भाणज भूमि पर गिरा, कलिंगदेश का राजा वीरराज अबूफर के वजीर को मारकर स्वर्ग गया ॥ ३२ ॥ १ नक्कारे २ नोबत ३ ढोल ॥ ३३ ॥ ४ युद्ध हुआ ५ अपने घर पर ६ शत्रु ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ७ गोग चहुवाण के पक्ष के ८ हे राजा रामसिंह उनके नाम भी सुनो ॥ ३६ ॥ ९ भाणज,

कोसंबी नरनाथ, पांडव बंसि नृपंजय३हु ॥
सूर४पस्यो तिम साथ, ससिकुल रवि अर्बुद अधिप ॥३८॥

षट्पात्

केरलराज कुबेर५कर्मसेन६सु कुंतलपति ॥
सल्ल महीप७सनाम भूप प्रतिहार महामति ॥
मैथिलराज प्रसेन८दुर्ग९तर्जिक भुवनायक ॥
मगधराज सुब्रत१०सुवर्म११मद्देस सुभायक ॥
अर्जुन१२बिराट बंसिय परयो मरुमहीप दुर्दम१३सहित ॥
क्रमतैं त्रिगर्त१डाहल२नृपति जय१४सुबाहु१५संहरि३अहित ॥३९॥

(दोहा)

हन्यो अबूफर जवनपति, सुर्जन गोड भजाय ॥
अल्प जवन पहुँचे घरन, रन जित्तिय रनराय ॥४०॥
बचे नृपति एकत्त करि, गोग५४कहिय तब एह ॥
अब हमरी जानहु अवधि, न यहँ रहन सन नेह४ ॥४१॥
सूरि भयो सुभकर्ण५५हू, वय दस१०हायन६ बीर ॥
पुनि पंद्रह१५मम काज पर, मरे धरनि पति७ धीर ॥४२॥
कोल समय आयउ निकट, रहो सेस८ कछु सेस ॥
भनि इम हय जुत पैठि भुव, गो पाताल नरेस ॥४३॥
अतिजगती खट६१३मित बरस, कलिजुग जावन काल ॥
दिन जिहिं जनम्यौं ताहि दिन, पहुँच्यो नृप पाताल ॥४४॥

(अत्र शेषोपालंभः पुनः प्रेषणं वाच्यम्)

निलय गोग चहुवानके, रचि जनपद हरियान ॥

---

१ चन्द्रवंशी ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ २ शत्रुओं का ३ संहार करके ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ४ यहां रहने से अब प्रीति नहीं ॥ ४१ ॥ मेरा पुत्र शुभकर्ण भी ५ पंडित होगया ६ दश वर्ष की ऊमर में वीर है ७ भूपति ॥ ४२ ॥ ८ हे शेष-नाग मेरे यहां रहने के कोल का समय नजीक आगया कुछ ही९ बाकी रहा है इसकारण से अब मैं यहां रहना नहीं चाहता यह कहकर राजा गोग घोड़े सहित पाताल में पैठ गया ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ हे चहुवाण राजा रामसिंह

ताकौं सब पूजत जगत, अब लग नृप चहुवान ॥४५॥
सुभकर्णाहिं कर्णाटपति, करि अभिसेक बिधाय ॥
बसुधापति रनतैं बचे, निज निज पत्त२ निकाय३ ॥४६॥
सुनत प्रमा५५।१किय सहगमन, राक्खि पतिव्रत राह ॥
अनला५४।१हू याको अपर, नाम विदित नरनाह ॥४७॥
गोगहिं भूप प्रबिष्ट गिनि, नतिजुत राम नरेस ॥
पूजित जाहिर पीर कहि, कतिपय जवन बिसेस ॥४८॥
ताहि सर्व भय होत नहिं, बरनत जो यह बात ॥
सर्पहु गोग प्रभाव सुनि, जवी४ निलय५ तजि जात ॥४९॥
रथन जुद्ध तिन दिननतैं, लगे मिटन नृप राम ॥
बडे अनृत१ छल जुद्ध२बलि, क्रोध३लोभ४मद५काम६ ।५०।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचंडासिवंशवर्णने प्रत्यन्तेन्द्राबूफराऽऽगमनज्ञातम्लेच्छाऽऽगमसर्वनृपगोगसहायकरणमहारणाऽनुष्ठाननिपातितयवनेन्द्रभैमिविजयनभागिनेयबालाऽऽदिपञ्चदश१५नृपशूरशय्याशयनसवाजिविग्र

हरियाणा देश में उस गोग चहुवाण का मकान बनाया जिस गोग को अब तक सब जगत् पूजता है ॥ ४५ ॥ १ राजा अपने अपने ३ घर २ पहुंचे। ४६। गोग का जाना सुनकर राणी प्रमा ने भी पतिव्रत की राह रखकर सहगमन किया जिसका दूसरा नाम हे राजा रामसिंह अनला भी प्रसिद्ध है ॥ ४७ ॥ हे राजा रामसिंह गोग राजा को पाताल में घुसा जान कर कितने ही यवन भी नम्रता पूर्वक पीर कहकर उसको पूजते हैं ॥ ४८ ॥ ४ शीघ्रता से ५ घर छोडजाता है ॥ ४९ ॥ हे राजा रामसिंह उन दिनों से ही रथों में बैठ कर युद्ध करना मिटने लगा और बडे झूठ से पुनि क्रोध लोभ मद और काम से छलयुद्ध होने लगे ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में ईरान देश के इन्द्र अबूफर का आना जानकर उस म्लेच्छ के आने पर सब राजाओं का गोग की सहायता करना, बडे रण के अनुष्ठान में यवनेंद्र को मार कर भीम के पुत्र (गोग) का विजय होना, बाल नामक भाणेज को आदि लेकर पन्द्रह राजाओं का शरशय्या में सोना, अपने घोडे और

हगोगप्र४पृथ्वीप्रविशनप्रमा५४।१सहगमनशुभकर्ण५५वैदर्भ १ कर्णाट२राज्यसमासादनं चतुस्त्रिंशत्तमो३४ मयूखः ॥ ३४ ॥ आदितः षट्सप्ततितमः ॥ ७६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

गोगप्र४ नृपति पाताल गय, इम हनि दुष्ट असेस ॥
भोजकट१रु मिहिकावतिय२, हुव सुभकर्ण५५नरेस ॥ १ ॥
मरु महीप दुर्दम सुता, कनकलता५५।१ अभिधान ॥
सो ब्याहिय सुभकर्ण५५नृप, सुघर सुसील सुजान ॥ २ ॥
सूनु३ भयो सुभकर्णकै, उदयकर्ण५६अति वीर ॥
कोसलेस किन्नर सुता, धन्या५६।१ परन्यों धीर ॥ ३ ॥
उदयकर्णकै हुव तनय, सो जसकर्ण५७ सनाम ॥
चेदिराज लछमन सुता, ब्याह्यो सुमना५७।१वाम ॥ ४ ॥

(षट्पात्)

नृप जसकर्ण तनूज भयउ हरिकर्ण५८नरेस्वर ॥
मगधराज दृढरसन सुता बिसरा५८।१ परन्यों बर ॥
ताकै सुत कीर्तिस५६ समर सागर अवगाही ॥
मागध सुमति सुता सती५९।१सु जिहिं वीर बिवाही ॥
हुव बालकृष्ण६० ताकै तनय कोसलेस धर्म्मी सुता ॥
रेनुका६० नाम परन्यों यहहु सील रूप गुन संजुता ॥ ५ ॥
बालकृष्णकै तनय भयउ हरिकृष्ण६१ महीपति ॥

अपने शरीर के साथ गोग का भूमि में घुसना, प्रमा नामक राणी का सती होना, शुभकर्ण को वैदर्भ और कर्णाट देश का राज्य प्राप्त होने का चौतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३४ ॥ और आदि से छहत्तर मयूख हुए ॥ ७६ ॥

१ सम्पूर्ण २ कनकलता नामक ॥ १ ॥ २ ॥ ३ पुत्र ॥ ३ ॥ ४ पुत्र ५ सुमना नामक स्त्री को ॥ ४ ॥ ६ पुत्र ७ युद्ध रूपी समुद्र का ८ थाह लेनेवाला ९ मगध देश के राजा सुमति की सती नामक पुत्री को ॥ ५ ॥

ससिकुल टकपतिसिंह सुता परन्यौं सुमनारति६२।१ ॥
रामकृष्ण६२ हुव तास धर्म नयदानधुरंधर[2] ॥
मगधराज सत्यजित सुता स्यामा६२।१ परन्यौं बर ॥
बलदेव६३ भयो ताकै तनय सो रघुकुल कसमीरपति ॥
प्रद्योत सुता जमुना६३।१ परनि भयो विदित भुव मंजुमति[3] ॥

(पादाकुलकम्)

नृप बलदेव तनूज महामन, हुव हरदेव६४ नाम धरनीधन[4] ॥
मागधराज रिपुंजय दुहिता, ससिप्रभा६४।१ परन्यौं यह सुहिता ॥७॥
लग्न समय ससधर कुल उत्तम, कहिय पुरोहित नाम जथाक्रम ।

(अथ चन्द्रवंशोद्देशनम्)

नारायनके नाभिकमलसन, निखिल जनक प्रकटिय चतुरानन१ ॥
ताकै अत्रि२ रु चंद्र३ तास सुव, ताकै जीवबधू बिच बुध४ हुव ॥
तास इला बिच पुरूरवा५ सुत, ताकै हुव खट६ पुत्र धर्म जुत ॥९॥
आयु ६।१ तथा धर्मायु ६।२ अमावसु ६।३,
विस्वावसु ६।४ रु सतायु ६।५ अनुज तसु ॥
पुनि श्रुतायु६।६ यहँ जो तृतीय३ सुत, ताकै भीम७ तास कांचन८ नुत[5] ।
तास सहोत्र९ जन्हु१० ताकै सुनि, गंगा सोसि सुता जिहिं किय पुनि
तास सुजंगु११ अजक१२ तस जानहु,
तस बलाक१३ कुस१४ तास प्रमानहु ॥११॥

---

१ चन्द्रवंशी टकपतिसिंह की पुत्री सुमना को प्रीति सहित परना २ नीति धर्म और दान के धुर को धारण करनेवाला ३ श्रेष्ठ बुद्धिवाला।६।४ राजा।७ लग्न के समय उत्तम चन्द्रवंश के नाम पुरोहित ने यथाक्रम से कहे. यहां चन्द्रवंश का कथन है कि नारायण के नाभि कमल से सब का पिता चार मुखवाला (ब्रह्मा प्रकट हुआ ॥ ८ ॥ ब्रह्मा के अत्रि, उसके चन्द्र, और चन्द्रमा के बृहस्पति की (बृहस्पति की तारा नामक स्त्री को चन्द्रमा ने घर में डाल ली थी जिस) स्त्री में बुध नामक पुत्र हुआ, उसके इला नामक स्त्री में पुरूरवा नामक पुत्र हुआ, उसके धर्मात्मा छः पुत्र हुए ॥ ९ ॥ ५ स्तुति योग्य ॥ १० ॥ सहोत्र के जन्हु हुआ जिसने गंगा को शोषण करके फिर उसको पुत्री बनाई.

सुत कुसांब१५।१कुसनाभ१५।२मूर्तरय१५।३,
बसु१५।४सुत चउ४कुसकै हुव दुर्जय ॥
बडो कुसांब१५गाधि१६ताकै सुव, अतितप लखि इंद्राऽवतार हुव१२
ताकै बिश्वामित्र१७महामुनि, सुनस्सेफ१८।१अंकस्थ तास पुनि ॥
मधुच्छंद१८।२आदिक औरस सुत, बहु द्विज भये गोत्र कौसिक जुत
पुरूरवा सुत ज्येष्ट आयु६जो, परन्यौं सुता राहुकी नृप सो ॥
हुवसुतपंच५तासनहुष७।१जथा,क्षत्रवृद्ध२अरुरंभ३रजि४तथा ॥१४॥
अनेनाहु७।५इनमैं पंचम५जिम, या पंचम५कै हुव सुहोत्र८तिम ॥
त्रय३तस कास्यप९।१आस९।२गृत्समद९।३,
सकुन१०तृतीय३ज बर्ण च्यारि४हद ॥१५॥
कास्यपकै कौसेय१०बिजित अरि, दीर्घतमा११तस तस धन्वंतरि१२
वैद्यराज जिहिं वर हरितैं लहि, आयुर्वेद अष्टधा८किय महि ।१६।

षट्पात्

केतुमान१३हुव तास भीमरथ१४तास महामन ॥
दिवोदास१५हुव तास तास हुव तनय प्रतर्दन१६॥
सोहि सत्रुजित१६नाम बच्छ१७धर्मिष्ट तास सुत ॥
सोहि ऋतध्वज१७कुसलयाश्व१७अभिधान तीन३जुत ॥
ताकै मदालसा नारि बिच उपजे आत्मज च्यारि४जहँ ॥
चोथो४अलर्क१८ताकै भयो संतति१९तास सुनीथ२०तहँ ॥१७॥

दोहा

भयो सुकेतु२१सुनीथकै, वैतहोत्र२२तस आस ॥
भार्ग२३नाम ताकै तनय, भार्गभूमि हुव तास ॥१८॥

षट्पात्

क्षत्रवृद्ध७।२जो भयउ प्रतिक्षत्र८सु ताकै हुव ॥

१इंद्र का अवतार२गोद रक्खा हुआ३सवर्णा विवाहिता स्त्री में पैदा हुए४काश्यप चारों वर्णों की हद(सीमा)हुआ५शत्रुओं को जीतनेवाला६विष्णु से वर लेकर भूमि पर आयुर्वेद के आठ भाग किये७तीन नामों सहित८पुत्र९हुआ

तस संजय९तस जय१०रु तास विजय११रु तस कृत१२सु
तास हर्षवर्द्धन१३रु तास सहदेव१४तास सुत ॥
जयसेन१५रु संकृति१६तदीयँ तस खलवर्म१७नुतं ॥
अह रंभ७१३सु हुव सु अग्रज मरिय सुरं सहाय किय अनुज रजि७१
तस तनय स्वर्गपति व्है सकल मरे इंद्र सर्न पाप भजि ।१९

पादाकुलकम्

वडो आयु सुत नहुष७१२लेहु सुनि, सो व्है इंद्र भयो अजगर पुनि"
यति८१ययाति८२संयाति८३ललामक,
आयति८४वियति८५तथाकृति८६नामक ॥ २० ॥
ए खट६पुत्र नहुषके जानहु तिनमैं जती८१जंती हुव मानहु ॥
नृपययाति८२भो तासपंच५सुव, यदु९१तुर्वसु२द्रुह्यु३अनु४पुरु५,
पहिले उभय२इंद्रसुतके जे, इंद्र दोहिती उर उपजे जे ॥
तीन३अपर जे विक्रम नयं जुत, सरमिष्ठा दानवी जने सुत ।२२।

सचरणगद्यम्

ययातिनैं सुक्रके सापसौं जरां पाय बडे पुत्र जदुसौं कह्यो तेरे वैंयतैं मैं कछु काल बिषयानंद अनुभूतैं करौं यातैं सुपुत्र जुव्वन मोहि दैकैं जरां लेहु ॥

सो सुनतही वानैं अंगीकार न कीनो नव तेरे अन्ववाँय आधिर्पत्यके उचित कबहू मति होहु दयो सराप एहु ॥

अनंतरें तुर्वसु द्रुह्य अनु इनहूकौं नटे जानि साप देकैं छोटे पुत्र पुरूसौं जुव्वन पाय भोग भोगत भयो ॥

अरु तृप्ति न जानीं तब हारिकैं पुरूकौं पैंछो जुव्वन दे

२ पुत्र ३ उसके ४ स्तुतियोग्य ५ बिना सन्तान मरा उसके रजि नामक छोटे भाई ने ६ देवताओं की सहाय की ७ सब पाप का सेवन करके इन्द्र ८ से मारे गये ९ सुन्दर १० इन्द्रियों को रोकनेवाला हुआ मानों ११ दूसरे १२ नीति सहित १३ बुढापा १४ तेरी युवा अवस्था से १५ परिचय (अनुभव) करूं इसकारण से हे सुपुत्र तेरा जोबन मुझे देकर मेरा १६ बुढापा तू ले १७ वंश १८ स्वामिपन के उचित १९ इस पीछे २० पीछा यौवन देकर ॥२३॥

सम्मय पर स्वर्गको लाह लयो ॥ २३ ॥

जजातिके बडे पुत्र जदुकै सहस्रजित् १०।१ क्रोष्टु १०।२ नल १०।३ रघु १०।४ यह पुत्रनको चतुष्क[1] ४ जान्यौं ॥

तिनमैं वडे पुत्र सहस्रजितके सताजित ११ ताकै हैहय१२।१ महाहय १२।२ वेणुहय १२।३ यहै तनूजनको त्रितय[2] ३ मान्यौं ॥

वडे हैहयके धर्म १३ताकै धर्मनेत्र१४ताकै कुंति१५ताकै सोहंजि१६तासौं माहिष्मान१७पराक्रमी जो माहिष्मती पुरी बसाय तत्थ रह्यो ॥

ताकै भद्रश्रेण्य १८ ताकै दुर्द्दम १९ ताकै बनक२०तासौं कृतवीर्य २१।१कृताग्नि२१।२कृतवर्मा२१।३कृतौजा२१।४यह पुत्रनको चतुष्टय[3]४कह्यो ॥२४॥

इनमैं कृतवीर्यके सहस्रार्जुन २२ सप्तद्वीपवतीनरेस लंकेस्वर रावणकौं सरासनकी[4] सिंजनीमैं[5] बंधि लायो ॥

जानैं दस हजार१००००सत्र[6] करि दत्तावतारके बरसौं[7] बाँहु सहस्र१अधर्मरतबिज्ञान[8]२धर्मसौं पृथ्वीजय३धर्मसौं पालन४सत्रुनसौं बिजय५परमेश्वरसौं मृत्यु६पायो ॥

पच्च्यासी हजार८५०००हायन[9]माहिष्मतीमैं राज्य करि अधर्मके संकल्पहुकौं जरूर जानि जानि द्वीपनमैं जाय जाय दंड देत भयो॥ अरु जाके चिंतनतैं नष्ट वस्तु की प्राप्ति होय औसो प्रभाव लयो।२५।

अर्जुनके सूरसेन २३।१ मधु २३।२ जयध्वज २३।३ प्रमुख[10]सत१००

१ चारों का समुदाय २ तीनोंका समुदाय ३ चारों का समुदाय ४ धनुष की ५ प्रत्यञ्चा में ६ यज्ञ कर दत्तात्रेय के वरसे ७ सहस्रार्जुन ने अधर्म में प्रीति करनेवाले मनुष्यों से तो ८ ज्ञान लिया, धर्म से पृथ्वी का विजय किया, धर्म से ही पालन किया, शत्रुओं से विजय पाया और परमेश्वर से मृत्यु पाई ९ वर्ष माहिष्मती नगरी में राज्य करके अन्य द्वीपों में अधर्म में मनुष्यों के मन का व्यापार जान कर वहां जा जा कर उनको दंड दिया, जिस सहस्रबाहु को याद करने से नाश पाई हुई वस्तु की फिर प्राप्ति होजावे ऐसा प्रभाव उसने लिया ॥ २५ ॥ १०आदि

पुत्र भये ॥

तिनमैं जयध्वजकै तालजंघ २४ तालजंघहूकै तालजंघ २५ नामक सत १०० पुत्र ठये॥

तिनमैं मुख्य तो बीतिहोत्र २५।१ तासौं अर्जुनको वंस विसेसहू बीतिहोत्र कहिये ॥

अरु याको अनुज २५।२ ताकै वृष २६ ताकै मधु २७ ताकै हू वृष्णि २८ प्रमुख सत १०० पुत्र श्रवनपथमैं गहिये ॥ २६ ॥

जदुके दूजे २ पुत्र क्रोष्टुकै वृजिनीवान् ११ ताकै स्वाहित १२ ताकै ऋष्यंगु १३ ताकै चित्ररथ १४ ताकै चतुर्दस १४ महारत्नपति चक्रवर्त्ती महाकुटुंब राजा सप्तबिंदु १५नैं जन्म लीनौं ॥

जाकै लक्ख १००००० रानी दसलक्ख१००००००तनय भये तिनमैं बडे पृथुजसा१६।१पृथुकर्मा१६।२पृथुजय१६।३पृथुकीर्ति१६।४ पृथुदाता१६।५पृथुश्रवा१६।६छ६पुत्र अपने जसको प्रसार कीनौं ॥

इनमैं छोटे पृथुश्रवाकै पुत्र तम१७ताकै असना१८ जानैं एक सत१०० अश्वमेध करे ॥

अरु असनाकै सतेषु१९ताकै रुक्मकवच२०ताकै परावृत२१ताकै रुक्मेपु२२।१पृथुरुक्म२२।२ज्यामघ२२।३पालित२२।४हरि२२।५पंच५पुत्र भये धर्म भरे॥ २७ ॥

तिनमैं तीजो३ज्यामघ२२।३महास्त्रीजित कोऊ राजकन्याकौं विवाहके अर्थ जीति लायो तथापि सैब्यारानीके भयतैं अपनौं संकल्प वृथा करि तेरे पुत्र होयगो ताकौं विवाहिवेकौं यह आनी सैं कहत भयो ॥

पीछैं ज्यामघसौं सैब्यामैं विदर्भदेसको प्रवर्तक पुत्र विदर्भ२३प्रकट्यो ताकौं वह कन्या विवाही तामैं विदर्भसौं क्रथ२४।१ कौंक२४।२लोमपाद२४।३यह तनयको त्रिक३उद्गमैं लहत भयो ॥

२ कानों में ग्रहण करो [सुनो ३ पुत्र ४ स्त्री का जीताहुआ [स्त्री डरनेवाला] ५ विदर्भ देश, इस नाम की प्रवृत्ति करानेवाला ६ जन्म लिय

तिनमैं कोसिक२४।२के बभ्रु२५ताकै धृति२६ताकै कौसिक२७ताकै पुत्र चेदि२८तासौं चेदिवंस बिख्यात जान्यौं ॥

अरु बिदर्भके बडे पुत्र क्रथकै कुंति२५ताकै वृष्णि२६ताकै निर्वृत्ति२७ताकै दासार्ह२८ताकै व्योम२९ताकै जीमूत३०ताकै विकृति३१ताकै भीमरथ३२ताकै नवरथ३३ताकै दसरथ३४ताकै सकुनि३५ताकै करंभि३६ताकै देवरात३७ताकै देवक्षत्र३८ताकै मधु३९ ताकै तनय कुरुवंस४०ताकै अनुरथ४१ताकै पुरुहोत्र४२ताकै अंसु४३ताकै पुत्र सात्वत४४मान्यौं ॥ २८ ॥

सात्वतकै भजन४५।१भजमान ४५।२ दिव्यांतक४५।३ देवावृध ४५।४महाभोज४५।५अंधक४५।६वृष्णि४५।७ए सप्त७ पुत्र भये ॥

तिनमैं दूजे२भजमानकै निमि४६।१कृकण४६।२वृष्णि ४६।३तथा इनहीके सापत्न[1] भ्राता सतजित्४६।४सहस्राजित् ४६।५अजितायु४६।६ए खट्६तनुज ठये ॥

अरु चोथे४देवावृधकै बभ्रु४६तथा सात्वतके पंचम५पुत्र धर्मधुरीण महाभोजके कुलमैं भोज१मार्तिक२अवदात३प्रमुख[2] महाबिख्यात राजा जानिये ॥

अरु सात्वतकै पुत्र वृष्णिकै सुमित्रो नामक पुत्र युधाजित्४६ ताकै अनुमित्रसित४७ताकै अनुमितनिघ्न४८ताकै सत्राजित४९।१ प्रसेन४९।२दोय२पुत्र भये तिनमैं सत्राजितहूकौं सूर्यके दये स्यमंतक मनिके प्रभावतैं महाश्रील[4] मानिये ॥ २९ ॥

अरु वाही वृष्णिके पौत्र अनुत्रसितकै सिनि४८ताकै सत्यक४९ताकै जुजुधान५०ताकै असंगत५१ताकै कुणि५२ताकै युगंधर ५३यहै सैनेय वंस कह्यो ॥

अरु वाही अनुमित्रसितकै वृष्णि४८भयो ताकै स्वफल्क ४९।१ चित्रक४९।२यह तनूजनको युग्म[5] लह्यो ॥

१माता की सौत [सोक] से पैदा हुए भाई २हुए ३आदि ४बड़ा धनवान् ५जोड़ा

स्वफल्कके अक्रूर५०।१ उपसंग५०।२मृदुरवस ५०।३ अरिमेजय ५०।४गिरि५०।५रक्त५०।६उपेक्ष५०।७सत्रुघ्न५०।८अरिमर्दन५०।९व मॆंधृक५०।१०वृपधर्म५०।११ गंध५०।१२ भोजबाहु ५०।१३ प्रतिबाहु ५०।१४प्रमुखं पुत्र तथा सुतारा५०।१कन्या भई ॥

अरु चित्रकके पृथु५०।१विपृथु५०।२प्रमुख त्योंही अक्रूरके देव ५१।१अनुपदेव५१।२यहे ही दायादनकी द्वैई२ ॥ ३० ॥

अरु सात्वतके छठे पुत्र अंधकके कुकुर४६।१भजमान४६।२सु-चि४६।३कंबलबर्हिष४६।४ए च्यारि४पुत्र सुनेंगये ॥

तिनमैं वडे कुकुरके वृष्णि४७ताकै कपोतरोमा४८ताकै विलोमा ४९ताकै तुंबुरुसखा भवसंज्ञ चंदनोदक दुंदुभि५०ताकै अभिजि-त पुनर्वसु ५१ताकै पुत्र आहुक५२।१कन्या बाहुकी५२।२ए दोय २संतान भये ॥

आहुकके उग्रसेन५३।१देवक५३।२द्वै२ही तनय तिनमैं वडे उ-ग्रसेनके कंस५४।१न्यग्रोध५४।२सुनामा५४।३कंक५४।४संकु५४।५ सभूमि५४।६राष्ट्रपाल५४।७युद्धसृष्टि५४।८तुष्टिमान५४।९ए नव९पु-त्र तथा कंसा५४।१कंसवती५४।२सुतनु५४।३राष्ट्रपालिका५४।४कं-का५४।५ए पंच५पुत्री भई ॥

अरु देवकके देववान५४।१उपदेव५४।२बसुदेव ५४।३ देवरक्षित ५४।४ए च्यारि४सूनु तैसैं ही वृषदेवा५४।१उपदेवा५४।२देवरक्षिता ५४।३श्रीदेवा५४।४सांतिदेवा५४।५सहदेवा५४।६देवकी५४।७सप्त ७ कन्या भई ॥३१॥

पहिलैं सात्वतको दूजो२पुत्र भजमानक कह्यो ताहीकै एक पुत्र विदूरथ भयो४६ताकै सूर४७ताकै सनि ४८ सनिकै प्रतिक्षत्र ४९ताकै स्वयंभोज५०ताकै हृदीक५१ताकै कृतवर्मा५२।१सतधन्वा ५२।२देवामीढ५२।३ताहीकों सूर५२।३हू कहै ऐसैं यह तनूजनकी

१ आदि २ भाइयों का ३ जोड़ा ४ तुंबुरु [देवयोनि विशेष] का मित्र ५ पुत्र

त्रेई३मानी ॥

तिनमैं देवामीढसौं मारिषा पत्नीमैं बसुदेव५३।१देवभाग५३।२ देवश्रिय५३।३अनावृष्टि५३।४कथक ५३।५वत्स५३।६आनंद५३।७ सृंजय५३।८समीक५३।९गंडूष५३।१०ए दस१०पुत्र अरुपृथा५३।१श्रुतदेवा५३।२श्रुतकीर्ति५३।३श्रुतश्रवा५३।४राजाधिदेवी५३।५ए पंच५ पुत्रिका भई जानी ॥

इनमैं बडी पुत्री पृथा५३।१तो पितानैं [2]असंतति अपनैं मित्र राजा कुंतिकौं संतानभूत[3] दई ॥

जाकै कन्याभावमैं दिवाँकरसौं कर्ण१भयें पीछैं यह कुरुराज पांडुनैं बिबाहि लई ॥३२॥

अरु श्रुतदेवा५३।१कारूपराज वृद्धशर्माकौं बिबाही जामैं दामोदरको द्रोही दंतबक्र भयो ॥

अरु श्रुतकीर्ति५३।१कैकेयराजकौं दई तामैं संतर्दनादिक पुत्रनके पंचक[6]५नैं जन्म लयो ॥

श्रुतश्रवा५३।४चेदिराज दमघोषकौं बिबाही तामैं सिसुपालनैं उद्गम पायो ॥

अरु राजाधिदेवी५३।५अवंतिराज जयसेनकौं परिनाई तामैं बिंद१अनुबिंद२पुत्र मिलबिंदा पुत्रिका यह संतति त्रिक ३ उद्भव लहि भयो ठायो ॥३३॥

बसुदेवसौं रोहिणीमैं बलभद्र ५४।१ सारण ५४।२ सठ ५४।३ दुर्मद ५४।४ प्रमुख मदिरामैं नंद ५४।१ उपनंद ५४।२ कृतक ५४।३ प्रमुख भद्रामैं उपनिधि ५४।१ गय ५४।२ प्रमुख ॥

---

१ तीनों का समूह २ सन्तान रहित अपने मित्र कुन्ति नाम के राजा ३ सन्तान के उचित समझकर [इसीको अपना सन्तान मानो] देदी उसके कुमारपन में ४ सूर्य से ५ कृष्ण से द्रोह करनेवाला ६ पांचों के समुदाय ने जन्म लिया यहां यह नहीं जानना चाहिये कि पांचों ने एक साथ जन्म लिया था किन्तु कैकेय राजा के पांच पुत्र हुए इसकारण पांचों का समूह कहागया है ७ जन्म लिया ८ जन्म लेकर प्रसिद्ध हुआ ९ आदि

वैशालीमैं कौशिक ५४।१ देवकीमैं कीर्तिमान ५४।१ सुसेन५४।२ भद्रसेन ५४।३ इंगुद ५४।४ सुभद्र ५४।५ विदेव ५४।६ बसुदेव५४।७ गद ५४।८ प्रमुख पुत्र सुभद्रा ५४।१ पुत्रिका इत्यादिक अनेकनमैं अनेक संतान भये ॥

अरु बलभद्रकै निषठ ५५।१ उल्मुक ५५।२ सारणाकै नार्षिमान् ५५।१ इसच्छिसु५५।२ सत्यधृति ५५।३ प्रमुख श्रीवासुदेवकै रुक्मिणीसैं प्रद्युम्न ५५।१ चारुदेष्णा५५।२प्रमुख प्रद्युम्नकै ककुद्मतीमैं अनिरुद्ध५६ तासौं भद्रामैं बज्र५७ ताकै प्रतिबाहु५८ ताकै सुचारु ५९ ऐसैं अनेक संततिके प्रयुतन[1] प्रस्तार[2][3] गये ॥

या जदुकुलके कुलनकी हू संख्याको गनिबो गणकराजनकै सिंहके बृहस्पतिको बिबाह भयो जात[4] ॥

अरु तीन खर्व अष्ट सहस्र अष्ट सत ३०००००००८८०० प्रमित[5] जिनके अध्यापक[6] भये ख्यात[7] ॥ ३४ ॥

ऐसैं मगधराजके पुरोहितनैं चंद्रवंसमैं जदुबंस कहि जजातिके दूजे पुत्र तुर्वसुको बंस कह्यो ॥

तुर्वसुकै पुत्र वन्हि१०ताकै भर्ग११ताकै भानु१२तासौं चित्रभानु१३ताकै करंधम१४ताकै मरुत्त१५भयो जानैं संततिकै[8] अभाव करि पुरूके ही कुलमैं अंतर्भाव लह्यो[9] ॥

तीजे३पुत्र द्रुह्युकै बभ्रु१०ताकै सेतु११तासौं आरब्ध१२ताकै गांधार१३तासौं धर्म१४ताकै घृत१५तासौं दुर्मद१६ताकै प्रचेता१७जाकी संततिनैं अधर्मके आचरनतैं उदीचीको[10] आधिपत्य[11] लहि म्लेच्छभाव पायो ॥

१श्रीकृष्णके २ दश लाख को प्रयुत कहते हैं ऐसे अनेक प्रयुत ३ फैल गये ४ ज्योतिषियों के सिंह राशि पर स्थित बृहस्पति के विवाह के समान हो गया अर्थात् सिंहस्थ में विवाह होते ही नहीं इसीमाफिक यदुवंश की गणना भी नहीं होसकी ५ प्रमाण से ६ पढानेवाले ७ प्रसिद्ध हुए ८ सन्तान नहीं होने के कारण पुरु के कुल में ही ९ मिल गया १० उत्तर दिशा का ११ स्वामी होकर म्लेच्छ (नीचजाति) होगया

अरु चोथें ४ पुत्र अनुकै सभानर १०।१ चक्षु१०।२ परमेक्षु१०।३ तीन ३ तनय तिनमैं बडे सभानरकै कालनर ११ तासौं सृंजय १२ ताकै पुरंजय १३ ताकै जनमेजय १४ तासौं महासाल १५ ताकै महामना १६ तासौं उसीनर १७।१ तितिक्षु१७।२ यह अंगजनको उभय २ मागधननैं गायो ॥ ३५ ॥

उसीनरकै सिवि १८।१ नृग १८।२ नष्ट १८।३ कृमि १८।४ बर्चस्वी १८।५ पंच ५ पुत्र भये ॥

तिनमैं बडे महाउदार सिविकै वृषदर्भ १९।१ सुवीर १९।२ कैकेय १९।३ मद्रज १९।४ च्यारि ४ ही आत्मजे ठये ॥

उसीनरके अनुज तितिक्षुकै उपद्रथ १८ ताकै हेम १९ तासौं सुतपा २० ताकै बलि २१ जाके क्षेत्रमैं दीर्घतमासौं अंग २२।१ वंग २२।२ कलिंग २२।३ पुंड्र २२।४ सुम्मह २२।५ यह पुत्रनको पंचक ५ जानिये ॥

तिनमैं अंगके अयोन्य २३ ताकै दिविरथ २४ तासौं धर्मरथ २५ ताकै चित्ररथ रोमपाद २६ ताकै चतुरंग २७ तासौं पृथुलक्ष २८ताकै चंपापुरीको निर्माता चंप २९ मानिये ॥ ३६ ॥

चंपकै उयंग३०ताकै भद्ररथ३१ताकै वृहद्रथ३२।१वृहत्कर्मा३२।२ दोय२पुत्र जन्म लह्यो ॥

वृहत्कर्माकै वृहद्भानु३३ताकै वृहन्मना३४तासौं जयद्रथ३५ताकै द्विज१राजन्य२वर्णके अंतराल सूतोपनामक विजय३६ताकै धृति३७तासौं धृतव्रत३८ताकै सत्यकर्मा३९तासौं अधिरथ४०जानैं देवनदीतैं मंजुषा निकारि कर्ण४१सो पुत्र पायो कर्णके वृखसेन४२

१ पुत्रों के इस जोड़े का होना २ भाट लोगों ने कहा है ३ पुत्र हुए. बलि नामक राजा की ४ राणी में दीर्घतमा नामक मुनि से ५रचनेवाला ६ ब्राह्मण और क्षत्रिय ७ वर्ण के ८ बीच में ९ सूत (ब्राह्मणी स्त्री में क्षत्रिय के वीर्य से पैदा होवे उसको सूत कहते हैं) उपनामक१०गंगा नदी से११मंजूस [सन्दूक] निकाल कर

प्रमुख पुत्र ऐसैं अनुक्रोहु अन्ववाय कह्यो ॥

जजातिके पंचम५पुत्र पुरूकै जनमेजय१०ताकै प्रचिन्वान्११ तासौं प्रवीर१२ताकै मनस्यु१३तासौं अभयद१४ताकै सुद्युम्न१५तासौं बहुगव१६ताकै संयाति१७तासौं अहंयाति१८ताकै रौद्राश्व१९ तासौं ऋतेयु२०।१अनिलेयु२०।२कृतेयु२०।३कक्षेयु२०।४स्थंडिलेयु २०।५धृतेयु२०।६स्थलेयु२०।७धर्मेयु२०।८संप्रतेयु२०।९वनेयु२०।१० इन दस१०राजकुमारन माताकौं सपुत्रा कीनी ॥

तिनमैं बडेऋतेयुकै रंतिनार२१ताकै पुत्र अप्रतिरथ२२।१ध्रुव२२।२ या अंगज उभय२मैं अप्रतिरथकै कण्व२३तासौं विधातिथि२४जहाँसौं काण्वायन विप्रहोय प्रतिग्रह१जाजन२अध्यापन३सहित छ६ कर्म वृत्ति लीनी ॥ ३७ ॥

अरु अनिलेयु आकरसौं दुक्खंत२१आदि च्यारि४रत्न प्रकटे तिनमैं दुक्खंतसौं सकुंतला अधर अरणीमैं अहित हव्यको आहारक चक्रवर्ती नरेस भरत२२दीप्यमान भयो ॥

ताकै नव९पुत्र भये तिनकौं अपनैं अनुरूप न देखि जनकनैं कुपुत्र कहे तब उनकी जननिनैं सबनहीकौं मारि पोतनको पाप लयो ॥

तदनंतर भरतनैं पुत्रकामना करि मरुत्सोमसत्र कीनौं तहाँ पहिलैं वृहस्पतिसौं अग्रज उतत्थ्यकी अंगना ममतामैं आग्रह करि उपज्यो ज्यो भारद्वाज ताकौं मरुतदेवनैं भरतकौं संतानभूत करि

१आदि २वंश ३इन दोनों पुत्रों में ४दान लेना ५यज्ञ कराना ६वेद पढाना ७छः कर्म [यज्ञ करना, यज्ञ कराना, वेद पढाना, दान देना और दान लेना] अनलेयु रूपी ८खान से ९दुष्यन्त आदि चार रत्न प्रकटे तिनमें दुष्यन्त से शकुन्तला की १०योनि रूपी अरणी में १२ होम के पदार्थ रूपी ११शत्रुओं को १३खानेवाला (अग्नि) चक्रवर्ती राजा भरत प्रकाशित हुआ १४अपने सदृश नहीं देख कर १५पिता ने १६ वालकों का पाप लिया १७ जिस पीछे भरत ने पुत्र होने की कामना से १८ मरुद्देवों के अर्थ १९ सोमयज्ञ किया तब वृहस्पति के बडे भाई उतत्थ्य की ममता नामक २० स्त्री में पैदा हुए भरद्वाज को मरुत्देवों ने २१ सन्तान

भ्रप्यो तानैं वितथ२३नाम पायो॥

वितथकै भवमन्न्यु२४ताकै वृहत्क्षेत्र२५।१महाबीर्य२५।२आनर२५।३गर्ग२५।४यह पुत्र चतुष्क४प्रादुर्भाव लायो ॥ ३८ ॥

इन च्यारि४नमैं आनरकै तो स्वयंगुरुधी २६।१रंतिदेव२६।२द्वै२ ही सुनैं रु छोटे गर्गके सिनि२६पुत्र भयो जहाँ तैं गर्गकेहू कुलके सबननैं विप्र होय गार्ग्यसैन्य अैसो उपटंकै धार्यो ॥

अरु वितथकै दूजे२पुत्र महाबीर्यकै उरुक्षय२५ताकै त्रय्यारुणि२६।१पुष्करिणि२६।२कपि२६।३ए तीन३तनय भये तिनहू विप्र होय राजन्यधर्म बिसार्यो ॥

बडे वृहत्क्षत्रकै सहोत्र२६ताकै हस्तिनामपुरको निर्माता हस्ती२७ नाम पुत्र जान्यौं ॥

अरु ताकै अजमीढ २८।१ द्वयमीढ २८।२ उरमीढ२८।३यह तनयनको त्रितय ३बखान्यौं ॥ ३९ ॥

इनमैं बडे अजमीढके कंठ २९।१ वृहदिषु २९।२ नील २९।३ ऋक्ष २९।४ प्रमुख पुत्रनमैं जेठे कंठके तो कांठायन द्विज भये रु वृहदिषुकै वृहद्धनु ३० तासौं वृहत्कर्मा ३१ ताकै जयद्रथ ३२ तासौं बिश्वजित ३३ ताकै श्वेताजिह्व ३४ तासौं श्येनजित३५।१ चिरांसुक ३५।२ अंकस्पद ३५।३ दृढधनु ३५।४वत्स ३५।५तिनमैं श्येनजितके रुचिरांचक ३६।१ पृथुसेन ३६।२ इनमैं अनुजनकै पार ३७ तासौं नीर ३८ ताकै सत १०० पुत्र तिनमैं कांपिल्यराज ३९ समरप्रधान ॥

अरु समरकै पार ४०।१ सुपार ४०।२ सदश्व४०।३ तीन ही तनय नयनिधानैं ॥

इनमैं पारसौं पृथु ४१ ताकै सुकृति४२ तासौं बिभ्राज४३ताकै अणुह ४४ तासौं व्यासावतारके तनय शुक मुनिकी तनया की

रूप दिया १ जन्म लिया २ पदवी (खिताब) ३ क्षत्रियों के धर्म को छोड़ दिया ४ रचनेवाला ५ आदि६बडे७नीति ही है धन जिनके८वेदव्यास के पुत्र

जो रानी तामैं तनूज ब्रह्मदत्त ४५ भयो ॥

तासौं भल्वाट४६ताकै द्विढ४७तासौं यवीनर ४८ताकै धृतिमान ४९तासौं सत्यधृति५०ताकै दृढनेमि५१तासौं सुपार्श्व५२तासौं सुमति ५३तासौं सन्नतिमान५४ताकै पुत्र कृत५५जानैं हिरण्यगर्भसौं जोगलयो।

या कृतकै उग्रायुध५६ताकै क्षेम५७तासौं सुबीर५८ताकै रिपुंजय५९तासौं बहुरथ६०नाम तनय जाते² ॥

अरु हस्तीके पुत्र अजमीढकै नीलिनी नाम रानीमैं भयो जो नील२९।३ताकै पुत्र सुसांति३०तासौं पुरुजानु३१ताकै चक्षु३२तासौं हर्यश्व३३ताकै मुद्गल३४।१शृंजय३४।२वृहदिषु३४।३यवीनर ३४।४कंपिल्य३४।५ए पंच५पुत्र भये तिनहींतैं पांचालदेस जानौं ख्यात ॥

इनमैं मुद्गलकै कोउक संतानके तो पाँचाल मौद्गल्य उपनामक विप्र भये ॥

त्यौंही मुद्गलकै अपर⁴ पुत्र दृढाश्व३५ताकै पुत्र दिवोदास ३६कन्या अहल्या३६ए दोय२ठये ॥ ४१ ॥

या अहल्यामैं तो सुरथसौं सूनु⁵ सतानंद१तासौं धनुर्वेदको पारंगत⁶ सतधृति२भयो जाको सुक्र⁷ उर्बसीकौं देखतही स्कन्न⁸ होय तेजनके⁹ तंबनमैं¹⁰ द्विधाभूत¹¹ पर्यो ॥

तासौं कृपाचार्य३।१तथा कृपी३।२यह युग्म२भयो जाकौं सिकारके समय राजा संतनु देखि अपनैं पुर लाय पोखित कर्‌यो॥

अरु दृढाश्वको पुत्र जो दियोदास३६ताकै मित्रायु तासौं च्यवन३७ताकै सुदास३८तासौं सहदेव३९ताकै सोमक४०तासौं जंतु४१ प्रमुख¹² सत१००पुत्र भये तिनमैं छोटो वृषभ४१ ताकै द्रुपद४२ताकै धृष्टद्युम्न४३तासौं धृतकेतु४४ऐसैं नीलको वंस कह्यो ॥

शुकदेव की पुत्री १ अन्ना से २ जन्मे ३ पन्जाब देश प्रसिद्ध हुआ ४ दूसरा पुत्र ५ पुत्र ६ धनुर्वेद के पार जानेवाला अर्थात् सम्पूर्ण जाननेवाला ७ वीर्य ८ गलित (झर कर) होकर ९ बांस के १० वृत्तों (बड़े) में ११ दो टुकड़े होकर गिरा १२ आदि

अरु अजमीढको चोथो४पुत्र जो ऋक्ष ताकै संबरण३०ताकै रानी तपनकी[1] तनया[2] जो तपती तामैं कुरुक्षेत्रके प्रबर्तक कुरु३१नाम पुत्रनैं जन्म लह्यो ॥ ४२ ॥

राजा कुरुके सुधनु३२।१जन्हु३२।२परीक्षित३२।३प्रमुख[3] पुत्रनमैं सुधनुकै सुहोत्र३३ताकै च्यवन३४तासौं कृत३५ताकै परिवसु३६तासौं वृहद्रथ३७।१प्रत्यग्र३७।२संचल३७।३कुस३७।४ऋषभ३७।५बेल्य-३७।६मत्स्य३७।७प्रमुख पुत्र जानिये ॥

तिनमैं बडे वृहद्रथके कुसाग्र३८।१जरासंध३८।२उभय२अंगजनमैं कुसाग्रकै वृषभ३९ताकै पुष्पवान४०तासौं सत्यहित४१ताकै सुधन्वा४२तासौं जतु४३ग्रैसैंही जरासंधकै सहदेव३९ताकै सोमावि४० तासौं श्रुतश्रवा४१सोही सुभवानू४१ताकै अयुतायु४२तासौं निरमित्र४३ताकै स्वक्ष४४तासौं वृहत्कर्मा४५तासौं सेनाजित्४६तासौं श्रुतंजय ४७ ताकै बिप्र ४८ ताकै सुचि ४९ ताकै क्षैम्य५० ताकै मनौं आपहीकौं भावी[4] जामाता[5] जानि प्रीतिपरायन चातुर्भुज[6] गोगके सहाय समर्थ सुब्रत ५१ तासौं धर्म ५२ ताकै सुश्रम ५३ तासौं दृढासन५४ ताकै सुमति५५ तासौं सबल५६ तासौं सुनीत ५७ ताकै सत्याजित ५८ तासौं विश्वजित ५९ ताकै रावरो स्वसुर[7] यह राजा रिपुंजय ६० मानिये ॥

अरु कुरुके तीजे३पुत्र परीक्षितके जनमेजय३३।१श्रुतसेन३३।२ भीमसेन३३।३उग्रसेन३३।४च्यार४ही पुत्रनके जुदे बंस भये॥

अरु कुरु सुत जन्हुकै सुरथ३३ताकै विदूरथ३४तासौं सार्वभौम ३५ताकै जयसेन३६तासौं अर्वाचीन३७ताकै आयु३८आयुसौं अक्रोधन३९तासौं देवातिथि४०ताकै ऋक्ष४१तासौं भीमसेन४२ताकै दिलीप४३तासौं प्रतीप४४ताकै देवापि४५।१संतनु४५।२बाल्हीक

१ सूर्य की २ पुत्री ३ आदि पुत्रों में ४ होनेवाला ५ जमाई ६ चहुवाण ७ दहरदेव नामक चहुवाण से विश्वजित् का पुरोहित कहता है कि सत्यजित् के यह आपका सुसर विश्वजित् है.

४५।३नामक तीन३ही तनुज ठये ॥ ४३ ॥

इनमैं बडे देवापिनैं तो अल्पही अवस्थामैं जोगको अभ्यास धारि कलाप ग्राममैं जाय निवास कीनौं

अरु जा[3] जा वृक्षकौं स्पर्श करै सो सो ही जुव्वन लहै अैसो जो मध्यम पुत्र संतनुनैं हस्तिनापुरको राज्य लीनौं ॥

छोटे बाल्हीकके सूनु सोमदत्त४६ताकै भूरिश्रवा ४७।१भूरिश्रव ४७।२सल४७।३तीन३ही तनूजन ख्याति पाई ॥

अरु संतनुकै गंगामैं बसुदेवनके अवतार अष्ट८पुत्र भये तिनमैं बडेसात७ सोदरन[6] बालही अवस्थामैं तनू बिहाई ॥ ४४ ॥

अरु अष्टम८पुत्र महापराक्रमी देवव्रत४६रह्यो जानैं गंगाके प्रस्थानके अनंतर पिताके अर्थ राज्यकौं बिहाय ब्रह्मचर्य लैकै भीष्म नाम कहाय धीवरनैं[11] पोखी अैसी उपरिचरकी[12] कन्या व्यासकी माता सत्यवती आनी ॥

तामैं संतनुसौं चित्रांगद४६।१विचित्रबीर्य४६।२दोहू२पुत्र भये समर मानी ॥

बडो चित्रांगद तो निज[13] नाम गंधर्वसौं मर्‍यो तब अनुज[14] अवनीस भयो ताकौं देवव्रतनैं[15] कासिराजकी कन्या अंबिका१अंबालिका२आनि बिवाही ॥

तिनमैं अति आसक्त होय यानैं अंग तज्यो तब सत्यवतीके

---

१ पुत्र हुए २ छोटी अवस्था में ३ जिस जिस वृक्ष को स्पर्श करैं वह वह ४ जोबन लेवें (युवा) होजावें ऐसा जो शन्तनु उसने हस्तिनापुर का राज्य लिया ५ प्रसिद्ध हुए ६ एक उदर से पैदा होनेवाले भाइयों ने बालक अवस्था में ही ७ शरीर छोडे और आठवां बडा पराक्रमी पुत्र देवव्रत रहा जिसने शन्तनु के घर से गंगा के ८ चले गये ९ पीछे पिता के लिये राज्य को १० छोड कर ब्रह्मचर्य लेकर भीष्म नाम कहला कर १२ वसु (देवयोनि विशेष) जो विमानों में बैठ कर ऊपर ही ऊपर भ्रमण किया करते हैं उसकी कन्या जिस को ११ धीवर (नाव चलानेवाले) ने पाली जिसके कन्यापन में वेदव्यास पैदा हुए थे उस कन्या को शन्तनु के लिये आनी १३ अपने नाम (चित्रांगद) नाम वाले गन्धर्व से मारा गया और १४ छोटा भाई राजा हुआ जिसको १५ भीष्म,

निदेससौं द्वैपायननैं विचित्रवीर्यके छेत्रनमैं धृतराष्ट्र ४७।१ पांडु ४७।२ जुग२पुत्र जनैं तिनकी संतति सुनिये जो सूरिनन सिराही ॥ ४५ ॥

धृतराष्ट्रसौं सुबलसुतामैं दुर्योधन४८प्रमुख सत १०० पुत्र तथा दुस्सला१कन्या भई ॥

दुर्योधनसौं भानुमतीमैं लक्ष्मण४९प्रमुख पुत्र लक्ष्मणा१कन्या इते भये तिनमैं भँगिनी जो दुस्सला ताकौं सिंधुराज वृद्धद्रथ कुमार जयद्रथकौं विवाहि पुत्री लक्ष्मणाकौं गदाधरके पुत्र सांबकौं बिवाहि दई ॥

पांडुके छेत्रनमैं धर्म१वात२वासव३दस्र २।४नतैं जुधिष्टिर ४८।१ भीम४८।२अर्जुन४८।३नकुल४८।४सहदेव४८।५पंच५पुत्र भये ॥

तिनमैं जुधिष्टिरसौं द्रौपदीमैं प्रतिविंध्य४९।१यौधेयीमैं देवक४९।२इत्यादि पुत्र ठये ॥४६॥

भीमसौं द्रौपदीमैं श्रुतसोम४९।१हिडंबामैं घटोत्कच४९।२

किरीटीसौं कृष्णामैं श्रुतकीर्ति४९।१उलूपीमैं इरावान्४९।२चित्रांगदामैं बभ्रुवाहन४९।३सुभद्रामैं अभिमन्न्यु ४९।४पुत्र जानिये ॥

अरु नकुलसौं नित्यंयौवनामैं सतानीक४९।१करेणुमतीमैं निरमित्र४९।२सहदेवसौं सैर १६ ध्रीमैं श्रुतकर्मा ४९।१जयामैं सुहोत्र ४९।२इत्यादि पांडवनके पुत्र मानिये ॥

अभिमन्न्युकै उत्तरामैं पुत्र बिष्णुरात५०ताकै जनमेजय ५१।१ श्रुतसेन ५१।२ भीमसेन ५१।३ उग्रसेन५१।४यह पुत्रनको चतुष्क ४कह्यो ॥

अरु जनमेजयकै सतानीक५२ताकै अश्वमेधदत्त५३तासौं

१ सत्यवती की आज्ञा से २ वेदव्यास से विचित्रवीर्य की राणियों ने धृतराष्ट्र और पांडु दो पुत्र जने जिनकी ३ सन्तान सुनो. जिनकी ४ पंडितों ने प्रशंसा की है ॥ ४ ॥ ५ सुबल नामक राजा की पुत्री (गान्धारी) में ६ आदि ७ बहिन ८ सिन्धु देश के राजा ९ श्रीकृष्ण के पुत्र. पांडु की राणियों में धर्मराज १० पवन ११ इन्द्र १२ अश्विनीकुमारों से पुत्र १३ अर्जुन से १४ द्रौपदी में १५ द्रौपदी में १६ द्रौपदी में १७ परीक्षित.

अधिसीमकृष्ण५४ताकै बिवक्षु५५जानैं कौसांबीमैं जाय निवास ल ह्यो ॥४७॥

१बबत्तुकै ऊष्ण५६ताकै चित्ररथ५७ताकै सुचिरथ५८तासौं परि म्लुच५९तासौं सुनय६०तासौं मेधावि६१ताकै नृपंजय६२जो चंडा- सिराज गोगके सहाय यवनेंद्र अबूफरके चमूपतिकौं मारि सूरधर्म को प्राप्त भयो तासौं ऊर्व६३ताकै तिग्म६४तासौं वृहद्रथ६५तासौं वसुदान ६६ ताकै सतानीक ६७ताकै उदयन६८तासौं अहीनर६९ ताकै दंडपाणि७०ताकै पुत्र निरमित्र७१जो क्षेमक७२कुमारसहित कौसांबीमैं विद्यमान कहिये ॥

ऐसे पाइंदुकेअन्ववाय आकरमैं रत्नभूत जो मगधराज रिपुंजयकी सुताडुलहीसिसुप्रभासहितचंडासिराजदुल्लहहरदेव६४चिरजीवीरहिये

ऐसैं सप्त७पदीके पूर्व ससिकुलके सगोत्र सुनाय मगधेसनैं नरे स हरदेवकौं ससिप्रभा६४।१बिबाहि सीख दई ॥

ऐसैं रावराजेंद्र चंडासिराज हरदेवलौं अनलके अन्ववायकी कला६४प्रमित पीढि भई ॥ ४८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीति- होत्रचण्डासिबंशवर्णने शुभकर्ण५५कनकलतो५५।१दयकर्ण५६ धन्या५६।१यशःकर्ण५७सुमनो५७।१हरिकर्ण५८विशरा५८।१कीर्ति श५९सती५९।१बालकृष्ण६०रेणुका६०।१हरिकृष्ण६१रति६१।१ रामकृष्ण६२श्यामा६२।१वलदेव६३यमुना६३।१हरदेव६४शशिप्रभो २४।१द्वेशनचरमदम्पति२परिणायनसमयचन्द्रबंशसमाससूचनं पञ्चात्रिं

१ चहुवाण राजा२मौजूद३चन्द्र वंश रूपी खान में फेरा(विवाह के समय अग्नि की प्रदक्षिणा)फिरने से पहिले५चन्द्रवंश के ४सगोत्र सुना कर६अग्नि७वंश की चौसठ पीढी हुई ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में चहुवाण वंश वर्णन में शुभकरण-कनकलता, उदयकर्ण-धन्या, यशकर्ण-सुमना, हरिकर्ण-विसरा, कीर्तीश-सती, बालकृष्ण-रेणुका, हरिकृष्ण-रति, रामकृष्ण-श्यामा, बलदेव-य मुना, हरदेव-शशिप्रभा के कथन से अन्तिम स्त्री पुरुष के विवाह समय में

शत्तमो३५मयूखः ॥ ३५ ॥ आदितः सप्तसप्ततितमः ॥ ७७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पज्झटिका

मगधेस रिपुंजय नाम भूप, हरदेव६४स्वसुर जो यहँ अनूप ॥
अभिधा मुनिक्य हुव सचिव तास, तिहिँ करि नरेस मागध विनास
प्रद्योतन नाम जु अप्पपुत्त, धरि सो दयोहि तस तख्त धुत्त ॥
पटना१रु देवगिरि२दुर्ग पाय, सब नृपन भयो जेता स्वभाय ॥ २ ॥
रघुकुल प्रसेनजित प्रमुख राज, सब हारि थके लरि लरि समाज॥
हरदेव६४इत सु चहुवान नाह, बन तजिय देह रहि जोग राह ॥ ३ ॥
हुवभीम६५तनय ताकै उदार, कविकुमुदचंद्र दुख दलनहार ॥
गांधारराज वसुमित्र गेह, तिहिँ काल सुता निधि ललित लेह ॥४॥
वसु६५।१नाम जुवतिजनभाललाल, दृग कंज कलित पम्हलअराल
परनी सु भीम६५चहुवान नाथ, सझिय स्वधर्म सुभ जुगलसाथ ॥५॥
प्रद्योतन मागध समय पाय, लिन्नौं विदर्भ नृपतैं छुराय ॥
तिहिँ जंग मरिय करनाटराज, व्है हेतिपूत लिय सुर समाज ॥ ६ ॥

संक्षेप से चंन्द्रवंश की सूचना करने का पैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३५॥ और आदि से सतत्तर मयूख हुए ॥ ७७ ॥

हरदेव चहुवाण का स्वशुर मगधदेश का राजा रिपुंजय उपमा रहित था उसके मुनिक्य नामक कामदार (मन्त्री) ने उस राजा को मार डाला उस धूर्त कामदार ने अपने पुत्र प्रद्योतन को उस राजा के तख्त पर बिठा दिया जो सब राजाओं को जीतनेवाला हुआ ॥ १ ॥ २ ॥१आदि ॥ ३ ॥ २ कवि रूपी कुमोदनी (रात्रि विकाशी कमलों) का दुःख मेटनेवाला चन्द्रमा ३ सुन्दर लेख से निधि रूपी पुत्री हुई ॥ ४ ॥ उसका नाम वसु था वह अन्य स्त्रियों के ललाट का लाल (टीका अथवा लाल नामक रत्न) था जिसने कमल के समान नेत्र पाये और पक्ष्मल(कटाक्ष)टेडे पाये अर्थात् टेडे कटाक्षवाली अथवा टेडे भौंहवाली, उसको भीम चहुवाण ने परनी ४ जोड़ा सहित ॥ ५ ॥ प्रद्योतन नामक मगधदेश के राजा ने समय पाकर विदर्भ के राजा से विदर्भ देश छुडा लिया उस युद्ध में शस्त्रों से पवित्र होकर भीम ने देवताओं का समाज लिया [मारा गया] ॥ ६ ॥

सहदेव६६भीमसुत हुव सुपुत्र, नय१धर्म२वेद३गो४द्विज५तनुत्र ॥
नृप चेदिराज दृढरथ सनाम, तनया पृथा६६।१सु परन्यौं ललाम ।७।
सहदेव तनय हुव रामदेव६७, कर्मनैत कर्मन छबि कामदेव ॥
नेपालराज सुव्रत निकेत, तुंगा६७।१सुता सु परन्यौं सुचेत ॥ ८ ॥
सहजा६७।१हु अपर अभिधान तास, बसुदेव६८भूप हुव जठर जास॥
विद्याबिनोद१रन२सूरि१सूर२,पानिप रजपूती उदधि पूर ॥ ९ ॥
कुंडक नृप रघुकुल कोसलेस, बेला६८।१तदीय तनया सुबेस
बसुदेव६८बिबाहन ताहि तत्त, साकेत नगर बर बिहित पत्त ॥१०॥
वंदन नीराजन बिधि बनाय, पबिसायउ मंडप लग्न पाय ॥
नृप स्वपुर पुरोहित उचित काल, तँहँ तपन बंस बरनिय बिसाल ॥

(अथ सूर्यबंशोद्देशनम् ॥)

हुव बिष्णुनाभि सन वारिजात, तासौं हुव धाता१सर्ग तात ॥
विधिके मरीचि२कश्यप३तदीय, रवि४अदिति जन्यौं तिन सौं गरीय
वैबस्वत५मनु रबिसुत प्रवीर, नव९तनय तास हुव धर्मधीर ॥
इक्ष्वाकु६।१तथामगधिष्ट२जानि, सर्याति३नरिष्यंत६।४हु बखानि।
नाभाग६५वहुरि वृषकेतु६नाम, दिष्ट७रु करूष८रु प्रषध्र६।९ताम॥
सुत काम रचिय मनु वहुरि सत्र, होता मिलाय नृपनारि तत्र।१४।

१कवच२बाण विद्या का जाननेवाला३सुन्दर४सुव्रत के घर में।८।५दूसरा नाम६ उदर से७विद्या विनोद में पंडित और रण में शूर८रजपूती के पराक्रम में पूर्ण समुद्र ॥९॥ कुंडक नामक रघुवंशी अयोध्या का राजा जिसकी बेला नामक सुन्दर पुत्री को व्याहने के लिये वसुदेव चहुवान उचित वर होकर अयोध्या में पहुँचा ॥ १० ॥ नम्रता पूर्वक आरती करके लग्न के समय मंडप में प्रवेश कराया और कुंडक राजा के पुर के पुरोहित ने उचित समय पाकर वहां पर सूर्य वंश का वर्णन किया ॥ ११ ॥ अब सूर्यवंश का कथन है॥ विष्णु की नाभि से कमल हुआ. उस कमल से सृष्टि के पिता ब्रह्मा हुए, ब्रह्मा के मरीचि और उनके कश्यप हुए उन कश्यप से अदिति ने कश्यप से भी पूज्य सूर्य जना ॥ १ ॥ सूर्य का पुत्र वैवस्वतमनु हुआ जिसके धर्म को धारण करनेवाले नव पुत्र हुए ॥ १३ ॥ तहां मनुने पुत्र कामना से यज्ञ रचा जहां होता को मिला कर राजा [मनु] की राणी ने ॥ १४ ॥ कहा कि हे ब्राह्मण

इम कहिय चाह मम चित्त एहु, द्विजराज अप्प दुहिता हु देहु ॥
तब हुव सुताहि होता प्रभाव, अभिधान इला६।१०सविनय स्वभाव
पुनि मित्रावरुन कृपानुसार, सुद्युम्न६।१०नाम सुहि हुव कुमार ॥
गो कबहु इलावृत भर्ग गेह, भो नारि अपर्णा साप एह ॥ १६ ॥
पहिलैं सनकादिक सुनन ज्ञान, आये गिरीस पँहँ मोदमान ॥
तँहँ संभु१सिवा२विरचित व्यवाय, यह लखि मुररे मुनि दृग दुराय
अंबाहु भई लज्जित अमाप, सामान्य भयो इम तबहि साप ॥
आवैं जु इलावृत माँहिँ कोउ, अबसौं तजि पोरुख नारि होहु ॥
इहिँ साप भई वह भुव अगम्य, सुज्जुग्ण६।१०गयो तँहँ रमत रम्य॥
तिय अप्प भो रु बडवा तुरंग, ससिसुत लखि लैगो ताहि संग ।१९।
तामाँहिँ रुचिर बुधसौं तनूज, प्रकट्यो पुरूरवा प्राप्तपूज ॥
मनु५जानि यहै मुनि मत मिलाय,करि सत्र किय सु पुनिपुरुखकाय
पुर ताहि प्रतिष्ठानाभिधान, थिर दिय वैवस्वत रहन थान ॥

आप मुझे एक पुत्री भी दो तब उस होता [होम करनेवाले] के प्रभाव से इला नामक नम्र स्वभाववाली कन्या हुई ॥ १५ ॥ फिर मित्रावरुण की कृपा से सुद्युम्न नामक कुमार हुआ. वह कभी इलावृत खंड में महादेव के स्थान पर गया सो पार्वती के श्राप से स्त्री होगया ॥ १६ ॥ अब उस श्राप का कारण बताते हैं कि पहिले कभी ज्ञान सुनने के लिये सनकादिक मुनि हर्ष मानकर महादेव के पास आये जहां महादेव और पार्वती मैथुन कररहे थे जिनको देख कर वे मुनि नेत्र बंध करके पीछे फिर गये ॥ १७ ॥ पार्वती भी बहुत लज्जित हुई तब सब के लिये श्रापहुआ कि अब से जो कोई इलावृत्त खंड में आवेगा वह पुरुषपन को छोड कर स्त्री होवेगा ॥ १८ ॥ इस श्राप के कारण वह भूमि नहीं जाने योग्य होगई, उस सुन्दर स्थल में रमता हुआ सुद्युम्न भी चला गया सो आप तो स्त्री हो गया और सवारी का घोड़ा था सो घोड़ी होगई, उस स्त्री को चन्द्रमा का पुत्र (बुध) लेगया ॥ १९ ॥ उस स्त्री में बुध से सुन्दर पुत्र पुरूरवा पूजा के योग्य प्रकट हुआ , सुद्युम्न के स्त्री होने की वार्ता जानकर मनु ने मुनियों की सलाह लेकर यज्ञ करके उसको पीछा पुरुष करलिया ॥ २० ॥ उसको प्रतिष्ठान नामक पुर वैवस्वत ने दिया , सुद्युम्न के तीन पुत्र प्रवीर हुए तोभी है

ताके उत्कल७१गय२बिनत७३तीन३, वसुदेव सुनहु सुतहुवप्रवीन
यानैं तथापि वह पुर अधीन, निज औरस बुधसुतकौंहि दीन ॥
मनुसुत पृषध्र६१०हुव जो कनिष्ट, गो पालन पठयो गुरु वसिष्ट ।२२।
गोवाट माँहिं निस कहुँ मृगारि, आयो लखि झारिय सु तरवारि॥
अति कुहर नखायुध दिय चुकाय, गुरुकौंहि हनी लहि नियति गाय॥
मारी न जदपि मति चहि कुमार, भो तदपि सूद्र गुरु साप भार ॥
मनुसुत करूषके अन्ववाय, कारूष सकल रविकुल कहाय ।२४।
मनुपुत्र दिष्टकै हुव कुमार, नाभाग७नाम अतिबल उदार ॥
लखि चैत्र२ बनिक तनया ललाम, भो कामबिवस तिहिं करन भाम॥
जच्ची सु जनक पैंहँ कुमर जाय, कर जोरि चैत्र आक्खिय उपाय॥
हम बनिक तुमहिं कर३ दैनहार, संबंध तुल्य ठहै सोहि सार ॥२६॥
नृपकौं हम पुच्छत जो निदेस४, करिहैं सु करहिं नय५ उचित एस ॥
आक्खिय नृप दिष्टहिं बनिक बत्त, नाभाग सुता मम चहत रत्त ।२७।
नृप तब ऋचीक मुख६ मुनि बुलाय,बुल्लिय समुझावहु सुतहि न्याय॥
तब मुनिन कहिय श्रुति७रीति ताहि,अभिसिक्त८सुता पहिलैं बिबाहि॥
पुनि चैत्र सुता व्याहहु प्रबुद्ध,इम करहु धर्म ठहै नहिं असुद्ध ॥

वसुदेव चहुवान आप सुनो कि॥२१॥तोभी सुद्युम्न ने अपने उदर से जो बुध का पुत्र हुआ उसीको प्रतिष्ठान पुर दिया. छोटा हुआ उसको वसिष्ठ मुनि ने आपनी गौ की पालना करने को भेजा ॥२२॥ किसी समय रात्रि में गउवों के बाड़े में सिंह आया जिसको देख कर पृषध्र ने तलवार मारी सो अत्यन्त अन्धेरे में सिंह ने चुका दी और दैवयोग से वसिष्ठ की गाय को ही मारी ॥ २३ ॥ कुमार ने अपनी बुद्धि से उसको नहीं मारी तोभी गुरु के भारी श्राप से वह शूद्र होगया १ वंश ॥ २४ ॥ २चैत्र नामक बनिये की पुत्री को सुन्दर देख कर अपनी स्त्री करने के लिये ॥ २५ ॥ कुमार ने उस कन्या के पिता के पास जाकर उसको मांगी ३आपको हासिल देनेवाले हैं बराबरवालों में संबंध होवे सो ही अच्छा है ॥ २६ ॥४ आज्ञा ५ यही उचित नीति है , बनिये ने दिष्ट नामक राजा से जाकर कहा कि आपका पुत्र नाभाग मेरी पुत्री को प्रति पूर्वक चाहता है।२७।६आदि७वेद की रीति से कहा कि पहिले८राजा की कन्या को व्याह कर ॥ २८ ॥ हे बुद्धिमान पीछे

नाभाग सु सुनि मुनि बचं निवारि,लै ताहि सज्ज हुव रचन रारि।२९।
किय बनिकं दिष्टपैं तब पुकार, गो भूप लरन पकरन कुमार ॥
नाभागकलहकियतुमुलतत्थ,सबजनंककटकमारिय समत्थ॥३०॥
दिष्टहिँ हुव संसय विजय माँहिं,पुनि कहिय नृपहिं रन बिहितं नाँहिँ॥
हुव वनिककुमर दर्पकं अधीन, तासौं न लरहु समता विहीन।३१।
असवर्णा सुता पहिलैं बिबाहि, ताकोहि वर्ण बर लहत आहि ॥
नृप सु सुनि गयो रन तजि निकेतं, परनी सु कुमारहु हितं उपेत ॥
अक्खिय पुनि दिष्टहिं नगर आय, मम वृत्ति जनक देहु ब बताय ॥
तब मुनिन बनिज१कृषि२पसुनत्रान३,तिहिं वृत्तिदई श्रुतिपथप्रमान॥
हुव तनय भलंदन८नाम तास, पटुं बीर बिहित बिक्रम प्रकास ॥
अंबा तिहिं इक्कदिन कहिय एह, जावहु गोपालहु सुत सनेह॥३४॥
तँहँ अर्थ भलंदन गहिय एस, गो भुम्मि ताहि पालन निदेस ॥
इम चिंति गयो वह तुहिन पत्थ,किय तुष्ट राजऋषि नीप तत्थ।३५।
गोपालन तासन अस्त्र ग्राम, सब सिक्खि बहुरि आयो स्वधाम ॥
बसुरात७प्रमुख जे दिष्टपुत्र, तिन प्रति यह अक्खिय बलतनुत्र।३६।

चैत्र वैश्य की पुत्री को व्याहा १ वचन ॥ २९ ॥ २ वनिया ने दिष्ट राजा से जाकर पुकार की ३ भयंकर४पिता की सब सेना को ॥ ३० ॥५उचित नहीं ६घमंड के अधीन ॥ ३१ ॥ जो वर्ण उस असवर्णा स्त्री का होवे वही वर्ण उससे विवाह करनेवाले का होता है७अपने घर८हित सहित ॥ ३२ ॥ फिर नाभाग ने नगर में आकर राजा दिष्ट से कहा कि हे पिता अब मेरी जीविका बताओ तब मुनियों ने वेदमार्ग के प्रमाण से व्यापार, खेती और पशुओं की रक्षा करना बताया ॥ ३३ ॥ ९चतुर वीर और उचित विक्रम को प्रकाश करनेवाला हुआ. उसको एक दिन माता ने कहा कि हे पुत्र जाओ गो का पालन करो ॥ ३४ ॥ इसका अर्थ भलंदन ने यह समझा कि गो नाम भूमि का है जिसकी पालना करने की माता ने आज्ञा दी है. यह विचार कर वह हिमालय के मार्ग को गया. तहां नीप नामक राज ऋषि को प्रसन्न किया॥३५॥पृथ्वी को पालने के लिये उनसे अस्त्रों का समूह सीख कर अपने घर आया और बसुरात आदि राजा दिष्ट के पुत्र थे उनसे उस बल रूपी कवच धारण करनेवाले ने कहा कि ॥ ३६ ॥ हे चचा (काका) ओ मेरा

अब देहु पितृव्यक बंटि अंस, उन कहिय बनिक क्यौं देत दंस ॥
सब जित्ति भलंदन तब समर्थ, अर्पन किय लै भुव जनक अर्थ ॥
नाभाग कहिय मैं पितु निदेस, लैहौं न बनिक बनि पुहवि लेस।
करि तूहि राज्य तवजित कुमार, यह सुनि तस पतनी किय उचार
बनिक न तुम हो नृप हे प्रबुद्ध, त्यौं मैंहु राजतनया हि सुद्ध ॥
पहिलैं सुदेव हुव नृप पवित्र, धूम्रास्व तनय नल तास मित्र॥३९॥
इक समय मास बैसाख तत्त, नारिन जुत क्रीडन बिपिन पत्त ॥
तहँ करत नदीतट मद्यपान, मुनि प्रमति नारि निरखी सुजान ॥
नल दोरि गही वह बाहुपास, मुनि नारि पुकारिय त्रौंहि त्रास ॥
मुनि प्रमति सुदेवहिं कहिय आय, तू भूप देहु मम तिय छुराय।४१।
नृप कहिय बनिक मुहिं गिनहु बिप्र,छत्रिय पहँ जावहु कहहु छिप्र॥
द्विज तब छत्राधम बनिक होहु, यह साप दै रु किय भस्म सोहु
नल भस्म पिक्खि अक्खिय सुदेव,मुनि छमहु करिय हम अनय एव॥
मुनि सदयँ कहिय तब साप धोय, व्है है पुनि छत्रिय बनिक होय।
छत्रिय तव तनया गहहिं जत्थ, तू छत्र बनिकपन छोरितत्थ॥
यौं नृप सुदेव है मोर तात, मेरी हु सुनहु बरती सु बात।४४।
हुव पुब्ब सुरथ नामक नरेस, तप तपत गंधमादन नगेस ॥

अंश बांट दो, उन्होंने कहा कि तू बनिया होकर क्यों दन्त देता है (खाना चाहता है) तब उन सबको समर्थ भलंदन ने जीतलिया और भूमि लेकर पिता के अर्पण करी ॥ ३७ ॥ नाभाग ने कहा कि मैं पिता की आज्ञा से बनिया होगया हूं सो भूमि का लेश भी नहीं लूंगा. यह राज्य तेरा विजय किया हुआ है सो तू ही कर. यह सुन कर नाभाग की स्त्री बोली ॥३८॥ १हे विद्वान् ॥३९॥२वन में गया ॥४०॥३भुजों में पकड़ली४रक्षा करो५प्रमति मुनि ने राजा देव से कहा ॥ ४१ ॥ मुझको बनिया जानो. शीघ्र ब्राह्मण ने कहा कि हे अधम क्षत्री तू बनिया होजा. यह श्राप देव को देकर उस नल को भी भस्म कर दिया ॥४२॥६ मैंने यह अनीति करी सो क्षमा करो७दया सहित पहिले बनिया होकर फिर क्षत्री होवेगा ॥ ४३ ॥ जहां कोई क्षत्रिय तेरी पुत्री को ग्रहण करेगा तहां तू वैश्यपन को छोड कर क्षत्रिय होवेगा, इसप्रकार राजा देव मेरा पिता है अब मेरी वार्ता भी सुनो जो मुझमें

इक समय सेनमुख सन प्रपात, सारी तँहँ कंपत अकसमात।४५।
मूर्छित हुअ सो लखि सदय भूप, उपजी तँहँ तासौं मैं अनूप ॥
इक दिन अगस्त्य भ्राता अगस्ति,मम सखिन कह्यो यहबनिक अस्ति
सुनि कुपित विप्र दिय साप मोहि, जो मोहि कहत तब होहु सोहि॥
तबपायपरियकरिप्रनतिख्याति,उन कहियबहुरिलहिहैस्वजाति४७।
यौं मैं सुदेवतनया अनूप, भूपाल द्दिष्टसुत तुमहु भूप ॥
तसमात करहु सुत बिजित राज्य, नाभाग कहिय है न मम भाज्य॥
पितु हुकम तज्यो न गहौं बहोरि, जित राज्य करहु सुत धर्म जोरि॥
तब कुमर भलदन८भो नरेस,बत्सप्री९तस सुत हुव सुवेस॥ ४९ ॥
जिहिं हनि कुजंभ पाता लजाय, सौनंद मुसल आन्यौं सुभाय॥
सुमति१रु सुनीति२सोदर समेत, आनी मुदावती१जय उपेत ॥
तब भूप विदूरथ सो सु ताहु, याकौंहिं दई रचि बिहित ब्याहु ॥
बत्सप्रीके हुव प्रांसु१०नाम,सुत ज्येष्ठ मुदावतिमैं ललाम॥ ५१ ॥
हुव पुत्र प्रजापति११प्रांसु गेह, नव९नवति८१०हनत हुव असुरएह॥
खनिमित्र१२प्रमुख ताकै कुमार, खनिमित्र तनय क्षुप१३हुव उदार
तस बिंस१४बिबिंस१५सु तस सुजान,हुव तास खनीनेत्र१६भिधान
सडसठि सत६७००अरु सडसठि हजार ६७०००,
सडसठि६७जुत किय मख जिहिं उदार ॥ ५३ ॥
हुव तास करंधम१७नाम पुत्त, ताकै अविबिक्षित १८धर्मजुत्त ॥
जिहिं नृपन स्वयंबर जीति जीति, आनी अनेक कन्या अभीति

वरती है ॥ ४४ ॥ गंधमादन नाम पर्वत में तप तपने थे वहां शिकरा (बाज) के मुख से अचानक कांपती हुई मैना (पक्षि विशेष) पड़ी ॥ ४५ ॥ १ बनिया है ॥ ४६ ॥ २ मुझे जिसने बनिया कहा वही बनिया होओ ३ प्रणाम (विशेष नम्रता) ॥ ४७ ॥ ४ इसकारण से पुत्र का विजय किया हुआ राज्य करो ५ मेरे ग्रहण करने योग्य भाग नहीं ॥ ४८ ॥ ६ तेरा विजय कियाहुआ राज्य धर्म के साथ हे पुत्र तू ही कर ॥ ४९ ॥ ७ सौनन्द नामक (बलदेव के रखने का) मूसल = विजय सहित ॥ ५० ॥ ९आदि १०पुत्र ११खनीनेत्र नामक राजा हुआ जिसने ६७६७६७ यज्ञ किये ॥ ५३ ॥ १२ पुत्र

इम नृप बिसाल कन्या कुमार, सब नृपन जित्ति आनी उदार ॥
इक१होय सबन लरि करि अधर्म, मूर्छित यह पकरयो बँधि मर्म
जब सुतहिं करंधम कैद जानि, आहव करि जीते अहित आनि
निजसुत छुराय अविक्षिय नरेस, अब चलहु कन्यका परनि एस ।५६।
तब कुमर कहिय तिय लखत मोहि, सत्रुन गहि बंध्यो सकुच सोहि
जो नारि१ नारि२परिनियन न्याय, तो मैंहु चलौं दुलही बनाय।५७।
अविबिच्छित यौं कहि तिय प्रसंग, सब छोरि दयो रहि प्रसभ रंग॥
कन्याहु अनूढा बिपन पत्त, परन्यौं न और रति तत्त तत्त॥५८॥
तनु तजन लगी तव यह कहाय, दिय देवदूत देवन पठाय॥
न बिसालसुता तनु तजन जुत्त, व्है है तुव सब भुव भूपपुत्त।५९।
तिहिंकहियजियतपरनौंनअन्य, धवममअबिबिच्छितकुमरधन्य ॥
सो मुहिं बरै न किम तनय जम्म, इहिं कहिय परनिहै सुहि सुकम्म
बीरा अबिबिच्छित जननि नाम, कुल नसत जानि चिंत्यो बिराम ॥
व्रत धारि कमिच्छक नाम नेम, पतिकौं लै सम्मत जनन प्रेम ॥ ६१ ॥

१करंधम जब अपने पुत्र को कैद जाना तब शत्रुओं को जीतकर अपने पुत्र को छुड़ा कर कहा कि अब इस कन्या को परण कर चलो ।५६।कुमर ने कहा कि स्त्री के देखते हुए मुझको शत्रुओं ने पकड़ कर बांधलिया इसका मुझे संकोच है जो यदि स्त्री का स्त्री के साथ विवाह होना उचित होवे तो मैं भी इस कन्या को दुलही बनाकर चलूं ॥ ५७ ॥ यह कहकर अविविच्छित ने अपने हठ के रंग में रहकर स्त्री का सब प्रसंग छोड दिया और वह कन्या भी विना विवाही वन में पहुंची, उस वैश्य की कन्या में प्रीति होने के कारण तहां आविविच्छित ने भी अन्य विवाह नहीं किया ॥ ५८ ॥ वह कन्या शरीर छोडने लगी वहां देवताओं ने कालपुरुष को भेज कर कहलाया कि हे वैश्य की पुत्री तेरे सर्व भूमि का पति ऐसा पुत्र होवेगा इसकारण से तेरा शरीर छोडना युक्त (योग्य) नहीं है ॥ ५९ ॥ और को नहीं परणूंगी मेरा पति अविविच्छित है सो मुझे परणे नहीं फिर पुत्र का जन्म कैसे होसक्ता है? उस देवदूत ने कहा कि वही सुकर्मी तुझे परणेगा ॥ ६० ॥ उस अविविच्छित की माता का नाम वीरा था उसने अपने कुल का नाश होता जानकर कुछ विश्राम (सहारा) चिन्तवन किया और अपने वंश में प्रीति करके पति की सलाह लेकर किमिच्छक (मार्कंडेय पुराण में कहा हुआ व्रत विशेष) नामा व्रत का नेम लिया ॥ ६१ ॥

अविविच्छितसों आक्खिय उदंत, मैं लियउ किमिच्छक व्रत महंत ॥
मंगैं सु देहु अर्थिनं कुमार, होहु न सुपुत्र व्रतभंगकार ॥ ६२ ॥
स्वीकारि अविविच्छित भयउ सज्ज, सब दैन लगो भिच्छुन सुलज्ज॥
तहँ जनक कहिय कछु दिन बिताय, अर्थी सुत तव ढिग मैंहु आय॥६३॥
कै देहु मोहि इच्छितं उदार, कै होहु जननि वृतभंगकार॥
सुत कहिय मैंहु तुमरे अधीन, पितु लेहु इष्ट जो हिय प्रबीन॥६४॥
नृप कहिय देहु नत्तियं दिखाय, मम बंस बच्छं नहि नष्ट जाय ॥
तव कुमर कहिय मम बंम्हचेर, तुमरै न इतर सुत बिफल बेर ॥
नृप आक्खिय तव व्रत छोरि देहु,सुत करहु कथित मम सफल एहु॥
सुत कहिय निर्लज नक्कहिं कटाय, रचिहों इक सुत जो चहत राय॥
तदनंतर गय मृगया कुमार, तँहँ त्राहि त्राहि सुनि तिय पुकार ॥
ढिग जाय लख्यो दृढकेस नाम,इक दनुज रह्यो गहि बिकल बामँ॥
सो कहत करंधम पुत्र नारि, मैं दुष्ट गही मम पति बिसारि ॥
है कोउ बचावन करन भीर, बुल्ल्यो अविविच्छित सुलखि बीर ॥
नृप मुकुट करंधम तपत आज, को दुष्ट हरत तिय करि कुकाज॥
यह सुनत सम्मुख हुव दनुज दुष्ट, गिरि सस्त्र अस्त्र डारे प्ररुष्ट ॥६९॥
सब कट्टि कुमर दृढकेस मारि, बुल्ल्यो सु कोन तू बिजन नारि ॥
इहिं अंतर हुव आकासबानि,अविविच्छित यह तव नारि जानि॥७०॥

१वृत्तान्त२बडा३याचना करनेवालों को४हे पुत्र मेरे व्रत को भंग करनेवाला मत होना ॥६२॥५स्वीकार६भिक्षा करनेवालों को अविविच्छित के पिता ने कुछ दिन बिताकर कहा कि हे पुत्र मैं भी याचना करनेवाला होकर तेरे पास आया हूं ॥६३॥७जो मैं चाहूं वह८माता के व्रत का भंग करनेवाला९जो आप की इच्छा होवे वह ॥६४॥ राजा ने कहा कि मुझे१०पोता (पौत्र) दिखा दे ११हे पुत्र१२ब्रह्मचर्य है और तुम्हारे दूसरा पुत्र नहीं इससे मेरा शरीर निष्फल है कि मैं आपकी याचना को पूर्ण नहीं करसका ॥ ६५ ॥ १३हे पुत्र मेरा कहना कर१४निर्लज्ज होकर नाक कटा करके एक पुत्र रचूंगा जो हे राजा आप चाहते हो । ६६ ।१५जिस पीछे कुमर शिकार गया१६दैत्य१७स्त्री को ।६७। १८मुझको१९सहाय करनेवाला बोला२०बहुत क्रोधित होकर२१इस निर्जन स्थान में हे स्त्री तू कौन है

यामाँहिं चक्रवर्त्ती कुमार, व्हैहै तव दुर्जय[1] अरि बिदार ॥
कन्या प्रति अक्खिय कुमर एह, किम भीरु[2] अत्त आवन अनेह ॥
तिहिं कहिय तर्जन तनु[3] अत्थ आय, मैं देवदूत बरजी मनाय ॥
तबतैं हि रावरी लखत राह, इक ओर भई सुनिये सुनाह[4] ॥७२॥
परसों गंगाबिच न्हान काल, इक नाग गयो मुहिं लै पताल ॥
पूजी तहँ नागन सबन मोहि, अक्खी सुत जानिहै दमन[5] द्रोहि॥७३॥
तस आगस करिहै नाग बाल, इन्ह मारन कुप्पहिं सो कराल ॥
तँहँ सुतहिं निवारहु अभय देहु, अंगीकृत कीनी मैंहु एहु ॥७४॥
तब दिव्य बसन भूखन बनाय, नागन यँहँ आनी हित तनाय ॥
दृढकेस गही मैं आज दुष्ट, तुम नाथ बचाई होहु तुष्ट[6] ॥ ७५ ॥
यह होत कहिय गंधर्व तत्थ, यह ममहु सुता जानहु समत्थ ॥
घटभवँ मुनि कोलहि साप एह, दुहिता हुव जाय बिसाल गेह[7]॥७६॥
अब गहहु पानि[8] याको उदार, मम लोक चलहु पुनि धर्म धार ॥
तिहिं व्याहि कुमर तब निपुन नेह, गंधर्व लोक गो स्वसुर गेह ॥७७॥
तँहँ तनय भयो याकै प्रसस्त[9], किय जातकर्म तुंबुरु समस्त ॥
आकासबानि तब कहिय पुत्त, यह होय बिदित नामक मरुत्त॥७८॥
आयो अबिबिच्छित गृह समोद, वह बाल धर्‍यो निज जनकँ[10] गोद॥
पुनि कहिय राज्य १ अरु नारि संग २,
अबतैं न करौं जिति हतउमंग ॥ ७९ ॥
दै राज मरुत्तहिं तब नृपाल, बीराजुत गो बन चर्म काल ॥

१कठिनाई से जीतने में आवे ऐसा।२हे श्रेष्ठ स्त्री तेरे यहां आने का यह क्या समय है।३शरीर छोड़ने को यहां आई थी परन्तु कालपुरुष ने मुझे मना कर दी।४हे पति।५शत्रुओं को दंड देनेवाला।७३।उस तेरे पुत्र का मूर्ख सर्प अपराध करेंगे जिनको मारने का वह भयंकर क्रोध करैगा जिसको मने करके सर्पों को बचाना। यह वार्ता मैंने स्वीकार की।७४।६अब मुझ पर प्रसन्न होओ।७५।७अगस्त्य मुनि के शाप से वैश्य के घर में जाकर ॥७६॥८हाथ ॥७७॥९बहुत श्रेष्ठ ।७८।१०अपने पिता की गोद में धर कर फिर कहा कि शत्रुओं ने मुझे जीत लिया इसकारण उत्साहभंग होकर अब से राज्य का और स्त्री का संग नहीं करूंगा ॥ ७९ ॥ राजा करंधम मरुत्त को राज्य देकर वीरा नामक राणी के साथ

किय राज्य मरुत्त१९हु धर्मधाम, भार्गव सन सिक्ख्यो अस्त्र ग्राम ।
अवनी यह पुक्खर दीप अंत, सब एकछत्र भुकती सुमंत ॥
पाताल स्वर्ग गति सक्ति पाय, सब सिर मरुत्त प्रतप्यो सुभाय।८१।
करि अब्द सहँस१०००तप२ जोग जोरि, गो नाककरंधम देह छोरि॥
बीरा तब सद्धिय ब्रह्मचेर, बार्यो न सती दुख दैन बेर ॥ ८२ ॥
मख३ अतुल करे इतने मरुत्त, जग सकल भयो मखनियम जुत्त ॥
इकदिन इक तापस कहिय आय,
नृप सुनि मरुत्त तव छत न न्याय ॥ ८३ ॥
मुनि औव उटज बीराभिधान, है तव पितामही ब्रतनिधान ॥
भिधान१निधान२अन्त्यानुप्रासः ॥
तानैं कहि पठयो पौत्र तोहि, सब सीस तपत यह कष्ट मोहि॥८४॥
बहु नाग आय डसि गरलँ तप्त, मारे यह मुनिजन बिप्र सप्त७ ॥
निज ठीवन१ गूथ२रु मूत्र३डारि, बिप्रनके दीनैं हँवि बिगारि ॥८५॥
किय दुष्ट खलन जल थल समस्त,तू रवि दिवसहि किम रोस अस्त
जबलौं न परैं अभिषेक वारि, नृपसुत न भोग तबलौं निहारि।८६।
अब पौत्र पट्ट लहि बिखय मोहि, चारांधभाव नहिं उचित तोहि ॥

अन्त समय में वन में गया परशुराम से अस्त्रों का समूह सीखा ॥ ८० ॥ इस पुष्करद्वीप के अंत तक की भूमि श्रेष्ठ बुद्धिवाले मरुत्त ने एकछत्र भोगी और पाताल स्वर्ग में जाने की शक्ति पाकर सब के शिर तपा ॥ ८१ ॥ १वर्ष२तपस्या और योग करके करंधम स्वर्ग को गया तब बीरा ने अपने शरीर को दुःख देने के लिये ब्रह्मचर्य साधा और जली नहीं ॥८२॥ ३यज्ञ । ८३ । और्व मुनि की पर्णशाला (तृण और पत्तों से छाई हुई कुटी) में व्रत ही है धन जिसके ऐसी बीरा नामक तेरी दादी (पिता की माता) है उसने कहलाया है कि तू सबके शिर पर तपता है और मुझे यह दुःख है ॥८४॥४तपेहुए विष से५अपना थूक (मुख का मल) ६विष्टा७होमने के पदार्थ विगाड़ दिये ॥ ८५ ॥८अशुद्ध(खराब)९तू ने सूर्य होकर इन बातों को सहन करके दिन में ही कैसे क्रोध को मिटा रक्खा है, जब तक यज्ञ समाप्त होकर अभिषेक का पानी नहीं गिरे तब तक हे राजपुत्र तू अपना सुख मत देख ॥ ८६ ॥ हे पौत्र अब तैंने तो सिंहासन पाया है और मुझे विखा [विपत्ति] है, हलकारों द्वारा सुधि [खबर] नहीं मंगवाने से तुझको अन्धापन नहीं रखना चा-

यह सुनत निंदि अप्पहिँ मरुत्त, जीवा चढाय कोदण्ड जुत्त ॥८७॥
टंकारि औौर्व आश्रम जगाम, प्रेरयो संवर्तक अस्त्र ताम ॥
लग्गो तब प्रजरन नागलोक, सब काद्रवेय डरि मग्न सोक ॥८८॥
कंपत अविविच्छित गेह आय, भामिनिकौं दीनी सब सुनाय ॥
धवसौँ तब भामिनि कहिय सर्व, इन्ह पूर्व अभय दिय ज्यौं अखर्व ॥
अविविच्छत आयो तब अरण्य, बरज्यो निजपुत्रहिँ कहि अगण्य॥
पितु चरन वंदि तदपि न मरुत्त, निज टेक तजी कहि धर्म जुत्त।९०।
अविविच्छतहू तब अनख पाय, टंकारि चाप आयो रिसाय ॥
सुत जनक लरत ब्रहमंड सांकि, धर मचक डिगी दुर्धर धमंकि।९१।
दिग्गजन दये मल मूत्र डारि, सब सृष्टि लगी बिनसन पुकारि ॥
याँहू तब नागन मरन जानि, भार्गव प्रति अक्खिय विनय बानि।
हम दष्ट मुनिन देहैँ जिवाय, यह कलह निवारहु वीच आय ॥
तब औौर्व निठ्ठि बरजे नरेस, नागन जिवाय दिय मृत असेस ।९३।
सुत जनक तबहि आये सुधाम, किय इम मरुत्त बहु अतुल काम।
परन्यौँ यहै हु रानी अनेक, अष्टादस१८तस सुत बँर बिवेक ॥९४॥
तहँ ज्येष्ठ नरिष्यंता२०अभिधान, सुंडीर९विनंय१०वितरन११सुजान ॥
सत्तरि हजार७००००दसपंच१५जुत्त,हायँन१२ प्रमान प्रतप्यो मरुत्त९५

हिये मरुत्त ने अपनी ही निन्दा करके प्रत्यंचा चढाकर धनुष को युक्त किया ॥ ८७ ॥१गया तहां पर अग्नि अस्त्र चालाया जिससे नागलोक जलने लगा सब सर्प डर कर शोक में बूड गये ॥ ८८ ॥ वे सर्प धूजतेहुए अविविच्छित के घर पर आये और उसकी स्त्री से सब कथा कही तब भामिनी ने सर्पों को पहिले बडा अभय दिया था सो पति से कहा ॥ ८९ ॥ वन में गयाना मैं नहीं आवे इतनी बेर कहकर मना किया तोभी पिता के चरणों में नमस्कार करके अपनी टेक नहीं छोडी और कहा कि यह टेक धर्मयुक्त है ॥ ९० ॥२नहीं सुनने योग्य धक्कों से ॥ ९१ ॥३पृथ्वी के हिलने की चोटों से सर्पों ने अपना मरना जान कर भृगुवंश के मुनि से नम्रता के वचन कहे कि ॥९२॥ ४हम डसेहुए मुनियों को पीछे जिवादेवेंगे५औौर्व मुनि ने कठिनाई से राजा को मना किया ६सब मरेहुओं को ॥९३॥७श्रेष्ठ ज्ञानवाले ॥ ९४ ॥ बडा नरिष्यन्त ८नामक ९ शूरता १० नम्रता ११ दान में सुजान १२ वर्ष ॥ ९५ ॥

सासित करि निजबल सत्त७द्वीप, परलोक गयो पुनि यह महीप॥
भो अतुल नरिष्यंत[1]हु नरेस, वंसहुसौं कीनैं[2]मख बिसेस ॥९६॥
जाकौं जजायँ[3] द्विज द्रव्य पाय, मख करन लगे भूतल नमाय ॥
नृप[4] खोजत जाजक अब मिलै न, सबकाल मचे मख अखिल अैनँ[5]॥
दिस पुव्व१अठारह कोटि१८००००००० तत्र,
सुभ सप्तकोटि७००००००० प्रातीच्य[6]सत्र[7] ॥
आवाच्य[8] ३ चउदह कोटि१४००००००० थान,
पंचासकोटि५०००००००० उत्तर४प्रमान ॥९८॥
खोजत द्विज दूतन बहु बिबेक, इक काल गिनै भुव[9] मख इलेक ॥
अैसो मरुत्त सुत भो उदार, भुवमैं न रह्यो दारिद्र भार ॥९९॥
रानी तस बाभ्रव बंस जात[10], सुभ नाम इंद्रसेना सुहात ॥
वच्छर[11] नव९करि तस जठर[12] वास, दम२१नामपुत्र हुव भव्य[13] भास१००
वृषपर्वा दानवसौं कुमार, सिक्ख्यो सुबुद्धि धनुवेद१सार ॥
रु तपस्वी दुंदुभि दैत्यराज, किन्नौं गुरु सिक्ख्यो अस्त्र काज॥१०१॥
जुत अंग[14]६सुक्र सन वेद ३ पाय, लिय आर्ष्टिसेन[15] सन जोग४जाय॥
दम २१ कुमर भयो अैसो उदार, पाये बहु जंगन जय प्रकार१०२
सुदसार्णराज तनया बिबाहि,सब नृपन जित्ति आयो उमाहि॥
दुव राज कुमारन यह सही न, दमसौं मग[16] रुंधि रु कलह कीन१०३
इक१मद्रराज सुत बल अमान, ज्यो ख्यात महानंद[17]ऽभिधान१॥
दूजो२विदर्भपतिको कुमार, धानुष्क[18] वपुष्मत२नाम धार ॥१०४॥

१ आज्ञावर्ती २ यज्ञ ३ जिसको यज्ञ कराके ४ राजा ने फिर यज्ञ करानेवालों का खोज कराया सो नहीं मिले क्योंकि सब ५ घरों में सब समय यज्ञ होने लगे ॥ ९७ ॥ ६ पश्चिम दिशा में ७ यज्ञ होरहे थे ८ दक्षिण दिशा में ॥९८॥ ९ भूमि पर एक समय में इतने यज्ञ होते हुए दूतों ने गिने, मरुत्त का पुत्र ऐसा उदार हुआ ॥ ९९ ॥ १० उपजी हुई ११ उसके पेट में १२ नव वर्ष वास करके १३ शुभ वास करनेवाला ॥ १०० ॥ शुक्राचार्य से १४ छओं अंगों सहित वेद सीखे १५ आर्ष्टिसेन नामक मुनि से योग सीखा ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १६ मार्ग रोक कर ॥ १०३ ॥ १७ महानंद नामक १८ धानुष्क और वपुष्मत् दो नामोंको

मद्रेस सुत १ सु दम लियउ मारि, दूजो २ अचेत करि दियउ डारि ॥
दै राज्य दमहिँ गुनअग्रगराय, गो भूप नरिष्यंत २० हु अरराय ॥१०५॥
बन कबहु बपुष्मत गो सिकार, दम २१ जनक लख्यो तहँ सहित दार
दम २१ की जननी सन पुच्छि नाम, खलहनिय नरिष्यंत २० हिँ बिकाम
यह घोर खबरि दम २१ भूप पाय, बैदर्भ हन्यौं तस देस जाय ॥
दम तनय राजबर्द्धन २२ उदार, हुव तासु सुधृति २३ नामा कुमार १०७
ताकै नर २४ कंबल २५ तस सुजान, तस बंधुमान २६ तस बेगवान २७॥
तस बुद्ध २८ तास तृणबिंदु २९ आस, अच्छरि अलंबुसा माँहिँ तास॥
सुत हुव बिसाल ३० जो अजितजंग, जिहिँ रचिय बिसाला नाम द्रंग॥

तस हेमचंद्र ३१ धूम्रास्व ३२ तास,
तस सृंजय ३३ तस सहदेव ३४ भास ॥ १०९ ॥

ताकै कृसास्व ३५ तस मोददत्त ३६, किन्नैं जिहिँ दस १० हँयमेध सत्त॥

जनमेजय ३७ तस तस सुमति सूर ३८,
पाँनिप १ जस २ उद्यम ३ धर्म ४ पूर ॥ ११० ॥

वैवस्वत आत्मज चउ ४ चरित्र, पहिलैं इम बरन्यौं तहँ पवित्र ॥
द्विज नहुल कुंडक भूपकेर, बरनत पुनि इतरन ब्याह बेर ॥१११॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचरडासिवंशवर्णने भीम ६५ बसु ६५।१ सहदेव ६६ पृथा ६६।१ रामदेव ६७ तुंगा ६७।१ वसुदेव ६८ वेलो ६८।१ हेशनचर्म ६८ दम्पतिपरिणायनसमयविवस्वद्वंशव्याख्यानाऽनन्तरगतमनुतनुजसुद्युम्न१

धारण करनेवाला ॥ १०४ ॥ १ गुणों में सब से आगे गिनती में आनेवाला २ वन में ३ दम के पिता को ४ स्त्री सहित देखा ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ ५ हुआ ६ अप्सरा ॥ १०८ ॥ ७ युद्ध में नहीं जीतने में आवे ऐसा ८ पुर ९ कान्तिमान ।१०९। १० अश्वमेध ११ यज्ञ १२ पराक्रम. इसप्रकार वैवस्वत मनु के चार पुत्रों का पवित्र चरित्र प्रथम वर्णन कियागया और कुंडक राजा का नहुल नामक पुरोहित विवाह समय में मनु के दूसरे पुत्रों का वंश अब वर्णन करता है १११

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में भीम-बसु, सहदेव-पृथा, रामदेव-तुंगा, बसुदेव-वेला के कथन में अन्तिम स्त्रीपुरुष के विवाह समय में सूर्य वंश की कथा के भीतर मनु के

पृषध्र २ करूष ३ दिष्ट ४ चतुष्टय ४ चर्या १ बंश २ बर्णनं षट्त्रिंशत्तमोमयूखः ॥ ३६ ॥ आदितोऽष्टसप्ततितमः ॥ ७८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(पज्झटिका)

वैवस्वत सुत सर्याति ६।३ नाम, नृप सो हु भयो गुनगन ललाम ॥
आनर्त[2] ७ नाम तस सूनु श्रेय, तनया हु सुकन्न्या[3] १ नामधेय॥१॥
परनी जु च्यवन भृगुबंस दीप, आनर्त ७ हु भो अतिबल महीप ॥
आनर्तदेश जिहिँ करि कहात २ ताकै सुत रेवत ८ खग्ग[4] ख्यात ॥
तस पुत्त ककुद्मी हुव नरेस, रैवत ९ हु कहत जिहिँ बुध[5] बिसेस ॥
रेवतिका१ कन्या हुव तदीय[6], सुभरूप१ सील२ गुनगन[7]३ गरीय॥ ३ ॥
तदुचित[8] बर पुच्छन जनक[9] ताहि, लेगो बिरंचिके[10] लोक चाहि ॥
हाहा[11]१ हूहू२ तहँ करत गान, अतितान नाम स्वर दिव्यवान ॥ ४ ॥
तहँ इक मुहूर्त[12] सुनि दिव्य गेय[13], पूछ्यो पुनि बिधिसन हार्द[14] प्रेय॥
बिधि कहिय लये तैँ वर निहारि, तिनके न बंस अब भुव बिचारि॥५॥
जदुबंस माँहिँ कृष्णावतार अग्रज[15] है तिनकै बल[16] उदार ॥
यह देहु तिनहिँ कन्न्या बिवाहि, आयो सुनि रैवत भुव उमाहि॥६॥
तनया सु बलहिँ परिनाय तत्त, बन तुहिन[17] गयो रैवत बिरत्त[18] ॥
बल[19] सीर अग्र करि तिहिँ नमाय, सम किन्न प्रांसुपन[20] नस बिहाय॥७॥

पुत्र सुद्युम्न, पृषध्र, करूप, दिष्ट इन चारों के आचरण और वंशवर्णन का छत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३६ ॥ आदि से अठहत्तर मयूख हुए ॥ ७८ ॥

१ सुन्दर २ आनर्त नामक श्रेष्ठ पुत्र हुआ जिसके नाम से आनर्त देश प्रसिद्ध हुआ ३ सुकन्या नामक ४ खड्ग चलाने में प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ ५ विशेष पंडित ६ उस रेवत के रैवती नामक कन्या हुई ७ गुणों में बडी ॥ ३ ॥ उस कन्या का ९ पिता ८ उसके उचित वर पूछने को १० ब्रह्मा के लोक में लेगया वहां ११ हाहा हूहू नामक गन्धर्व गान करते थे ॥ ४ ॥ १२ दो घड़ी तक १३ गान १४ प्रिय अभिप्राय ॥ ५ ॥ १५ बडा भाई ॥ ६ ॥ १६ बलदेव को १७ हिमालय के वन में १८ विरक्त होकर १९ बलदेव ने हल के अग्रभाग से २० ऊंचापन मिटा कर बराबर किया ॥ ७ ॥

रैवतके इतर[1]हु कुल विसेस, सब दिसन माँहि जानहु नरेस ॥
मगधिष्ट६।२कहयो जो मनु[2]तनूज, धृष्ट६।२हु कहात वह प्राप्त[3]पूज
ताकैहु वंस बहुधार्ष्टनाम, सबठाम वढे भूतल सुधाम ॥
मनु पुत्र नभग६।५कै हुव कुमार, नाभाग७नाम अतिवल उदार।९।
हुव अंबरीष८ताकै बिरक्त, दुर्वासादमन[4] रु विष्णुभक्त ॥
ताकै बिरूप९बृहदश्व१०तास, तस पुत्र रथीतर११भूरिभास ॥१०॥
ताकी तियमैं मुनि अंगिराहि, आत्मज[5] जने[6] ति सब विप्र[7] आहि ॥
मनुपुत्र नरिष्यंत६।४हु महंत, कुल तास अतुल सव दिस कहंत।११।
वृषकेतु६।६वंस त्योंही विथार, सव दिसन पाय हुव धर्मधार ॥
इक्ष्वाकु६।१भयो मनु पुत्र अच्छ, दंडक सव दुष्टन धर्म दच्छ[9] ।१२।

सत१००पुत्र भये याकेहु श्रेष्ठ,
जिनमैं विकुक्षि७।१निमि७।२दंड७।३ज्येष्ठ ॥

पंचास५०इतर[10] उत्तर अधीस, अरु तुरगवेद४७जमक[11]कुभ ईस।१३।
रुचि श्राद्ध करन इक्ष्वाकुराज, पठयो बिकुक्षि७पल[12] हरन काज ॥
बनमाँहि छुधित[13] इक१ससहिं[14] खाय, यहकुमरशिष[15]हिंलायोनिकाय[16]॥
इम तस ससाद७अभिधान आस[17], हुव पुत्र पुरंजय८नाम तास ॥
असुरनके[18] जित्ते सुर[19] असेस, वैकुंठ[20] सरन हुव दीन बेस ॥ १५ ॥
हरि कहिय पुरंजय८नाम राज,लै तुम सहाय निज करहु काज॥
तव देव पुरंजय सरन पत्त[21], वुल्ले[22] जय दीजै अप्रमत्त[23] ॥१६॥

१ और भी २ मनु का पुत्र ३ प्राप्त हुई है पूजा जिसको (पूजायोग्य) ४ दुर्वासा को दंड देनेवाला ५ पुत्र जने ६ वे सब ब्राह्मण ७ हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ ८ श्रेष्ठ ९ धर्म में चतुर ॥ १२ ॥ १० दूसरे पचास पुत्र उत्तर दिशा के स्वामी हुए। १३। और सैंतालीस पुत्र ११ दक्षिण दिशा के पति हुए. रुचि का श्राद्ध करने को इक्ष्वाकु ने विकुक्षि को १२ मांस लेने भेजा वहां वन में १३ भूखा होने के कारण एक १४ खरगोस खाकर १५ बाकी मांस १६ घर पर लाया ॥ १४ ॥ इसकारण से (सस को खाने से) उसका ससाद नाम १७ हुआ. १८ दैत्यों ने सम्पूर्ण १९ देवताओं को जीत लिया वे दीन होकर २० विष्णु के शरण गये २१ पहुंचे २२ बोले २३ सावधान होकर ॥ १६ ॥

नृप कहिय मोहि नर देवराय, व्है बाह वहैं तो मैं सहाय ॥
सुरपति बड्ड हुव तब सयान, थिर भूप चढ्यो तस ककुद थान ॥
इम तास ककुत्स्थ हुव नामधेय, काकुत्स्थ८वंस जिहिं करि अजेय।
भूप सु लस्यो हि करि सुरन भीर, बासव रिपु मारे सब प्रबीर॥१८॥
हुव पुत्र पुरंजयकै उदार, अभिधान[2] अनेना ९ धर्मधार ॥
ताकै पृथु१०विश्वग११पुत्र तास,तस चांद्र१२तास सुत उभयर अास[3]
युवनाश्व१३।१बहुरि श्रावस्त१३।१जोहि,श्रावस्तीनगरी रचक सोहि
श्रावस्त तनय बृहदश्व१४नाम, हुव कुवलयाश्व१५ताकै ललाम ॥
इकबीस सहँस२१०००पुत्रन उपेत[6],जुज्झ्यो सु धुंधुसन खिजि खेत
उत्तंक बिप्रको अहितकार, हनि धुंधु कहायउ धुंधुमार१५ ॥ २१ ॥
युवनाश्व सुतहु इहिँ रन समस्त, धुंधु हने उबरे त्रय३अत्रस्त ॥
नृप जे दृढाश्व १४।१ चंद्राश्व १४।१ नाम ॥
कपिलाश्व १४।३ बहुरि ए ३ धर्मधाम ॥ २२ ॥
रु दृढाश्व तनय हर्यश्व१५वीर, ताकै निकुंभ१६धरनीस धीर ॥
तस संहिताश्व१७जानहुनृपाल,ताकैकृसाश्व१८ कलिअहितकाल
ताकै प्रसेनजित१९नामधेय, युवनाश्व२०तास अप्रजे अजेय ॥
लखि सुत अभाव निर्बेद लाय, जु रह्यो बन मुनिगन उटज जाय।२४।
तहँ मुनिन दया करि इष्टि कीन, जल मंत्रि धरयो घट इक प्रवीन॥
नृपजागिनिसीथेंकियसोहिपान,नहिंजानिसक्योतसबसनिदान।२५।

राजा ने कहा कि मैं मनुष्य हूं जिसको इन्द्र वाहन होकर मुझे उठावे तो मैं सहाय करूं. तब इन्द्र बैल(वृषभ)हुआ जिसकी खुंदड(पीठके ऊपरका मांस पिंड) पर राजा चढा ॥ १७ ॥ इस कारण उस राजा का नाम ककुत्स्थ हुआ उसीके नाम से काकुत्स्थ वंश कहाता है १ इन्द्र के शत्रुओं को मारे ॥ १८ ॥ २ नाम ३ हुआ ॥ १९ ॥ ४ रचनेवाला ५ सुन्दर ॥ २० ॥ इकीस हजार पुत्रों ६ सहित ॥ २१ ॥ ७ निर्भय ॥ २२ ॥ ८युद्ध में शत्रुओं का काल ॥ २३ ॥ ९ बिना सन्तानवाला १० पुत्र नहीं होने के कारण ग्लानि लाकर वन में मुनियों की ११ पर्णकुटी में जारहा । २४ । तहां मुनियों ने दया करके राजा के पुत्र होने के अर्थ १२ [illegible] किया१३आधी रात्रि में जग कर उस पानी को पीगया १४ प्यास के [illegible] होकर उस का कारण नहीं जान सका ॥२५॥

जगि मुनिन लख्यो निर्जल करीर, बुल्ले किहिँ पिन्नौं निखिलै नीर
युवनाश्व वधूकै उचित जोहि; करि पान भयो सह गर्भ कोहि॥२६॥
पिन्नौं अजान मैं कहिय भूप, अरु उदर बढ्यो गर्भ हु अनूप॥
समयांतै कुक्षि अपसव्य फारि, सो बाल कढ्यो जनकहिँ न मारि॥२७॥
कां धास्यति यह इम मुनि कहाय, मां धास्यति अक्खिय इंद्र आय
तातैं मांधाता २१ नाम तास, हुव ख्यात बिरंचि पुहवी प्रकास॥२८॥
सुरपति निज अंगुलि मुख तदीय, पीयूख भरी दिय पिहुल पीय॥
तासहि बढ्यो वह नृप कुमार, भो द्वीप सप्त७भोक्ता उदार ॥२९॥
ससबिंदु भूप दुहिता सुबेस, तिय बिंदुमती परन्यौं नरेस ॥
तामैं मांधाताकै तनूज, प्रकटे त्रय३दुर्द्धर प्राप्तपूज ॥३०॥
पुरुकुत्स२२१बडोपर्द्दपप्रमानि,ज्यौं अंबरीप२२१२मुचुकुंद२२१३जानि
तनया पचास५०हुव बहुरि तास,परनी समस्त सौभरि सभास ३१
पहिलैं करि जमुना ह्रद प्रवेस, सौभरि तप सद्धिय बिधि बिसेस॥
तहँ मीनसंग लखि तजि समाधि, आयो मुनि बाहिर सहत आधि
जर्जर सरीर सौभरि सजाय, अक्खिय मांधाता पास आय ॥
पुत्री नरेस तव है पचास५०, इक१मोहि देहु लखि भोग आस॥३३॥

१ घड़े को विना जल देखा २ सब पानी किसने पिया वह तो युवनाश्व की स्त्री के उचित था सो उसको पीकर गर्भ सहित कौन हुआ ॥ २६ ॥ ३ उपमा रहित ४ गर्भ की अवधि के अंत में दाहिनी कूंख फाड़ कर पिता को बचा कर वह बालक कढा ॥२७॥ जब मुनियों ने कहा कि इसको कौन धावे (दूध चुंगावे) गा तब इन्द्र ने आकर कहा कि मैं धाऊंगा. इसी मे उसका नाम मांधाता हुआ ॥ २८ ॥ इन्द्र ने अमृत की भरी हुई अंगुली उस बालक के मुख में दी जिसको बहुत पीकर वह उदार सातों द्वीपों का भोगनेवाला हुआ ॥ २९ ॥ ५ पुत्री को ६ पुत्र ७ पूजन योग्य ॥ ३० ॥ ८ पादवी ९ पचास पुत्रियां हुईं जिनको सौभरि नामक मुनि ने ब्याहा ॥ ३१ ॥ उस सौभरि मुनि ने जमुना के दह (जलाशय) में प्रवेश करके विशेष विधि से तप साधा वहां १० मच्छियों को संगम करते देख कर समाधि छोड कर मन की पीड़ा सहता हुआ बाहर आया ॥ ३२ ॥ फिर वह सौभरि मुनि बहुत बूढा शरीर बनाकर मान्धाता के पास आकर

जान्यौं नृप बोरौं कूप काहि, जंपिय जो चाहैं लेहु जाहि ॥
करि मंजु रूप तब उचित काल, अवरोध गयउ सौभरि उताल ॥
देखतहि रम्य कन्या हु दोरि, मुनि संग लगी सब लज्ज छोरि ॥
उपयम करि लायो सदन एह, सब पास रम्यौं करि भिन्नदेह॥३५॥
पुरुकुत्स२हु भो वर भूमिपाल, विक्रम१नय२बिद्या३बल४बिसाल
जबही छकोटि६००००००० पाताल धाम, गंधर्व बढे मौनेय नाम॥
नागनसौं जय करि छिन्नि रत्न, सठ होय रहे दुस्सह सपत्न ॥
पहुँचे जलसाँई सरन व्याल, अक्खिय सहाय करिये कृपाल॥३७॥
प्रभु कहिय जाहु पुरुकुत्स२पास, देहैं सहाय होहु न उदास ॥
नागन तब रेवा नदि पठाय, पुरुकुत्स बुलायउ निज निकाय॥३८॥
नागनकी भगिनी नर्मदाहु, परन्यौं पुरुकुत्स सु विहित व्याहु ॥
लाई पुनि भूपहिं नागलोक, इहिं जित्ति लये गंधर्वओक ॥३९॥
जननी मुनि१कश्यप२जनक जास, आतं सु नृप मेट्यो करि बिनास
निज पाय रत्न१अधिकार२नाग, राजाहित वर दिय रक्खि राग४०
जोलौं रवि उदय रु अस्त जाय, पुरुकुत्स२कुल न उच्छेद पाय ॥
वर दिय स्वसाहुकौं मधुर वैन, नर तोहि चिंति अहिभय लहै न

बोला ॥३३॥ राजा ने जाना कि इसके साथ विवाह करके मैं किस लड़की को कुए में डुबोऊं. जब मुनि से कहा कि जो कन्या तुमको चाहै उसीको लेजाओ तब मुनि अपना मनोहर रूप करके समय देख कर शीघ्र जनाने में गया ॥ ३४ ॥ उसको १ सुन्दर देख कर २ विवाह करके ३ जुदे जुदे शरीर करके ॥३५॥४ श्रेष्ठ राजा हुआ ५ गन्धर्व गण विशेष ॥ ३६ ॥ ६ शत्रु ८ सर्प ७ विष्णु के शरण गये ॥ ३७ ॥ ९ सर्पों ने नर्मदा नदी को राजा पुरुकुत्स के पास भेज कर अपने घर पर बुलाया ॥ ३८ ॥ वह नर्मदा नदी सर्पों की बहिन थी जिसको उचित विवाह करके पुरुकुत्स परणा। १० गंधर्वों के घर जीत लिये ॥३९॥ मुनि नामक जिनकी माता और कश्यप जिनका पिता है ऐसे ११ समूह का राजा ने नाश करके मेटदिया १२ प्रीति रखकर राजा को वर दिया ॥ ४० ॥ जब तक सूर्य उदय अस्त को गमन करता रहै तब तक पुरुकुत्स का वंश नाश नहीं पावे. अपनी बहिन नर्मदा नदी को भी वर दिया कि जो मनुष्य तेरा चिन्तवन करेगा उसको सर्प का भय नहीं होवेगा ॥ ४१ ॥

नृप आयउ रेवाजुत¹ निकेत, सह धर्म भोग भुक्ते सुचेत ॥
पाकै हु त्रसद्दस्यु²२३अभिधान, सुत भो प्रवीर नेता³ सुजान॥४२॥
अनरण्य२४भयो ताकै अभंग, जो लारचो रावन विजय जंग ॥
हर्यश्व२५भयो अनरण्य पुत्त⁴, ताकै सु बसुमना२६धर्मजुत्त॥४३॥
सुत तास त्रिधन्वा२७नामधेय⁵, अधिबीर त्रयारुण⁶२८तस अजेय ॥
सत्यव्रत २९ ताकै तनय⁶ सूर, संकुलय⁷ ३ धारक गुन गरूर॥४४॥
पितु हुकम भंग१गुरुधेनु घात२, अप्रोक्षित⁸ आमिष⁹ खान३ख्यात॥
यातैं त्रिसंकु२९सोही कहाय, चांडाल भयो गुरुसाप पाय ॥ ४५ ॥
कौसिक¹⁰ मुनि पठयो स्वर्ग जोहि, लुंब्योहि¹¹ अधोमुख गगन सोहि ॥
हुव तास हरिश्चंद्रा¹²भिधान३०,तस लोहिताश्व३१नय गुन निधान॥

तस हरित ३२ तास चंपक ३३ सधीर,
विजय ३४।१ रु सुदेव ३४।२ दुव २ तस प्रवीर ॥

सुत रुरुक३५विजयकै सावधान,वृक३६तास बाहु३७ताकै सुजान
जाकौं अनेक ससिबंस संघ, जित्ते रन हैहय तालजंघ ॥
परिभूत बाहु३७तब बिपिन पत्त, रानीहु गर्भ जुत तदनु रत्त॥ ४८ ॥
दिय तिहिं सउत्ति गर असन डारि,च्युत होहु गर्भ यह मति बिचारि
सो स्तब्ध गर्भ हुव अब्द सात७, तत्थहि बपु छोरचो तास तात।४९।

१नर्मदा सहित२त्रसदस्यु नामक३नायक(सच को निभानेवाला)॥४२॥४पुत्र ॥ ४३ ॥ ५ नामवाला ६ पुत्र ७ तीन शल्य (साल अथवा संकोच) धारण करनेवाला ॥ ४४ ॥ ८ विना मंत्र संस्कार किया हुआ ९ मांस खाने में प्रसिद्ध , इन्हीं कारणों से वह त्रिशंकु कहलाया ॥ ४५ ॥ ११ आकाश में नीचे मुख लटकते हुए को १० कौशिक मुनि ने स्वर्ग में भेजा १२ हरिश्चन्द्र नामवाला ॥ ४६ ॥ जब हैहय और तालजंघ आदि चन्द्रवंशियों के समूह ने बाहु नामक राजा को जीतलिया तब वह अनादर पाकर वन में गया और रानी भी गर्भवती थी तोभी उसके पीछे प्रीति रखनेवाली हुई अर्थात् उसके साथ गई ॥ ४८ ॥ उसके भोजन में उसकी सोकने विष डाल दिया , इस विचार से कि इसका गर्भ गिर जावेगा. वह गर्भ सात वर्ष तक जड़ रूप होगया वहीं पर (उसी वन में) उस गर्भ के पिता (बाहु) ने शरीर छोड दिया ॥ ४९ ॥

रानी सु लगी प्रविसन चिताहि, जब आय निवारिय और्व जाहि ॥
इम कहिय उदर तव गर्भ एस, नखुं होहिँ चक्रवर्ती नरेस॥ ५० ॥
इम ताहि वरजि निज उटज लाय, रानी मुनि रक्खिय हित रचाय॥
तहिँ काल सगर हुव बाल तास, यातें तस नामहु सगर३८ आसं॥
व्रतगुन१ लिवाय तिहिँ सास्त्र१ वेद२, आग्नेय अस्त्र३ सस्त्रन प्रभेद४॥
इत्यादि सिखाये और्व जाहि। इकदिन सुत पुच्छिय अंबिकाहि॥५२॥
क्यों काल निकासत अत्थ माय, सो देत भई तब सब सुनाय ॥
सुनि सगर कुप्पि टंकारि चाप, आयउ निज सत्रुन हनन आप॥५३॥
जुरि जक्खन हैहय तालजंघ, संग्राम हने परपत्तिसंघ ॥
भजिगय वसिष्टपहँ कति विभोन, पुनि कहिय देहु मुनि हमहिं प्रान।
मुनि कहिय मिच्छे होवहु समस्त, तजि सगर दर्प तिम होत त्रस्त।
किन्नें सिर मुंडित१ जवन केक, इम करिय अर्द्धमुंडित२ अनेक॥५५॥
दुरकर्म रहित पन१ कतिन आपि, सक जाति२ करे अत्यंत थप्पि ॥
पारद ३ अरु पल्लहवँ ४ केक कीन,
मुख लोम अकर्तन ३।४ तिनहिँ दीन ॥ ५६ ॥
परिभूत सगरसन अपसंस, वहु मिच्छ भये इम चंद्र वंस ॥

रानी चिता में घुसने लगी ॥ और्व ऋषि ने रानी १ निवारण की ॥ ५० ॥ पर्णकुटी में लाकर २ रानी को [illegible] समय आने पर विष के सहित बालक हुआ इसी कारण से उस का नाम सगर ३ हुआ ॥ ५१ ॥ ३ अग्नि [illegible] ४ माता को पूछा ॥ ५२ ॥ हे माता हम यहां पर समय क्यों निकालते हैं ॥ ५३ ॥ १० शत्रुओं के समूह को [illegible] दिया [illegible] ॥ ५४ ॥ २ और [illegible] ([illegible]) को जा कर, जब वे मुनि के कहने अनुसार नीच आनि वाले होवेंगे तब उ[illegible] [illegible] को कराद में छोड़ दिया, [illegible] के सिर मुंडवा दिये और किसी का आधा मुंडन करा दिया ॥ ५५ ॥ किसनों को ऐसा कर दिया कि जिनके पास [illegible] ([illegible]) का [illegible] ही नहीं रहा, [illegible] ([illegible] आदि [illegible]) [illegible] म्लेच्छ देश में [illegible] और किसी को [illegible] ([illegible] आदि [illegible]) [illegible] नहीं [illegible] आदि के [illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible] सगर से हार कर

असपत्न[1] सगर३८लिय राज्य आनि, भो द्वीपसप्त७पालक प्रमानि
व्याह्यो हुव २ रानी सगर बासे[2], इक१कस्यपतनया सुमति१नाम॥
दूजी२बिदर्भनृप आत्मजा[3] सु, सुभरूप केसिनी२नाम तासु॥५८॥
मुनिआर्व[4] सेय मंगे दुहू२न,सुतछअयुत[5]६००००अरु इक१बलअनून[6]
क्रम सुमति१जने छ अयुत६००००कुमार,
असमंजस३९।१केसिनि२इक१उदार॥५९॥
थल्लिय असमंजस३९अति कुचाल, हुव अंसुमान४०तस हे नृपाल
सुभकर्म बिगारत लखि स्वभाय, त्याग्यो असमंजस सगरराय ६०
इतरहु[7] सुत असमंजस निसर्ग[8], विध्वस्त करत हुव धर्म गर्व[9]॥
कपिलावतारको सरन पाय, तिन प्रति पुकार किय द्विजन जाय॥
प्रभु कहिय नास पैहैं ति[10] दुष्ट, हयमेध रचिय इत सगर तुष्ट॥
कोउक मखहय[11]कौं कपिल पास, लैगो कैंजाक[12] छुसि[13] अप्रकास६२
खोजन तिंहिं छअयुत६००००सगरपुत्त,जवकरि[14]भुवविचरेप्रसभजुत्त॥
भुवहेरिखनन[15]अधलोक कुम्मि,बटिइक१इक१जोजन खनिय भुम्मि
पाताल जाय पिक्ख्यो स्वबाजि[16], कपिलहु ढिग जानैं कुहक[17] रीति
दौरे तिन्ह मारन बकि अखर्व, प्रभु कछुक पिक्खि किय भस्म सर्व
नाती तब पठयो अंसुमान ४०, जिहिं आय कपिल सेये सुजान॥

प्रशंसा हीन बहुत चन्द्रवंशी म्लेच्छ होगये. सगर ने १ बिना शत्रु (निष्कंटक) होकर अपना राज्य पीछा लिया ॥ ५७ ॥ २ स्त्रियां ३ पुत्री॥५८॥४और्व मुनि की सेवा करके दोनों रानियों ने पुत्र मांगे जिनमें एक ने५साठ हजार और एक ने ६ बडा बलवान् पुत्र मांगा ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ७ दूसरे पुत्र भी असमंजस के जैसे ८ स्वभाववाले ही थे जिन्होंने धर्म के समूह का ९ नाश किया ॥ ६१ ॥ १० ते (वे) दुष्ट नाश पावेंगे१२ किसी युद्ध करानेवाले (छली) ने छाने १३ छलकर ११ यज्ञ के घोड़े को कपिलदेव के पास जाबांधा ॥ ६२ ॥ १४ शीघ्रता करके हठ पूर्वक १५ पाताल को खोदने लगे और एक एक ने एक एक योजन भूमि बांट कर खोदी ॥ ६३ ॥ १६अपने घोड़े को देखा और पास देख कर कपिलदेव को ही १७ छली जाना कि घोड़ा चुराकर अब तपस्वी बन बैठा है ॥ ६४ ॥ इन साठ हजार पुत्रों को

हरि ह्वै प्रसन्न दै तुरग ताहि, पुनि कहिय कछुक वर लेहु चाहि॥६५
अंजलि करि बुल्लिय अंसुमान, थप्पहु मम पितरन मुक्ति थान ॥
हरि कहिय पौत्र ह्वै है त्वदीय, गंगा जो आनहिं भुव गरीय॥६६॥
तब तुज्झ पितृ४यकै लहहिं मुक्ति, अश्वहिं यह लायो सु सुनि उक्ति
सगरहु विरक्त करि मख सुढार, दिय राज्य अंसुमान४०हिं उदार
याकै दिलीप४१सुत हुव अजेय, सुत तास भगीरथ ४२ नामधेय॥
जिहिं नाकनदी५ भुवलोक आनि, किय पितर मुक्तमनभक्ति मानि
सुत अंबरीष४३ताकै सुधाम, ताकै हुव सिंधुद्वीप४४नाम ॥
ऋतुपर्ण४५तास लहि नल सहाय, सिक्ख्यो जु अक्ष६विद्या सुभाय
तस सर्वकाम४६तस सुप्रकास४७, ताकै सुदास४८सौदास४९तास
जिहिं नाम मित्रसह४९अपर७आहि, इक काल गयो मृगया८ उमाहि
रक्खस९ दुव ह्वै तहँ व्याघ्र रूप, तिनमैं इक१ मारयो भयंद१० भूप ॥
तब अक्खि बैर लैहौं छितीप२, गो पिहितै११ होय भजि छलैं१२गरीय॥७०॥
नृप मित्रसह४९हु आयो निकेत१३, आरंभिय अध्वर१४ धर्म हेत ॥
बनि तब वसिष्ठ औसिर१५ सु आय, बुल्ल्यो वै१६ देहु नरपल१७ जिमाय
गुरु गिनि नृप हुव आशा अधीन, पुनि खल१८ ह्वै सूद१९ सु सिद्ध कीन
भो पिहितै२० दुष्ट नृपहिं सु दिखाय, अनुचित बसिष्ठ मन्नी सु जाय ॥

भस्म हुए जानकर सगर ने अपने पोते अंशुमान् को भेजा ॥ ६५ ॥ १ हाथ जोड़ कर बोला २ मेरे साठ हजार मरे हुए पितरों को ३ कपिलदेव ने कहा कि तेरे पोता होवेगा वह भारी गंगा नदी को लावेगा ॥ ६६ ॥ तब तुम्हारे ४ बड़े मुक्ति पावेंगे ॥ ६७ ॥ ५ जिसने स्वर्ग की नदी को भूमि लोक में लाकर अपने पितरों का उद्धार किया ॥ ६८ ॥ ६ द्यूतविद्या ७ दूसरा नाम ८ शिकार गया ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ९ राक्षस १० भय देनेवाला (भयंकर) व्याघ्र का ११ अन्तर्धान होकर १२ छल में भागा ॥ ७१ ॥ १३ अपने घर १४ यज्ञ का आरंभ किया तब उस १५ राक्षस ने वसिष्ठ मुनि का स्वरूप करके राजा से कहा कि १६ खान १७ मनुष्य का मांस जिमा दो। ७२। उसको गुरु जानकर राजा उस १८ अधम (नीच) के आधीन होगया, फिर उसी राक्षस ने १९ रसोईदार होकर पकाया २० अन्तर्धान होगया ॥ ७३ ॥

अक्खिय नृप नरपल हमहिँ देत, क्रव्याद होहु यातैं कुचेत॥७४॥
नृप कहिय कह्यो तुमही निदान, सुनि मुनिहु लखी सब विधि ध्यान
वुल्लै अब बारह१२ अब्द होहु, जल लेत भयो तब सपन सोहु॥
रानी मदयंती दिय निवारि, दिन्नौं तब जल निज पयन डारि॥७५॥
यातैं सु होय कल्मापपाद४९, क्रव्याद भयो नृप अप्रमाद॥
छट्ठे६दिन दुर्मति प्रबल पाय, खेले लग्गो सु मनुजन खिसाय॥७६॥
इक समय मुदित मोहन प्रसक्त, देखे द्विज दंपति नेह अक्त॥
तिनमाँहिँ नरहिँ लग्गो सु खान, पतनी तस जाँचिय देहु मान॥७७॥
न भई कृतार्थ मैं नरननाह, अब रुद्द करहु खावन उछाह॥
मन्नी न तदपि नृप लियउ खाय, सहगमन द्विजा विरचिय सुभाय॥
दिय नृपहिँ साप करिहै व्यवाय, कामुक तब तजिहै तूहु काय॥
तदनंतर बारह१२लंघि बर्ष, निज रूप पाय नृप हुव सहर्ष॥७९॥
लोलुप मदयंती अंक लिन्न, दयिता सु साप सुमिरायदिन्न॥
तब ताहि छोरि वंदे वसिष्ठ, अक्खी ब करहु इहिँ गर्भ लिष्ठ॥

मनुष्यों का मांस हमको देता है इस कारण से राक्षस होजा, राजा ने कहा कि तुमने ही तो कहा है इसका कारण तो तुम ही हो, यह सुन कर वसिष्ठ ने ध्यान करके सब बात को जान ली।७४।बारह वर्ष तक राक्षस हो ओ यह जब वसिष्ठ ने कहा तब राजा ने भी श्राप देने के लिये हाथ में पानी लिया जब मदयंती नाम रानी ने राजा को मना किया तब उस जल को राजा ने अपने ही पगों पर डाल दिया॥ ७५॥ जिससे राजा के पग काले होगये इससे उसका नाम ही कल्माषपाद हुआ, वह सावधानता पूर्वक राक्षस हुआ खोटी बुद्धि पाकर क्रोध करके मनुष्यों को खाने लगा॥ ७६॥ एक समय ब्राह्मण जाति के स्त्री पुरुष को स्नेह युक्त मैथुन करने में आसक्त देखे जिनमें से जब पुरुष को खाने लगा तब स्त्री ने याचना की कि इसके प्राण मुझे दे॥ ७७॥ मैं कृतकार्य नहीं हुई हूं इसकारण से खाने के उच्छाह को रोक. तोभी राजा ने नहीं मानी और जब उस ब्राह्मण को खालिया तब वह ब्राह्मणी भी जल गई॥ ७८॥ उस ब्राह्मणी ने राजा को श्राप दिया कि जब तू भी मैथुन करैगा तब हे कामी तू भी शरीर छोडेगा॥ ७९॥ बारह वर्ष का श्राप भोगे पीछे अपना स्वरूप पाये पीछे अत्यन्त लोभी होकर राजा मित्रसह ने मदयन्ती राणी को भुजपाश में ली जब स्त्री ने श्राप की याद दिलाई

तब मुनि वसिष्ठ आधान तास, नैगम मग रक्खिय सुख निरास॥
मदयंती स्वोदर[१] अस्म[२] मारि, निजगर्भ लह्यो चिर[३] सहि निकारि।८१।
यातैं सु अस्मक५०हि हुव अनूप, ताकै हुव मूलक५१भीरु[४] भूप ॥
जो राम करत नच्छत्रदेस[५], नारिन छिपाय रक्ख्यो नरेस॥ ८२ ॥
नारीकवच५१हु इत तास नाम, ताकै सुत दसरथ५२धर्मधाम ॥
सुत तास भयो इलविल ५३ सुभास,
तस बिश्वसह ५४ रु खट्वांग ५५ तास ॥ ८३ ॥
जिहिं सुर[६] सहाय करि रन अजेय, मारे नृप आसुर अप्रमेय[७]॥
वरलेहु कह्यो तब सुरन जाहि, बुल्ल्यो मम आयु[८] खिल[९] कतिक[१०] आंहि ।८४।
सु मुहूर्त[११] १ बतायउ सुरन सेस[१२], बुल्ल्यो तव पहुँचौं अवहि देस ॥
तब सुरन पठायउ सीघ्र तत्थ, सो हुव कृतार्थ तजि त्रि३गुन[१३]सत्थ।८५।
हुव दीर्घबाहु५६ताकै कुमार, ताकै रघु५७ताकै अज५८उदार ॥
अजकै नृप दसरथ ५९ भाग्यवान,
श्रीराम ६०।१ आदि चउ ४ तरु सुजान ॥ ८६ ॥
कौसल्या औरस[१४] रामचंद्र ६०।१, भरत६०।२सु कैकेई सुत अतंद्र[१५]॥
सत्रुघ्न६०।३रु लक्खन६०।४धर्मधीर, प्रकटे ति सुमित्रामैं प्रवीर।८७।
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्र-

तब राणी को छोड कर वसिष्ठ मुनि से नमस्कार करके कहा कि आप के कारण मैं तो स्त्री संग नहीं करसक्ता अब आप इस राणी को गर्भवती करो ॥ ८० ॥ मुनि ने वेदमार्ग से राणी के गर्भ रक्खा. ३ बहुत समय तक सहन किये पीछे राणी ने अपने १ उदर (पेट) पर २ पत्थर मार कर गर्भ का निकाल किया ॥ ८१ ॥ इसकारण से उसका नाम अश्मक हुआ. ४ कायर ५ जब परशुराम भूमि को नक्षत्री करने लगे तब मूलक नामक राजा को स्त्रियों ने छिपा रक्खा ॥ ८२ ॥ इसीसे उसका नाम नारीकवच प्रसिद्ध हुआ॥ ८३ ॥ ६ देवताओं की सहाय करके ७ बिना गिनती के असुर मारे जब देवताओं ने कहा कि वर मांग. तब राजा ने कहा कि८मेरी आयु ९ बाकी कितनी१० है ॥८४॥ देवताओं ने ११ दो घड़ी आयु १२ बाकी बताई. १३ सत, रज, तम का साथ छोड (मुक्त हो) कर ॥ ८५ ॥ कौसल्या के १४ उदर से १५ निरालसी ॥ ८७ ॥

चग्डासिवंशवर्णने बसुदेव८६वला८६।१ बिवहनसमसूर्यवंशसमुद्देश सङ्गतवैवस्वतमनुसुतशर्याति१मगाधिष्ट२ नभग३ नरिष्यन्त४वृषकेतु५सन्ततिसूचनमुख्येक्ष्वाकु१वंशान्तर्भूतविकुक्षिवंशपरम्पराप्राप्तसुतचतुष्क ४ दशरथावसानाऽन्ववायसमाख्यानं सप्तत्रिंशो३७मयूखः ॥३७॥ आदित एकोनाशीतितमः ॥७९॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

दसरथकै चउ४सुत उदित, उपजे प्रभु अवतार ॥
पायउ बेस[1] किसोर[2] पुनि, भुम्मि उतारन भार ॥१॥

षट्पात्

जँहँ कौसिक मुनिराय राम६०।१लक्खन ६०।२जँचे[3] जब ॥
कौसलेस[4] अकुलाय[5] निट्ठि तिन संग दये तब ॥
लै कुमरन गाधेय[6] आन लग्गे निज आश्रम ॥
रात्रिंचरी[7] मग रुक्कि मिली बिच चहि कराल क्रम ॥
ताडका नाम बिक्रम अतुल सो रघुवर मारिय सहज ॥
मुनि रचिय सत्र[8] अप्पन उटज[9] बढिय तत्थ क्रव्याद[10] व्रज[11] ॥२॥
मिलि सुबाहु१मारीच२आदि रक्खस अति साहस ॥
अध्वर[12] नासन[13] आय रचे बिग्रह[14] बिरोध बस ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में चहुवाण वसुदेव और वेला के विवाह समय में सूर्यवंश के कथन के साथ वैवस्वत मनु के पुत्र शर्याति-मगधिष्ठ-नभग-नरिष्यन्त-वृषकेतु के सन्तान की सूचना में मुख्य इक्ष्वाकु वंश के भीतर विकुक्षि के वंश के अनुक्रम (पीढियों) को प्राप्त होकर अंतिम वंश दशरथ के चार पुत्रों के श्रेष्ठ आख्यान का सैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३७ ॥ और आदि से उन्यासी मयूख हुए ॥ ७९ ॥

१ अवस्था २ दश वर्ष से ऊपर और पन्द्रह से नीचे किशोर अवस्था कहलाती है ॥ १ ॥ ३ मांगे ४ दशरथ ने ५ कठिनाई से ६ विश्वामित्र ७राक्षसी८यज्ञ ९अपनी पर्णकुटी में १० राक्षसों का ११ समूह ॥ २ ॥ १२ यज्ञ का १३ नाश करने को १४ युद्ध रचा.

तबहि चाप टंकारि राम मारिय सुबाहु रन ॥
पुंख[1] पवन मारीच जलधि डारिय सत१०जोजन ॥
कौसिक स्वकीय मख सिद्ध करि जनक[2] सत्र पिक्खन चलिय ॥
तहँ उपल[3] रूप गोतम तियहिं परसि पाय प्रभु मुक्ति दिय॥३॥

दोहा

पहुँचे पुनि मिथिला पुरी, आयउ सम्मुह विदेह ॥
कौसिक[4] १कुमर२वधायकैं, नगर लये धरि नेह॥४॥
उच्छव दिन नृप इक्कठे. सकल करे मखसाल[5] ॥
कह्यो चढावहु चापकौं, लहहु जानकी लाल ॥५॥

षट्पात्

रावनसे जहँ कैंखि[6] करखि हारे कोदंडहिं[7] ॥
इतर नृपहु हत ओज बिमद हुव[8] परसि प्रचंडहिं[9] ॥
जनक भूप यह जानि कहिय अनुचित पैंन[10] किन्नौं ॥
[13]अवितत कन्न्याकाल[12] दिष्ट पुत्रिग[11] हत दिन्नौं ॥
गत छैत्र[14] बीज आसत धरनि कुप्पि सु[15] सुनि लक्खन कहिय
अनुचित बिदेह जंपहु[16] यह न मन्नहु प्रभु रघुकुल महिय ॥६॥

दोहा

है न मोहि अग्रज[17] हुकम, कितो सरासन[18] काम ॥
तृन जिम तोरौं कर करखि, रुचि जो धारहिं राम॥७॥

षट्पात्

१बाण के पांखों के पवन से मारीच को समुद्र में डाला २राजा जनक के यज्ञ को देखने चले ३पाषाण ४विश्वामित्र और दोनों कुमरों(राम लक्ष्मण)को ५यज्ञ शाला में ६ खेंच खेंच कर ७ धनुष को ८ दूसरे राजा भी हतक्रान्ति होकर मद रहित होगये ९ भयंकर धनुष का स्पर्श करके १० मैंने यह नेम अनुचित किया, १३ दैव ने कन्यापन का १२ समय ११ न्यून दिया और भूमि के ऊपर १४ क्षत्रियों का बीज गया हुआ मालूम होता है १५ सो (यह) सुन कर लक्ष्मण ने कहा कि यह अनुचित मत १६ कहो॥१६॥ १७ बड़े भाई का १८ धनुष चढाने का कार्य कितना है॥ १७ ॥

सेसं[1] कथन यह सुनत अखिल चितये[2] कुमरन इत ॥
कौसिक मुनि तहँ कहिय देहु रघुराज चाप चित ॥
सुनि समेटि पटपीत अखिल प्रेरक[3] हसि उट्ठिय ॥
रहे निरखि रुद्रादि[4] मिलत लस्तक[5] प्रभु मुट्ठिय ॥
कंपात धरनि धनु करि निकट बाम सु करपल्लव[6] गहिय ॥
सद्दूल[7] छुधित[8] डगधरि समुख गड्डरि जनु खिल्लति[9] गहिय॥८॥
कर घल्लत कोदंड[10] चकित दिकपाल चमंकिय ॥
चलि[11] पब्बय भुव चक्र सक्र[12]१संकर२अंबुज[13]३संकिय ॥
कौसलराज कुमार करखि टंकारि सहज क्रम ॥
तृन सम डारिय तोरि दुसह दुव२खंड अरिंदम[14] ॥
पिक्खिय बिदेह अंतहपुरेहु[15] गुंन[16] अवाज लोकन गई ॥
श्रीराम बरस द्वादस१२समय जनक टेक जानन दई ॥९॥
मैथिल नृप अतिमुदित पत्र साकेत[17] पठायउ ॥
सहित भरत१सत्रुघ्न२अधिप दरसथ तहँ आयउ ॥
सीरध्वज[18] नृप समुख बिहित क्रम जाय बधाये ॥
लग्न उदय चउ४ललित रूच्य[19] तोरन पधराये ॥
नीराजनादि[20] सब सद्धि नय[21] सतानंद मुनि अग्ग सरि ॥
मंडप प्रदेस आनैं मुदित क्रम अर्चन निगमोक्त करि॥१०॥

---

१ लक्ष्मण का यह कहना सुन कर सब कुमरों की ओर २देखने लगे ३सम्पूर्ण संसार को प्रेरणा करनेवाले (परमेश्वर) ४महादेव को आदि लेकर सब देख रहे थे. ५धनुष के मध्यभाग (मूँठ) पर रामचन्द्र की मुट्ठी मिलते ही भूमि को धुजाते हुए धनुष को समीप लेकर वाम हाथ की ६ अंगुलियों में ग्रास किया सो मानों ९खेलते हुए ८ भूखे ७ सिंह ने सामने पैंड देकर भेड़ पकड़ा॥ ८॥ १० धनुष पर हाथ घालते ही दिशाओं के हाथी चकित होकर चौंक गये और भूमि का गोला और पर्वत ११ चलायमान होगये १२ इन्द्र शिव और १३ ब्रह्मा डरगये, १४ शत्रुओं को दंड देनेवाले १५जनाने ने भी देखा १६ प्रत्यंचा का शब्द॥ ९ ॥ १७ अयोध्या को पत्र भेजा १८राजा सीरध्वज (जनक) पेसवाई को गया, सुन्दर चार १९दुलहे २०आरती आदि सब २१नीति साधकर शतानन्द मुनि आगे चल कर वेद के कहे हुए क्रम से पूजन करके मंडपस्थान में लाया।१०।

(दोहा)

पीठ १ चरनधावन २ प्रमुख, रचि पुब्बावर राह ॥
किन्नौं कुमर चतुष्क ४ को, विधिजुत जनक विवाह ॥११॥
सीता १ दुलहनि समय गहि, दुल्लह राम १ उदार ॥
मंजु भरत २ वर मांडवी२, किय वामांग कुमार ॥ १२ ॥
इम पुनि लक्खन ३ ऊर्मिला३, निज किय धर्मनिधान ॥
सत्रुघ्न हु श्रुतकीर्त्ति ४ सुभ, व्याहिय उचित विधान॥ १३ ॥

(षट्पात्)

साकेतप चउ ४ सुतन पाणिपीडन सुभ सद्धिय ॥
दायज अगनित द्रव्य दास दासिय मैथिल दिय ॥
पटु विधि दंपति २ पुज्जि सिक्ख अप्पिय बरात सह॥
राम नाम अभिराम गलित किय राम अनाग्रह ॥
कोसला ससुख पहुँचे कुमर नृप लडाय रक्खे निकट॥
कैकेयराज तनया कुटिल बहुरि फंद डारिय बिकट॥१४॥
दुव २ अग्गै बरदान कथित दसरथ देनैं करि ॥
कैकेयी मन मुदित भूप किय प्रचुर अंक भरि ॥
अक्खिय तिहिं अवकास बहुरि मैं लहि लैहौं वर ॥
तिन्ह चाहत तबतैंहि सुगम पिक्ख्यो अब ओसर ॥
चिंतहु करार नृपसौं चविये कोसलेस भरतहिं करहु१ ॥

१आसन और चरण धोने आदि आगे पीछे की राह रच कर२मनोहर३अयोध्या के पति (दशरथ) ने चारों पुत्रों का शुभ ४ विवाह किया ५जनक ने६ सुन्दर विधि से ७ स्त्रीपुरुष के जोड़े को पूज कर बरात को सीख दी वहां रामचन्द्र ने विना ही आक्रमण (घेरा लगाने) के परशुराम के ८ मनोहर नाम को गलित कर दिया अर्थात् परशुराम का मान मर्दन किया९ कैकेय राजा की पुत्री [कैकेयी] ने फिर भयंकर फंदा डाला ॥ १४ ॥ दशरथ ने आगे कैकेयी को दो वरदान दिये थे कि जो कहेगी सो देवेंगे इसप्रकार कैकेयी को अंकमें लेकर बहुत मन प्रसन्न किया था, उसने कहा कि जब अवकाश होगा तब लेलूंगी १० अब समय देखा ११ राजा से कहा कि आपका करार याद करो और रामचन्द्र को वनवास देकर अयोध्या का

वनवास देहु रामहिं१बिदित अधिप इष्ट मम आदरहु ।१५।

(दोहा)

किय देवन याकी कुमति, हित निज साधक होय ॥
अक्खिय रानी याहितैं, दिज्जैं ए वर दोय २ ॥ १६ ॥

(षट्पात्)

सुनत वज्र सिर परिय कछुन अक्खिय हित३कातर ॥
पाटल४पट अप्पे सउत्ति जननी रघुबर कर ॥
निरखि तबहि सब नाथ जथा अभिषेक तथा गहि॥
सदा मुदित संक्रमित चलन लक्खन १ सीता २ चहि ॥
अटकेहु प्रनामि पितरन उभय २ भा जिम हठि संगहि भये
साकेत सहर उच्छव समय गजब फुट्टि हा रव गये ॥ १७ ॥
पट भूखन दिय पुष्प कलपद्रु १ लता २ पात्रन कँहँ ॥
सुण्हा५ जिम अज्जू६ सुमंतु७ तिन्ह रथ चढाय तँहँ ॥
किन्न गमन चउ ४ कोस प्रजा लग्गिय पहुँचावन ॥

राजा भरत को करो, यही मेरा प्रिय करके हे राजा मेरा आदर करो ॥१५॥
१ कैकेयी की २ इसीकारण से राणी ने कहा कि ॥ १६ ॥ ३ कैकेयी के स्नेह के कायर दशरथ ने पीछा कुछ नहीं कहा माता की सौति (सोक) कैकेयी ने रामचन्द्र के हाथ में ४ भगवां वस्त्र दिये जिनको देख कर सब के स्वामी रामचन्द्र ने राज्याभिषेक के वस्त्र लेवें इस माफिक ले- लिये, जो सदैव आनन्द से साथ चलते हैं उन लक्ष्मण और सीता ने साथ चलना चाहा जिनको मना किया तो भी माता पिता और सास ससुर को प्रणाम करके हठ के साथ छाया के समान साथ ही हुए. इसप्रकार अयोध्या शहर में उत्सव के समय गजब करनेवाला हाहाकार शब्द फूटगया ॥ १७ ॥ प्रफुल्लित होकर कल्पवृक्ष के समान रामचन्द्र ने और कल्पलता के समान सीता ने पात्रों को वस्त्र और आभूषण दिये अथवा कल्प वृक्ष और कल्पलता पुष्प देवे जैसे राचन्द्र और सीता ने पात्रों को वस्त्र और भूषण दिये और ५ स्नुषा (पुत्र की स्त्री) को ६ ससुरा चढावे ऐसे ७ सुमंत्र ने सीता को रथ पर चढाली और रामचन्द्र चार कोस गये वहां

बारि गहिर गुन बद्ध नैंक छोरत जिम नावन ॥
दसरथ नरेस करतैं बिछुटि किम तत्थहि ठहरन कहैं ॥
मखतूल रज्जु साकेत मन रामचन्द्र संगहि रहैं ॥ १८ ॥

दोहा

पक्ख बिसद मधु पंचमी१, तटिनी सरजू तीर ॥
नगर कोसलातैं निकसि, बसे रत्ति२ रघुबीर ॥ १९ ॥
सोवत तहँ परिहरि सबन, छिप्र कढे जगि छन्न ॥
तजि पुद्गल३ असु जिम तरल४, समल सुमंत्र प्रसन्न ॥ २० ॥
दूजे५दिवस मिलान दिय, शृंगबेर पुर सुद्ध ॥
ईस तहाँको गुह मिल्यो, प्रभुसन भिल्ल प्रबुद्ध६ ॥ २१ ॥
वय बसु८सम उपबीत लिय, बारह१२बेस बिवाह ॥
अब्द पचीसम२५किय अटन, राघव कानन राह ॥ २२ ॥

षट्पात्

शृंगबेर पुर सबन प्रनत लग्गो प्रभु पायन ॥
दिय सुमंतकहँ सिक्ख तत्थ परपुरुख परायन ॥
कहिय जाहु साकेत कहहु किय हुकम धनीको ॥

तक पहुंचाने को प्रजा साथ लगी. जैसे गहरे जल में रस्सी से बंधी हुई नाव थोड़ी सी छोडते ही वहां नहीं ठहर सकती तैसे ही प्रजा रूपी नाव दशरथ के हाथ से छूट कर वहीं पर कैसे ठहर सक्ती है. रेसम की डोरी से बंधाहुआ अयोध्या का मन रामचंद्र के साथ ही रहता है ॥ १८ ॥ १ चैत्र सुदी पक्ष की पंचमी को सरजू नदी के तट पर २ रात्रि ॥ १९ ॥ ३ शरीर को छोड कर ४ चंचल प्राण चलाजाता है ऐसे रामचन्द्र सब को सोते हुए छोड कर छाने जगकर शीघ्र कढगये जिसके साथ सुमंत्र गया इससे वह मन से प्रसन्न रहा ॥ २० ॥ ५ मुकाम ६ बुद्धिमान् ॥ २१ ॥ रामचन्द्र ने आठ वर्ष की अवस्था में जनेऊ ली, बारह वर्ष की अवस्था में विवाह किया और पचीसवें वर्ष में वन के मार्ग में गमन किया ॥ २२ ॥ नम्रता सहित ७सब के आश्रय परम पुरुष विष्णु भगवान् ने ८ अयोध्या को जा और यह कहना कि जैसी स्वामी की आज्ञा थी वैसा कर आया हूं अर्थात् रामचन्द्र को वन में छोड आया हूं यदि ऐसा नहीं कहेगा तो कैकेयी टीक

कैकेयी करिहै न नतो प्रत्यय कछु नीको ॥
स्वीकृत न किन्न दसरथसचिव तदपि बुद्धि पलटाय तिम।
पठयो सुमंतु रथजुत पुरहिं अद्दरि बन रघुनाथ इम ॥२३॥

दोहा

सृंगबेर सन धरिय सब, बैखानस ब्रत१वेस२ ॥
बटपय तप्पा बंधिकै, अटन किन्न अखिलेस ॥२४॥
आश्रम भारद्वाज अब, पहुँचे पथन कृपाल ॥
कुस दब्बत अपदत्र[1] क्रम, बिलसत सानुज बाल ॥२५॥
रत्ति[2] निबसि पुनि गमन रचि, चित्रकूट नगपाल ॥
ऋषिजन अनुमत तहँ रहे, कछु दिन कड्डन काल ॥२६॥
बिजन[3] थान करि बास्तुबिधि[4], छदनन[5] छत्ति छवाय ॥
बसे मुदित बहु बासरन[6], रुचि करि तहँ रघुराय॥२७॥

षट्पात्

समय इक्क सौमित्रि गहन फल मूल गहन गय ॥
मैथिलजा१रघुमुकुट२लालित बिलसत उटजालय ॥
स्वपति अंक सीताहु सोय गहि गहिर गुडाका ॥
पुनि जगि पति पौढाय रही ससिजुत जिम राका ॥

विश्वास नहीं करैगी, यह सुमंत्र ने स्वीकार नहीं किया तोभी उसकी बुद्धि पलटाकर सुमंत्र को रथ सहित अयोध्या को भेज कर रामचन्द्र ने वन को आदर दिया (वन में गये) ॥ २३ ॥ शृंगवेर पुर से ही रामचन्द्र ने वानप्रस्थ का व्रत और भेस धारण किया. बड़ के वृक्ष के दूध से जटा बांध कर सब के स्वामी ने गमन किया ॥ २४ ॥ १पैदल विना पगरक्खी (जूते) डाभ को दवाते हुए छोटे भाई और स्त्री सहित विलास करने लगे ॥ २५ ॥ २ रात्रि में निवास करके ऋषियों के आज्ञाकारी होकर चित्रकूट नामक पर्वतराज में रहे ॥ २६ ॥ ३ निर्जन स्थल में ४ घर बनाने की भूमि को विधि पूर्वक ५ पत्तों से ऊपर की छत को छाकर ६ बहुत दिनों तक ॥ २७ ॥ ७ लक्ष्मण फल मूल ग्रहण करने को वन में गये सीता पर्णकुटी में अपने पति की गोदी में गहरी निद्रा लेकर सोई, फिर आप तो जग गई और पति को पौढा कर ऐसी रही जैसी चन्द्रमा को लेकर पूर्णिमा, वहां इन्द्र के पुत्र मूर्ख जयन्त ने

तहँ सठ जयंत वासव तनुज करटकाय छवि देखि छकि ॥
जननी उरोज चुंबन जहर त्रोटित्रय३मारिय तमकि ॥२८॥
अतुल[1] चंचु आघात चालिग सोनित[2] पिचकारिय ॥
प्रभु लग्गन भय पाय नहिन अंबा सु निवारिय ॥
छुवत छतज जगि छिप्र[3] सींक[4] धरि सहज ब्रह्मसर ॥
द्विक[5] पर मुक्कत दहन दहन लग्गिय तिहिं दुद्दर ॥
भ्रमि खल सभीक सकारि१४भवन सु पुनि आय राघव सरन ॥
असु पाय भयउ बंदत अभय चंडकिरनकुलपति चरन।२९।

दोहा

अक्खिय प्रभु निज अस्त्रसन, तू रक्खन निज तोर ॥
काकहिं इकदृग हीन करि, ज्वलन समावहु जोर ॥३०॥
समिटि सम्यौं तव ब्रह्मसर, करि जयंत कँहँ कान ॥
द्विककुल तबतैं इकदृग, यहहु धरत अभिधान ॥ ३१ ॥

(षट्पात्)

उत सुमंतु पुर जाय कहिय रघुवर जिम किन्नी ॥
दसरथ सुनत सदाह[6] द्रुतहि[7] तनु[8] निज तजि दिन्नी ॥
आये इत अखिलेस[9] भरत हो तव मामालय ॥

काकपक्षी का स्वरूप करके सीता माता के कुचों से विष चूसने के लिये खींच कर तीन चौंच मारी ॥ २८ ॥ चंचु के १ बहुत आघात से २ रुधिर ३ शीघ्र एक ४ तिनका लेकर ब्रह्मबाण करके ५ उस काक पर छोंडा उसकी अग्नि से वह जलने लगा. भय सहित वह दुष्ट चौदह लोकों में भ्रम कर फिर रामचन्द्र के शरण आया और प्राण पाकर सूर्यवंश के पति के चरणों में नमस्कार किया ॥ २९ ॥ रामचन्द्र ने अपने अस्त्र से कहा कि तू अपना तेज रखने के लिये इस काकपक्षी का एक नेत्र फौड़ कर अपनी अग्नि को सिमेट ले ॥ ३० ॥ तब अग्नि को समेट कर वह ब्रह्मशर आप भी शान्त होगया. जयंत को काणा किया जब से ही काक पक्षियां ने काण नाम धारण किया है ॥ ३१ ॥ ६ दाह सहित ७ शीघ्र ही अपना ८ शरीर छोड दिया ९ सब के स्वामी (रामचन्द्र) वन को आये तब भरत अपने मामा के घर थे जहां विरुद्ध

पिक्खि स्वपन प्रतिकूल गेह अप्पन आतुर गय ॥
बन राम बास १ नृपनास २ बलि सुनि बिहाल रोवत सतत ॥
निजमाय तरजि खिल दुव२जननि बंदन किय परि पय बिरत।३२॥
नृपहिं अप्पि तिलनीर भरत सकुटुंब सोक भरि ॥
नर नागर१जानपद२कटक१पुनि सचिव२संग करि ॥
चित्रकूट रुख चलिय संग लै गुह ढिग जावत ॥
पृतनादिक तजि पिट्ठि अग्ग पहुँच्यो अकुलावत ॥
नभरज बितान इत प्रभु निरखि लक्खन प्रति अक्खिय ललित॥
बिनु कटक खेह न इती बढत है खलु आवन भरत हित॥३३॥
सुनत एह सौमित्रि भनिय दासहिं प्रभु भेजहु ॥
अप्पहिं मारन आत लुंचि मैं तिहिं ऐहौं लहु ॥
किय वर्जित सुनि कोसलेस भरतहु इहिं अंतर ॥
इक मिजिल दल अग्ग सगुह पहुँचे अग्रेसर ॥
पहिचानि निट्ठि इतउत परत गिरत पाय प्रभु लाय गल ॥
आगम निदान पुच्छिय अभय कहहु भरत कौसल कुसल॥३४॥

(दोहा)

विजन मंत्र तव है कि बलि, है कि सत्रु मदहीन ॥
है कि जनक आमय रहित, प्रकटहु हेतु प्रवीन ॥ ३५ ॥

स्वप्न देख कर घबराकर अपने घर गये तहां रामचन्द्र का वन में जाना और फिर दशरथ का नाश सुन कर १ निरन्तर २ बाकी की ३ विशेष प्रीति युक्त होकर ॥ ३२ ॥ ४ तिलांजली देकर ५ नगर निवासी ६ देश में रहनेवालों को ७ सेना को पीछे छोड़ कर आगे पहुंचे. इधर रामचन्द्र ने आकाश में खेह को फैली हुई देख कर लक्ष्मण से मनोहर वचन कहे कि विना सेना के इतनी खेह नहीं बढती इससे निश्चय ही यह रज भरत के आने से है॥३३॥ ८ लक्ष्मण ९ लुंचन करके १० शीघ्र ११ सेना से एक मंजिल आगे १२ गुह सहित १३ सब से आगे १४ आने का कारण पूछ कर कहा कि हे भरत सम्पूर्ण कौसल देश कुशल है सो कहो. तुम्हारा मंत्र (सलाह) कोई दूसरा मनुष्य जानसक्ता है कि नहीं? फिर तुम्हारे शत्रु मदहीन हैं कि नहीं? पिता (दशरथ) रोग रहित हैं कि नहीं? हे प्रवीण इनका कारण प्रकट करो॥ ३५ ॥

(पद्धपात)

भरि लोचन सुनि भरत कहिय प्रभु जब इत आये ॥
दुख इहिँ सत्तम ७ दिनहि सुपहु परलोक सिधाये ॥
सून्य अमृत साकेत पट्ट निज धरहु पधारहु ॥
रुदन पुब्ब सुनि राम बिहित जनकहिँ दिय बारहु ॥
करि न्हान सरित मंदाकिनिय भरि उपहारन सुद्ध भुव ॥
विधि श्राद्ध सहि श्रद्धा वहुल छदनसदन पुनि आत हुव ॥३६॥
अह दूजे तँहँ आय मिले गुरुजनहु प्रसू मुख ॥
भरत सअंजलि भनिय स्वामि भुग्गहु नृपता सुख ॥
को लुप्पन प्रभु कहिय जनक संधा सुत जीवत ॥
राज्य दयित तुम करहु रण्ण हम भजहिँ धर्मरत ॥
मन्न्यौँ न राम जब इम मुरन लैबे व्रत दारुन लागिय ॥
निजसुतहिँ सत्यपालक निरखि कौसल्याहु निदेस किय ॥३७॥

(दोहा)

प्यारे अनुजहि पादुका, अप्पि जाहु रघुईस ॥
भरत उठावहिँ राज्यभर, सनंति तिन्हैं धरि सीस ॥३८॥
गगनहु हुव तिँहिँ खिन गिरा, भरत प्रबोधनं पाय ॥
करन देव द्विज काजकौं, रण्ण अटन रघुराय॥ ३९ ॥

आप इधर आये जिसके सातवें दिन इसी दुःख से वह श्रेष्ठ राजा परलोक सिधा गये अब अमृत रूपी अयोध्या का पाट शून्य है जिसको पधार कर धारण करो यह बात रामचन्द्र ने रुदन पूर्वक सुन कर पिता को जलांजली दी. सामग्री से शुद्ध भूमि को भर कर बहुत श्रद्धा से श्राद्ध करके फिर पत्तों के छाये हुए घर में आये ॥ ३६ ॥ दूसरे दिन माता आदि गुरुलोग भी आ मिले जब भरत ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे स्वामी राजापन का सुख भोगो तब रामचन्द्र ने कहा कि कौन ऐसा पुत्र है कि जो अपने जीते जी पिता की प्रतिज्ञा को लोपै. वह प्यारा राज तुम करो हम धर्म में प्रीति रख कर वन सेवन करेंगे १ कौसल्या ने आज्ञा की ॥ ३७ ॥ २ राज्यभार ३ नम्रता सहित ॥ ३८ ॥ उस समय आकाशवाणी हुई कि हे भरत ४ विशेष ज्ञान पाकर, देवता और ब्राह्मणों के कार्य करने को रामचन्द्र वन में जाते हैं ॥३९॥

आग्रह तजहु बिचारि इम, सुनि भरतहु मन सुद्ध ॥
प्रभुकी सिर धारि पादुका; बुल्लिय विदित प्रबुद्ध ॥ ४० ॥
तके जे व्रत राम तुम, अब तेही मम आहि ॥
राज्य करहिं प्रभु पावरी, आगम अवधि निबाहि ॥ ४१ ॥
अब्द चउद्दह१४लंघि इत, दैहो चित्त न देव ॥
देखहु तो निजदासको, आलय पावक एव ॥ ४२ ॥
बदि इम लै सब रामब्रत, सए कुटुंब निजसत्थ ॥
गहिय भरत साकेत मग, समुझि भविष्य समत्थ ॥ ४३ ॥
कछु अंतर साकेततैं, नंदीग्राम सुधाम ॥
भक्त रहिय तोलौं भरत, राह निहारत राम ॥ ४४ ॥

षट्पात्

जे प्रभु व्रत लिय भरत सचिव मुख कति न तेहि लिय ॥
इत रामहु छुपि अटन बिपिन दंडक प्रवेस किय ॥
तहँ विराध क्रव्याद गहिय सीता खावन हित ॥
भीमकाय पुनि भनिय चलहु न करहु मोचन चित ॥
सुनि प्रभु छुराय सैरध्वजिय मारि बिराधहिं दिय मुकति ॥
तिहिं कहिय भूभ गड्डहु तनुव गज१हमरअनु पावैं न गति ॥४५॥

यह विचार कर १हठ छोड दो २पावड़ी [खड़ाऊ] ३विद्वान् भरत बोले ॥४०॥ हे रामचन्द्र जो व्रत आपने लिये वे ही व्रत अब से मेरे हैं, आपके पीछे आने की अवधि तक आप की पावड़ी राज्य करैगी ॥ ४१ ॥ हे देव जो चौदह वर्ष लांघ कर इधर आने को चित्त नहीं देओगे तो आप के दास [भरत] के घर को अग्नि ही देखोगे अर्थात् घर सहित जलजाऊँगा ॥ ४२ ॥ यह कह कर जितने व्रत रामचन्द्र ने लिये थे वे ही नियम लेकर भरत ने सब कुटुम्ब को अपने साथ लेकर भावी को बलवान् जान कर अयोध्या का मार्ग लिया ।४३।४४॥ ४ सचिव आदि ने ५ दंडक वन में विराध नामक राक्षस ने सीता को पकड़ ली उस भयंकर शरीरवाले ने कहा कि चले जाओ ६ छुड़ाने का चित्त मत करो यह सुनके रामचन्द्र ने जानकी को छुडा कर विराध को मार कर मुक्ति दी उस विराध ने कहा कि मेरे शरीर को भूमि में गाड़ दो. खड्डे के विना हम पीछे गति नहीं पाते [राक्षस लोग खड्डे में गडने से ही गति पाते हैं] ।४५।

दोहा

पहुँचे करि तैसैंहि प्रभु, सारभंग संकेत ॥
मुनि स्वागत अनुसर मिले, हरि करि परि भरि हेत ॥४६॥

षट्पात्

सरनि लखत सरभंग निरखि निठ्ठिन रघुनायक ॥
प्रभुके लखत प्रविष्ट भये अप्पित्त सुभायक ॥
बालखिल्ल्य मुख विविध प्रभुहिं आये मुनि पिक्खन ॥
रदऊखल१दल१किरन२जल३रु पवना४ऽऽद घने जन ॥
किय अग्ग गमन रविकुलकलस जहँ अगस्त्य आश्रम उचित ॥
धरि दिव्य अस्त्र आवत लख्यो हरिहय हरि निज काजहित॥ ४७ ॥

दोहा

मुनि सुतीक्ष्ण आश्रम मुदित, वलि पहुँचे रघुवीर ॥
स्वागति किय तीनन सुमति, धरा नरोत्तम धीर ॥ ४८ ॥

षट्पात्

अक्खिय प्रभु किहिं ओर आहि घटभव मुनि आश्रम ॥
चलि सुतीक्ष्ण पहुँचान कहिय तव मग्ग प्रकार क्रम ॥
प्रभु सुनि पिप्पल विपिन१बहुरि लंघिय वदरीवन२ ॥

विराध ने कहा वैसे ही उनको भूमि में दबाकर शरभंग ऋषि के स्थान पर जाने का विराध ने संकेत [विराध ने मरते समय रामचन्द्र से कहा कि यहां से आप शरभंग मुनि के आश्रम पर जाइये वहां आपको बड़ा लाभ होवेगा उसी संकेत के अनुसार] बताया था उस माफिक वहां गये मुनि आये का आदर करके मिले और हरि [रामचन्द्र] ने नेह भर कर आलिङ्गन [भुजों से भर कर मिलना] किया ॥ ४६ ॥ मार्ग देखते हुए शरभंग ने नीठ नीठ रामचन्द्र को देखे और रामचन्द्र के देखते हुए अग्नि में प्रवेश कर गये वहां रामचन्द्र को देखने के लिये वालखिल्य आदि नानाप्रकार के मुनि आये उनमें रदऊखल(जिनके दन्त ऊखल का काम देते हैं) तथा पत्ते, सूर्य की किरणें, जल और पवन भक्षण करनेवाले बहुत थे. शरभंग ऋषि से अपने हित के लिये मिलने को हरे रंग के घोड़े रथ में जोत कर इंद्र आया था उसको रामचंद्र ने देखा ॥ ४७ ॥ १ पुनि २ मनुष्यों में उत्तम ॥ ४८ ॥ रामचद्र ने कहा कि ३ अगस्त्य का आश्रम किधर है ४ मार्ग का क्रम बताया १ पीपल वृक्षों

भिंटे*कुंभजभ्रात अग्ग विचरत पथ अंकन ॥
आतिथ्य पाय तिनसौं उचित घटभव मुनिके छदनघर ॥
पहुँचे सुतीक्षण पर्णौक सन प्रमित अठ८गव्यूति पर ॥४९॥

दोहा

मुनि अगस्त्य तहँ किय महत, प्रभुपूजन मुद पाय ॥
इंद्र गयो धरि अस्त्र जे, अप्पे रामहिं आय ॥ ५० ॥
अक्खयँ धनु१तूणा२ऽऽदि ए, हेति धरे रघु हेलि ॥
निरखे बहु देवन निलय, ठाये कलिमल ठेलि ॥ ५१ ॥
विचरत इम दंडक बिपिन, कढ़्ढि बरस दस१०काल ॥
बसे जाय प्रभु पंच५बट, सुभग विरचि छदसाल ॥ ५२ ॥

षट्पात्

पहिलैं इक मनुपुत्र भोज दांडिक्य भूप हुव ॥
सु लहि पुरोहित सुक्र भयउ प्रभु सत१००जोजँन भुव ॥
अरजा जिहिं अभिधान सुक्र तनया सु सयानी ॥
भुग्गी तिंहिं गहि भीत विजयँ खलनृप बिललानी ॥
कन्न्या सु कुकृत जनकहिं कहिय तमकिं सुक्र दिय साप तब ॥
ममँ थल निवारि सत्तम७दिवस यह भुव द८बहु धूलि अब॥५३॥

(दोहा)

सत्तम७दिन कँविके सपन, घन बुठ्ठिय रज घोर ॥

का यन * अगस्त्य के भाई से मिले१ मार्ग को चिन्हित करते हुए२सुतीक्ष्ण मुनि की पर्णकुटी से आठ गव्यूति (दो कोश को गव्यूति कहते हैं) अर्थात् सौलह कोश पर अगस्त्य मुनि की पर्णकुटी पर पहुँचे ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ३अक्षय धनुष भाथा आदि शस्त्र रघुवंश के सूर्य ने धारण किये और बहुत देवताओं के घर देखे४ प्रसिद्ध ५ पापों को हटाकर ॥५१॥ ६ पर्णकुटी रचकर ।५२। ७ चार सौ कोश की भूमि का स्वामी हुआ ८ अरजा नामक शुक्राचार्य की पुत्री को उस दुष्ट राजा ने पकड़ कर ९ विजय करके अथवा विमान में बिठाकर भागी जिसके भय से वह रोई, इस खोटे कृत्य को कन्या ने पिता (शुक्र) से कहा१०क्रोध करके११मेरे स्थल को छोडकर ॥ ५३ ॥ १२ शुक्र के श्राप से उस राजा के सीमा तक फैले हुए देश को रजकी वर्षा होकर दबा

तस जनपद जोजन सतक१००, दब्ब्यो सीमन दोर॥५४॥
बच्यो सुक्र आश्रम विहित, मित इक जोजन मान ॥
जनस्थान अभिधान जो, थिरा बिदित हुव थान ॥ ५५ ॥
बज्यो सब दंडक विपिन, दब्ब्यो जो रज देस ॥
बिरचत तामैं पंच५वट, इम पहुँचे अखिलेस ॥ ५६ ॥
जनस्थान बिच जिन दिनन, सहसन आसिर सत्थ ॥
रावनको थानौं रहत, मुख्य खरादि समत्थ ॥ ५७ ॥
ताके अंतिक समय तिहिं, सानुज राम ससीत ॥
पंच५वटी निवसे प्रथित, भुवनन करत अभीत ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने बसुदेव ६८ वेलो ६८।१ पयामसमयवर्णनविषयजयद्वत्तुर्जननसमुद्देशसङ्गतवैवस्वतात्मजनुरिक्ष्वाकु ६पट्टपपुत्रीबिकुक्षि ७ सन्ततिसमर्थनाऽन्तर्गतश्रीवैदेहीवल्लभचरित्रेश्रीरामपञ्चबटीनिवसनमष्टात्रिंशो३८मयूखः।३८। आदितोऽशीतितमः।८०।

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(हरिगीतम्)

अटमान दंडक रण्ण यौं रघुराज पंच५वटी रहे ॥

लिया ॥ ५४ ॥ १ एक जोजन प्रमाणवाला वह स्थान भूमि पर जनस्थान के नाम से प्रसिद्ध हुआ ॥ ५५ ॥ जिस देश को रज ने दबालिया था वह दंडक नाम से प्रसिद्ध हुआ २ सब के स्वामी ॥ ५६ ॥ ३ राक्षसों का साथ ४ खर को आदि लेकर बलवान् ॥ ५७ ॥ ५ उसीके समीप छोटे भाई सहित और सीता सहित प्रसिद्ध पंचवटी में वास किया ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय वर्णन करने के विषय (आश्रय) में सूर्य वंश के कीर्तन के साथ वैवस्वत मनु के पुत्र उत्पत्ति में इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन के भीतरश्रीसीता के प्यारे (रामचन्द्र) के चारित्र में रामचन्द्र का पंचवटी निवास करने का अड़तीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३८। और आदि से अस्सी मयूख हुए ।८०।

इसप्रकार दंडक वन में भ्रमण करतेहुए रामचंद्र पंचवटी में रहे

रचि पर्णसाल विसाल व्हाँ दिन सेस कड्ढनको चहे ॥
तिहिँठाँ बिभीखनसौं बडी वहिनी दसाननकी गई ॥
जिहिँ नाम सुप्पनखा सु रामहिँ रीझिकैं लखती भई ॥१॥
साजि रूप सुंदर यौं कह्यो करि मोहि राघव सुंदरी ॥
सौमित्रि आहि अदारकौं इक१दारहौं प्रभु उच्चरी ॥
तब जाय लक्खनको सुनावत सेस उत्तर यौं दये ॥
तजि स्वामिनीपनतैं वृथा यह किंकरीपन क्यौं लये ॥२॥
नहि खान१ पीवन२ सैंन३ चैन रु अैन४ है न निवासकौं ॥
सुनि रक्खसी पुनि जाय जंपिय लैन जानकि ग्रासकौं ॥
तब राम सस्मित सैनसौं अनुजात कड्ढि कृपानिका ॥
श्रुति१नक्क२कट्टि दई विडारि धुरीण जो अघधानिका ॥३॥
जनथानमैं तिहिँ जाय दूखन१सौं त्रिमस्तक२सौं कह्यो ॥
खर३सौं तथा कहि दुर्मुखी हिय जाय रावनको दह्यो ॥
जनथानसौं हु हजार सकारि १४००० रक्खसी पृतना चली ॥
रनघोर तानक बंब१आनक२व्है अचानक भू हली ॥ ४ ॥
लखि खेह अम्भ विदेहजा प्रभुनैं पठाय दरी दई ॥
तस द्वार लक्खन सज्ज रक्खि रु दिट्ठि अग्ग स्वयं लई ॥

पत्तों से छाई हुई पर्ण शाला में बाकी के दिन निकालने चाहे १ वहां पर रावण की बहिन २ शूर्पणखा ॥ १ ॥ हे रामचन्द्र मुझको तुम्हारी स्त्री बनालो जब रामचन्द्र ने कहा कि मैं तो एक स्त्री रखने का नियम रखनेवाला हूं और लक्ष्मण बिना स्त्रीवाला है उसको पति बना. तब वही वार्ता लक्ष्मण से कही. लक्ष्मण ने कहा कि मालिकपन को छोड कर दासीपन क्यों लेती है ॥ २ ॥ ३ रहने को घर भी नहीं है ४ राक्षसी ने यह सुन कर फिर रामचन्द्र से जाकर कहा कि मानो मुझे स्त्री बनालो नहीं तो सीता को खाजाऊंगी. हंसते हुए रामचन्द्र के इशारे से छोटे भाई (लक्ष्मण) ने तरवार निकाल कर कान और नाक काट कर निकाल दी जो पापों के आधार में मुख्य थी ॥ ३ ॥ १ दूषण नामक राक्षस से और त्रिशिरा नामक राक्षस से खोटे मुखवाली ने ६ सेना ७ और युद्ध को फैलानेवाले नक्कारे और नौबत बजकर ॥ ४ ॥ आकाश में खेह देख कर रामचन्द्र ने सीता को एक गुफा में भेज दी उस गुफा के द्वार पर

कट कच्छिकैं पट पीत उत्कट वल्गु बंधि जटावली ॥
कसि पिट्ठि अक्खय तून ज्यों फटकारि चाप लयो बली ।५।
सिर सेसके पय गहि संगर साँवरो समुहो भयो ॥
हनिकैं चउद्दह ही हजार१४००० अनीकको पद जो दयो ॥
घटिकाऽर्ध जुत्त मुहुत्त २।१ मैं निसचार चक्कहि चूरिकैं ॥
खर१ दूखन२ त्रिसिरा३ हनैं धनुज्यां दिसामुख पूरिकैं ।६।
दससीस चार अधीस वत्त यहै अकंपन जानिकैं ॥
बरनी निसाचरराजसौं पुरलंक आतुर आनिकैं ॥
बसि द्वैर मनुष्यन रग्गा दंडक स्वैरता बहु वित्थरी ॥
प्रभुकी स्वसा जिन नक्क१कर्ण२विहीन सूपणखा करी ।७।
जनथानको अपनौं अनीक खरादि३संजुत संहर्‌यो ॥
अपमान सो प्रभुको कुपावन काल कूरननैं कर्‌यो ॥
तिन संग है इक१नारि सुंदर अद्वितीय त्रि३लोकमैं ॥
हरि ताहि आनहु दुष्ट वे मरिहै परे तस सोकमैं ॥ ८ ॥
सुनि विश्रवासुत स्वीय मातुल पास जाय सुही कही ॥
मारीच हेमकुरंग व्है तुम जाहु दंडकमैं सही ॥
लैजाहु दूर लुभाय रामहिं मैं हरो जुवती जहाँ ॥
सुनि यौं नट्यो वह भाइने जहिँ मृत्युहै तुमरो तहाँ ॥ ९ ॥

लक्ष्मण को सन्निकट रख कर अपनी दृष्टि राक्षसों की ओर आगे दी और तीव्र होकर कमर पर पीताम्बर और सुन्दर जटा की पंक्ति को बांध ली १ भाथा २ प्रत्यंचा को फटकारके बलवान् (रामचन्द्र) ने धनुष लिया ॥ ५ ॥ ३ युद्ध में श्याम रंगवाले [रामचंद्र] सम्मुख हुए ४ सैन्य को वही सैन्य पद दिया अर्थात् सबको शयन करादिया ५ आधी घड़ी के सहित एक मुहूर्त [दो घड़ी] अर्थात् अढाई घड़ी में राक्षसों की सेना का चूर्ण करके ६ धनुष की प्रत्यंचा के शब्द से दिशाओं को पूर्ण करके ॥ ६ ॥ रावण के हलकारों के स्वामी अकंपन ने यह वृत्तान्त जान कर रावण से कही ७ दंडक वन में वास करके बहुत स्वतंत्रता फैलाई है. हे स्वामी आपकी बहिन सूर्पणखा को नाक और कान विना कर दी । ७ । ॥ ८ ॥ रावण ने यह सुनकर अपने मामा (मारीच) से जाकर कहा ८ भाणेज-

प्रभु राम है बलवानतैं न बिरोध चित्तहु धारिये ॥
सिखयो जिन्हैं यह मंत्र अप्पहिं ते स्वसत्रु बिचारिये ॥
इम पाय मातुलसौं प्रबोध स्वगेह रावनहू गयो ॥
इहिं काल सुप्पनखा हु आनन तास दिट्ठि निवेदयो ॥१०॥
रु कह्यो करी यह मो दसा जनथान सेन सबै हनी ॥
धिक्कार तावक भूपताकहँ जाहि जीवत यौं बनी ॥
भगिनी प्रबोधित कर्बुरेस बहोरि मातुलपैं गयो ॥
मगमैं महाबल बैनतेय प्रभाव जो लखतो भयो ॥ ११ ॥
खखइंदु१००जोजन उच्छ्रयी बहुपाद पादप साखपैं ॥
खगराज बैठिय आनि खावन कुम्भ१गैं२अभिलाखपैं ॥
तस भार तुट्टिय साख लुंबत बालखिल्ल्य समेतहीं ॥
तिहिं त्रोटिमैं गहि तातपैं उरगारि चल्लनकी चही ॥ १२ ॥
पथमाँहिं कौतुक पिक्खि यौं दससीस मातुलपैं सरयो ॥
मारीच याहि बहोरि हू प्रथमोक्त आसय उच्चरयो ॥
तब बिश्रवासुत कुप्पि अक्खिय तोहि तो अब मारिहौं ॥
नहिं जो करैं यह ओ करैं बहु थान मान बढारिहौं ॥१३॥

से नटा कि वहां तुम्हारा मृत्यु है ॥ ९ ॥ रामचंद्र ईश्वर हैं इसकारण बलवान् से चित्त में भी विरोध नहीं करना चाहिये. आपको जिसने यह सलाह दी है उसको अपना शत्रु मानो. मामा से ज्ञान पाकर रावण अपने घर गया, इसी-समय सूर्पणखा ने अपना मुख रावण को अर्पण किया (दिखाया) ॥ १० ॥ १ तेरे राजापन को २ राक्षसों का पति (रावण) अपनी बहिन को समझाकर मारीच के पास गया वहां मार्ग में ३गरुड़ के बडे बल का प्रभाव देखा ॥ ११ ॥ सौ योजन ऊंचे वड़ वृक्ष की शाखा पर एक हाथी और कच्छप को खाने को अभिलाषा से गरुड़ आकर बैठा उसके भार से वह शाखा टूटगई जिसके साठ हजार बालखिल्य ऋषि लटकरहे थे उनके सहित ही उस शाखा को चौंच में पकड़कर गरुड़ ने अपने पिता कश्यप के पास जाना चाहा ॥ १२ ॥ यह तमाशा मार्ग में देखकर रावण मामा के पास चला. ४पहिले कहा उसीमाफिक रावण ने क्रोध करके कहा कि तू मेरा कहना नहीं करैगा तो अभी मारडालूंगा और कहना करैगा तो बहुत स्थान देकर मान बढाऊंगा ॥ १३ ॥ मारीच ने दोनों

मारीच द्वैरदिस मिच्चुमैं लखि अच्छ श्रीअखिलेससौं ॥
खलसंग पंचवटी गयो तपनीय मृगबरवेससौं ॥
सीताहु हाटक एनकों लखि रामसौं बिनती करी ॥
गहिलेहु याकँहँ वा हनौं इहिं चर्मइष्ट हमैं बरी ॥ १४ ॥
तब सेस वारितहू चले सर चाप राम सम्हारिकैं ॥
लैजान राघवकों बिदूर चल्यो कुरंग विचारिकैं ॥
थपि मैथिली ढिग सेसकों प्रभु जाय एन सु मारयो ॥
वपु बान लग्गत हाय लक्खन हा प्रिया सु पुकारयो ॥१५॥
सुनि जानकी सु कह्यो हि देवर जाहु संकट तत्थ है ॥
सौमित्रि अक्खिय सर्बके प्रभु कौसलेस समत्थ है ॥
सुनि छद्मकातर कर्बुरध्वनि अप्प नाँ बिधुरा लहो ॥
जगदंब आक्खिय राम अर्क अथाय मोहि वृथा चहो ॥ १६ ॥
पठये कहा तुम केकईसुत राम मारन कज्जही ॥
सुनिकैं इती श्रुति मुंदि सेस अरण्यदेवनसौं कही ॥
तुम सक्खि रक्खहु जानकी जबलौं मुरौं लखि रामकौं ॥
इम अक्खि सेस चल्यो रु रावन सिद्ध पिक्खिय कामकौं ॥१७॥

ओर में मृत्यु देखकर रामचंद्र के हाथ से मरना ही अच्छा जाना। सोने का मृग बनकर २ सोना का मृग देख कर रामचंद्र से कहा कि इसको पकड़ लो अथवा मार डालो इसका चमड़ा मुझे प्यारा है सो मैंने स्वीकार किया है ॥ १४ ॥ उस समय लक्ष्मण के मना करने पर भी रामचंद्र चले. सीता के पास लक्ष्मण को रख कर रामचंद्र ने हरिण को मारा जिसके शरीर में बाण लगते ही हा लक्ष्मण हा प्रिया ऐसा शब्द उच्चारण किया ॥१५॥ सो सुनकर सीता ने कहा कि हे देवर तुम जाओ वहां संकट है. लक्ष्मण ने कहा कि रामचन्द्र सब के स्वामी बलवाले हैं छल से कायर हुए राक्षस का शब्द सुन कर आप विकलता को प्राप्त मत होओ (मत घबराओ) इस पर सीता ने कहा कि रामचन्द्र रूपी सूर्य को अस्त कराके तुम मुझको चाहते हो सो यह वृथा है ॥ १६ ॥ यह सुन कर कान मूँद कर लक्ष्मण ने वनदेवताओं से कहा कि सीता ने कहा जिसके तुम साक्षी हो. जब तक रामचंद्र को लेकर पीछा आऊं तब तक तुम सीता की रक्षा करना ॥ १७ ॥

धरि भिच्छुवेस रु वेसके अनुकूल टेर तहाँ दई ॥
कछु दैन लग्गिय मैथिली गहि तत्थ रावननैं लई ॥
निज नाम१रूप२प्रकासि चिंति अरोहि स्यंदनकों चल्यो ॥
तिहिं जात रोकि अनूरुको सुत आय आहव उज्झल्यो ॥१८॥
सु जटायु सट्ठि हजार६०००० हायन वैधरैं वटपैं रह्यो ॥
कित जात तस्कर मो छतैं करि लूट यों खलसों कह्यो ॥
तरु तोरि पच्छनै पोनतैं अवनी धुजावत उत्तर्यो ॥
नख१त्रोटि२कोटिन मारिकैं रथ हीन रावनकों कर्यो ॥१९॥
हय१सूत२मारत बेग मारुत नावलों अवनी धुकी ॥
खगराज पत्रन बाज बाजत गाज भद्दवकी लुकी ॥
मगमैं अचानक सिंह उठ्ठत आत अध्वग संकरैं ॥
गहि एक रावनकी जटायु करी सु क्यों न अलं करैं ॥२०॥
संकरैं१लंकरैं अन्त्यानुप्रासः ॥
कछुकालमैं खल हू सम्हारि रु चंद्रहास प्रहारिकैं
खगराज पच्छति दोहु२कट्टि दयो सु छोनिय डारिकैं ॥
रु बिमान पुष्पक चिंति बैठि खगेहलों उडि संचर्यो ॥
कढि ऋष्यमूक अहार्य पैं मन अग्ग धावनकों धर्यो ॥२१॥
तहँ जानकी कछु स्वीय भूखन उत्तरीय उतारिकैं ॥

भिक्षुक का वेस धारण किया और उस वेस के माफिक ही शब्द किया १ सीता को रथ पर चढा कर चला जिसको रोक कर अरुण का पुत्र(जटायु)युद्ध के लिये बढा ॥१८॥ वह जटायु साठ हज़ार वर्ष तक वैधरे नामी वड़ के वृत्त पर रहा था, जिसने चोर से कहा २ अपने पांखों के पवन से वृक्ष को तोड़ कर भूमि को धुजाता हुआ उतरा और क्रोड़ों नख और चंचू मार कर रावण को रथहीन कर दिया ॥१९॥ पवन के वेग से नाव धूजै जैसे भूमि धूजने लगी, जटायु के पंखों के बाजे बजने से भादव के मेघ की गर्जना छिपगई, और मार्ग में अचानक सिंह के उठने से मार्ग चलनेवाला सकड़ाई में आजाता है वह गति जटायु ने रावण की करी सो क्यों नहीं करै क्योंकि जटायु बल से पूर्ण था ॥२०॥ २खड्ग मार कर जटायु के दोनों पंख काट कर भूमि पर डाल दिये ४ ऋष्यमूक नामक पर्वत पर जानिकला और आगे दौड़ने का मन किया ॥२१॥ वहां सीता ने अपना

अध डारि रक्खस नैर जाय सती रही ब्रत धारिकैं ॥
प्रभुता बढाय बढाय दुष्ट दिखाय वैभवकों थक्यो ॥
जननी गिन्यौं तृन तुच्छ ह्वाँ वलि कोप उद्धत ह्वै वक्यो २२
भजि मोहिकों बचिहै न तो भखिलेहु याहि निसाचरी ॥
करि इक्क¹अब्द करार यौं जननी असोक बनी धरी ॥
इत पाय राम कलंब हाटक एन ह्वै निजरूपसौं ॥
परि छोरि पुद्गल गम्यलोक गयो सु उद्धरि कोपसौं ॥२३॥
मृग और लै तब राम बाहुरि सेसकौं बहुरायकैं ॥
अतिवेग दोउन¹पर्णआलय सून्य पिक्खिय आयकैं ॥
²अनुजात जावन निंदि राम बिलप्पि कातरता लई ॥
तहँ सेस अक्खिय कै सु ³न्हावन गोदिका तटपैं गई ॥२४॥
अथवा गई फल लूमकों इम आक्खि खोजन नीसरे ॥
प्रभुनैं कह्यो सब दुक्ख मैं लहि जानकी सुख वीसरे ॥
हिय फाँक होवत जात लक्खन ए विलाप धरे धनो॥
⁴प्रतिरुक्ख पुच्छत निक्खसे प्रभु लाप पीर घनी घनी ॥२५॥

भूषण और कंधे पर रखने का उपवस्त्र उतार दिया. नीचे डालकर राक्षस के पुर में जाकर वह सती (पतिव्रता) व्रत धारण करके रही, रावण अपना बडप्पन और वैभव दिखा दिखा कर थक गया जिसको माता (सीता) ने तृण से भी तुच्छ गिना फिर कोप में उद्धत होकर कहा कि॥ २२ ॥ मुझको सेवन करने से बचैगी नहीं तो हे राक्षसियो इसको खाजाओ, फिर एक वर्ष में मुझको स्वीकार नहीं करैगी तो मारडालूंगा ऐसा इकरार करके सीता को अशोक वाटिका में रख दी । इधर रामचन्द्र के बाण लगने से सोने का हरिण अपना राक्षस रूप होकर भूमि पर गिरके शरीर छोड जाने योग्य (स्वर्ग) लोक में कोप से निकल कर गया ॥ २३ ॥ रामचन्द्र दूसरा मृग मार कर लक्ष्मण को पीछे फेर कर आप भी पीछे फिरे ¹पर्णकुटी को छोटे ²भाई (लक्ष्मण) सीता को छोड कर चले गये जिसकी निन्दा करके रामचन्द्र ने विलाप करके कायरता पाई. ³गोदावरी नदी के किनारे गई होवेगी ॥ २४ ॥ रामचन्द्र ने कहा कि मैं सीता का सुख लेकर सब दुःख भूल गया था सो हे लक्ष्मण हृदय फटाजाता है. इसप्रकार के विलाप स्वामी (रामचन्द्र) ने धारण किये ⁴प्रत्येक वृक्ष से पूछते हुए ॥ २५ ॥

इम दोहु२दंडक अंतरागत क्रौंच काननमैं गये ॥
गहि तत्थ खावन काज कुप्पि कवंध रक्खसनैं लये ॥
इक१इक१जोजन लंब व्हाँ खल हत्थ दोउन२कट्टिकैं ॥
दिय मर्म छेदि गिराय बीरन दाव दुद्धर दट्टिकैं ॥ २६ ॥
तव पूर्वरूपहिं पाय रक्खस रामसौं नुतिकैं कह्यो ॥
गंधर्व मैं लहि साप राघव२ अंग आँसिरको लह्यो ॥
अब अप्प अप्पिय स्वर्ग ओ प्रभु जाहु है सबरी जहाँ१ ॥
रु मतंग आश्रम१ऋष्यमूक२पधारि खोज लहो तहाँ ॥२७॥
इम अक्खि गो वह ए उभै२सबरी निकेतनपैं गये ॥
तँहँ अर्चना उपहार तुच्छहु तास सम्मदसौं लये ॥
परिनामकैं प्रभु अग्ग आत्मसमाधिकैं सबरी जरी ॥
रु मतंग आश्रम यौं गये अनुजात संजुत श्रीहरी ॥ २८ ॥
वहु बिप्रराजन पाय पूजन पंपिकाँ तटपैं गये ॥
छवि तास पिक्खत श्रीनिवास बिसेसही बिरही भये ॥
पुनि राम लक्खननैं प्रबोधिय पंपिका तट पारपैं ॥
सुग्रीव ए निरखे धराधर ऋष्यमूक सुढारपैं ॥ २९ ॥
कपि च्यारि४कीसनसौं इहाँ यह बालिसौं बचिवे रह्यो ॥

दंडक वन से दूर आकर क्रौंचवन में गये वहां क्रोध करके खाने के लिये दोनों भाइयों को कबंध नामक राक्षस ने पकड़ लिया उसके एक एक योजन लंबे हाथ दोनों भाइयों ने काट कर मर्मस्थल वेध कर दुस्तर दाव से दबा दिया।२६।१स्तुति करके रामचंद्र से कहा कि२हे रामचंद्र३राक्षस का शरीर लिया है. अब४आपने स्वर्ग दिया है।२७।५भीलनी के घर पर गये वहां तुच्छ पूजन और तुच्छ सामग्री पाकर भी हर्ष के साथ लिये वहां रामचंद्र से प्रणाम करके आत्मसमाधि करके शबरी(भील की स्त्री)जल गई.६छोटे भाई सहित श्रीरामचन्द्र मतंग के आश्रम पर गये।२८।७पंपा नामक सरोवर की तीर पर गये, उस तालाब की विशेष शोभा देख कर लक्ष्मी के निवास (रामचन्द्र) बहुत विरही हुए वहां लक्ष्मण ने रामचंद्र को समझाया. ऋष्यमूक नामक श्रेष्ठ पर्वत के ऊपर से सुग्रीव ने पंपासर के परले किनारे इन (रामचंद्र) को देखा. सुग्रीव नामक बंदर चार बंदरों सहित बालि से बचने के अर्थ इस पर्वत पर रहा था जिसने जाना

जिहिं जीवते तजिहै न ए अब बालिनैं पठयो कहयो ॥
हनुमान निश्चय लैंनकौं तब विप्र आकृति उत्तरे ॥
धरि खंध दोउ२न ऋष्यमूक अधित्यका सुखसौं धरे ॥३०॥
तहँ अग्गिकौं करि सक्खि राघव १कीसराज२सखा भये ॥
कछु खोज पुच्छिय राम व्हाँ हनुमान प्रत्यय अप्पये ॥
केयूर१कुंडल२रम्य हंसक३उत्तरीय४निहारिकैं ॥
अनुजातसौं प्रभु उच्चरी लखि चिन्ह बच्छ बिचारिकैं ॥
सौमित्रि अक्खिय औरकी पहिचानि मोहि कछू नहीं ॥
पय नित्य बंदनतैं लखे जगदंब हंसक ए२सही ॥
सुनि राम सो प्रभु हे तथापि बिलप्पि रोदन वित्थरयो ॥
सुग्रीव१राघव२नैं परस्पर काज सद्धन स्वीकरयो ॥ ३२ ॥
कपिराज अक्खिय आत्मभू सन कीस ऋक्षरजा भयो ॥
इक दीर्घिका जल संगसौं ततकाल नारि सु व्है गयो ॥
तँहँ आय वासव पिक्खि ताकँहँ बीज उज्झिय अप्पनौं ॥

कि हम को मारने के अर्थ बालि ने इनको भेजा है सो अब ये नहीं छोडेंगे. ब्राह्मण का स्वरूप करके हनुमान् निश्चय करने को गया जिसने राम लक्ष्मण दोनों भाइयों को अपने कंधे पर रख कर पर्वत के मस्तक की भूमि पर जा रक्खा ॥ ३० ॥ वहां पर अग्नि को साक्षी करके रामचन्द्र और सुग्रीव सखा हुए जब रामचंद्र ने सीता का पता पूछा तब हनुमान् ने विश्वास कराने के लिये (जिसके करने से या दिखाने से प्रतीति होवे उसको प्रत्यय कहते हैं इसीको यावनीभाषा में सुबूत कहते हैं) भुजबंध, कुंडल, पगों में पहनने के कड़े और उपवस्त्र दिये जिनको देख कर रामचंद्र ने छोटे भाई से कहा कि हे वत्स (पुत्र) इनको विचारो कि सीता के ही हैं या नहीं ॥ ३१ ॥ लक्ष्मण ने कहा कि औरों की मुझे पहिचान नहीं है क्योंकि मैं कभी सीता के सामने नहीं देखता था परंतु पगों में नित्य नमस्कार करने के कारण जानता हूं कि ये पगों के कड़े अवश्य जगत्माता (सीता) के हैं यह सुनकर रामचन्द्र परमेश्वर थे तोभी विलाप करके रुदन करने लगे १ स्वीकार किया ॥ ३२ ॥ अब बालि और सुग्रीव की उत्पत्ति कहते हैं, सुग्रीव बोला कि ब्रह्मा से एक बंदर रींछों का अथवा बंदरों का राजा हुआ वह एक बावड़ी (वापी) के जल के संग से तुरत स्त्री होगया. वहां पर इन्द्र आया जिसने उस स्त्री को देख

परि तास बालनमाँहिं सो हुव बालि१बीर बली घनों ॥३३॥
पुनि तत्थ आयउ अर्क पिक्खत ताहुकी गति सो भई ॥
परि कंधराविच बीजमैं१कपिजुग्ग२यों हुव हे जई ॥
वनिता प्लवंगम व्हे अहोरि सु नैर किष्किंधा रह्यो ॥
परमेष्ठि सासन पाय हम जुत राज्यभार इहाँ लह्यो॥३४॥
सुनि बालि भो कपिराज अक्षप दुंदुभी तँहँ आयकैं॥
करि गज्ज अग्रज बुल्लयो सु जुरयोंहि रंग रिसायकैं ॥
कपिराजसौं सिर तास तुट्टि रु पाय ठोकर उच्छरयो ॥
सु मतंग आश्रम रत्त रंगन इक्क१जोजनपैं परयो ॥ ३५ ॥
लखि अज्ञ साप मतंग अप्पिय अत्थ खेपक आयहै ॥
तब तास मस्तकके हु मोवच टूक टूक गिरायहै ॥
इहिं हेतु बालि न अत्थ आवत यौं इहाँ रहिं मैं बच्यो ॥
मायावि नामक दुंदुभीसुत जंग व्हाँ बहुरयो रच्यो ॥३६॥
जब बालि सानुज सूर सम्मुह तास जुज्झनकौं गयो ॥

कर अपना वीर्य छोड़ा सो उस स्त्री के बालों में गिरा जिससे बालि नामक बीर पैदा हुआ ॥ ३३ ॥ फिर वहां पर सूर्य आया उसने उस स्त्री को देखा जिसकी भी वही गति हुई अर्थात् स्त्री को देखते ही सूर्य का वीर्य गिरा सो उस स्त्री के कंधे पर गिरा जिससे मैं [सुग्रीव] हुआ हे विजय पानेवाले (रामचंद्र) इसप्रकार दोनों बंदर हुए. वह स्त्री भी पीछा बंदर होकर किष्किंधा नामक नगर में रहा ? ब्रह्मा की आज्ञा पाकर ॥ ३४ ॥ बालि को बंदरों का राजा हुआ सुन कर राक्षस दुंदुभी (मय के पुत्र मायावी से और बालि से स्त्री के कारण वैर होगया था वही मायावी दुंदुभी का पुत्र हुआ जिस) ने आकर मेरे बड़े भाई (बालि) को बुलाया सो युद्ध में क्रोध करके जुड़ा उसका शिर टूट कर बालि की ठोकर लग कर उडा सो रुधिर से रंगा हुआ एक योजन पर मतंग ऋषि के आश्रम में पड़ा ॥ ३५ ॥ उस रुधिर को देख कर मतंग ने शाप दिया कि इसका फैंकनेवाला आवेगा तब मेरे वचन से उसका मस्तक टूकटूक होकर गिरेगा, इसकारण से बालि यहां नहीं आता है इसीसे मैं भी यहां आकर बचा हूं. और मायावी नामक दुंदुभी के पुत्र ने वहां फिर युद्ध रचा ॥ ३६ ॥ छोटे भाई ? (सुग्रीव) सहित पर्वत की गुफा में घुस कर तब से गुप्त होगया वहां एक वर्ष में पीछा आने का इक-

तब भज्जि सो खल कंदरा धसि छन्न सर्वनसौं भयो ॥
करि इक्क१अब्द करार व्हाँ बिलमाँहिं बालिहु संचरयो ॥
नहिं कोलपैं सु कढ्यो कढ्यो छतजात उब्बकि उच्छरयो।३७।
तब मैं भज्यो हत बालि जानि रु पैठि पत्तनमैं डरयो ॥
जुवराज अंगद थप्पि पंचन मोहि गद्दियपैं धरयो ॥
पुनि मारि दुंदुभिपुत्रकौं कढिकैं कपीश्वर गज्जयो ॥
हनुमान आदिक च्यारि४कीसे उपेत मैं तब भज्जयो ।३८।
खिजि बालि पिट्ठि लग्यो फिरे हम सर्व भूतलपैं जहाँ ॥
हनुमान प्राननत्रान तानक ऋष्यमूक कह्यो तहाँ ॥
तब खेत सुक्कत मेघलौं यह अद्रि पाय इहाँ बसे ॥
अब रावरे पय कंज पिक्खत त्रास१पाय२सबै नसे ॥ ३९ ॥
यह सुक्क दुंदुभि सीस फैंकहु बालि ज्यों प्रभु पायसौं ॥
सुनि फैंकि अंगुलसौं दयो चालीस४०कोस सु चायसौं ॥
कपिनैं कह्यो पुनि ताल सप्तक७बालि वेधत बान दै ॥
इन्ह अज्ज बेदहु अप्पहू किय सोहु स्वीकृत कान दै ॥४०॥
तब ऐंचि अक्खय तूनतैं इखु ईस इक्क१हि मुक्कयो ॥
तरु सत्त७भेदि रु भेदि सो गिरिसौं रसातललौं गयो ॥

रार करके वालि भी उस विल में घुस गया. उस कोल पर बालि तो नहीं निकला और रुधिर उबक कर निकला ॥ ३७ ॥ बालि को मराहुआ जान कर मैं वहांसे भागा और डर कर पुर में घुस गया १ बंदरों का राजा (बालि)२बंदरों सहित॥३८॥३हनुमान् ने प्राणों की रक्षा का फैलानेवाला ऋष्यमूक पर्वत बताया तब सूखतेहुए खेत पर मेघ के समान इस पर्वत को पाकर यहां बसे. अब आपके चरणकमल के देखने से भय और पाप सब मिटगये॥३९॥बालि ने जिसप्रकार दुंदुभी के मस्तक को फैंका था तिस प्रकार इस सूखे हुए मस्तक को आप भी पग से फैंकिये४पग के अंगूठे से चालीस कोश फैंक दिया, फिर सुग्रीव ने कहा कि ताड़ के सात वृक्षों को बालि बाण देकर बेधदेता है इनको आप भी आज वेधिये सो सुन कर रामचंद्र ने स्वीकार किया ॥ ४० ॥ तब अक्षय भाथा से बाण रामचंद्र ने छोडा सो उन सात वृक्षों

मुरिकैं बहोरि सुरोप राघवके कलापहिमैं रह्यो ॥
तब बालिपातनमाँहिं प्रत्यय अक्कअंगजनैं लह्यो ॥ ४१ ॥
प्रभुनैं प्लवंग सुकंठ जुज्झन बालिपैं पुनि मुक्कल्यो ॥
सुरराजके सुतसौं सु हारि बिहाल राघवपैं चल्यो ॥
तब राम सासन पाय सेस सुकंठ[2] कंठ यहै करी ॥
पहिचानिकौं गज[3]पुष्पिका व्रतती प्रफुल्लित लै धरी । ४२ ।
पुनि जु[4]ज्झकौं पठयो सु जानि रु इन्द्रकौं सुत आत भो ॥
तिय तारि[5]का वरज्यो बली रयकौं न तोहु रुकात भो ॥
करि मल्लसंगर[6] सूरसूनुहिं बालि मारनको भयो ॥
तरु ओटतैं प्रभुनैं कलंब तहाँ कपीश्वरकै दयो ॥ ४३ ॥
जिय जात बेरहु बालि बानर दोस दै प्रभुकौं कह्यो ॥
लखिबो तुम्हैं फलजन्मको अवसान दुर्लभ मैं लह्यो ॥
कहते जु मोकँहँ तो सरावन मैथिली यँहँ आनतो ॥
वरन्यौं न बीरन धर्म है यह छद्मघात विधान तो ॥ ४४ ॥
तब राम ताकहँ प्रान देनलगे बहोरि तहाँ कही ॥
करिये वं क्यों यह जो जतीन दुराप सो गति मैं लही ॥
अनुजातसौं पुनि बालि बुल्लिय धर्मसौं भजि तू धरा ॥

को और उस पर्वत को भेद कर रसातल तक जाकर पीछा फिरके वह बाण रामचंद्र के भाथे में आरहा जब बालि के मारने में सूर्य के पुत्र (सुग्रीव) ने विश्वास (भरोसा) किया ॥ ४१ ॥ फिर रामचंद्र ने सुग्रीव बंदर को बालि से युद्ध करने भेजा १ बालि से २ सुग्रीव के कंठ में फूलीहुई ३ नागपुष्पी नामक लता (वेलि) धरदी ॥ ४२ ॥ ४ युद्ध को भेजा ५ तारा नामक बालि की स्त्री ने मना किया तोभी उस बलवान् ने अपने वेग को नहीं रोका ६ मल्लयुद्ध करके सूर्य के पुत्र को बालि मारने लगा जब वृक्ष की आड से रामचंद्र ने बालि के बाण दिया ॥ ४३ ॥ ७ अंत समय में आपका देखना दुर्लभ है सो मुझे मिला, मुझे जो आप कहते तो रावण सहित सीता को यहां लादेता. छलघात से मारना वीरों की रीति नहीं है ॥ ४४ ॥ ८ अब आप यह क्यों करते हो, योगियों को भी दुर्लभ है सो गति मैंने ली है, फिर अपने छोटेभाई से बोला.

प्रिय अंगदादिनकौं बनाय रु पायहे गति जो पैरा ॥४५॥
सुतसौंहु अक्खिय बुल्लि सीस सदा पितृव्यककौं धरो ॥
सुग्रीव तात गिनौं तदीय अरातिकौं न सखा करो ॥
वपु बालि एम तज्यो वलीमुख भूप भानुतनै भयो ॥
तारा बिलप्पि गई तहाँ प्रभु बोध याहिहु अप्पयो ॥ ४६॥
पुनि बालि काय जराय किय सुग्रीव किष्किंधा धनी ॥
रु कह्यो ब पाउसं अंत हेरहु है कि मैथिलजा हनी ॥
सुग्रीव स्वीकृत सो सबै करि पैठि पत्तनं भूप भो ॥
इत राम१ लक्खन२ वास प्रस्त्रवनाद्रि शृंग अनूप भो॥४७॥
क्रमसौं प्रियाविरही तहाँ प्रभु निठ्ठि पाउस कट्टयो ॥
पुनि पाय राम निदेस सेस प्रवेस पत्तनमैं लयो ॥
जँहँ गेह अंगद१मैंद२गज३हनुमान४नील५गवाक्ष६के ॥
संपाति७गवय८सुबाहु९कुमुद१०सुनेत्र११नल१२सूर्याक्ष१३के।४८।
द्विविद१४रुसुपाटल१५सरभ१६विद्युन्मालि१७दधिमुख१८तार१९के।
जँहँ जांबवान२०सुसेन२१बानर बीरबाहु२२अगारके ॥
इत्यादि पिक्खत सेस कीसनरेस द्वार गये जहाँ ॥
ताराहि पूरब आय राघव रोस सो समयो तहाँ ॥ ४९ ॥
पय अंगदादि परे बहोरि कपीसं हू विनती करी ॥

१ परम गति (मोक्ष)॥ ४५ ॥ अंगद से भी कहा कि सदैव काका की आज्ञा धारण करो सुग्रीव को पिता जानो और उसके शत्रु को कभी मित्र मत ब नाओ, इसप्रकार बालि ने शरीर छोडा और सूर्य का पुत्र बंदर सुग्रीव राजा हुआ तारा भी विलाप करके वहां गई उसको भी रामचंद्र ने ज्ञान दिया ॥४६॥२ अब वर्षा के अंत में हेरना ३ सीता है कि मारी गई ४स्वीकारकरके ५ पुर में जाकर राजा हुआ ६ प्रस्रवण नामक पर्वत पर ॥ ४७ ॥ ७ वर्षा समय कठिनाई से काटा फिर रामचंद्र की आज्ञा लेकर लक्ष्मण किष्किंधा पुरी में गये ८ कितने ही घर ९ सुग्रीव के द्वार पर गये वहां सब से पहिले बालि की स्त्री तारा जो सुग्रीव की स्त्री होगई थी आई और लक्ष्मण का क्रोध शान्त किया ॥ ४९ ॥ १०सुग्रीव ने भी नम्रता करी

तुम भल्लि भोगनमैं रहे यह बत्त लक्खन उच्चरी ॥
सुनि सोहि कंपि कपीस बुल्लि प्रधान प्लत्त१प्रभास२कों ॥
किय यौं निदेस असेस बुल्लहु कीस जानकि चास२कौं॥५०॥
सुनि यौं अमात्यन[3] दूत मुक्कलि सर्ब बानर बुल्लये ॥
भुवभार दब्बत गज्जि गब्बत[4] जूह[5] हाजरि जे भये ॥
तिनमाँहिलैं विनता१दि बानर लक्ख१०००००बानर संग दै ॥
दिस पुब्ब खोजन मुक्कले द्रुत[6] राज्य ऋद्धि उमंग दै ॥ ५१ ॥
तिम लक्ख१०००००बानर दै सँता[7]दिबली२बलीमुख उत्तरा
पठयो रु आक्खिय कज्जकौं करि आय श्री[10] लहिहै परा[11] ॥
तारापिता सु मरीचिपुत्र सुसेन३पच्छिम३थप्पयो ॥
दिय लक्ख१०००००बानर संग औ भुजभार अप्पन अप्पयो ।५२।
जम्मे[12] ओर४अंगद४जांबवान१रु आंजनेय[13]२सुसील ज्यौं ॥
सरगुल्म३मैंद४सुहोत्र५द्विविद६रु गंधमादन७नील८ज्यौं ॥
उल्कावदन९गज१०औ गवाक्ष११सरारि१२संग असंग१३हू।
कपि द्वै२सुसेन१४।१५चले इतैं इम लक्ख२०००००पौनिपमैं[14] पहू[15]।५३।
कपिराज आक्खियं[16] सर्व आवहु इक१मास करारलौं ॥
अरु पाय दैव विलंब आवहु माघ लग्गत वारलौं ॥
कपि कोल चुक्कत मानदंडहिं पाय बेर[17] बिहायहै ॥
अरु जानकी लखि आयहै सुख मो समान सु पायहै।५४।
लहि स्वामिसासन[18] सूर यौं चहुँ४ओर बानर उज्झले ॥
हनुमान अंगद आदि ए इत बीर दक्खिनघाँ[19] चले ॥
पुर१ग्राम३अंद्रि[20]३अरराय[21]४खोजत विंध्यँ[22] पव्वयपैं गये ॥
तंस[23]१भूख२पीडित जाय इक्कँत[24] कंदरा इक१मैं गये ॥५५॥

---

१ यह वार्ता लक्ष्मण ने कही २ खबर करने को ॥ ५० ॥ ३ मंत्रियों ने ४ गर्व (घमंड) करते हुए ५ समूह ६ शीघ्र ॥ ५१ ॥ ७ शतबली ८ बंदर को ९ उत्तर दिशा को भेजा १० परम ११ लक्ष्मी पावेगा १२ दक्षिण दिशा में १३ हनुमान् १४ पराक्रम में १५ प्रभु (नायक) ॥ ५३ ॥ १६ कहा कि १७ शरीर छोडोगे ॥ ५४ ॥ १८ स्वामि की आज्ञा १९ दक्षिण की ओर २० पर्वत २१ बन २२ विंध्याचल पर गये २३ तृषा (प्यास) से २४ इकट्ठे होकर ॥५५॥

जहँ दिव्य उपबन[1]१रत्न२त्यौं विटपी[2]३जलासय४पिक्खये ॥
लखि अर्क कोटि प्रकास व्है मिचि नैन कीसनके[3] गय ॥
पुनि खोजिखोजि प्रसन्न व्है फल मूल खावनकौं चले ॥
जुवराज[4] अक्खिय हेरि मालिक होहु आयस[5] लै भले।५६।
सुनि त्यौंहि हेरत इक१वृद्ध तपस्विनी सबनैं लही ॥
करि प्रार्थना तिहिं अंब[6] ए फल देहु खावन यौं कही ॥
तजिकैं समाधि सु नारि बुल्लिय हेमिका इक१अच्छरी ॥
तस मैं सखी रु स्वयंप्रभा मम नाम जानहु हे हरी[7]॥५७॥
मय नाम दानवकै रु अच्छरिकै हु ही अति मित्रता ॥
तस बासकौं मयनैं रची यह अत्थ थान विचित्रता ॥
सुनि तास सासन पायकैं फल खाय स्वस्थ भयें भले ॥
कर जोरि आक्खिय जुग्गिनी सन प्रान चेरनके[8] चले॥५८॥
तब पुच्छि पुच्छि स्वयंप्रभा सब आदि अंत सुनी कथा ॥
रु कह्यो बिहावहु[9] भीम[10] है इत आयबो तुमरो वृथा ॥
अनई दसानन जानकी हरिकैं असोक बनी[11] धरी ॥
तुम सिंधुके तट जाहु पूरनकामना करिहै हरी[12] ॥ ५९ ॥
संपाति नामक गिद्ध है तहँ सो बहोरि बतायहै ॥
हरि[13] बुल्लये तब नैंकहू न हमैं दिसा सुधि माय[14] है ॥
सुनि कीस[15] नैन मिचाय व्हाँ पहुँचाय जुग्गिनिनैं दये ॥
तहँ पिक्खि सिंधु अगाध[16] बानर प्रान उज्झनकौं[17] भये ।६०।

---

१ बाग २ वृक्ष ३ बंदरों के नेत्र मिचगये ४ अंगद ने कहा कि इस बाग के मालिक को हेर कर उसकी ५ आज्ञा लेकर भले ही खाओ ॥ ५६ ॥ ६ हे माता ७ हे बंदरो ॥ ५७ ॥ ८ आप के सेवकों के अब प्राण जाते हैं ९ इस स्थान को छोड दो यहां आना १० भयंकर और वृथा है ११ अशोकवाटिका में १२ विष्णु तुम्हारी कामना पूर्ण करेंगे ॥ ५९ ॥ १३ बंदर बोले कि १४ हे माता हमको दिशा की कुछ भी सुध नहीं है यह सुन कर १५ बंदरों के नेत्र बंध करवाकर उस योगिनी ने समुद्र के किनारे पहुंचादिये वहां १६ अथाह समुद्र को देख कर बंदर प्राण १७ छोडने को तैयार हुए ॥ ६० ॥

जुवराज अक्खिय इक्क१मास करार बिंध्यहि बित्तयो ॥
रु न माघ पुव्व करार अप्पनसौं सध्यो जु तपा गयो॥
अब सिंधु सोधन क्यों बनैं इतनौं हि अप्पन आयु हो ॥
रन राम काम मरयो सु गिद्धहि भाग्यवान जटायु हो ॥६१॥
जिहिं प्रेतकर्म स्वतात१ ज्यौं रघुराज राम सबै करयो ॥
इम द्वादसाह२ व्रतस्थ३ सद्धि रु अग्ग आवन अद्दरयो॥
अब नास होहु अनासऽसौं कपिराज व्हाँ हनिहै नतो ॥
संपाति पच्छ५ बिहीन तत्थ सुन्यों सु कीसनको६ मतो॥६२॥
कढि कंदरासन निट्ठि बुल्लिय अद्रिके अनुकार७ जो ॥
तुममाँहिं मोहि उठाय रक्खहु पायहो दुख पार जो ॥
सुनि यों प्लवंगन गिद्धराज उठाय अप्पनमैं धरयो ॥
तुम कोन यों सुनि अग्गभूत उदंत अंडज विस्तरयो ॥ ६३ ॥
सुत मैं १ जटायु २ अनूरुके उडि अक्कमंडललौं गये ॥
तिहिं घाममैं हम पच्छ तापन तापमैं जरते भये ॥
मम हेट्ठ भ्रात बचाय म जरि पिंडसेस इहाँ परयो ॥
तबतैं सु बल्लभ बीर भ्रात जटायु मोसन बिच्छरयो ॥६४॥

अंगद ने कहा कि एक महीने का करार था सो तो विंध्याचल में ही बीत गया और माघ मास से पहिले आने का करार था सो भी अपने से नहीं सधा और वह माघ मास गया अब समुद्र का सोधना कैसे बने इसकारण से अपना आयु इतना ही था ॥ ६१ ॥ १ अपने पिता के समान २ बारह दिन तक ३ व्रत में स्थित रहकर प्रेतकर्म साध कर ४ नाश नहीं होने से वहां ५ विना पंखवाले सम्पाति ने ६ बंदरों का यह मता सुना ॥ ६२ ॥ ७ पर्वत के समान संपाति कन्दरा से नीठ कढिकर बोला ८ बंदरों ने गिद्धराज को उठाकर अपने में धर दिया और तुम कौन हो ऐसा प्रश्न सुन कर उस पक्षी ने आगे बीताहुआ वृत्तांत विस्तार से कहना प्रारंभ किया ॥ ६३ ॥ मैं और जटायु अरुण के पुत्र हैं सो एक समय हम दोनों उड़कर सूर्यमण्डल में गये जब उस सूर्यमंडल की गर्मी में हमारे पंख सूर्य के ताप में जलगये तब मैंने भाई को नीचे लेकर बचाया और मैं जलकर पिंड मात्र बाकी रहकर यहां पड़ा ॥ ६४ ॥

मुनि ह्याँ निसाकर नाम है तिन मोहि आनि दया कही
चउबीस २४ मैं त्रेता अनेह पतत्र तू लहिहै सही ॥
प्रभु रामदूत[1] प्लवंग हेरन मैथिली इत आयहैं ॥
सुनिकैं कथा तिनसौं सपत्र स्वतंत्र[2]भावहिं पायहै ॥६५॥
सत १००अब्दपूरब वे समाहित सिद्धलोक गये मुनी ॥
अरु अज्ज मैं इहिंठाँ परास्त[3] व्यथा जटायु कथा सुनी ॥
सु जटायुको सुनि यौँ समस्त उदंत कीसन बर्णयो ॥
ततकाल सो करि कर्ण[4] तंत्र सपत्र[5] पत्रिपती भयो ॥६६॥
रु कह्यो पितामह[6]नैं हमैं बर दूर देखनको दयो ॥
इमही हजारन कोस आमिख[7] गूर्द[8] गिद्धनकै गयो ॥
तसमात[9] जानहु मैथिली खल कर्बुरेस्वर[10]नैं हरी ॥
तरु सिंसपा तर मोहि दीसत सो असोकबनी धरी ॥६७॥
इम अक्खि भ्रातहि नीर दै उडि गिद्धनैं खगता[11] गही ॥
इत[12] सिंधु लंघन अप्प अप्पन सक्ति कीसननैं कही ॥
गज १ बुल्लयो दस १० मान जोजन त्यौं गवाक्ष २ सुविंसती २०॥
अरु रंभ ३ तीस३० सुहोत्र ४ तिम चालीस ४० गज्जि चवी[13] गति ।६८।
पंचास५०कीस सुसेन५जोजन सट्ठि६०मैंद६हु उच्चरी ॥
द्विविद[14]ाख्य ७ सत्तरि ७० ओ असी ८० गति गंधमादन ८ उच्चरी॥
जँहँ जांबवान ९ कह्यो बै[15] वृद्धहु झंप मैं नबती ९० करौं॥
जुवराज१०आक्खिय जाय सत१००पुनि आत संसयमैं परौं॥६९॥

यहां पर निशाकर नाम मुनि थे उन्होंने मुझ पर दया लाकर कहा कि चौ-बीसवें त्रेतायुग के समय में तू अवश्य पंख लेवेगा१बंदर सीता को हेरने के लिये२आपसे आप ही पंख पावेगा।६५।सौ वर्ष पहिले वे जितात्मा[आत्मा को जीतनेवाले] सिद्ध लोक को गये ३ अनादर पायाहुआ ४ वहां पर ५ पक्षिराज पंखों सहित होगया ॥ ६६ ॥ ६ ब्रह्मा ने ७ मांस [illegible] मज्जा ९ इसकारण से १० राक्षसों के पति (रावण) ने ॥ ६७ ॥ ११ आकाश में जाने की गति १२ इधर समुद्र को कूदने में सब बंदरों ने अपनी अपनी शक्ति कही १३ कही १४ द्विविद नामक ने१५अब वृद्ध होगया हूं तोभी॥६८॥६९॥

तव वारि सर्वन वालिपुत्र सिराह मारुतिकी करी ॥
वलवान तू ग्रहराज ग्रासक होतमात्र बन्यौं हरी ॥
हनुमान ईसवतार वीर यहैहु तावक वेर है ॥
सुनि फुल्लि मारुति बुल्लयो कति दूर भू खलकेरहै ।७०।
उदयाद्रिसौं उडि अस्त जाय बहोरि तेंह्दिन बाहुरौं ॥
अव स्वामि सद्धन कज्ज हौं द्रुत सज्जहौं हर क्यौं दुरौं ॥
तव ही समस्तन पानरच्छक जानि मारुतिसौं कही ॥
हम तोरग्रागम ग्रंत हयाँ इक १ ग्रंघ्रिसौं रहिहैं मही ॥ ७१ ॥
हनुमानहू तव तीस ३० जोजन उच्च भूँधरपैं गयो ॥
तँहँ पुव्व चित्तहिसौं सु रक्खसराजके घरपैं गयो ॥
पुनि झंप लै पवमानको सुत सिंधु लंघन उच्चरयो ॥
जवजोरसौं सिखरी मलप्पत मग्न भूतलमैं करयो ॥ ७२ ॥
लखि जात मारुति सिंधुनैं मइनाक उप्पर प्रेसयो ॥
उर फेट दै तिहिं विघ्न जानि डुलाय ग्रानिलनैं दयो ॥
तव सिंधु ग्राक्खिय पुत्र तैं मिहिकाद्रिको यह मुक्कल्यो ॥
मम मान्नि स्वागत जाहु मेल दुराप संचितसौं फल्यो॥७३॥

सबको मना करके अंगद ने हनुमान् की प्रशंसा करी हे बलवान् बंदर तू जन्म लेते ही सूर्य को पकड़नेवाला हुआ था हे हनुमान् तू महादेव का अवतार है तेरा यही समय है यह सुन कर प्रफुल्लित होकर हनुमान् बोला कि दुष्ट (रावण) की भूमि क्या दूर है ॥ ७० ॥ १ उसी दिन पीछा आजाऊँ २ स्वामी का कार्य साधने के लिये मैं शीघ्र ही तैयार हूं शिव का अंश होकर मैं क्यों छिपूं ३ एक पग से खड़े रहेंगे ॥ ७१ ॥ ४ पर्वत पर गया उससे पहिले ही वह हनुमान अपने मन करके रावण के घर पर चलागया था ५ पवन के पुत्र ने जोर से झंप लेने के वेग से ६ पर्वत को भूमि में डुबो दिया ।७२। हनुमान को जाता हुआ देख कर विश्राम देने के लिये समुद्र ने मैनाक नामा पर्वत को ऊपर भेजा जिसको भय जान कर हनुमान ने छाती की टक्कर से उड़ा दिया तव समुद्र ने कहा कि हे पुत्र इस हिमवान् पर्वत को मैंने ही भेजा है मेरे किये हुए सत्कार को मान कर जाओ. तुम्हारा मिलना दुर्लभ है सो संचित कर्मों के फल से ही हुआ है ॥ ७३ ॥

छुवि हत्थसौं तब अद्रिकौं हनुमान अग्ग बढ्यो बली ॥
अहिमात कस्यपनारि देवन व्हाँ परक्खन मुक्कली ॥
मइनाककौं तबतैं हि इंद्रहु पच्छछेद अभै दयो ॥
इत खान मारुतिकौं बडो मुख फारि सर्पप्रसू लयो ॥७४॥
रु कह्यो इहाँ बिधि मैं धरो इतकेहि अध्वग खाइबे ॥
सुहि मल्लि तोकँहँ चक्खिहौं किय चित्त क्यौं इत आयबे ॥
दस१०जोजनी प्रम पिक्खि तम्मुह बीस२०जोजन कीस हू ॥
सत१००या अनुक्रम तुंड व्हाँ नवति९०प्रमान कपीस हू ॥ ७५ ॥
मुख तास पैठि रु ओठ मीलन पुव्व आयउ अल्प व्है ॥
सुरसा हु आसिख दै कह्यो सुत काज सद्धहु कल्प व्है ॥
कपि अग्ग हंकिय सिंहिका तँहँ छाँहग्राहिनि रक्खसी ॥
कपि छाँह बंधिय ताहिसौं गति बीरकी बहती नसी ॥७६॥
सुपर्यो अचानक हेठ्ठ आय रु लीलि पापिनिनैं लयो ॥
कपि ताहि अंत्रन तंत्र तंत्रित फारि बाहिर व्हैगयो ॥

हनुमान् हाथ से उस पर्वत का स्पर्श करके आगे बढा तब से ही इन्द्र ने मैनाक पर्वत को पंख काटने का अभय दिया कि अब तुम्हारे पंख नहीं काटेंगे. फिर कश्यप की स्त्री और सर्पों की माता को देवताओं ने हनुमान की परीक्षा लेने को भेजी जिस सर्पों की माता ने हनुमान को खाने के लिये बडा मुख फाड़ा।७४।और कहा कि ब्रह्मा ने मुझे इधर के मार्ग चलनेवालों को खाने के लिये ही रक्खी है. दश योजन के प्रमाणवाला उसका मुख देख कर हनुमान बीश जोजन के शरीर वाला होगया इस क्रम से सौ १०० जोजन उसका मुख हुआ तब निव्वे योजन मोटा हनुमान होकर ॥ ७५ ॥ उसके मुख में घुस कर पीछे ओठ बंध नहीं करे जिस पहिले छोटा शरीर करके पीछा बाहरआगया तब सुरसा ने भी आशिष देकर कहा कि हे पुत्र प्रलय का रूप होकर कार्य सिद्धि कर. इससे आगे हनुमान गया जहां छाया को पकड़ लेनेवाली सिंहिका (राहु की माता) नाम राक्षसी ने हनुमान की छाया को पकड़ ली जिससे उसकी गति रुक गई ॥ ७६ ॥ और जब वह नीचे आपड़ा तब उस पापिनी ने लीला पूर्वक (खेल से ही) खालिया जहां हनुमान आंतों से तने हुए तंत्र (बेजे) को फाड़ कर बाहर आगया और लंका के कोट पर चढ उस

चढि लंक कोट बइठ्ठ तासन पिक्खि पत्तन सर्वही ॥
वृखदंस मान कपीस बाहिर आय द्वारदिसा लही ॥७७॥
धसिकैं खुले पुर द्वार जामिक जातुधाननमैं कढ्यो ॥
नहि तेहु जानि सके पुरी तँहँ पाय जावहु जै पढ्यो ॥
कपिनैं कह्यो तिय है अवध्य टरै नतो करि वार तू ॥
तल लंक दै कछु मुट्ठि लै छकि उच्चरयो अवतार तू॥७८॥
जिम अग्ग मारुति मैं भई तिम भाव रक्खसको मिल्यो ॥
सुनि सो सबै हनुमान आसय अज्ज मो हिय है खिल्यो ॥
॥
॥७९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३ राशौ वीतिहोत्रचराडासिवंशवर्णने वसुदेव६८ वेलो६८।१ पयामसमयवर्णनविषयकजगच्चतुर्जननसमुद्देशसङ्गतवैवस्वतमन्वाऽऽत्मजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रविकुक्षि ७ सन्ततिसमर्थनान्तर्गतश्रीवैदेहीवल्लभचरि

बैठ कर उसके ऊपर से उसने सब शहर देखा. फिर बिल्ली के समान होकर बाहर आकर दरवाजे का मार्ग लिया ॥ ७७ ॥ शहर का द्वार खुला हुआ था जहां पहरेवाले राक्षसों में होकर निकल गया परन्तु किसीने इसके आने का कारण नहीं जाना तहां लंका पुरी ने आकर कहा कि मुझे विजय करके जा, जब हनुमान ने कहा कि स्त्री मारने योग्य नहीं इसकारण तू टल जा और नहीं टलै तो पहिले तू प्रहार कर तब लंका ने हनुमान के लात की दी फिर हनुमान ने उसके मुक्की लगाई जिससे छक कर लंका ने कहा कि तू अवतार है ॥ ७८ ॥ फिर वह लंका की अधिष्ठात्री राक्षसी बोली कि हे हनुमान मुझमें जिसप्रकार आगे हुई थी वही भाव राक्षस को मिला है अर्थात् ब्रह्माजी ने पहिले हम से कहा था कि जब कोई वानर विक्रम प्रकाश करके तुझको अपने वश में करलेगा तभी तू यह जानलेना कि राक्षसों को भय आन पहुँचा सो वही आशय आज खुला ॥ ७९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन करने के विषय में सूर्यवंश के कीर्तन के साथ वैवस्वत मनु के पुत्रोत्पत्ति में इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन(उचित अनुचित के निश्चय करने) के भीतर श्रीजानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में श्रीरामचन्द्र के

त्रे श्रीरामसन्देशहारकहनुमल्लङ्काविजयनमेकोनचत्वारिंशत्तमो ३९ मयूखः ॥ ३९ ॥ आदित एकाऽशीतितमः ॥ ८१ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

कपिपति प्रति लंका कहिय, आसिर तीनन ३ अग्ग ॥
तिदसनसों लिय लोक त्रय ३, मेटि निखिल श्रुतिमग्ग ॥ १ ॥

(पादाकुलकम्)

माली१बहुरि सुमाली२रक्खस, माल्यवान३तीजो३बल दुर्बस ॥
इक्क समय ए तीन बढे अति, सेवक किन्न सुरन जुत सुरपति ॥२॥
करि तिन हुकम विश्वकर्मा सन, मैं लंका बनवाई सुखमन ॥
पुरटजंत्र१परिखा२प्राकारा३, बिहित बीस२०जोजन बिस्तारा॥३॥
जोजन सत१००लंबी जग ठाई, सस्त्रन संकुल२ पुरी सुहाई॥४॥
वर्द्धकिराज रची मैं बामा, रात्रिचरन भुग्गी अभिरामा ॥
इहिन लोक पहुँचे सुर अति दुख, समय खिलहु तिन कहिय तजहु सुख
त्रिदस फटिक सिखरी पहुँचे तब, सिवहु कह्यो बिधिको आसय सब॥
विष्णु सरन पहुँचे वृंदारक, कहिय नाथ रक्खस त्रय३मारक॥६॥

दूत हनुमान का लंका की अधिष्ठात्री राक्षसी को विजय करने का उनचालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥३९॥ और आदि से इक्यासी मयूख हुए॥८१॥
वह लंका राक्षसी हनुमान को प्राचीन इतिहास कहने लगी कि आगे तीन राक्षसों ने देवताओं से सम्पूर्ण वेदमार्ग मिटाकर तीनों लोक लेलिये ॥ १ ॥ १देवताओं सहित इंद्रको सेवक करलिया ॥२॥ उन तीनों राक्षसों ने आज्ञा देकर विश्वकर्मा से मुझ लंका को बनवाई. स्वर्ण के तोप आदि अस्त्र, खाई, कोट रचे ॥ ३ ॥ २ शस्त्रों से भरी हुई ॥ ४ ॥ विश्वकर्मा ने मुझ स्त्री रूपी पुरी को रची जिस मनोहर स्त्री को राक्षसों ने भोगी, इस अत्यन्त दुःख से दुखी होकर देवता ब्रह्मा के लोक में गये वहां ब्रह्मा ने कहा कि सुख को छोड कर समय को देखो ॥ ५ ॥ तब देवता हिमालय पर्वत पर गये जब शिव ने भी ब्रह्मा ने कहा था वैसा ही कहा जब फिर देवता विष्णु की शरण में गये ॥ ६ ॥

प्रभु दयालु सुनि भीर पधारे, पुर लंका क्रव्याद प्रचारे ॥
भयो दुश्त्रोर तुमुल रन भारी, अच्युत लरे बैठि उरगारी ॥७॥
कति उडि खगपति पत्र पवन करि,मूढ कतिक सुनि दरहि गये मरि॥
कतिक प्रहारि सुदर्सन कट्टे, दल रक्खस दिस दिस प्रभु दट्टे।८।
खिजि तँहँ समुख भये तीन३हि खल,दुर्द्धर जुरे मोरि अप्पन दल॥
रोप१कुंत२असि३झारि प्ररुष्टन, द्विजपति पिट्ठि फिराई दुष्टन॥९॥
सचिवनको जित्यो जिम स्वामी, बलहक मंगत भजत बिरामी॥
इम दृग मुंदि मुरयो उरगासन,परे किलकि कर्बुर चउ४पासन।१०।
प्रभु अक्खिय खगपति फिरि पच्छो,अपनौं क्यों न दिखावत अच्छो॥
लावत अमृत लख्यो जो लक्खन,सु कितगयो बल तोर समक्खन११
सुनि मुरयो संपाति पितृव्यक,धारि लखन खंडन कर रीधक॥
मारयो तमकि महाप्रभु माली१,चकित सेस पृतना भजि चाली।१२।
पुनि हरि लग्गे पिट्ठि प्रहारन, माल्यवान१रु सुमाली२मारन ॥
चवियँ उनहु तँहँ सुनहु चक्रधर, वीर न भजत न हनत बीरबर१३
दर वजाय तब मुरे महादय, भजि पाताल दुरे खल अतिभय ॥

दयालु प्रभु सुन कर मदत को आये. लंकापुरी में आकर राक्षसों को ललकारे भयंकर विष्णु भगवान् गरुड़ पर बैठकर लड़े ॥ ७ ॥ कितनेक तो गरुड़ के पंखों के पवन से और कितनेक शंख के शब्द से मूर्छित होकर मरगये ॥ ८ ॥ तब माली, सुमाली और माल्यवान् ये तीनों राक्षस क्रोध करके सामने हुए और अपनी भगीहुई सेना को पीछी फेर कर दुस्तर युद्ध में जुड़े, उन दुष्ट क्षुधित राक्षसों ने बाण, भाला, तरवार मारकर गरुड़ की पीठ फिरा दी।९। कामदारों का जीताहुआ राजा सेना के तनखा मांगने से विश्राम लेना चाहकर भागता है ऐसे नेत्र मींचकर गरुड़ पीछा फिरा और राक्षस किल-किला शब्द करके चारों ओर हुए ॥ १० ॥ विष्णु भगवान् ने कहा कि हे गरुड़ पीछा फिर अपना अच्छा क्यों नहीं दिखाता है. स्वर्ग से अमृत लाने के समय लखा देवता आदि ने तेरा बल देखा था वह मेरे सामने (नेत्रों के आगे) कहां गया ॥ ११ ॥ सम्पाति का चचा (गरुड़) यह सुनकर मुड़ा १ विष्णु भगवान् ने माली नामक राक्षस को मारा २ बाकी की सेना ॥१२॥ ३ उन राक्षसों ने कहा ॥ १३ ॥ ४ शंख बजाकर ५ बड़ी दयावाले

सुरन स्वीय अधिकार सम्हारे, प्रभु अनिच्छ निजलोक पधारे१४

(दोहा)

सुत पुलस्त्यके इक समय, निरघ विश्रवा नाम ॥
करत राज्य तृनबिंदुकै, तप१जप२सद्धिय ताम ॥ १५ ॥

(पादाकुलकम्)

कन्या सबपुरकी प्रतिदिन क्रम, आवन लगी बिश्रवा आश्रम ॥
अधिप सुताहु संग तिन आवैं, सुखदं ठाम वह सवन सुहावैं।१६।
करैं बिबिध गीतादि कुतूहल, पहुँचि समाधि खुलैं मुनिके पल ॥
तब तिन्ह कुपितबिश्रवा तरजैं, बिहित अक्खि आवन तहँ बरजैं१७
इक दिन कहिय वहुरि जो ऐहो, परिनय बिनुहि गर्भ सब पैहो॥
सुनत इतर आई न भीति सन, नृप तृनाविंदु सुता सु सुनी नन १८
अह दूजेरहु इडबिडा आई, सो अहेतु लहि गर्भ सिधाई ॥
यह तृनबिंदु जानि गति अन्न्या, करिय बिश्रवा भेट सु कन्न्या १९
तनय कुबेर भयो तहँ ताकै, जप१तप२सिद्धि३बढी अति जाकै ॥
जोग साद्धि एकांत जनक जिम, एकपिंग सु समर्थ भयो इम॥२०॥
विधि अधिकारी उचित बिचार्‌यो,नाती सुत यह बिहित निहार्‌यो
कंजज काज विश्वकर्मा किय,प्रथित विमान नाम पुष्पक प्रिय।२१।

देवताओं ने अपने अधिकार सम्हाले और विष्णु भगवान् इच्छा रहित थे सो अपने लोक पधार गये ॥१४॥ एक समय पुलस्त्य के पाप रहित विश्रवा नामी पुत्र ने तृणविन्दु नामक राजा के राज्य करते समय तहां पर तप और जप साधा॥ १५ ॥ राजा तृणविन्दु की पुत्री भी उन कन्याओं के साथ आने लगी १ सुख देनेवाली (सुन्दर) जगह ॥ १६ ॥ उन कन्याओं को विश्रवा धमकावे और उचित वार्ता कहकर उनको वहां आने से मना करैं ॥ १७ ॥ विवाह किये विना ही गर्भ पाओगी, यह सुनकर और तो डर से नहीं आईं परन्तु राजा तृणविन्दु की कन्या ने वह वात नहीं सुनी ॥ १८ ॥ इडविडा नामक वह कन्या दूसरे दिन फिर आई सो विना ही कारण [संगम किये विना ही] गर्भवती होकर गई तृणविन्दु राजा ने उसकी दूसरी ही गति (गर्भवती) जान कर उस कन्या को विश्रवा के भेट करदी ॥ १९ ॥ २ पुत्र ४ पिता के समान योग ३ साधकर ५ कुबेर समर्थ होगया ॥२०॥ ब्रह्मा ने इसको उचित अधिकारी विचारा और अपने पुत्र (पुलस्त्य) के पोते को कार्य करने योग्य देखा. ब्रह्मा के

सो कुबेर कँहँ दै हंसासन, थप्पि बहुरि लंकापुर आसन ॥
स्वापतेय अधिकार समप्पिय, दिश उत्तर लोकाधिपत्य दिय ।२२।
गुह्यक१किन्नर२दच्छ३प्रभृत गन, सासनीय तस किय कंजासन॥
पाय मोहि धनपति सुख पाये, व्योमकेससे मित्र बनाये ॥२३॥
प्रभु कुबेर इम धारि श्रीदपन, सविनय जात विश्रवा दरसन ॥
माल्यवान रक्खस बडवामुख, श्रीद अधीन जानि दुर्लभ सुख।२४।
पुत्री आनि कैकसी अप्पन, धरि विश्रवा निकट मायाधन ॥
बुल्ल्यो बीज प्रबल तातैं बरि, भजहु विश्रवा हाव भाव करि।२५।
सुत तो तू जनिहै कुबेर सम, रक्खस कुल रखवार मनोरम ॥
कर्बुर गो प्रच्छन्न यहै कहि, रचिय तास तनया सेवन रहि ॥२६॥
इक्क समय मुनि आंखि उघारी, निज ढिग विनत लखी बरनारी ॥
कहिय भीरु सेवत किहिं कारन, बलि सुनि हार्द कहिय सुभवारन
लग्गि प्रसभँ तब मुनि ललचायउ, प्रबल गर्भ संध्या विच पायउ॥
हसि मुनि कहिय घोर दुव२ह्वैहै, पुत्र तृतीय३सांतमति पैहैं।२८।
इम मुनि तीन३तनूज उपाये, जे रन बीर कैकसी जाये ॥

अथ विश्वकर्मा ने पुष्पक नामक प्रसिद्ध और प्यारा विमान बनाया ॥ २१ ॥ वह विमान ब्रह्मा ने कुबेर को देकर फिर लंका के आसन पर स्थापन किया और धन का अधिकार देकर उत्तर दिशा के लोक का स्वामी बनाया। २२। १ आदि गणों को ब्रह्मा ने उसकी आज्ञा में किया. मुझ (लंका) को पाकर कुबेर ने सुख पाया और महादेव जैसे मित्र किये ॥ २३ ॥ २ लक्ष्मी का दातापन अथवा लक्ष्मी का प्यारापन पाया, वह कुबेर नम्रता पूर्वक अपने पिता विश्रवा के दर्शन करने जाता था जिसको देखकर पाताल में माल्यवान् राक्षस ने कुबेर के अधिकार में दुर्लभ सुख जानकर ॥ २४ ॥ माया ही है धन जिसके ऐसा माल्यवान् कैकसी नामक अपनी पुत्री को विश्रवा के आसन के समीप धरकर बोला कि इसका वीर्य प्रबल है इसकारण से इसको वर कर हाव भाव सहित विश्रवा का सेवन कर ॥ २५ ॥ ३ राक्षस तो यह कह कर अंतर्धान होगया और उसकी पुत्री ने सेवन रचा ॥ २६ ॥ ४ विशेष नम्र श्रेष्ठ स्त्री को देखा ५ हे सुन्दर स्त्री तू किसकारण सेवा करती है ६ फिर उसका अभिप्राय सुन कर मुनि ने कहा कि यह समय शुभ नहीं है ॥२७॥ जब स्त्री ने ७ हठ किया तब मुनि भी लालच के वश होगया ॥२८॥ ८ पुत्र

दसग्रीव१ज्येठो हुव दारुन, अनु तस कुंभकर्ण२हग आरुन॥२९॥
भक्ख तृतीय३बिभीखन३भ्राता, ज्यौं पुनि सूर्पनखा१अनुजाता॥
पोतं च्यारि४कैकसि ए पोखत, नाथ बिश्रवा निलयर नता३०।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८बेला६८१पाणिपीडनवेलावर्णितजगच्चक्षुर्जननमणिवैवस्वतमन्वङ्गजन्मेक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रविकुक्षि ७सन्तातिसमर्थनाऽन्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासंवादे दशग्रीवाद्युद्भवनंचत्वारिंशत्तमोमयूखः।४०।आदितो द्व्यशीतितमः।८२।

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

पादाकुलकम्

अर्भक बढे उचित बय आवत, जनक४ दरस हित धनपतिजावत॥
छर्म पुष्पक बैठो छक छायो,तवहि कैकसी सुतन वतायो॥१॥
भनी लखहु तुमरे इहिं भाई, प्रभुता मोर सोति सुत पाई॥
तप बिहीन कुलपांसन हो तुम,दुर्लभ फलत इक तपहि कल्पद्रुम॥२॥
दसग्रीव आदिक सुनि दुव्वर, सोदर चले करन तप सत्वर॥
कह्यो अधिक व्है हैं कुबेर सन, पै न्यून न ऐ हैं गृह हठपन॥३॥

---

१ उसके पीछे॥ २९॥ २ पीछे जन्म लेनेवाली ३ बालक ४ पति विश्रवा के घर में नम्र होकर रही॥ ३०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंशमणि वैवस्वत मनुपुत्र जन्म में इक्ष्वाकु के पाटवीपुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन के भीतर जानकीजानि (रामचन्द्र) चरित्र में हनुमान् और लंका के संवाद में रावण आदि के जन्म का चालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥ ४०॥ और आदि से बियासी मयूख हुए॥ ८२॥

५ बालक ६ पिता के ७ कुबेर ८ समर्थ पुष्पक विमान में बैठा मोद से छायाहुआ कैकसी ने अपने पुत्रों को बताया॥ १॥ और कहा कि मेरी सोत के पुत्र और तुम्हारे भाई ने कैसी प्रभुता पाई है, तप के विना तुम कुल को दोष लगानेवाले हो, दुर्लभ फल का देनेवाला एक तप ही कल्पवृक्ष है॥ २॥ ९ दुस्तर तप करने को १०शीघ्र चले॥ ३॥

इम कहि छेत्र गोकरन[1] आये, करि संधा[2] तप कठिन कुमाये ॥
दसहजार१००००हायन[3]दसकंधर१, पंचसहँस५०००मध्यम[4]२तपतत्पर
वच्छर[5] पंचहि सहँस५०००विभीखन३, तहँ इम तपन लगे लौलैं पन॥
सबसौं कठिन दसानन सद्धी, होमन सीस लग्यो खल हंद्धी[6]॥५॥
समा[7]सहस्र इक्क१०००प्रति इक्क१सिर, कढ़ि कढ़ि हुत अनल[8] करे किर[9]
हुव पूरन जब दसम१०हजारा, धरी दसम गलपर असिधारा ॥ ६ ॥
त्वरित पधारि निवार्यो विधि[10] तव, आक्खिय नन[11] कट्टहु मंगहु अब ॥
मंगिय दुष्ट काहुसौं न मरौं, करि प्रतिहत[12] सत्रुन बिजय करौं ॥ ७ ॥
प्रभुता मोसम अन्य न पावैं, चउ ४ दिस सासन[13] सीस चढावैं ॥
तव विधि कहिय तथास्तु[14] इष्ट तव, जंगम[15]१वर२प्रेरहु सासन जव॥८॥
इतर कहा न मरैं हरि१ईस२न, करहु बिचारि बैर नर१कीस२न ॥
हुतभुक[16] जे सिर कढ़ि करे हुत, जे तव होहु बहुरि सुखमा[17] जुत ॥९॥
रावन कहिय वली बर टारे, है नर१वानर२अन्न हमारे ॥
मन्नैं कुंभकरन निज मानस, बर लहि नहि व्हैहौं निद्रावस॥१०॥
आलस हीन करौं जय अविरत, मोरयो सुरन गिरा करि यह मत॥
विधिके बूहि[18] कहत भाखा बट, खल बर मंगिय सयन श्रामं[19] खट११
परं[20] प्रभुसक्ति बिभीखन पाई, आसिरं[21] त्रयी३निलय अब आई ॥

१ गोकर्णेश्वर महादेव जो जयपुर के राज्य में बनास नदी के किनारे पर हैं २ प्रतिज्ञा ३ वर्ष ४ कुंभकर्ण ५ वर्ष ६ हतबुद्धि ॥ ५ ॥ ७ एक हजार वर्ष में एक मस्तक को काट कर ८ अग्नि में ९ फेंक कर होम किये ॥ ६ ॥ १० ब्रह्मा ने ११ मस्तक मत काट और वर मांग १२ बंधन [कैद] करके ॥७॥ १३ मेरी आज्ञा को १४ ऐसा ही होओ १५ चलनेवाले पदार्थों पर वर के प्रभाव से शीघ्र आज्ञा प्रेरो ॥ ८ ॥ और तो क्या है! विष्णु और शिव से भी नहीं मरेगा परंतु मनुष्य और वंदरों से विचार कर वैर करना १६ अग्नि में होमे १७परम शोभा सहित॥ ९ ॥ रावण ने कहा कि आपने अच्छे बलवान् टाले. मनुष्य और बंदर ये तो हमारे अन्न हैं, कुंभकर्ण ने अपने मन में यह विचारा कि निद्रा के वश नहीं होने का वर मांगूंगा ॥ १० ॥ निरंतर देवताओं ने सरस्वती करके उस का यह विचार फेर दिया, १८ मांग यह कहते ही १९मास ॥११॥२०परम प्रभुशक्ति २१तीन सुअरों का समूह अपने घर आया.

विरचिजनक[1]जननी[2]पयवंदन, छकभरिकहियकवनहमछंदन॥१२॥
रचि बल हुकम सवन सिर रक्खन, लग्गो करन उपद्रव लक्खन॥
यह सुनि माल्यवान खल आदिक, पहुँचे तजि पाताल प्रमादिक।१३।
मातामह[3] अक्खिय दसमुख सन, अग्ग हुतो लंकापुर अप्पन॥
भुग्गत अब तिहिँ धनद वीतभय, जाय काढ़ि दौहित्र करहु जय।१४।
सुनि दससिर लंका रचि संगर, धनद काढ़ि सब छिन्न लई धर॥
खंधावार[5] तत्थ मंडिय खल, बोरन लग्यो धर्ममग अतिबल॥१५॥
जो सुनि खलहिँ धनद बरजायो[6], भ्रात न दुरितँ करहु मन भायो[7]॥
धनद दूतकँहँ हनि दसकंधर, प्रथम चढ्यो यह सुनि अलकापर[8]।१६।
करि जय दमितँ[9] कुबेरहिँ किन्नौँ, लरि विमान पुष्पक खल लिन्नौँ॥
आरुहि[10] ताहि चल्यो उत अग्गैँ, भनँक[11] सुनत जितजित सब भग्गैँ।१७।
पहुँचत सीस अद्रिअष्टापद[12], देख्यो रुकत विमान सु दुर्मद॥
सचिव प्रहस्त ढिग रु भट रक्खस[13], बलि[14] मातुल[15] मारीच हुकम बस१८
विस्मित हुव तब रुकत विमानहिँ, दससिर पुच्छिय रोध निदानहिँ[16]॥
इहिँ अंतर नंदी[17] तँहँ आयउ, सयँ त्रिसूल[18] अमरेख उफनायउ[19]।१९।
जंपियँ[20] दुगम फटिकँ[21] गिरि जानहु, मध्य रमत सिव सांब[22] प्रमानहु
ईश्वरको प्रविसन[23] आदेस न, आसिरँ[24] बचहु करहु भट एस न।२०।

---

१ हमारे वश में कौन नहीं है ॥ १२ ॥ २ उन्मत्त होकर ॥ १३ ॥ ३ नाना (माल्यवान्) ने कहा कि लंका पुर पहिले अपना था जिसको ४ कुबेर विना भय होकर भोगता है ॥ १४ ॥ वहां दुष्ट ने अपनी ५ राजधानी बनाई ॥ १५ ॥ ६ कुबेर ने मना कराया कि हे भाई मनमाना ७ पाप मत कर ८ कुबेर की पुरी पर चढा ॥ १६ ॥ ९ दंडित १० पुष्पक विमान पर चढ कर उसी तरफ (उत्तर) को आगे चला ११ आहट सुनते ही ।१७। १२ सुमेरु पर्वत के मस्तक पर पहुंचते ही उस दुर्मद ने अपने विमान को रुकता देखा १३ राक्षस १४ फिर १५ मामा ॥ १८ ॥ १६ रुकने का कारण १७ नन्दी नामक महादेव का गण १८ हाथ में त्रिशूल लिये १९ क्रोध में उफना ॥ १९ ॥ उसने २० कहा कि २१ कैलास पर्वत को दुर्गम जानो इसमें २२ पार्वती सहित महादेव रमने हैं इसके २३ भीतर जाने की महादेव की आज्ञा नहीं है २४ हे राक्षस

अधिप सदार[1] रमत खल अक्खिय, रीति किम सु अवधूत[2] न रक्खिय॥
कुक्कत तू वानर अनुकारक[3], धनी तिमहिं ह्वै हैं वृखधारक[4] ।२१।
गर्ब अतुल लखि दियउ साप गन, मोसे कपिहि होहु तव मारन॥
धकि[5] यह सुनत बढ्यो दसकंधर, कइलासहिं उप्पार लयो कर॥२२॥
कंपिय गिरि बसवान[6] त्रान करि, भव[7] गर लगी सिवा[8] हाहाभरि॥
सिव दब्बिय अंगुठ इक्क१स्सन, रोयो कर[9] गिरि तर चिपि रावन॥२३॥
रीति[10] कहिय मारीच न रोवहु, खंडपरसु[11] थुति[12] करि दुख खोवहु॥
प्रभुसौं अभय दीन बनि पावहु, जिन करि बुंबै[13] त्रिलोक जगावहु२४
धृति[14] तव निठि निठि खल धारी, पढि श्रुति साम[15] नुये[16] त्रिपुरारी॥
बलि अप्पहु इक स्तोत्र बनायो,
मुख दस १० दस १० हि नराच[17] नमायो ॥ २५ ॥
त्वरित तुष्ट अक्खिय प्रभु त्र्यंबक[18], कछु मंगहु करि प्रनति कंदंबक[19]॥
तव क्रव्याद[20] कहिय कर तुट्टै, छिप्र[21] प्रसाद होय जब छुट्टै ॥२६॥
खण्डपरसु[22] हसि छोरि दयो खल, बलि इक ताहि सस्त्र दिय अतिबल॥
कहिय घोर परिहै जब संकट, करि अरिबध ह्वैहै तव कंकट[23]२७
याको तू जब करहिं अनादर, तव मम ढिग ऐहै यह सत्वर[24] ॥

ऐसा मत करो. बचो ॥ २० ॥ रावण ने कहा कि शिव १ स्त्री सहित रमते हैं तो २ योगियों की रीति कैसे बनारक्खी है, तू ३ बंदर के समान कूकता है ऐसे ही ४ बैल को रखनेवाले तेरे धनी होवेंगे ॥ २१ ॥ ५ क्रोध करके ॥ २२ ॥ ६ रक्षा करो यह कह कर और ८ पार्वती भी हाहाकार करके ७ शिव के गले लगगई जब महादेव ने अपने अंगूठे से पर्वत को दबाया तब उस के नीचे ९ हाथ चिपजाने से रावण रोया ॥ २३ ॥ मारीच ने छूटने की १० रीति बताई कि रोवै मत ११ महादेव की १२स्तुति करके दुःख मिटा १३कूक करके तीनों लोकों को मत जगा ॥ २४ ॥ १४धीरज१५ सामवेद पढ कर शिव की १६ स्तुति करी १७ नाराच जाति का छन्द ॥२५॥ १८महादेव ने कहा कि मैं प्रसन्न हुआ१९नमस्कारों के समूह करके (बहुत नमस्कार करके)तब२०राक्षस ने कहा कि मेरा हाथ टूटता है सो आप२१शीघ्र प्रसन्न होवें जब छूटैगा ॥ २६ ॥२२महादेव ने हसकर२३कवच ॥ २७ ॥२४शीघ्र मेरे पास पीछा आजावेगा

तैं रुदनारव दिसन तनायउ, आह्वय तव रावन अब आयउ।२८।
खण्डपरसु इम छोरि दयो खल, आयो विमद तुराय ढुगी कि अल॥
पुनि दिगविजय काज दिस प्राची, रावन चल्यो टेक हिय राची।२९।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ पाणिपीडनवेला वर्णितसप्तसप्तिसन्ततिवर्यवैवस्वतमन्वङ्गजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्र विकुक्षि ७ वंशवर्णनाऽन्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रेहनुमल्लङ्कासंवादे रावणपूर्वचर्यायां वेधो१वामदेव१वरप्रापणमेकचत्वारिंशत्तमो४१ मयूखः ॥ ४१ ॥ आदितस्त्र्यशीतितमः ॥ ८३ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

भूसुर इक पहिलैं भयो, विद्या अतुल विवेक ॥
वेद पढत तस वदनतैं, उपजी कन्न्या एक ॥१॥

पादाकुलकम्

दै तिहिं वेदवती आह्वय द्विज, निरखि अतुलगुन१रूप२सुतानिज
याकैं उचित धवँ न विनु अच्युतं, दैन तिन्हैं करि तुष्ट तपौं द्रुत।२।
इम विचारि अखिलेस रिझावन, प्रथित करन लग्गो तप पावन॥

तूने रोने का शब्द दिशाओं में फैला दिया इसकारण से तेरा नाम रावण होवेगा।२८। महादेवने उस दुष्ट को छोड दिया सो मानों १वीछू २डंक तुडाकर आवे ऐसे विना मद होकर आया फिर दिग्विजय करने को पूर्वदिशा में गया।२९।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य सन्तान प्रजापति वैवस्वत मनु के पुत्र जन्म में इक्ष्वाकु के वडे पुत्र विकुक्षि के वंश वर्णन में श्रीजानकीपति (रामचन्द्र) के चरित्र में हनुमान और लंका के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में ब्रह्मा और महादेव से वर प्राप्त होने का इकतालीसवां मयूख समाप्त हुआ।४१।और आदि से तैंयासी मयूख हुए।८३।

३ब्राह्मण ४ वहुत ज्ञानवान् ५ मुख से ६ वेदवती नाम दिया ७ पति ८ विष्णु भगवान् के विना और कोई नहीं उन विष्णु को प्रसन्न करने के लिये शीघ्र तप करो ॥ २ ॥ ९. प्रसिद्ध

नृपन बहुन द्विज मंगि बहोरिय,छम[1] न तदपि हरिसौं हठ छोरिय।३।
कन्यारूप निरखि क्रव्यादन,[2] द्विज सन मंगिय पाय प्रमादन ॥
नहि दिन्नी तब द्विजहिँ निलज्जन,
खाय[3] कहिय तोसम भुव खज्जन ॥ ४ ॥
मरत विप्र तस नारि गई मरि, बेदवती सु बची हिय हरि[4] भरि ॥
सो तव करत निहारी दससिर,केसपकरि लेजान लग्यो फिर[5]।५।
कचनिज[6] कट्टि सु गई धरनि धसि, मोही करि मरिहै इम कहि हसि
सुनि रावन यह अग्गसिधायउ, उसीरबीज[7] देसबिच आयउ ॥६॥
नृप मरुत्त तहँ सत्र[8] बनावैं, जीव[9] भ्रात संबर्त[10] जँजावैं ॥
वासौं रन मंगत नृप उट्ठत, रोक्यो मुनिन दिच्छित[11] न रुट्ठत॥७॥
तिनके कहेँ कही यह तानैं, हारे हम मखही मिस मानैं ॥
आयेहे देवहु तिहिँ अध्वर,चकित भजे छिपि छिपि सुनि निसचर।८।
इन्द्र१मयूर२उड्यो ढिंक[12]२व्है यमर२,श्रीद[13]३सँरट[14]३वक्रांग[15]४वरुन४सम
हारयो नृपहिँ कहाय दुष्ट हसि,गो जब रावन सुरन[16] गर्ब ग्रासि ।९।
आये लोकपाल तब अध्वर,[17] वेस धरे तिन्हके जिन्ह दिय वर ॥
चविय सक्र[18]१है सिखि१तेरेचाहि,होहु पुच्छ ममनयन हजार१०००है

१उस समर्थ ने तोभी विष्णु को विवाहने का नहीं छोडा ।३। २ राक्षसों ने ३उस ब्राह्मण को खाकर कहा कि तुम्हारे समान और खज(खाने की वस्तु) नहीं है ।४। ४विष्णु को हिये में भरके५उसके तप में विक्षेप करते ।५। ६अपने केसों को काट कर भूमि में घुसगई और कहा कि मेरे कारण से ही तू मरैगा७उसीरवीज नामक(कन्धार)देश में८यज्ञ९बृहस्पति का भाई१०यज्ञ करारहा था ११ जिसने यज्ञ की दीक्षा ली होवे वह क्रोध नहीं करता है ॥ ७ ॥ उन मुनियों के कहने से राजा ने रावण से कहा कि यज्ञ को ही मिस (बहाना) मान कर हम हारे. उस यज्ञमें देवता भी आये थे सो रावण को आया हुआ सुन कर चकित होकर छिप छिपके भागे ॥ ८ ॥ इन्द्र मयूर होकर उडा और यमराज १२ काक पक्षी हुआ १३ कुबेर १४गिरगिट (किरकांटिया) और वरुण १५ हंस होकर राग द्वेष से रहित होकर भागे१६देवताओं का गर्व ग्रस कर जब रावण चला गया ॥ ९ ॥ तब उपरोक्त लोकपाल पीछे १७ यज्ञ में आये और जिन जिन देवताओं ने जिन जिन का रूप धारण किया था उनको वर दिये १८ इन्द्र ने कहा कि हे मयूर ॥ १० ॥

जलद[1] मंडि मैं बुठ्ठ करौं जब, तेरै अति आनंद बढहु तब ॥
भनियसमन[2]काकहिं २ सुखभावहिं, जेतोकँहँविचश्राद्धजिमावहिं
तृप्ति पितर लहिहैं सब तासौं, अभय फिरहु बायस इच्छासौं ॥
सरटन[3]श्रीद३पुरटवपु थप्पिय,सब गुन हंसहिं४वरुन४समप्पिय१२
इम मरुत्त अध्वर उदंत हुव, भैयद चल्यो रावन जितातित भुव ॥
पुरूरवा१गय२गाधि३महीपति,सुरथ४बहुरि दुक्खंत५सुद्दमति॥१३॥
नृप इतिमुखं पुच्छाय परस्पर,भेजत भये पराभव कग्गर ॥
समय चिंति इम भूप नटे सब, आयउ यह साकेत दुष्ट अब।१४।
जहँ अनरराय नरेस विराजैं,
सिंधुर अयुत १०००० द्विगुन २०००० रथ साजैं ॥

••

तुरग लक्ख१०००००पाइक्क द्विगुन२०००००तस ॥ १५ ॥
हसि खल कह्यो बचहु कहि हारे,मुरयो तउ न नृप बहु अरि मारे॥
कायतजतअनररायतुमुलकरि,धीरकहियखल संक कछु न धरि१६
पोखि प्रजा किय राज्य धर्मपथ, जो हम तो यह होहु जथातथ ॥
ध्वंसक तव होवहु मम कुल धव,
भनि अनरराय तजे तब वपु १ भव २ ॥ १७ ॥

१मेघ मँडकर जब मैं वर्षा करूं२ यमराज ने काक से कहा कि जो तुझको श्राद्ध में जिम्हावे।१।उसके पितर उससे तृप्ति लेवेंगे२हे काक तू अपनी इच्छा से निर्भय फिर गिरगिट को कुबेर ने सोने के शरीरवाला बनाया और वरुण ने हंस को सब गुण दिये ॥ १२ ॥इसप्रकार मरुत्त नामक राजा के यज्ञ में वृत्तान्त हुआ ४ भय देताहुआ ५ दुष्यन्त ॥१३ ॥ ६ इत्यादि राजाओं ने परस्पर पुछाकर समय देखकर सब राजाओं ने युद्ध करने से नटकर रावण के पास पराजय (हार) के पत्र भेजे ७ अयोध्या में॥१४॥८ हाथी९घोड़े१०पैदल ॥ १५ ॥ शरीर छोडते समय भयंकर कार्य करके रावण की कुछ शंका नहीं करके अनरण्य ने कहा ॥ १६ ॥ हम ने जो प्रजा का पालन करके धर्म से राज्य किया है तो जैसा मैं कहता हूं वैसा ही होवेगा कि हमारे कुल का पति तुम्हारा मारनेवाला होवेगा यह कहकर अनरण्य ने इस संसार से सरीरछोड़ा

छितिपालन इम गंजि बड़े छक, उप्पर चल्यो देन दिवं ओदक[३]॥
नारद मिलि जँहँ कहिय निवारहु, मारि काल रक्खे ति न मारहु ॥१८॥

(दोहा)

संजमिनी पुरमैं सदा, करत बास सुहि काल ॥
जित्तहु ताकौं जायकैं, प्रबल पुण्यजनपाल ॥ १९ ॥

(पादाकुलकम्)

मोर्‌यो इम बीचाहि नारद मुनि, संजमिनी पहुँच्यो रावन सुनि ॥
कनक१रत्न२महलन बिच केते, जहँ खल लखे पुण्यनर जेते ॥२०॥
त्यौं नरकन पापी बहु त्रासे, बाहिर खल तिन्ह कढ्ढि बिसासे ॥
कर्बुर४पति पुनि जमहिं कहाई, अनहु हारि वा जुज्झहु भाई ॥२१॥
जम१रावन२बहु दिन जब जुट्टे, छोह प्रसभ दुहुँ२ओर न छुट्टे ॥
हुल्लसिपिक्खिनारदकियहासहिं, बिधिआयेलखिसृष्टिबिनासहिं ॥२२॥
बरजि बढे मन दुहुँन२बहोरे, जय न दुरघाँ न दुरघाँ कर जोरे ॥
अजकी सुनि रावन मुरि आयो, चंडकिरन जित करन चलायो ॥२३॥
कहिय जाय रबिमंडल कंटक, हारि धरहु वा लरहु बीर हक ॥
पासवान दंड सु सुनि रबिपँहँ, जाय निवेदि लग्यो आसय जँहँ ॥२४॥

---

१ राजाओं को २ स्वर्ग को ३ भय देने को चला जहां मार्ग में नारद मुनि मिले तिनने कहा कि जिनको काल ने पहिले ही मार रक्खे हैं तिनको मत मार ॥ १८ ॥ सबको मारनेवाला वह काल संयमिनी नामक पुर में वास करता है सो हे राक्षसों की पालना करनेवाले (रावण) उस को जाकर जीत ॥ १९ ॥ यमराज की राजधानी में पहुंचा वहां रत्नों के जड़े हुए सोने के महलों में धर्मात्मा मनुष्यों को देखा ॥ २० ॥ और नरकों में त्रास पाते हुए पापीलोगों को बाहर निकाल कर उनको धीरज दिया फिर४रावण ने ॥ २१ ॥५क्रोध और हठ दोनों ओर का नहीं छूटा जिनको देखकर प्रसन्न होकर नारद हसे उस समय सृष्टि का नाश देखकर ब्रह्मा आये ॥ २२ ॥ दोनों ओर से मन बढरहे थे जिनको मना करके पीछे फेरे इनमें दोनों ओर नतो किसीका विजय हुआ और न दोनों ओर में किसी ने हार मानकर हाथ जोड़े ब्रह्मा की बात सुनकर रावण वहांसे पीछा फिर आया और सूर्य की तरफ विजय करने को चला ॥ २३ ॥ सूर्य की कक्षा के नीचे (समीप) रहनेवाले दंड नामक सूर्य के सेवक ने सूर्य से जाकर कहा

हेलिहु कहिय दुष्ट सन हारे, पुनि खल ससि[1] दिस सुभट प्रचारे ॥
ससिमंडल पहुँचत भट सारे, प्रचुर[2] सीत जड होय पुकारे ॥ २५ ॥
सुनि मारीच[1] प्रहस्त[2] आदि सन, रावन आक्खिय भय न उचित रन
जंपिय उनहु गरे हम जावत, निठुर हिमानी[3] दर्प नसावत ॥२६॥
रक्खहु गाढ सबन कहि रावन, पुनिहु बढ्यो ससिसौं जय जावन॥
विधिहिं[4] आनि पुनि खलहिं बहोरयो, छितिअमृतद्विजपति[5] सुनि छोरयो॥
बलि जित्तन अधभुवन[6] विचारत, पहुँच्यो नागलोक भय पारत ॥
प्रतिभट भोगवतीपुर[7] के पहु, बासुकि आदि नाग जित्यो बहु॥२८॥
उत्तम नागसुता गहि आनी, मनिमय नगर गयो पुनि मानी ॥
सट्ठिहजार६००००निवातकवच जँहँ, तिनहु घोर संगर मंडिय तहँ।२९।
उनहु सुभट रावन किय आकुल, साग्र अब्द रन रहिय समाकुल
विधिहि[11] आय तत्थहु दुव रवरजे, तुम मम बर होहु न पर तरजे।३०।
इत मम बर लंकेसहु उद्धत, मित्र बनहु अब दुहुँ दिस सम्मत ॥
सुनि निवातकवचन रावन सन, मैत्री करि रक्ख्यो वह हित मन।३१।
लंकासौं हु अधिक सुख लिन्नौं, क्रम पयान अग्गे पुनि किन्नौं ॥
खोजत पुच्छि बरुन लोकहिं खल, पुर अस्म[12] के पहुँच्यो बिमानबल।३२।
दानव जत्थ च्यारिसत४०० दुर्द्धर[13], कालकेय निवसौं बल जयकर॥

॥ २४ ॥ सूर्य ने भी कहा कि उस दुष्ट से हारे १ चंद्रमा की ओर २ बहुत ठंढ से जड़ होकर पुकारे ॥ २५ ॥ दया रहित ३ बर्फ़ हमारा घमंड मिटाती है ॥ २६ ॥ ४ ब्रह्मा ने आकर उस दुष्ट को पीछा फेरा तब ५ चन्द्रमा ने पृथ्वी की ओर अमृत छोडा (चन्द्रमा सदैव अपने पास से अमृत वर्षाकर पृथ्वी की पालना करता है सो रावण के जाने से बन्ध कर लिया था सो फिर छोडा) ॥ २७ ॥ फिर ६ पाताल को जीतने का विचार करके ७ भोगवती नामक नगरी के राजा सामने युद्ध करनेवाले हुए जिन बासुकि आदि बहुतों को विजय किये ॥ २८ ॥ २९ ॥ ८ उमरावों सहित ९ डेढ वर्ष तक १० भरपूर युद्ध रहा ११ ब्रह्मा ने कहा कि तुम दोनों मेरे वर से बढे हो सो परस्पर एक दूसरे को त्रास देनेवाले मत हो ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १२ अश्म नामक पुर में ॥ ३२ ॥ १३ दुस्तर (दुधर्ष) विजय करनेवाली कालकेयों की सेना जहां बास करता

इक्क तहँ विद्युज्जिव्ह करालक, सुप्पनखा व्याही जिहिँ सालक ३३
सो लहि कालकेय सब सत्थैं, मंडि चल्यो रन रावन मत्थैं ॥
सहबल खल भाम सु संहार्यो, बलिजयकरितससोकबचार्यो। ३४।
पासीलोकै खोजि तिहँ पापी, थिरहठ प्रविसि लरन मति थापी ॥
रोक्यो तत्थ जामिकैन रावन, प्रविस्योतिन्हहनिअग्गअपावन । ३५।
पासीसुत इहिँ सुनि गो१पुष्कल२, विरचन रन आये उद्धतबल ॥
लरे बहुतं तदपि न जय लद्धो, खल तिनकोहु कटक बहु खद्धो। ३६।
स्यंदन छोरि गगन पासीसुत, जाय लरे बहुतहि छलबलजुत ॥
तदपि न रावन हारि भई तब, स्वपुर गये भाजि खिलैं भट लै सब ३७
कहि पठई रावन करि हासी, पठवहु लरन छिप्यो क्यौं पासी ॥
जलैं पति सचिव प्रभास कह्यो जहँ, क्यौंयँहँहेरतअप्पवरुन कँहँ। ३८।
सुनन गानविद्या सु विलासी, पंकज सूनु लोक गो पासी ॥
कहि मम विजय भयो दसकंधर, खोजनलग्यो इतर तँहँ खेचर ३९

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८बेला ६८।१ पाणिपीडनवेलाबर्णितसूर्यसन्ततिवर्यवैवस्वततनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पष्टपपुत्रविकुक्षिवंश

है वहां एक विद्युज्जिव्ह नामक१भयंकर राक्षस जिसको रावण की बहिन सूर्पणखा को शाले (रावण) ने परणाई थी ॥ ३३ ॥ दुष्ट रावण ने सेना सहित २ बहिनोऊ को मारकर फिर उसका शोक किया ॥ ३४ ॥ वहां ३ वरुण लोक को खोजकर ४ पहराइतों ने रावण को रोका । ३५। यह सुनकरगो और पुष्कल नामक वरुण के पुत्र युद्ध करने को गये५तोभी ॥ ३६ ॥ ६ रथ को छोडकर ७ बाकी के बचेहुए वीरों को लेकर ॥ ३७ ॥ ८ वरुण क्यों छिपगया है ९ वरुण के सचिव प्रभास ने कहा कि आप वरुण को यहां क्यों हेरते हो ॥ ३८ ॥ वह वरुण गानविद्या सुनने का विलासी ब्रह्मा के लोक में गया है, यह सुनके मेरा विजय हुआ यह कहकर राक्षस (रावण) दूसरों को हेरने गया ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य के सन्तान प्रजापति वैवस्वत के पुत्रों की उत्पत्ति में इक्ष्वाकु के पांचवीं पुत्र

३ ाख्यानान्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रेहनुमल्लङ्कासँव्वादेरावणापू
र्यायां दिग्विजयवारुणस्थानपर्यन्तसमाक्रमणं द्विचत्वारिंशत्तमो
॥ मयूखः ॥४२॥ आदितश्चतुरशीतितमः ॥८४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम्

रिइमअइमनगरदुवरजंयकलि,बलिकोस्थानतृतीयइलख्योबलि
ज्य नगर आभा तँहँ दीसी, तिरस्कार दिवको करती सी ॥१॥

॥ शुद्धप्राकृतिभाषा ॥ गीई ॥

वेरुलिअवार१गोउर२कुड्ड३कवाडा४वइरविअड्डिवरा ॥
फलिहमणिप्पायारा दिट्ठा तह दहमुहेण बलिणयरी॥२॥
एत्ताहे तं ठाणं दट्ठूण अमुम्मि को हु वसइ त्ति ॥
पट्ठाविओ खलेण वि मारीओ माउलो सुवो मज्के ॥३॥

गीर्वाणभाषा

चाक्चक्यचकितचेता मारीचोऽपि प्रविश्य वरणान्तः ॥
आदर्शमिव मयकपिः सोऽद्राक्षीद्दैत्यराजनिजानिलयम् ॥४॥

ाकुत्ति के वंशवर्णन के भीतर श्रीजानकी प्रिय (रामचन्द्र) के चरित्र में
हनुमान् और लङ्का के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में वरुण के स्था-
को घेरने पर्यन्त दिग्विजय का बियालीसवां मयूख समाप्त हुआ। ४२।
र आदि से चौरासी मयूख हुए ॥ ८४ ॥

युद्ध में २ फिर ३ कान्ति ५ स्वर्ग का ४ अनादर करती हुई दीखी ॥ १ ॥
हां रावण ने लहसनियों से बनेहुए शहर के दरवाजे, दीवारें और किंवा-
ड़ोंवाली हीरों की वेदियोंवाली और बिल्लोर के कोटवाली बलि की पुरी
खी ॥ २ ॥ उस समय में उसको देखकर इसमें कौन रहता है यह देखने
; लिये दुष्ट रावण ने अपने मामा मारीच को भीतर भेजा ॥ ३ ॥ जिस
कार बंदर काच के बनेहुए महल को देखे तिसप्रकार, चकाचोंधि से चकित
आ है चित्त जिसका ऐसे मारीच ने कोट के भीतर घुसकर दैत्यराज के
ख्य महल को देखा ॥ ४ ॥

ती ॥ वैदूर्यद्वारगोपुरकुड्यकपाटा वज्रवितर्दिवरा। स्फटिकमणिप्राकारा दृष्टा तत्र दशमुखेन बलिनगरी ॥२॥
स्मिन्काले तत्स्थानं दृष्ट्वा अमुष्मिन्कः खलु वसतीति। प्रस्थापितः खलेनापि मारीचो मातुलः सो मध्ये॥३॥

पट्६क्रक्ष्याउटदेशं कथञ्चिदुल्लङ्घ्य सप्तम७द्वारि ॥
वीक्ष्य चतुर्भुजपुरुषं मीलितहक्कोटि१०००००००रविरुचं प्रत्यैत् ॥५॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

मारीचहु जाभेयसों, आक्खिय सब अनुभूत ॥
एकाकी१दससिर उतरि, हंकिय जिम आहूत ॥ ६ ॥
सउधनकी सोभा लखत, देख्यो सप्तम७द्वार ॥
स्याम चतुर्भुज पुरुष सुहि, कुल रक्खस भयकार ॥ ७ ॥
पिक्खत खिन सो हुव पिहित, जिहिं भग्गो खल जानि ॥
विविध जनन इक्खत प्रविसि, अग्ग लख्यो बलि आनि ॥ ८ ॥

(पादाकुलकम्)

तू यँहँ कोन१कहिय बलि तासों,को अभिधान२थान२जोंनि कासों
रक्खसराज१कह्यो मैं रावन२,प्रभु मुनि जनक विश्रवा३पावन॥९॥
यँहँ जित्तन लंकापति४आयो, प्रतिभट कहुँ न जुरन रन पायो ॥
हरि रक्खे तुम रोकि सुनैं हम,मुक्कों तुमहिं चलो बँ संग मम॥१०
बलि आक्खिय नर द्वार महाबल,निकसन दै न तजहु हठ निष्फल
रावन कहिय तजहु भय रंगहि,सुख भुग्गहु चल्लहु मम संगहि ११

छः परकोटों को किसीप्रकार लांघकर सातवें द्वार पर चार भुजवाले पुरुष को देखकर मीलितनयन(नेत्र मीचकर)कोटि सूर्यों की कान्तिवाला जाना॥५॥ १ भागोज से २ अनुभव किया हुआ सब वृत्तान्त कहा ३ अकेला ४ जैसे बुलायाहुआ जावे तैसे गया ॥ ६ ॥ ५ राज के महलों की शोभा देखताहुआ छः दरवाजे लांघकर ६ सातवें दरवाजे पर राक्षसों के कुल का नाश करनेवाले श्यामरंग और चार हाथवाले पुरुष को देखा ॥७॥ देखते ही वह पुरुष ७ अन्तर्धान होगया जिसको दुष्ट (रावण) ने भागाहुआ जानकर नानाप्रकार के लोगों को ८ देखताहुआ घुसकर आगे ९ बलि नामक दैत्यराज को देखा ॥ ८ ॥ १० तेरा नाम क्या है ११ तेरा जन्म किससे है १२ विश्रवा नामक पवित्र मुनि मेरे पिता हैं ॥ ९ ॥ १३ सामने होकर युद्ध करनेवाला कोई नहीं मिला १४ हमने सुना है कि तुमको विष्णु ने रोक रक्खा है सो मैं तुमको १५ छुड़ाता हूं १६ अब मेरे साथ चलो ॥ १० ॥ १७ मेरे द्वार पर बड़ा बलवान् मनुष्य बैठा है वह नहीं निकलने देता ॥ ११ ॥

पुनि बलि कहिय होय जब प्रत्यय, सहज करहु इक काज बीस२भुज
मंजूषा यह लखहु मनोरम, याबिच है कुंडल दुव उत्तम ॥१२॥
मेरो तबहि जानिहौं मोचन, आनहु कर वल१२ आलोचन२ ॥
वह पेटा तब दुष्ट उघारी, कुंडल दुव देखे रुचिकारी ॥ १३ ॥
उठे तदपि न जदपि उठाये, लाहि अचिज्ज भुज सर्वहि लगाये ॥
जोर करत गिरयो टिक जानुन, गर्बहिं तजि आयो लज्जित गुन१४
कंदुक करि कइलास उठायो, इक१हु न तासौं कुंडल आयो ॥
आक्खिय हसि बलि पुब्बकाल अह, मम जु हिरण्यकस्यपुप्रपितामह
धारतहो कुंडल ए उत्तम, सु हन्यौं द्वारपुरुष सो दरसम ॥
अतिबल स्यामपुरुष यह ऐसो, हठ तजि जाहु द्वार पर है सो॥१६॥
विरचतदपिबलिमंदिरबाहिर, जयनिज कहि निकस्यो खल जाहिर॥
पुष्पक चढि लैकैं निज पंचन, आयो निजपुर धर्म उदंचन ॥१७ ॥
नर १ गंधर्व २ जच्छ ३ सुर ४ किन्नर ५,
दनुज ६ नाग ७ कन्न्या बहु निरदर ॥
लायो पकरि रूप१गुन२लच्छी, उद्धत दर्प बिकिखि सब अच्छी॥१८॥
मय कन्न्या पहिलैं मंदोदरि, आनी परनि बेदपद्धति अरि ॥
तनुज ति मेघनाद हुव तामैं, सबन बडो बर सूर सभामैं ॥ १९ ॥

२हे बीस हाथवाले तुम्हारे कहने का जब १ विश्वास होवे कि एक सहज कार्य है उसको कर दो, यह ३ सन्दूक (पेटी) ॥ १२ ॥ ४ तभी मेरा छुडाना मान लूंगा, उन कुंडलों को बल करके ला और उनके ५ दर्शन कर, अथवा विना विचार किये उठा ला, तब रावण ने उस६पेटी को खोली ॥ १३ ॥ ७ आश्चर्य करके ८ घुटने टिक कर ॥ १४ ॥ ९ गेंद के समान कैलास पर्वत को १०पहिले समय में मेरा पड़दादा ॥ १५ ॥ ११ उसको १२द्वार पर रहनेवाले इस पुरुष ने जैसे १३शंख को फोड़ डाले इसप्रकार मारडाला, ऐसा बलवान् यह श्याम पुरुष है सो द्वार पर है इससे हठ छोड कर चला जा ॥ १६ ॥ तोभी वह नकटा बली के घर के बाहिर अपना विजय कहता हुआ निकसा १४ ढकना (धर्म को ढक देनेवाला) ॥ १७ ॥ १५ निर्भय अथवा निर्लज्ज १६ लक्ष्मी के समान १७ घमंड में भरेहुए ने १८ अच्छी देख देख कर ॥ १८ ॥ १९ वेदमार्ग के शत्रु (रावण) ने ॥ १९ ॥

यह[1] दिग्विजय करन खल गो यह, मेघनाद आरंभिय तब मह[2] ॥
दिच्छा[3] ले रु बुल्लि तहँ देवन, सोम१हव्य[4]२उपहरि किय सेवन।२०।
उचित द्विजहु लंका मख आये, रक्खस इम सब सप्त७रचाये ॥
ब्रह्मादिक देवन तिहिं दिय बर, माया रहहु तामसी[5]१तव कर॥२१॥
समर अदिठ[6] होहु२सब सत्रुन,अरु तू लखि लखि करहु जेर४उन॥
क्रतुँए७जब घननाद१रह्यो करि,सुत्तो कुंभकरन२बर[8] अनुसरि।२२।
बैठि तबहिं जलबीच बिभीखन, संतत[9] ब्रत लग्गो तप सद्धन ॥
अस्म नगरसन रावन नायो[10], मधु[11] इहिं अंतर जोर मचायो॥ २३ ॥
आसिर[12] यहहु भौम[13] रावनको, अवसर पिक्खि चोर आवनको ॥
लंका आय पैठि अंतहपुर[14], तँहँ निज इष्ट खोजि अँटि[15] आतुर।२४।
भव्य[16] बंधुगन रावन भगिनी, असुरप[17] कुल मायागुन अगिनी ॥
कुंभीनसी नाम कांता[18] जो, साहस प्रबल ताहि गहि मधु सो।२५।
आलय[19] निज मधुवन वह आयो,बसि दंपति[20] सुख समय बितायो॥
रावन१नहि घननाद२जंजनरत[21],ज्यौं दुंवर[22]अनुज सुप्त१अरु जलगत२

१ जब ऊपर कहा हुआ दिग्विजय करने को यह रावण गया था तब मेघनाद ने २ उत्सव आरंभ किया ३ यज्ञ की दीक्षा लेकर देवताओं को बुलाये और सोमयज्ञ के ४ होमने की सामग्री का सेवन किया ॥ २० ॥ उचित ब्राह्मण भी लंका के यज्ञ में आये और मेघनाद ने सात यज्ञ किये ५ तमोगुणी (राक्षसी) माया तेरे हाथ में ॥ २१ ॥ युद्ध में सब शत्रुओं से ६ अदृष्ट होकर तू उनको देखकर सब को दबा. जब यह मेघनाद ७यज्ञ कर रहा था और८वर के अनुसार कुंभकर्ण सोता था ।२२। विभीषण जल में घुस कर ९ निरंतर व्रत करके तप साधरहा था और अस्म नगर से रावण पीछा१०नहीं आया तब इस समय में ११मधु नामा राक्षस ने बल पकड़ा।२३।यह १२राक्षस रावण का१३बहिनोऊ चौर के आने का समय देख कर लंका में आय १४जनाने में घुसकर जल्दी से१५फिर कर।२४।१६सुन्दर बंधुगण में रावण की बहिन(सगी बहिन नहीं थी)१७राक्षसों के कुल की माया के गुणों में अग्रणी कुंभीनसी नामक १८ सब अंगों में सुन्दर को बडे हठ से मधु ने पकड़ी ॥ २५ ॥ उसको लेकर मधुवन नामक अपने १९ स्थान में आया और २० स्त्रीपुरुष ने जोड़े से बास कर सुख से समय बिताया. रावण तो था नहीं, मेघनाद२१ यज्ञ करने में रत था इसीप्रकार २२ कुंभकर्ण शयन में और विभीषण पानी में गया

निज निज कर्म तजि सु अटक्यो नन,
मधु करि सफल गयो इच्छित मन ॥
असम नगर संगत रावन इत,जुरि करि कालकेय१बारुने२जित ।२७।
हे बलिधाम३गेह अब आयो, ललित३ बिबिधकन्न्या गहिलायो॥
आत सुन्यौं सागस४ मधु आगम१,मेघनाद मख सुरन५ समागम।२८।
सुतसौं कुपित कह्यो तहँ दससिर, कुतनय६ भयो सत्रुपूजक किर७॥
देवन तिन्हमैं प्रभु८ अब दमिहौं,रन मधु मारि अनंगेल१०रमिहौं॥२९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८ बेला ६८।१ विवाहवेलाबर्णितसूर्यसन्ततिवर्यवैवस्वततनुजेक्ष्वाकु६पट्टपुत्रविकुक्षि७वंशबर्णनसावसरश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासंवादे रावणपूर्वचर्यायांबलिस्थानमर्दितमानदशग्रीवागमनं त्रिचत्वारिंशत्तमो ४३ मयूखः ॥ ४३ ॥ आदितः पञ्चाशीतितमः ॥ ८५ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(पादाकुलकम्)

इमकहिचढयोतिते११हिअतिआग्रह,सहँसइक्क१०००अच्छोहिनिदलसह१२

हुआ था ॥ २६ ॥ इन्होंने अपना अपना कार्य छोड कर मधु को नहीं रोका १ इधर असमनगर के साथ कालकेय और २वरुण के सेवकों को जीतकर ॥ २७ ॥ ३ सुन्दर ४ अपराध सहित मधु का आना और मेघनाद का यज्ञ में ५ देवताओं का मिलना सुना ६ कुपुत्र हुआ. शत्रुओं की पूजा करनेवाला और ७ प्रीति करनेवाला होकर. ८ मैं समर्थ हूं सो उन देवताओं को ९ दंड दूंगा और मधु को युद्ध में मार कर १० विना रोक टोक रमूंगा ॥२८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यसन्तान प्रजापति वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के बडे पुत्र विकुक्षि के वंशवर्णन के अवसर में श्रीजानकी है स्त्री जिनकी अर्थात् जानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में हनुमान और लंका के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में वलि के स्थान में मानमर्दित होकर रावण के आने का तियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और आदि से पच्यासी मयूख हुए ॥ ८५ ॥

वेढियं जाय दसानन मधुबन, मधुहु सुनत लायो ओदक मन॥१॥
यह लैगो सु भ्रातढिग आई, बॅलय१ पोत२ निज लाज बताई ॥
बुल्ली भामहि सदय बचावहु, पैं काम तहँ लरन पठावहु ॥ २ ॥
कांत बिहीन मोहि जो करिहो, भ्रात तदपि मोदुख हिय भरिहो ॥
यहहि वत्त सचिवन जव अक्खिय, रिसतजि तबहि छमा खल रक्खिय

(शुद्ध प्राकृतभाषा इन्दवइरा)

णाऊण लङ्कावइणा वि विज्जुजीहं, निसुट्टं किर कालकेअं ॥
भामं सुवं सुप्पणहीछइल्लं, पल्लट्टिऊण त्ति जढो महुग्गं॥४॥

(वंसत्थो)

काऊण सत्थे दहकंधरो वि तं कुम्भीणहीकङ्कणपीढकंधरं ॥
अप्फुण्णअट्ठावयपव्वओवले ठाही खलो मेरुसिरं स गव्विरो॥५॥
रम्भातहिंअच्छरसाऽहिसारिआजान्तीधणाऽहीससुअप्पिआऽलअं।
सुणहा वि विक्खेण खलेण वेवई वलेण भुत्ता पयडं पसूविय।६।

११मधुवन की ओर १२ एक हजार अक्षौहिणी सेना सहित १ घेरा २ मन में भय लाया॥ १ ॥ मधु लेगया था ३ वह (कुंभीनसी) भाई (रावण) के पास आई और अपने ४ चूड़ा और ५ तिमणियां (गले का भूषण) की लज्जा बताई कि इन दोनों की लज्जा तुझे है (स्त्रियां उन दोनों पदार्थों को सुहाग का चिन्ह मानती हैं) ६ तुम्हारे बहिनोऊ को दया सहित बचाओ ॥ २ ॥ ७ मुझे जो पति बिना करोगे तो ॥ ३ ॥ रावण ने भी काल केय वंश के अपनी बहन सूर्पणखा के पति क्रूर विद्युज्जिह्व को पहिले समय में भूल से मारडाला था उसको सोचकर कुंभीनसी के पति मधु को छोड दिया ॥ ४ ॥ फिर दुष्ट रावण उस कुंभीनसी के पति मधु को साथ लेकर सुवर्ण पर्वत (मेरु) का आक्रमण करके गर्वित होकर विचार बांध कर उसके शिखर पर स्थित हुआ ॥ ५ ॥ वहां रंभा नाम अप्सरा कुबेर के पुत्र की प्यारी अभिसारिका की तरह अलकापुरी को जाती थी उस भय से कांपती हुई पुत्रवधू को भी दुष्टरावण ने प्रत्यक्ष पशु की तरह बल

इन्द्रवज्रा ॥ ज्ञात्वा लङ्कापतिनाऽपि विद्युज्जिह्वं निपातितं किल कालकेयं। भामं स्वं सूर्पणखारसिकं पर्यस्य इति त्यक्तो मधु उग्रम् ॥४॥ वंशस्थः॥ कृत्वा सार्थे दशकन्धरोऽपि तं कुम्भीनसीकङ्कणपीठकन्धरम् । आक्रान्ताऽष्टापदपर्वतो निर्द्धार्य तस्थौ खलो मेरुशिरसि स गर्वितः॥५॥ रम्भा तत्र अप्सरा अभिसारिका यान्ती धनाधीशसुतप्रिया अलकाम् । स्नुषाऽपि विपक्षेण खलेन वेपमाना बलेन भुक्ता प्रकटं पशुरिव ॥६॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

तिहिं अक्खिय हाहा तजहु, तनयं[1] बध मैं तोर ॥
तदपि[2] सिलातल डारि ताहिं, जहण[3] किन्न छक जोर॥ ७ ॥
गति विहाल अच्छरि गई, नलकूबर ग्रह निट्ठि ॥
कंपत उर धकधक विकल, दुर्मन[4] परी तस दिट्ठि ॥८॥
कारन तासौं श्रवन करि, श्रीदतनयं[5] दिय साप ॥
अबसौं बल करि अंगनां[6], पकरत मरिहै पाप ॥ ९ ॥
इत दससीसहु इंद्र पर, कटक चढाई किन्न ॥
सुरपति गो हंसगं[7] सरन, भीरुं[8] कहिय भय भिन्न ॥१०॥
दुर्जय वह अक्खिय इंहिन[9], प्रिय मोसौं बर पाय ॥
दुष्ट तुमहिं दैहैं सु दुख, लखहु काल नयं[10] लाय ।११।

षट्पात

सुनि अजं[11] बच सक्रादि[12] पहुँचि तजि और धनी पँहँ ॥
कहन लगे हम कृषुकं[13] तंत्रं[14] सचिवन किन्ने तँहँ ॥
कथित कथित हम करत तदपि वृखं[15]१सकँट[16]२बिकाये ॥
सचिव ईस१ बिधि२सरनि लुप्पि बँहुरेहु[17] लुटाये ॥
बर कूप१बित्त२चोरहिं बखसि पटक्यो रावन धाट पर ॥

पूर्वक भोगी ॥ ६ ॥ मैं १ तेरे पुत्र की स्त्री हूं तोभी २ जबरी से ३ भोग किया ॥ ७ ॥ ४ उदास दीखी ॥ ८ ॥ ५ कुबेर के पुत्र नलकूबर ने रावण को श्राप दिया कि अब से किसी अन्य पुरुष की ६ स्त्री को उस की इच्छा बिना बल से पकड़ते समय यह पापी मरैगा ॥ ९ ॥ ७ ब्रह्मा के शरण में ८ भीरु (कायर) ने कहा कि हम भय से भिन्न होगये हैं ।१०। ९ ब्रह्मा ने १० नीति लेकर ॥ ११ ॥ ११ ब्रह्मा के वचन सुनकर १२ इन्द्र आदि औरों को छोड कर मालिक (विष्णु) के पास पहुंचकर कहने लगे कि हम १३ कर्षं (खेती करनेवाले) हैं जिनको आपने मंत्रियों के १४ वश में करादिये , उनका हम कहना करते हैं तोभी १५ बैल और १६ गाडा (छकड़ा) बिका दिये , आपके मंत्री महादेव और ब्रह्मा हैं. जिन्होंने मार्ग लोप कर हम को १७ बहुरूं (उधार देनेवालों) से लुटवालिये. श्रेष्ठ कुए और धन चोरों

अब निलयसौं हु कढ्ढत असहि धनी सरन लिय चक्रधर१२

दोहा

सोक अनस्वर नाथके , सरैं करहु विनु काम ॥
हम भिच्छुक कितती रहैं, धनी बतावहु धाम ॥१३॥
हरि आक्खिय सचिवन बहुत, पन परिक्ख कछु पारि ॥
मैं तुम तक्खर मारिहौं, पक्खर गुरुर प्रसारि ॥१४॥
सुरन कहिय जोलौं समय, परखन तोलौं पीर ॥
हेलन विनु हसिकैं सु हरि, धरहु अवै कहि धीर ।१५।
वासवै मुख दुर्मन विबुध, आय तिदिव यह आक्खि ॥
अधिक सज्ज अमरावती, रचिय जतन दृढ रक्खि ॥१६॥

षट्पात्

इहिं अंतर बल अतुल त्रिदिव पत्तो लंकापति ॥
दुव२ दिस जुज्झिय दुसह अमर१ आसिर २ प्रसभी अति॥
वसु निर्ज्जर सावित्र १ मिलत उत जरठ सुमाली २ ॥
सुरनैं रक्खस सीस कट्टि मोदित किय काली ॥
मृत सुनत ज्येष्टमातामहहिं कलि प्रचंड रावन करिय ॥

को दिला कर रावण को धाड़ा डालने को डाला और अब घर से भी निकालते हैं सो नहीं सहन करके हे विष्णु भगवान् आप धनी का हम ने शरण लिया है ॥ १२ ॥ आपके शोक और पीड़ा रहित होने से सरजाता (काम चलजाता) है इसीप्रकार हम को भी कामना रहित कर दो नहीं तो हम भिक्षुक हैं सो कहीं तो जाकर रहैं सो हे स्वामी जगह बताइये॥ १३ ॥ विष्णु भगवान् ने कहा कि कामदारों के बहुत नियम हैं जिनकी कुछ परीक्षा करके मैं तुम्हारे तस्करों (चोरों) को गरुड़ पर पाखर डालकर मारूंगा ॥ १४ ॥१देवताओं की अवज्ञा नहीं करके विष्णु ने कहा कि अभी धीरज करो ॥ १५ ॥ २ इन्द्र आदि उदास देवताओं ने स्वर्ग में आकर यह [विष्णु ने कथन किया वह] कहा ३ इन्द्र की राजधानी अमरावती नामक नगर को ॥ १६॥ ४ स्वर्ग में ५ पहुंचा ६ देवता और राक्षस, अत्यन्त हठ करनेवाले लड़े वसु जाति का सावित्र नाम देवता और सुमाली नामक बुड्ढा राक्षस जुड़े जिन में देवता ने राक्षस का मस्तक काट कर देवी को प्रसन्न करी. बड़े नाना को मराहुआ सुन कर रावण ने भयंकर युद्ध किया

तामसी प्रबल माया तबहि बारिदनादह्नु बित्थरिय॥ १७॥

(दोहा)

सक्र गह्यो सुर जित्ति सब, निडर बली घननाद ॥
भजि जयंत व्यवहित भयो, बदि न सक्यो रनबाद॥ १८॥
दिव झंडे दससीसके, गड्डे सुर मदगारि ॥
याहि नाम दिय इंद्रजित, पंकजजात पधारि ॥ १९ ॥
बलि दससिरहिँ सिराहि बिधि, इन्द्रहिँ त्रिदिव दिवाय ॥
लंका पुर पठयो खलहु, सदयभाव समुझाय ॥ २० ॥
कन्न्या इक [1]बारिजकुसुम, बैठी [2]बारिधि बीच ॥
लंका आयउ ताहि लै, [3]निधरक रावन नीच ॥ २१ ॥
काहूको सुनि पुनि कथन, निलज तजी वह नारि ॥
बहुरि [4]बिथारन दिगविजय, हंक्यो गिनि तहँ हारि ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ वीतिअचण्डासिवंशवर्णने बसुदेव६८बेला६८।१पाणिपीडनबेलावर्णिमेहिरसन्तानमणिवैवस्वततनुजेक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रविकुक्षि७वंशवर्णनसाऽवसरश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासँव्वादेरावणपूर्वायांस्वर्गसमाक्रमणं चतुश्चत्वारिंशत्तमो४४मयूखः॥४४॥आदितः

इस समय मेघनाद ने तमोगुणी माया फैलाई ॥१७॥ देवताओं को जीतकर घनाद ने इन्द्र को पकड़ लिया और इन्द्र का पुत्र जयन्त छिपगया ॥ १८॥ देवताओं के मद को नाश करनेवाले (मेघनाद) ने स्वर्ग में रावण के झंडे रोप दिये इस कारण से ब्रह्मा ने आकर उसका नाम इन्द्रजित् दिया ॥ १९ ॥ ब्रह्मा ने रावण की प्रशंसा करके दयाभाव से समझाकर इन्द्र को स्वर्ग दिलाकर पीछा लंका को भेजा ॥ २० ॥ १ कमल के पुष्प पर २ समुद्र में ३ निर्भय ॥ २१ ॥ ४ दिग्विजय फैलाने को ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाहवर्णन समय में सूर्य की संतान में मणि रूप वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के बडे पुत्र विकुक्षि के वंशवर्णन के समय में श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में , हनुमान और लंका के संवाद में रावण के पूर्व आचरण में स्वर्ग को घेरने का चवालीसवां मयूख

षडशीतितमः॥ ८६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

(सोरठा)

समय इक्क[1]दससीस, मत्त नगर माहिष्मती ॥
आय निसाचरईस, पठई कहि हैहय नृपहिं ॥ १ ॥
कै रन मंडहु कूर, कै परिजित तेरे कहहु ॥
समुख चलावत सूर, दारन[2] बिच कातर दुरत ॥२॥
जदु हैहयपति जत्थ, अर्जुन तपत सहस्रकर ॥
रेवा सलिल समत्थ, क्रीडत हो सकलत्र सो ॥ ३ ॥
रावनको किय रोध, जब ताके जामिक जनन ॥
कंटक तबहि कुबोध, हनैं बहुत परतंत्र हठि ॥ ४ ॥

(षट्पात्)

जंपिय[3] कतिकन जाय तबहि नृपसौं खल तर्जन ॥
ऐहौं अर्जुन कहिय जबहि क्रीड़ा[4] उत्सर्जन ॥
व्रत प्रदोस दसवदन हो सु यह सुनि तब श्रीहर ॥
पूजन लग्गो प्रनत धुनीकूलहि साहस धर ॥
रोक्यो सु सलिल अर्जुन रमत कर नदि सेतु सहस्रकर ॥
तस स्रोत उफनि प्रतिगति तबहि बोरे खल उपहार बर॥५॥
बहत इक्खि उपहार अर्जन[6] रावन जिम तिम करि ॥

समाप्त हुआ॥८४॥ आदि से छियासी मयूख हुए ॥ ८६ ॥

१ उन्मत्त (मस्त) रावण ने ॥१॥ २ हाराहुआ स्त्रियों में कायर घुसता है ॥ २ ॥ यदुकुल का पति हैहयार्जुन हजार हाथोंवाला जहां पर तपता था सो वह समर्थ स्त्रियों सहित नर्मदा नदी के जल में क्रीड़ा करता था ॥ ३ ॥ रावण को जब उसके पोहरायतों ने रोका तब उन पराधीनों को हठ से मारडाला ॥ ४ ॥ ३ कहा ४ जलक्रीड़ा को छोडूंगा जब ५ विशेष नम्र होकर नदी के किनारे पर ही हठ धारण करके पूजन करने लगा सो सहस्रार्जुन ने जलक्रीड़ा करते समय अपने हाथों का पुल बांधकर नदी के जल को रोकदिया जिससे प्रवाह उलटा बहकर पूजा करने की रावण की सामग्री को डुबोदी ॥५॥ ६ पूजन

नच्चि त्रिलोचन अग्ग भेट कुसुमन अंजलि भरि ॥
संगर पर हुव सज्ज इतहु क्रीडन करि अर्जुन ॥
गरुर झंपि जिम नाग गह्यो कब्बुर कमान गुन ॥
कौतुक समान ताकौं करखि लै निजपुर आयउ लसत ॥
.... ॥ ६ ॥

(दोहा)

अर्जुनको सब दिस उड्यो, अतुल सुजस आमोद ॥
सो सुरलोक पुलस्त्य सुनि, क्रमैं सहँसकरैं कोद ॥ ७ ॥
बुल्लिय मिलि तव जस बगर, छिति१ दिव२ दिन्न छिपाय ॥
क्यौं अब रक्खहु विप्रको, ज्यौं गुनदोखहिं जाय ॥ ८ ॥
छोर्‌यो तब रावन छितिपं, यहँ पुलस्त्य पुनि अक्खि ॥
करे मित्र दुवमेल करि, सप्तकील धरि सक्खि ॥ ९ ॥
सो दससिर कोउक समय, किष्किंधा रन काज ॥
खोजन कपिपति बालि खल, पहुँच्यौं लोपत लाज ॥ १० ॥
श्वसुर लख्यो सुग्रीवको, तत्थ बलीमुख तार ॥
मिलि पुच्छ्यो कित बालि मैं, हेरत जुज्झनहार ॥ ११ ॥
बुल्ल्यो वह कछु दिन बचहु, निरखहु प्रसभ निवारि ॥
अस्थिकोट किय बालि ए, प्रतिभट निचय पछारि ॥ १२ ॥

१ शिव के आगे फूलों की अंजली भेट करके युद्ध पर तैयार हुआ. इधर अर्जुन ने भी जलक्रीड़ा करके गरुड़ झंप लेकर सर्प को पकड़ै ऐसे धनुष की प्रत्यञ्चा में राक्षस को पकड़ लिया और खेल के समान उसको खींचकर शोभायमान होता हुआ अपने पुर में लेआया ॥ ६ ॥ २ गन्ध चले ३ सहस्रार्जुन की दिशा को ॥ ७ ॥ तेरे यश ने फैलकर भूमि और स्वर्ग को छिपा दिया अब इस ब्राह्मण (रावण ने विश्रवा ब्राह्मण से जन्म लिया था) को क्यों रखता है इससे तो तेरा विजय करने का गुण है वही ब्राह्मण के कैद करने से दोष होजाता है ॥ ८ ॥ ४ राजा सहस्रार्जुन ने ५ अग्नि को साक्षी करके ॥ ९ ॥ १० ॥ ६ तार नामक बंदर को ॥ ११ ॥ ७ हठ छोड़ कर ८ हड्डियों के ढेर ९ युद्ध करनेवाले के समूह को गिराकर ॥ १२ ॥

प्रतिकूलहि जो प्रानसौं, रंच लखहु तो राह ॥
कुपरिधि इक्क२मुहूर्त क्रमि, नित्यहि जिम्मत नाह ॥ १३ ॥
यातैं अवनि परिक्रमन, अबही पूरब५ओर ॥
भूप गयो तहँ जाहु भल, जो मन जुज्झन जोर ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

सुनि करि पुच्छ पयानखलहु खोज्यो बासव सुत ॥
सागर तट पायो सु करत संध्या बिधि संजुत ॥
उदधिमाँहिं गहि याहि अबहि बोरौं बिचार इम ॥
पकरन लग्गो पाय तउ न कपि कर्म तजिय तिम ॥
गहि सहज कंख धरि दसगलहिं करत रह्यो आन्हिक सकल॥
बलि सद्धि पदक्खिन भुव बलय पत्तन निज आयउ प्रबल ।१५।

(दोहा)

गैल गैल लुंबत गयो, गरुँर त्रोटि जिम नाग ॥
आय निकासो निज निलय, भनित मुहूर्त बिभाग ॥१६॥
निकसि जोरि कपिसौं नयन, सो हतओज सिटाय ॥
विरुदावनलग्गो बिबिध, लज्जा अंतर लाय ॥ १७ ॥
मनहीसौं तिहिं मित्र करि, कहि प्रानहु तव काज ॥
किष्किंधा इक१मास मित, रह्यो निसाचरराज ॥१८॥

(षट्पात्)

इक समय इम अटतैं पुरुख पिक्ख्यो इक आसिर ॥
पिक्खत खिन हुव पिहितै खल सु सोधन लग्गो फिर ॥

जो१तू अपने प्राण से ही विरुद्ध है२भूमि की परिक्रमा में दो घड़ी तक३फिरकर वह ४ स्वामी नित्य भोजन करता है ॥ १३ ॥ पूर्व दिशा में जाकर रावण ने ५ इन्द्र के पुत्र (बालि) को खोजा ६ सन्ध्या ॥ १५ ॥ ७ गरुड़ की चंचू में सर्प लटके ऐसे रावण साथ साथ लटकता गया ८ अपने घर में जाकर ऊपर कहे हुए दो घड़ी के समय में निकाला ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ ९ फिरते हुए १० राक्षस (रावण) ने ११ देखते ही वह पुरुष अन्तर्धान होगया

इतउत लखि बिल इक्क प्रविसि परिकर[1]हिं द्वार धरि
जिहिं बिल अंदर जाय भुवन पिक्ख्यो बिम्मय भरि ॥
ऋतु उचित रम्य रविकोटि[2] रुचि भोग दिव्य तिहिं ठाँ सुभग ॥
पिक्खे त्रिकोटि ३००००००० चउ ४ भुज पुरुख ज्वलित धाम धारक त्रिजग

दोहा

तँहँ बिस्मित रावन अटत, इक अद्भुत आवास[3] ॥
इक पुरुख सबसौं अधिक, पिक्ख्यो अमित प्रकास । २० ।
नील जलद १ अतसी सुमन २, स्याम सदय सुकुमार ॥
ललित तल्प[5] पोढे लखे, ते ईश्वर कर्त्तार[6] ॥ २१ ॥
प्रभुके ढिग इक पीढँ[7] पर, देखी कमला दुष्ट ॥
कांतहि बीजत व्यजन करि, तिमहि चतुर्भुज तुष्ट ॥ २२ ॥
श्रीकहँ रूप विरूढ सठ, जब चिंतिय लैजान ॥
हस्य तबहि वह परपुरुख, मंदहिं करन विमान ॥ २३ ॥
हसतहि दुष्ट अचेत ह्वै, ज्ञंकि जानु[8] न परि जत्थ ॥
संतिगति इक्क १ मुहूर्त मैं[10], हठि निष्ठिन[11] किय हत्थ ॥ २४ ॥
वुल्ल्यो खल वंदन[12] विरचि, अप्प चराचर ईस ॥
होय सिच्चु[13] प्रभु हत्थतैं, यह मैं चहत असीस ॥ २५ ॥

(षटपात्)

---

१ अपनी परगह [साथ के लोगों] को द्वार पर रखकर रावण उस बिल में घुसा २ क्रोड़ सूर्यों की कान्तिवाला ॥ १९ ॥ ३ महल में ॥ २० ॥ ४ अतसी के पुष्प समान श्याम रंगवाला दयावान् कोमल ५ सुन्दर सेझ पर ६ कर्तार ॥ २१ ॥ ७ आसन पर उस दुष्ट रावण ने लक्ष्मी को देखी जो पति को पंखे से पवन करती थी, इसीप्रकार चार हाथवाले [विष्णु भगवान्] भी प्रसन्न थे ॥ २२ ॥ लक्ष्मी को विशेष रूप पर चढीहुई देखकर दुष्ट रावण ने उसको लेजाना चाहा तब मूर्ख [रावण] को विना मानकरने के लिये वे परमात्मा हँसे ॥ २३ ॥ ९ घुटनों के बल ८ गिर गया सो १० दो घड़ी में ११ बुद्धि और चलने की शक्ति कठिनाई से पीछी मिली ॥ २४ ॥ १२ नमस्कार करके १३ आप के हाथ से मृत्यु होवे यह मैं मांगता हूं.

प्रभु अकिखय नहि भस्म भयउ यह कुकृत बिचारत ॥
कारन याको कछुक काल² बिधि³ बर प्रतिपारत ॥
मंगत मम कर मरन सोहु लहिहै समयांतर⁴ ॥
इम कहि ताहि दिखाय बिश्वरूपहु⁵ दिय श्रीवर⁶ ॥
सिर ताहि नाय रावन दस१०हि आय लह्यो निज सत्थ⁷ इम ॥
इक समय अग्ग सनकादिकहु तिहिं खल पिक्खे सरनि तिम॥२६॥

(दोहा)

मिलत खल सु पुच्छयो मुनिन, कहाँ जात किहिं काम ॥
बुल्ल्यो यह खोजन प्रबल, जो न मिलत श्रर्मजाम⁸ ॥ २७ ॥
जोगीजन काकौं भजत, अखिल नाथ को आहि⁹ ॥
समर मरैं जासौं सुगति, तुम मुनि अक्खहु ताहि ॥ २८ ॥
कह्यो मुनिन है बिष्णुको, कोपहु बर अनुकार¹⁰ ॥
तिनके कर मरि सुगति तू, पैहै तरि भुव पार ॥ २९ ॥
इमहिं रुक्कि क्रव्याद¹¹ हुव, तू जय¹²तव सहि सांप ॥
पच्छो¹³ लहिहै काल पर, पद अपनों तजि पाप ॥ ३० ॥
इक समय रावन इमहि, मुनि नारद मिलि मग्ग ॥
कित जावत पुच्छयो कह्यो, अति बल लखन उदग्ग¹⁴॥३१॥

॥ २५ ॥ परमेश्वर ने कहा कि लक्ष्मी को लेजाने का १ खोटा कार्य विचार ते ही भस्म नहीं हुआ जिसका यह कारण है कि थोड़े २ समय तक ३ ब्रह्मा के वर को पालते हैं ४ समय के अंतर से ५ विराट् स्वरूप ६ परमेश्वर ने ७ मार्ग में सनकादिक ऋषियों को देखे ॥ २६ ॥ ८ श्रम उत्पन्न करानेवाला नहीं मिलता ॥ २७ ॥ रावण ने पूछा कि योगीजन किसको भजते हैं, और सब का स्वामी कौन९ है. रावण बोला कि युद्ध में जिसके हाथ से मरने से श्रेष्ठ गति मिलै उसको बताओ ॥ २८ ॥ मुनियों ने कहा कि विष्णु का कोप भी वर के १०जैसा [अनुकरण करनेवाला] है ॥ २९ ॥ सनकादिकों ने कहा कि हम जब विष्णु भगवान् के दर्शन को जाते थे तब तू१२जय नामक द्वारपाल था जिसने हमको रोका था तब हमारा ही श्राप लेकर११राक्षस हुआ था सो१३पीछा लेवेगा। ३०।१४ उदग्र [उठेहुए मस्तकवाला अर्थात्

बुल्ले मुनि सबसौं प्रबल, स्वेतद्वीप बिच सूर ॥
है दुव्वर[1] तहँ जाहु हम, देखहिं कौतुक[2] दूर ॥ ३२ ॥
भनि नारद संग्रहि भये, जोहु गयो मुनि जत्थ ॥
स्वेतद्वीपकी सुंदरिन, तस[3] दुर्गति किय तत्थ ॥ ३३ ॥
प्रमदा निकर निपान पर, उदक लैन बहु आय ॥
सह अचिज्ज लखि दस१०सिरहिं, उन लिय बिहसि उठाय३४
नव[4] आकृति फेरयो फिरयो, दिस दिस हत्थनहत्थ[5] ॥
जान्यौं रावन करन जय, आयो यह हुव अत्थ ॥ ३५ ॥
खल गड्डे जब रद१नखर२, धुनि[6] तिन डारिय धूरि ॥
कैसोरी यह कँटि[7] कहि, बाहुन लेत लबूरि ॥ ३६ ॥
गर्ब बिसरि ऐसीहु गति, पाप लही बहु पाय ॥
संतापत[8] त्रिजगहिं तदपि, रुक्यो न कर्बुरराय[9] ॥ ३७ ॥
मैं आई जब मंदकै, सोची वृजिन बिचारि ॥
अजपैंह जाय रु किय अरज, कहिय दुहिन हितकारि॥३८॥
जब कोउक कपि जित्तिहै, त्रेता अंतर तोहि ॥
उहाँ दसानन अंतको, जानहु अंकुर[10] जोहि ॥ ३९ ॥
सो तबतैं अघभर[11] सहत, मैं व्याकुल हनुमंत ॥
दुरित अज्ज तैं मम[12] दल्यो, अब ढिग रावन अंत ॥ ४० ॥

नम्रता रहित॥३१॥१दुर्वर(जिसका अनादर नहीं होसके)हम दूर खड़े रहकर २तमाशा देखेंगे ॥ ३२ ॥ स्वेतद्वीप की स्त्रियों ने ३ रावण की दुर्गति ॥३३॥स्त्रियों के समूह पनघट पर पानि लेने को बहुत आये उनके अचरज के साथ रावण को देखकर हसकर उठालिया ॥ ३४ ॥ ४ नवीन स्वरूपवाला ५ एक हाथ से दूसरे हाथ में ॥ ३५ ॥ दुष्ट रावण ने जब उन स्त्रियों के दन्त और नख गडाये तब उनने रुई का पींजे इस माफिक ६ पींजकर ७ क्रीड़ा ॥ ३६ ॥ ८ दुख देता हुआ ९ राक्षसों का राजा ॥ ३७ ॥ लङ्का कहती है कि जब मैं इस मूर्ख के आई तब कर्मों के फल को विचारकर चिन्ता करके ब्रह्मा के पास जाकर मैंने अरज की तब ब्रह्मा ने हित करके कहा॥३८॥१०प्रादुर्भाव(उदय)॥३९॥११पाप का भार१२मेरे पाप का आप ने नाश किया, अब रावण का नाश भी समीप ही है ॥४०॥

(शुद्धप्राकृतभाषा गीई)

इअ वयणं सोऊणं लङ्काए अक्कुसीअ हणुमन्तो ॥
बहुणिसिअरणिलएसुं घत्तन्तो सीअ मग्गमग्गम्मि ॥ ४१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ चौतिहोत्रचण्डाग्निवंशवर्णने वसुदेव ६८। बेला ६८।१ पाणिपीडनवेलावर्णितजगच्चक्षुर्जननमणिवैवस्वताङ्गजन्मेक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्र बिकुक्षि ७ सन्ततिसमर्थनान्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासँवादे रावणपूर्वचर्यायां रक्षोराजमानमर्द्दनंपञ्चचत्वारिंशत्तमो४५ मयूखः ॥ ४५ ॥ आदितः सप्ताऽशीतितमः ॥ ८७ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

लंकाकौं इम जित्ति लघु, आसिर पुब्ब उदंत ॥
सुनि मारुति अग्गैं सरयो, सीता सोधन संत ॥१॥

पज्झटिका

जिहिं दंगं बिरयो अब बातजात, कौणप गृह पिक्खत सब सुहात
लखि बज्रदंष्ट्र१अतिकाय२ओक, सोधे सुक३सारण४गृह बिसोक
मकराक्ष५महोदर६माल्यवान७, धूम्राक्ष८नरांतक९बलाविधान ॥
देवांतक१०रु महापार्श्व११दुष्ट, रोमस१२कराल१३सुकनाभ१४रुष्ट

हनुमान् इसप्रकार वचन सुन कर बहुत से राक्षसों के स्थानों में मार्ग मार्ग में सीता को ढूंढताहुआ लंका से गया ॥ ४१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंशमणि वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन के भीतर श्रीजानकीपति के चरित्र में हनुमान और लंका के सम्वाद में रावण के पूर्वचरित्र में रावण के मानमर्दन का पैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४५ ॥ और आदि से सत्यासी मयूख हुए ॥ ८७ ॥

इसप्रकार लंकाको शीघ्र जीतकर राक्षस का पहिले का वृत्तान्त सुनकर सीता को सोधनेको हनुमान आगे चला ॥१॥ जिस१पुर में अब२हनुमान घुमा३राक्षस

इति वचनं श्रुत्वा लङ्काया अगच्छत् हनुमान् । बहुनिशिचरनिलयेषु गवेषयन् सीतां मार्गे मार्गे ॥ ४१ ॥

धूम्र१५रुप्रहस्त१६संपाति१७धीर,वक्र१८रु बिसाल१९यूपाक्ष२०वीर
तिम सादिल२१विद्युज्जिव्ह२२तत्त, विद्युद्रूप२३विरूपाक्ष२४मत्त२५।
घन २६विघन २७दंष्ट्र २८प्रघस२९रु प्रघास३०,
रविसत्रु३१सुमाली३२रु जिनवास ॥
कंपर३३करद्रूप३४रु रस्मिकेतु३५,हस्तिमुख३६अकंपन३७पापहेतु
वेलि विद्युन्माली३८वज्रकाय३९,क्रव्याद ध्वजग्रीव४०हु कुभाय॥
अरुणाक्ष४१जंबुमाली४२अपराण,क्रमयुद्धोन्मत्त४३रुन्हस्वकर्ण४४
कुंभरु४५।१निकुंभ४६।२निद्रालुजात,खलइंद्रजिव्ह४७अघइष्टख्यात
घननाद४८बिभीषन४९कुंभकर्ण५०, इत्यादि ओकं बिक्खे सुवर्ण
दसकंधरके नाना निवास, पुनि अग्ग लखे कपि रविप्रकास ॥
तँहँ भुवन इक्क पिक्ख्यो सतोस, चउ४कोस दिग्घ आयत दु२कोस
जँहँ हुव प्रविष्ट मारुति सुजान, पिक्ख्यो धर्यो सु पुष्पक बिमान
सहँसन जहँ सुंदरि करत सैन, अति नाक भोग पिक्ख्यो सु अैन
निरखी मयतनया तिहिं निकेत, सोवत हजार१०००दासिन समेत
जिहिं प्रथम जनकतनयाहि जानि, पुनि मंच लखत मुरर्यो प्रमानि
रसवंति१सुगंधगृह२राजमान, वासोक३चंद्रसाला४वितान५॥
वेदी६अलिंद७तोरन८विसाल, मनिखचित लसत बहु रचित माल
इम अखिल पस्त्य पिक्खे प्रवीन, मैथिलजा मारुतिकों मिली न

१पाप का निवास॥५॥२पुनि३राक्षस४बिना पत्तोंवाला (पक्का बनाहुआ)॥६॥ ५कुंभकर्ण का पुत्र६पाप ही है प्यारा जिसको७घर८स्वर्ण के बने हुए अथवा श्रेष्ठ रंगवाले ॥ ७ ॥ ९. सूर्य के प्रकाश समान प्रकाशवाला१०लंबा११चौड़ा ॥ ८ ॥ १२ हनुमान१३स्वर्ग के समान है भोग जिसमें ऐसा१४घर ॥ ९ ॥१६ उस स्थान में१५मंदोदरी को देखी १७ जिसको पहिले सीता ही जानी परंतु उसको १८ पलंग पर शयन करती देख कर पीछा फिरगया अर्थात् रामचन्द्र के वियोग में सीता पलंग पर नहीं सोसक्ती यह प्रमाण मानकर पीछा फिरा ॥१०॥ १९रसोड़ा और सुगंध के घर २० शोभायमान २१ शयन गृह २२ सब से ऊपर का महल २३ यज्ञशाला. वेदी २४ बाहर का चौक २५ द्वार, मणियों के २६ जड़े हुए ॥ ११ ॥ सब घर देख २७सीता हनुमान को नहीं

निर्वेद[2] लह्यो तँहँ आंजनेय[1], स्मृत[3] हुव कह्यो जु संपाति श्रेय॥१२॥
जब मुदित व्यर्थ झंपन न जानि, ...॥
जिहिं सिंसपा[4] साखि तर जानकी सु,क्रम पिहित चढ्यो तिहिं थान कीस[5]।
अवसेस रत्ति इक१जाम[6] जत्थ, तजि निंद उठ्यो दससीस तत्थ॥
सो दुष्ट मंद[7]उदरी समेत, क्रव्याद[8] चल्यो सीता निकेत ॥१४॥
सहँसन प्रदीपिका[9] पथ प्रकास, जुवतीजन सहँसन संग जास ॥
वादित्र अग्ग सहँसन बिवाद[10], प्रतिहार[11] प्रनत बुल्लत प्रसाद[12] ॥१५॥
पवमानजात[13] यह भेद पाय, कपिदलन दुर्यो करि अल्पकाय॥
क्रव्याद आय तँहँ कैकसेय[14], अंबा[15] प्रति अक्खिय हौं न हेय[16] ॥१६॥
मैं किय करार इक१अब्द[17]माँहिं, अवसेस[18] तत्थ दुव२मास[19] आँहिं ॥
मानिनि[20] तथापि भजिहै न मोहि, तो सूद[21] धरहिं उद्धान[22] तोहि ।१७।
सुनि असह जनानि अक्खिय समास[23],गोमायु[24] न मरि चहि सरभग्रास[25]
खल तदपि कह्यो अतिसय खिसाय,बहु जामिक कर्बुरिका[26] बुलाय
गोकर्णी१ त्रिजटा२ गोपदी३रु, अजबदना४ गजबदना५ अभीरु॥
गतनासा६अतिनासा७कुगात्र, पुनि पादचूलिका८पापपात्र ॥१९॥
बिकराल दीर्घनासा९बहोरि, जिन संग संकुकर्णी१०हु जोरि ॥
सरमा११हु बिभीषन नारि सत्थ,इत्यादि टेरि अक्खिय अनत्थ।२०।

मिली उस समय १ हनुमान को २ ग्लानि होगई परंतु फिर सम्पाति ने कहा था वह ३ स्मरण हुआ कि सीता अशोक वन में है ॥ १२ ॥ सिंसपा ४ वृक्ष के नीचे सीता थी उस पर ५ बंदर (हनुमान) छिपकर चढगया ।१३। एक ६ पहर रात्रि बाकी रहे ७ मन्दोदरी सहित ८ राक्षस (रावण) सीता के स्थान पर चला ॥ १४ ॥ ९ दीपक १० बजते हुए ११ द्वारपाल विशेष नम्रता से १२ प्रसन्न करने के शब्द बोलते हुए ॥ १५ ॥ १३ हनुमान यह भेद पाकर छोटा शरीर करके पत्तों में छिपगया १४ कैकसी के पुत्र (रावण) ने आकर १५ सीता माता से कहा कि मैं १६ त्याग ने योग्य नहीं हूं ।१६। १७ एक वर्ष में दो १९ मास १८ बाकी हैं तो भी जो २० हे मान करनेवाली मुझे नहीं भजेगी तो २१ रसोड़दार (रसोई पकानेवाले) तुझको २२ चूल्हे में धरेंगे १७ ॥ २३ संक्षेप से ही उत्तर दिया २४ हे गीदड़ २५ सिंह के ग्रास को चाहना करके मत मर २६ पाहिरायत राक्षसियों को बुलाकर ॥ ८ ॥ १९ ॥

अवहू तुम रातिचरी असेस, दै इहिं समुझावहु सूपदेस ॥
इम अक्खि गयो दसमुख अगार,कहि हारि वेहु सोई कुदार॥२१॥
जननी जनलीला बिहित जानि,प्रभु जतन सिथिल अबलौं प्रमानि॥
हेरन लगी सु वपुहाँन हेतु,कछु ढिग न सस्त्र१विख२धूम्रकेतु॥२२॥
गहि इक तरु साखा तव गरीय, उद्बंधनकौं लिय उत्तरीयं ॥
जो लखि चरित्र पवमानजात,वरनी सव स्वाऽऽगम अवधि वात२३
लघु सुनत मोद जननीहु लाय,अक्खिय उपांसु तजि बध उपाय॥
किम नृपन१कपिन२संगति अकत्थ,सुग्रीव सक्खिकिमरामसत्थ२४
अव कहहु चिन्ह जो सत्य एह, वरनैं तव लक्खन१राम२देह ॥
वानी१निसर्ग२इंगित३बताय सामुद्रिक४सव दिय कपि सुनाय २५
बिस्वास तदपि न लख्यो बिसेस,पुनि अंगुलीयक५सु किन्न पेस॥
प्रत्ययै हित पठयो प्रभु पुनीत,सीता लखि किय हिय तप्त सीत२६
पुनि अक्खिय यों हैं कव कृपाल,कपि अक्खिय जानहु तूर्णकाल॥
माता निदेस तव होय मोहि, तो लै वँ मिलाऊँ जाय तोहि॥२७॥
सुनि जननि असंभव कहिय एह, दुर्द्धर तव कपि किय अद्रिदेह॥

॥ २० ॥ १ हे राक्षसियो तुम सब अब भी इसको २ श्रेष्ठ उपदेश देकर समझाओ ३ स्त्रियों ॥ २१ ॥ सीता माता ४ मनुष्य लीलाको ५ उचित जानकर और रामचन्द्र को ६ उपाय में अब तक शिथिल मानकर ७ शरीर को नाश करने का साधन करने लगी परंतु पास न तो शस्त्र था न विष था और न ८ अग्नि था ॥ २२ ॥ तब एक वृक्ष की बड़ी शाखा को पकड़ कर ९ फांसी खाने को १० उपवस्त्र (उत्तरासन) लिया ११ हनुमान ने १२ अपने आने की बात कही ॥ २३ ॥ १३ शीघ्र १४ बहुत धीरे से (पासवाला भी नहीं सुनसके इसप्रकार) बोला १५ सत्यापन ॥ २४ ॥ १६ स्वभाव १७ चेष्टा १८ सामुद्रिक शास्त्र में पुरुष के लक्षण लिखे हैं वे रामचन्द्र के शरीर में मिलते थे सो भी सब सुनाये ॥ २५ ॥ १९ तो भी २० अंगूठी जो रामचन्द्र ने हनुमान को, सीता को २१ विश्वास कराने के अर्थ दी थी वह भेट की जिससे सीता ने अपने २२ तपेहुए हृदय को ठंढा किया ॥ २६ ॥ २३ उस समय को शीघ्र जानो और जो हे माता मुझे आज्ञा होवे तो २४ अभी तुम को लेकर रामचन्द्र से जा मिलाऊं ॥ जब सीता ने कहा कि यह २५ असंभव है तब हनुमान ने नहीं सहन किया और ऐसा २६ पर्वत के समान शरीर किया

पुनि माय कहिय प्रत्यय सु पाय,है [1]बिहित नाथ आगम हिताय।२८।
मदग्रंध खलहिं सकुटुंब मारि, लै मोहि जाय यह [2]कित्तिकारि॥
माता निदेस तैसेंहि मानि,अब किय कपि प्रकटन जत्न[3] आनि ।२९।
विध्वंसन लग्गो [4]लुंचि बाग,फिरि किय सत१००रच्छक [5]कालभाग
[6]निकसांजनिको इक चैत्य नाम,[7]प्रासाद हुतो तहँ [8]केलिकाम ।३०।
[9]वाकेहि थंभ मारुति उपारि, मज्झुल्ल रच्छकहु लिय ति मारि॥
अरु कहिय जयति रघुराज राम,१ [10]सौमित्रि२जयति सुभधर्मधाम।३१
सुग्रीव३जयति प्रभु पालयमान, वदि इम किय [11]औस्फोटन बिधान॥
यह सुनि अचिज्ज लंकेस आप, पठये [12]प्रधान सुत सप्त७पाप३२
रचि तिन [13]अनीक जुत अतुल रारि, परलोक लह्यो कपिकौं प्रचारि
[14]क्रव्याद[15]किंकर अयुतअष्ट८००००,पठये[16]तिपुनिहुकियनिखिलनष्ट
निजपुत्र कुपित तब अक्ष नाम,[17]कर्बुरपति पठयो बिजयकाम॥
[18]भवअंस सोहु पय गहि भ्रमाय,[19]सानीक हन्यौं निजभुज सहाय।३४।
[20]नैकंप तव पिल्लयो [21]मुदिरनाद, बिरच्यो तिहिं [22]अद्वय [23]तुमुल बाद॥
पिक्ख्यो तथापि [24]कपिपति कराल,तब ब्रह्मअस्त्र मुक्यो उताल।३५।
[25]स्वासनि नत तिहिं लखि धर्मसक्खि, आयो गहिबेसैं उचित अक्खि
[26]निगडित करि लै गो मेघनाद, [27]प्लवगेस लख्यो वैभव प्रसाद३६
हियमैंहि कह्यो जो धर्म होय, दसमुखहि इक्क१ प्रभु तो न दोय२

जिससे विश्वास पाकर सीता ने कहा कि रामचंद्र का आना ही१उचित है ॥ २८ ॥ २ कीर्ति करनेवाला कार्य है ३ प्रसिद्ध होने का उपाय ॥ २९ ॥ ४ तोड़ फोड़ कर ५ काल के हिस्से में ६ राक्षसों (निकसा है माता जिनकी) का चैत्य नामक ७ महल ८ क्रीड़ा करने का था उसके खंभे उपाड़ कर ९ बीच के रक्षकों को १० लक्ष्मण की जय हो ११ भुज ठोके १२ मुख्य पुत्र १३ सेना सहित १४ राक्षसों के १५ सेवक १६ तिनको १७ रावण ने १८ शिव के अवतार (हनुमान) ने १९ सेना सहित मारलिया ॥ ३४ ॥ २० नैकषी के पुत्र (रावण) ने २१ मेघनाद को भेजा जिसने २२ अद्वितीय २३ भयंकर शब्द किया तोभी २४ हनुमान् को भयंकर देखा तब शीघ्र ब्रह्मास्त्र छोड़ा ॥ ३५ ॥ २५ पवनपुत्र (हनुमान्) नम्र होकर धर्म को साक्षी जानकर २६ बंधन युक्त करके २७ हनुमान् ने उसको वैभव में प्रमत्त देखा ॥ ३६ ॥ और अपने मन में ही कहा कि रावण में धर्म जो होवे

ऐसे विचार जुत[1] आंजनेय, मांदोदरेय[2] गहि गो अमेय[3]॥ ३७ ॥
रावनजँहँ परिखद[4] राजमान, जो किय तँहँ हाजरि जातुधान[5] ॥
दससिर प्रहस्तसन किय निदेस, आयउ किम पुच्छहु कोन एस ३८
उपवन[6] बिगार क्यों किय अजान, अच्छादि[7] हनें क्यों प्रथित[8] प्रान[9]॥
पुच्छिय प्रहस्त कहि सत्य काज, पठयो तू इंद्र१कि राजराज[10]२॥३९॥
प्लवंग न तू[11] ह्वैहै करि प्रकास, बिनु सत्य न छुट्टहिँ बंदिबास[12] ॥
सुनि कहिय कीस[13] हनुमान नाम, मैं दूत पठायउ अत्थ राम ।४०।
लांयो हरि सीता तू निलज्ज, आसोक बेलि[14] पिक्खी सु अज्ज ॥
लग्गैं न खबरि बिनु कछु बिगार, किय इम बिरूप उपवन[15] प्रकार ४१
अच्छादि हनैं जुज्झत असेस, आन्यों ब इंद्रजित पकरि एस ॥
अब जो रक्खसकुल बधन इष्ट, बलि प्रान दयित[16] प्रभुता विसिष्ट४२
तो कालरात्रि[17] सीताहिँ जानि, प्रभु हित चलि अप्पहु जोरि पानि[18]॥
सुग्रीव सखा तव जो सनेह, बानैंहु कहाइय बत्त एह ॥ ४३ ॥
दससीस सुसुनि खिजि दिय निदेस, इहिँ कपिहिँ हनहु संसय न सेस[19]॥
तब कहिय बिभीषन सुनहु सार, है प्रभु अवध्य संदेसहार[20] ॥४४॥
कीसनकै पुच्छहि प्रिय कहात, तिहिँ जारि देहु जो रुचत तात ॥
इह हुव यहैहि परि बहु बिवाद, सासन सुहि अप्पिय मानुषाद[21] ४५
तब आनि सूल१सन२तैल३तूल[22]३, मढि पुच्छ दयो कपिको समूल॥

तो संसार भर में यह एक ही है ऐसी प्रभुतावाला दूसरा नहीं है, इसप्रकार विचार करतेहुए १हनुमान् को २प्रमाण रहित पराक्रमवाला ३मन्दोदरी का पुत्र (मेघनाद) पकड़ कर लेगया ॥ ३७ ॥ रावण जहां सभा में ४शोभायमान था तहां ५राक्षस ने हनुमान् को हाजिर किया. ६बाग का ७अक्षकुमर आदि, ८प्रसिद्ध ९बलवान् थे जिनको क्यों मारे १०कुबेर ने भेजा है ॥३९॥ ११तू बंदर नहीं होवेगा १२कैदखाने से १३बंदर ने ॥ ४० ॥ १४अशोकवाटिका में आज मैं ने देखी १५बाग को ॥ ४१ ॥ १६प्रभुता सहित प्राण जो प्यारे हैं तो ।४२। सीता को १७मृत्यु जानकर १८हाथ जोड़ कर रामचन्द्र को देदे ॥ ४३ ॥ संदेह १९बाकी नहीं समझ कर २०दूत ॥४४॥ बन्दरों के पूंछ ही प्यारी है सो रुचै तो जलादो इसपर बहुत वाद विवाद होकर पूंछ जलाना ही निश्चित हुआ और २१मनुष्यों के खानेवाले (रावण) ने यही आज्ञा दी ॥ ४५ ॥ २२रुई

लंकेस कहिय अब*अग्गि लाय, इहिं देहु जारि पुर बिच फिराहि ॥४६॥
सुनि धूम्रकेतु[1] करि लूम[2] संग, दोरे गहि फेरन ताहि संग[3] ॥
बंधन तब तोरे बपु[4] बढाय, लै झंप महल दिन्नैं लगाय ॥ ४७ ॥
इक इक गृह लंकापुर असेस[5], बालधि[6] करि जारे बानरेस ॥
इक[7]टारि बिभीखनको अगार, छिन बिच किय लंका नैर छार[8] ॥४८॥
जवनी१कपाट२उल्लोच३जेम, हुव भस्म बह्यो तिम द्रवित हेम ॥
लंकापुर करि करिवीर कल्प, अरार्णव कपि मज्जित झंपि अल्प ॥४९॥
बालधि बुझाय निज छार वार, चढि पुनि पुर गोपुर किय बिचार ॥
मैं मंद लखी नहिं मन्न्यु माँहिं, अंबा बची कि दवदग्ध आँहिं ॥५०॥
तब चारनदेवन कहिय तत्थ, सीताहु बचाई कपि समत्थ ॥
यह सुनत असोकाराम आय, किय दरस प्रसूको प्रनत काय ॥५१॥
जंपिय अब किंकर तत्थ जात, मन धरहु नियत बिस्वास मात ॥
जगदंबा अक्खिय कल्हि जाहु, लखि ताहि फुरत प्रभु मिलन लाहु ॥५२॥
कपि कहिय रहैं बिबंढत[10] बिलंब, आनत मैं छिप्रहि[11] प्रभुहिं अंब[12] ॥
तब सीता निज सिरमनि उतारि, कपिकौं दिय प्रत्यय[13]पुष्टकारि ॥५३॥
कहि एह जनक दिय लग्नकाल, लै याहि जाहु प्रभुपास लाल ॥

* अग्नि लाकर १ अग्नि २ पूंछ में लगादिया ३ पुर में फेरने लगे ४ शरीर को बढाकर ॥ ४७ ॥ ५ सम्पूर्ण ६ पूंछ से ७ विभीषण के घर को छोड कर ८ भस्म करदिया ॥ ४८ ॥ ९ पड़दा, किंवाड़ चंदवा (घर की छत में लगाने का वस्त्र) भस्म होगये और स्वर्ण पिघल कर बहगया, उस वीर ने लंका में प्रलय कर करके छोटी मलंग लेकर समुद्र में गोता लगाया ॥ ४९ ॥ पूंछ को बुझाकर, अपने शरीर के ऊपर की भस्म को दूर करके शहर के दरवाजे पर चढकर जब विचार किया कि मुझ मूर्ख ने क्रोध में नहीं देखा कि सीता माता बची कि अग्नि में भस्म होगई है ॥ ५० ॥ तब वहां पर चारण देवताओं ने कहा कि समर्थ कपि ने लंका को जलाकर सीता को बचा ली. अशोकवन में आकर नम्र शरीर होकर माता का दर्शन किया ॥ ५१ ॥ ९ सीता माता ने कहा कि कल जाना तुम्हारे देखने से रामचन्द्र के मिलने का लाभ स्मरण होता है ॥ ५२ ॥ १० विशेष बढता है ११ शीघ्र ही १२ हे माता १३ विश्वास को दृढ करनेवाली ॥ ५३ ॥

इक्कहहु *पिहितइतरहुउदंत,जबचित्रकूटआये **अनंत॥५४॥
जो द्विक जयंत,ईर्षंत अजान, किय तजि इषीक अघलिप्सु कान
दुवरप्रत्यय मारुति ए हढाय, चहि सीघ्र प्रभुहिँ आनहु चढाय ॥५५।
लक्खनं[1] प्रति अक्खहु बिदित बीर, भुल्लहु मम बैन रु करहु धीर ॥
करै[2] तुज्झ लज्ज रघुबंसकेर, देवर अब नैंक न उचित देर ॥५६॥
करि प्रनंति[3] यहै सुनि चलिय कीसं[4], आरूढ[5] भयउ पुरअद्रिसीस ॥
लिय मलपि झंप चहि वार आन,बिच आत रच्यो क्ष्वेडा[6] विधान५७
अंगद मुखँ[7] सुनि हुव मोर्द[8] इद्ध, संसय तजि जानिय काज सिद्ध ॥
इहिँ अंतर मारुति मिलिय आय,सब भूंत[9] अंगदहिँ दिय सुनाय५८
दुवरचरन धरे तव भूप्रदेस, आये किष्किंधा पुनि असेसं[10] ॥
मधुवन तँहँ रविसुत माल्यवान, खुलवाय लगे फल मूल खान५९
पिन्नौं ताडां[11]सव मुद प्रसारि, बरजे ति दये रच्छक[12] बिडारि ॥
दधिमुख हु वेल अध्यक्ष दोरि, बरजे रुके न बिलसे बहोरि ॥६० ॥
कपिपतिको मातुल[13] एह ईस, अपमानि पठायो जँहँ अधीसं[14] ॥
दधिमुख तहँ अक्खिय अंगदादि[15], मन्नैं न बाग लुंचत प्रमादि ।६१।
सुग्रीव सु सुनि गिनि काज सिद्ध, आन्यौं स्वचित्त उच्छाह इद्ध ॥
इहिँ अंतर अंगद प्रमुख आय, निज वृत्तं[16] कह्यो सिर पयन नाय ६२

*एक और छिपाहुआ वृत्तान्त भी कहना**रामचन्द्र ॥५४॥ इन्द्र के पुत्र जयंत ने मूर्खता से काकपक्षी होकर इर्षा की थी उस पाप की इच्छावाले को दर्भ की सींक छोडकर काणा किया था यह दोनों सुचून देकर हे हनुमान् प्रभु को शीघ्र चढालाना।५५। १ लक्ष्मण से कहना २ तुम्हारे हाथ में रघुवंश की लाज है ॥५६॥ ३ प्रणाम करके ४ बंदर ५ पुर के समीप पर्वत था उस पर चढा ६ सिंहनाद किया ॥ ५७ ॥ अङ्गद ७ आदि ने सुन कर ८ आनन्द बढानेवाले हुए ९ बीतेहुए समाचार ॥ ५८ ॥ अङ्गद आदि बंदरों ने हनुमान् के पीछे आने तक एक पग से खड़े रहने की प्रतिज्ञा की थी सो अब दूसरा पग भूमि पर धरा. १० सब, सुग्रीव का मधुवन नामक बाग था जिसको फल मूल खाने के लिये माली से खुलवाया ॥ ५९ ॥ ११ ताड़ी का मद्य १२ बाग का दरोगा ॥ ६० ॥ दधिमुख नामा यह बंदर सुग्रीव का १३ मामा था उसका अपमान करके जहां १४ सुग्रीव था वहां भेजा ॥ ६१ ॥ १५ अंगद आदि १६ अपना वृत्तान्त कहा

सुनतहि प्रसन्न लै सबन संग, आयो सु प्रश्रवन गिरि अभंग ॥
साखामृग प्रभु पय परि समस्त, हनुमान दयो मनि कढ्ढि हस्त ६३
दजो२हु कह्यो व्यवहित उदंत, जामैं इक१लोचन भो जयंत ॥
प्रभु सुनत सिराहे अखिल प्रेय, उर लाय लयो दुत आंजनेय६४
दिय सासन होवत त्रिविध दास, तू मारुति उत्तम१आहि तास।
भृत्या बिनु तैं किय दुंकर भृत्य, कोउ न तस प्रत्युपकार कृत्य६५
बदि इम प्रभु मनि लखि किय बिलाप, करिहै कब जानकि त्यक्तताप
बल तदनु सज्जि धरि चाप१बान, प्रभु करिय खबरि सुनतहि प्रयान
मध्यान्ह समय मंगल मुहूर्त, प्रस्थान अभिजित बिजय पूर्त ॥
संख्याविहीन कपि१रिच्छ२सेन, रघुनाथ चले लै नरसुरेन ॥६७॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ गीतिः ॥

रघुवरवर्धितदर्प्पा गोलाङ्गूल१र्क्ष२वीरबल्गुबलाः ॥
प्लवगा अहमहमिकया लङ्कां जय्यां निरीयुरुद्दिश्य ॥६८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८वेला६८।१पाणिपीडनवेलाबर्णितविभाकरवंशवर्यवैवस्वताङ्गजनुरिक्ष्वाकु६पट्टपपुत्रविकुक्षि ७

---

१ सब बन्दर ॥ ६३ ॥ २ छिपाहुआ ३ वृत्तान्त ४ मेरे प्यारे ऐसा कहकर रामचन्द्र ने सब की प्रशंसा की और ५ हनुमान को हृदय से लगालिया ॥ ६४ ॥ और आज्ञा की कि तीन प्रकार के सेवक होते हैं जिनमें हे हनुमान तू उत्तम है तूने बिना ५ तनखा आदि जीविका के ६ दुष्कर (कठिनाई से होनेवाला) कार्य किया है सो ७ पीछा तेरा उपकार करने के योग्य कोई कार्य नहीं है ॥ ६५ ॥ ८ ताप रहित ९ जिसपीछे सेना सज कर ॥६६॥१०विजयसे भरेहुए अभिजित् नामक मुहूर्त में मनुष्य और देवताओं के पति अथवा नरेन्द्र रामचन्द्र ने प्रयाण किया ॥ ६७ ॥ रामचन्द्र से बढा है घमंड जिनके ऐसे वीर गोपुच्छ (लंगूर) और रीछों के समान श्रेष्ट बलवाले वानर लंका को जीत लेना मन में ठान कर अहंभाव के साथ अर्थात् मैं आगे होऊं मैं आगे होऊं इसप्रकार निकले ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाहसमय के वर्णन में सूर्यवंशी प्रजापति वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के बडे पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन

नन्तोतिसलर्थनान्तर्भूतश्रीवंद्रीवल्लभचर्यायांहष्टजगदम्बदग्धरत्नोद
कुमारमानिप्रासमत्यपर्थरघुनाथविजयप्रस्थानं पट्चत्वारिंशत्तमो
४६ मयूखः ॥ ४६ ॥ आदितोऽष्टाशीतितमः ॥८८॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

पट्पात्

वीरचलिय सत बलिय १ संग कपि अयुत कोटि १००००००००००० करि।
गोलांगूल गवाक्ष २ वीर भट सहँस कोटि १०००००००००० धरि ॥
रिच्छ धूम्र ३ सुव सहँस कोटि २०००००००००० भल्लूक सज्जि भट॥
सह त्रिकोटि ३००००००० कपि सेन पनस ४ हंकिय कर कंकट ॥
कपि नील ५ कटक दस कोटि १००००००००० जुत,
गज ६ त्रिकोटि ३०००००००० जुत जंगजय ॥
कपिकोटिपंच ५०००००००० सहँसंक्रामियकनककांतिगज्जतगवय ७
सहँसकोटि १०००००००००० कपिसहित मुदित रन हल्लिय दरीमुख ८
मिविद १० सह ११ जुत द्विक कपिनसज्जियततै १०००००००००० हिसमरमुख
कपि १ भल्लुक सदस कोटि १००००००००० जांबवान ११ हुसज्जियजिम
कमगमान १२ सकक शंकु १०००००००००० तबहि तत्तकारि चढिय तिम
गत संकु १०००००००००००००० गंधमादन १३ साजिय,
धूम्र १४ कपि दुव कोटि २००००००० दल ॥
दसकोटि १०००००००० साजिय दधिमुख १५ दुसह,
सहँस कोटि १०००००००००० मारुति १६ सबल ॥ २ ॥

(दोहा)

सहँसपद्म १००००००००००००००० सतसंकु १०००००००००००००० सौं,

अंगद १७ भयउ तयार ॥
सेना ग्यारह कोटि११००००००० सह, इंद्रभानु१८लागि लार ॥ ३ ॥
सहँस रुद्र११००० इक सत१००सहित, रंभ१९चल्यो कपि रज्जि ॥
सत मित कोटि १००००००००० रु इक सहँस १०००,
सत इक १०० सों नल २० सज्जि ॥ ४ ॥
[२]रुमांजनककपिपतिस्वसुर,सहँसकोटि१००००००००००सनतार २१
दूजो २ तार२२हु सज्जि दल,पंचक कोटि५०००००००प्रसार॥५॥
जिम केसरि २३ मारुति[३]जनक, अर्कतरुन[४]बपुआभ ॥
सहँस अनेकनसों सज्यो, लंका रन जय लाभ ॥ ६ ॥
कनकाचल[५]रुचि[६] बीर करि, सहँस अनेकन सत्थ ॥
तारा[७]जनक सुसेन२४तिम, संक्रम रचिय समत्थ ॥ ७ ॥
कीस सरभ२५बन्हि२६रु कुमुद२७, चले जुत्थपति चंड ॥
दूजे२रंभ२८समेत दल, उफन्यों सरनि[८] अखंड ॥ ८ ॥

षट्पात्

अंस विविध अवतार मिलिग भल्लुक[९]१कपि[१०]२मर्कट[११]३ ॥
प्रसरि चले इति प्रभृति[१२] व्योम[१३]१जल२थल३वट[१४]१उब्बट[१५]२ ॥
सविता[१६]सुत सुग्रीव१अंस वासव[१७]भव अंगद२ ॥
तार३त्रिदिश[१८]गुरु तनय गंधमादन४ कपि धनद[१९] ॥
पावक[२०]वतार नील५सु प्रथित[२१] विस्वकर्म अवतारनल६ ॥
दुव[२२]दस्र अंस मैंद१ रु द्विविद२।८ प्राभंजन[२३] हणुमा९प्रबल ॥ १ ॥

१प्रीति सहित२रुमा नामक सुग्रीव की स्त्री का पिता और सुग्रीव का ससुर ॥५॥३हनुमान् का पिता, ४ प्रभात के सूर्य समान कान्तिवाला ॥६॥ ५सुमेरु पर्वत के समान ६ कान्तिवाला ७ बालि की स्त्री तारा का पिता ८ मार्ग में बढ़ा ॥ ८ ॥ ९ रींछ १० बन्दर ११ लंगूर १२ इनको आदि लेकर १३ आकाश में १४ मार्ग और १५ बिना मार्ग (ऊजड़)फैलकर चले १६ सूर्य का पुत्र सुग्रीव १७ इंद्र के अंश बालि का पुत्र अंगद १८ बृहस्पति का पुत्र तार १९ धनद (कुबेर) के पुत्र गंधमादन का पुत्र गंधमादन२०अग्नि का पुत्र नील २१ प्रसिद्ध २२ दोनों अश्विनीकुमारों के अंश से २३ पवन के अंश से ॥९॥

दोहा

ताराजनक सुसेन१०कपि, मुनि मरीचि अवतार ॥
बरुनं[1] अंस उद्भव बली, अपरं[2]सुसेन११उदार ॥ १० ॥
जांबवान१२गअंद[3] जन्यौं, जन्यौं[4] सरभ१३परजन्य ॥
इत्यादिक अंसन उतरि, उमडे लरत अनन्य ॥ ११ ॥
अमर[5]१सिद्ध२चारन३उरंग[6]४, विद्याधर५मयुँ[7]६आर्त ॥
नाग७जच्छे[8]८गंधर्व९मुनि१०, इतिमुख[10] अंसन जांत[11] ॥१२॥

(पट्पात्)

इतिमुख अंसन जात क्रूर भल्लुक१मर्कट२कपि३ ॥
किष्किंधा सन कढिय जुद्ध उत्सुकं[12] जय जय जपि ॥
सानुजं[13] रघुवर सज्ज बांधि परिकरं[14] पट पीवंल[15] ॥
चलिय चाप टंकार चलितं[16] करि सर्ग[17] चलाऽचलं[18] ॥
दिस दिसन फुट्टि ओदंके[19] दुसह भुवनचउद्दह१४बीच भरि॥
देखत निमित्त जितातित दरित[20] प्रबल छोह बिस्मय पकारि ॥१३॥
कीटी[21] उप्पर कोप जदपि सरंभ[22] न करि जानैं ॥
तदपि सहज संक्रमतं[23] त्रास स्वासहि तंस[24] तानैं ॥
उघरि ईस बंकनिय[25] गाज घनं[26] बिनु घुररक्किय ॥
रज ढक्किय सिसुमार[27] मेरु अवयवं[28] मुररक्किय[29] ॥

१वरुण के अंश से पैदा हुआ बलवान् २दूसरा सुसेण ३ब्रह्मा का पुत्र जाम्बवान् ४ मेघ अथवा इन्द्र का पुत्र शरभ ॥ ११ ॥ ५ देवता ६ सर्प ७ किन्नरों से ८ समूह ९ यक्ष १० इनको आदि लेकर ११ उत्पन्न हुए ॥ १२ ॥ १२ युद्ध की इच्छा करनेवाले १३ छोटे भाई सहित रामचंद्र १५ पीताम्बर को १४ दृढ बांध कर १७ सृष्टि और १८ चर अचर को १६ चलायमान करके चले १९ भय २० डरकर ॥ १३ ॥ यद्यपि २१ चींटी पर २२ सिंह कोप नहीं कर जानता तद्यपि २३ सहज से चलने में भी २४ उस चींटी के स्वास खिचते हैं ऐसे ही रामचन्द्र के सहज चलने से रावण के स्वास खिचत हैं. शिव की २५ पलें खुलगईं और बिना ही २६ मेघ के गर्जना का घर्घराट शब्द होनेलगा २७ शिशुमार चक्र रज से ढकगया और मेरु पर्वत के २८ अंग २९ मुरक गये

उच्छलि अमेय सिंधुन सलिल लोकन छलि छिरकन लगिय॥
रघुनाथ चढत भूतल दराकि करकि अंड चटचट्ट किय ।१४।
उलटि सेस सिर सहँस१०००सहँस दुव२०००चटि उर चट्टिय
दब्बत दंतुलि दारि पुहवि सूकर कनपट्टिय ॥
कमठ पिट्ठि कुंडलिय धसत किरि पय चउ४मूसल ॥
अवनि दरारन उमँगि जंत्र जिम कढत गर्भजल ॥
मृतगति गिरंत दिग्गज बिमद पलट देत दुस्सह पवन ॥
साँवरो चढ्यो ह्वै किम सहज भनत कल्प चहुदह१४भवन॥१५॥
डरि डुंगर डगडगत जगत लगलगत पत्र जिम ॥
दाव दगत भिरि ग्राव ताव भगभगत उव्व तिम ॥
दुर्दम रज दिसदिसन करत कर्दम कासारन ॥
निखिल धाम नीहार अतिग भद्दव आसारन ॥
जन अजक भूमि भौंनन भजत मौन चरन हुव थिर न मत॥
करता चढ्यो सु नड्डुल कहत बहत देवलिपिलेवव्रत ।१६।

समुद्रों से अमाप जल उछलकर बाहर चढकर लोकों को छिड़कनेलगा इसप्रकार रामचंद्र के चढने से भूमि फटकर ब्रह्मांड चटचट शब्द करने लगा ।१४। शेष के हजार मस्तक उलटकर दो हजार जिव्हा उर चाटने लगीं और दन्तुलि दबाकर भूमि से सूवर(वराह)की कनपट्टी फटनेलगी, कमठ की पीठ ऊखल के समान हो कर उसमें मूसल के समान सूवर के चारों पग घुसनेलगे, भूमि के दरारों से भीतर का जल फुहारों के समान उबकने लगा, दिशाओं के हाथी मुर्दों के समान गिर नेलगे और पवन दुस्सह पलटा करनेलगा, रामचन्द्र ने चढाई की सो कैसे सहज होसकता था चौदह लोकों का प्रलय होना कहने लगे ॥ १५ ॥ पर्वत हिल- ने लगे संसार पत्ते के समान कांपने लगा, पत्थर से पत्थर की रगड़ लगकर वड़ वाग्नि के समान अग्नि जलनेलगा, कठिनाई से मिटसके ऐसा रज दशों दिशा में चढकर तालावों में कीचड़ करने लगा, सम्पूर्ण बर्फ के स्थानों की अत्यन्त गति वढकर भादवा के मेघ के समान वहनेलगे, भूमि के भवनों में मनुष्य अचैन भागनेलगे और मौन धारण करनेवालों के मत भी स्थिर नहीं हुए. वासुदेव चहुवान को अयोध्या के राजा कुंडक का नड्वल नामक पुरोहित कहता है कि संसार का कर्ता चढा सो मानों देवलिपि को लीपने का नियम धारण करता है अर्थात् पर्वत जलआदि की दैवकृत मर्यादा मिटाता है ॥१६॥

पय कुलाल घटपिंड चिपत पव्वय दल चल्लत ॥
बदरीबन जनु बह्व मही झोलन हलमल्लत ॥
तरुन लुंबि तजि तरुन बदत बानर बुंकारव ॥
आनूपक मारव न भवत आनूपन मारव ॥
मिटि मिटि मवास पद्धर परत त्रास असह जित तित तचिग ॥
पुहवी नटेस फन पट्टरिय नियत नच्च ताहिन नचिग ॥१७॥
छार गिरत जलछार निखिल खलभलत निपानन ॥
कतिक अल्प गिरि करभ भजत सुखरुख मग आनन ॥
गड्ड कढ्ढत गहिर गरद कढ्ढ थल गड्डत ॥
तरु उड्डत बहु तुट्टि छदन छत्ति सु गेहन गत ॥
पत्थर न तत्थ पव्वय परत गिरि उच्छित तँहँ ग्रावनन ॥
रघुनाथ कटक मारव पवन पलटावत लघुदिग्घपन ॥१८॥
सरदकाल जिम सलभ प्रचुर तप अंत पिपीलक ॥

कुम्हार के घड़े का पिंड फिरते हुए चाक पर चिपजाता है इसीप्रकार सेना के चलने से फिरती हुई भूमि पर पर्वत पग चिपाते हैं. और मानों बदरीवन के मार्ग में भूमि झोले खाकर हींडती है. वृक्षों के लटक लटक कर उनको छोडते हुए बन्दर बुंकार शब्द करते हैं जिससे समुद्र उछल कर जलमयी देशों को जलहीन और जलहीन देशों को जलवाले करते हैं. विकट स्थानों में चोरों के घर हैं सो मिटकर सीधे होते हैं और जिधर देखें उधर दुस्सह त्रास के ताव से संकुचते हैं, भूमि रूपी नटेस (नाच करनेवालों में ईश) शेष नाग के फणों रूपी पटड़ी पर उस दिन निरन्तर नाच नचा ॥ १७ ॥ रज उडकर खारे पानी (क्षारसमुद्र) में गिरती है जिससे सब जलाशय खलभला गये और कितने ही छोटे पर्वत जिधर मुख होवे उधर ही ऊँटों के समान विना ज्ञान भागनेलगे और जो भूमि में गहरे गडे थे वे बाहर निकल आते हैं और जो बाहर के स्थल हैं उनको वह रज गहरे गाड देती है, बहुत से वृक्ष तूट कर उडते हैं उनके पत्ते घरों की छतों पर जाते हैं, जहां एक भी पत्थर नहीं तहां पर्वत पड़जाते हैं और जहां ऊँचे पर्वत हैं तहां पत्थर भी नहीं रहते इसप्रकार मारवाड़ के पवन के समान रामचन्द्र की सेना छोटे और बडेपन का पलटा करती है (मारवाड़ में जब पवन चलता है तब रेत उड कर समभूमि में तो ऊँचे टीले होजाते हैं और जहां ऊँचे टीले होते हैं वे उडकर समभूमि होजाती है) ॥ १८ ॥

पाउस मसकन प्रसर मुदिर सीकर उन्मीलक ॥
षट्पद पद्य प्रसार अतुल रजकन अवनीतल ॥
फबत दाव फुल्लिंग बिपिन तरु तरुन फुल्ल फल ॥
अगनित समूह कपि[1]रिच्छ[2]इम बढत जंग इच्छत बलिय॥
रघुवंसतिलक रावन तरफ कटक कुंच दरकुंच किय॥१९॥

(दोहा)

कीस संग दुव लक्ख२०००००करि,ईश्वर[2] पठयो अग्ग ॥
नील चल्यो तब हुकम नत, मुदित परक्खन मग्ग ॥२०॥
सब अनीक[3] जुत पिट्ठि सन, हले हंसकुल[4] हंस[5] ॥
बैठे कहुँ कहुँ अमित बिभु[6], उभय२पवनसुत[7] अंस ॥२१॥
कति बानर नभ[8]गति क्रमत, कति उत्पथ[9] अतिकाय ॥
कति पथ राघव संग करि, बिचरत भक्ति बढाय ॥ २२ ॥
सह्य[10] सिलोच्चय[11] लांघि सब, सानुज राघव सेन ॥
पहुँचे छारमितद्रु[12] पर, तरि मारन रन तेन ॥२३॥
उत मारुति[13] लंका अनल, दै आयो प्रभुदूत ॥
तदनंतर[14] दसकंध तँहँ, कियउ मंत्र साकूत[15] ॥ २४ ॥

(षट्पात्)

कियउ मंत्र दसकंध सबन इक्कत करि संसद[16] ॥
कवन कज्ज अब कहहु दहन[17] दैगो कपि दुर्मद ॥

शरद ऋतु के अन्त में टीडियां बहुत होती हैं इसीप्रकार ग्रीष्म ऋतु के अंत में चींटियां, वर्षाकाल में मच्छरों का फैलाव, और मेघ की बुन्दों का विकाश, और छप्पय छन्द का प्रस्तार, भूमितल पर विना गिनती के रजकण, अग्नि के कण, वन के वृक्ष और वृक्षों के फल फूल अगणित होते हैं इसीप्रकार बन्दर और रीछों के अगणित समूह युद्ध की इच्छा करते हुए बढे १सेना का ॥१९॥ २ ईश्वर नामक बन्दर को ॥ २० ॥ ३ सेना सहित पिछाड़ी से ४ सूर्यवंश के ५ सूर्य चले ६ व्यापक (रामचंद्र और लक्ष्मण) ७ हनुमान् के कंधे पर ॥ २१॥ ८ आकाश में चलते हैं ९ उत्पथ (विना मार्ग) ॥ २२ ॥१० सह्य नामक ११ पर्वत को लांघ कर १२ क्षारसमुद्र पर ॥ २३ ॥ १३ हनुमान् ने १४ जिस पीछे १५ अभिप्राय सहित ॥२४॥ १६ सभा में १७ अग्नि

मातामह[1] तव माल्यवान बलि[2] अनुज बिभीखन ॥
कुंभकरन इन कहिय नाथ रक्खहु सीता नन ॥
सचिवहु प्रहस्त आदिक सकल यहहि करन लग्गे अरज ॥
मन्त्री न खल सुन भजत मिलहि कवहु चर्म मृदुपन करज[3] ॥ २५ ॥

(दोहा)

परिखद[4] दूजी[5] बेर पुनि, करन मंत्र खल कीन ॥
जवहु दिवावन जानकी, अक्खिय प्रनति अधीन ॥ २६ ॥
आसय खलको जानि अब, मौन रहे सब मानि ॥
वहहि बिभीखन किय अरज, तीजी बेरहु तानि[6] ॥ २७ ॥
सुनत सु दब्यो सक्रजित[7], तरजि पितृव्यक[8] तत्थ ॥
कौणपराजहु[9] कोप किय, महत बिभीखन मत्थ ॥ २८ ॥

(षट्पात्)

कुलकुठार खल कुटिल बदत[10] जसहानि बिभीखन ॥
जब जब संसद जुरत गिनत तब तब सब सीखन[11] ॥
मिल्यो ध्रुवहिं[12] रिपुमाँहिं जत्थ तापस[13] तँहँ जावहु ॥
मुख मेचक[14] तव मंद बहुरि नन हमहिं बतावहु ॥
तब निजप्रधान मालीतनय[15] विहग अनल संपाति बलि ॥
अरु सरभ जुत्त रावन अनुज चढ्यो गगन प्रभु सरन चलि २९
इम द्रुत[16] अर्णव[17] वार वियत[18] मग आय बिभीखन ॥
प्रभु दल अंतिक पहुँचि सँनति[19] अक्खिय कपिपति सन ॥

१ रावण का नाना २ पुनि ३ कोमल नखों से भागते हुए की चमड़ी नहीं मिलसकती ।२५। ४ सभा ५ विशेष नम्रता करके ॥२६॥ ६ खींचकर ॥२७॥ ७ मेघनाद ने विभीषण को दबाया ८ काका को ९ राक्षसराज (रावण) ने ॥ २८ ॥ हमारे यश की हानि होवे ऐसा १० बोलता है और जब जब सभा जुड़ती है तब तब सब ११ शिक्षा गिनाता है १२ निश्चय ही १३ जहां पर तपस्वी (रामचन्द्र) है तहां जा और हे मूर्ख तेरा १४ कालामुख फिर मत बता १५ माली नामक राक्षस का पुत्र ।२९। १६ शीघ्र १७ समुद्र के इधर १८ आकाश मार्ग से आया और रामचंद्र की सेना के समीप पहुंच कर १९ नम्रता सहित सुग्रीव से कहा,

रामसरन में रंक भयो रावन लघुभ्राता ॥
अरज निवेदहु अप्प त्रास टारहु बनि त्राता ॥
कपिराज सुनत बिन्नति करि रु राम हुकम चाहत रहिय॥
करतार[2] निकट कतिपय कपिन करि परक्ख लावन कहिय॥३०॥
वाततनय तँहँ बदिय बिनत यह साधु बिभीखन ॥
देख्यो सिक्खहि देत उतहु जननी कहँ अप्पन ॥
कहा परख प्रभु कहिय सजव आनहु सरनागत ॥
राह कहुँ न तस रुद्ध जदपि अंतरछल जागत ॥
आन्यौं सु कपिन होवत हुकम हिय लगाय प्रभु मिलि मुदित॥
कपिसमज[3] मध्य लंकेस कहि अभय दिन्न दुर्लभ उचित॥३१॥
जदिन सयन१तृनतल्प चरन बाहन२स्सपत्र सुन ॥
छदन३मृदुच्छद छल्लि असन४सुमबाल५सलाटुरन ॥
पत्थर खर पारीठ६थाल६पत्रावलि पावन ॥
उटज खास आवास७पास जान्हिक८रोपासन ॥
बिरहग्गि भोग उपहार९बिधि पसुन सभ्य संगम१०दियउ॥
उपपन्न अरथ राघव तदिन कनक ढ्रंग बितरन कियउ॥३२॥

(दोहा)

---

१ रक्षा करनेवाला होकर २ रामचंद्र के पास कितनेक बंदरों ने कहा कि परीक्षा करके विभीषण को लाना चाहिये ॥ ३० ॥ हनुमान ने कहा कि विभीषण श्रेष्ठ और विशेष नम्रतावाला है लंका में भी सीता माता को अपनी शिक्षा ही देते देखा है. रामचंद्र ने आज्ञा दी कि शरण आये हुए की क्या परीक्षा है शीघ्र लेआओ. उसके मन में छल है तोभी उसका मार्ग मत रोको. ३ बंदरों के समूह में (पशुओं के समूह को समज कहते हैं "पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ॥" इत्यमरः) ॥ ३१ ॥ जिसदिन तृणों की सेज, बिना पगरखी (उपानत्) के चरण ही वाहन, भोजपत्र की छाल ही वस्त्र, पुष्प और गीले फल ही भोजन, नीचे पत्थर ही आसन, पत्रावलि ही पवित्र थाल, पर्णशाला (पत्तों से छाईहुई झोंपड़ी) ही खासामहल, पास में धनुष ही पोहोराइत, विरह की अग्नि ही भोग की सामग्री, सभासदों में पशुओं का साथ था तिसदिन रामचन्द्र ने अपने साथी (मित्र) को

पुनि लक्खन सन अक्खि प्रभु, उचित न्हान करवाय ॥
कौणप[1]कै अभिसेक किय,लंका दै हित लाय ॥३३॥

(षट्पात्)

अक्खिय पुनि अखिलेस कलह[2]मैं हनि दसकंधर ॥
तोकँहँ लंका तखत धरौं प्रभु करि सर्वोपर ॥
है मोकँहँ त्रय ३ भ्रात सपथ[3] नहिँ वितथ बिभीखन ॥
इहिँ अक्खिय असु रहहिँ करहिँ तोलौं किंकरपन ॥
त्रि३गुनेस बैठि कुसकट तदनु राह उदधि जोवत रहिय ॥
वितिय त्रि३जाम नायउ वनधि कुप्पित वहि सेसहिँ कहिय॥३४॥
सतत छमा सौमित्रि[4] करत निंदा अव अप्पन ॥
यातैं सर१धनु२आनि मोहि अप्पहु जल मप्पन ॥
सुनत चाप१सर२सेस दये जोरे जगनायक ॥
हुव त्रि३भुवन हाकार देखि आकृति भयदायक ॥
फटि नीर इक्क१जोजन अवधि कांति[5] हरित नीराधि कढ्यो॥
रुचि[6] दिव्य वसन १ भूषन २ धरत पायन परि हायनँ पढ्यो॥३५॥
भूरि रतन करि भेट छमहु अक्खिय छारोद[10]कँ ॥
सहौ न जावत समुख अवहु संधित[11] सर ओदक ॥
प्रभुके पुरुखन अग्ग मैंहु विरच्यो करुनामय ॥
अनुग[12] धनीको अभय अप्पि मेटहु यह आमय[13] ॥
हो दूर बहुत इम देर हुव कहहु नाथ सुहि अब करौं ॥

सोने का पुर दान किया ॥३२॥ १ राक्षस के ॥३३॥ २ युद्ध में ३मुझको तीनों भाइयों की सोगन है कि हे विभीषण यह झूठ नहीं है, विभीषण ने कहा कि प्राण रहैगा तब तक सेवकपन करूंगा. सत, रज, तम तीनों गुणों के स्वामी (रामचन्द्र) जिसपीछे डाभ की चटाई पर बैठ कर समुद्र का मार्ग देखते रहे परन्तु तीन पहर बीत जाने पर भी समुद्र नहीं आया तब क्रोध करके लक्ष्मण से कहा॥३४॥४हे लक्ष्मण निरंतर क्षमा करने से अपनी निन्दा होती है.५हरे रंग की कान्तिवाला समुद्र निकला६दिव्यकान्ति७हाहाकार किया॥३५॥८बहुत९क्षमा करो यह कहा१०क्षारसमुद्र ने११संधान किये हुए बाण का भय सहा नहीं जाता है१२आपका सेवक हूं सो१३रोग ॥ ३६ ॥

दियहुकम सेतु धारहु उदधि धुज्जि कहिय मस्तक धरौं ॥ ३६ ॥
प्रनत सिंधु इम पिक्खि स्वामि अक्खिय अमोघसर ॥
तव तिहिँ मरुकांतार भेद्य अक्खिय कल्मषभर ॥
तहँ प्रभु मुक्कि पृसत्क भस्म किय देस भयानक ॥
दिय वर वहुरि दयाल थिर सु होवहु सुभथानक ॥
जल मिष्ट हरित तरु वल्लि जुत जीवहु तहँ सब दग्ध जन॥
यह अक्खि सिक्खं सिंधुहि दिय रु रचिय सेतु ताकँहँ तिरन॥३७॥
विश्वकर्म सुत नल१वलिष्ट कपि हुव चितिकारक ॥
सुमति नील२धरि सूत्र वन्यौं सरलत्व विथारक ॥
दैनहार उपहारे रह्यो हनुमंत३भक्तिरत्त ॥
लावन लग्गे और पृथुल पत्थर१तरु२पर्वत ३ ॥
क्रमपुव्व सेतु पद्धर किय उ जोजन दस१आयतं अतुल ॥
चउद्दह१४पूमान जोजन रुचिर पृथम१घस्र किय लंब पुल ॥३८॥
दूजे२ दिन सुहि दिर्घ वीस२०जोजन विसतारिय ॥
इहिँ क्रम सने इकवीस२१सु पुनि वावीस२२सुधारिय ॥
वासर पंचम५विक्रांत२३जोरि पूरन सत१००जोजन॥
सेतु पृथुलं करि सज्ज फैल मंडिय कपि फोजन ॥
कपिराज ताहि परखन हुकम दलोहि जान आवन दयो ॥
तिहिँ हद्द दिखाय रघुकुलतिलक अब पयान आरंभयो॥३९॥
सुक रक्खसं यह सुनत दूत पठयो दसकंधर ॥

१ निश्चय करके मेरा बाण अमोघ है (खाली नहीं जाता) समुद्र ने कहा कि ३ मरुस्थल ४ पापों से भराहुआ है जिसको भेदो ५ बाण छोड़ कर ६ फिर उन सब को वर दिया. ७ बेलों सहित ८ जले हुए मनुष्य फिर जीवित हो जाओ ऐसा कहा ॥ ३७ ॥ १० चुनाई करनेवाला ११ सीधेपन को फैलाने (पैमायश करनेवाला १२ सामग्री देनेवाला १३ मोटे १४ क्रम पूर्वक सेतु को सीधा किया १५ दश योजन (चालीस कोस) चौड़ा १६ सुन्दर १७ प्रथम दिन में लंबा पुल बनाया ॥ ३८ ॥ १८ लंबा १९ इसी क्रम से २० दूसरा २१ परीक्षा के लिये सेना को आगे जाने का हुक्म दिया ॥ ३९ ॥ शुक नामक २२ राक्षस को

उदधि पार तिहिं आण कटक पिक्ख्यो सु भयंकर ॥
पकरि लयो पहिचानि कपिन छन्नैं तस्करे कहि ॥
कुंच हुक्कम प्रभु करत चले अब सब उमंग चहि ॥
मारुति[1] अरोहि रघुकुलमुकुट[2] चढि अंगद[2] लक्खन[3] चलिय।
सुग्रीव[1] सहित ए अग्ग हुव इतर[4] पिछि दल उज्झलिय॥४०॥
गगन देव[1] गंधर्व[2] सिद्ध[3] चारन[4] सुमं[5] डारत ॥
पहुँचे राघव पार हरिन[1] रिच्छक[2] हलकारत[6] ॥
दलँ[7] मुकाम तँहँ दियउ नाथ रचि व्यूह ऊहनय[8] ॥
निज दल अंगद[1] नील[2] दुवर[2] हि रक्खे उर[9] दुर्जय ॥
दक्खिन[2] बिभाग रक्ख्यो ऋषभ[1] बाम[3] गंधमादन[1] विदित ॥
सिरभाग[4] अप्प[1] सानुज[2] रहिय थिर कपीस[2] हुव जंघन[10] थित॥४१॥

दोहा

कटक कुंचिक्ष्ण[11] रच्छक करे, जांबवान[1] धुर धीर ॥
प्रथित[12] वेगदरसी[2] प्लवग, बलि सुसेन[3] त्रय[3] बीर ॥४२॥
करि इम व्यूह मुकाम किय, दकनिधि[13] उत्तर दूर ॥
बजत बाद्य लंका बहुल[14], सुनत तत्थ सब सूर ॥४३॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचतुर्थासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ बिवाहवेला वर्णितविभाकरवंशवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुभवेक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रवि कुक्षि ७ सन्तानशिरोमणिश्रीजानकीजानिचर्यायां कृतप्रस्थानर

---

१ चोर कहकर २ हनुमान् पर चढकर ३ लक्ष्मण ४ दूसरे ॥ ४० ॥ ५ पुष्प डालतेहुए ६ बंदरों और रीछों को बढातेहुए ७ सेना का ८ तर्कना और नीति से ९ हृदय के स्थान पर १० कटि (कमर) प्रदेश में ॥ ४१ ॥ ११ कोंख के १२ प्रसिद्ध ॥ ४२ ॥ १३ समुद्र को उत्तरादिशा में दूर छोडकर १४ बहुल ॥ ४३ ॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के बडे पुत्र विकुक्षि की संतान के शिरोमणि श्रीजानकी के पति (रामचंद्र) के चरित्र में प्रस्थान करके विभी-

क्तोराज्याऽभिषिक्तविभीषणाबद्धवारिधिश्रीरघुनाथपारोत्तरणं सप्तचत्वारिंशत्तमो४७मयूखः ॥४७॥ आदित एकोननवतितमः ॥८९॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पात्

राम कहिय कपिराज कटक अप्पन प्रबंध किय ॥
सुक अब छोरहु सुनत दूत वह कपिन छोरि दिय ॥
जंपिय[1] तिहिं उत जात वार उत्तरि अरि[2] आगत[3] ॥
सीता देहु कि समर[4] रचहु अनुरूप जत्नरत ॥
पौलस्त्य[5] कहिय चरमाद्रि पर जब रविउग्गम जानिहैं ॥
ध्रुव तबहि साम संसय धरहि प्रथम न हारि प्रमानिहैं॥१॥
इम कहि रावन उभय२सचिव पठये सुक१सारन२॥
कहिय लखहु तुम कटक कवन भासत जयकारन ॥
बिरचि दूत कपिबेस[6] तबहि पत्ते दल[7] अंतर ॥
दुवहि बिभीखन देखि चतुर पकराय लये चर[8] ॥
उन किय सुनाय रामहिं अरज लंकेश्वर पठये लखन ॥
प्रभु[9] कहिय पिक्खि जावहु प्रथित बदहु तत्थ ए मम वचन२

दोहा

षण के राक्षसों का पति होने का अभिषेक करना, समुद्र को बांध कर रामचंद्र का पार उतरने का सैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४७ ॥ और आदि से निव्यासी मयूख हुए ॥ ८९ ॥

रामचन्द्र ने कहा कि हे सुग्रीव आपन ने सेना का प्रबंध कर लिया इसकारण से अब शुक नामक रावण के दूत को छोड दो. उसने लंका में जाकर १ कहा २शत्रु का आना ३ युद्ध रचो ४ अपने स्वरूप के अनुसार यत्न करने में प्रीति करके ५ रावण ने कहा कि अस्ताचल पर सूर्य का उदय होना निश्चय मान लिया जावे तोभी हमारे सन्धि (मिलाप) में सन्देह ही जानो, पहिले से ही हार नहीं मानना चाहिये ॥ १ ॥ ६ बंदर का स्वांग करके ७ रामचन्द्र की सेना में पहुंचे ८ दूतों (हलकारों) को ९ रामचन्द्र ने कहा कि प्रसिद्ध होकर ही देखजाओ और वहां (रावण से) मेरे ये वचन कहो ॥ २ ॥

रे दसकंध कुमग्गरत[1], प्रसभ[2]१दर्प[3]२अघ३पूर ॥
जिहिं बल आनी जानकी, सो ब[4] दिखावहु सूर ॥३॥
इम कहि सुक१सारन२उभय२, दिय छुराय जगदीस॥
लंकापुर तिन आय लघु[5], संबोधिय दससीस ॥४॥
जुरे इकट्ठे च्यारि४जँहँ, रघुबर१लक्खन२रारि ॥
सुँगल[7]३बिभीखन४ते सलिल[8], पटकहिं नगर उपारि ॥५॥
सुनत तुंग[9] प्रासाद सिर, सुक१सारन२लै सत्थ ॥
चढि रावन बुल्ल्यो चवँहु[10], इक१इक१को को अत्थ ॥६॥

षट्पात

सुनि सारन कस कहिय कटक अग्गैं कपिकुंजर[11] ॥
सत सहस्र१०००००जुत्थप समेत यह नील१धुरंधर[12] ॥
बाहुन कुपित[13] बजाय पुहवि लंगूल[14] प्रहारत ॥
जो अंगद२जुवराज निनँद[15] यह दिसन निकारत ॥
सो एह जुत्थ दसकोटि१०००००००००सह निडर सेतु करतार नल
यह स्वेत४कोटि दससत१०००००००००००आधिक,
बसू लक्ख८००००प्रेरक प्रबल ॥७॥
नदिय गोमतिय निकट रुचिर पब्बय[16] संरोचन ॥
ताको पति अतितेज कुमुद५यह चहत रुष्टरन ॥
पृथुलँ[17]लोम जिहिं पुच्छ विदित बहुरंग बिराजत ॥
चंडप्रकृति[18] यह चंड६सहँस लक्खन१००००००००दल साजत
यह सह्य१सुदर्सन२विंध्य३अरु कृष्णा४अचल[19] सासन करत॥
सोरंभ७दिग्घकेसर दुसह कपिलँ[20]कांति धावहिं धरत ॥८॥

१कुमार्ग में प्रीति रखनेवाला २हठ ३घमंड और पाप से पूर्ण ४अब॥३॥५शीघ्र रावण को समझाया॥४॥७सुग्रीव ८जल में ९ऊंचे महल के ऊपर १०कहा॥५॥६॥
११हाथी के समान शरीरवाला १२धुर को धारण करनेवाला १३ क्रोध करके भुज ठोकता है और भूमि पर १४पूंछ को पटकता है सो १५ नाद॥७॥
१६संरोचन नामा पर्वत १७जिसकी पूंछ पर मोटे केस हैं १८भयंकर प्रकृति १९पर्वतों पर आज्ञा चलाता है २० पीली कान्तिवाला

(दोहा)

सत१००रुतीस३०लक्ख३०००००००नसहित,ऐसोयहकपिआहि[1]
लुंचि[2] बिगारन लंककौं, चहत निजहि बल चाहि ॥ ९ ॥

(षट्पात्)

इत बिहार उपटंकि[3] लक्ख चालीस४००००००प्लवगपति[4] ॥
अगं साल्वेय अधीस[5] मुदित यह सरभ८महामति ॥
प्लवग लक्ख पंचास५००००००सहित यह पनस९सूरबर ॥
पारियात्र गिरिपाल नदत भेरी[6] जिम दुर्द्धर ॥
जलनिधि[7] समीप दर्दुर[8] निभ[9] जु सो जुत्थप जानहु बिनत१०॥
यह गवय११लक्ख सत्तरि७००००००अधिप गैरकरुचि[10] दल मध्यगत ॥ १० ॥

(दोहा)

पर्णासा नदि बिपिन[11] पति, यह क्रोधन१२कपि अत्थ ॥
उदधि तीर ठड्डो[12] अडर[13], सट्ठि लक्ख६००००००दल सत्थ११
वितत[14] लूम[15] पृथुलोम[16] बहु, अरुन१असित[17]२सित[18]३पीत[19]४ ॥
सहँसन जुत्थप नाथ सो, भट यह तार१३अभीत ॥ १२ ॥
बहुगिरि१ बन२सरिता[20]३वसत, अमित रिच्छगन आहि ॥
नीलजलद१हव्यास[21]२निभ, तिनमैं इन[22] सुनि ताहि ॥१३॥
घोररूप रुचि घन सघन, ऋक्षवान गिरिराय ॥
रेवा[23]जलपाई खरो, भल्लुक[24] धूम्र१४सुभाय ॥ १४ ॥
जांबवान१५यह तस अनुज[25], नगनिभ[26] जुत्थपनाह ॥

१है २तोड़फोड़कर॥८॥९॥३बिहार पदवी (खिताब) वाला ४ बंदरों का पति ५ साल्वेय नामक पर्वत का पति ६ नौबत के समान नाद करनेवाला ७ समुद्र के समीप ८ मेघ के ९ सदृश १० गैरू (रक्तधातु) के समान कान्तिवाला ॥१०॥११वन का पति १२खड़ा १३ निर्भय १४फैलाहुआ १५ पूंछ १६ बहुत मोटे बाल १७श्याम १८स्वेत १९पीले ॥ १२ ॥२० नदियों में २१ अग्नि के सदृश २२ राजा २३ नर्मदा २४ रींछ २५ उसका छोटा भाई २६पर्वत

सुर[1] सहाय जिहिं हनि असुर, लेह बहुत बर लाह ॥ १५ ॥
इंद्र उपासक[2] अडर इत, डिगे न रन सन डंभ१६ ॥
बदन[3] जास पिक्खत बहुत, थिर सो यह जयथंभ ॥ १६ ॥

(षट्पात्)

आखंडल[4] सन अग्ग जुज्झि पायो न पराजय ॥
अरु जुत्थप गनईस इक्क१ जोजन बपु उच्छ्रय[5] ॥
ता१हि प्रमित[6] पीनत्व[7] महत सब कपिन पितामह ॥
सो सन्नादन१७एह इतर जासौं न भयावह[8] ॥
तव भ्रात[9] धनद क्रीडानिलय[10] जंबूगिरि तँहँ जो बसत॥
गंधर्वसुता१सुचि१जुग२जनित सो यह कपि क्रोधन१८लसत॥१७॥
बन गज मारक बिदित सहँस इक लक्ख१००००००कपिन सह ॥
सु कपि प्रमाथी१गिरि उसीरवीजक[11] आश्रित यह ॥
मेचकमुख[12] मर्कटन कोटि दस १००००००००० पति बढि कुद्दत ॥
गोलांगूल[13] गवाक्ष२० सु यह पिक्खहु महँत मत ॥
हनुमानजनक सत१००हेलि[14] छबि कांति सहस खग१मृग२करत॥
जिहिं कनकअद्रि[15] जो यह बसत सो केसरि२१अग्गैं[16] सरत॥१८॥
सिंहन जिम चउ४दड्ढ[17] नखर आयुध अति तिच्छन ॥
पावक[18] आभ प्रबीर रहत गिरि मेरु चहत रन ॥
आवृत[19] पिंगल अच्छि[20] किलक भैरव गिरिकायक[21] ॥
ए रावन तिन्ह ईस सु यह सतबलिय २२ सहायक ॥
आदित्य[22] उपस्थानहिं करत प्रतिदिन राघव भक्ति पर ॥

के सदृश १ देवताओं की सहाय करके ॥ १५ ॥ २ इन्द्र की उपासना करनेवाला ३ मुख ॥ १६ ॥ ४ इन्द्र से युद्ध करके ५ऊंचा ६उसीमाफिक७मोटापन ८ भय देनेवाला, हे रावण तुम्हारे भाई ९ कुबेर के क्रीड़ा करने के१०स्थान ॥१७॥११उसीरवीज नामक पर्वत में रहनेवाले १२ काले मुख के बंदरों का१३ लंगूर१४सौ सूर्यों के समान छविवाले१५सुमेरु पर्वत में१६आगे चलता है ॥१८॥ १७डाढोंवाले१८अग्नि के समान कान्तिवाला, पीले रंग से१९घिरेहुए २० नेत्रोंवाला२१पर्वत के समान शरीरवाला २२ सूर्य को नमस्कार करते हैं

बुल्लत वक्कारि मैंही बहुत आहव मस पिक्खहु इतर ॥ १९ ॥

(दोहा)

प्रवल जुत्थ दसकोटि१०००००००० पति, इत ठड्डो गजर३एह ॥
इतर विंध्यवासी अमित, देखहु ए गिरिदेह ॥ २० ॥
कपि इतिसुख सारन१कहै, अब सुक२कहत अनेक ॥
बहु जुत्थप मैंद२४रु द्विविद२५, पिक्खहु ए सुविवेक ॥ २१ ॥
दुव२कुमार सुररूप द्युति, आश्विन जुग२अवतार ॥
कहत एहु लंका कतिक, छिन बिच बिरचहिं छार ॥ २२ ॥
बहु वृंदन संकुन सहित, मपत निछि जिन्ह मान ॥
सचिव तेहि सुग्रीवके, ए इत लेत उड़ान ॥ २३ ॥
केसरिको जेठो कुमर, यह छेत्रज बलवान ॥
कहियत औरस वातको, है सो कपि हनुमान२६ ॥ २४ ॥
इत जुत्थप जुत्थप अमित, पति सुग्रीव२७प्रवीर ॥
सत१००प्रफुल्ल कांचन कमल, मालाधारक धीर ॥ २५ ॥
कहुँ जुत्थप१संख्या कहिय, पुनि कहुँ जुत्थ२प्रमान ॥
कहुँक व्यक्ति३घटि बढि कहुँक, पुब्ब प्रमिति पलटान८॥२६॥
खर आदिक मारक खरे, ए रविकुलरवि राम १ ॥
जिनसौं दक्खिन बाहु जिम, ए लक्खन२अभिराम ॥२७॥
सोदर इत यह स्वामिको, रुप्यो बिभीखन१रंग ॥

१ मेरे युद्ध को दूसरे देखो २ और भी विंध्याचल में बसनेवाले ३ इत्यादि कपियों के नाम सारण नामक दूत ने कहे ४ विचार पूर्वक ५ देवताओं के स्वरूप कीसी कान्तिवाले ६ दोनों अश्विनीकुमारों के अवतार ७सौ खर्ब का एक शंकु होता है ८ माप (गिनती) ॥ ९ केसरि की स्त्री में १० पवन के वीर्य से पैदा हुआ ॥ २४ ॥ ११ सोना के फूलेहुए सौ कमलों की माला को धारनेवाला ॥ २५ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि वाल्मीकि रामायण में कहीं तो यूथों की संख्या कही है और कहीं यूथपतियों का प्रमाण दिया है और कहीं १२ व्यक्ति पृथक् (आत्मा) घटबढ कही है और कहीं प्रथम कहीहुई १३गणना का फिर पलटा करादिया है ॥२६॥ १४सूर्यकुल के सूर्य ॥२७॥ १५हे स्वामी (रावण) यह१६आपका छोटा भाई

अप्पहु[1] प्रभु सीता इनहिं, जुज्झहु जंग[2] उमंग ॥ २८ ॥
सत्र सुजस तिनसौं सुनत, सारन१सुक२निकसाय ॥
कुटिल महोदरसौं कह्यो, रक्खस कुल अधिराय[3] ॥ २९ ॥
इतर[4] बुलावहु दूत यँहँ, जिन्ह हम भेजहिं तत्थ ॥
सुनत महोदर टेरि सब, अर[5] बुल्ले चर[6] अत्थ ॥ ३० ॥

(षट्पात्)

दूत नाम सद्दूल[7] सु करि तिन बिच अग्रेसर ॥
कहि पठये तुम कटक तक्कि[8] आवहु सुबेल[9] तर ॥
बदलि रूप तब वेग दूत प्रविसे राघव दल ॥
परखि बिभीखन पुनिहु खिज्जि पकराय लगे खल ॥
राघव छुराय पठये बहुरि हाजरि दससिर अग्ग हुव ॥
सद्दूल कहिय मैथिलसुता[10] देहु नतो नहिं जेय[11] दुव२ ॥ ३१ ॥

(दोहा)

पुनि रावन सद्दूल[12] प्रति, मंद[13] कहिय क्यों मूक[14] ॥
कोन कोनके पुत्र कहि, कपि[15]१मर्कट[16]२भल्लूक[17]३ ॥ ३२ ॥

(षट्पात्)

सुनि रावन आदेस[18] कहिय सद्दूल जोरि कर ॥
ऋक्षराज कपिकेर सुवन[19] सुग्रीव१कपीश्वर ॥
जांबवान२।१ अरु धूम्र३।२रिच्छ[20] ए हुव२गद्गद सुत ॥
तिम केसरि४।१ अरु [illegible]।२जीव[21] अंगज बल संजुत ॥
ससधर[22] तनूज दधिमुख६सुमति कपि सुसेन७धर्मज[23] कहत ॥

१इनको सीता देदो जो २ युद्ध करने की उमंग है तो लड़ो ३ राक्षसों के कुल के स्वामी ने ४ दूसरे ५ शीघ्र बुलाये ६ हलकारों को ॥ ३० ॥ ७ शार्दूल को अग्रणी करके ८ देख आओ ९ सुवेल नामा पर्वत के नीचे १० सीता को ११ विजय करने में आवें ऐसे नहीं हैं ॥ ३१ ॥ १२शार्दूल से १३मूर्ख (रावण) ने कहा कि १४चुप क्यों है १५बंदर १६ लंगूर १७रींछ, किस किस के पुत्र हैं सो कहो ॥ ३२ ॥ १८आज्ञा सुनकर १९पुत्र २०रींछ २१बृहस्पति के पुत्र २२ चन्द्रमा का पुत्र २३ यमराज का पुत्र

दुर्मुख८।१रु वेगदर्शी९।२सुमुख१०।३मृत्युतनैय ए त्रय३महत३३

दोहा

पंच५कृतांततनूज पुनि, इतरन नाम उपेत ॥
गज११।१रुगंधमादन१२।२गवय१३।३,सरभ१४।४गवाच्छ१५।५समेत३४
ज्योतिर्मुख१६।१अरु स्वेत१७।२जुग२,प्लवंग प्रभाकर पुत्त ॥
वसुसुत दुव२विक्रांत१८।१कपि, जानहु दुर्द्धर१९।२जुत्त ॥३५॥

पट्पात्

वरुनपुत्तदूजो२सुसेन२०।१अरु हेमकूट२१।२दुव२॥
तीजो३बहुरि सुसेन२२सुकपि मुनिबर मरीचि सुँव ॥
दूजो२सरभ२३उदार विदित परर्जन्य तनै बर ॥
अपर गंधमादन २४ कुबेर अंगँज जय उद्धर ॥
बज्रांग२५नील२६ मैंद२७।१रुद्विविद२८।२
अंगद२९नल३०सुग्रीव३१यह ॥
पवमानैर२५अग्नैनल२६अश्विन२७।२८वृँषा२९
विश्वकर्म३०रवि३१सुत असह ॥३६॥

दोहा

उचित प्रश्न सब आक्खि इम, दससिर सन सद्दूल ॥
भिँय लिय राम अनीकभव, हिय खलकै दिय हूल॥३७॥

॥ शुद्धप्राकृतभाषा ॥ मालिणी ॥

इअ तह वि सुणान्तो दूअसद्दूलवक्कं

१मृत्यु के पुत्र२यमराज के पुत्र३सहित ४ बन्दर ५ सूर्य का पुत्र ६ वसु देवता के पुत्र॥३४॥३५ ॥ ७ पुत्र ८ इन्द्र का पुत्र ९ दूसरा गंधमादन १० कुबेर का पुत्र ११ दुर्द्धष, हनुमान १२ पवन का, नील १३ अग्नि का, मैन्द और द्विविद १४ दोनों अश्विनीकुमारों के, अंगद १५ इन्द्र (इन्द्र का पुत्र बालि और उसका पुत्र अंगद) का अंश १६ नल विश्वकर्मा का और सुग्रीव सूर्य का पुत्र है ॥ ३६ ॥ रामचन्द्र की सेना से पैदा हुआ१७भय लेकर दुष्ट (रावण) के हृदय में हूल लगाई ॥ ३७ ॥

मालिनी ॥ इति तत्रापि शृण्वन् दूतशार्दूलवाक्यं ज्ञातुमरिसैन्यं यातुधानानां नाथः । अनन्तरं गिरिसुवेले शूर संवेष्टयमानं रघुकुलकलशं तं सानुजं सः शश्रौषीत्॥३८॥

मुणिउ मरिसङ्गणं जाउहाणाण णाहो ॥
णवरि गिरिसुवेले सूरसंणेल्लमाणं,
रहुउलकलसं णं साऽणुग्रं सो सुणीग्र ॥३८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ बीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८बेला६८।१बिबाहवेलावर्णनविषयविभाकरवंशाबितननवैवस्वतमनुतनुभवेक्ष्वाकु६पट्टपपुत्रविकुक्षि७कुलकलशश्रीवैदेहीबल्लभचरित्रे व्यूढबलरामशुक१सारण२शार्दूल३ऽऽदिमोचनतत्प्रतिगमनयूथपयूथगणानानिगदनमष्टचत्वारिंशत्तमो४८मयूखः ॥४८॥ आदितो नवतितमः ॥९०॥

शुद्धप्राकृतभाषा॥उवजाई

तदो खलो आदरिऊण बिज्जूजीहं निसाडं कुहएण तेण
तं जाणइं जूरविउं स सीसं कारीग्र मायामइग्रं पहुस्स॥१।
तहा व चावं१ससरं कलावं२णिम्माविऊणं सरिसं दहासो।
घेत्तूण जाहीग्र असोग्ररणां रामं हयं जाणइ जाणइत्ति ॥ २ ॥

उससे पीछे राक्षसराज रावण ने शत्रु सेना का वृत्तान्त जानने के लिये मुख्य दूत की बात सुनते हुए सुवेल पर्वत पर स्थित शूरवीरोंको साथ लियेहुए छोटे भाई लक्ष्मण सहित रघुकुल कलश श्रीरामचन्द्र को सुना ॥ ३८ ॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य के वंश को फैलानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल के कलस श्रीजानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में सेना का व्यूह रचकर रामचन्द्र का शुक,सारण, शार्दूल आदि को छोडना और उनका पीछा जाकर यूथपतियों के यूथों की गिनती कहने का अड़तालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥४८॥ और आदि से निव्वे मयूख हुए ।९०।

तब दुष्ट रावण ने विद्युज्जिव्ह राक्षस का आदर करके कपट से जानकी को ठगने के लिये उस राक्षस द्वारा प्रभु रामचंद्र का बनावटी मस्तक बनवाया।१। उसीप्रकार बाण सहित मरीखा धनुष और भाथा बनवाकर,सीता रामचंद्र को

उपजातिः॥ तदा खल आदृत्य विद्युज्जिव्हं निशाटं कुहकेन तेन। तां जानकीं वञ्चयितुं स शीर्षमकारयन्मायामयं प्रभोः ॥१॥ तथैव चापं सशरं कलापं निर्माप्य सदृशं दशास्यः । गृहीत्वाऽयादशोकारण्यं रामं हतं जानीहि जानकीति ॥२॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा)

(षट्पात्)

सीता ढिग दससीस मत्थ डारिय मायामय ॥
कहिय राम सह कटक हन्यौं लखि चलहु ममालय[2] ॥
ताकै धनु१तूणीर२परखि प्रत्यय[3] अब पावहु ॥
महिखीपन भजि मोहि धरहु भय बिबिध बिहावहु[6] ॥
जननी सु सुनत परि दुखजलधि कैकेई गरहन करिय ॥
मूर्छित मुहूर्त गिरि दंड मितं सुधि बहोरि कछु अनुसरिय॥३॥१॥

(दोहा)

सुधि सिरहिं लखि चिन्ह सब, लग्गी करन बिलाप ॥
बुल्ली मंगत मैंहु बध, देहु दहास[11] दुराप[12] ॥ २ ॥

(पादाकुलकम्)

कहिय तत्थ कोउक[13] अभ्यार्दन, सुनी प्रहस्त चहत कछु प्रभु[14]सन ॥
यह सुनि उठि रावन गृह आयो, बल[15] अप्पन रन सज्ज बनायो ॥३॥
पिहितं[17] भये कृत्रिम[17]सिर१सर२धनु३,जनक[18]सुताइतचाहिय तजन तनु[19]॥
निसाचरी सरमा अभिधाना, निपुन कही हितकी तहँ नाना ॥४॥

(दोहा)

सरमा नाम निसाचरी, मित्र करी जगमाय[21] ॥
तानैं बिबिध बिसास दिय, कहि अजेय[22] रघुराय ॥ ५ ॥

मेरहुए जान लेवें इस प्रयोजन से रावण उन धनुष आदि को लेकर अशोकवा टिका को गया।२।१रामचंद्र को सेना सहित मारडाला जिसको देखकर २मेरे घ र में चल३माया को परख कर अब४विश्वास(सुबूत)पाकर५राणीपन धारण कर६छोड़ दे७सीता यह सुनकर दुःख के समुद्र में पड़ कर कैकेयी की८निंदा क रनेलगी ९ दो घड़ी तक दंड के१०समान गिरकर फिर कुछ चेत पाया ॥३॥ ११ हे दशास्य (रावण) १२ दुर्लभ ॥ ४ ॥ उस समय किसी १३ राक्षस ने आकर रावण से कहा कि प्रहस्त १४ आप से कुछ सुना चाहता है १५ सेना को ॥ ३ ॥ १७ बनावटी मस्तक, बाण और धनुष १६ अंतर्धान होगये १८ सीता ने १६ शरीर छोड़ना चाहा २० सरमा नामक राक्षसी ने ॥ ४ ॥ २१सीता माता ने अपनी मित्र बना ली थी२२रामचन्द्र किसीसे विजय नहीं

रक्खस[१] यह माया रचिय निहचै प्रभुबध[२] नाँहिं ॥
जो तू चाहत तो सवन, आऊँ लखि ढिग[३] आँहिं ॥ ६ ॥
बात[४] १ गरुड२मम बेगकों, सुंदरि[५] पहुँचि सकैं न ॥
जानहु मामक[६] जानकी, गमन अनर्गल[७] गैंन[८] ॥ ७ ॥
सीता अक्खिय[९] हे सखी, पहिलैं रावन पास ॥
जाय खबरि आनहु संजव[१०], कहा करत क्रव्यांस[११] ॥ ८ ॥
तव सरमा उडि नभ पिहितैं[१२], गई दसानन गेह ॥
पहुँची सब सुनि तत्थ पुनि अक्खी सुनि सुभ एह ॥ ९ ॥
रावन माता१कहि रही, सोहि दिवावन तत्थ ॥
वृद्ध अमात्य[१३] अबिद्ध१ह, सुहि[१४] अक्खी हित सत्थ ॥ १० ॥
मन्त्री नैंक न मंदमति, यातैं सुभ अनुमान ॥
राघव जो नहि तो रचत, बैंलि[१५] किम मंत्र विधान ॥ ११ ॥
(षट्पात्)
मातामह[१६] इत माल्यवान दससिर संबोधिय[१७] ॥
असकुन होत अनेक देय[१८] सीता जानहु जिय ॥
तुष्ट कहिय कैंति[१९] दिनन रंगैं[२०] पिक्खहु मृत[२१] रामहिं ॥
जावहु गृह तुम जरठ[२२] करत प्रेरैंन[२३] बिनु कामहि ॥
इम तिहिं विडारि[२४] मंत्रिन उचित सज्ज करिय गढ१कोट२सब ॥
प्रेरिय प्रहस्त१प्राची[२५]१ककुभ[२६] तोरन पुर रखवार तब ॥ १२ ॥
(पादाकुलकम्)

कियेजावें ऐसे हैं ॥ ५ ॥ १ राक्षस ने २ रामचन्द्र का वध नहीं हुआ ३ पास ही हैं सो देख आऊं ॥ ६ ॥ ५ हे सुन्दरि! मेरे वेग को ४ पवन और गरुड़ भी नहीं पहुंचसक्के ६ मेरा जाना ८ आकाश में ७ विना रोक के है ॥ ७ ॥९सीता ने कहा१०शीघ्र११राक्षस ॥ ८ ॥१२छिपकर ॥ ९ ॥१३ बूढे कामदार ने१४रावण की माता ने कही वही बात ॥ १० ॥१५ फिर सलाह क्यों करता है ॥ ११ ॥ १६ रावण के नाना ने१७रावण को समझाया १८ देने योग्य १९ कितनेक दिनों में २० युद्धभूमि में २१ रामचंद्र को मराहुआ देखना २२ बुड्ढा २३ विना प्रेरणा किये ही कार्य करता है २४ उसको निकाल कर २५ पूर्व २६ दिशा के शहर के दरवाजे की रक्षा पर ॥ १२ ॥

महापार्श्व१अरु दुष्ट महोदर२, दक्खिन२द्वार पठाये दुद्दर ॥
जिम पच्छिम३गोपुर वासवजित १,
अप्प १ रु सुक २ सारन ३ उत्तर ४ इत ॥ १३ ॥
विचके गुल्म५तथाहि महाबल, खल रच्छक किय बिरूपाक्ष१खल
यह प्रबंध पिक्खन पुर अंतर, बिसे बिभीखन सचिव छन्नवर॥१४॥
अंडज बनि लायक लखि आये, सज्ज जथाक्रम सत्र सुनाये ॥
रावन अनुज सुनि सु सबरीती, प्रभु सन कहिय बढाय प्रतीती॥१५
इमहि प्रबंध राम मन आयो, पूरब१गोपुर नील१पठायो ॥ ॥
अक्खिय दब्बि प्रहस्तहिँ आहव, मारहु जेंदपि सहाय उमाहवें।१६।
दक्खिन१द्वार लरहु अंगद१द्रुत, सूर बरुनदिस३द्वार पवनसुत१ ॥
उत्तर४द्वारमैं१रु लक्खनँ२इत, हनि हैं खलहि बीररस संहितँ ॥१७॥
रिच्छराजें१कँपिराज२बिभीखन३, मध्यगुल्म५ए लरहु महामन ॥
सेना जुत इम जाहु बीर सब, इक्क नियोगँ सुनहु इतँरहु अब ॥१८॥
नरवपु कवहु कोहु धारहु नन, ज्यौं पहिचानैं हमहिँ पुरायजन ॥
लरिहैं नृवपु सत्त७मैं१लक्खन२,रावनभ्रात३सचिवचउ४ए७रन१९

दोहा

---

१ शहर के दरवाजे पर २ इन्द्रजित को ३ आप (रावण) ॥ १३ ॥ ४ बीच की सेना में ५ रक्षक ६ घुसे ॥ १४ ॥ २१ ॥७ पक्षी बन कर ८ सेना की रक्षा करनेवालों को देख आये ९ शत्रु जिस क्रम से तैयार हुए सो क्रम पूर्वक बिभीषण को सुनाया ॥ १५ ॥ १०पूर्वदिशा के शहर के द्वार पर ११युद्ध में प्रहस्त को दबाकर१२महादेव राक्षसों की सहाय पर है१३तोभी मारना ॥ १६ ॥ १४शीघ्र१५पश्चिम दिशा के द्वार पर१६हनुमान१७उत्तर के द्वार पर मैं (रामचंद्र) और लक्ष्मण १८ वीर रस सहित ॥ १७ ॥१९ जाम्बवान २० सुग्रीव २१ बीच की सेना अथवा रक्षा के अर्थ जुदी रक्खी हुई (रिजर्व) सेना में अर्थात् जिधर विशेष भार पड़ाहुआ देखे उधर ही जाकर रक्षा करनेवाली सेना में २२ एक दूसरी २३ आज्ञा भी सुनो ॥ १८ ॥ युद्ध करते समय मनुष्य का २४ शरीर कोई मत धारण करना जिस कारण से २५ राक्षस हमको पहिचान लेवें २६ मनुष्य शरीर से सात जने लड़ेंगे जिनमें मैं (रामचंद्र) लक्ष्मण, बिभीषण और बिभीषण के चारों मंत्री ॥ १९ ॥

कहि इम प्रभु लंका निकट, बर लखि सैल[1] सुबेल ॥
रघुपति तँहँ रजनी[2] रहन, मन किय सम्मति[3] मेल ॥ २० ॥

पट्पात्

इम बिचारि प्रभु अँरहि[4] बुल्लि सुग्रीव१ बिभीखन२ ॥
अंगद३ मारुति[5]४ आदि मुख्य इतरहु दुर्जय[6] मन ॥
सानुज लहि निज सत्थ चढे पब्बय सुबेल पर ॥
ससुख बैठि तस सिखर लखिय सब नयर[7] निसाचर ॥
भल्लुक[8]१ प्लवंग[9]२ मर्कट[10]३ भटन इक्खत[11] किय गर्जन असह ॥
सकलेस[12] बासिय परिकर[13] सहित इम सुबेल सिर रजनि वह ॥ २१ ॥

(दोहा)

राका[14] निसि इम तँहँ रहिय, सित[15] फग्गुन सकलेस[16] ॥
पिक्ख्यो बहुरि बिहान[17] पुर, बहु प्रकार दिवबेस[18] ॥ २२ ॥
सहँस१००० थंभ मनिमय सुघट[19], पिहुल[20] तुंग[21] प्रासाद[22] ॥
निरख्यो बिच रावन निलय[23], कृतरच्छक क्रव्याद[24] ॥ २३ ॥

(षट्पात्)

पुरगोपुर[25] परिकूट[26] सीस तहँ लखिय दसानन ॥
अरुन[27] धरत आभरन रत्तचंदन[28] अनुलेपन[29] ॥
पट ससलोहित[30] रंग नील बपु छबि नीरद[31] निभ ॥

---

१ सुबेल नामक श्रेष्ठ पर्वत देखकर ३ सब की सलाह मिलाकर उस पर २ रात्रि भर रहना चाहा ॥ ४॥२० ॥४शीघ्र ही ५ हनुमान् आदि को ६ मन से भी नहीं जीतने में आवें ऐसोंको ७ राक्षसों के पुर को देखा ८ रींछ ९ बंदर १० लंगूर वीरों ने ११ लंका को देखते ही १२ सबके स्वामी (रामचंद्र) १३ अपनी परगह सहित ॥ २१ ॥ फाल्गुन १५सुदि१४ पूर्णिमा की रात्रि को१६ सब के स्वामी१७ प्रभात समय में१८स्वर्ग के समान लंका-पुर को देखा ॥२२॥ १९श्रेष्ठ घड़ना युक्त२०मोटा और२१ऊंचा२२ महल के बीच में २३रावण का गृह देखा जिसकी रक्षा २४ राक्षस करते हैं ॥ २३ ॥ २५ शहर के दरवाजे के २६ ऊपर के मकान पर रावण को देखा जो २७ लाल रंग के भूषण २८ लाल चन्दन का २९ शरीर पर लेप किये हुए और ३०खरगोस के रुधिर समान लाल रंग के वस्त्र और ३१मेघ के समान शरीर की

वच्छ धरत किंशा विदित दंत जँहँ दियउ इंद्रइभ ॥
सिरछत्र४विसंद चामर५सुभग कछु प्रबंध जुज्झन करत ॥
इम ताहि लखत कपिपति उडिय हुलासि तासु दर्पहिं हरत२४

(दोहा)

वीर सु प्रभु सासन बिनुहि, लखि न सक्यो जय जुद्ध ॥
वानरराज सुवेलसौं, कुद्यो खलसिर क्रुद्ध ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

जिहिं गोपुर हो जातुधान रन जतन विचारत ॥
तहँ सुवेल सन सलपि गयउ कपिपति ललकारत ॥
इक्क१मुहूर्त्त तिहिं इक्खि बहुरि जुट्टिय उडि बत्थेन ॥
कहिय कबहु छुटै न होय मध्यग मम हत्थन ॥
दिय भुव गिराय दससिर मुकुट खलहु ताहि डारिय धरनि॥
पटक्यो यहैहुं कपि पुनि प्रबल तनय जंग रुक्किय तरनि।२६।
दुवरहि जुरे बल१दाव२पलट३आघात४प्रसारत ॥
रत्नि१अरत्नि२कग्ग्र३मुष्टि४कूर्पर५तल६मारत ॥
वरंन१निखातैक२वीच प्रसभ बत्थन संकुल भरि ॥
लग्गे पुनि उठि लरन धीर जहँ अग्ग भलप धरि ॥

छवि और १ हृदय पर इन्द्र के २ हाथी ने दन्त लगाये थे जिनके ३ सुवे-त्रण (चकांगों, निशान) मस्तक पर ४ स्वेतछत्र, सुन्दर चमर धारण किये हुए ५ युद्ध करने का प्रबन्ध करता हुआ. इस प्रकार उसको देख कर ६ सुग्री-व उसका ७ घमंड मिटाता हुआ उड़ा ॥ २४ ॥ ८ रामचन्द्र की आज्ञा के विना ही ॥ २५ ॥ ९ राक्षस १० दो घड़ी तक उसको ११ देखकर १२ भुजा-ओं में भरकर १३ रावण ने भी सुग्रीव को भूमि पर गिराया फिर सुग्रीव ने भी प्रबल होकर १४ रावण को पटका सो १५ अपने पुत्र (सुग्रीव) का युद्ध देखने को १६ सूर्य रुक गया ॥२६॥ १७ मुष्टि (मुट्ठी) बांधे हुए हाथ को रत्नि, और १८ फैलीहुई अंगुलियोंवाले हाथ को अरत्नि कहते हैं १९ कूंणी (बाहु मध्यग्रन्थि) और २० लात मारते हुए २१ कोट की २२ खाई में २३ हठ पूर्वक अवकाश रहित भरगये और फिर उठकर लड़ने लगे

गोमूत्र[१]१थान[२]२मंडल[३]३गमन, गत४प्रत्यागत[४]५चक्रगत६ ॥
प्रघात[५]दैन[६]१वर्जन[७]२प्रमुख[८], रचन लगे तिनि युद्धरत ॥ २७ ॥

(दोहा)

परिधावन[९]१आप्लाव[१०]२पुनि, अभिद्रवन[११]३आस्थान[१२]४ ॥
परावृत्त[१३]५समवप्लुत[१४]६रु, अपावृत्त[१५]७अवधान ॥ २८ ॥
इतिमुख असह नियुद्धके, प्रेरे दुहुन२प्रकार ॥
इत कपीस१दससीस२उत, जुरे प्रबल जुज्झार ॥ २९ ॥
जान्यौ दुर्जय[१६] कीस जब, माया रचिय दसास[१७] ॥
सु[१८] लखि झपि सुग्रीव हू, पुनि आयो प्रभु पास ॥ ३० ॥
पुच्छि कुसल हिय लाय प्रभु, उपालंभ[१९] दिय याहि ॥
तू इहिं हठ आतो नतो, करते उद्यम काहि ॥ ३१ ॥
लक्खन प्रति पुनि अक्खि लंघु[२०], करन व्यूह बलकेर ॥
श्रीप्रभु उतरि सुवेलतैं, घन लंका दिय घेर ॥ ३२ ॥
पक्ख असित[२१] मधु[२२] पडिवया१, किय आहव आरंभ ॥
जित रावन उत्तर बलंज[२३], थित तित प्रभु जयथंभ ॥ ३३ ॥

(पट्पात्)

प्राची गोपुर[२४] नील१द्विविद२ मैंद३हु सज्जिय हुंत[२५] ॥
दक्खिन अंगद१गज२रु गवय३ऋषभ४रु गवाक्ष५जुत ॥

१गोमूत्र नामक चित्रकाव्य में टेढी गति से पढाजाता है उसप्रकार टेढे चलकर २ अवकाश(छुट्टी)देना ३गोलाकार फिरना, आगे बढना ४पीछा हटना, तिरछी गति से चलना ५ चोट मारना ६ चोट बचाना ७ आदि ८ बाहुयुद्ध की रीति रच कर ॥ २७ ॥ ९ उलटा दौड़ना १० उठालेना अथवा झुकादेना ११ वेग से चलना १२ खड़ा रहना १३ लुडक जाना १४ कूदना १५ दाव से निकल जाना और सावधान रहना ॥२८॥ इनको आदि लेकर मल्लयुद्ध के दाव दोनों ने चलाये ॥ २९ ॥ जब सुग्रीव को अपने से १६ जय होने योग्य नहीं समझा तब १७ दशानुख ने माया रची १८ सो देखकर सुग्रीव कूद कर रामचन्द्र के पास आगया ॥ ३० ॥ १९ ओलंभा दिया ॥ ३१ ॥ २० शीघ्र ॥ ३२ ॥ २२ चैत्र २१ वदि एकम के दिन युद्ध आरंभ किया २३ उत्तर द्वार पर रावण था उधर रामचन्द्र जय के थंभ होकर खड़े हुए ॥३३॥ २४पूर्वदिशा के द्वार पर २५शीघ्र

पच्छिम गोपुर*पावमान१तरस२रु प्रजंघ३तिम ॥
उत्तर राघव अप्प१अनुज लक्खन२उपेत इम ॥
विच गुल्म[2] रहिय कपिपति[3]१प्रमुख[4] जुत्थप कोटि छतीस३६००००००० जहँ ॥ इहिंरीति चैत पूतिपदि१असित[5] अच्चयुत[6] रन मंडिय असह३४

[दोहा]

राघवसौं पच्छिम तरफ, मध्यगुल्म ढिग मत्त ॥
भल्लुकराज[7] १ सुसेन २ भट, उभय २ रहे अनुरत्त[8] ॥३५॥
प्रभु तत्थहु नृपधर्मपटु[9], पुनि रचि मंत्र प्रकास ॥
बालितनय इत बुल्लिकैं[10], पठयो रावन पास ॥ ३६ ॥
कहिय जाय अंगद कहहु, किय रावन अघकाम ॥
तस फल पावन जिय तजन, रन अब भिंटहु[11] राम ॥ ३७॥

(षट्पात्)

तब यह सुनि तारेय[12] गगन पद्धति[13] मलंगि गय ॥
तहँ रावन सह सचिव जाय बुल्लिय तहँ दुर्जय ॥
जनकसुता लै जाय मान रक्खहु पायन परि ॥
कलह तथा सकुटुंब भुम्मि सोवहु गिद्धन भरि[14] ॥
यह सुनत दुष्ट अमरख अनखि कुटिलनैन[15] मंत्रिन कहिय ॥
इहिं हनहु बंधि यह सुनि उठि सु गरजि च्यारि४दुष्टन गहिय।३८।

(दोहा)

परबस यह जानत परयो, रयप्रकटन तारेय[16] ॥
सु पुनि च्यारि४रक्खस सहित, उड्ड्यो गगन अमेय[17] ॥३९॥

(षट्पात्)

---

* हनुमान् १ लक्ष्मण सहित २ सेना के बीच में ३ सुग्रीव ४ आदि ५ वदि एकम के दिन ६ रामचन्द्र ने दुस्सह रण प्रारंभ किया ॥ ३४ ॥ ७ जाम्बवान ८ प्रीति पूर्वक ॥ ३५ ॥ ९ राजाओं के धर्म में चतुर १० अंगद को बुलाकर ।३६। ११ युद्ध में राम से भिड़ ॥ ३७ ॥ १२ तारा का पुत्र (अंगद) १३ आकाश मार्ग में १४ गिद्धों का भरण पोषण करके १५ टेढे नेत्र करके ॥३८॥ १६ अंगद अपना वेग प्रकट करने के लिये वह १७ अमाप बलवाला आकाश में उड़ा

उड्डत वालिसुत उद्ध गिरे मूर्छित चउ४ग्राहक ॥
उद्ध तुंग इक सिखर वीर पहुँच्यो जयवादक ॥
सहज भंजि वह सृंग अक्खि आह्वय निज अंगद ॥
बहुरि झंप लिय वीर मारि आसिर अधीस मद ॥
प्रभु जत्थ तत्थ आयउ प्रबल पुरायजनन विस्मय परिय ॥
रघुनाथ बलहिं व्यूहित विरचि करन हल्ल संक्रम करिय ॥ ४० ॥

(पादाकुलकम्)

यहँ सुसेन कपिपति पठवायो, यह प्राकार परिक्रमि आयो ॥
इकसत१००तत्थ प्लवग अंक्खोहनि,अवहित किन्नवरन आरोहनि

(दोहा)

पूछ्यो अब दल हंकि प्रभु, बंप्र१खातिका२बीच ॥
सु सुनि लख्यो दससीसहू, निलयअट्ट चढि नीच ॥४२॥
इत बानर गिरि१तरु२उपल३, खिंजि खिंजि पटकि अखंड॥
गोपुर१कपिसिर२अट्ट३गन, चूरन लग्गे चंड ॥ ४३ ॥

(षट्पात्)

पनस१कुमुद२बलि प्रघस३कोटिदस१००००००००जुत ईसानक१
अनल कोन २ सतबलिय १, बीस कोटि २००००००००
न बलतानक ॥
नैर्ऋत कोन ३ सुसेन १ जुरिग कपि कोटि कोटि कोटि-

अंगद के १ ऊपर उड़ते ही पकड़नेवाले चारों गिरगये; ऊपर एक ऊँचा शिखर था जिस पर रामचन्द्र की २ जय बोलता हुआ पहुँचा उस शिखर को सहज से ही तोड़कर ३ अपना नाम कह कर ४ राक्षसों के स्वामी का मद मारकर ५ राक्षसों को विस्मय हुआ. रामचंद्र ने सेना को ६ व्यूह सहित करके हल्ला करने को ७ गमन किया ॥ ४० ॥ ८सुग्रीव ने सुसेन को भेजा सो वह९कोट के प्रदक्षिणा करके आया और बंदरों की एक हजार१०अक्षौहिणी को११सावधान करके १२ कोट पर चढा दी ॥ ४१ ॥१३ कोट १४ खाई १५ अपने महल की छत पर चढकर॥४२॥ १६ पत्थर१७ शहर के दरवाजे १८ कंगूरे १९ छतों के समूहों को चूर्ण करने लगे ॥ ४३ ॥ २०पुनि २१ ईशान दिशा में २२ अग्निकोण में २३ फैलानेवाला

१०००००००००००००० जुत ॥
अंगद मातुल[1] अडर भीति डारन रन अद्भुत ॥
दूजो[2]गवाक्ष[3]पवमान दिस अखिल मग्ग किय रुद्ध[3] इम ॥
देखि सु नियोग[4] रावन दियउ जुज्झहु अरि वस होय जिम॥४४॥

(दोहा)

लंकासन निकस्यो लरन, आसिर[5]राज अनीत ॥
पहिलैं[6] द्वंद्व नियुद्धपटु[7], भिरे दुरदिस निर्भीत ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ बिबाहवेलावर्णनविषयबिभाकरवंशावितननवैवस्वतमनुतनुभवेक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशश्रीवैदेहीवल्लभचरिते दशग्रीवाऽशोकवनिकामायाप्रपञ्चनलङ्कागोपुरविभक्तबलव्यूहनरघुनाथसुवेलाऽऽरोहणसुग्रीव१रावण२नियुद्धविरचनोषितैक १ रात्रिप्रभुप्रत्यवरोहणानैकपेयनगरवेष्टनरावणानीकनिर्याणमेकोनपञ्चाशत्तमो मयूखः।४९।
आदित एकनवतितमः ॥ ९१ ॥

(शुद्धप्राकृतभाषा)

(सालिणी)

१अंगद का मामा२वायु कोण में३इसप्रकार सब मार्गों को रोकलिये, इनको देखकर रावण ने४हुक्म दिया ॥४४॥ ५राक्षसराज की सेना निकली जिनमें प्रथम ६ दो दो जने ७ बाहुयुद्ध में चतुर दोनों ओर से निर्भय होकर भिड़े ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश को फैलानेवाले वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुलकलश श्रीजानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में रावण का अशोकवन में माया रचना, लंका के दरवाजों पर सेना के व्यूह का बांटना, रामचन्द्र का सुवेल पर्वत पर चढना, सुग्रीव रावण का बाहुयुद्ध रचना, एकरात्रि निवास करके रामचन्द्र का पीछा उतरना, राक्षसों के नगर को घेरना, रावण की सेना के निकलने का उनचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४९ ॥ और आदि से इक्यानवे मयूख हुए ॥ ९१ ॥

जूहेसेसु वेटमाणेसु लङ्कं कव्वाएसुं निक्खसन्तेसु अव्वो॥
अरणोरणाणं कोव इड्ढं सुसड्ढं दन्दाघाग्रं सम्पवट्टंणिउड्ढं।१।

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(पज्झटिका)

मधुमास असित१ प्रतिपद१मिलाप, रन प्रथम१द्वंद्व,मचिग दुराप ॥
मिलि अंगद१इत उत मेघनाद२,संपाति१प्रजंघ२कु लगि सवाद।२।
:नुमान१जंबुमाली२हरोल, रु बिभीखन१लिय मित्रघ्न२लोल ॥
गज१तपन२नील१रु निकुंभ२गज्जि,सुग्रीव१प्रघस२किय द्वंद्व सज्जि
सौमित्रि६१विरूपाक्ष२हु समत्थ, श्रीराम१इक्क७अरि च्यारि सत्थ ॥
जहँ अग्निकेतु१सुप्तघ्न२जेतु,क्रम यज्ञकोप३अरु रस्मिकेतु४ ॥४॥
मैंद१सु इत त्यौं उत वज्रमुष्टि२,द्विविद१रु असनिप्रभ२रारि रुष्टि ॥
इत नल१उत प्रतपन२इत सुसेन१,उत विद्युन्माली२चरित एन।५।
इत्यादि मल्लरन जुरि असेस, अतिघोर तुमुल किय सुनहु एस ॥
इंद्रजित१गदा तारेयँ अंग, मारी कराल धरि जय उमंग ॥ ६ ॥
अंगद तब याके सूत१अश्व२, रथ३सहित कट्टि किय पललचरस्व
संपाति झेलि अरि तीर तीन३,पटक्यो प्रजंघ सिर भुव प्रवीन।७।
गहि उग्र जंबुमाली अंगूढ, मारुति उर मारी सांगि गूढ ॥
हनुमान मल्लपितव स्वामिहेत, सो सत्रु चूर्ण किय रथ समेत॥८॥
मित्रघ्न विभीखन अतुल मोद, गिद्धन हित डारे विविध गोद ॥
गज तपन थंभि तँपनहिँ गहीर, वरसे नभ आयुध विंदु बीर।९।

१ चैत्र मास के २ कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (पड़िवा) के मिलाप में ३ दुर्लभ ॥२॥ ४ अग्रणी होकर ५ चपलता से ॥ ३ ॥ ६ लक्ष्मण ७ अकेले रामचन्द्र ने चार शत्रुओं के साथ युद्ध किया ८ युद्ध में क्रोध करके ९ पाप के चरित्र करनेवाला ॥ ४ ॥ ५ ॥ १०तारा के पुत्र (अंगद) के अंग में ॥ ६ ॥ ११मांस भक्षण करनेवाले गीध आदि के अधीन १२प्रहार ॥ ७ ॥ १३ प्रत्यक्ष १४ हनुमान के उर में १५ सांग (वरछी) ॥ ८ ॥ १६ अत्यन्त आनन्द के साथ१७ तपन ने सूर्य को ठहराकर ॥ ९ ॥

मार्गणाः ॥ यूथेषु वेष्टमानेषु लंकां कल्याणेषु निष्क्रमत्सु अहितेषु । अन्योन्येषां कोप इव सुखदं द्वन्द्वा नां संप्रवृत्तं निपुणम् ॥१॥

क्रव्याद[1] निकुंभहु नीलकाय, सत१००बान दये अमरख सहाय ॥
तब बढ्ढि तास रथचक्र नील, सिर तोरि दुष्ट पटक्यो कुसील[2]॥१०॥
सुग्रीव सप्तपर्णहिं[3] चलाय, मारयो सु प्रघस बल छक छलाय ॥
इक१वान मुक्कि लक्खन[4] उदार,बिनु प्रान विरूपाक्षहिं चकार[5]॥११॥
इत अग्निकेतु प्रमुखन[6] अखंड, प्रभु बपुँ[7] प्रसत्क मारे प्रचंड ॥
रघुबरहु मुक्कि चउ४रोप[9] रंग, जे च्यारि४गिराये मारि जंग ॥ १२ ॥
मैंदहु स्वमुष्टि करि बज्रमुष्टि, तनु[10]हीन गिरायउ पाय तुष्टि[11] ॥
इतद्विविदसालरुक्खहिं[12]उपारि,असनिप्रभ लिय सरथहय मारि॥१३॥
नलनैं प्रतपनके कड्ढि नैन, वह दुष्ट अंध किय जुद्ध ऐन[13] ॥
विद्युन्मालीके खाय बान, मुक्किय सुसेन गिरि इक१समान ॥ १४॥
लखि ताहि आत खलरथहिं छोरि, द्रुत गो प्लवंग[14]पर दुष्ट दोरि ॥
तिहिं अद्रि जाय खल रथ तुरंग, सब चूरि उडाये बात[15] संग ॥१५ ॥
पुनि एक१सिला गहिकैं प्लवंग, आयो खल ऊपर बितत[16] अंग ॥
वच्छत्थल[17] मारिय सुहि प्रवीन, हुव बिद्युन्माली असु[18]बिहीन ॥१६॥
इम होत प्रथम दिन रन अखंड, तक्किय चरमाचल[19]मारतंड[20] ॥
कपि कौणप[21] तउ जुज्झत रुके न,संजुरिग[22] निसातममैं[23] हु सेन ॥१७॥
को तुम सुनि हम इत कहत कीस,उत कहत रात्रिचरजय अधीस॥
निस तिमिरमैं हु पहिचाने बैन, इम लरन लगे सदृगहु[24] अनैन ॥१८॥

१राक्षस२खोटेशीलवाले को३एक एक गांठ में सात सात पत्ते होवें ऐसे वृक्षविशेष को चलाकर४उदार लक्ष्मण ने५किया॥११॥६आदि ने७रामचन्द्र के शरीर में भयंकर ८ बाण मारे९बाण ॥ १२ ॥१०शरीर विना करके११प्रसन्नता पाकर १२ शालवृक्ष को उपाड़ कर ॥ १३ ॥१३ जुद्धस्थल में ॥ १४ ॥ १४ बंदर पर १५ पवन के साथ उडादिये ॥ १५ ॥ १६ शरीर को फैलाकर १७ हृदय में मारी १८ प्राण विना होगया ॥ १६ ॥ इसप्रकार युद्ध होते होते २० सूर्य ने १९ अस्ताचल को देखा अर्थात् सूर्य अस्त हुआ तोभी बंदर और २१ राक्षस लड़तेहुए नहीं रुके २३ रात्रि के अंधेरे में भी सेना २२ जुड़ी (लड़ती) रही ॥ १७ ॥ तुमकौन हो? यह सुनकर बंदर कहते हैं कि हम इधर हैं और उधर राक्षस अपने स्वामी की जय बोलते हैं, उस रात्रि के अँधेरे में वाणी पहचानकर २४ नेत्रों के होतेहुए भी अन्धे होकर लड़ने लगे ॥१८॥

तहँ कुपित मुक्कि रघुवर छ्हतीर, हतमर्म टरे खट६खल गहीर ॥
सारण१रु महोदर२यज्ञसत्रु३जिम बज्रदंष्ट्र४सुक५भिन्नजत्रु[1] ॥१९॥
कण्पादे[2] महापार्श्व६हु कराल, इत्यादि भजाये प्रभु उताल ॥
बहुरिहु इत अंगद मारि बान, इंद्रजित कियउ घायल अमान ।२०।
संहारि तास बाजी[3]४रु सूत[4]१, पुनि आतुर[5] किए दससीसपूत ॥
रथ छोरि इंद्रजित तब दुरूह[6], है पिहित[7] रचिय माया समह ॥ २१ ॥
सुर मुनिन बालिसूनुहिं[8] सिराहि, चंवि[9] सांधु[10] गिरायउ कुसुम[11] चाहि॥
रावनसुत करि तव कूट[12] रारि, सरं[13] नागरूप मुक्कियं[14] सम्हारि ॥ २२ ॥
उन सरन लग्गि रघुवीर अंग, भ्राता उभै२हि किय मर्मभंग[15] ॥
पुनि नागसरन तिन बिरचि पीर, बंधि रु भुव डारे दुव२हि बीर।२३।
नाराच१अर्द्धनाराच२बान, अंजलिक[16]३भल्ल४क्षुर५प्रखरपान[17] ॥
बलि सिंहदंष्ट्र६कति बत्सदंत[18]७,इत्यादि बिसिख[19] दै पुनि अनंत२४
रघुवर दुव२बेधे संतत[20] रंग, अंगुल रह्यो न छतहीन[21] अंग ॥
मन द्रुहिनदत्त[22] वर कानि मानि,उभय२हि अचेत हुव मोह[23] आनि२५
स्वामिन[24] लखि सोवत बीर सैन,इत सबन बढ्यो तिहिं निसं[25] अचैन
इतरहुं[26] कपि रावनपुत्र एंक[27], वेधत हुव मायारन विवेक ॥ २६ ॥

१कांख और कंधे की संधि (हसली की हड्डी) टूटीहुई है जिसकी २राक्षस ३ घोड़े और ४ सारथि को मारकर इन्द्राजित को ५ व्याकुल किया ६ तर्कना में नहीं आवे ऐसा ७ गुप्त होकर ॥२१॥८ अंगद की प्रशंसा करके १० बहुत श्रेष्ठ बहुत श्रेष्ठ९कहकर११पुष्पों की वर्षा की१२मायायुद्ध करके१३सर्प बाण १४छोडे१५दोनों भाइयों के मर्मस्थल छेद डाले और उन नागबाणों ने उनके पीड़ा करके नागपाश में बांधकर भूमि पर गिरादिये१६अंजलि के सदृश१७ तीखी पांणवाले, कितने ही सिंह की डाढ के जैसे और कितने ही १८बचों के दन्तों के समान १९ बाण फिर अनेक दिये ॥ २४ ॥ युद्धभूमि में रामचन्द्र और लक्ष्मण दोनों रघुवंशियों को २० निरन्तर वेधे जिनका शरीर विना २१ घाव एक अंगुल भी नहीं रहा. अपने मन में २२ ब्रह्मा के दियेहुए वर की कान मानकर दोनों २३ मूर्छा लेकर अचेत होगये ॥ २५ ॥ २४ अपने स्वामियों (मालिकों) को वीरशय्या में सोते देखकर उस २५ रात्रि में इधर सब के अचैन बढा २६ दूसरे बंदरों को भी२७अकेले रावण के पुत्र ने मारा

नव९बानन बेध्यो नील१नाम, त्रय३त्रय३करि मैंद२रु द्विविद३ताम[2]
दुव २ दुव२गवाक्ष ४ अरु सरभ ५ देह,
सर दस१० हनि मारुति[3] ६ कियउ सेह ॥ २७ ॥
अंगद७मर्कटपति[4]८जांबवान९, बहु दुष्ट दये इनकौं हु बान ॥
निज बल इम गज्जि रु मेघनाद, प्रबिस्यो पुर दुद्धर्र[5] लहि प्रसाद[6]।२८।
पहुँच्यो रावन ढिग जोरि पाँनि, अक्खिय स्वकीय जय कहिय आनि
सुत[9] सूक्ति सुनत रावन स्वभाय, उछर्‌यो तजि आसन मुद अघाय।२९।
सिर सुंघि लाय हिय कहि सुपुत्त, जान्यौं खल अप्पहिं बिजय पुत्त
बंधे रु गिरे रघुबंस बीर, इत लखि अचेत हुव कपि अधीर॥३०॥
सुग्रीव आदि लहि हृदय साल, हतआस लगे रोवन बिहाल ॥
तँहँ आय बिभीखन कहिय तत्व[10], दृग[11]सलिल रुक्कि छोरहु दरत्व[12]।३१।
मन्नहु अजेय रघुबंस[13]मोर, जिनपैं न बिचारहु मृत्यु जोर ॥
कपिराज[14] बदन हिमजल पखारि, इम कैकसेय[15] दिय सुच[16] उतारि३२
आनत उत दससिर स्वीय[17] जीत, भो पुत्रबचन सुनतहि अभीत ॥
सीता रखवारी जे समस्त, ते रात्रिचरिय[18] बुल्लिय[19] अत्रस्त ॥ ३३ ॥
अक्खिय तिनसौं पुष्पक[21] चढाय, सीताहि दिखावहु सत्रु[22] जाय ॥
सानुज[23] लखि रामहिं मूर्त्तिसेस[24], बलि[25] सोहि मोहि भजिहै बिसेस३४

युद्ध के ज्ञान से वेध्रे ॥ २६ ॥ २ तहां ३ हनुमान का शरीर सेह (सहेली) जंतुविशेष के समान करदिया ॥ २७ ॥ ४ सुग्रीव ५ दुर्द्धर्ष (किसीकी धर्षणा में नहीं आवे ऐसा) होकर ६ प्रसन्नता लेकर पुर में घुसा ॥ २८ ॥ ७ हाथ जोड़कर ८ शत्रु का नाश और अपनी जय कही ९ पुत्र का कहना सुनकर ॥ २९ ॥ ३० ॥ १० यथार्थ वार्ता कही कि हे बंदरो ११ नेत्रों का जल (आंसू) रोककर १२ भयपन (कायरता) छोड़ो ॥ ३१ ॥ १३ रघुवंशियों के मुकुट (रामचन्द्र) को १४ सुग्रीव के मुख को ठंढे जल से धोकर इसप्रकार १५ कैकसी के पुत्र (विभीषण) ने १६ शोक उतार दिया ॥ ३२ ॥ १७ अपनी जीत २० निर्भय होकर सीता की रक्षा पर जिन १८ राक्षसियों का रक्खी थी तिनको १९ बुलाई ॥ ३३ ॥ उसने कहा कि सीता को २१ पुष्पक विमान पर चढ़ाकर, सीता को लेजाकर २२ हमारे शत्रु दिखाओ २३ अपने भाई सहित रामचन्द्र को २४ मूर्त्ति ही है बाकी जिनकी (मुर्दे) ऐसे देखकर २५ फिर

त्रिजटादि सुनत पुष्पक बिमान, द्रुत[1] लाय चढाई भय निदान ॥
रनभुम्मि लखे तिहि जाय राम, लागि धूरि गिरे सानुज ललाम३५
बिलपन[2] लगी सु लखतहि बिहाल, प्रभनाथ त्राहि हाहा कृपाल॥
हा दिष्ट[3] दीन मैं सरन होहु, सुभ मुनिन[4] बैन हुव असुभ सोहु।३६।
सामुद्रिक[5]लच्छन सुभ जितेक, मम अंग कहे बिप्रन तितेक ॥
ससुता[6] रु सत्रिपत्नी[7] हु मोहि, बरनी वृथा[8]हि आग्रह अरोहि ।३७।
इतिमुख[9] त्रिकालदरसिन[10] निदेस, सब मोघ[11] होत प्रभु कीर्तिसेस[12] ॥
बिलपत इम जानकि पारबस्य[13], लगि कन्न[14] कह्यो त्रिजटा रहस्य[15] ३८
रोवहु जिन जानकि जियत राम, न कहौं अलीक[16] मैं कछुहु काम॥
होते जो कुणपहि[17] उभय[18]इद्ध, पुष्पक न तोहि धरतो प्रसिद्ध।३९।
भल्लुक कपि बदनहु भ्राजमान[19], यातैंहु एह नासुभनिदान[20] ॥
इम कहि दिखाय रन बहुरि आनि, मेल्ही असोक बन हुकम मानि४०
इत राम कछुक बेला[21] बिताय, सरबद्धहि जागे संगराय[22] ॥
सौमित्रि[23] ओर लखि रुदन सत्थ, सर्बजनक[24] लगे बिलपन समत्थ४१
हाहा यह लक्खन कौन हाल, उठहु प्रिय भाई रन अचाल[25] ॥

मुझे भजेगी ॥ ३४ ॥ १ शीघ्र ॥ ३५ ॥२ देखते ही विहाल होकर विलाप करनेलगी कि ३ हे भाग्य! तू ही मुझे शरण देनेवाला हो ४ मुनियों के शुभ वचन थे सो भी अशुभ होगये ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणों ने मेरे शरीर में ५ सामुद्रिकशास्त्र के शुभलक्षण कहे थे कि तू ६ पुत्रवती होवेगी और ७ यज्ञ करनेवाले की स्त्री होवेगी सो अभी रामचंद्र ने यज्ञ तो किया ही नहीं और मरगये इससे उनने आग्रह करके ८ झूठ कहा था ॥ ३७ ॥ ९ इत्यादि १० तीनों समय को जाननेवाले मुनियों की आज्ञा रामचंद्र के १२ कीर्तिशेष (कीर्ति ही है बाकी जिनकी अर्थात् मृतक) होने से सब ११ झूठ होगई १३ पराये वश में हुई जानकी इसप्रकार विलाप करनेलगी तब १४ कान के लगकर त्रिजटा ने १५ गुप्त वार्ता कही ॥ ३८ ॥ १६ मिथ्या १७ विना प्राण (मुर्दे) होते तो यह १८ निर्मल पुष्पक विमान तुझको धारण नहीं करता ॥ ३९ ॥ रीछ और बंदरों के मुख भी १९ शोभायमान हैं यह भी अशुभ का २० कारण नहीं है ॥ ४० ॥ २१ कुछ समय विताकर २२ संग्राम स्थल में बाणों से बंधेहुए ही जगे और २३ लक्ष्मण की ओर देखकर २४ सब संसार के पिता (रामचन्द्र) विलाप करनेलगे॥४१॥२५ युद्ध में चलायमान नहीं होनेवाले

सीता सम पुनि मिलि सकत नारि, तोसम न बच्छ भ्राता जितारि ४२
किय मोघ विभीखन कौणपेस, बलि गेह न जैहौं अब कुबेस॥
सुग्रीव आदि गृह जाहु सर्व, सब मैं न सक्क यह रन अखर्व ।४३।
यह सुनत लगे बिलपन असेस, सुग्रीव स्वसुर सन कहिय एस॥
धरि अंस राम लक्खन धरेन, किष्किंधा जावहु तुम सुसेन ।४४।
मैं हनि दससीसहिं कुल समेत, ऐहौं लहि सीता जय उपेत ॥
बुल्ल्यो सुसेन छीरोदमाँहिं, औषध संजीवन विविध आँहिं ।४५।
प्रभु तिन्ह मंगावहु कपि पठाय, गिरि द्रोन१ चंद्र२ दिस सुधि लगाय॥
इहिं बीच अचानक गरजि अभ्र, अतिवात मचिग तडिता अदभ्र४६
द्वीपन तरु कढि कढि बेग दोर, सद मूल लगे उड्डन सजोर ॥
हे नाग तहाँ जे रहनहार, भजि सिंधु दुरे लहि त्रास भार ॥४७॥
जिहिं समय अचानक बैनतेय, आयउ सवेग रनभुव अजेय ॥
बिक्खत तिहिं भजि भजि नागबान, सब छन्न दुरे जित तित सयान४८
हुव सानुज प्रभु सरबंध हीन, पहुँच्यो खगेस तिहिं खिन प्रवीन ॥
इनको किय सपरस गरुड आय, निज कर मुख पोंछे रज नठाय४९
दोउन२के खगपति छुवत देह, छतहीन भये दृढबल२अछेह ॥

२ हे वत्स ३ शत्रुओं को जीतनेवाला तेरे जैसा भाई नहीं मिलसका ॥ ४२ ॥ ५ विभीषण को राक्षसों का राजा किया था सो ४ मिथ्या हुआ ६ इस बड़े रण के जीतने को मैं समर्थ नहीं हूं ॥ ४३ ॥ ७ सब ८ सुग्रीव ने अपने ससुर से कहा कि १० भूमिपति राम लक्ष्मण को अपने ९ कंधे पर धर कर हे सुसेण किष्किंधा जाओ ॥ ४४ ॥ ११ विजय सहित १२ क्षीरसागर में १३ अनेक प्रकार की संजीवन औषधियां हैं ॥ ४५ ॥ १४ खबर लगाकर १५ मेघ की गर्जना होकर १६ अत्यन्त पवन चलकर १८ अत्यन्त १७ बिजुली चमकने लगी ॥ ४६ ॥ वहांके रहनेवाले सर्प १९ वे भागकर समुद्र में छिपगये ॥ ४७ ॥ २० गरुड़ आया २१ गरुड़ को देखते ही रामचन्द्र और लक्ष्मण को बांधेहुए २२ सर्पबाण थे वे भागकर छिपगये ॥४८॥ भाई के सहित रामचन्द्र २३ बाणों के बंधन से छूट गये उस समय प्रवीण २४ गरुड़ पहुंचा और दोनों भाइयों के मुख की धूलि अपने हाथ से २५ मिटाकर स्पर्श किया ॥ ४९ ॥ २६ घाव रहित होगये

स्मृति१ बुद्धि२ ओज३ उच्छाह४ सत्य, सब द्विगुनै यहायें प्रभु समर्थ५०

गरुड़हु उठाय दोउन गँभीर, बन्धन मिल्यो तुहि पिय लाय बीर ॥
श्रीराम कह्यो तुनरे प्रसाद, मिटिगो दुहुन पीड़ा प्रमाद ॥५१॥
दसरथ पिता रु अज ताततात, त्यों लखि तुम्हैंहु मम हिय सिरात॥
वपु दिव्यरूप तुम कौन वीर, धारि बिरजस्क आये सधीर ॥ ५२ ॥
बुल्ल्यो यह सुनतहि दुहुन मित्र, मन्नहु तुम मोकहँ परम मित्र ॥
जानलेंगतुम अहिसरँ बद्ध जानि, मैं बनतेयँ यह खेद मानि ।५३।
सुहृदनँ सहाय हित हे सुसंधँ, आयो इहाँ रु तुम किय अबंध ॥
यह बंध छुरावनकाज और, सुर१ असुर२ नाग३ कोउ न सजोर५४
अब सावधान लरिये उचारि, गो मिलि खगेस खल गर्व गारि ॥
दुव२ भ्रात उठे छतहीन देह, आनंदित कपिबल हुव अछेह ॥ ५५ ॥
मिलि बजिगें संख भेरी मृदंग, अखिलेसैं सेन निज दिय उमंग ॥
बिटपिन उपारि कपि१ रिच्छ२ वीर, धाये पुनि गज्जत लरन धीर ।५६।

दोहा

राम प्रदक्खिन करि गरुड, गो अवहितँ करि गेह ॥
भूप सुनहु बसुदेव६८ भो, अहँ पहिले१ रन एह ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने बसुदेव ६८ वेला ६८।१ बिवाहवेलाव-

१पराक्रम, आगे थे जिससे २दुगुने बढाकर रामचन्द्र को ३समर्थ किया ।५०।४तुम्हारी कृपा से पीड़ा के कारण बेहोशी थी सो मिटगई ।५१। पिता दशरथ और ५पिता के पिता (दादा) अज के समान तुमको देखने से हृदय ६ठंडा होता है ७रज रहित (निर्मल)॥५२॥ ८पक्षियों की रक्षा करनेवाला (गरुड़) दोनों से बोला ९दोनों को १० नागपाश में बंधेहुए जानकर ११ मुझ गरुड़ ने यह दुःख मानकर ।५३। १२ मित्रों की सहाय करने को १३ हे सत्य प्रतिज्ञावाले ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ १४ बजे १५ सबके स्वामी (रामचन्द्र) ने अपनी सेना को १६ वृक्षों को ॥ ५६ ॥ १७ सावधान करके, अयोध्या के राजा का पुरोहित वसुदेव [illegible] कहता है कि इसप्रकार १८ प्रथम दिन का युद्ध हुआ ॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी [illegible] ए वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में [illegible]

शानविषयवृध्नवंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्र त्रिकुक्षि ७ कुलकलशश्रीमैथिलीमहिलचरित्रेप्रथम१दिनरणारम्भ प्रत्येकनियुद्धरचनपुण्यजनपराभवनशक्रजिन्नागशरसानुजरघुराज बंधनवैदेहीविलपनगरुत्मदागमननागशरविद्रवणानिःशल्यराघवर पुनःसज्जीभवनं पञ्चाशत्तमो ५० मयूखः ॥ ५० ॥

आदितो द्वानवतितमः ॥ ९२ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(सचरणगद्यम्)

कपिनके कटकमैं मंगल महानाद भयो सुनि दसग्रीवनैं दूत भेजि निबंध सज्जीभूत सानुज रघुराजकी खबरि मँगाय आपनैं अनीकको ईस करि जातुधान धूम्राक्ष लरिबेकौं पठायो ॥

परस्पर कपि १ रक्खस २ तरु १ त्रिसूल२,मुष्टि १ मुद्गर २, प्रतल १ पट्टिस २, गंडसैल १ गदा २, दंत १ दंड २, महीधर १ मुसल२,सिला१सक्ति२,पत्थर१परिघ२प्रहारि महातुमुल मचायो ॥

तहाँ धूम्राक्षनैं अनेक प्रकारके आघात दैकैं प्लवंगनकी पृतनाँ

बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र त्रिकुक्षि कुल के कलश श्रीजानकी है स्त्री जिनकी (जानकी के पति) के चरित्र में प्रथम दिन के रण के आरंभ में प्रत्येक के बाहुयुद्ध रचने में राक्षसों का हारना, इन्द्रजित् का छोटे भाई सहित रामचन्द्र को नागपाश में बांधना, सीता का विलाप करना, गरुड़ का आना, नागपाश का भागना और रामचन्द्र लक्ष्मण का शल्य रहित होकर फिर सज्जीभूत होने का पचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥५०॥ और आदि से बानवे मयूख हुए ॥ ९२ ॥

१बंदरों की सेना में २सेनापति करके ३ राक्षस ४ राक्षस को भेजा जहां परस्पर बंदर तो वृक्षों से और राक्षस त्रिशूल से इसीप्रकार इधर मुष्टि और उधर मुद्गर, इधर से ५ लात और उधर ६ कटारी७,पर्वत से गिरेहुए मोटे पत्थर और गदा, दन्त और दंड ८, पर्वत और मुशल, शिला और शक्ति, सामान्य पत्थर और ९ लोहँगी (लोहा जड़ाहुआ लठ्ठ) चलाकर१०बड़ा भयंकर मचाया. यहां प्रथम गिनायेहुए शस्त्र बंदरों के और पीछे गिनायेहुए राक्षसों के यथाक्रम से जानलेना चाहिये.११प्रहार देकर१२बंदरों की१३सेना को

*कांदिसीक कीनी ॥

ताकौं देखतही बज्रांगनैं[1] एक बडी सिलाकौं[2] उठाय धूम्राक्षके ऊपर चलाय दीनी ॥ १ ॥

आवते उपलेकी दुस्सहता देखि धूम्राक्ष अपनैं स्यंदनतैं[3] कूदिगयो॥

अरु सिंहमुख बाहक बालेयन[4] सहित सचक्र[5] १ कूबर[6] २ ध्वज ३ सरासन[7] ४ रक्खसराजको रथ चूर्ण भयो ॥

तदनंतर[8] बज्रांगनैं हजारन[9] जातुधान अपनैं कोप दीपकके पतंग करे ॥

अरु धूम्राक्षहू सखनके संगँ[10] करिकेही प्लवंगनके[11] प्रान हरे॥२॥

तहाँ हनुमान सिलोच्चयको[12] शृंग लै निसाचरपैं चलायो ताके मस्तकमैं धूम्राक्षनैं समुख जाय गदा पटकी॥

सो प्रहार सिराहिकैं कौणपके[13] कपालमैं सामीरिनैं[14] सिखर की दई ॥

तासौं गतासु[15] हो लंकेसके महाभट धूम्राक्षकी मूर्ति लटकी ॥

ऐसैं चैत कृष्णा द्वितीया२के दिन जुद्धके अंतमैं मारुतिनैं[16] धुम्राक्ष मारयो ॥

तदनंतर तीजै दिन ३ तृतीया ३ के रनके आरंभमैं रावननैं आसुर बज्रदंष्ट प्रचारयो ॥३॥

सो बज्रदंष्ट्र दक्खिनकेद्वार होय अंगदके अनीकके[17] सम्मुह कढ्यो॥

तहाँ बिना मेघही गगनमैं बिजुरीनको व्रात[18] १ ज्वाला वमत[19] फेरवीनंको[20] फेत्कार[21] २ बढ्यो॥

---

*भय से भागनेवाली करी (" कां दिशीको भयद्रुतः " इत्यमरः)
१ हनुमान् ने ॥ १ ॥ २ पत्थर ३ रथ से ४ रथ के जुते हुए गधों सहित ५ पहिये ६ जुआ (जुड़ा) ७ धनुष ८ जिसपीछे ९ हजारों राक्षसों को अपने क्रोध रूपी दीपक में जलाये १० समूह से ११ बंदरों के ॥ २ ॥ १२ पर्वत का शिखर लेकर १३ राक्षस के मस्तक में १४ पवनपुत्र (हनुमान्) ने १५ विना प्राण हुआ १६ हनुमान् ने ॥ १३ ॥ १७ सेना के सामने निकला १८ समूह १९ ज्वाला उगलती हुई २० स्यालनि (व्याघ्रस्यालि) यों का २१ फेत्कार(स्यालनी

ऐसैं अपसकुनको अनादर करि वज्रदंष्ट्र१नैं*बहुल बानर अं-
गद २नैं अनेक**अस्त्रप मारिलये॥
अरु वज्रदंष्ट्रनैं अंगदकै एक सहस्र१००० बान दये ॥ ४ ॥
अंगदनैं एक वृक्ष चलायो ताहूकौं बाननसौं काटि आंसिरनैं
आहवमैं उत्कतभाव धस्यो ॥
तब तारेय३नैं एक १ बडो पर्वत पटक्यो ताकौं निहारि दुष्ट उ-
हाँसौं कूदि बच्यो तथापि वा सैलनैं सचक्र १ कूबर २ तुरंग ३
सूत ४ स्यंदन १ चूर्ण कस्यो ॥
तदनंतर और गिरिशृंग उठाय बालिपुत्रनैं मनुजाद४के मस्तक
मैं डारयो ॥
तासौं गतसत्व५ रुधिरोद्गारी६ होय वज्रदंष्ट्रनैं महामोह७ धारयो॥५॥
मुहूर्त८ एक १ के अंतर चेतना पाय क्रव्याद९नैं अंगदके भुजां
तर१०मैं गदा मारी ॥
तथापि११ तारेय न डिग्यो अरु दोउन २ मल्लजुद्ध करि मुष्टिकी
मार प्रसारी ॥
पीछैं खड्ग १ चर्म१२ २ लैकैं दोउन २ महाविचित्र मार्गनके प-
लटा करि अपनौं पटैतपनौं दिखायो॥
अरु दोउन२नैं ही मंडलाग्रन१३के प्रहारनसौं अछक छाकि अचे-
त होय जानुनसौं१४ जकि१५ जकि पृथ्वीतल१६ पायो ॥ ६ ॥
निमेष१७ एक १ के अनंतर१८ अंगदनैं मूर्छा ताजि सिलासितै१९ ख-
ड्गसौं वज्रदंष्ट्रको मस्तक काटिलयो ॥

की बोली का अनुकरण है) बड़ा * बहुत ** राक्षस ॥ ४ ॥ १ राक्ष-
स ने २ तीव्रभाव को धारण किया ३ तारा के पुत्र (अंगद) ने ४ मनुष्यों
के खानेवाले (राक्षस) मस्तक पर ५ पराक्रम रहित ६ रुधिर उगलनेवाला
होकर ७ बड़ी मूर्छा पाई ॥ ५ ॥ ८ दो घड़ी पीछे ९ राक्षस ने १० हृदय में
११ तोभी अंगद नहीं डिगा १२ ढाल १३ खड्गों के १४ घुटनों के बल १५ गि-
र गिरके १६ भूमि पर गिरा ॥ ६ ॥ १७ क्षणभर के १८ पीछे १९ शिला पर
तीखे कियेहुए खड्ग से

ऐसी रीति*मधु मेचक तृतीयाके ३ दिन कपि १ कौणप २ नकै तीजो ३ जुद्ध भयो ॥

चतुर्थी ४ के दिन लंकेसनैं क्रव्याद अकंपनकों बलमैं बलिष्ट करि संग्रामका प्रेर्यो ॥

अरु कपि१कौणप२नकै जुद्ध होत रजके बितानैं[2]नैं आच्छादित होत सर्बत्र अंधकारको छबीनौं[3] फेर्यो ॥ ७ ॥

जा तिमिर[4]सौं परतंत्र होय अपनैं परायेको बिबेक न धारत भये ॥

अरु दुहुँ२ओरके नीर[5]कीस१कौणप२नकौं मिश्रित[6]ही मारतभये॥

तहाँ मैंद१नल२कुमुद३इन तीन३नकै त्रान[7] करतहू अकंपननैं बलिमुख[8] बरूथिनी[9]कौं बिकीर्णा[10] करी ॥

सो व्यवस्था-देखि बज्रांगनैं[11] आय सजातीयन[12]के सहायको धिषणा[13] करी ॥ ८ ॥

आंजनेय[14] एक१अद्रिकूट[15]कौं उठाय अकंपनपैं प्रहार्यो ॥

ताकौं आवतही निसाचरनैं अर्द्धचंद्र बाननसौं टूकटूक करि डार्यो॥

तदनंतर[16] रुद्रावतार[17]नैं एक१अश्वकर्ण[18] तरुकौं उपारि हजार जातुधान[19] बिपोथित[20] करे ॥

अरु इतकौं अकंपननैं सस्त्रनके संपात[21]करि सहस्रन साखामृगगनके स्वास हरे ॥ ९ ॥

---

*चैत्र वदि तीज के दिन बंदर और राक्षसों के तीजा युद्ध हुआ १ राक्षसों के २ धूलि के विशेष फैलाव अथवा डेरे ने सबको ढककर अन्धकार रूपी ३ छबीना (रात्रि के समय सेना की रक्षा करने के अर्थ चारों ओर सवारों का घेरा लगायाजाता है उसको छबीना कहते हैं)॥७॥ ४ उस अन्धकार से पराधीन होकर ५ बंदरों और राक्षसों को ६सामिल (मिलेहुए) ही मारते रहे७ये तीनों रक्षा करते थे तोभी ८ बंदरों की ९ सेना को १० बिखेरदी ११ हनुमान ने १२अपने जातिवालों की सहाय के लिये १३ बुद्धि करी ॥ ८ ॥ १४ हनुमान् ने १५ पर्वत के शिखर को १६ जिसपीछे १७ महादेव के अवतार (हनुमान्) ने १८ सालवृक्ष को उपाड़कर १९ हजार राक्षसों को २० चोट से नीचे गिरादिये २१ शस्त्रों के प्रहार

तहाँ मारुतिनैं बहोरि एक दीर्घतरुकौं उपरि मस्तकपैं प्रहारि अकंपनको प्रान लयो ॥

सेस[1] क्रव्याद नगरमैं भजि गये ऐसैं उभय[2]अनीकनकै चतुर्थी४के दिन चोथो४संग्राम समाप्त भयो ॥

पंचमी५के दिन पहिलैं तो लंकेसनैं अपनैं पुरके प्राकार[3] अट्टनके सूरवीरनके गुल्म[4] सम्हारे[5] ॥

पीछैं समरमैं सचिव प्रहस्तकौं सज्ज होयबेको सासन दयो तहाँ प्रहस्तनैंहू सीताहरणके पूर्वमंत्र[6]मैं निषेध कहे हे ते रक्षोराजकौं[7] स्मृतिमैं डारे ॥ १० ॥

तदनंतर अपनैं सचिव जे कुंभहनु१सुसुन्नत२नरांतक३महानाद४तिन सहित सज्ज सेना लैकै प्रहस्त रक्षोराजकी प्रधान जंगकी उमंगमैं नगरसौं निकसतभयो ॥

तहाँ पलाद[8]सत्व याके रथकौं अपसव्य मंडलमैं लेतभये१, सिवा[9]गनके मुखसौं ज्वाला सहित सब्द कढे२, अंतरीक्ष[10]सौं उल्का[11] गिरी३, मेघहू रथपैं रुधिर बरस्यो४, गिद्धन केतन[12]के अग्रपैं निवास कीनौं५ रु याके बाजी[13] ठोकर खाय परे६ सारथीके करतैं प्रतोद[14] गिरगयो७ ॥

इत्यादि अपसौंनननकौं अनादर करि प्रहस्तनैं रघुराज[15]के सेनाधीस नीलकी अनीसौं अनी मिलाई ॥

अरु नीलनैं निमीलित[16]नेत्र होय नीठि नीठि सही ऐसी

---

१ बाकी के राक्षस २ दोनों सेना के ३ शहर कोट के ऊपर के ४ रक्षार्थ (रिजर्व) सेना को सम्हाल कर ५ युद्ध में अपने मंत्री प्रहस्त को सीता को हरने से पहिले ६ सलाह हुई थी उसमें रावण को मना किया था कि हरण करना अच्छा नहीं है वह ७ रावण को याद दिलाया ॥ १० ॥ ८ मांस खानेवाले (गिद्ध आदि) जीवों ने दाहिने चक्कर में लिया ९ स्यालनी के मुख से १० आकाश से ११ अंगारे गिरे १२ ध्वजा के अग्रभाग पर १३ घोड़े १४ चाबुक १५ अपशकुनों को लोपकर रामचन्द्र के सेनापति नील की सेना के अग्रभाग से अपनी सेना का अग्रभाग मिलाया १६ नेत्र बन्ध करके

बिसिखनकी[1] वृष्टि चलाई ॥ ११ ॥

कितेक काल ऐसैं सहि नीलनैं एक१सालवृक्षकौं[2] उपारि प्रहस्तके बाजी मारि धनुषहू तोरि डार्‌यो ॥

तहाँ लंकेसके प्रधाननैं मुसल गहि नीलके ललाटमैं प्रहार्‌यो॥

तहाँ नीलनैं प्रहस्तके उरमैं एक१पादपको प्रहार[3] करि अनंतर रही एक१महासिला मस्तक पर भारी ॥

तासौं प्रहस्तनैं प्रान छोरि पंचम५युद्धमैं पंचमी५के दिन सूरसज्जा सोय वीरनिद्रा धारी ॥ १२ ॥

प्रहस्त को निपात[4] सुनतही कोपाक्रांत[5] होय छट्ठि ६ के दिन स्वयं लंकेसही लरिबेकौं चलायो ॥

तहाँ आगैंसौं अपूर्व अनीकको[6] संघट्ट[7] देखि रघुबरकैहू अद्भुत उत्साह आयो॥

अनेक सूरबीर क्रव्यादनकौं[8] उद्धत देखि बिभीखनसौं पूछत भये॥

अरु यानैं प्रत्येकं[10] पहिचानि पहिचानि प्रश्न आदेशके[11] उचित उत्तर दये ॥ १३ ॥

जो यह अपनैं भारसौं बाहन मातंगको मस्तक नमावत[12] अमर्षमैं उफनावत[13] आवैं सु तो दूसरो २ अकंपन १ जानौं ॥

अरु यह सिंहध्वजरथारूढ[14] धनुषकौं धुनावत रक्षोराजको[15] पट्टप पुत्र मेघनाद २ मानौं ॥१४ ॥

इतकौं यह रथारूढ कोदंडकौंटंकारत[16] अतिरथवीरअतिकाय३आयो अरु इतकौं घनघंटानादितैं[17] गजारूढ गर्जना करत बालार्क[18]

---

१ बाणों की वृष्टि २वृक्ष का प्रहार करके ३उसके पीछे ही ४प्रहस्त का पड़ना सुन कर ५क्रोप में व्याप्त होकर ६सेना का ७समूह ८राक्षसों को ९धीठ देख कर १०एक एक को ११पूछने की आज्ञा के उचित १२ हाथी का मस्तक नमाता हुआ १३ क्रोध में उफनता हुआ १४ सिंह के चिन्हवाली ध्वजा के रथ में चढाहुआ १५राक्षसों के राजा (रावण) का पाटवीं पुत्र ॥१४॥१६ धनुष को टंकारता है सो १७ मेघ के समान घण्टा का नाद करता हुआ हाथी पर सवार १८प्रभात के सूर्य.

प्रतिम नेत्रनसौं[1] कपिनकौं डरावैं सु महोदर ४ चलायो ॥

इतकौं भर्म[2]भांडभूषित संध्याकालके मेघ सहित महीधरके[3] समान अश्वपैं आरूढ मरीचिमाली[4] प्रासकौं उबाय आवैं सो वज्र बेग पिसाच५जानिये ॥

अरु यह बडे ससि[5]प्रभ बलीबर्द[6]पैं आरूढ बीजुरी निभ[7] त्रिसूल कौं भ्रमावैं ताकौं द्वितीय २ त्रिसिरा ६ प्रमानिये ॥ १५ ॥

इतकौं यह पन्नग[8]ध्वज स्यंदन[9] समारूढ बडे आयंत[10] बच्छस्थल[11] करि बिराजमान कुंभ ७ नाम क्रव्याद[12] चापके बिस्फार[13]सौं वाहिनी[14]कौं बहिरा करैं ॥

अरु या तरफ हेमहीरमंडित[15] परिघकौं पकरि आयो सो घोरकर्मा निसाचर निकुंभ८नाम धरैं ॥

अरु इत देखिये चाप१खड्ग२बाण३बिराजमान वडी पताकाके रथमैं चढ्यो नगशृंग[16] जुद्ध निपुन नरांतक९अपनी पृतना[17]के प्रान पियैं जात ॥

इतकौं व्याघ्र १ करभ[18] २ गज ३ सिंह ४ मुख[19] भूतगन उपेत[20] देवदर्पदमन[21] देवांतक १० दिखात॥१६॥

सबनके बीच यह सारदी राका[22]के ससधर[23]समान सितछत्र[24] सोहैं ताके तरैं महाकिरीट १ कुंडल २ बिराजमान लोकपालनके दर्पको दारक[25] लंकेश्वर११आपही चलाय आयो ॥

ऐसैं बिभीखननैं प्रत्येक प्रश्नको उत्तर जगदीसकौं सुनायो॥

---

१ सहस्र नेत्रों से २ सेना के कलशों से शोभित ३ पर्वत के समान ४ सूर्य समान भाले को ५ चंद्रमा की क्रान्ति के समान ६ बैलपर चढाहुआ ७ बिजुली सदृश ॥ १५ ॥ ८सर्प के चिन्हवाली ध्वजा के ९ रथ पर चढाहुआ१०चौड़े११हृदय करके शोभायमान१२राक्षस के १३ शब्द ("विस्फारो धनुषस्वानो" इत्यमरः)१४सेना को१५सोने में हीरों से जड़ीहुई १६पर्वत के शिखर समान १७ सेना के १८ ऊंट १९आदि २० सहित २१ देवताओं के घमंड को मिटानेवाला ॥ १६ ॥ २२ शरद पूर्णिमा के २३ चन्द्रमा समान २४ श्वेतछत्र के नीचे २५ विदारण करनेवाला.

तदनंतर दसग्रीवनैं सबही निसाचर संग आये देखि पुरीकौं सू-नी जानि कितनेक लंकाकी रछाकौं पीछे पठाये ॥
अरु आपनैं रंग[2]मैं रुपि राघवके चक्र[3]पैं कराल कलंब[4] चलाये।१७।
तहाँ सुग्रीवनैं महामहीधर[5] उपारि रछोराज[6]पैं फैंक्यो ॥
ताकौं कंकपत्र[7]नसौं काटि असुरप[8]अधीसहू साखामृगेस[9]पैं बि-सेस चैंक्यो[10] ॥

कोपके साथही महापन्नग प्रतिम[11] फुलिंग[12] फुल्लयमान पावक[13] प्रकास तीर आकर्ण[14] ऐंचिकैं दसग्रीवनैं सुग्रीवके दयो ॥
तासौं कपिराज क्रंदन[15] करत पृथ्वीतलपैं परि अचेत भयो।१८।
तब गय१गवाक्ष२ऋषभ३सुदंष्ट्र४ज्योतिर्मुख ५नल६इत्यादिक कपिन पर्वत उठाय उठाय चलाये ॥
तेहू समस्त दसग्रीवनैं चित्र[16]पुंखनसौं चूर्ण करि सबनकै कराल कलंब[17] लगाये॥
रावनके बाननसैं बिहाल होय भीरु[18] ज्यौं भजिकैं संकंप[19] साखामृग[20] रामचंद्रके सरन गये॥
तिनकौं देखतही महाधानुष्क[21] रघुराजहू चापकौं टंकारि लंकेसपैं चलावत भये ॥ १९ ॥
तिनकौं अटकि अनुसासन[22] लैकैं सौमित्रि[23] अग्रेसर होय आये॥
अरु उततैंहु दसग्रीवनैं इनपैं अनंत चित्रपुंख चलाये ॥
तिन तीरनकौं भेदि मारुति[24]नैं दसमुखके रथ ढिग जाय दक्खिन

---

१ जिस पीछे २रावण युद्ध भूमि में रुपकर ३रामचन्द्र की सेना पर भयंकर ४वाण चलाये॥१७ ५बड़ा पर्वत ६रावण पर ७काक के पंख लगेहुए बाणों से ८ राक्षसराज ९ वानरों के राजा पर बहुत १० क्रोध किया ११ बड़े सर्प सदृश १२ अग्निकण उड़तेहुए १३अग्नि के प्रकाश समान बाण १४ कान तक खींचकर १५कूक (रुदन) करताहुआ ॥ १८ ॥१६चित्र विचित्र पांखोंवाले बाणों से १७भयंकर बाण लगाये १८कायर के समान भागकर १९ धूजतेहुए २० वानर २१धनुर्विद्या के जाननेवाले रामचन्द्र भी ॥ १९ ॥ उनको रोककर २२ रामचन्द्र की आज्ञा लेकर २३ लक्ष्मण आगे बढ़ आये २४ हनुमान् ने

बाहु उठाय कह्यो ॥

तैं दुष्ट देव[१]दानव[२]गंधर्व[३]नाग[४]यक्ष[५]किन्नर[६]सिद्ध[७]चारण[८]विद्याधर[९]डराये पैं आज बानरकेबस परि मेरे भुजादंडतैं मिच्चु[१]लह्यो ॥

सो सुनि दसग्रीव कहि तू निस्संक प्रहार करि कीर्ति लैचुकि तदनंतर[२] तोहि मारौं ॥

तासौं[३] आंजनेय कही तेरे तनूज[४] अक्षके समान तेरोहू जीवित भार उतारौं ॥

यहै सुनतही दसग्रीवनैं मारुतिके उरमैं प्रतल[५]को प्रहार कीनौं ॥

तासौं मुहूर्त[६] मात्र स्थिर होय बज्रांगनैंहू[७] आसिरके[८] उरमैं प्रतलको ही आघात दीनौं ॥२१॥

तासौं घुम्मिकैं बहोरि दृढ होय लंकेसनैं मारुतिसौं[९] कह्यो ॥

वाहरे! बानर तेरे विक्रमकौं तैं अच्छो[१०] आघात डारयो ॥

मारुति कही धिक्कार मेरे पराक्रमकौं जासौं तैं दुष्ट सीघ्र ही गाढ सम्हास्यो ॥

यह सुनतही कोपाक्रांत[११] होय दसमुखनैं आंजनेयके[१२] उरमैं दक्खिन करकी मुष्टि मारी ॥

तासौं वज्रांगकौं बिह्वल देखि रक्षोराजनैं अग्गैं चलाय प्रभुके पृतनापति[१३] नीलसौं लरिवेकी उमंग धारी ॥२२॥

नीलनैं पर्वत चलायो ताकौं सप्त७बानन करि काटि दयो ॥

तापीछैं अश्वकर्ण[१]साल[२]धव[३]आम्र ४ इत्यादिक प्रचंड पाँदप[१४] चलाये तिनके समूहकौं चूर्ण करत भयो ॥

तब नीलहु अल्पकाय[१५] करि रावनके ध्वजाग्रपैं[१६] उडिपस्यो ॥

१मृत्यु ॥ २० ॥ २ जिसपीछे ३ हनुमान् ने रावण से कहा ४ पुत्र ५ लात मारी ६ दो घड़ी तक खड़ा रहकर ७ हनुमान् ने भी ८ राक्षस के ॥ २१ ॥ ९ हनुमान् से कहा १० अच्छा प्रहार किया ११ क्रोध में व्याप्त होके १२ हनुमान् के उर में १३ रामचन्द्र के सेनापति नील से ॥ २२ ॥ वृक्षविशेष १४ भयंकर वृक्ष १५ छोटा शरीर करके १६ ध्वजा के अग्रभाग पर

तहाँ छुभित होय दसमुखनैं आग्नेय अस्त्रको संधान करि नीलकै प्रज्वलित[1] पृसत्कको प्रहार कर्यो ॥२३॥

तासौं अचेत होय नील पृथ्वीतलमैं जानुनें[2] करि जक्यो[3] परंतु अग्निको अवतार हो यातैं आग्नेयसौं असु न गये[4] ॥

याकौं अचेत देखि लंकेस सौमित्रिपैं[5] चलायो ताकै सेसावतारनैं हु प्रचंड प्रदर[6] दये ॥

लंकेसनैं सप्त७सायँक[7] चलाये तेहू लक्खननैं क्रीडा करि काटि डारे[8]॥

औरहू अपनैं अनेक बाननकौं व्यर्थ गये देखि लंकेसनैं हू लक्खनके अनेक बिसिख बिदारे ॥ २४ ॥

तदनंतर दसग्रीवनैं[9] ब्रह्माके दये बानकौं चलाय लक्खनके ललाट देसमैं प्रहार्यो ॥

तासौं बिकल होय कछुक कालमैं चेतना पाय सेसावतारनैं[10] क्रव्यादराजको[11] कोदंड[12] काटि डार्यो ॥

तदनंतरही[13] सौमित्रिनैं[14] असिरराजके[15] उरमैं तीन३तीर लगाय मूर्छा दई

ताहूसौं दुष्टनैं बिह्वल होय कछुकालमैं चेतना लई ॥ २५ ॥

प्रबोधके[16] पावतही स्वयंभूकी[17] दई सक्तिकौं उठाय लंकेसनैं लक्खन[18] बिलक्खनमैं[19] लक्खनपैं[20] डारी ॥

ताहि भेदिबेकौं सौमित्रिनैं बहुत बान दये तथापि भुजांतरकौं[21] भेदि बिजुरीसी पार पधारी ॥

तासौं अचेत होय पृथ्वीपैं परतही लंकेसनैं आय सौमित्रिकौं[22] दोहू[23] करनसौं पकरि लैजायबेकौं उठाये ॥

---

१ जलतेहुए बाण का प्रहार किया ॥२३॥ २ घुटनों के बल ३ गिरगया ४ अग्नि अस्त्र से प्राण नहीं गये ५ लक्ष्मण पर चला ६ भयंकर तीर लगाये ७ तीर (बाण) चलाये ८ बाण काटे ॥२४॥ जिसपीछे ९ रावण ने १० लक्ष्मण ने ११ रावण का १२ धनुष १३ जिसपीछे ही १४ लक्ष्मण ने १५ रावण के उर में ॥२५॥ १६ चेत होते ही १७ ब्रह्मा की दीहुई १८ लक्खों के १९ देखतेहुए २० लक्ष्मण पर डाली जिसको काटने के लिये लक्ष्मण ने २१ हृदय (छाती) को फोड़ कर बिजुली के समान पार निकल गई २२ लक्ष्मण को २३ दोनों हाथों से

परंतु जासौं कैलास उठ्यो ताहूसौं न उठे तब दुष्टनैं बाहुनसौं पीडन करि सेसके[1] कलेवरकै अनेक उपमर्द[2] लगाये ॥ २६ ॥

सो देखि बंजूांगनैं[3] आय आसिरराजके उरमैं बज्रको उपमान[4] मुष्टिपात दयो ॥

तासौं अचेत होय जानुंनसौं[5] जंकि[6] दुष्ट मुख१नेत्र२नासा३श्रव- न४नसौं लोहित[7] बमंन[8] करत भयो ॥

ताकौं छोरि हनुमान अचेत[9] लक्खनकौं उठाय रामचंद्रके स- मीप आनैं ॥

अरु रावनकी सक्तिहू सौमित्रिकौं[10] तजि पीछी दुष्टके रथमैं जायरही इतेक अंतर रक्खसराजनैं हू कछु धीर होय कोदंडपैं नि- सित[11] बान तानैं ॥ २७ ॥

कपिनको कटक भज्यो देखि श्रीरामचंद्र लंकेसपैं चलाये ॥

तिनसौं मारुति[12] कही मोपैं समारूढ होय लरिये यह सुनि सो- ही करि रघुराजनैं रावनके समुख जाय बानीप्रतोद[13] लगाये ॥

रे दुष्ट सौमित्रिकी यह दसा करि इंद्र१जम२द्रुंहिन[14]३संकर४अर्क[15] ५अग्नि६के सरन गयैंहू मोसौं बचैगो नहीं ॥

सो सुनि दुष्टनैं मारुतिके बान दये तिनकौं देखि रघुराजनैं कृ- तांत[16]की कांति गही ॥ २८ ॥

तीखे बान दैकैं चक्र[17]१अश्व२केतु[18]३छत्र४असनि[19]५खड्ग६सूल७हय ८सारथि७सहित लंकेसको रथ काटिडारयो ॥

अरु एक१आसुग[20]उल्का[21]को उपमान भूतेस[22]भक्तके भुजांतर[23]मैं मारयो

१लक्ष्मण के शरीर पर २ रद्दे (रगड़े) लगाये ॥ २६ ॥ ३ हनुमान् ने वज्र को जिसकी ४उपमा लगे ऐसी मुक्की लगाई ५ घुटनों के बल ६ गिर- कर ७ रुधिर ८ उगलने लगा ६ अचेत हुए लक्ष्मण को उठाकर १० लक्ष्मण को छोड कर ११तीखे बाण खींचे ॥ २७ ॥ १२ हनुमान् ने कहा कि मुझ पर सवार होकर लड़िये १३ वचन के चाबक लगाये कि अरे दुष्ट लक्ष्मण की यह दशा करके १४ ब्रह्मा १५ सूर्य १६ यमराज की क्रान्ति धारण की ॥२८॥१७ रथ के पहिये१८ध्वजा१९वज्र अथवा अंगारे वर्षाने का अस्त्र२०बाण२१अग्नि के अंगार को जिसकी उपमा लगे ऐसा२२महादेव के भक्त(रावण) के२३हृदयमें

तासौं मूर्छित होय करसौं सस्त्र गिराय दसग्रीव घुम्मिकैं भुम्मिपैं पर्‍यो ॥

तब*अखिलेसनैं एक१ अर्द्धचंद्र चलाय कंटकको किरीटहूटूक टूक करयो ॥

तदनंतर विह्वल बलहीन जानि तासौं रघुनाथ कह्यो रे दुष्ट पुरीमैं जाय श्रमकौं विहाय[1] धीर बीर होय आवहु ज्यौं मेरे बानकौं करुणा अटकि[2] सकैं नहीं ॥

सो सुनि दुष्टनैं हु सिटाय पुरीमैं प्रवेस करि विश्वेसके[3] विक्रमकौं महादुस्सह मानि पहिलैं अनरण्यराय१वेदवती २ उमा३नंदीगन४नलकूबर५बरुनसुता पुंजिकस्थला६के साप भये सुमिरि क्रव्यादनसौं कुंभकर्णके जगावनकी कही॥

जादिन बिभीखन सत्रुके सरन गयो तासौं दूजे२दिन मंत्रके अनंतर कुंभकर्णनैं अपनैं गृह जाय निद्रा धारी ॥

अरु बिभीखन सरन गयो जादिन सहित त्रि३ दिन रघुवरनैं दर्भासन बैठि समुद्रसौं सार्म करिवेकी निहारी ॥३०॥

चौथे ४ दिनसौंही सिंधुकौं सासित करि पंच५दिन पर्यंत सेतु बंधि पंचम५दिनके अंतही सिंधुकौं लंघि पैले तीर मिलान दये॥

तादिनसौं पूर्व[12] कुंभकर्णकौं सोवत दिन अष्ट८गये ॥

नवम९दिन एकाकी[13]१राति रघुवरनैं सुवेल[14]पैं चढि लंका के मर्म[15] निहारे ॥

दसम १० दिन सुवेलसौं उतरि लंकापैं कराल कौसनके[16]

---

*सबके स्वामी (रामचन्द्र) ने १ श्रम को मिटाकर २ मेरे बाणों को दया नहीं रोकने के अर्थात् इस समय बाण चलाते दया आती है ३ संसार के स्वामी (रामचन्द्र) के ४ पराक्रम को, ऊपर जिनके नाम कहे उन्होंने आप दिये थे जिनको ५ दया करके ६ राक्षसों से कहा कि कुंभकर्ण को जगाओ ७ सलाह होने के पीछे ही ७ डाभ के आसन पर बैठकर ८ सन्धि (मिलाप) ॥३०॥ ९ आज्ञा अधीन करके १० समुद्र को लांघ कर ११ मुकाम दिया १२ पहिले १३ एकरात्रि १४ सुवेल नामक पर्वत पर १५ मर्मस्थल (जीव की जगह) १६ बानरों के

आघात डारे ॥३१॥

सो जुद्ध होतहू पूर्व कहे क्रमसों छह६दिन गये ॥

ऐसैं चतुर्दस१४दिनसों सुप्त[1] अनुजकों जगावनकों सप्तमी७के दिन निदेस[2] दये ॥

सो सुनतही हजारन क्रव्याद मद्य१मांस२मय महोपहार[3] लैकैं एक१एक१जोजन लंबायत[4] कुंभकर्णकी गुहाके[5] द्वार गये ॥

अरु ताके स्वासबेगसों विधूत[6] होय बहुत बेरमैं नीठि नीठि प्रविष्ट[7] होत भये ॥३२॥

मद्यके कलस मृग१महिष[8]२बराह[9]३नके समूह आगैं धरि धूपधूपित[10]१चंदनलिप्त[11]२करि एकसंगहि सिंहनाद करि संख१भेरी[12]२पटह[13]३नकौं बजाये तथापि[14] निद्रा न गई ॥

पीछैं सैलशृंग[15]१मुसल२भुसुंडी[16]३गदा४मुद्गर५वृक्ष६मुष्टि७प्रतल[17]८प्रहारे तथापि बिसेसही बढत भई ॥

दसहजार१००००क्रव्यादन[18] इकसंगही हजारनभेरिनपैं आघातडारे॥

ऐसैं आप[19] परबस सुप्तकों उठावनमें अनेक उपाय करि हारे ॥

तबही एकहजार१०००हत्थिनकी घटा याके अंगपैं चढाय कितेकतो याके केस उपारिबे लगे ॥

अरु कितेक याके काननमैं केही जलकलस डारि दंतनसौं दुष्टके मर्मदेस दारिबे[20] लगे ॥

तब गजनके स्पर्श करि कुंभकर्णनैं नेत्र खोलि आने[21] उपहार असन[22] करि जगायबेको हेतु[23] पूछ्यो तब अग्रजके[24] अमात्य[25] यूपाक्ष

१सोतेहुए छोटे भाई को २ आज्ञा दी ३ बड़ी सामग्री ४ लंबा और चौड़ा ५ गुफा ६ कंपित होकर ७ घुसे ॥ ३२ ॥ ८भैंसे ९ सूवर१०धूप देकर११चंदन का लेप करके १२ नौबत १३ढोल बजाये १४ तोभी १५ पर्वत के शिखर १६ अस्त्रविशेष१७लात (चरणाघात) १८ राक्षसों ने१९ आप से परवश होकर सोतेहुए को ॥ ३३ ॥ २० विदारण करने लगे २१ लाई हुई सामग्री को २२ भोजन करके जगाने का२३कारण पूछा २४ बड़े भाई (रावण) के २५ मंत्री

नैं यथातथ्य कह्यो ॥

अरु रावनकों थक्यो जानि रामनैं छोड्यो सुनतही लरिवेकों चलायो तहां महोदरके कहेसों जुद्धकों जैबो तजि द्वैसहस्र२०००मद्य घटपान करि अनेक सत्वनकों आहरि अग्रजकों जाय दरसन लह्यो

वा समय चलते कुंभकर्णकों सब सहरसों ऊपर देखि वानर व्यथित होय होय रघुनाथके सरन गये ॥

अरु आपंहू पर्वतके प्रमान विश्रवाके मध्यमपुत्रकों देखि यह महादीर्घ कौन ऊर्ध्वपाद ऐसैं बिभीखनसों पूछत भये ॥

बिभीखन कही यह कुंभकर्ण विनांही वरदान स्वभावहीसों बलिष्ट जानैं होतही हजारन सत्व खाये ॥

तब प्रजाकी सहायपैं इंद्रनैं आय वज्रादिक अनेक आयुधनके आघात लगाये ॥ ३५ ॥

यानैं ऐरावनको दंत उपारि ताही करि इंद्रके उरमैं महाप्रहार दयो तासों हतविक्रम होय सक्र प्रजाके नासको निदानैं मरालवाहनसों जाय कहत भयो ॥

ब्रह्मानैं सब राक्षस बुलाय कुंभकर्णकों महाभयंकर देखि स दाही सुप्त होय पर्यो रहिवेको साप दीनों ॥

तासों त्वरितही मृतक कल्प होय पर्यो देखि दसग्रीवनैं या-के सोवन १ जगन २ को करार कमलासनसों कर जोरि मांगि लीनों ॥ ३६ ॥

तबचतुर्मुखनें कही छहमास सोय यह एक १ दिन प्रबोध पैहै॥

तथापि यह घोर दुष्ट एक१ही दिनमैं अनेक मनुष्यकों खैहै ॥

विभीषनसौं ऐसैं सुनि रघुनाथनैं सेनापति नीलकौं पठाय
लंकाके द्वार१प्राकार२कैं अवरुद्ध कराय ॥
अरु अंगद१गवाक्ष२हनुमान३सरभ४हू संगही सिधाये ॥३७॥
इतकौं लंकेसनैं कुंभकर्णसौं जगायवेको निदान कह्यौ ॥
तब यानैं कही पहिले मंत्रमैं हमनैं दोष देख्यो सोही अब स-
बनके प्रान लेवेकौं वलिष्ठ होय रह्यो ॥
केवल बल१विक्रम२के दर्पतैं वैदेहीके साथ मृत्युकौं ल्यौतिलाये ॥
ऐसैं सुनतही लंकेसनैं अनुजकौं अनेक कटुवचन सुनाये॥३८॥
तब अग्रजकौं कुपित जानि अनुजनैं कही मंत्रमैं पूछो तौ ह-
म सदा ऐसैंही कहैं ॥
अरु संगरमैं पठावैसौं सत्रुनके स्वासको पान किये रहैं ॥
अब काहू सेनाकौं मेरे संग न भेजो ऐसैं कहि एकाकी कुं-
भकर्ण लरिवेकौं चलायो ॥
तहाँ महोदरनैं सबनके समक्ष यांकौं अंसत्य उत्तर सुनायो॥३९॥
जनस्थानके कर्षोंदनकों क दसग्रीवदर्पदारक वालिकौं मारि
समुद्रमैं सेतु रचि लंकाकौं घेरि लंकेसकौं विह्वल जानि जीवदा-
न दे छोड्यो तिनसौं लरिवेकौं एकाकी१जायवो उचित न जानों ॥
रनरंगमैं अद्वितीय राघवको कोप महाप्रलयके समान मानौं ॥
ऐसैं महोदरनैं कुंभकर्णसौं कहि लंकेससौं कहीमैं१ अरु द्विजिव्ह
२ मंहापार्श्व ३ अरु विनर्दन ४ इन च्यारिहनकौं पठाय हो॥
तौ तौ कदापि नियति सानुकूल भयें वहुरि अनुजकौ मुख दे-
खन पावहौ ॥ ४० ॥

ऐसी सुनतही महोदरकों कुंभकर्णन कातर कहि अग्रजके[1] मन-
कों अनुमोद[2] दीनों ॥

अरु लंकेसनैं ऊठिकैं माल्य[3]१ अनुलेपन[4]२वस्त्र३भूखन४नसों अ-
नुजकों अलंकृत[5] कीनों ॥

चतुरंग[6] याके संग दयो तब हजार१०००भार[7] भर्ममय[8] कंकट[9]-
कों कसि अग्रजकों आलिंगि[10]पदक्षिणा करि जाज्वल्यमान[11] का-
लायस[12] त्रिसूलकों पकरि कुंभकर्ण लरिबेकों चलायो ॥

जाके विग्रह[13]को सत१००धनुख परिणाह[14] खटसत६००धनुख उ-
च्छ्राय[15] देखि कपिनको कटक ओर ओर पलायो[16] ॥ ४१ ॥

ऐसैं लंकाके प्राकार[17]कों उल्लंघि कुंभकर्णके आवत प्लवंगन[18]-
कों पलावत देखि अंगदनैं नल१नील२कुमुद३गवाक्ष४सों कही
यह आकृति[19]हीसों भयंकर है जुद्धमें तैसो समर्थ न जानों ॥

अरु पलायन[20]सों बचिबोहू मरनसों बिसेस मानों ॥

यह सुनतही अद्रि[21]१द्रुम[22]२सिला३लैकैं कपिननैं कोपसों मुररि
कुंभकर्णपैंचहु४ओरसौं प्रहारे ते दुष्टको स्पर्शकरतही चूर्ण होतभये।

अरु याके आघात[23]नसों छिन्न भिन्न होय रघुवीरके सुभट बानर
१तो दिसा१आकास२समुद्र३पर्वत४नमैं दुरित[24] गये ॥ ४२ ॥

गोपुच्छ[25]२बिलनमैं पैठे रु भल्लूक[26]३बडे विटपी[27]नपैं चढि दुरे ॥

१ रावण के मन को २ प्रसन्न किया ३ माला पहनाकर ४ शरीर पर सुगन्धित वस्तु लगाकर ५शोभायमान किया ६सेना,७सौलह मासे का एक कर्ष और चार कर्ष का एक पल, सौ पल की एक तुला और बीस तुला का एक भार होता है ऐसे हजार भार ८ सुवर्ण का ९ कवच कसकर बडे भाई से १० सिलकर ११ कान्तिमान् १२ काले लोहे की बनीहुई १३ जिसके शरीर का १४ विस्तार१५छः सौ धनुष का ऊँचापन १६ भागा ॥ ४१ ॥ १७ कोट को कूदकर १८ वानरों को भागेहुए देख १९ स्वरूप से ही भयदायक है २० भागकर बचना मरने से भी विशेष है २१ पर्वत २२ वृक्ष २३ कुंभकर्ण के प्रहार से २४ छिपगये ॥ ४२ ॥ २५ गौ की पूंछ के समान है पूंछ जिनकी (लंगूर) ऐसे बन्दर गिरिकंदराओं में घुसे २६ रीछ २७ बडे वृक्षों पर चढगये

बहोरि हू अंगदके वचन*प्रतोदसौं पीछे फिरि ऋषभ१सरभ२ मैंद ३धूम्र४नील५कुमुद६सुसेन७गवाक्ष८रंभ९तार१०द्विविद ११ पनस १२बज्रांग१३इत्यादिक कितेक कुंभकर्णसौं जुरे ॥

तहाँ अष्टसहस्र८०००सप्तसत७००बानरतो दुष्टनैं पहिलेही मि-लापमैं मीडि[2]कैं अचेत पृथ्वीतल पसारे ॥

अरु दसन१बीसन२०तीसन३०[3]कौंसनकौं इक१इक१बेरही आ ननमैं फैंकि चाबि डारे ॥ ४३ ॥

तहाँ द्विविदनैं एक१धराधर[4] लैकैं कुंभकर्णपैं चलायो सो दुष्ट-सौं चूकि क्रव्याद[5] कटकमैं जाय पर्यो ॥

तानैं अनेक गज१हय२रथ३रथि४सारथि५नको चूर्ण कर्यो ॥

मारुति[6]नैं बडे बलसौं सिला१गिरि२तरु३नकी वृष्टि करी ॥

सोहू दुष्टके त्रिसूलसौं छिन्नभिन्न होय पृथ्वीतल परी ॥४४॥

क्रव्यादनैं आंजनेयके उरमैं त्रिसूल मार्यो ताकी लोह छक ले लोहित[8]को बमन[9] करि बज्रकंकट[10]नैं महाघोर नाद कीनौं ॥

तहाँ नीलनैं धराधर फैंक्यो सो हू निसाचरनैं मुष्टिपातहीसौं चूर्ण करि दीनौं ॥

तदनंतर ऋषभ१सरभ२नील३गंधमादन४गवाक्ष५पंच५ही प्लवं[11]गन दुष्टके सैल[12]१सिला२पादप[13]३प्रतल[14]४मुष्टि५चरन६जानु[15]७नके प्रहार दये तेहू सब दुष्टके मृदुस्पर्श[16]हीके सूचक[17] भये ॥

कुंभकर्णनैं ऋषभकौं १ भुजनसौं १ भींचि, सरभ२कौं मुष्टि सौं २, नीलकौं ३ जानुसौं[18] ३, गवाक्षकौं ४ प्रतलसौं[19]४ प्रहारिकैं अचेत रुधिरवमी[20] करिडारे ॥

---

*वचन रूपी चाबक से१हनुमान् २ मसल (कुचल) कर ३बानरों को अपने मुख में फैंकदिया ॥ ४३ ॥ ४ पर्वत लेकर ५ राक्षसों की सेना में जागिरा ६ हनुमान् ने ॥ ४४ ॥ ७ हनुमान् के उर में ८ रुधिर ९ उगल कर १० हनुमान् ने ११ बंदरों ने १२ पर्वत १३ वृक्ष १४ थाप (थप्पड़) १५ घुटनों के १६ कोमल स्पर्श को १७ जनानेवाले जाने ॥ ४५ ॥१८ घुटनों से १९ थप्पड़ २० रुधिर उगलनेवाला

तबतो हजारन प्लवंग[1] कुंभकर्णपैं जाय चढे रु दंत१मुख२मुष्टि३प्रतल४प्रहार बिथारे ॥

तिनमांहिंसौं अनेकनकौं पकरि दुष्टनैं पातालविवरसे[2] वक्त्र[3]मैं फैंकिदये ॥

तेहू नासा[4]१कर्ण[5]२नके छिद्रन व्है बाहिर आय आय भजत भये ॥४६॥

निसाचर[6]के करन[7]सौं मथ्यो साखामृगनको[8] समुद्र फूटत भयो ॥

सबनकौं रघुनाथके सरन भजे देखि तारेय[9]नैं एक१ पर्बतउठाय कैकसीके मध्यपुत्र[10]के मस्तकमैं प्रहार दयो ॥

ताहुको तिरस्कार[11] करि कुंभकर्णनैं अंगदपैं त्रिसूल चलायो ॥

यानैंहु सो आवत देखि रनमार्गकोविद[12]नैं लाघव[13]सौं मैलंगि[14] चुकायो ॥४७॥

तदनंतर[15] तारेयनैं उडिकैं आसिर[16]के उदरमैं प्रतलको प्रहार कीनो ॥

तासौं कछुकालमैं चेतना पाय कुंभकर्णनैं अंगदके उरमैं मुष्टिको आघात दीनों ॥

तासौं यह मूर्छित व्है गिर्यो तबतो त्रिसूलकौं उठाय सुग्रीवपैं चलायो ॥

अरु दोउन२ननैं मिलिके परस्पर श्लाघा[17]को बचन सुनायो ४८

सुग्रीवनैं धराधर[18] फैंक्यो सु आसिरके उरमैं लागि फूटि गयो ॥

अरु यानैं कपिराजपैं त्रिसूल चलायो ताकों वज्रांग[19]नैं बीचहीमैं गहि जानु[20]की मचक दै द्वै२खंड करि दयो ॥

---

१ बंदर २ पाताल के छिद्र समान ३ मुख में फैंक दिया. वेही ४नासिका ५कानों के छिद्रों में होकर ६राक्षस के ७हाथों से मथाहुआ ८बंदरों का समुद्र फूट गया अर्थात् बंदर भागगये ९ अंगद ने १० कुंभकर्ण ११ अनादर १२ युद्ध मार्ग का पण्डित १३ शीघ्रता से १४ कूद कर ॥ ४७ ॥ १५जिस पीछे १६ राक्षस के पेट में १७ प्रशंसा का वचन ॥ ४८ ॥ १८ पर्वत १९ हनुमान ने २० घुटने की

तब कुंभकर्णनैं एक१ सैलसृंग उठाय सुग्रीवपैं प्रहारयो तासों निश्चेष्ट ह्वै कपिराज घूमिपरयो ॥

ताकों उठायकैं निस्संक होय कुंभकर्णनैं लंकामैं गमन करयो॥४९॥

पुरवासिन रावणानुजकों चंदनोदकसौं सींच्यो ताके सीतलस्पर्श करि सुग्रीवकी मूर्च्छा गई तब ही दंतनसौं नक्र१ दोहू२ करनसौं कर्ण२ काटि कुंभकर्णनैं बहुत ही मीड्यो तथापि ताके पार्श्व में लत्ताघातकरि भुंजकोटरसौं छूटि आकासमैं मलंग लई ॥

ऐसी अद्भुत करि कपिराज तो कूदिकैं रघुराजके समीप आयो ॥

अरु कुंभकर्ण आपकों विरूप जानि लज्जासौं पीछो मुरि मुद्गरकों उठाय जंगकों चलायो ॥५०॥

कोपमूढ ह्वैकैं अपनें पराये रक्खस१ पिसाच२ रिच्छ१ वानर२नकों एक१ही करसौं आननमैं फैंकि फैंकि खाये ॥

तहाँ सौमित्रिनैं याको कवच भेदि भुंजांतरमैं सप्त ७ सायक लगाये ॥

कुंभकर्णनैं लक्खनसौं कही कालको काल जो मैं ताके आगैं ठहरि तैंनें खूबही वीरता ख्यात करी ॥

परंतु रामकों दिखावहु तब सेसैं कही ए निस्संक अंग रंगनमैं खरे अनादि हरी ॥५१॥

ऐसी सुनतही रक्खसनैं रघुराजकेसमुख चरन दये तहाँ जगदीस रौद्र अस्त्रको प्रयोग करि ओंसिरके उरमैं कलंक दतभये ॥

तासौं अचेत भये दुष्टके करतैं गदादिक आयुध गिरे ॥

अरु अंगसौं निकसिकैं सबही जंगरंगमैं याके रुधिरके स्रोत फिरे ॥ ५२ ॥

१पर्वत का २शिखर ३निश्चेष्ट रहित (बेहोश) ४कुंभकर्ण को ५चन्दन के पानी से ६नासिका ७दोनों ८कान ९लात की चोट देकर १०भुजाओं के गव्हर (कोनों) से छूटकर ॥ ५० ॥ ११ लक्ष्मण ने १२ हृदय में १३ बाण १४ प्रसिद्ध करी १५ लक्ष्मण ने कहा कि १६ युद्धभूमि में ॥ ५१ ॥ १७राक्षस के उर में १८आंत १९ युद्धभूमि में रुधिर के २०प्रवाह फिरे ॥ ५२ ॥

कछुकालमैं चेत पाय जुर्‍यो तहाँ अखिलेसनैं[1] याको कवचहू
काटि डार्‍यो॥
रक्खसनैं एक[1]अद्रि[2] चलायो सोहु रघुनाथनैं बाननसौं बिडार्‍यो[3]
कुंभकर्णको कवच कटिकैं गिरत गिरत द्वै सत[200]बानरन-
कौं दाबि मारत भयो ॥
तहाँ लक्खननैं[4] अग्रजके समक्षही[5] समस्त साखामृगनकौं[6] नि-
देस[7] दयो ॥ ५३ ॥
यह सोनितगंधमत्त[8] अपनैं परायेकौं न जानैं तातैं अनेक क-
पि याके ऊपर चढिकैं भारसौं गिराय देहु ॥
यह सुनतही हजारन झंप लैकैं याके अंगपैं आरूढ[9] होत भ-
ये तेहु ॥
जैसैं व्यालगंज[10] आधोरणनकौं[11] गिरावैं या रीति कुंभकर्णनैं
आरूढ रिच्छ[1]बानर[2]घुनाथ डारे ॥
अरु रामचंद्रनैं आपकी ओर बुलायो तहाँ हसिकैं कुंभकर्णनैं
ए बचन उचारे ॥ ५४ ॥
बिराध[1]कबंध[2]खर[3]बाली[4]मारीच[5]मोकौं न जानौं ॥
कुंभकर्णके कालायस[12] मुद्गरकौं महाप्रलयके समान घोर मानौं॥
तुमारो पराक्रम देखि पीछैं खाय लैहौं असो निस्संक बचन सु-
नतही राघवनैं कराल[13] कलंब लगाये ॥
तिनहूसौं व्यथा[14] न भई रु समस्तही दुष्टन मुद्गरसौं हटाये॥५५॥
कपिनपैं चलायो देखि बायव्यको[15] संधान करि रघुराजनैं कुंभ-
कर्णको मुद्गर सहित एक[1]पंचसाख[16][1]काटिडार्‍यो ॥
तबहू महानाद कीनों रु कटे करहू प्लवंगनको[17] प्रकर मार्‍यो ॥

१रामचन्द्रने२पर्वत फैंका३बिखेर दिया४लक्ष्मण ने रामचन्द्र के५सामने ही सब ६ बानरों को ७ हुकमदिया ॥ ५३ ॥ ८ रुधिर की गन्ध से मस्त होकर ९ चढगये १० जिसप्रकार दुष्ट हाथी ११महावत को गिरा देवें तिसप्रकार कुं-भकर्ण ने अपने ऊपर चढे हुए ॥ ५४ ॥ १२ काले लोहे के १३ भयंकर बाण लगाया १४पीड़ा नहीं हुई १५ पवनअस्त्र को संधान करके १६ हाथ १७बंदरों के

तदनंतर[1] सालपादप[2]कौं उपारि रघुराजपैं चलायो तहाँ ऐंद्र[3] अस्त्रको
प्रयोग करि द्वितीय२कर१हू काटि लयो ॥
सोहू[4] साखी १ सैल[5] २ सिला ३ कपि४ रिच्छ५रक्खसदनकौं चूर्ण
करत भयो ॥ ५६ ॥
तथापि नाद करि समुख दोर्‍यो देखि द्वै२अर्द्धचंद[6]नसौं राघवनैं
दुष्टके दोहू२चरन२हू काटि गिराये ॥
तिनके पात[7]नैं दिसा बिदिसामैं महाभयंकर नाद फिराये ॥
रक्खसहू बडो साहसी निकृत्तबाहुचरन[8] आनन[9]कौं फारि रामके
समुख ढुरिआयो ॥
ताको मुख राघवनैं बाननसौं भरिदयो सु बोलिबे न पायो ॥५७॥
तदनंतर बहोरि ऐंद्रबानको संधान करि रघुराजनैं कुंभकर्णको
उत्तमांग[10] हर्‍यो ॥
ताहुनैं अनेक चैर्या[11] १ पुर २ गोपुर[12] ३ प्राकार[13]४अट्ट[14]५नको चूर्ण
कर्‍यो ॥
कुंभकर्णको कलेवर लवणोद[15]मैं पर्‍यो ॥
अरु ग्राह १ मीन २ भुजंगम ३ नको मर्दन बिस्तर्‍यो ॥५८॥
भूतधात्री[16] धूजि उठी रु लंकामैं सोक संताप भयो ॥
अरु सुर १ मुनि २ पन्नग ३ भूत ४ सुपर्ण ५ गुह्यक ६जच्छ
७ गंधर्व ८ नरन ९ रघुनाथके बिक्रमको बर्णन करि मोद लयो॥
ऐसैं मधुमेचक[17] सप्तमी७के दिन हंसबंसहंस[18]नैं दसग्रीवकोअनुजहन्यो

समूह को १ जिसपीछे २ साल वृक्ष को ३ इन्द्र अस्त्र से ४ वृक्ष ५ पर्वत ॥ ५६ ॥ ६ अर्धचन्द्राकार बाणों से ७ पड़ने ने ८ कट गये हैं हाथ पग जिसके (कटे हाथों पगों वाला) ९ मुख को फाड़ कर ॥ ५७ ॥ १० मस्तक काट डाला ११ अपने इष्ट का पूजन करनेवालों को (सायंकाल में कुंभकर्ण का मस्तक काटागया था वही समय आन्हिक कर्म करने का था इससे) अथवा कुंभकर्ण के मस्तक के भ्रमण ने १२ शहर के दरवाजे १३ कोट १४ मकानों की छतों का चूर्ण करदिया. और कुंभकर्ण का निर्जीव शरीर १५ क्षारसमुद्र में गिरा ॥ ५८ ॥ १६ भूमि १७ चैत्र बदि सातम के दिन १८ सूर्यवंश के सूर्य (रामचन्द्र) ने कुंभकर्ण को मारा.

अरु लोकत्रय३में अद्वितीयकीर्तिको वितान तन्यौं ॥५९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय२राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८वेला६८१विवाहवेलावर्णनविषयवूल्नवंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु६ पट्टपुत्रविकुक्षि७कुलकलशश्रीजानकीजानिचरित्रे द्वितीया२सप्तम्य न्तसङ्ग्रामवर्णनधूम्राक्ष१वज्रदंष्ट्र२कम्पन३प्रहस्त४मरणगावण५ पलायनकुम्भकर्णशिरःकर्त्तनमेकपञ्चाशत्तमो५१मयूखः॥५१॥

आदितस्त्रिणवतितमः ॥ ९३ ॥

(प्रायो वृजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(सचरणगद्यम्)

कुंभकर्णको निपात सुनतही दशग्रीव मूर्छित अचेत होय पर्‍यो ॥ अरु कितेक कालमैं संज्ञा पाय जाग्रत अंगको इंगितधर्म जाणि अश्रुनकों अंबकनके अतिथि करि चिरकाल परिदेवन कर्‍यो॥ रावनके संबंधभ्राता महोदर१महापार्श्व२तथा पुत्र त्रिसिरा१अतिकाय२देवांतक३नरांतक४इत्यादिक वा समय जे उहाँ हे तेसब रुदनके रसज्ञ भये ॥

तदनंतर त्रिशिरानैं दसग्रीवकों वीररसके वर्द्धक वचन क्ये ॥ १ ॥

डेरा (तंबू) ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश के बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल के कलश श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में द्वितीया से लेकर सप्तमी के अन्त तक के युद्ध के वर्णन में धूम्राक्ष, वज्रदंष्ट्र, अकंपन, प्रहस्त का मरण, रावण का भागना, कुंभकर्ण के मस्तक काटने का इक्कावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५१ ॥ और आदि से त्रानवे मयूख हुए ॥ ९३ ॥

१पड़ना २ चेत ३ जगनाहुआ शरीर कुछनकुछ चेष्टा अवश्य करता है इन शारीरिक धर्म को जानकर ४ आंसुओं को ५नेत्रों के ६ पाहुने (मेहमान) करके ७ बहुत समय तक ८ विलाप किया ९ जो भाई नहीं १० थे ११ रुदन के रस को जानने वाले हुए १२त्रिसिरा १३शिवको रो बढानेवाले ॥ १ ॥

(दोहा)

कही जनक[1] दसकंठसौं, सुत त्रिसिरा तजि सोक ॥
ब्रह्मदत्त[2] निज सक्तिबल, अभय होहु जयओक[3] ॥ २ ॥
खर सहस्र१०००रथ१बर अखय, त्यौं सर२चाप३तनुत्र४ ॥
अहेव[5] अप्प विलसहु इहाँ, पिल्लहु[6] जावत पुत्र ॥ ३ ॥

(षट्पात्)

इम त्रिसिरा१अतिकाय२देवँअंतक३नरअंतक४ ॥
महापार्श्व१लहि संग महोदर२बहुरि पितृव्यक[9] ॥
आसिरपहिँ[10] मुद अप्पि पाय ओसिख[11]१अरु पूजन[12]२ ॥
चले लरन अतिचंडकरन स्वकरन[13] कपि कूजन[14] ॥
घनगंज[15]कुलीन घननील[16]निभ नाम सुदरसन नागवर[17] ॥
तिहिँ गज अरोहि रनरसरसिक चालिय महोदर१परनपर[18] ॥ ४ ॥

(दोहा)

त्रिसिरा१पुनि अतिकाय तँहँ, रथन चढे रविभास[19] ॥
नरअंतक४सितहय[20] निडर, पकरि चल्यो कर प्रास[21] ॥ ५ ॥
देवांतक५तिम परिघदृढ, हंक्यो गहि हुसियार ॥
गदा महापार्श्व६हु गहि रु, उफन्यौं तुमुल उदार ॥ ६ ॥

(सचरणगद्यम्)

१अपने पिता रावण से त्रिशिरा ने कहा कि २ हे विजय का घर (रावण) ३ ब्रह्मा की दीहुई शक्ति के बल से आप अभय होओ ॥ २ ॥ वर के कारण हजार गधोंवाला रथ, इसीप्रकार धनुष बाण और ४ कवच अक्षय है सो ५ अब आप तो विलास करो और पुत्र (मुझ) को ६ भेजो सो युद्ध के लिये जाता हूं ॥ ३ ॥ ७ देवान्तक ८ नरान्तक ९ काका १० राक्षसों के पति को मोद देकर ११ रावण के पुत्रों ने आशिष और १२ भाइयों ने पूजन पाकर १३ अपने हाथों से १४ बंदरों को कूक कराने को (हाथों से मलकर बंदरों की चिल्लाहट कराने को) १५ ऐरावत के कुल के १६ नील मेघ की कान्तिवाले सुदर्शन नाम के श्रेष्ठ १७ हाथी पर चढकर १८ शत्रुओं पर चला ॥ ४ ॥ १९ सूर्य के समान कान्तिवाले २० स्वेत रंग के घोड़े पर २१ हाथ में भाला पकड़के चढा ॥ ५ ॥ ६ ॥

ऐसैं छहूँ महावीर[1] क्रव्यादन आस्फोटन[2]१क्ष्वेडित[3]२संक्रम[4]३सिंहनाद४नसौं भूमधात्रीकौं धुजावत कपिनके कटकमैं आय अष्टमी ८ के दिन महारन रच्यो ॥

अरु परस्पर सस्त्र सैल[6]के प्रहारकरि डोहू[7]दलनके दुर्गम सोनितकौ सार्द[8] मच्यो ॥

कितेक निसचर गाढैं गाढैं गहि गहि वानरहीसौं वानरकौं मारत भये ॥

अरु कीसहू कितेक रथनसौं १ रथ २ तुरंगनसौं १ बाजि २ करीनसौं १ मातंग[10] २ कौणपनसौं[11] १ क्रव्याद[12] २ चूरि डारत भये ॥७॥

नरांतकनैं प्रासनसौं[13] सप्तसत७००बानर एकही प्रहार करि वेधि गिराये ॥

अरु कालरूप धारि प्रहारनके महापात दये तिनसौं कांदिसी[14]क कीस[15] टिकन न पाये ॥

नरांतकके प्रासकौं कपि लोष्ट[16]नको कोटिस[17] जानि ताके सन्मुख कपिराजनैं[18] अंगद पठायो ताके भुजांतर[19]मैं दसग्रीवके पुत्रनैं प्रास[20] मास्यो ॥

सोहू बालिपुत्रके बज्रकल्प[21] उरमैं छुवतही टूक करि डारयो।८।

मस्तकमैं अंगदके प्रतल[22]को प्रहार परयो तासौं भग्नपाद[23] स्फुटितनेत्र[24]निष्क्रांतजिव्ह[25] होय नरांतकको तुरंग[26] प्रानननतैं बिरही[27] भयो॥९॥

१राक्षस२भुज ठोकने३गर्जना करने४चलने और सिंहनाद करने से५भूमि को धुजाते हुए६पर्वत ७ रुधिर का ८ कीच मचा९घोड़ों से घोड़ों को १० हाथियों से हाथियों को११राक्षसों से१२राक्षसों को चूर्ण करदिया ॥ ७ ॥१३भाला से१४भय से भागनेवाले१५बानर नहीं ठहरसके, नरांतक के भाले को वानरों रूपी१६ढकलों[ढेलों]को चूर्ण करनेवाला १७लोष्ठभेदन [चावर, ढकल फोड़ने का भारी काष्ठ] जानकर १८ सुग्रीव ने अंगद को भेजा१९हृदय में २० भाला मारा.२१वज्र के समान हृदय में स्पर्श होते ही भाले के टुकड़े टुकड़े होगये ॥ ८ ॥ २२ थप्पड़ के प्रहार से २३ टूटे पगोंवाला २४ फूटेहुए नेत्रोंवाला २५ निकली हुई जीभवाला होकर २६ घोड़ा २७ मरगया

तबही कुपित होय ऋष्यादराजके कुमारनैं हू तारेयके मस्तक पैं मुष्टिको आघात दयो ॥

तासौं सोनितको[2] वमनकरि कछुकालमैं सविस्मय संज्ञा पाय[3] अंगदनैं नरनासनके[4] भुजांतरमैं मुष्टि मारी ॥

तासौं अचेत रह्योराजकुमारके लिंगविग्रहनैं[5] भिन्न होय वेगही स्थूल मूर्ति डारी ॥ ९ ॥

तबही कालकराल होय त्रिसिरा१देवांतक२महोदर३इन तीन कर्बुरन[6] वेढिकैं[7] अंगदपैं एकही संग सस्त्रनको संघात[8] डारचो ॥

अरु तारेयनैं महोदरके गजकौं मस्तकमैं[9] प्रतलसौं[10] प्रहारयो ॥

ताहीको दंत निकासि अंगदनैं देवांतककै दई तासौं रुधिरको वमनकरि[11] कछुकालमैं संज्ञापाई[12] ॥

अरु तारेयकैं परिघकी दई ता प्रहारकरि जानुनसौं[13] जंकि वा लिपुलनैं अपनी मूर्ति आकासमैं उडाई ॥ १० ॥

उडते अंगदके ललाटमैं त्रिसिरानैं हू तीन३वान दये ॥

ऐसैं एक१सौं तीन३लरतदेखि नील १ रु हनुमान २ ए उभय अंगदकी सहाय भये ॥

नीलनैं पर्वत चलायो सु तो त्रिसिरानैं तीरन करि काटि डारचो॥

अरु देवांतकनैं मारुतिपैं[14] परिघ उठायो ताके सिरपैं आंजनेय[15]नैं उडिकैं मुष्टिको आघात प्रहारयो ॥ ११ ॥

१रावण के पुत्र ने अंगद के मस्तक में२रुधिर की उलटी करके.आश्चर्य सहित ३ चेत पाकर ४ नरान्तक के उर में मुक्की मारी जिससे ५ लिंगशरीर ने अलग होकर [वेदान्त के मत से कारण शरीर,लिंगशरीर और स्थूलशरीर ये तीन प्रकार के शरीर मानते हैं. और पुराणवाले लिंग (सूक्ष्म) और स्थूल दो शरीर ही मानते हैं जिनमें मृत्यु के समय स्थूल शरीर का सम्बन्ध जीव से छूटजाता है और लिंगशरीर जन्मान्तर में जीव के साथ रहता है.केवल मुक्ति समय में लिंग शरीर का जीव से वियोग होता है इन दोनों शरीरों को भौतिक शरीर कहते हैं] स्थूलमूर्ति को भूमि पर डारी अर्थात् मृत्यु को प्राप्त होगया॥९॥६राक्षसों ने७घेरकर८समूह पटका९अंगद ने१०थप्पड़ मारी ११उलटी१२चेत पाया१३घुटनों के बल गिरकर१४हनुमान पर१५हनुमान् ने

तासौं जिह्वा[1]दंत[2]नेत्र[3]निकसिपरे रु देवांतकनैं देह तज्यो ॥
सो देखि त्रिसिरानैं नीलके अंगमैं अनेक आघात देकैं बिसे-
स जंग सज्यो ॥
वाहीसमय महोदरहू अन्य गजपैं आरूढहोय नीलहीकै अने-
क आघात देतभयो ॥
अरु नीलहूनैं आपो[1] सम्हारि एक१बडो अद्रि[2] उठाय महोदर
के मस्तकपैं डारि दयो ॥ १२ ॥
तासौं मातंग[3] सहित महोदरकौं मरयो देखि त्रिसिरानैं बढिकै ब-
ज्रांगके[4] बिसेस बान लगाये ॥
अरु मारुतिनैं अनेक तरु पर्वत चलाये तेहू तीरनकरि काटि-
गिराये ॥
त्रिसिराके रथके हय बज्रांगनैं[5] नखनसौं फारिडारे तबही प्र-
कोपसौं त्रिसिरानैं सक्ति चलाई ॥
सो गर्जनाकरि आवतीही पकरि आंजनेयनैं[6] उभय[7]भित्तिक-
रि गिराई ॥१३॥
तबही त्रिसिरानैं बज्रांगके बच्छस्थलमैं[8] तरवारि दई ताहूकी[9] सं-
काकरि त्रिमूर्द्धाके उरमैं प्रतल[10] दयो ॥
तासौं अचेतहोय निसाचर भूमिकैं रंगस्थलमैं[11] गिरत भयो ॥
गिरतेको खड्गलेकैं बज्रांगनैं महानाद कीनौं ॥
ताकौं न सहिसक्यो यातैं दसग्रीवकुमारहू उडिकैं बज्रांगकै मु-
ष्टिको प्रहार दीनौं ॥१४॥
तबही महाकोपकरि आंजनेयनैं किरीट पकरि त्रिसिराके ती-
नौं३ही उत्तमांग मंडलाग्रसौं[12] छेदिडारे ॥

१ अपने आप को अथवा अपने पराक्रम को सम्हाल कर २ पर्वत ॥ १२ ॥ ३ हाथी सहित ४ हनुमान के ५ हनुमान ने ६ हनुमान ने ७ दो टूकड़े करके तोड़डाली ॥ १३ ॥ ८ वक्षःस्थल (हृदय) में ९ जिस तलवार के फिर प्रहार के भय से त्रिशिरा के हृदय पर १० थप्पड़ मारी ११ युद्ध भूमि में ॥१४॥ १२ खड्ग से काटडाले

सो देखि महापार्श्वनैंहू ऐरावत[1] पुंडरीकादि दिग्गजनकों भया-वह[2] सर्वायस[3] गदाकौं पकरि सहस्रन साखामृग[4] प्रहारे ॥

तबही कपिसार्दूल[5] ऋषभनैं आय महापार्श्व अटक्यो[6] ताके उरमैं निसाचरनैं गदाकी दई ॥

तासौं चिरकालमैं सचेतनहोय महापार्श्व उरमैं मुष्टि मारी जिहिं आघात करि क्रव्यादनैं मूर्छा लई ॥१५॥

दोहा ॥

महापार्श्व मूर्छित गिरत, ऋषभ गदा तस पाय ॥
लरतरहे कछुकाल अब, उठ्यो खलहु उफनाय ॥१६॥
ऋषभहिं छत मूर्छित बिरचि, अप्प गदा गहि एह ॥
जुरयो रु कपि पुनि मोहं तजि, ओरयो इत अतिदेह[11] ॥ १७ ॥
गदा दुष्टकी बहुरि गहि, सोहि प्रहारयो सूर ॥
पुहवि[12] भिन्नमस्तक परयो, महापार्श्व अघमूर[13] ॥

षट्पात्

आय तबहि अतिकाय जुरयो कपिसेन मथत जहँ ॥
अतिबल लखि अखिलेस[14] कह्यो रावनसोदरकहँ[15] ॥
को यह सहँस१०००तुरंग जुत्त स्यंदन[16] थित गज्जत ॥
केतन[17] राहु कलंक सत्थ सारथि चउ४सज्जत ॥
अठतीस३८तून सोभित उचित त्रि३नत चाप रविकिरन सर॥

१पूर्वदिशाको धारण करनेवाला ऐरावत और अग्नि दिशाको धारण करनेवाला पुंडरीक आदि दिग्गजों को २भय करनेवाला ३सम्पूर्ण लोहे की बनीहुई ४वानरों को मारे ५ वानरों में सिंह ६ महापार्श्व को रोका ७ बहुत समय में ८ राक्षस ने ॥ १५ ॥ ९ घाव से मूर्छित करके १०मूर्छा छोडकर ११ अतिकाय (बडे शरीरवाला) ॥ १६ ॥ १७ ॥ १२भूमि पर १३पाप का मूल ॥१८॥ १४रामचन्द्र ने उसको बहुत बलवान् देखकर १५विभीषण से कहा १६ हजार घोड़ोंवाले रथ पर बैठाहुआ १७राहु के चिन्हवाली काली ध्वजा, चार सारथि जिसके रथ को हांकते हैं, अड़तीस जिसके भाथे (तरकस), नमेहुए तीन धनुष, सूर्य की किरण समान बाण, चार हाथ की मोटी मूठें लगीहुई, दश दश हाथ लंबी दो तलवारें, गले में लाल रंग की माला और पर्वत के तीखे शिखर समान

चउ४हत्थ मुट्ठि दस१०मित दुर२आसि अरुन माल पव्वय प्रखर१९

सुनत बिभीखन सयन जोरि अक्खिय इम बिन्नति ॥
रावनसुत आधिबीर[2] एह अतिकाय महामति ॥
धान्यमालिनी[3] जठरजात रथ१गज२हय३गति बर ॥
दान१साम२नय३भेद४मंत्र५धनु६खग्ग७धुरंधर ॥
भुज जास रहत लंका अभय जिहिं सुर असुर अबध्य बर।
बिधिदत्त कवच१रथ२अस्त्र३ बस सु यह करत कपि तृप्त सर।२०।

दोहा

पासीपास१रु सक्रपवि२, मारि प्रदर[10] किय मोघ[11] ॥
सीघ्र जतन प्रभु अनुसरहु, उडे जात कपि ओघ[12] ॥ २१ ॥

(षट्पात)

मैंद१कुमुद२बलिनील३द्विबिद४तिम सरभ५कपीश्वर ॥
सुनत बिभीखन कथित[13] पञ्च५सम्मुह हुव दुद्धर ॥
तिनके गिरि१तरु२कट्टि कलह अतिकाय तुमुल[14] किय ॥
कोउ न भयउ समत्थ लैन रावन अंगज[15] जिय ॥
हतबलन[16] छोरि दुष्ट हुलसि[17] बढि बुल्लिय प्रभुढिग[18] बचन ॥
नन[19] मरहु रंक व्यवसाय१बल२रक्खहु दुव२सुहि देहु रन ॥२२॥
सुनि यह कटु सौमित्रि[21] चाप टंकारि[22] सर ऐंचिय ॥

जिसका शरीर है यह कौन है ॥ १९ ॥ १ हाथ जोड़कर २ अधिक वीर ३ मंदोदरी के ४ पेट से पैदाहुआ, घोड़े हाथियों को श्रेष्ठ चलानेवाला ५ देवताओं से और दैत्यों से नहीं मारजाने का जिसको वर है और ६ ब्रह्मा के दिये हुए ७ अपने बाणों को बानरों से तृप्त करता है ॥ २० ॥ ८ वरुण के पाश और ९ इन्द्र के वज्र को जिसने अपने १० बाण मारकर ११ व्यर्थ कर दिये थे जिसको मारने का आप शीघ्र उपाय कीजिये १२वानरों के समूह उडेजाते हैं ॥२१॥१३ विभीषण का कहाहुआ सुनते ही १४ भयंकर १५ रावण के पुत्र का जीव लेने को १६निर्बलों को छोड कर१७प्रसन्न होकर १८रामचन्द्र के पास जाकर बोला कि रंकों की तरह१९मत मरो तुम दोनों भाई२०उद्यम और बल रखते हो सो मुझे दो (दिखाओ)२१लक्ष्मण ने धनुष को२२टंकारके

भये विचल अतिभीत जाहि सुनतहि कौणप[1] जिय ॥
कहिय पिक्खि अतिकाय बाल[2] न मरहु अविचच्छन[3] ॥
काहि जगावहु काल बान मम अनल[4] सत्रुवन ॥
सौमित्रि कहिय सूरत्व[5] सठ वचन मात्र न करहु विदित ॥
करिअस्त्र१सस्त्र२निज जय करहु अर्भ[6] न जानहु काल इत ॥२३॥
तब अतिकाय कलंब[7] इक१मुक्किय लक्खनपर ॥
अर्द्धचंद्र करि वाहि कट्टि डारिय रघुकुंजर[8] ॥
पञ्च५विसिख[9] पुनि पंथित[10] दये अतिकाय दुरासद[11] ॥
पञ्चक५करि ते पञ्च५बहुरि दिय कट्टि मितंवद[12] ॥
इक१पंदर[13] तानि लक्खन असह हढ अतिकाय ललाट दिय ॥
व्है व्यथित[14] कहिय व्यवसायबर[15] कर सिसु हढ प्रहारकिय ॥२४॥
सर इक१तीन३रु पञ्च५सत्त७ इकसत्थ दये खल ॥
तीरन करि ते कट्टिदये लक्खन विसेस बल ॥
तबहि इक१सर तानि अपर[17] दिन्नों लक्खन उर ॥
सु हुंत[18] कड्ढि सौमित्रि धरिय आग्नेय[19] पंदर[20] धुर ॥
खल मरम तक्कि मुक्किय सु खग[21] खलहु रौद्र[22] प्रतिभट[23] तजिय ॥
ते अस्त्र लरिय विच्चहि बहुल[24] दग्ध दुहुन भूतल भजिय॥२५॥

१ राक्षसों के जीव २ अतिकाय ने लक्ष्मण से कहा कि हे बालक ३ हे मूर्ख किसलिये काल को जगाता है ४ अग्निरूपी मेरे बाणों का शत्रु बनकर मत मर. लक्ष्मण ने कहा कि हे मूर्ख! केवल वचन से ही अपनी ५ वीरता प्रसिद्ध मत कर ६ मुझको बालक मत जान. इधर तेरा काल है ॥ २३ ॥ ७ बाण ८ रघुवंशियों में हाथी(श्रेष्ठ)९बाण १० प्रसिद्ध ११ दुष्ट अभिप्रायवाले अतिकाय ने १२ थोड़ा बोलनेवाले लक्ष्मण ने १३ तीर १४ व्याकुल होकर कहा कि तुम्हारा उद्यम१५श्रेष्ठ है १६ तुम्हारे हाथ तो बालक के से हैं परन्तु प्रहार बड़ा किया ॥ २४ ॥ १७दूसरा बाण लक्ष्मण के उर में दिया जिसको १८ शीघ्र निकाल कर लक्ष्मण ने१९अग्नि का२०बाण २१वह आकाश में गमन करनेवाला बाण छोड़ा जिसको२२रोकनेवाला दुष्ट ने भी रौद्र अस्त्र छोड़ा२३बहुत लड़कर दोनों जलकर२४भूमि का सेवन किया (भूमि पर पड़गये) ॥ २५ ॥

अस्त्र तबहि ऐषीक[1] सजव मुक्किय[2] रावनसुत ॥
ऐंद्र[3] प्रयुंजि अनंत[4] दियउ खल अस्त्र मारि द्रुत ॥
आसिर[5] किय जमअस्त्र सु करि वायव्य सेस हनि ॥
बेढि खलहिं सरबुंद बिबिध बरख्यो नीरद[6] वनि ॥
अतिकाय कवच ते सर परसि भिन्नभल्ल[7] मुरि मुरि परे ॥
तँहँ आय पवन सेसहिं[8] कहिय किम उपाय इतरहि[9] करे ॥२६॥
कंकट[10] याहि अभेद्य अग्ग अप्पिय हंसासन[11] ॥
ब्रह्म अस्त्र तुम तजहु हनन इहिं जतन और नन ॥
सुनि समीर[12] बच सेस अस्त्र सुहि सर आरोपिय ॥
भुव अयास[13] ग्रह कंपि दाह दिसदिस प्रचंड दिय ॥
तिहिं पिक्खि तजिय रावनतनय असि१कुठार२हल३सक्ति४सर५ ॥
तिन्ह कट्टि विसिख अतिकाय तक पहुँचि मत्थ छेदिय प्रकर[14]॥२७॥
सुनि रावन करि सोक कहिय अैसो कोउ न अब॥
सविभीखन[15]१सुग्रीव२राम३लक्खन४हनै जु सब ॥
अहो[16] रामबल असह हमहु मन्न्यौं नारायन ॥
जररहत जिहिं त्रास अरर[17] लंका द्वारायन[18] ॥
अति सावधान रक्खस रहहु सीता रक्खहु जतन सह ॥

१ऐषीक अस्त्र विशेष अर्थात् रामचन्द्र ने काकरूप जयंत पर चलाया था वह अस्त्र२शीघ्र छोडा३इन्द्र अस्त्र की योजना करके४शेषावतार(लक्ष्मण) ने दुष्ट के अस्त्र को शीघ्र मारदिया५राक्षस ने६वह वायु अस्त्र मेघ बनकर वर्षा,परन्तु वे बाण अतिकाय के कवच का स्पर्श करके७भाले टूटकर पीछे ही गिरगये वहां पवन ने आकर८लक्ष्मण से कहा कि९आपने दूसरे उपाय क्यों किये॥२६॥ इसको आगे ११ ब्रह्मा ने अभेद्य १० कवच दिया था जिसके काटने का और उपाय नहीं है, ब्रह्म अस्त्र ही छोड १२ पवन के ये वचन सुनकर लक्ष्मण ने १३ इससे परिश्रम युक्त होकर भूतल के घर कांपने लगे और दशों दिशा में भयंकर अग्नि लगगई १४ विक्षेप करके ॥२७॥ १५ विभीषण सहित १६रावण ने कहा कि रामचन्द्र का बल आश्चर्य के योग्य और नहीं सहा जावे ऐसा है हमने अब उनको परमेश्वर माना है जिनके भय से लंका के१८दरवाजों के१७किंवाड़ जुड़े ही रहते हैं

प्रात१रु निसीथ२संध्या३समय कपिन परक्खहु कति असह ॥२८॥

दोहा

यह कहि बाहिर आसिरन, गो रावन निजगेह ॥
सुत भ्रातन मृति चिंति सुच, आन्यौं बहुरि अछेह ॥ २९ ॥

(षट्पात्)

जनक दीन निज जानि ज्वलन वढि बदिय इंद्रजित ॥
विलखहु तात न नैंक मोहि जीवत अरिष्ट इत ॥
विष्णु१रुद्र२रवि३सक्र४साध्य५अंतक६वैस्वानर७ ॥
को रक्खहि मम अग्ग सकल पिक्खहु अब संगर ॥
यह कहि अरोहि खर१२रथ अतुल कढ्यो लरन दससिरकुमर ॥
सहँसन अनेक वाहन सहित पुण्यंजनहु हुव पिट्ठिपर ॥ ३० ॥
गज१हय२रासभ३करभ४सर्प५विच्छिय६वृखदंसक७ ॥
वग्घ८सिंह९फेरव१०वराह११स्वापद१२सिखि१३हंसक१४ ॥
इत्यादिक बाहनन चले आरूढ निसाचर ॥
इनहिं आनि हुतभूमि सज्ज रक्खिय खल संगर ॥
ससुगंध१माल२चूत१जाल२सुभ हुतभुक हुंत कंटक करे ॥
सरपत्र१सस्त्र२कलितरु१सामिध२अयस्रुक१पटलोहित१धरे ॥ ३१ ॥

१आधी रात।२८।२शहर से बाहर रहनेवाले राक्षसों को यह कहकर, मरे हुए भाई और पुत्रों को याद करके अपार३शोक किया।२९।४आपने पिता को दीन जानकर५अग्नि के समान बढकर इन्द्रजित ने कहा६हे पिता कुछ विलाप मत करो। मैं जीवित हूं तब तक इधर७अशुभ नहीं होवेगा८इन्द्र९गणदेवता१०यमराज११अग्नि. ये मेरे सामने रामचन्द्र की कौन रक्षा कर सकेंगे?१२गधे जुते हुए रथ पर चढकर १३ हजारों राक्षस अनेक वाहनों पर चढे हुए इसके पीछे हुए॥३०॥ १४ ऊंट १५सर्प १६बीछू १७ बिल्ली १८ बघेरड़ा (सिंहविशेष) १९ स्याल २० कुत्ता अथवा वनपशु विशेष २१ मयूर २२ हंस, इत्यादिक वाहनों पर२३ चढकर राक्षस चले. इन सबको युद्ध के लिये तैयार करके२४होम करने की भूमि पर२५युद्ध करने को रक्खे और सुगंधि, माला, चून और जाल(काष्ठविशेष)२६अग्नि में सब हुए(इन्द्रजित्)ने२७होम और सरपत्र के स्थान में शस्त्र रख कर २८ [illegible] २९ [illegible] और ३० लोहे का लाल वस्त्र धरे।३१।

असित छाग गल१गहिय अनल पत्थरि सरपत्रन ॥
आहुति इक्क१हि लगत बढ्यो पावक प्रचंडपन ॥
अर्चि फिरिय अपसव्य गह्यो आवत हवि उद्वहि ॥
ब्रह्मअस्त्र खल तबहि चंड हुत किय सहाय चहि ॥
ताहिके मंत्र करि जप अतुल मंत्रे कंकट१चाप२रथ३ ॥
तिनसहित बहुरि मंडन तुमुल पिहित चढ्यो खल गगनपथ ॥३२॥
तस सहाय खिल तमकि कढे जुज्झन क्रव्यादन ॥
नभतैं खल तिन्ह कहिय होहु अरिसन हव्यादन ॥
कपिभय नैंक न करहु छकहु जयरस सब मोच्छत ॥
सु सुनि निसाचर सकल रूपे कपि नासकरन रत ॥
नव९सत्त७पंच५कपि घननिनद कढे इक्क१हि बानकरि ॥
इहिंगति असेस कटकहिं अडर भयदिन्नौं वपु बान भरि ॥ ३३ ॥
कपिन तजे गिरि कहि जंग किय अतुल सक्रजित ॥
दिय अट्ठारह१८पर्दैर गंधमादन१उर अंचित ॥
नलकैं१दिय नव९बान मैंद३उर सप्तक७मारिय ॥
भल्लुकपं४हिं दस१०भेदि पंच५करि गज५हिं प्रहारिय ॥
वपु नील६तीस३०घत्तिय बिसिख ब्रह्मदत्त बर अस्त्रवल ॥
सुग्रीव७ऋषभ८अंगद९द्विविद१०खंडितकिय अतिकोप खल ॥३४॥

फिर काले छाग (बकरे) का गला पकड़ कर सरपत्रों के ऊपर डाल कर अग्नि में डाल दिया इस एक आहुति के लगते ही प्रचंड अग्नि बढा और दाहिनी ओर ज्वाला बढकर हवि को ऊपर ही ग्रहण करलिया उस समय इन्द्रजित् ने ब्रह्म अस्त्र को उसमें होमा और उसीके मंत्रों का जप किया जिससे मंत्रेहुए कवच धनुष और रथ उस अग्नि में से निकले तिन सहित भयंकर युद्ध करने को गुप्त होकर आकाश मार्ग में चढा ॥ ३२ ॥ बाकी के राक्षस क्रोध करके उसके सहायक हुए जिनसे दुष्ट (इन्द्रजित) ने कहा कि शत्रु रूपी तृणों के अग्नि होजाओ १ मेघनाद ने, इसप्रकार सम्पूर्ण २ सेना को ३ निर्भय मेघनाद ने बानरों के शरीरों में बाण भरकर भय दिया॥३३॥४बाण५सुन्दर६रीछों के राजा जाम्बवान के७प्राण वाले(घुसेड़े)८ब्रह्मा के दियेहुए श्रेष्ठ अस्त्र के बल से ॥ ३४ ॥

इत्यादिक भट अखिलकुणप१कतिकतिक मूढ२करि ॥
सर१असि२पट्टिस३सूल४भयद बहुबरसि अनखभरि ॥
सानुज रघुपति सीस आनि बरख्यो पुनि आसुग॥ ॥
विविध वेध किय बीर जुत्त बिस्मय भ्राताजुग६ ॥
प्रभु कहिय अहो लक्खन लखहु अस्त्र ब्रह्म दारुन असह॥
हनि सबन मूढ करि तुमहमहिं उद्धत जैहैं दुष्ट यह॥३५॥
सहहु अज्ज सौमित्रि परख विक्रांत१भीरु२पन ॥
इतीकहत इंद्रजित घुमडि सरबुंद तजिय घन ॥
अगजंगमके ईस समर सानुज अचेत हुव ॥
अविभीखन१बज्रांग२धरनि सब मूढ गिरे धुव ॥
तब जय मनाय रावनतनय कंटक नैंर प्रबेसकिय ॥
इत आंजनेय१रावन अनुज२दुहुँन२रंग फिरि सोधदिय ॥३६॥

दोहा

दिनपंचम५लव खिल रहत, इम वासवजित एह ॥
सत्तसट्ठिकोटिन६७०००००००कपिन, गो मुख्यन हनि गेह ॥३७॥

(पद्धपात्)

उल्का कर गहि इतहिं बीर बज्रांग१विभीखन२ ॥

---

१ कितनों को मुर्दे और कितनों को २ मूर्छित करके ३ कटारी ४ छोटे भाई सहित रामचन्द्र के ऊपर ५ बाण. ६ रामचन्द्र ने कहा कि हे लक्ष्मण देखो आश्चर्य करानेवाला ब्रह्मअस्त्र सहन करने योग्य नहीं है, अन्य सबको मारकर मुझको और तुमको मूर्छित करके यह दुष्ट अनञ्च होकर जावेगा ॥ ३५ ॥ हे लक्ष्मण आज इस अस्त्र को सहन करो वीर और कायरों की यही परीक्षा है. चराचर के स्वामी युद्ध में छोटे भाई सहित अचेत होगये और विना विभीषण और हनुमान् के सब मूर्छित होकर भूमि पर गिरगये ७ नगर में गया, इधर ८ हनुमान् और विभीषण ने युद्ध भूमि में फिरकर सबका शोधन किया ॥ ३६ ॥ (अठारह निमेष नेत्र के पल मारने की एक काष्ठा और दो काष्ठा का एक लव हेमचन्द्र के मत से होता है ऐसे) पांच लव दिन बाकी रहते इसप्रकार इन्द्रजित सड़सठक्रोड़ मुख्य वानरों को मारकर घर गया ॥ ३७ ॥ अंगारे अथवा जलते हुए काष्ठ तथा मुसालें

मृत१जीवन२सुधि करन फिरे रनअजिर महामन ॥
निसातिमिरबिच निठ्ठि सकल मृत१मूढ२सम्हारे ॥
जांबवानढिग जाय यातु इम बचन उचारे ॥
भल्लुकअधीस तव असु भवुक गदित एह करि कर्णागत
मैं रच्छ कहिय असु खिल बिकल नैनन तोहि न लखिसकत ३८

(दोहा)

जातैं सुपज अंजना पुनि कृतार्थ पवमान ॥
कहहु बिभीखन सो ससुभ, मारुति जीवत वा न ॥ ३९ ॥

(षट्पात्)

कहिय बिभीखन केम लंघि रघुनाथ१सलक्खन२ ॥
तजि अंगद१सुग्रीव२पवनसुतमाँहिं प्रीति घन ॥
जंपियँ३ यह सुनि जांबवान जो वह असु धारत ॥
तो कुशपहु सब जियत नतो जियतहु मृतही मत ॥
यह सुनत आय मारुति निकट पुच्छिय रिच्छहिं परसिपय
तव कहिय वीर आवहु तुमहिं बिरचहु सवन बिसल्ल्य१भंय२॥४०॥
जावहु मारुति सर्जव लंघि गिरि तुंग हिमालय ॥
अग्ग कनकमय अद्रि ऋषभ१, कइलास ताँरमय ॥
दोउन१बिच है दीप्त इक्क१औषधगिरि उत्तम ॥

(चिरागें) हाथों में लेकर हनुमान् और विभीषण मरे जीवितों की सोध क-रने को रण के चौक में फिरे जाम्ववान के पास जाकर राक्षस (विभीषण) ने कहा कि हे रींछों के राजा! तेरे प्राण कुशल हैं? यह विभीषण का कहाहुआ सुनकर जांबवानने कहा कि मेरे कुछ ही प्राण बाकी होने से विकल हूं और नेत्रों से तुझको नहीं देखसक्ता॥ ३८ ॥ जिस पुत्र के होने से अंजना श्रेष्टसन्तानवाली हुई औरपवन भी कृतार्थ हुआ वह शुभ हनुमान जीवित है अथवा नहीं ॥३९॥ १रामचन्द्र और लक्ष्मण को छोड कर २हनुमान में तेरी अधिक प्रीति है३जाम्ब वान ने कहा कि जो हनुमान जीवित है तो ये मरेहुए भी सब जीते हैं नहीं तो जीते हुए भी मेरे विचार से सब मरे हुए हैं जब हनुमान ने समीप आ-कर पग स्पर्श करके पूछा तब जांबवान ने कहा कि हे वीर सबको साल र-हित और भय रहित करो ॥४०॥४शीघ्र५ऊँचापर्वत६सोने का पर्वत है७चांदी

तामैं औषध अखिल लेहु तिनमाँहिँ इतौसम ॥
संधानकरी१संजीवनी२वालि विसल्यकरनी३विदित ॥
चौथी४सुवर्णकरनी४उचित इन्ह लहि आवत बेग इत ॥४१॥
इक गिरि तब आरोहि उडिय मारुति अंबरमग ॥
पैठि गयउ वह पुहवि भयउ कंपित जवकरि जग ॥
ह्वै रविमग हिमवान१लंघि लखि ब्रह्मकोस२ बर ॥
रजतालय३सक्रगृह४रुद्रसरमोक्ष५पुरायपर ॥
हयग्रीव६दरस करजोरि करि निजबल छेकत गैनगत ॥
ब्रह्मसर७लखिय जहँ नित्य बहु वैवस्वत किंकर रहत॥४२॥
वज्र८ वैश्रवन९निलय सूर्यप्रभ१०सूर्य निबंधन११॥
ब्रह्मासन१२ लख लखिय रुद्रधनुथान १३महामन ॥
निरखि भूवलयनाभि१४गन सु नंदी१५गनेस१६गुह १७ ॥
बहु कन्याजुत विदित उमा१८सहत क्रीडासुह ॥
हिमवतसिला१९रुकइलास२०लखिकनककटकलखिऋषभ२१धर

(रूपे) का पर्वत है इन दोनों के बीच में औषधियों का पर्वत है उसमें सब औषधियां हैं जिनमें से तुम इतनी सी लेना कि एक तो सन्धानकरी (लगाते ही घाव को भर देनेवाली) दूजी संजीवनी (मरे हुओं को जिलानेवाली) तीसरी विशल्यकरणी (अंगों की पीड़ा दूर करनेवाली) और चौथी सुवर्णकरणी (घाव आदि से हुई विवर्णता को दूर करके अंग सुन्दर करनेवाली) इनको लेकर जल्दी आओ ॥ ४१ ॥ १ तब हनुमान एक पर्वत पर चढकर उडा वह पर्वत२भूमि में घुसगया २ सूर्य के मार्ग से हिमवान पर्वत को लांघ कर श्रेष्ठ४ब्रह्मकोश (स्थानविशेष) ५ रूपे का पर्वत ६ इन्द्र का घर ७ त्रिपुर के मारने को जिस स्थान पर महादेव ने बाण छोडा था उस पवित्र स्थान पर होकर८आकाश में गया ९ यमराज के सेवक रहते हैं उन को देखे ॥ ४२ ॥ फिर वज्र के अधिष्ठाता देवता रहते हैं उनको देखकर कुबेर का घर,सूर्य की कान्ति के समान कान्तिवाले सूर्यगणों के मिलने का स्थान, ब्रह्मास्त्र के अधिष्ठाता देवताओं के रहने का स्थान देखकर महादेव के पिनाक नामक धनुप रहने का स्थान और भूगोल का नाभिस्थान (प्राजापत्य स्थान)को देखा और नन्दीगण गणेश स्वामिकार्तिक और बहुत कन्या सहित पार्वती को क्रीड़ा करते देखा

इनदुहुँन२ बीच दीपित लखिय स्वसनंजात[1] औषध सिखर ॥४३॥
अर्थी[2] आवत लखि रु भये व्यवहित औषध सब ॥
रे गिरि दुष्ट उठाय तोहि लैहौं आक्खिय तब ॥
करि गर्जन अतिकोप गिरि सु उप्पारि हत्थ गहि ॥
आयउ मारुति अतुल चपल निज कटक मज्झ चहि ॥
सुंघाय प्रभुहिं[3] सानुज सकपि किय समस्त सबबिधि कुसल ॥
पहुँचाय सृंग तस थान पुनि बाहुरि प्रभु भिंटिय प्रबल।४४
कहिय तबहि कपिराज अहो रावन नहि आवत ॥
उल्का गहि सब अडर पुरी प्रबिसहु जयपावत ॥
सहँसन उल्का सुनत पकरि कपि रिच्छ धसे पुर ॥
दूजी२बेरहु जुद्ध करे गढ१गृह२हय३सिंधुर४॥
जातु[4]धहु सदार सहँसन जरे सत जोजन सुचि[5] रव सुनिय॥
रघुबरहु त्यौंहि निजधनु करखि कौंणप[6] घरघर बान किय॥४५॥
कुंभकरन सुत तबहि दुष्ट कुंभ१रु निकुंभ२दुव२॥
अपर[7] अकंपन१अरु प्रजंघ२यूपाक्ष३धीर धुव ॥
जिम सोनितदृग[8]४जातु सुभट इत्यादि दसानन ॥
पठये बहुरि प्रकुप्पि घेर पावक[9] आकुल घन ॥
तिन आय रचिय प्रभुदलं[10] तुमुल तँहँ अपुव्व अंगद लरिय।
तारेयँ काय[11] अंतर तबहि गदा अकंपन घोर दिय ॥ ४६ ॥

---

१ हनुमान ने ॥ ४३ ॥ २ याचना करनेवाले को आता हुआ देखकर सब औषधियां गुप्त होगईं ३ रामचन्द्र को छोटे भाई सहित वह जड़ी सुँघाकर वानरों सहित सबको कुशल किया. फिर उस शिखर को उसके स्थान पर पहुंचा कर पीछा आकर फिर रामचन्द्र से मिला ॥ ४४ ॥ सुग्रीव ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि रावण युद्ध करने को बाहर नहीं आता इसलिये सब मुसालें (चिरागें) ले ले कर निर्भय होकर पुरी में घुस जाओ ४ राक्षस भी स्त्रियां सहित हजारों जल गये उस ५ अग्नि का शब्द सौ जोजन तक सुना ६ राक्षसों के घर घर में बाण करदिये ।४५।७ दूसरा अकंपन ८ शोणिताक्ष नामा राक्षस ९ अग्नि के घेरे से बहुत व्याकुल होकर १० रामचन्द्र की सेना में भयंकर युद्ध ११ अंगद के शरीर में ।४६।

तस प्रहार लहि चेत अद्रि[1] डारिय इक१ अंगद ॥
कियउ अकंपन कुणप[2] मारि कौणप[3] असेस मद॥
सोनितदृग[4] तब असह दये अंगद विग्रह[5] सर ॥
छुर१छुरप्र२नाराच३वच्छदंत४रु बिपाट५वर ॥
बलिकर्णि६सिलीमुख७सल्ल्य८बहु ते सहि अंगद कुद्दि तव
रथ१चाप२बान३तस तोरि रन सूर धरनि डारे ति सब ।४७।
ढब्बि[6] तबहि असि ढल्ल रचिय सोनितलोचन[7] रन ॥
तहँ मलंगि तारेय[8] छिन्निलिय आसिहु बिचच्छन[9] ॥
फलक[10] तास तिहिँ फारि सूर मंडिय बरसंगर[11] ॥
सु लखि अयोमय[12] अरुननैन लिय घोर गदा कर ॥
ताकै प्रजंघ १ यूपाक्ष२दुव२हुव सहाय हरवल्ल[13] बढि ॥
अंगद सहाय मैंद१रु द्विबिद२पब्बयं डारिय विजयपढि।४८।
तब प्रजंघ तरवारि पकारि दोर्यो अंगदपर ॥
अस्वकरन[14] द्रुत इक्क हन्यो खल बपु बासवहर[15] ॥
बलि[16] मुट्ठिय यह बाहु अवनि डार्यो प्रजंघ असि ॥
खलहु मुट्ठि तब खिज्जि हनी अंगद ललाट हसि ॥
कछुकाल सहि रु लहिचेत क्रम कपि प्रजंघ सिर कट्टिलिय।
यूपाक्ष लखत भातृज[17] मरन रथसन कुद्दि कृपान[18] लिय।४९।

सचरणगद्यम्

तहाँ द्विबिदनैं यूपाक्षके उरमैं प्रहारकरि ताकौं दोहू२करनसौं गाढो गहिलयो ॥

---

१ पर्वत २ सम्पूर्ण राक्षसों का मद मारकर अकंपन को ३ मुर्दा करदिया ४ शोणिताक्ष ५ अंगद के शरीर में असह बाण दिये, "छुर से आगे लेकर शल्ल्य पर्यन्त बाणों के भेद हैं" ॥ ४७ ॥ ६ तरवार और ढाल को थाम (पकड़) कर ७ शोणिताक्ष ने युद्ध रचा ९ विचक्षण ८ अंगद ने कूद कर उस राक्षस की उस १० ढाल को फाड़कर ११ श्रेष्ठ युद्ध किया जिसको देखकर शोणिताक्ष ने १२ लोहे की बनी हुई १३ आगे बढ़कर ॥ ४८ ॥ १५ इन्द्र के पोते अंगद ने १४ अश्वकर्ण नामक वृक्ष की शीघ उस दुष्ट के शरीर में दी१६फिर१७भतीजे का मरना देखकर१८खड्ग लिया

तब भ्राताकौं पकर्‌यो निहारि सोनिताक्षहू द्विविदके उरमैं अनेक प्रहार करत भयो ॥

दूजीबेर[2] दुष्टनैं गदा उठाई देखि द्विविदनैं ताको बाहु मरोरि सो ही गदा लैकैं दोहू[2]दुष्टनकै प्रचुर[1] प्रहार मारे ॥

अरु लोहितनेत्रको[2] मुख नखरनसौं[3] बिदारि ताके अंगदै[4] पुहवी पैं पीसिडारे ॥ ५० ॥

द्विविदनैं ऐसैं लोहितनेत्रकौं हन्यौं देखि मैंदनैं यूपाक्षहू मारिलयो॥
अरु अवसेस[5] अनीक[6] छिन्नभिन्नहोय कुंभ१निकुंभ२के सरनगयो॥
भजी सेनाकौं बिस्वासदैकैं कुंभनैं द्विबिदकै एक१बान मार्‌यो॥
तासौं बिसेस बिव्हलहोय कपिकुंजरनैं[7] भूपति सम्हार्‌यो ॥ ५१ ॥

(दोहा)

मैंदहु लखि भ्रातहिं गिरत, दई सिला इक१डारि ॥
सोहु कुंभ तिच्छन सरन, दई सबेग बिदारि ॥ ५२ ॥
कुंभ दयो सर मैंदउर, यहहु पर्‌यो अनचेत ॥
मातुल[8] दुव२लखि मूढ[9] निज, अंगद कोप उपेतं[10] ॥ ५३ ॥

[रोला]

तबहि कुंभ सर तीन३पंच५नाराच[11] प्रहारिय ॥
सहि अंगद बहुसैल ढंकि[12] रक्खससिर डारिय॥
कट्टि गिरिन पुनि कुंभ बान अंगद भ्रूअंतर[13] ॥
दयें ति सहि अंगदहु कुप्पि तरुसाल लियउ कर ॥५४॥
आवत छेदि वहहु दयो हनि कुंभ सत्त७सर ॥
कुंभ बिसिख[14] सहि कलहँ[15] भयउ अंगद अचेत भर ॥

१ बहुत २ शोणिताक्ष के मुख को ३ नखों से ४ भुजबंध ॥ ५० ॥ ५ बाकी की ६ सेना ७ बानरों में हस्ति भूमि पर गिरगया ॥ ५१ ॥ ८ इसप्रकार अपने दोनों मामों को ९ अचेत देखकर १० अंगद कोप सहित हुआ ॥ ५३ ॥ ११ छोटे बाण जो चलते समय दृष्टि नहीं आते १२ कूदकर १३ भौंह के बीच में ॥५४॥ १४ कुंभ का बाण सह कर १५ युद्ध में

जांबवान मुख[1] सुनत राम पठये सहाय जब ॥
तेहु रुके सहि तीर भयउ सुग्रीव अग्ग तब ॥ ५५ ॥
मुक्के गिरि तरु अमित[2] कुंभ सब तेहु कट्टिदिय ॥
कुद्दि तवहि कपिराज कुंभ कोदंड[3] टूकक्किय ॥
बलि सिराहि बहुबेर कह्यो अवसर विक्रम करि ॥
कुद्दि सुनत यह कुंभ भुजन सुग्रीव लयोभरि ॥ ५६ ॥
करिय मल्लरन कछुक बहुरि कपिराज महाबल ॥
अर्णव[4]विच कुंभहिं पछारि पिक्खिय ताको तल ॥
परत सिंधु जल उफनि बढ्यो दिसदिस थल बोरयो ॥
कुंभ चेतलहि कुद्दि जंग आय रु पुनि जोरयो ॥ ५७ ॥
कपिपतिउर[5] तँहँ कुंभ मुट्ठि बज्रोपम[6] मारिय ॥
तिहिं प्रहार तस कवच तोरि बँपु[7] मर्म विदारिय ॥
तब सुग्रीवहु तमकि[8] कुंभउर मुट्ठि पातक्किय ॥
पापी तिहिं ताजि प्रान लोक आर्जित[9] पंद्धतिलिय[10] ॥ ५८ ॥
गहि निकुंभ तब परिघ चल्यो कपिपतिहिं प्रचारत ॥
बदन फारि अतिबेग मत्त गोचर[11] पर मारत ॥
परिघ उठावत पिक्खि धमकि अंबर१धर२धुज्जिय ॥
प्रखर[12] सोहि खलपरिघ उमगि मारुति[13] निज उरलिय ॥ ५९ ॥
लग्गत आनिल[14] बच्छ[15] टूकटूकन वह तुट्टिय ॥
मल्लपि[16] तवहि हनुमान दुष्ट उर मुष्टिघात दिय ॥
कछु खिन घुम्मि निकुंभ जाय पकरयो समीर[17]सुत ॥

१जांबवान आदि २ अगणित ३ धनुष को तोड़ डाला ॥ ५६ ॥ ४समुद्र में ॥५७॥५ सुग्रीव के उर में ६ वज्र की जिसको उपमा लगै ऐसी ७शरीर के मर्मस्थान को विदारण करदिया ८ क्रोध करके कुंभ के उर में मुष्टि मारी जिससे उस पापी ने ९ जैसे पाप कर्म इकठे किये थे तैसे ही लोक का १० मार्ग लिया अथवा लोक जिस मार्ग जाते हैं उस मार्ग गया अर्थात् मरगया ॥ ५८ ॥ ११जो दृष्टि में आवे उसी पर१२तीखा१३हनुमान् ने ॥ ५९ ॥ १४हनुमान् के१५हृदय में लगते ही१६कूदकर१७हनुमान् को

मारुति तव पुनि मुट्ठि दुष्ट[1] उर अतुल हनी द्रुतं[2] ॥ ६० ॥
इहिँ छ्तं[3] होय अचेत परत रक्खस गहि पीसिय ॥
कुट्टिकुट्टि तसकाय भिन्न मस्तक मरोरिलिय ॥
कौणप खट[4]कुंभादि हनैं इहिंगति नवमी[5]दिन ॥
सुनत धारि अतिसोक अधिक बिलप्यो रक्खसइनं[6] ॥६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचराडासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ विवाहवेलावर्णनविषयकब्रूध्नवंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ षष्ठपपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशजानकीजानिचर्यायामष्टम्या८ऽऽदिनवम्य ९ न्तरणवर्णनक्रव्यादमहोदर१ महापार्श्व २ सहितरावणपुत्रत्रिशिरा १ ऽतिकाय २ देवान्तक ३ नरान्तक ४ मरणाइंद्रजिद्ब्रह्मास्त्रव्याकुलससैन्यराघव २ मोहनहनुमदौषधपर्वताऽऽनयनसर्वप्रत्युज्जीवनकपिलङ्कादवदापननवमी९रणरात्रिप्रजङ्घ१ ऽकंपन२ यूपाक्ष ३ शोणिताक्ष ४ सहितकौम्भकर्णिकुम्भ १ निकुम्भ २ निपतनं द्विपञ्चाशत्तमो५२मयूखः ॥५२॥ आदितश्चतुर्णवतितमः ॥ ९४ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

१दुष्ट निकुंभ के उर में २ शीघ्र ॥६०॥ ३इस घाव से ४कुंभ को आदि लेकर राक्षसों को नवमी के दिन मारे ५ राक्षसों का राजा (रावण) ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पांचवीं पुत्र विकुक्षि कुल के कलश जानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में अष्टमी के अंत तक के युद्धवर्णन में राक्षस महोदर, महापार्श्व सहित रावण के पुत्र त्रिशिरा अतिकाय देवान्तक नरांतक का मरना, इन्द्रजित् के ब्रह्मास्त्र से व्याकुल होकर सेना और राम लक्ष्मण का मूर्छित होना, हनुमान् का औषधि के पर्वत को लाना, सब का फिर जीवित होना, वानरों का लंका में अग्नि लगाना, नवमी के युद्ध में राक्षस प्रजंघ, अकम्पन, यूपाक्ष शोणिताक्ष सहित कुंभकर्ण के पुत्र कुंभ निकुंभ को मारने का बावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥ और आदि से चौरानवे मयूख हुए ॥ ९४ ॥

(षट्पात्)

सुनि मृत सोदर सुतन सोचि कछु पुनि प्रकुप्पि सठ ॥
पिल्ल्यो तब खरपुत्र हनन मकराक्ष महाहठ ॥
करि प्रनाम धँकि कढिय दै सु लंकेस प्रदक्खिन ॥
चढि रथ हंकिय चंड दिसन मंडत रज दुर्दिन ॥
गिरिगय प्रतोद तस सूतकर ध्वजहु तुट्टि छोनियँ ढरयो ॥
हतसत्व हयहु जानुन जकिय यह कुसोनहु न अदरयो ।१।

(दोहा)

यह कुसोन सु न आदरयो, अच्युत दल पुनि आय ॥
रच्यो सतत मकराक्ष रन, बान निकर बरसाय ॥ २ ॥

(षट्पात्)

प्रहरन जातुन पाय भीत कपि कटक चल्यो भाजि॥
व्है तब राम हरोल संघ सत्रुन अटक्यो साजि ॥
देखि प्रभुहिं तिहिं दुष्ट कहिय दुरि दंडक काननं ॥
जव मारयो खर जनक अज्ज प्रविसहु सुत आनन ॥
अभ्यस्त सस्त्र जो तव असह सोहि चलावहु सत्रुसिर॥
प्रभुकहिय व्है न बैनन समर अस्त्रतजहु करि रनअजिर ॥३॥
राम वचन मकराक्ष सुनत मुक्किय अनेक सर ॥
कोसलेस तिन्ह कट्टि अप्प मुक्किय खल उप्पर ॥

२अपने भाई और पुत्रों को १ मरेहुए सुनकर ३ खर के पुत्र मकराक्ष को भेजा ४ क्रोधित होकर निकला ६ उसके सारथि के हाथ से५चाबक गिरगया ७ ध्वजा तूटकर भूमि पर गिरगई ८ पराक्रम रहित होकर घोड़े भी घुटनों के बल गिरगये ९ इन अपशकुनों को भी नहीं माना ॥ १ ॥ १० रामचन्द्र की सेना में आकर ११ निरंतर १२ बाणों का समूह वर्षाकर ॥ २ ॥ १४ राक्षसों के १३ शस्त्र पाकर १५ शत्रुओं के समूह को रोका १६ दंडक वन में छिपकर १७ मेरे पिता खर को मारा था उसीके पुत्र के १८ मुख में आज प्रवेश करो, जो तुम्हारे१९अभ्यास कियेहुए असह शस्त्र होवें वह चलाओ २० रामचन्द्र ने कहा कि वचन से २१ युद्ध नहीं होता इस २२ युद्ध के अखाड़े में युद्ध करके अस्त्र छोड़ ॥३॥

खलहु प्रंदर[1] ते खंडि कियउ अद्भुत अतिसय करि ॥
तब प्रकुप्पि दै तीर हरिहु[2] तस चाप लयो हरि[3] ॥
पुनि मुक्कि अट्ठ८नाराच प्रभु सूत१तुरग २रथ३संहरिय ॥
खरपुत्र तबहि सिवदत्त[4] खर[5] धकि त्रिसूल निजकर धरिय।४।
वहहु कट्टि[6] अखिलेस अधिक सोहिय रन अंगन ॥
मुट्ठि बंधि मकराच्छ समुख दोरयो जब हठसन ॥
पावक[7]अस्त्र प्रयोग बिरचि तब राम बानदिय ॥
अहै दसमी१० मधु[9]असित लरत खरतनय प्रानलिय ॥
दससीस सुनत करि सोक द्रुत[10] पीसि रदन[11] अतिसय कुपित ॥
हठि[12] तनय राम१लक्खन२हनन जेठो[13] पिल्लिय इंद्रजित ।५।
बारिदरव[14] तब सविध ज्वलन[15] किय हवन[16] पुब्ब[17] जिम ॥
पग्घ[18] अरुन धरि प्रकट तत्थ तियजनहु गये तिम ॥
सुचिहु[19] पुब्ब सम सकुन दये उठि अर्चि[20] प्रदक्खिन ॥
चउ४हय रथ तब चढिय असह रावनकुमार इन[21] ॥
किय बहुरि नैर[22] बाहिर कढि रु रक्खस मंत्रन[23] हव्यहुत ॥
पुनि पिहित[24] होय आय रु परिग[25] सर बरखत दसतुंड[26]सुत ॥६॥
खल व्यवहित[27] रहि खमग[28] रघुप[29] बेधे दुव२रोपन[30] ॥

१उन तीरों को काटकर२रामचन्द्र ने भी३उसका धनुष काट दिया ४महादेव का दियाहुआ ५ तीखा त्रिशूल हाथ में लिया॥४॥ ६ रामचन्द्र उसको भी काटकर७अग्नि अस्त्र का प्रयोग करके९चैत्र बदि दशमी के८दिन१०शीघ्र११ दन्त पीसकर अत्यन्त कोप में होकर हठ करके राम लक्ष्मण को मारने के लिये १३बडे१२पुत्र इन्द्रजित को भेजा॥५॥तब१४मेघनाद ने१५अग्नि में१७पहिले किया था उसी माफिक१६होम किया१८इन्द्रजित लाल रंग की पाघ धारण करके गया और इसीप्रकार स्त्रियां भी वहां पर गईं १९ अग्नि ने भी पहले के समान दहिनी ओर २० ज्वाला (झाल) उठाकर शकुन दिये २१कुमरों का सूर्य २२ नगर के बाहर निकल कर २३ मंत्रों के साथ हव्य को होमा फिर २४ छिपकर बाणों की वर्षा करता हुआ२६दशमुख का पुत्र(मेघनाद)रामचन्द्र की सेना पर२५गिरा।६।उस दुष्ट ने२८आकाशमार्ग में२७गुप्त रहकर२९राम लक्ष्मण को३०बाणों से बेधे और अत्यन्त कोप से बंदर और रीछों को मारा।

मारे रन तिम अमित कीस१मल्लुक२अतिकोपन ॥
लक्खनँ अक्खि सु लक्खिय प्रभुहिँ सासनँ[2] तवपाऊँ ॥
ब्रह्मअस्त्रकरि अवहि निखिल[3] अंत्याद नसाऊँ ॥
प्रभु कहिय इक्क१ अपराधपर कुल रक्खस उचित न कंदन[5]
इहिँ हननजतन करिहैं अपर रावनसुत वचिहैं न रन ।७।
प्रभु आसय यह पिक्ख स्वपुर घननादँ प्रवेसिय ॥
मायामय सीता बनाय निजरथ चढाय लिय॥
खल तिहिँ राघव लखत हनन निकस्यो लंकासन ॥
सहँसन कपि तव समुख जुरे मारुतिमुख जुज्झन ॥
मैथिली लखत अनिल दुमन लग्गो सोचन कष्टलहि ॥
तँहँ दुष्ट हनन रघुवरतियहिँ गहिय खग्ग कच तास गहि॥८॥
रामराम वह रटिय मलिनपट१वपु२मायामय ॥
अनिलसुतहु तव अंसु डारि अक्खिय रे निर्दय ॥
अबला यह किम याहि हनन तेरी मति होवत ॥
स्त्रीघातिन जे लोक रोक सहिहै तँहँ रोवत ॥
इन्द्रजित कहिय हनि याहि अब जवकर लैहौं सवन जिय
तियघात पाप हनि ताडका क्यौं नहिँ चिंतन राम किय॥९॥

१लक्ष्मण ने यह देखकर रामचन्द्र से कहा कि आप की २ आज्ञा होवे तो ब्रह्मास्त्र से ३ सम्पूर्ण ४ राक्षसों का नाश कर दूं, रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि एक के अपराध से सब कुल का नाश करना उचित नहीं इसके मारने का कोई दूसरा उपाय करेंगे ॥७॥ ५ मेघनाद ने लंका में जाकर ६ हनुमान् आदि ७ सीता को देखकर हनुमान् उदास हुआ, विचारने लगा कि क्या कियाजावे इतने में ही दुष्ट मेघनाद ने सीता के केस पकड़कर खड्ग लिया ॥ ८ ॥ हनुमान् ने आंसू डालकर कहा कि अरे निर्दय यह स्त्री है इसको मारने को तेरी बुद्धि कैसे होती है स्त्रियों के मारनेवालों के लिये जो लोक हैं तहां जाकर रोताहुआ कैद भुगतेगा, इन्द्रजित् ने कहा कि इसको मारकर शीघ्र ही तुम सब के जीव लूंगा और ताड़का को मारते समय रामचन्द्र ने स्त्री मारने का पाप क्यों नहीं याद किया ॥९॥

कहि इम रावनकुमर धार सित[1] असि उठाय ध्रुव ॥
दै उपबीत उतार मारि भुवजा[2] डारी भुव ॥
यह लखि घोर अनर्थ भीत प्रतिमुख कपि[3] भज्जिय ॥
मारुति तिनकहँ मोरि जुरन अग्रेसर गज्जिय ॥
सयँ[4] निज उठाय महती सिला दसासिरसुत सिर मुक्किदिय
वह टरयो सरथ तब हनि इतर[5] क्रव्यादन[6] छिति[7] गोन किय। १०।
कपिहत[8] लखि निज कटक जुरयो दुद्धर बासवजित[9] ॥
करि इक्कत निजकीस[10] अनिलअंगज[11] अक्खिय इत ॥
जिहिं निमित्त[12] सब जुरत सती सीता सु हनी सठ ॥
सब यह प्रभुहिं[13] सुनाय हुकम सद्दहु उद्धत हठ॥
निज गुल्म[14] सुभट समुझाय इम प्रभुढिग आयउ पोनसुव[15] ॥
इन्द्राजित गयउ उत हवनथल भल निकुंभिला नाम भुव।११।

दोहा

रावन तनय निकुंभिला, ज्वलन किन्न हुत जाय ॥
हव्य गिरत वह तुष्ट हुव, बहुबिध अर्चि बढाय ॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

१तीखे खड्ग को निश्चय ही उठाकर जनेऊ उतार दिया(एक कंधे पर तरवार मार कर शरीर को तिरछी दो चीर करदेने को जनेऊ उतारना कहते हैं) और २ भूमि से पैदा हुई (सीता) को भूमि पर डाल दी ३ बन्दर पीछे भागे उनको हनुमान ने उलटे मोड़ कर युद्ध करने को आगे होकर गर्जना की. ४ अपने हाथ में बड़ी शिला उठाकर ५ दूसरे ६ राक्षसों को मारकर७ भूमि पर गई ॥ १० ॥ ८ बानरों से अपनी सेना को मरी देखकर ९ इन्द्राजित१० अपने बंदरों को इकट्ठे करके ११हनुमान ने कहा कि जिसके१२कारण सब लड़ते थे उस सीता को तो मूर्ख इन्द्रजित ने मारडाली यह१३ रामचन्द्र को सुनाकर जैसा वे हुक्म देवें वैसा करो इसप्रकार अपनी १४सेना के वीरों को समझाकर १५ हनुमान रामचन्द्र के पास आया ॥ ११ ॥ और इन्द्रजित ने निकुंभिला नामक स्थान में जाकर अग्नि में होम किया सो होम का पदार्थ भीतर पड़ते ही बहुत प्रकार की ज्वाला बढाकर वह अग्नि प्रसन्न हुआ ॥ १२ ॥

सुनि इत दोउन्न समर जांबवानहिं प्रभु जंपिय ॥
सबल इंद्रजित संग कलह हनुमान घोर किय ॥
यातैं भल्लुक्रईस देहु ताकँहँ सहाय द्रुत ॥
यह गय पच्छिम पोरि[2] जत्थ हनुमान अरिन जुत ॥
करि मंत्र वह जु पँहिलैं[3] कह्यो मिल्यो बज्रबपुं बाहुरत ॥
अंजनातनय[4] रिच्छन अधिप[1] प्रभु ढिग मिलि आये प्रनत॥१३॥

दोहा

प्रभुसौं अक्खिय पोनसुत, सठ चढाय रथसत्थ ॥
सीता[5] कच गहि सक्राजित[6], अज्ज[7] हनी सु अनर्थ[8] ॥ १४ ॥
हमबिह्वल देखतरहे, बने न बिपति बिदार ॥
माता मारी दुष्ट दैं, असि[9] उपबीत[10] उतार ॥ १५ ॥

(षट्पात्)

सुनत बज्र[11] सिर परिग गिरे राघव[12] भुव रोवत ॥
कपिबर सीतल सलिल[13] लगे सिंचन श्रम खोवत ॥
इक्खिं[14] बिबस अग्रजहि किन्न लक्खन आलिंगन ॥
कहिय धर्म आगम प्रमेय निरख्यो सु है हि नन ॥
होतो जु धर्म्म तो धर्मरत तुम यह व्यसन न पावते ॥
होतो अधर्म तो कुलसहित पापहिं नरक पठावते ॥ १६ ॥

(दोहा)

१हे रीछों के राजा! २पश्चिम द्वार पर ३ऊपर कही हुई सलाह करके ४हनुमान पीछा आता हुआ मिला॥१३॥ ५सीता के केस पकड़कर ६इन्द्रजित ने ७आज मार-डाली सो ८अनर्थ हुआ ॥१४॥ ९ तरवार को देकर १०जनेऊ उतार दी॥१५॥ ११ यह सुनते ही मानों मस्तक पर वज्र पड़ा १२रामचन्द्र रोते हुए भूमि पर गिर गये १३ठंढे पानी से १४बड़े भाई को विवश देखकर लक्ष्मण ने उनको भुजों में भरलिये और कहा कि धर्म शास्त्र के प्रमाण से देखा सो धर्म है ही नहीं जो धर्म होता तो धर्म में प्रीति रखनेवाले आप यह दुःख नहीं पाते और जो संसार में अधर्म होता तो कुल के सहित पापी (रावण) को नरक

धर्म१ अधर्म२ उभैं२न धुव, यह दृढ जानी अज्ज ॥
प्रभु१ जासौं कंकट परे, सकुल दसानन२ अज्ज ॥ १७ ॥
भुग्गैं विभव अधर्म रत१, विपति धर्म रत२ लेत ॥
अज्ज किये मोघ सु उभैं२, खल सीता हनि खेत ॥ १८ ॥
धर्म हुतो जो सत्यमय१, ततो अनृतमय२ तात ॥
बखसि राज्य काढत बिपिन, बंध्यो क्यौं न विघात ॥ १९ ॥
अग्रज ममसत धर्म यह, सत्त७हि प्रकृति समर्थ ॥
तज्यो तुम सु राज्यहिं तजत, ओड्यो व्यसन अनर्थ ॥ २० ॥
वासवजित डारी विपति, पुण्यरहित अघपूर ॥
उट्ठि निहारहु अप्प अब, दास करत तिहिं दूर ॥ २१ ॥
इम नरलीला अनुसरत, उभय२भ्रात अकुलाय ॥
चउ४सचिवन संजुत चाथि, इहाँ बिभीखन आय ॥ २२ ॥

(षट्पात्)

अनुज अंक आकुलित विक्खि रघुवरहिं बिभीखन ॥
कहिय सोक जिन करहु खलहिं जानहु मायाधन॥

भजता ॥१६॥ धर्म और अधर्म दोनों ही नहीं हैं यह आज निश्चय जानागया कि जिसमे हे प्रभु! आप तो सुख को काटकर " कं सुखं कटतीति कङ्कटः" पड़े हो और रावण आज कुल सहित है ॥ १७ ॥ दुष्ट इन्द्रजित् ने सीता को मारकर धर्म और अधर्म दोनों को आज झूठा कर दिया ॥ १८ ॥ सत्यमई जो धर्म होता तो पिता ने झूठमई (जिसको नहीं मिलता था उसको) राज्य देकर आप को वन में भेजते समय उसको क्यों नहीं मिटाया ॥ १९ ॥ हे भाई साहिब! मेरे विचार से सातों प्रकृति (राजा आदि राज्य के सात-अंगों) सहित अपने बड़े राज्य को छोड़ने के साथ ही धर्म को छोड़कर आप ने दुःख अनर्थ को धारण किया है ॥ २० ॥ इन्द्रजित् ने पुण्य से रहित पाप की भरीहुई विपत्ति डाली है उसको आप का सेवक दूर करता है सो उठकर देखो ॥ २१ ॥ इसप्रकार मनुष्यलीला करतेहुए दोनों भाई अकुला रहे थे वहां अपने चारों मंत्रियों सहित विभीषण ने आकर कहा ॥ २२ ॥ छोटे भाई की गोदी में व्याकुल हुए रामचन्द्र को देखकर विभीषण ने कहा कि शोक मत करो इन्द्रजित को मायाधन(माया ही है धन जिसके ऐसा)जानो-

सीताहिं न लखिसक्कत आनि मारन कितीक यह ॥
करि मोहित कपिकटक[1] इष्ट[2] सद्धन पहुँच्यो वह ॥
इक१चैत्य[3] जनन१होमन२उचित थिरनिकुंभिला जागथल ॥
रक्खित सु जातु[4] सहँसन रहसि बासवजित गो तहँ प्रबल ॥२३॥

(दोहा)

जो अब होमहिं इन्द्रजित, बिनु प्रत्यूह[6] बनाय ॥
तो अमरनँजुत अप्पतैं, जिस्यो दुष्ट न जाय ॥ २४ ॥
खोजैं मोहित राम खिन, इम माया रचि एह ॥
होमकरन दुष्ट सु पिहित, गो निकुंभिला गेह ॥ २५ ॥
हवन तास पूरो न व्है, तोलौं भेजहु तत्थ ॥
कर्मबिगारन दुष्टको, सौमित्रिहिं हमसत्थ ॥ २६ ॥

(षट्पात्)

वत्त सुनत यह वीर लघुहि[11] पठयो प्रभु लक्खन ॥
जांबवान१हनुमान२भये संगहि रिपुभक्खन ॥
अंगद१रावनअनुज२जैवी[12] कोटिन दलसंजुत ॥
गये जहाँ अतिगूढ सविधि होमत रावनसुत ॥
रच्छक तदीय बहु रात्रिचर देखत लक्खन बानदिय ॥
सर१सक्ति२कुंत३असि४तिनहु सजि क्रमि सम्मुह[13] घमसान किय२७
निज बर्ल[14] सीदत निरखि खिज्जि असमाप्त हवन खल ॥

यह सीता को देख भी नहीं सक्ता है मारना तो कितनी बड़ी बात है १ वानरों की सेना को इसप्रकार मोहित करके यह अपना२प्रिय कार्य साधने को गया है ३ ऋत्विजों के होम करने का उचित यज्ञस्थान जिसका निकुंभिला नाम है ४ हजारों राक्षसों से रक्षा कियाजाता है वहां पर प्रबल ५ इन्द्रजित् गया है ॥ २३ ॥६बिना विघ्न के इन्द्रजित् होम बनालेवेगा तो वह दुष्ट ७ देवताओं सहित आप से नहीं जीतने में आवेगा ॥ २४ ॥८ जगन्नाथ मूर्छित हुए रामचन्द्र को देखेंगे तब तक मैं होम कर लूंगा यह विचार कर ९ छिपकर ॥ २५ ॥ १० लक्ष्मण को हमारे साथ भेजो ॥२६॥११ शीघ्र ही भेजा १२ वेगवान् क्रोड़ों सेना सहित उस होम की रक्षाकरनेवाले राक्षसों को देखते हो १३ सामने चलकर युद्ध किया ॥२७॥१४ अपनी सेना को

उठि स्यंदन आरोहि चल्यो सम्मुह जव चंचल ॥
सल्लपि तत्थ हनुमान जातु सहँसन मारि जव॥
निरखि ताहि घननाद तक्कि आक्खिय सूतहिँ तब ॥
मारुति समीप लै रथ चलहु सारथि तँहँ लैगो सुनत ॥
सस्त्रहु अनेक मुक्के ति सब हनुमानहु किय प्रेतल हत ।२८।
कंटकपुत्तहिँ कहिय पवनअंगज अभीतपन ॥
जो रावनसनजात रंग तो मोहि देहु रन ॥
जीवत अब जैहो न लरत आसुगपुत्तहिँ लहि ॥
कुप्पि खलहु कोदंड चंड लिय हनन वाहि चहि ॥
लखि ताहि विभीखन लक्खनहिँ बढि सु दिखायउ होमवन
न्यग्रोध इक्क घननीलनिभ जँहँ सहव्य दीपित ज्वलन ॥२९॥

(दोहा)

कहिय विभीखन लक्खनहिँ, यह न्यग्रोध उदार॥
यँहँ भूतनहित इंद्रजित अप्पत बलि उपहार ॥ ३० ॥
बनि यातैँहि अदृष्टवपु, पीछैँ लरत प्रचारि ॥
जाय न तँहँ घननाद जिम, रचहु अप्प तिम रारि ॥ ३१ ॥

(षट्पात्)

सुनत चाप सौमित्रि कराखि आश्रुति टंकारिय ॥
रावनसुतसन रारि मंगि सायक बहु मारिय॥
तबहि विभीखन तत्थ परयो घननाद दिठ्ठिपथ ॥

कांपती हुई देखकर यज्ञ को समाप्त किये विना ही उठकर रथ पर चढ़कर वेग में चंचल होकर चला अपने सारथि से कहा कि हनुमान के समीप रथ लेचल १ धपड़ से उन शस्त्रों का नाश कर दिया ॥२८॥ २ कंटक (रावण) के पुत्र से ३ पवन पुत्र (हनुमान) ने निर्भय होकर कहा कि तू रावण से ४ उत्पन्न है तो इस रंगभूमि में मुझे युद्ध दे (मुझ से युद्ध कर) ५ पवन के पुत्र से लड़कर जीवित नहीं जावेगा. विभीषण ने ६ लक्ष्मण को ७होम का वन दिखाया वहां पर नीले मेघ के ९ सदृश एक ८ बड़ का वृक्ष है वहां पर १० हव्य सहित ११ अग्नि प्रदीप्त होरहा है ॥ २९ ॥ १२ बलि की सामग्री ।३०। १३ शरीर को अदृष्ट करके ॥ ३१ ॥ १४ कान तक खींचकर १५ बाण मारे

बुल्ल्यो तिहिँ खल कुबचँ दुष्ट हुव तूहि रामरथ ॥
उपज्यो१वढ्यो२रु सिक्ख्यो३इहाँ घर हरिमंथक घोर घुन[४] ॥
यहँ आय पाप पुत्रहिँ हनन देत बिरूयँ बनि अपसउन ॥३२॥

(दोहा)

तातैं जाति१न बंस२तव, हित३न बंधुपन४होहि ॥
अरि बनि तू दससिर अनुज, मार्यो चाहत मोहि ॥ ३३ ॥

(षट्पात्)

कहिय बिभीखन कुटिल दोख मोसिर किम डारत ॥
होत पापरत हेय प्रथित यह निगम पुकारत ॥
निलय[११] प्रज्वलित निरखि कढत को नहि हितकारक ॥
अब निज कृत फल उदित मुदित लक्खन यह मारक[१२] ॥
सुनि यह सुनाय घन खल सबन बुल्ल्यो जियत न जायहो ॥
[१३]सौमित्रि कहिय बैनन स्वबल वदिहैं जबहि बतायहो ॥३४॥
वासवजित[१४] सुनि बहुत बिसिख[१५] लक्खन उर बेधिय ॥
सिंहनाद करि सजव[१६] कटुक[१७] बच पुनि प्रमुक्त किय ॥
खत्रबंधु[१८] खल राम मूढ भ्रातहिँ लखिहैँ मृत ॥
लक्खन अक्खिय लज्ज रंच तव नाँहिँ कहाँ ऋत ॥
सठ छुद्र छोरि बानीसमर क्यों न दिखावत सस्त्रकरि ॥
इम अक्खि पंच५नाराच दिय क्रव्याद[११] उर कोपभरि ॥ ३५ ॥

---

१६ तहां १७ मेघनाद की दीठ पड़ी १ खोटे वचन बोला २ रामचन्द्र को लानेवाला ३ घर रूपी चिणे का भयंकर ४ घुण ५ नकटा होकर ६ अपशकुन देता है ॥ ३२ ॥ ७ हे रावण के छोटे भाई जो पाप में रत होता है वह८छोडने योग्य (त्याज्य) होता है यह१०वेद ६ प्रसिद्ध कहता है ? ११घर को जलता हुआ देखकर अपना हित करनेवाला उसमें से कौन नहीं निकलता है?१२मारनेवाले. लक्ष्मण[१३] ने कहा कि वचनों से अपना बल बताता है उसी माफिक बतावेगा जब मानूंगा (जब तुझको वीर मानूंगा) ॥३४॥ १४इन्द्रजित ने यह सुनकर बाणों से शीघ्र कड़वा वचन बोला. नीच क्षत्रिय दुष्ट और मूर्ख रामचन्द्र अपने भाई को मराहुआ देखेंगे. लक्ष्मण ने कहा कि मैं सत्य कहता हूं कि तुझको कुछ भी लज्जा नहीं है हे नीच मूर्ख वचन का युद्ध

इंद्रजितहु तव अनखि सेसवपु[2] हनिय तीन३सर ॥
तव लक्खन ज्याघात[3] ध्वान परिय धरअंबर ॥
वासवजितको बदन जाहि सुनतहि बिवर्ण हुव ॥
कहिय बिभीखन सकुन भले अब खल गिरिहै भुव ॥
सुनि सेस बहुरि दिन भूरि[4] सर खल हुव मूढ मुहूर्त[5] मित ॥
लहि भान बहुरि रिपु लक्खनहिँ जुज्झत बुल्लिय इंद्रजित॥३६॥
अग्गैं सोदर[6] उभय२अवँनि[7] सरबंधि लटाये[8] ॥
यहै स्मृति न तो अबहु चक्खि मम प्रदर[9] चलाये ॥
इम कहि लक्खन अंग सप्त७मारे सठ सायकँ[10] ॥
सतक१००बिभीखन अंग दसक१०मारुति[11] उर घायक ॥
लखि एह हसि रु लक्खन कहिय रन ऐसो भीरुहु[12] रचत ॥
पुनि काटि कवच ताको प्रखर[13] दिय बहु आसुग[14] रारि रत ।३७।
तबहि इंद्रजित तमकि सेस कवचहु द्रुत कट्टिय ॥
दोउ रन अति छतं[15] देह तदपि[16] कोउ न लाँचि[17] लट्टिय[18] ॥
एकादसि दिन अस्त भयो इम लरत महाभर[19] ॥
निसँ[20] आगम नहिँ मुरिग[21] जुरिग पुनि समर संधि सर ॥
निस लरत भयो द्वादसि१२दिवस तदपि मुरे नहि लरन तकि
ससचिव[22] सिराहि रावनअनुज[23] लर्‍यो यहहु रसबीर छकि।३८।

छोडकर.१९राक्षस के उरमें ॥३५॥ २लक्ष्मण के शरीर में ३ धनुष की प्रत्यंचा के आघात से भूमि और आकाश को शब्द से पूर्ण करदिया जिसके सुनते ही इन्द्रजित् का मुख फीका पड़गया ४बहुत बाण दिये ५ दो घड़ी तक हुष्ट मूर्छित होगया ॥ ३६ ॥ ६ पहिले दोनों सगे भाइयों को बाणों से बांधकर ७ भूमि पर ८ लुड़ादिये (लुढका दिये) थे यह याद नहीं है तो अब भी मेरे चलाये हुए ९ बाणों का स्वाद चख१०बाण११हनुमान् के उर में मारे१२ ऐसा युद्ध तो कायर भी करते हैं१३तीखे १४बाण दिये ॥ ३७ ॥ दोनों के शरीर बहुत१५घाव युक्त होगये१६तोभी १७ नमकर कोई १८ पीछा नहीं फिरा १९ बड़े भार सहित एकादशी का दिन अस्त हुआ और २० रात्रि आजाने पर भी २१ नहीं मुड़े २२ अपने मंत्रियों सहित लक्ष्मण और इन्द्रजित् की प्रशंसा करके २३ विभीषण भी लड़ा ॥३८॥

भल्लुकपति निज भटन सहित मारे बहु रक्खस ॥
सेसहिं पिट्ठि चढाय लर्‌यो मारुति तिम लै जस ॥
खलहु विभीखन तजि रु बहुरि लक्खन सन जुज्झिय ॥
दोउन२ दाव दिखाय हत्थलाघव अपुव्व किय ॥
सर लैन१ जुरन२ तक्कन३ खिचन४ छोरन५ लग्गन६ परसपर॥
कोउ न निहारि इनकौं सकिय किय इम नर१ रक्खस२ समर। ३९।
द्वादसि१२ दिन पुनि अस्त भयउ हुव रत्ति भयंकर ॥
रुधिर नदी जवँ जोर चली बढि विविध दिगंतर ॥
न तँहँ पवन संचरिय नत्थि प्रजरिग तँहँ पावक ॥
लोकन मंगल होहु बंदिय पुनि सदय स्वभावक ॥
सौमित्रि तबहि रिपु चउ४ हयन हुलासि च्यारि४ सायक हनैं ॥
तस सूत मारि इक१ भल्ल करि दये विसिखैं खलकै घनैं॥ ४० ॥
रथि१ सारथि२ पन उभयैं२ बिरचि तब जुरिग इंद्रजित॥
इहिं अंतर बहु विसिख सेस पुनि हनिय सुरनहित ॥
खल तिनसौं हुव खिंन्न लखि सु चउ४ कीसँ चलाये ॥
रभस१ प्रमाथी२ सरभ३ गंधमादन४ इत आये॥
इक१ इक१ महारि इक१ इक१ तुरंग मारि चउ४ हि पटके धरनि॥
रथ तोरि कियउ रक्खस पदग उग्गिय इम तेरसि१३ तरनि। ४१।
तबहि इंद्रजित कहिय सत्थ अप्पन क्रव्यादन ॥
मैं जावत पुरमज्झ अपर स्यंदन चढि आवन ॥

---

१ जाम्बवान २ लक्ष्मण को पीठ पर चढाकर ३ हनुमान् लड़ा ४ मनुष्य (लक्ष्मण) और राक्षस ने ५ युद्ध किया ॥३९॥ ६ भयंकर रात्रि हुई ७ वेग के साथ ८ नतो वहां पवन चल सका और ९ न अग्नि जला और दया के स्वभाव से लोकों ने १० कहा कि मंगल होओ ११ लक्ष्मण ने १२ बाण मारे १३ बाण दिये ॥४०॥ तब रथिपन और सारथिपन १४ दोनों कार्य स्वयं आप करके इन्द्रजित् लड़ा १५ देवताओं का कल्याण करने के लिये १६ विकल १७ चार वानर १८ एक एक घोड़े को एक एक ने मारा १९ इन्द्राजित् को पैदल करदिया इसप्रकार त्रयोदशी २० सूर्य उदय हुआ ॥ ४१ ॥ २१ अपने साथ के राक्षसों से इन्द्रजित् ने कहा २२ दूसरे २३ रथ पर चढ कर आने के लिये मैं पुर में जाता हूं,

तौलौं तुम इत लरहु बहन्न देहु न सत्रुन बल ॥
यह कहि पत्तन[1] जाय चढिग रथ हयन चलाचल[2] ॥
आयउ बहोरि आहव अजिर[3] सहँसन बानर संहरिय ॥
सौमित्रि तबहि दै बान सित[4] कार्मुक[5] तस खंडन करिय॥४२॥
अपर चाप खल गहिय सोहु कट्टिय रघुनंदन ॥
अरिउर आसुग[6] पंच५दये अति प्रखर[7] महामन[8] ॥
सोन[9] वमत सक्रजित[10] इतर[11] धनु पुनि कर झल्लिय ॥
बरखि अजिह्मग[12] बिंदु घात लक्खन[13]वपु घल्लिय ॥
दुट्टके काट्टि ते सब प्रदर[14] रामानुज[15] अद्भुत रचिय ॥
सबरिपुन खोजि त्रय३त्रय३बिसिख[16] द्रुत[17]करि इक१इक१देहदिय४३
तदनंतर बहुतीर सक्रजितके दिय लक्खन ॥
आये जे सब अडर[18] प्रदर[19] कट्टे परपक्खन ॥
बहुरि सक्रजित सूत[20] मारि पटक्यो महिमंडल ॥
फिरनलगे आवर्त[21] वाजि[22] नेता[23]विनु विह्वल ॥
ते हयहु करे घायल त्वरित तब प्रकुप्पि रावनतनय ॥
दस१०बान सेस उपधन[24] दये व्है कुंचित[25] ते हुव बिलय[26]॥४४॥
लक्खन कवच अभेद्य मन्नि सरत्रय३ललाट दिय ॥
तिन्ह लग्गत रघुबीर शृंगत्रय[27]३गिरि सोभा लिय॥

---

१ पुर में जाकर २ चंचल घोड़ों के रथ पर चढा ३ युद्ध के अखाड़े में आया ४ लक्ष्मण ने तीखे बाण देकर इन्द्रजित् का ५ धनुष काट डाला ॥ ४२ ॥ ८ बडे मनस्वी लक्ष्मण ने ७ अत्यन्त तीखे ६ बाण इन्द्रजित् के उर में दिये जिससे ९ रुधिर उगलते हुए १० इन्द्रजित् ने ११ दूसरा धनुष हाथ में लिया १२सीधे बाणों से लक्ष्मण के१३शरीर में१४उन तीरों को काटकर१५रामचन्द्र के छोटे भाई लक्ष्मण ने१६तीन तीन बाण १७ शीघ्रता करके ॥४३॥ शत्रुओं के बाण अपनी ओर आये तिनको१८निर्भयता से१९बाण काटडाले फिर २० इन्द्रजित के सारथि को भूमि पर पटका २३ निर्वाहक के विना २२ घोड़े २१ गोलाकार (गोलकुंडा) फिरने लगे२४ लक्ष्मण के समीप में दिये २५ कुंठित (भोंटा) होकर २६ नाश होगया ॥ ४४ ॥२७तीन शिखरवाले पर्वत की शोभा को धारण की

वासवजितके बदन पंच५सर सेस प्रहारे ॥
वान पितृव्यकेबदन तीन३वासवजित मारे ॥
सबकपिन मारि इक१इक१बिसिखं जुलुन किन्न पुरुहूतजित ॥
तँहँ कुप्पि चउ४हि खलके त्वरित हने बिभीखन हय विहित॥४५॥
जब रथ सन इंद्रजित क्रुद्धि इक१सँगि धारि कर ॥
तक्कि पितृव्यके अंग निसितँ मुक्की सु निसाचर ॥
सो आवत सौमित्रि करी सत१००टूक सरन करि ॥
पंच५बिभीखन प्रदर दये खल उर अमर्ष भरि ॥
जमदत्त वान तापर जबहि जोरयो सत्वरँ इंद्रजित ॥
स्वप्नमें धनदँ दिय बान सो ज्यौं जुत किय लक्खन अजित॥४६॥
दीजत१अजित२अन्त्यानुप्रासः ॥१॥
चले दुहुँन२के बान मिलि रु सत १००टूक बिचहि हुव ॥
उभय२ मोघँ लखि सेसँ अस्त्र वारुनँ धारिय ध्रुव ॥
खँल किय रौद्र २ प्रयोग सांत बारुन किय ताकँहँ ॥
आसिरँ तब आग्नेय१ त्वरित मुक्कयो प्रदीप्त तँहँ ॥
पजर्न्य२बिरच राघव प्रबल दुष्ट प्रयुक्तँ निवारि दिय ॥
तब जातुँ अस्त्र आसुर२ तमकि करखि बान संग्रामकिय ॥४७॥
आसुरँसरके अंग कढे धनुतँ असि १ मुग्गर२॥
संगि ३कुठार४त्रिसूल५गदा६कूटँ७रु खरँ तोमर ८॥

१ इन्द्रजित् के मुख पर २काका(विभीषण)के मुख पर इन्द्रजित् ने तीन तीर मारे ३ बाण ४ इन्द्रजित् ने ॥ ४५ ॥ ५ सांग (सम्पूर्ण लोहे की बनी हुई शक्ति) ६ अपने चचा के शरीर में ताक कर ७ तीक्ष्ण छोडी ८ यमराज का दियाहुआ बाण ९ शीघ्र १०कुबेर ने स्वप्न में बाण दिया था वह लक्ष्मण ने ११प्रत्यंचा सहित किया ॥४६॥ १२दोनों को व्यर्थ देखकर १३ लक्ष्मण ने १४ वरुण अस्त्र को धारण किया १५इन्द्रजित् ने रुद्र अस्त्र का प्रयोग किया जिसको वरुणास्त्र ने मिटादिया तब १६राक्षस ने अग्नि अस्त्र छोडा जिस पर लक्ष्मण ने इन्द्र अस्त्र छोडकर १७ इन्द्रजित् के प्रयोग कियेहुए अस्त्र को मिटा दिया १८ राक्षस ने आसुर अस्त्र से बाण खींच कर क्रोध से युद्ध किया ॥४७॥१९ आसुर अस्त्र के बाण के अंग से २० धनुष २१ तीखे भाले

इत्यादिक लखि भ्रात सेस मुक्किय माहेश्वर २॥
यासौं वह खल अस्त्र ज्वलित रुक्क्यो रन सैत्वर ॥
गंधर्व१देव२पितर३रु गरुड४विद्याधर५चारन६बहुत ॥
ऋषि७नाग८सिद्ध९किन्नर१०रसिक देखन छाये गगन द्रुत ॥ ४८ ॥
तब लक्खन इक१तीर ज्वलन सन्निभ कर लिन्नौं ॥
अग्गै जिहिं तैं इंद्र कलह दानव जय किन्नौं ॥
ऐंद्र१अस्त्र आरोपि चविय तिहिं करखि चलावत ॥
सत्यसंध जो राम धर्मपथ अचल धर्ममत ॥
इम अक्खि अैंचि गुन आकर्रन श्रीलक्खन मुक्क्यो सुसर॥
सक्रजित मत्थ कुंडल सुभग कट्टि गिरायउ पुहवि पर॥४९॥

(दोहा)

गिरत इंद्रजित गगनतैं, बरखे कुसुम बिसेस ॥
बिचरहु बिज्वर मुनि१बिबुध२, अभय गिरा हुव एस॥५०॥
हरखे मर्कट१रिच्छ२हरि३, बिबिध मिटाय बिखाद ॥
इम मधुमेचक मदनादिन१३, हन्यौं सेस घननाद॥ ५१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्र

१लक्ष्मण ने शिव अस्त्र छोडा २ शीघ्र ३ शीघ्र आकाश में छागये ॥ ४८ ॥ ४ अग्नि के सदृश ५ उस बाण को खींचकर चलाते समय कहा कि जो रामचन्द्र धर्म के मार्ग में हैं और धर्म में उनका मत अचल है और६ सत्य प्रतिज्ञावाले हैं तो यह बाण व्यर्थ नहीं जावे.७ प्रत्यंचा को ८कान पर्यन्त खींचकर लक्ष्मण ने वह बाण छोडा जिसने कुंडल सहित ९ इन्द्रजित् के मस्तक को काटकर भूमि पर गिरादिया ॥ ४९ ॥१०आकाश से११पुष्पों की वर्षा हुई और निर्भय१४वाणी (आकाशवाणी) हुई कि मुनि और१३देवता १२पीड़ा रहित होकर फिरो ॥५०॥१५लंगूर (काले मुख के वानर) रींछ और वानर नाना प्रकार की खेद को मिटाकर इसप्रकार १६ चैत्र वदि १७ कामदेव की तिथि (ज्योतिष के मत से प्रत्येक तिथि के स्वामी देवताओं को माने जिनमें त्रयोदशी का स्वामी कामदेव है) त्रयोदशी के दिन १८लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा ॥ ५१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चतु-

वसुधेश्वरबंशबर्णने बसुदेव ६८ बेला६८।१बिवाहबेलावर्णनाबेप-
यिकविवस्वद्वंशाविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रवि-
कुक्षि ७ कुलकलशवैदेहीवल्लभचरित्रे श्रीरामदशमी १० रणमक-
राक्षमारणैकादशी ११ दिनमेघनादयोधनमायानिर्मितमैथिलीवि-
दारणश्रुततदुदन्तप्रभुपरिदेवनरावणिनिकुम्भिलाहवनबिरचनसौ
मित्रितद्विध्वंसनबीरद्वयरसङ्गरविधानद्वादशी१२दिनपुनारणबिस्त-
रणशेषावतारत्रयोदशी १३ सङ्ग्रामशक्रजिन्निपातनं त्रयःपञ्चाशत्त
मो ५३ मयूखः ॥ ५३ ॥ आदितः पञ्चनवतितमः ॥ ९५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

(षट्पात्)

मरत इंद्रजित कतिक गये लंका भजि रक्खस ॥
गये कतिक दुरि उदधि छिपे आदिन कति दुर्दिस ॥
लै रावनसुत सीस बिदित हनुमान बिभीखन ॥
इत्यादिक सब सेस संग आये दल अप्पन ॥
श्रीराम अग्ग डार्यो सु सिर प्रभु लखि सुंघिय सेस सिर ॥
वानर सुसेन बुल्लिय रु कहिय कारि बिसल्ल्यं इन्ह न करि चिर॥
सुनि सुसेन दिय नस्यं सेस आदिक सब वानर ॥

वा०ण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश के बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल के कलश जानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में दशमी के युद्ध में श्रीरामचन्द्र का मकराक्ष को मारना, एकादशी के दिन मेघनाद से युद्ध होना, माया की रचीहुई जानकी का मारना, वह वृत्तान्त सुनकर रामचन्द्र का विलाप करना, रावण के पुत्र (मेघनाद) का निकुंभिला में यज्ञ करना, लक्ष्मण का उस यज्ञ को नाश करना, दोनों वीरों का संग्राम करना, द्वादशी के दिन फिर रण विस्तार करना, त्रयोदशी के संग्राम में लक्ष्मण का इन्द्रजित् के मारने का त्रेपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५३ ॥ और आदि से पचानवे मयूख हुए ॥ ९५ ॥

१ लक्ष्मण के साथ २ लक्ष्मण के मस्तक को सूंघा (यह पूर्ण प्रेम करने का लक्षण है) ३ सुषेण नामक वानर को बुलाकर कहा कि ५ देरी नहीं करके इनको ४ शाल रहित कर ॥ १ ॥ ६ नासिका

तब निज दल जय तनन अखिल हुव स्वस्थ सरीरन ॥
इत सचिवन सुतनास आय रावनसन अक्खिय ॥
सठ विलप्पि बहु जनकसुता मारन मानस किय ॥
लै असि असोकवनिका चलिय मंदोदरि जुत सवन सह ॥
द्विगजात पिक्खि कट्टन सिरहिं वरज्यो सचिव सुपार्श्व यह॥२॥

(दोहा)

सचिवनके बरजैं मुरारि, बैठो परिखंद आय ॥
प्रेरे निजभट कपिन पर, बलैं खिल सज्ज बनाय ॥ ३ ॥

(षट्पात्)

मधुमेचक सिवदिवस१४कढ्यो खिल बल लंकासन ॥
लहि लंकेस निदेस सजव जुट्यो कपि संघन ॥
पट्टिस१घन२मुग्गर३पर्स४परिघ५सर६खग्ग७परस्वध८ ॥
सक्ति९कुंत१०छुरिका११त्रिसूल१२अंकुस१३गदा१४दि अंध॥
चउ४रीति हेति लग्गे चलन किन्न तुमुल रक्खस कपिन ॥
तहँ बढत जोर उतको अतुल लिय भजि राघव सरन इन॥४॥
तब आजानु अरत्नि राम टंकारि चाप लिय ॥
लाघव करि लक्खन कलंब सत्रुन सिर मुक्किय ॥

१अपनी सेना में विजय को फैलाने हुए २नैरोग्य शरीरोंवाले हुए ३ मंत्रियों ने पुत्र का नाश रावण से कहा ४ शठ रावण ने बहुत विलाप करके ५ जानकी को मारने का ६ मन किया ७ तरवार लेकर ८ सुपार्श्व नामा मंत्री ने रावण को मनाकिया ॥ २ ॥ ९ सभा में आकर बैठा १० वानरों के सब को बुलाकर॥३॥११चैत्रकृष्णा १२चतुर्दशी(चतुर्दशी के स्वामी महादेव हैं) के दिन वानरों की सेना लंका से निकली और१३रावण की आज्ञा लेकर १४ वानरों के समूह से युद्ध किया १५ कटारी १६ भिंदिपाल (गोफण) १७ फरसी १८ आदि १९ भाला २० छुरी आदि २१नीचे गिरने लगे २२चारप्रकार [illegible] आदि २३ [illegible] आदि २ [illegible] भाला आदि ३ यन्त्रमुक्त [illegible] आदि ४ [illegible] चलाने लगे २४राक्षस और वानरों ने भागकर युद्ध कि [illegible] २५ [illegible] हाथ हैं जिनके ऐसे रामचन्द्र ने धनुष को टंकार के [illegible] २६ [illegible] २७ बाण शत्रुओं पर छोड़े

कांचन[1]मय धनुकोटि भ्रमत आलात[2]चक्र जिम ॥
देखी जातु[3]न एह अंग इतरन[4] दीस्यो तिम ॥
प्रभु प्रेरि अस्त्र गांधर्व पुनि जँहँ तँहँ अप्पहि[5] अप्प हुव ॥
क्रव्याद[6] व्यथित[7] लग्गे कहन यह राघव यह राम ध्रुव ॥५॥
गजन हनत यह राम रथन रघुबर यह कद्दत ॥
अस्वन सूदत एह एह पत्ति[9]न द्रुत दद्दत ॥
जिम भक्तनहिय जत्थ[10]तत्थ भासत परमेश्वर ॥
इम दसरथसुत आंजि[11] लख्यो आसिर[12] आसिर पर ॥
दुव लक्ख२००००० पंदग[13] गजधृति सहँस१८०००,
सहँस चउद्दह१४००० सादिगन[14] ॥
स्यंदनी[15] अयुत१०००० राघव हनैं तिहिंदिन अष्टमभागसन[16]॥६॥

(दोहा)

भजि कर्बुर[17] लंका दुरे, कपि दल हुव जयकार ॥
आसित[18] चउद्दसि१४मास मधु[19], किय रन इम भयकार ॥ ७ ॥

(पादाकुलकम्)

बुल्लि राम हनुमान१बिभीखन२,मैंद३द्विबिद४सुग्रीव५महामन६ ॥
जांबवान७जुत कहिय अस्त्र बल, भंवपैं[20]कै मो पैंयह है भल॥८॥

१सुवर्ण के बनेहुए धनुष के गोशे२अग्नि के अंगारे के चक्र समान फिरने लगे ३राक्षसों ने इसी अलातचक्र को देखा ४ दूसरा अंग नहीं दीखा. फिर रामचन्द्र गान्धर्व अस्त्र छोडकर जहां तहां ५ आप ही आप होगये जिससे ६ व्याकुल होकर ७ राक्षस कहने लगे कि निश्चय ही यह राघव, यह रामचन्द्र है ॥ ५ ॥ ८ मारते हैं ९ पैदलों को शीघ्र दबाते हैं, जिसप्रकार भक्तों के हृदय में १० जहां तहां परमेश्वर ही दीखते हैं तिसप्रकार १२ राक्षस राक्षस पर ११ युद्ध में दशरथ के पुत्र (रामचन्द्र) दीखे १३ पैदल १४ घोड़ों पर चढनेवाले १५ रथों पर चढनेवाले १६ दिवस का आठवां भाग बाकी रहते इतनों को रामचन्द्र ने मारे ॥ ६ ॥ १७ राक्षस भागकर लंका में छिपगये १८ चैत्र मास १८ कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन इसप्रकार भयंकर युद्ध किया ॥ ७ ॥ रामचन्द्र ने इनसे कहा कि यह श्रेष्ठ अस्त्र २० महादेव के पास है या मेरे ही पास है ॥ ८ ॥

रात्रिंचरी[1] लग्गी इत रोवन, किय अनुचित रावन कुल खोवन ॥
सुमिरिसुमिरि हत[2] पति१सुत२बंधुन, अधिक बिलप्पि[3] परी दुख अंधुन[4]

(दोहा)

दिवस चउद्दसि१४दुव दलनै[5], रौद्र[6] भई इम रारि ॥
प्रात अमाँ[7]३०दिन जातुपति[8], निकस्यो समय निहारि ॥१०॥
निजकुल नारिन रुदन सुनि, नक्खि[9] बहुत निस्वास ॥
कट्टि[10] रदच्छद[11] रदनकरि, भो रावन जमभास[12] ॥ ११ ॥
महापार्श्व१बुल्ल्यो अपर[13], अपर[14] महोदर२तत्थ ॥
बिरूपाक्ष३पुनि बुल्लिकैं, सज्ज्यो लरन समत्थ ॥ १२ ॥

(षट्पात्)

स्यंदन[15] सज्जिग नियुत१०००००—
नाग[16] सज्जिग नियुत त्रय३००००० ॥
सट्ठिकोटि६०००००००० वर बाह[17] तिते खर६००००००००—
तरल[18] तथा मय[19]६०००००००० ॥
असंख्यात पाइक[20] भये दससिर ढिग हाजरि ॥
खासा स्यंदन सूत[21] तबहि लायो सत्वर[22] करि ॥
इक सहँस१०००जास कानक[23]कलस रतन[24] थंभ अष्टक८तुरग[25]॥
तिहिं रथ अरोहि लंकेस तब मिल दल हंकिय राममग॥१३॥

(मुक्तादाम)

१राक्षसियां रोने लगीं२मरेहुए३विलाप करके४दुःख रूपी कुआं में गिरीं॥९॥ ५दोनों सेनाओं में इसप्रकार६भयंकर युद्ध हुआ७अमावास्या के दिन प्रभात ही८राक्षसों का पति(रावण)॥१०॥९बहुत निश्वास डालकर११दंतों से१० ओठों को काटकर (यह विशेष क्रोध का लक्षण है) १२ यमराज की सी कान्तिवाला हुआ ॥ १० ॥ १३ दूसरे महापार्श्व को बुलाया १४ दूसरे महोदर को ॥ १२ ॥ १५ रथ सजे १६ हाथी १७ श्रेष्ठ वाहन १८ चपल १९ ऊंठ २० असंख्य पैदल २१ सारथि रावण के खासा रथ को २२ शीघ्रता करके लाया जिसके २३ स्वर्ण के हजार कलश २४ रत्नों के जड़ेहुए खंभे और आठ २५ घोड़े जुतेहुए थे ॥ १३ ॥

चल्यो अब रावन लै चतुरंग, बजे बहु काहल१संख२मृदंग३ ॥
सुचामर१छत्र२बिराजत सीस, बढ्यो प्रलयानल ज्यौं भुजबीस२०
मही हुव बोधितरुच्छद कंपि, चिके बनि जंगम१थावर२चंपि ॥
भये सिर सेस उदंबर पक्क, मुरे किटि१कच्छप२लगि मचक्क१५।
बढ्यो करि फैल समुद्दन नीर,गतप्रभ भानु भयो तम भीर ॥
भये तहँ रावनकौं अपसोन, भर्यो रवँ घोर सकुंतन भोन ॥१६॥
गिर्यो ध्वज गिद्ध सिवा किय सोर, तुरंग उठे गिरि व्है हततोर॥
फुरे खल बाहु१रु लोचन२सव्य, भई सिर लोहितवुठि अभव्य१७
परी पविसी उलका चहुँ४पास,किलक्किय बायस१गिद्ध२कुभास
बनैं दस१०ही मुख तास बिवर्ण,फिर्यो स्वर बोलनमैं कटुकर्ण१८
दसानन ए न गिनैं उतपात, घनैं छक्कसौं जुरि मंडिय घात ॥
त्वरा करि तीरनपैं तजि तीर, करे कपि सैबरतूल समीर ॥ १९॥
भजी लखि स्वीयँ चमू कपिराज, सुसेनहिं रक्खिय गुल्मसमाज॥

१चार प्रकार की (रथ घोड़े हाथी और पैदल) सेना को लेकर २ कलह (युद्ध) संबन्धी बाजे बजे ३ प्रलय की अग्नि के समान रावण चढा ॥ १४ ॥ उस समय भूमि कंपायमान होकर ४ पीपल वृक्ष के पत्ते के समान होगई (पीपल का पत्ता हिलता बहुत है इसीसे इस वृक्ष का नाम चलदल है) दबने के कारण जड़ औ चैतन्य ५ अपने स्थानों से हटने (डुलने) लगे और शेषनाग के मस्तक पकेहुए ६ ऊमर वृक्ष के फल के समान होगये ७ वराह ॥ १५ ॥ अन्धेरे की भीड़ से सूर्य ८ कान्ति रहित होगया ९ अपशकुन हुए. गिद्ध पक्षियों ने अथवा सामान्य पक्षियों ने१०घोर शब्द से रावण के स्थान को भरादिया ॥ १६ ॥ ध्वजा पर गिद्ध गिरा और११स्यालणी ने शब्द किया १२ रावण के वामबाहु और लोचन फरकनेलगे और मस्तक पर १३ अमंगलिक रुधिर की वर्षा हुई ॥ १७ ॥ १४ वज्र के समान चारों ओर अंगारे गिरे और १५ काकपक्षि और गिद्ध बुरी तरह से चीखने लगे और रावण के दश ही मुख १६ फीके पड़गये और रावण का स्वर बोलने में १७ कटुकर्ण (कानों को कड़वा लगे ऐसा) होगया ॥ १८ ॥१८ शीघ्रता करके १९ सेमलवृक्ष की रुई पवन के सामने उड़ती है इसप्रकार वानरों को करदिये ॥ १९ ॥ २० अपनी सेना को भागी हुई देखकर २१रक्षा के अर्थ फौज थी जिसमें सुषेण

उठाय बडे द्रुमकौं कर अप्प, दये डेग रावन अग्ग सदप्प ॥२०॥
निहारि कपीसहि सम्मुह जात, बढे बहु संगहि जुत्थप व्रात ॥
रची अति उग्र हरीस्वर रारि, महाबल जातु लये बहु मारि॥२१॥
सिला१गिरि२गुल्म३हनैं इक१संग, भयो खलको दल विव्हल भंग॥
विरूपदृगाख्य यहै लखि बीर, भयो बढि क्रंदत जातुन भीर ।२२।
कपीश्वरकौं निजनाम सुनाय, तज्यो रथ कुद्दि चढ्यो गज आय॥
पलावंत थंभि स्वकीयन सूर, कियो कपिराज हियो सरपूर।२३।
तहाँ रविपुत्तहु लै तरु सत्थ, मलंगि हन्यो खलके गजमत्थ ॥
घुक्यो धनु१मात्र करी तिहिं घाय,परयो करि क्रंदन कंपहिं पाय२४
भयो गजकौं तजि सम्मुह दुष्ट, लये कर खग्ग१रु खेटक२रुष्ट ॥
कपीश्वरको करि तर्जन तत्थ, सवेग जुरयो रनकोविद सत्थ।२५।
सिला इक मुक्किय व्हाँ कपिराज,टरयो लखि ताकहँ पिक्ख सुबाज
कपीश्वरकै दिय खग्ग प्रहार, मुहूर्त न भो यह चेतन धार ॥२६॥
सचेतन व्है तदनंतर उट्ठि, हनी दृढ रक्खसके उर मुट्ठि ॥
निसाचरहू धकि दै पुनि खग्ग,करयो कपि दंसन काय अलग्ग२७
कपीस दयो तलघात बहोरि, दयो खल टारि सु पैं द्रुत दोरि ॥
दई पुनि बानरके उर मुट्ठि, दयो खल संखँ कपी तल रुट्ठि॥२८॥

को रखकर सुग्रीव ने अपने हाथ में वडा वृक्ष लेकर १ घमंड के साथ रावण के सामने २ पैंड (कदम) दिये ॥ २० ॥ ३ जुत्थपों के समूह बढे ४ कपीश्वर ने बडी उग्र लड़ाई रची ५ बलवान् बहुत राक्षसों को मारलिये ।२१। ६ वृक्षों के ठूंठों (शाखा रहित वृक्षों) में ७ बिरूपाक्ष ने ८ रोते कूकते हुए राक्षसों की सहाय पर ॥ २२ ॥ ९ अपने १०भागेहुओं को रोककर उस वीर ने सुग्रीव के हृदय को बाणों से ११पूर्ण कर दिया ॥२३॥ तहां १२सुग्रीव ने भी.उस घाव में वह१४हाथी एक धनुष जितना१३झुक गया फिर फिर धूज कर १५कूक करके गिरा ॥ २४ ॥ १६क्रोध करके १७ढाल तरवार ली१८सुग्रीव को धमका कर वह १९. युद्ध के पंडित (सुग्रीव) के साथ जुटा ॥ २५ ॥२० दो घड़ी पर्यन्त ॥ २६ ॥२१जिस पीछे चेत पाकर२२राक्षस के उर में२३क्रोध करके२४शरीर से कवच को अलग कर दिया ॥२७॥ २५थप्पड़ अथवा चरण का आघात दिया२६शीघ्र दौडकर टाल दिया.दुष्ट (विरूपाक्ष) के२७ललाट

कपीश्वरके तलको लहि घात, भयो वमि[1]लोहित[2] दुष्ट निपात ॥
अमावसिके दिन वानरभूप[3], हन्यो पहिलैं इम नेत्र[4]बिरूप ॥२९॥
दसानन तास बिनास निहारि, महोदर पिल्लिय[5] तत्थ प्रचारि ॥
[6]प्लवंग अनेक हनैं जिहिं जाय, कपीसहि भो पुनि स्वीय सहाय३०
दइ गिरितुल्य सिला इहिं डारि, महोदर कट्टिय वानन मारि ॥
हन्यौं कपि सालमहीरुह[7] कोपि, विदारिदयो वपु[8]हू नख रोपि॥३१॥
गिर्‌यो परिघायुध रक्खसकेर, सु लै कपि बाजि हने घनघेर ॥
तबै तजि चं[10]कुंर मत्त मलंगि, महोदर लिन्न गदा रनरंगि ॥ ३२ ॥
कपीस्वरपैं किय तास प्रहार, दई कपिनैं परिघायुध मार ॥
गदा१परिघायुध२ते मिलि मग्ग,उभै२हि गिरे बनि टूक अलग्ग३३
मिट्यो गिनि आयुध राघव[11]मित्र, अयोग्र लख्यो इक हेम विचित्र
अयोमय भूतलतैं सु उठाय, महोदरपैं द्रुत दिन्न चलाय ॥ ३४ ॥
द्वितीय२गदा गहि रक्खस तत्थ, हनी हठि आवत मूसलमत्थ ॥
उभै२मिलि सस्त्र भये पुनि खराड, नियुद्ध[12] रच्यो तब दोउन२चंड३५
परस्पर मंडि चपेट प्रहार, गिरे दुव२मूर्छित ह्वै कछुवार॥
उठे पुनि चेतन पाय उदग्[13]ग,लये खिजि रक्खस खेट[14]क१खग्ग२॥३६॥
कपीसहु तेहि गिरे भुव[15] हेरि, उठाय जुर्‌यो सु महोदर घेरि ॥
महोदरके करवाल[16]हिं टारि, लयो [17]असिसौं खलसीस उतारि३७

की हड्डी पर वानर ने थप्पड़ मारी १ रुधिर की उलटी करके २ गिरगया ३ वानरों के राजा (सुग्रीव) ने इसप्रकार ४ विरूपाक्ष को मारा ॥ २९ ॥ ५ महोदर को भेजा ६ जिसने जाकर अनेक वानरों को मारे ॥ ३० ॥ ७ शालवृक्ष मारा और ८ शरीर को नखों से विदीर्ण करादिया ॥ ३१ ॥ ९ शस्त्र विशेप१०रथ को छोड कर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११रामचन्द्र के मित्र (सुग्रीव) ने अपने आयुध को मिटाहुआ जान कर सोने के चित्रामवाले लोह के मूसल को भूमि से उठा कर महोदर पर शीघ्र चला दिया ॥ ३४ ॥१२दोनों ने भयंकर वाहुयुद्ध रचा ॥३५॥१३उदग्र (ऊंचे उठेहुए मस्तक वाले अर्थात् अनम्र) राक्षस ने क्रोध करके१४ढाल तरवार ली ॥ ३६ ॥१५ भूमि पर गिरे हुए उन्हीं शस्त्रों को हेरकर १६ खड्ग को बचाकर १७ तरवार

मर्यो लखि याहि भजे मनुजाद, महादिकपार्श्व रच्यो रनवाद ॥
अनी थित ही जित अंगदकेर, जुर्यो तित रक्खस दै घन घेर ३८
वलीमुख भूरि हनैं तजि वान, सज्यो तव वालितनैं घमसान ॥
लयो परिघायुध इक्क उठाय, दई खलकै सु छक्यो घनघाय ।३९।
दसाननको भँट होय अचेत, गिर्यो रथतैं धुकि सूत समेत ॥
सिला पुनि अंगद इक्क प्रहारि, दये खलके रथ वाह विदारि ।४०।
मुहूरतं अंत सचेतन दुष्ट, दये सर अंगदकै बहुरुष्ट ॥
दये त्रय भल्लुकनायकं वच्छे, गवाक्ष सरीर दये बहु दच्छे ॥४१॥
जुट्यो नव वालितनै जवं जोरि, लयो परिघायुध तास झकोरि ॥
दुहत्थन मुक्किय ताहि भ्रमाय, दयो खल चाप सबान गिराय ४२
गिर्यो धनु संगहि मस्तकत्रान, दई बहुर्यौ दलकी खल कान॥
कर्यो खल कुप्पि परस्वध वार, सु टारिगयो कपिराजकुमार ४३
वली तदनंतर अंगद रुट्ठि, हनी दृढ रक्खसके उर मुट्ठि ॥
महाखलकै सु लगी पविमान, पर्यो हियफट्टि भयो गतप्रान ४४
दसानन सो लखि कुप्पि दुरूह, जुर्यो लहि दुद्धर वानर जूह॥
दिसा विदिसा करि स्पंदनं नाद, वली वढि अग्ग रच्यो रनवाद॥४५॥
कर्यो खल तामसअस्त्र प्रयोग, घने कपि भस्म भये तजि ओग॥
सह्यो न सु अस्त्र भजे खिल कीस, रची तँहँ जुज्झनै लक्खन रीस ४६

से दुष्ट का मस्तक उतारलिया ॥ ३७ ॥ १ मनुष्यों को खानेवाले (राक्षस) भाग २ महाशब्द है आदि में जिसके ऐसा पार्श्व अर्थात् महापार्श्व ३ जहां पर अंगद की सेना की श्रेणी खड़ी थी उधर जाकर लड़ा ॥ ३८ ॥ ४ बहुत ५ वानरों को मारा ६ अंगद ने युद्ध किया ॥ ३९ ॥ रावण का ७ उस राव ८ भट्ट खाता हुआ सारथि सहित ९ घोड़े मारडाले ॥ ४० ॥ १० दो घड़ी पीछे चेत पाकर ११ क्रोध करके १२ जाम्बवान के १३ हृदय में १४ चतुर ने ॥ ४१ ॥ १५ वेग जोड़कर ॥ ४२ ॥ १६ मस्तक को कवच टोप १७ फरसी का वार किया ॥ ४३ ॥ १८ वज्र के समान ॥ ४४ ॥ १९ कठिनाई से नकैना में आवे ऐसा रावण वानरों के दुर्धर्ष समूह से जुड़ा २० रथ का शब्द करके ॥ ४५ ॥ २१ तमोगुणी शस्त्र अथवा सर्प अस्त्र छोड़ा २२ उत्साह छोड़कर २३ वह अस्त्र सहा नहीं गया जिससे बाकी के वानर भाग गये वहां पर २४ युद्ध करने

दयो खल छाय कलंबन³ जाल, गिरायउ कट्टि सु पै सुरसाल ॥
समीप लये तदनंतर राम, घनैं सर मुक्कि जुरयो जयकाम ॥४७॥
प्रभू खलके सर भल्लन छेदि, दये निज³सत्रु समूहन खेदि ॥
परिक्कमि मंडल⁴ दक्खिन१बाम२, परस्पर जुट्टिय रावन१राम२॥४८॥
भयो नभ तीरन संकुलि मोघ, अखंड प्रसार वढ्यो तमओघ ॥
गयो चरमाचल लंघि पतंग, जथापि तथापि मच्यो इम जंग॥४९॥
तहाँ खल सर्व अयोमय तीर, हनैं प्रभु गोधि घनैं हमगीर ॥
तऊ बिधुरा न भजी करतार, प्रयुंजिय रौद्र महास्त्र प्रसार॥५०॥
महीप सरासन कोटि मिलाय, अभेद्य तनुत्र दये खलकाय ॥
मुधा करि दंस पितामह दत्त, गये भुव भेदि दसानन गत्त ॥५१॥
करयो पुनि राघव अस्त्रप्रयोग, भरे खल गोधि सरोरग भोग ॥
इतेबिच रावन अस्त्र निवारि, सज्यो सर आसुरअस्त्र सुरारि॥५२॥
तज्यो तँहँ तीर अनेक प्रकार, कढे धनुतैं बल अस्त्रकरार ॥
शृगाल१तरच्छु२नखायुध३तुंड, रु गिद्ध४सिचान५अहीमुख६झुंड५३

को लक्ष्मण ने क्रोध किया ॥ ४६ ॥ १ दुष्ट को बाणों की जाल से छा दिया२देवताओं के शाल (रावण) ने जिस पीछे रामचन्द्र को समीप लिये ॥४७॥३ अपने शत्रुओं के समूहों को निकाल (हांक) दिये४गोलाकार फिरकर ॥ ४८ ॥ तीरों से भरकर आकाश मिथ्या होगया अर्थात् आकाश नहीं रहा और अखंड फैलाव के साथ अंधेरे का समूह बढा यद्यपि सूर्य अस्ताचल को लांघ गया तथापि इसप्रकार युद्ध मचारहा ॥ ४९ ॥ सब लोहे के बनेहुए बाण रामचन्द्र के ललाट में मारे तो भी रामचन्द्र ने व्याकुलता नहीं पाई और रौद्र अस्त्र का प्रयोग किया ॥ ५० ॥ रामचन्द्र ने धनुष के दोनों गोशों को मिलाकर अभेद्य कवचवाले रावण के शरीर में बाण दिये सो ब्रह्मा के दिये हुए कवच को वृथा करके दशानन के शरीर को भेदकर भूमि में गये ॥ ५१ ॥ फिर रामचन्द्र ने अस्त्र का प्रयोग करके बाणों रूपी सर्पों के फणों से रावण के ललाट को भरदिया इतने में देवताओं के अरि रावण ने उस अस्त्र को मिटाकर आसुर अस्त्र सजा ॥ ५२ ॥ उस धनुष से कराल अस्त्र निकले जिनमें कितने ही गीदड़ बघेरा (सिंह विशेष) सिंह गिद्ध बाज (शिकरा नामक पक्षि विशेष) सर्प के मुख धारण करनेवाले समूह ॥ ५३ ॥

धरैँ मुख व्याघ्रन७कोकन८केक,छुटे इम आसुर मंत्रअनेक ॥
तज्यो ज्वलनास्त्र तबैँ रघुराज, कढे इततैँहु घनैँ वर बाज ॥५४॥
दिवाकर१अग्नि२ससी३चपला४ऽऽदि,धरैँ मुखघोर छुटे नभ छादि॥
दयो तिन्ह आसुर अस्त्र निवारि, रची अनखाय दसानन रारि॥५५
तज्यो मयनिर्मित अस्त्र निसाट, घनैँ पुनि अस्त्र कढे बहुघाट ॥
त्रिसूल१गदा२असि३पट्टिस४प्रास५,भयानक ह्वै प्रलयानल भास५६
तज्यो प्रभु व्हाँ सुरगायक अस्त्र, करे खलके ति मुधा सबसस्त्र
अनंतर अस्त्र तज्यो खल ओर, जु पै प्रभु खंडिय बानन जोर५७
कियो तब रावन दुस्सह कर्म्म, दये दस१०बान महाप्रभु मर्म्म ॥
व्यथा तिनतैँ न लही रघुवीर, दये खलकै पुनि दुर्द्धर तीर ॥५८॥
इतेविच लक्खन दै सर सत्त७,हर्‌यो खलकेतु१नृमस्तक तत्त ॥
हन्यौँ पुनि सारथि२दे इक१तीर, रु दै सरपंच५हर्‌यो धनु वीर५९
विभीखन तत्थ लये रचि रारि, गदाकरि अग्रजके हयमारि ॥
धर्‌यो रथ छोरि बिनाहय धक्कि,तजी खल सांगि विभीखन तक्कि६०
विभीखन मारक जानि प्रवीन, सु कट्टिय लक्खन दै सरतीन३॥
रची मयकी वसु८घंटन जुत्त, धरी कर सक्कि तहाँ खल धुत्त॥६१॥

और कितने ही भेड़िया व्याघ्र शृगालों के मुख करके छूटे तब रामचन्द्र ने अग्नि अस्त्र छोडा सो इधर से भी श्रेष्ट पांखोंवाले बाण निकले।५४।सूर्य अग्नि चन्द्र विजुली आदि घोर मुख धारण करके आकाश को छादित करके छूटे।१क्रोध करके रावण ने युद्ध रचा ॥ ५५ ॥ रात्रिचर (रावण)ने मय के रचे हुए अस्त्र को छोडा जिससे बहुत भांति के बहुत अस्त्र कढे२प्रलय की अग्नि की कान्ति के समान ॥ ५६ ॥ वहां रामचन्द्र ने गधर्व अस्त्र छोडा जिसने दुष्ट के तिन शस्त्रों को वृथा कर दिये जिस पीछे रावण ने अन्य अस्त्र छोडा ॥ ५७ ॥३रामचन्द्र के मर्म स्थान में मारे जिनसे रामचन्द्र ने पीड़ा नहीं पाई ४दुर्द्धर्ष (जिनका अनादर नहीं होसके ऐसे) बाण दिये ।५८। ५ध्वजा को काट-डाला. ६रावण की ध्वजा में मनुष्य के मस्तक का चिन्ह था जिसको काट डाला७दौड़ा रथ छोडकर॥६०॥८विभीषण को मारनेवाली जानकर लक्ष्मण ने उस सांग (शस्त्र विशेष) को काटडाली९धूर्त ने ॥ ६१ ॥

निजानुज रच्छक सेसहिँ जानि, तजी तिनपैँ खल तक्कि रु तानि॥
सदंसन लक्खनको उरफारि, गई तडिता जिम वद्दल बारि ॥६२॥
प्रभ भुव जात सु भंजिय संगि, मिटी इम टारतहू असु मंगि ॥
परे भुव लक्खन प्रानन पेलि, किधौँ लहि जेठ प्रभंजन केलि६३
गिरयो अनुजातँहिँ पिक्खि विहाल, महाप्रभु भीरु भये कछुकाल
मुहूर्त अनंतर छोरि विखाद, कह्यो सबसौँ ब हनौँ मनुजाद ॥६४॥
चढो कपि१भल्लुक२अद्रिन मत्थ,सुरादिक होहु विमानन सत्थ॥
लगावहु दिट्ठि चउद्दह१४लोक, रचो रविसूत तुरंगन रोक ॥६५॥
मनावहु स्वस्ति सबै मुनि१सिद्ध, लहो दसकंध वपा गल गिद्ध ॥
धरो अवधान चराचर सज्ज, लखो मम रामपनौँ सब अज्ज ॥६६॥
यहै कहि दै सर रावन अंग, कियो तस देह सु सेह सरंग ॥
परे प्रभुकै पुनि लक्खन दिट्ठि,सुसेनहिँ बुल्लि कह्यो नृप निट्ठि६७
यहै खलपातित सोवत सेस, कहा जयआस भई अब एस ॥

अपने छोटेभाई की रक्षा करनेवाला लक्ष्मण को जानकर वह शक्ति उन पर छो ड़ी सो कवच सहित लक्ष्मण का उर फाड़कर जैसे बिजुली बादल को निवारण करने जाती है तैसे गई १भूमि पर गिरतेहुए लक्ष्मण ने उस शक्ति को तोड़ डा ली इसप्रकार उसको बचाते बचाते २प्राण की चाहना करके मिटी, जिसप्रकार जेठमास में ३पके केल वृक्ष गिरें तिसप्रकार लक्ष्मण प्राण को हटाकर गिरे ॥६३॥ ४छोटेभाई को गिराहुआ देखकर रामचन्द्र विह्वल हुए और कुछ समय ५ कायर होगये ६ दो घड़ी पीछे विषाद को छोड कर सब से कहा कि ७अब ८ राक्षस को मारता हूं ॥ ६४ ॥ वानर और रींछ तो पर्वतों पर चढ जाओ और देवता आदि विमानों पर चढो, चौदह लोकवाले इधर देखो और सूर्य का सारथि भी सूर्य को युद्ध दिखाने के लिये घोड़ों को रोको ॥ ६५ ॥ मुनि और सिद्धलोग कल्याण मनाओ,रावण की मज्जा(गूद)को गिद्ध गळ ले ओ, चर और अचर सभी मनोयोग (वांछित) को प्राप्त होओ और आज मेरा रामचन्द्रपन देखो ॥ ६६ ॥ यह कहकर बाण देकर रावण के शरीर को सेहली (संल्लक) के समान कर दिया, फिर जब लक्ष्मण रामचन्द्र की दृष्टि में आये तब सुषेण नामक बंदर को बुलाकर कठिनाई से कहा ॥ ६७ ॥ दु- ष्ट का पटकाहुआ यह लक्ष्मण सोता है सो अब ऐसा होने पर जय

न जीवनतैं१रनतैं२रहित आज, विदेहसुताहु अबै किहिंकाज ॥६८॥
सुसेन कह्यो न मरे प्रभु सेस, बनी मुखआकृति पंकज बेस ॥
प्रभाघन बिग्रँह नैन प्रसन्न, बहैं नहि एरिस ओज विपन्न ॥६९॥
सुसेन बली प्रभुसौं इम बुल्लि, कही पुनि मारुतिसौं हित खुल्लि॥
बतायउ भल्लुकनायक तोहि, सजीवन आनहु पब्बयसोहि ॥७०॥
यहै सुनिकै पुनि गो हनुमान, लयो पुनि अद्रि जरी अनजानि ॥
त्रि३वेर महाबल ताकँहँ तुल्लि,फलंगिगयो रनमैं हियफुल्लि ॥७१॥
सुसेन जरी सब ते पहिचानि, दयो द्रुत नस्यहि सेसहि आनि ॥
उठे इहिं सोवतसे जगि सेस, बुलाय मिले ४रही अखिलेस ॥७२॥
चहौं नहिं लक्खन तोबिनु प्रान, वदी यह राघव प्रेम विधान ॥
कही तब लक्खन चिंतहु बैन, लयो पन राज्य बिभीखन दैन ७३
करो वह सत्य यहै सुनि राम, कियो पुनि रावन बानन धाम ॥
दसाननहू रथ ओर अरोहि, छल्यो प्रभु सम्मुह जुज्झत छोहि७४
रथी खल१ज्यौं प्रभु२त्यौं पदचार, वदे समता नहिं देवन वार ॥
बिचारि यहै पुरुहूत बलीय,समातलि व्हाँ पठयो रथ स्वीय॥७५॥
हरेहय जोरि त्वराकरि आय, लये रथ मातलि राम चढाय ॥

की क्या आशा है सीता भी अब किस काम की है ॥ ६८ ॥ मुख की आकृ-ति कमल के समान बनी हुई है शरीर भी बहुत कान्तिवाला है और नेत्र प्रसन्न हैं प्राणबल जिन का नाश होजाता है वे ईदृश (ऐसे) चिन्ह धारण नहीं करते ॥६९॥१हनुमान् से कहा२जाम्बवान ने तुझे बताया था उसी सं-जीवन पर्वत को लाओ ॥७०॥३जड़ी को नहीं जानसका तब पर्वत को ही उठालिया और तीन वार उस पर्वत को हाथ में तोलकर फलंग लगाकर युद्धभूमि में प्रसन्न होकर आया ॥ ७१ ॥ सुषेण वानर ने उस जड़ी को प-हिचान कर लक्ष्मण को शीघ्र आकर नाक में सुंघाई४शीघ्र ही सब के स्वामी रामचन्द्र लक्ष्मण को बुलाकर मिले ॥ ७२ ॥ ७३ ॥१रावण को बाणों का घर बनादिया१क्रोध करके ॥ ७४ ॥ रावण रथ पर और रामचन्द्र पैदल होने से देवताओं ने कहा कि रथ के विना बराबरी नहीं है, बलवान इन्द्र ने यह विचार कर मातलि नामक अपने सारथि सहित अपना रथ भेजा ॥ ७५ ॥ वह मातलि हरे रंग के घोड़ों को जोत कर शीघ्रता करके आया और

अभेद्य तनुत्र१रु सक्ति२रु चाप३,इते पठये ति लये धरि आप७६
परिक्रमि स्यंदन वंदन किन्न, चढे पुनि राम सरासन लिन्न ॥
रच्यो समतारन द्वैरथ नाम, रहे नभ देव भने जय राम ॥ ७७ ॥
जिते खल अस्त्र तजे रुपि रंग, भये प्रभु अस्त्रनतैं सब भंग ॥
तज्यो जव रक्खस रक्खस अस्त्र,अनेक कढे अहि आकृति सस्त्र७८
तज्यो तब पासुपतस्त्र नरेस, करे सरपन्नग मोघ असेस ॥
लखे खल अप्पन अस्त्र असार, दये प्रभु विग्रह वान हजार।७९।
हने वहु मातलिके जय हेतु, विदारिय बासवँ स्यंदन केतु ॥
हरी छविके पुनि वेधि तुरंग, जुरचो घन घोर दसानन जंग॥८०॥
रह्यो बुध१रोहिनिहिँ तँहँ आय,जुरचो ग्रह आर१विसाख२हिँ जाय॥
लियेँ ढिग रुंड१रु धूमलकेतु२,हतप्रभ भानु लस्यो खयहेतु ॥८१॥
वढ्यो लखि दुष्टहिँ योँ बहु व्रात,अचानक घोर मचे उतपात ॥
भयो भुव कंप डरे सबभूत, डिगे बन१पब्बय२वृच्छ विधूत ॥८२॥
तहाँ गहि दुष्ट महाखय मूल, तज्यो बसु८घंटन जुत्त त्रिसूल ॥

रामचन्द्र को रथ पर चढा लिया,इन्द्र ने अभेद्य कवच, शक्ति और धनुष भेजे वे भी समर्थ रामचन्द्र ने धारण किये ॥ ७६ ॥ रथ के परिक्रमा करके नमस्कार किया१दोनों रथवाले कहलाकर बराबरी का युद्ध करनेलगे ॥ ७७ ॥ २राक्षस ने राक्षस अस्त्र छोडा जिससे अनेक सर्प की आकृति के शस्त्र निकले ॥ ७८ ॥ रामचन्द्र ने पाशुपत अस्त्र छोडा जिसने रावण के सर्पाकार सब बाणों को व्यर्थ करादिया रावण ने अपने बाणों को सार रहित देखकर रामचन्द्र के शरीर में हजार बाण दिये ।७९।३इन्द्र के रथ की ध्वजा को काटडाली ॥८०॥ रामचन्द्र रूपी चन्द्रमा को रावण रूपी राहु से ग्रसाहुआ देखकर चन्द्रमा के अतिप्रिय रोहिणी नक्षत्र पर बुध नामक ग्रह आगया (ज्योतिष के मत से बुध का रोहिणी नक्षत्र पर आना भयंकर समझा जाता है) और इक्ष्वाकु वंशियों के सदा शुभकारी विशाखा नक्षत्र पर मंगल ग्रह आगया (यह भी उत्पात का सूचक है) राहु और केतु को समीप लिये हुए सूर्य नाश का कारण होकर कान्ति हीन दीखनेलगा ॥८१॥ इसप्रकार रावण को प्रबल हुआ देखकर एकाएक भयंकर उत्पातों के समूह मच गये भूकंप होने लगा और सब प्राणी डरने लगे विशेष धुनेजाकर वन पर्वत और वृक्ष डिगने लगे ॥ ८२ ॥ दुष्ट रावण ने नाश के मूल आठ घंटावाले

तजे प्रभु तापर वान जितेक, त्रि३सीस करे छुवि भस्म तितेक ।८३।
तजी तब वासवसंगि छितीस, कियो वह खंडित तास त्रिसीस॥
हनें खल स्यंदनके बलि बाजि, अरे धकि राघव दुस्सह आजि ८४
दये खल गोधि[१] तथा त्रय३रोपं, बढे दसकंधहिं खेद१रु कोप२ ॥
तजे खल वान हजारन तत्थ, मुरे नहिं राघव तोहु समत्थ ॥८५॥
कह्यो प्रभु रावनसों हगजोरि, भयो हतविक्रम तू तिय चोरि ॥
अहम्मति[३] भार बढ्यो तव आहि, त्वराकरि दूरकरौं अब ताहि८६
अनेक हरी जिहि काज निलज्ज, सु लै परनारिनके सुख अज्ज[४] ॥
यहै कहि मारि हजारन तीर, कर्यो तितऊ[५] दसकंध सरीर ॥८७॥
पर्यो रथपै छकि दुष्ट अचेत गयो रथलै तजि सारथि खेत ॥
गयो जब रावनको वह मोह[६], कह्यो तब सारथिसौं छकि छोह[७] ८८
अरे सठ मोकहँ कातर[८] जानि, तज्यो रनतैं करि मो जसहानि ॥
कहै नहिं जोलगि[९] वे जयकार, त्वराकरि[१०] तोलग लैचलि त्वौर[११]।८९
कही तब सारथि हे दसकंध, बढ्यो तव विग्रहँ[१२] मोह प्रबंध ॥
थके हयहू श्रम१धर्म२ समेत, टर्यो इहिं कारन मैं तजि खेत ९०
यहै सुनि रावन ताकहँ तुष्ट[१३], दयो करको[१४] इक१भूखन दुष्ट ॥
सु सारथि रावनको रथमोरि, बडे जवँ[१५] आयउ जंग बहोरि ॥९१ ॥
अगस्त्य महामुनि ताहि अनेहँ[१६], कही रघुनाथहिं आय रु एह ॥

त्रिशूल को छोडा उस पर रामचन्द्र ने जितने बाण छोडे तिनने त्रिशूल ने भस्म करादिये ॥ ८३ ॥ तब रामचन्द्र ने इन्द्र की शक्ति छोडी उसने त्रिशूल को काटा फिर दुष्ट के रथ के घोडों को मारे इसप्रकार रामचन्द्र संग्राम में दुस्सह होकर अडे ॥ ८४ ॥ रावण के १ ललाट में तीन २ बाण दिये ॥ ८५ ॥ ३ तेरे अहंता का भार बढगया है सो शीघ्र ही दूर करता हूं ॥ ८६ ॥ ४ आज वह सुख भोग यह कहकर हजारों तीर मार कर रावण के शरीर को ५ चालनी के समान करदिया ॥ ८७ ॥ ६ मूर्छा ७ क्रोध में छककर ॥ ८८ ॥ ८ कायर जानकर ९ जब तक शत्रु अपनी जय हुई नहीं कहै तब तक १० शीघ्रता करके ११ पीछा लेचल ॥ ८९ ॥ १२ तुम्हारे शरीर में मूर्छा का प्रबन्ध बढगया था ॥ ९० ॥ १३ प्रसन्न होकर दुष्ट रावण ने उस सारथि को १४ हाथ का भूषण दिया १५ बडे वेग से ॥ ९१ ॥ १६ उसी समय में अगस्त्य मुनि ने आकर रामचन्द्र से कहा

त्रि३वार दिनेसहृदै जपिल्लेहु, सपूजन अर्घ्य अनुत्तम देहु ॥ ९२ ॥
हाँ तुमही लहिहो जय राम, दसाननकों हनिहो रनधाम ॥
अगस्त्य गये प्रभुसों कहि एह, सुही सब सज्जिय राम सनेह ।९३।
त्रि३आचमि ह्वै सुचि लै निज चाप, लगे खलकों अब वेधन आप ॥
कही तँहँ मातलिसों प्रभु भव्य१,चलो खलको रथ लै अपसव्य२९४
सुही करि रावन अंतिक३ आय, दयो प्रभुकों सु समीप दिखाय ॥
इते बिच कौतुक धारि उमंग, जुरे सब पिक्खन द्वैरथ४ जंग ॥ ९५ ॥
परयो खलके रथ अस्र५अभव्य, प्रभंजन६चक्र भये अपसव्य२॥
चलैं जिहिं मारग रक्खसराय१,चलैं तित गिद्धनके समुदाय ॥९६॥
भई भुव दीप्त४गिरी उलका५हु, थके चलते रन जातुन बाहु ॥
दिवाकरके सित१लोहित२पीत३,मयूख लखे खल अंग परीत७।९७।
भज्यो भुव कंप दसानन पास८,सिवा किलकी तस पिट्ठि९कुभास
वह्यो प्रतिकूल रजोमय वात१०,बिनाँ घन भो तडिता१पवि२पात११
बढयो तम घोर दिसा विदिसान१२,गिरी लरि सारिकिका रथथान१३

कि तीन बेर आदित्य हृदय नामक स्तोत्र को जप करके पूजा के साथ अनुत्तम (न उत्तमो ऽस्मात् स अनुत्तमः)को अर्घ्य दो।९२।९३। तीन वार आचमन लेकर पवित्र होकर अपना धनुष लेकर मातलि से रामचन्द्र ने १ योग्य वचन कहे कि रावण के रथ को २ दाहिना लेकर चलो ॥ ९४ ॥ ३ रावण के समीप आकर ४ दोनों रथों का युद्ध देखने को यहां लक्षणा से दोनों रथियों का युद्ध जानना चाहिये ॥ ९५ ॥ रावण के रथ पर अमंगलिक ५ रुधिर की वर्षा हुई और ६ वायु गोटे (वघूलिये) दाहिनी ओर को हुए और जिस जिस मार्ग रावण चला तिस तिस मार्ग उसके साथ गिद्धों के समूह चले ॥ ९६ ॥ लंका की भूमि जलती हुई दिखाई देने लगी और आकाश से अग्नि के अंगारे गिरे युद्ध में राक्षसों के भुज शस्त्र चलाते हुए थकगये रावण के शरीर के चारों ओर सूर्य के किरण स्वेत लाल और पीले रंग के दिखाई देने लगे ॥ ९७ ॥ रावण के समीप की भूमि कांपने लगी और उसकी पीठ पीछे अमंगलिक अथवा बुरी तरह से स्यालणी चांखने लगी और धूलि के साथ सामने का पवन चलने लगा विना बादल बिजुली और वज्र पड़ने लगे ॥ ९८ ॥ मैना पक्षि परस्पर लड़ कर रावण के रथ पर गिरे घोड़ों के

कढी चिनगी ह्यलिंगप्रदेस१४,झरे ह्यनेत्रन अश्रु बिसेस१५।९९।
अनेक कुसोनं भये इम ताहि, भये सुभ राघवको जय चाहि॥
जुरयोहि तथाँपि दसानन जंग,इतैं प्रभु जुज्झय धारि उमंग १००
दयो लखि दोउन२यौं रनदाव,भज्यो कपि१जातुँ२न चित्रितंभाव॥
घनैं सर दुष्ट तजे तब घुम्मि,गिरे रथकै लगि ते मुरि भुम्मि १०१
तहाँ इक१ आँसुग दै रघुराय, दयो तस केतनँ कट्टि गिराय ॥
दये प्रभु अस्वनकै खल बान, लगे जिम फूल गिरे हतपान ।१०२।
दये पुनि बान हजारन दुष्ट,तजे तिनपैं इततैं प्रभु तुष्ट ॥
भयो तिनतैं नभ कुट्टिम भास,कहाँ नहिं नैंक रह्यो अवकास१०३
अनंतर दोउन२ तक्कि अमान, परस्पर बाजिनकै दिय बान ॥
रचे पुनि दोउन२दै रथं काव,गंता१ऽऽगत२मंडल३बीथि४न दाव१०४
समीप मिले पुनि द्वै२रथ आजि, भिरे धुरसौं१धुर२वाजिन१बाजि२
तहाँ प्रभु रक्खस अस्वन अंग, दये सर बाजि मुरे रथसंग ।१०५।
दये तँहँ मातलिकै सर दुष्ट, चल्यो नहिं सो रु भये प्रभु रुष्ट॥
कलंब हजारन दै छितिराय, दई खलकी द्रुत पिट्ठि फिराय १०६

(तिराय१फिराय२अन्त्यानुप्रासः १)

अयोग्रं१ गदा२ बरख्यो मुरि सोहु, त्रिलोक अधीस वढे धक्कि तोहु

लिंग से अग्नि की चिनगारी निकली और नेत्रों से बहुत आंसू गिरे।९९।२खोटे शकुन हुए३तो भी॥१००॥वानर और४राक्षस ५ चित्राम के से होगये ॥१०१॥ ६ बाण ७ रावण की ध्वजा को काट कर गिरादी ८ प्राण रहित होकर उलटे गिरगये॥ १०२ ॥९ प्रसन्न होकर बाण छोडे उन बाणों से आकाश घर की शोभा धारण करने लगा जिसमें कुछ भी अवकाश नहीं रहा ॥ १०३ ॥ इस पीछे प्रमाण रहित (अमाप) दोनों ने दोनों रथों का चक्कर (गोलकुंडा) लगाया, आगे जाना पीछा आना गोलाकार फिरना इन मार्गों से दाव दिये ॥१०४॥१० उस युद्ध में दोनों रथ समीप मिल गये ।१०५। मातलि (इन्द्र का सारथि) चलायमान नहीं हुआ और रामचन्द्र क्रोधित हुए भूपति रामचन्द्र ने हजारों बाण देकर दुष्ट रावण की शीघ्र पीठ फिरा दी॥१०६॥११मूसल. तीनों लोक के स्वामी (रामचन्द्र) ने भी क्रोध में पूर्ण होकर आगे बढे दोनों ओर से बाणों के समूह बहे जिनके वेग से सातों

वहे दुव२घाँ सन बानन व्रात, छुहे तिनके जव सागर सात॥१०७॥
डरे अतलादिनके बसवान, करयो रबिरोचि प्रकासन हान ॥
तहाँसुर१ओ सुरगायक२सिद्ध३,मिले पुनि जच्छ४रु चारन५इद्ध६१०८
महोदर ६ किन्नर७गुह्यक८जूह, लगे कहिवे लखि जुद्ध दुरूह ॥
रहो कुसली द्विज१धेनु२न ग्राम, दसाननकौं अब जितत राम१०९
घनों अवमर्द भयो यह घोर, अहो रन एरिस भो नहिं ओर ॥
ख१सागर१तुल्ल्य२ख१सागर२जेम,वहै रन या रन तुल्यहि एम११०
रहे कहते इम पिक्खत रंग, जुरे पुनि द्वै२शचि द्वै२रथजंग ॥
तहां इक१ दै सर सर्वअधीस, लयो इक१कट्टि दसानन सीस१११
महीसिर आत विलंबहु आस,न पै सिर और प्ररोहत तास ॥
इका१ऽऽधिक कट्टिय यौं सत१०१मत्थ,तऊ न मरयो हुव नूतन तत्थ
निरर्थक जानि स्वबानन वार,कियो तब यौं रघुनाथ बिचार ॥
सुबाहु१ कबंध२ खरा३ऽऽदिक ओघ, हनैं जिन तैंस पिट्ठि५सरमोघ
कही तँहँ मातलि यौं हित खुल्लि, रहे प्रभु कडिता१ऽस्त्रहिं भुल्लि
सुन्यौं इम मातलि उक्त समत्थ, वहै सरब्रह्म रख्यो प्रभुहत्थ ११४

समुद्र चोभित होगये ॥१०७॥१सूर्य की क्रान्ति को मिटादी देवता और ग-न्धर्व३यक्ष४निर्मल ॥ १०८॥ वडे सर्प समूह कहने लगे कि यह युद्ध कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा है, ब्राह्मण और गउवों के समूह कुशल रहो रामचन्द्र अब रावण को जीतते हैं ॥ १०९ ॥ यह बहुत पीड़ाकारी युद्ध हुआ ऐसा भयंकर और आश्चर्य करानेवाला कोई दूसरा युद्ध नहीं हुआ जैसे आकाश और समुद्र के समान आकाश और समुद्र ही हैं इनके जैसा दूसरा कोई पदार्थ नहीं,तैसे ही इस युद्ध के समान यही युद्ध है.युद्ध को देखकर वे तो इसप्रकार कहते रहे और इधर फिर रथ(लक्षणा से रथी)युद्ध में जुड़े सब के स्वामी रामचन्द्र ने रावण का एक मस्तक काटलिया॥१११॥ उस मस्तक के भूमि पर आने में तो विलम्ब हुआ परन्तु उसके दूसरा मस्तक उगने में विलम्ब नहीं हुआ इसप्रकार एक सौ एक मस्तक रामचन्द्र ने काटे तोभी नवीन मस्तक होते गये और रावण नहीं मरा ॥ ११२ ॥५अपने बाणों का वार(प्रहार)करना निरर्थक जानकर६समूह को बाणों से मारे वेही व्यर्थ कैसे हुए ॥ ११३ ॥ उस समय इंद्र के सारथि मातलि ने हित के साथ कहा कि महाराज ब्रह्मास्त्र को आप क्यों भूलरहे हो मातलि का कहना सुनकर उस बलवान् ब्रह्मास्त्र को रामचन्द्र ने हाथ में लिया ॥ ११४ ॥

रच्यो विधिनैं जु पुरंदर काज, बली पवमान१वसैं जिहिं बाज ॥
रहैं रवि१अग्गि१उभैं२फल जास, गुरुत्व सुमेरु१रु अंग अकास२॥११५
दयो वनमैं पहिलैं जु अगस्त्य, लयो प्रभु अस्त्र सु अंतकपस्त्य ॥
प्रकासत पुंखन कांचन काम, लसैं उरगासन पत्र ललाम॥११६।
सु लै श्रुतिसूचित मंत्र समेत, धरयो गुनपैं अरिनास निकेत ॥
कसीसि लयो श्रुतिमूल लगाय, भज्यो तँहँ छोनिय जंगम भाय॥
समाधि छुटी सहसा सिवकेर, बराहप जानु जके तिहिं बेर ॥
अचानक उट्ठिय ओझ्झकि सेस, कपाल नम्यो मचक्यो कमठेस॥
दिसागज दीन फिरे भ्रमखात, उलट्ठिय आतुर सागरसात७ ॥
दयो खलके उरमैं सु अभंग, गयो हियभेदि रु रामनिखंग॥११९॥
गिरे खलके करतैं सर१चाप२, परयो अरराय तज्यो असु आप॥
जितैंतित भज्जिग रक्खसैं सेस, लई पहिली निर्जरेचि दिनेस ॥
बजे सुरदुंदुभि१दिव्यसरीर२, सबै जग स्वस्थभयो तजि पीर ॥
भये मुनि१देव२रु चारन३तुष्ट, अमादिन राम हन्यौं इम दुष्ट॥१२१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

जिस अस्त्र को ब्रह्मा ने इन्द्र के लिये बनाया था जिसके पांखों में बलवान् पवन बसता है और जिसके दोनों फलों में सूर्य और अग्नि रहते हैं जिसका भारीपन सुमेरु पर्वत के समान और शरीर आकाश के समान है ॥ ११५ ॥ यमराज के घर के समान उस अस्त्र को रामचन्द्र ने लिया जिसकी पांखों पर सोने का चित्राम, गरुड़ की सुन्दर पांखों को प्रकाश करते हुए का ॥ ११६ ॥ वेद के कहेहुए मंत्रों सहित शत्रु के नाश के घर रूपी बाण को प्रत्यंचा पर धरा और खींचकर कान के मूल तक लिया उस समय भूमि चलायमान होगई ॥ ११७ ॥ अचानक भूमि को उठानेवाला बराह घुटनों के बल गिर गया. शेषनाग चौंक उठा और फणों का समूह नमगया. कमठ भी मचक गया ॥११८॥१दिशाओं के हाथी २वह बाण रावण का हृदय भेदन करके पीछा रामचन्द्र के भाथे में चलागया ॥ ११९ ॥ अरराट शब्द करके(यह गिरने के शब्द का अनुकरण है) बलवान् प्राण को छोडदिया३बाकी के राक्षस४ सूर्य ने अपनी पहिले की क्रान्ति पीछी ली ॥१२०॥ ५ अमावास्या के दिन ॥ १२१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

वीतिहोत्रवसुधेश्वरवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ बिवाहवेला-वर्णनबिषयकबिवस्वद्वंशविवर्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ प्रथमपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशवैदेहीवल्लभचरित्रे रामचतुर्दशी १४ दिनखिलबहुलकर्बुरनिपातनश्रुततद्वधतद्वधूबिलापरावणादर्श ३० दिनरणबिरचनसुग्रीवविरूपाक्ष १ महोदर २ विध्वंसनतारेयमहापार्श्व१प्राणहरणदशग्रीवशक्तिशीर्णलक्ष्मणशूरशय्याशयनसमुज्जीवितस्वानुजरघुराजगतप्रत्यागतलङ्केश्वरदलनं चतुःपञ्चाशत्तमो ५४ मयूखः ॥ ५४ ॥ आदितः षण्णवतितमः ॥ ९६ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

अनसु गिरयो लखि अग्रजहिँ, बहु किय रुदन विलाप ॥
बुल्ले सु सुनि बिभीखनहिँ, अतिहित राघव आप ॥ १ ॥
बीर समुख जुरि होत व्यसु, सोक उचित गिनि सो न ॥
सदा जई कोउ न सुन्यौँ, भय१खय२रहित त्रि३भोन ॥२॥
कहिय बिभीखन जिहिँ करे, नम्म्र असुर१सुर२नाग३ ॥
अप्प हन्यौँ प्रभु ताहि अब, दैन रह्यो खिल दाग ॥३॥

वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के प्रथम पुत्र विकुक्षिकुल के कलश जानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में रामचन्द्र के चतुर्दशी के दिन बाकी के बहुत राक्षसों को मारना, उनका माराजाना सुनकर और उनकी स्त्रियों का विलाप सुनकर अमावास्या के दिन रावण का युद्ध रचना, सुग्रीव का विरूपाक्ष महोदर को मारना, अंगद का महापार्श्व को मारना, रावण की शक्ति से क्षीण होकर लक्ष्मण का शूरशय्या में सोना, अपने छोटे भाई के जीवित होने पर रामचन्द्र का जाकर पीछे आयेहुए रावण को मारने का चौपनवां मयूख समाप्त हुआ।५४।और आदि से छयानवे मयूख हुए॥ १ बड़े भाई को १ विना प्राण गिराहुआ देखकर ॥१॥ वीरलोग सन्मुख जुड़कर विना प्राण होते हैं उनका शोक करना उचित नहीं है सदैव जीतनेवाला किसीको नहीं सुना और तीनों लोकों में भय और नाश से रहित कोई नहीं है ॥ २ ॥ उसको ३दाग देना (दग्ध करना) ४ बाकी है ॥ ३ ॥

राम कह्यो रिपुता कहत, मरन अवधि जगमाँहिं ॥
ज्यौं तव त्यौं मम बंधुजन, अब रावन प्रिय आँहिं ॥ ४ ॥

(षट्पात्)

सुनत कुखाप[1] दससीस पतन लंका अंतहपुर[2] ॥
विलपत नारिनवृंद[3] अखिल[4] आये कढि आतुर ॥
द्रुत[5] पुर उत्तरद्वार होय रनभुव धव[6] हेरत ॥
सुख सुमिरत[7] पति संग खुलेकेसन सुम[8] खेरत ॥
लोटत बिहाल तोरत अलक सुत्तो लखि मानद[9] समर[10]॥
महिला[11] अचेत मयजा[12] प्रमुख[13] परी सकल तस देहपर ॥५॥

(दोहा)

मंदोदरि व्याकुल अमित, अखिल तिय अवतंस[14] ॥
सीतासन मोमैं सदा, बढत रूप१गुन२बंस३६ ॥ ६ ॥
तदपि[15] अनंगाऽऽयत्त[16] तैं, मोहितैं[17] बीसरि मोहि ॥
हठि बरजत सीता हरी, तास मिल्यो फल तोहि ॥ ७ ॥
पुष्पक दिव्य विमान पर, धव हमजुत चढि धीर ॥
रचते नंदन[18]१चैत्ररथ[19]२, विहरन[20]१क्रीडन२बीर ॥ ८ ॥
सो अज्जहि[21] बित्यो समय, सोये तुम रनसैन ॥

रामचन्द्रने कहा कि जब तक जीवित रहै तभी तक संसार में शत्रुता कहते हैं मरे पीछे यह रावण जैसा तेरा भाई है तैसा ही मेरा भी प्रिय है ॥ ४ ॥ १ मराहुआ २ जनाने में ३ समूह ४ सब ५ शीघ्र ६ रणभूमि में पति को हेरती हुई ७ पति के संग सुख भोगे थे उन को स्मरण करती हुई ८ मस्तक पर फूलों की रचना होरही थी जिनको बिखेरती हुई ९ मान देनेवाले अपने पति को १० युद्ध में सोयाहुआ देखकर १२ मंदोदरी (मय की पुत्री) १३ आदि ११ स्त्रियां अचेत होकर रावण के शरीर पर गिरीं ॥ ५ ॥ १४ स्त्रियों की मुकुट ॥ ६ ॥ १५ तो भी १६ काम के वशीभूत होकर भूल से अथवा सीता में १७ मोहित होकर ॥७॥ १८ इन्द्र के नन्दनवन रूपी अशोकवन में २० विहार और १९ चैत्ररथ (अशोकवन में रावण के क्रीड़ा करने का चैत्ररथ नामक स्थान था) में क्रीड़ा करते थे ॥ ८ ॥ वह समय तुम्हारे रणशय्या में शयन करने से २१ आज ही बीत गया

अर्क किरन प्रविसे अभय, अज्जहि लंका ऐन ॥ ९ ॥
भोक्ता त्रि३भुवन भोगके, जेता जमके जंग ॥
स्वप्न किधौं यह सत्य है, राम हनैं तुम रंग ॥ १० ॥
पवनहु हमकौं लखि१परसिर२, रंक अदंड रह्यो न ॥
ते बाहिर निकसी तरुनि, क्यौं तिहिं रोध कह्यो न ॥११॥

(षट्पात्)

बिलपत इम अति बिकल भई उरलग्गि अचेतन॥
इतर सउत्तिन तिहिं उठाय बहुदिय संबोधन ॥
निकट बिभीखन बुल्लि चित्त राघव अक्खिय इत ॥
अग्रज तिय बिसवासि देहु पावक तिहिं दीपित ॥
सुनि कहिय बिभीखन रामसन यह अधर्मरत दुष्ट अति॥
निजहत्थँ याहि संस्कृत करन मेरी होत न नैंक मति॥१२॥

(दोहा)

बुल्ले राम बिभीखनहिं, दुष्ट जदपि दसमत्थ ॥
तदपि सस्त्र परि पूत तनु, अब भ्रम छंडहु अत्थ ॥ १३ ॥
तव कर करि संस्कार तैं, याको बढिहै अग्घ ॥
जिततित तेरो जाय है, बहुजस कबुंरबग्घ ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

और आज ही लंका के घर में निर्भय होकर सूर्य के किरण घुसे ॥ ९ ॥ तीनों लोक के भोगों को भोगनेवाले और युद्ध में यमराज को जीतनेवाले तुमको युद्ध में रामचन्द्र ने मारे सो यह सत्य है अथवा स्वप्न है ॥ १० ॥ हमको देखकर और स्पर्श करके दीन के समान पवन भी दंड पाये विना नहीं रहा वे ही स्त्रियां बाहर निकल आई हैं जिनको तुमने क्यों नहीं रोका ॥ ११ ॥ दूसरी सौतों ने मंदोदरी को उठाकर बहुत समझाई १ बुलाकर रामचन्द्र ने कहा कि तुम्हारे बडे भाई की स्त्री को विस्वास देकर रावण को २ अग्नि दो ३ मेरे हाथ से रावण के संस्कार करने में मेरी मति नहीं होती ॥ १२ ॥ तो भी शस्त्रों के पड़ने से उसका शरीर ४ पवित्र होगया है ॥१३॥ तेरे हाथ के संस्कार से रावण का ५ आग्रह बढेगा और ६ हे राक्षसों में सिंह (विभीषण) सब दिशाओं में तेरा यश जावेगा ॥ १४ ॥

सु सुनि बिभीखन सजव आय दसकंधर आलय ॥
अग्निहोत्र ताको उठाय लै बहु चंदन चय ॥
अग्रज बपु पट आतसेय पहिराय अश्रुधर ॥
काढ्यो दै निज कंध पुरटनिर्मित नृजानपर ॥
कर्बुरी वृंद रोवत बिकल गये बिलप्पत पिठि तस॥
लखि प्रयत देस निगमोक्त करि दाह्यो सोदर ससिदस१५
प्रथम आज्य१दधि२पूर्ण सुभग स्रुककरि किय सेचन ॥
ऊरुन१कंडन२पयन१सकट२धरि तास रीतिसन ॥
जथास्थान अरणी१अयोग्र२दारव अमत३धरि ॥
पसु पवित्र हनि तत्थ अनुस्तरणी२घृतजुत करि ॥
लाजा३बिखेरि दै पुनि दहन४जल निमज्जि५पटअल्ल६जुत॥
तिल१दर्भ२मिलित दै तिहिं उदक७सद्दिय सब निगमोक्तनुत१६

(दोहा)

मंदोदरि आदिक सबन, अनुनय[1] पुव्व पठाय ॥
व्है पहुँच्यो रघुनाथ ढिग, सच्चो रक्खसराय ॥ १७ ॥

शीघ्र रावण के घर में आकर उसका अग्निहोत्र उठाकर चन्दन काठ का समूह लेकर बडे भाई के शरीर को रेशमी वस्त्र पहना कर स्वर्ण की रचीहुई पालकी (नरयान) पर बिठाकर रोतेहुए (विभीषण) ने अपना कन्धा देकर निकाला राक्षसियों के समूह विलाप करते हुए उसके पीछे गये पवित्र स्थल देखकर वेद में कही रीति के अनुसार सगे भाई (विभीषण) ने रावण को दग्ध किया ॥ १५ ॥ प्रथम घृत और दही से स्रुवे को भरकर सींचा. जांघों (जंघा) पर ऊंखल (ऊंखली) और पगों पर गाडा (छकड़ा)रक्खा फिर शास्त्र में लिखे अनुसार अरणी मूशल उत्तरारणी पात्र यथास्थान पर धरे और एक पवित्र पशु को मारकर उस की मज्जा के साथ घृत मिलाकर रावण के मुख में दिया और भूमि पर अक्षत विखेर कर अग्नि देकर जल में गोता लगाकर आले वस्त्रों से तिल और डाभ से मिलाहुआ जल देकर वेद के कथनानुसार स्तुति योग्य कार्य किया ॥ १६ ॥ १ विनय पूर्वक ॥ १७ ॥

मातलिसौं कहि सक्करथ, त्रिदिव पठायो राम ॥
बुल्ले पुनि प्रभु बुल्लिकैं, लक्खन अनुज ललाम ॥ १८ ॥
बेग बिभीखनकै करहु, अब लंका अभिसेक ॥
सुनि लक्खन दै कनक१घट, पठये प्लवग२ अनेक ॥ १९ ॥
जे लाये भरि सिंधुजल, इम लंकापुर आय ॥
अप्पनकर३ अभिषेक किय, लक्खन हित तस लाय ॥ २० ॥
भव्य बिभीखनकी भई, नजरि१निछावरि२तत्थ ॥
सब जातुन४ मन्न्यौं सु पहु, सो प्रभु भक्ति समत्थ ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

बहुरि राम मारुति बुलाय जंपिय द्रुत जावहु॥
सीताकौं जय१कुसल२सत्रुबल्ल३सहित सुनावहु ॥
तब हनुमान असोक६बनी आय रु यह अक्खिय ॥
सुनि मुद गद्गदबानि जननि चिरकाँरि उत्तर दिय ॥
जैसो प्रमोद तैं मम कियउ तैसो तव किहिंबिधि करौं ॥
त्रय३लोक राज्य तृनसो लगत भक्त तोहि को सुख भरौं ॥ २२ ॥

(दोहा)

मारुति तब किन्नी अरज, है यह रीझ बिसेस ॥
तो मैं सुत८ मम प्रीति यह, दीजै अंब निदेस ॥ २३ ॥
साधु कह्यो तब पवनसुत, सीता अधिक सिराहि ॥
मारुति अक्खिय रक्खसी, को तव अप्रिय आहि ॥ २४ ॥

इन्द्र के सारथी मातलि को कहकर रामचन्द्र ने इन्द्र का रथ पीछा स्वर्ग में भेजा फिर लक्ष्मण को बुलाकर बोले ॥ १८ ॥ १ सोना के घड़े देकर २ अनेक वानरों को भेजे ॥ १९ ॥ ३ अपने हाथ से ॥ २० ॥ सब ४ राक्षसों ने उस (विभीषण) को अपना स्वामी माना ॥ २१ ॥ ५ फिर रामचन्द्र ने हनुमान को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाओ ६ अशोकवाटिका में ७ बहुत देरी से उत्तर दिया ॥ २२ ॥ ८ हे माता आप यह आज्ञा दो तुझमें मेरी ९ पुत्र की सी प्रीति है ॥ २३ ॥ १० तू श्रेष्ठ है यह कहकर ॥ २४ ॥

तोकँहँ कोन डरावती, कोन कथित[1] करती न॥
तिनकौं अब मारौं त्वरित प्रहरि नखर[2] बपुपीन[3] ॥ २५ ॥
जननि कह्यो परतंत्र[4] जे, हैलन[5] तिनको है न॥
अप्रिय कछु किय पुब्ब[6] अब, बंदि[7] करत मम बैन॥ २६ ॥
मारुति अक्खिय जात मैं, सौंपहु कछु संदेस ॥
कह्यो जननि पतिकौं लखौं, अब आसय[8] दृढ एस ॥२७॥

षट्पात्

सुनि मारुति प्रभु निकट आनि अक्खिय अंबासय[9]॥
बुल्लि बिभीखन तवहि[10] द्रुतहि रामहु निदेस[11] दिय॥
सीता सिरजुत[12] न्हाय दिव्य अंबर[13]१ भूखन२ धरि ॥
दिव्यगंध ३अनुलिप्त[14] अत्थ[15] आवैं सु जल्लकरि ॥
क्रव्यादराज[16] सुनि जाय तव करन जोरि बिन्नति करिय॥
न्हाय रु निचोल[17]१ भूखन पहरि चढहु यान[18] प्रभु हुकम दिय॥२८॥

दोहा

सो सुनि कर्बुरराजसौं, सीता कहिय स्वकाम[19] ॥
मंजनपुब्बहि[20] मोहि मुख, रम्य[21] दिखावहु राम ॥२९॥

पट्पात्

कहिय बिभीखन जननि करहु राघव अक्खिय जिम॥
सु सुनि सती पतिभक्त किन्न निज धव[22] निदेस तिम ॥

हनुमान् ने सीता से कहा कि तुम को कौनसी राक्षसी डराती थी और १ कहा नहीं करती थी उनके ३ पुष्ट शरीर का २ नखों का प्रहार करके मार डालूं ॥ २५ ॥ सीता माता ने कहा कि ये४ परतंत्र थीं इससे इनका ५ दोष नहीं है६पहिले इन्हों ने अप्रिय किया था अब७नमस्कार करके मेरा कहा करती हैं।२६।८मेरा दृढ अभिप्राय यही है कि पति(रामचन्द्र) को शीघ्र देखूं ॥ २७ ॥ ९ सीता माता का आशय १० शीघ्र ही ११ आज्ञा दी १२ माथा न्हाकर १३ वस्त्र १४ अनुलेप करके १५ यहां आवे १६ राक्षसराज विभीषण १७ वस्त्र १८पालखी पर चढ कर ॥२८॥ १९अपना मनोरथ कहा कि २० स्नान करने से पहिले ही मुझे रामचन्द्र का २१ सुन्दर मुख दिखाओ ॥ २९ ॥ २२ अपने पति की आज्ञा थी वैसा किया

सिरजुत न्हाय सुगंध१बसन२ भूखन३धरि सुंदर ॥
सिविका[1] चढि हुव संग गयो लै तत्थ निसाचर ॥
अखिलेस पास किन्नी अरज आई जननी अत्थही ॥
सुनतहि अमर्ष[2]१हर्ष२रु दया३प्रविसे[3] प्रभु हिय सत्थही ।३०।
राम बिभीखनसौं कह्यो, हे ममभक्त उदार ॥
ममढिग आनहु मैथिली[4], सजव[5] उक्त[6] अनुसार ॥ ३१ ॥

(षट्पात्)

सु सुनि बिभीखन दर[7] करनलग्गो कपि१जातुरन ॥
प्रेरे अग्गहि वेत्रपानि[8] कंचुकि[9] गारिष्टगुन ॥
सवन हटावन सद्द[10] सिंधुउलटनसम भो जँहँ ॥
राम जातुराजँहि[11] निवारि इम किय निदेस तँहँ ॥
क्रव्याद[12]१ ऋच्छ२मर्कट३रु कपि४ ए सब जानहु अप्पनैं ॥
आनहु निसंक छितिजा[13] इहाँ करहु न सब[14] क्लेसितैं घनैं ।३२

(दोहा)

मख[15]१ बिपत्ति२ उपयम[16]३ समर[17]४, अरु आपत्ति[18]५अनेह[19] ॥
पंचक५दोखहिं परिहरत, अबला[20] पिक्खन एह ॥ ३३ ॥
जु सुनि बिभीखन जानकी, आनी सबबिच अत्थ ॥
नम्म्र सलज्ज रही निरखि, स्वपू[21]भुमुख हितसत्थ ॥ ३४ ॥

(षट्पात्)

---

१ पालखी में चढी जिसके साथ होकर विभीषण रामचन्द्र के पास लेगया और अरज की कि सीतामाता यहां ही आगई है यह यह सुनते ही रामचन्द्र के उरमें२क्रोध, हर्ष और दया साथ ही३घुसे४सीता को मेरे ६ कहने अनुसार५ शीघ्र लाओ७राक्षसों को दूर करने लगा८हाथों में वेत लियेहुए९बडेगुणवान् नाजर अथवा जनाने सेवकों को आगे भेजदिये थे १०.शब्द ११ रामचन्द्र ने राक्षसराज विभीषण को मनाकिया १२ राक्षस १३ सीता को १४ सब को दुखी मत करो ॥ ३२ ॥ १५ यज्ञ में मरण समय में १६ विवाह में १७ युद्ध में और १८ आपदा के १९ समय में इन पांच जगह २०स्त्री को देखने का दोष नहीं है ॥ ३३ ॥ २१ अपने पति का मुख ॥ ३४ ॥

जदपि रही पंद्रह१५विहाय अवसिष्ट कलासी ॥
तदपि दैन जग कँहँ प्रतीति ताकँहँ प्रभु त्रासी ॥
बुल्ले इम इक१बरस रही सीता रावन घर ॥
टरिवेको वह हो न दुष्ट दर्पकको[1] किंकर ॥
लग्गो कलंक रघुबंस कँहँ सो मेट्यो तिहिं[2] हनि समर ॥
यह बज्र परत जननी दृगन निकासि चले अश्रुन[3] निकर॥

दोहा

रोवत लखि प्रभु पुनि कहिय,कुटिल[4] भौंह अतिक्रुद्ध ॥
अपजस मेटन काज यह, जित्यो मैं खल जुद्ध ॥ ३६ ॥
आवनमैं अपबादही, तू नहि कारन तत्थ॥
दृग दूखत ज्यौं दीप त्यौं, जाहु मनोरथ जत्थ ॥ ३७ ॥

(सोरठा)

निलय पराये नारि, बिनु निजबांधव जो बसी ॥
चित्त सनेह बिचारि, को पटुजन[6] तामैं करत ॥ ३८ ॥
जातैं अब द्रुत जाहु, दिसादस१०हि तोकौं दई ॥
वालि उच्छीसक बाहु, मिलैं न अंगदरम्य मम ॥ ३९ ॥
लक्खन१गेह ललाम, भलो गेह वा भरत२को ॥

यद्यपि चन्द्रमा पन्द्रह कला को छोडकर एक कला के साथ अत्यन्त क्षीण होजाता है इसीप्रकार जानकी भी अपने पतिव्रत धर्म के पालन में क्षीण होगई थी तथापि संसार को विश्वास कराने के लिये रामचन्द्र ने उसको त्रासदिया १कामदेव का सेवक२उस रावण को युद्ध में मारकर३आंसुओं का समूह।३५। ४भौंहें टेढी करके।३६।मेरे यहां आने में निन्दा ही कारण है(निन्दा मेटने को यहां आया हूं) हे सीता तेरे कारण नहीं आया हूं जैसे नेत्र दूखते समय दीपक को रखना अच्छा नहीं लगता तैसे ही तेरा रखना भी मुझे अच्छा नहीं लगता इसलिये जहां तेरी इच्छा होवे तहां जा ॥ ३७ ॥५पराये घर में संबंधियों के विना६ कौन चतुर मनुष्य उसमें स्नेह रखने का अपने चित्त में विचार करैगा अर्थात् कोई नहीं ॥ ३८ ॥ इस कारण से अब तू शीघ्र जा फिर भुजबंध से शोभायमान मेरे भुज का उसीसा (तकिया) नहीं मिलैगा। ३९ । लक्ष्मण का सुन्दर घर अथवा भरत का घर तेरे रहने को अच्छा है अथवा

वा कपिपति३ अभिराम, अथवा भजहु नरादइन ४ ॥ ४० ॥

(मुक्तादाम)

विदेहसुता सुनि ए कटु बैन, धनी सकुची रु चले जलनैन॥
कह्यो यह घोर कहो निजनाथ, जथा नृ गवाँर गवाँरिय साथ४१
डिग्यो कबहू मम मानस नाँहिं पतिब्रत सौंहँ करौं सबमाँहिं ॥
कुनारिन चिंति न फेरहु पिट्ठि, रहैं पतिमाँहिं सुनारिन दिट्ठि ॥४२॥
भयो गहतैं खल पुद्गलसंग, उहाँ परतंत्र हुतो मम अंग॥
न मैं अपराध सुतो किय दुष्ट, हुतो बस चित्त तहाँ तुम इष्ट ॥४३॥
सदा सबदेह स्वतंत्र न आँहिं, कहा तियजोर जहाँ पति नाँहिं ॥
समाँ बितई रहतैं तुमसंग, छिपैं नहिं नैंक निसर्गज रंग ॥ ४४ ॥
परीहि तथापि न मो पहिचानि, रु जाँतिहिसौं कुवधू लियमानि॥
भई भुवसौं मिस लै मिथिलेस, सुव्रतनमैंहि रही सिसुवेस ॥४५॥
हजारनमैं विधिसौं गहि हत्थ, अयोग्य करो न धनी बनि अत्थ ॥
दयो ममसील समस्त बिसारि, तजौं तनु तो अब आगि प्रजारि४६
कह्यो पुनि लक्खनसौं जगदंब, करो चित देवर काष्टकदंब ॥

सुग्रीव का घर अच्छा है अथवा विभीषण के घर का सेवन कर ॥ ४० ॥ जानकी ने ये कड़वे वचन सुनकर बहुत विलाप किया और लज्जित हुई और अपने पति से कहा कि यह घोर वार्ता जैसे ग्रामीण (मूर्ख मनुष्य) ग्रामीण (छोटे ग्राम में रहनेवाली) स्त्री को कहै तैसे आप कहते हो ॥ ४१ ॥ १ मन. २सबके सामने पतिव्रत का सोगन करती हूं, हे रामचन्द्र खोटी स्त्रियों के चरित्रों को स्मरण करके मुझ से पीठ मत फेरो श्रेष्ठ स्त्रियों की दृष्टि सदैव पति में ही रहती है ॥४२॥ दुष्ट रावण के शरीर का संग मुझको पकड़ते समय ही हुआ था जिस समय मेरा शरीर पराधीन था उसमें मेरा अपराध नहीं वह तो दुष्ट रावण ने स्पर्श किया था परन्तु मेरा चित्त तो आप में ही इष्टरूप से वास करता था ॥ ४३ ॥ ३स्वतंत्र नहीं है, ५आपके साथ रहते ४वर्ष बीतगये ६स्वभाव से उत्पन्न हुआ रंग छिपा नहीं रहता ॥४४॥ ७ जन्म से ही मुझको खोटी स्त्री मानली ८मिथिला के पति का मिस लेकर भूमि से पैदा हुई और बचपन से ही श्रेष्ठ व्रतधारियों में रही ॥ ४५ ॥ ९ यहां पर मेरा जो सब शील आप भूलगये तो अग्नि जलाकर शरीर छोडूंगी ॥४६॥ सीतामाता ने लक्ष्मण से कहा कि हे देवर काष्ट का समूह इकट्ठा करके चिता बनादो

करौं मम भस्म हुतासन इष्ट, सुही इहिं आमय औषध सिष्ट ४७
रहौं न वृथा अपवादहि पाय, तजी पतिकी मग और न जाय ॥
लखे प्रभुकौं सुनिकैं यह सेस,कह्यो प्रभुहू सुनि सैन निदेस।४८।
रची तब सेस चिता अनुरूप, प्रदक्खिन मात करे रघुभूप ॥
अधोमुख दीप्त चिता ढिग जाय,प्रनाम कर्यो द्विज१देवन२पाय४९
कह्यो करजोरि उपर्बुध ओर, मुर्यो नन राघवसौं हिय मोर ॥
रु कायक१ वाचक२ मानस३ वान,कदापि भयोपतिसौं हितहान५०
हुतासन रक्खहु तो तुम सक्खि, यहै कहि देह दयो बिच रक्खि॥
लगे डिगिवे तँहँ अंडकटाह, कुलाचल कंपि डरे दिगनाह ॥५१॥
गयो द्रुत हारव फुट्टि त्रिश्लोक,परे नर१ नाग २ सुरा३ सुर४सोक॥
भये प्रभु दुर्मन इक्क१मुहूर्त, भये दृगपंकजहू जलपूर्त ॥ ५२ ॥
महेस१बिरंचि२ रु इंद३ कुबेर४, कृतांत५ रु अप्पति६पाय सुबेर॥
बिमानन वैठि तहाँ सब आय, कही इम राघवसौं हितलाय।५३।
प्रभू सब संसृतके तुम धाम, न अप्पहिं मानव मन्नहु राम ॥

मुझ को अग्नि ही प्रिय है इसकारण से भस्म कर दो इसरोग की यही श्रेष्ठ औषधि है ॥ ४७ ॥ मिथ्या निन्दा पाकर नहीं रहूंगी पति की छोड़ीहुई दूसरे मार्ग नहीं जाती, यह सुनके लक्ष्मण ने रामचन्द्र की ओर देखा सो रामचन्द्र ने भी इसारे से आज्ञा देदी ॥ ४८ ॥१जैसी सीता के लिये होनी चाहिये ऐसी२सीता माता ने रामचन्द्र की प्रदक्षिणा करके३नीचा मुख किये जलतीहुई चिता के पास जाकर ॥ ४९ ॥ अग्नि की ओर हाथ जोड़ कर कहा कि मेरा हृदय रामचन्द्र से नहीं मुड़ा शरीर से वचन से और मन से किसी समय में पति से हित की हानि हुई होवे तो॥ ५० ॥हे अग्नि! तुम साक्षि रखना, यह कहकर अपना शरीर उस अग्नि के बीच में रख दिया ब्रह्मांड डिगने लगा कुलाचल (जो पर्वत भूमि के परिधि लगाये हुये हैं वे) धूजकर दिशाओं के हाथी डिग गये ॥ ५१ ॥ शीघ्र हाहाकार शब्द फूटगया देवता और असुरों के शोक पड़गया " रामचन्द्र का भक्त विभीषण राक्षसों का राजा होगया इस कारण असुरों को भी शोक हुआ". और दो घड़ी तक रामचन्द्र भी उदास रहे और कमल समान नेत्र जल से पूर्ण होगये ॥ ५२ ॥४यमराज५वरुण, श्रेष्ठ समय पाकर॥ ५३ ॥ सब संसार के आप घर हो हे रामचन्द्र आप अपने को मनुष्य मत मानो और

विदेहसुता कमला अवतार, तजो जिन ताकँहँ हे भवतार ॥५४॥
भये नर रावनके बधकाज, फल्यो सब देवन इष्ट सु आज ॥
नरत्वहिँ राम तथापि न छोरि, रहे तिन अग्ग खरे करजोरि ५५
इतेबिच देह हुतासन धारि, स्वअंक बिदेहसुता बइठारि ॥
कह्यो रघुनाथ सती यह लेहु,वृथा अभिसाप न याकँहँ देहु ५६
मुहूर्त यहै सुनिकैं करि ध्यान, प्रसन्न कह्यो रघुनाथ प्रमान॥
करी दुव२दोख मिटावन एह, बिदेहसुता अब है ममगेह ॥५७॥
हुतो खल रावनको बल नाँहिँ, कुदिट्ठि सकैं करि जानकिमाँहिँ
सुपै सुनि आक्खिय संकर तत्थ, यहै रघुनाथ पिता तव अत्थ५८
विमान समारुहि पिक्खन आय, परो तुम भ्रात उभै२तस पाय॥
करी सुहि राघव नम्म्र निसंक, उभै२हि लये अजके सुत अंक॥
कह्यो सुतसौं हनि रावन दुष्ट, करो पुरजाय सबै अब तुष्ट ॥
सुपुत्त हमैं वह तैं दिय स्वर्ग, बढो तव भूमि१ प्रजा२धन३ वर्ग६०
दिवायउ देवननैं बन तोहि, हमैं अब जानिपरी जिम जोहि ॥

सीता लक्ष्मी का अवतार है सो हे संसार का उद्धार करनेवाले उसको मत छोडो ॥ ५४ ॥ तो भी रामचन्द्र मनुष्यपन को नहीं छोडकर उन देवताओं के सामने हाथ जोड़ कर खड़े रहे ॥ ५५ ॥ अग्नि ने शरीर धारण करके जानकी को अपनी गोदि में विठाकर रामचन्द्र से कहा कि इस पतिव्रता को लो और इसको मिथ्या दोष मत दो ॥ ५६ ॥ यह सुनकर दो घड़ी तक ध्यान करके रामचन्द्र ने प्रसन्न होकर अग्नि से कहा कि तुम्हारा कहना प्रामाणिक है एक तो यह कि रामचन्द्र बहुत कामी है और दूसरा यह कि संसारिक व्यवहारों को नहीं जानते इन दोनों दोषों को मिटाने के लिये हमने इसका त्याग किया था अब जानकी मेरे घर में है ॥ ५७ ॥ जानकी में खोटी दृष्टि करसके ऐसा रावण का बल नहीं था, यही बात वहां पर महादेव ने कही और कहा कि हे रामचन्द्र यह तुम्हारे पिता (दशरथ) भी यहीं पर हैं । ५८ । विमान पर चढकर देखने को आये हैं तुम दोनों भाई इनके पगों में पड़ो अज के पुत्र (दशरथ) ने दोनों को गोदी में लेलिये ॥ ५९ ॥ अपने पुर में जाकर सब को प्रसन्न करो, हे पुत्र तुमने हमको वह स्वर्ग दिया है इससे हम आशीर्वाद देते हैं कि तुम्हारे भूमि प्रजा और धन का समूह बढो ॥६०॥ तुमको देवताओं ने बनवास दिवाया था सो जो वार्ता जैसे थी वह हमको अब जान

सअंजलि नम्म्र कह्यो तब राम,सपी तुम केकयजा तब धाम६१
सु सापहु मोघकरो हित सत्थ, तथास्तु कह्यो अजके सुत तत्थ
विदेहसुतासन आक्खिय बैन, न पावहु पुत्रि स्वसुद्धि अचैन ॥६२॥
ससेस समस्तन यौं हियलाय, गयो दसस्यंदन देवनिकाय ॥
कह्यो तब राघवसौं सुरराज, अमोघ हमैं लखिबो तव आज ६३
कछू बर लेहु कह्यो बर तत्थ, सबै मृत मोर जिवावहु सत्थ ॥
तहाँ मृत भल्लुक१ मर्कट२कीस३, समस्त जिवायदये सुरईस६४
कह्यो पुनि देवन जावहु धाम, निहारहु भ्रात१प्रसू२निज राम ॥
गये कहि यौं सुर स्वीय निकाय, नमैं तिनकौं हितसौं रघुराय६५
रहे इम ह्वाँ निस तीन३बहोरि, बिभीखन प्रान कही करजोरि ॥
अबै प्रभु धारहु चामर१छत्र२, सबै नृपचिन्ह लहो सकलत्र ।६६।
कह्यो प्रभु हंत विना भरतेन, सुहावत भूखन१अंबर२ वे न ॥
सु आनहु पुष्पक बेग विमान, करैं हम कौसलदेस प्रयान ॥६७॥
करयो सब तैं मम दुर्लभ काज, रहो सुख भुग्गत कर्बुरराज ॥
यहै सुनि पुष्पक हाजर किन्न,बिभीखनकौं पुनि सासन दिन्न६८
लरे कपि१ रिच्छ२ सबै मम काज, इन्हे पट१रत्न२न पूजहु आज।
बिभीखन सो सुनि मंजुल मित्र, करे सब अर्चित चित्रबिचित्र६९

पड़ी है तब रामचन्द्र ने हाथ जोड़कर नम्रता से कहा कि आपने मेरे व-नवास जाते समय अयोध्या में कैकेई को श्राप दिया था ॥ ६१ ॥ उस साप को हित के साथ मिथ्या करो, तहां पर दशरथ ने कहा कि ऐसा ही होवेगा फिर सीता से दशरथ ने कहा कि हे पुत्रि! तू अपनी शुद्धता में कोई खेद मत पा, अर्थात् तू शुद्ध ही है ॥६२॥ लक्ष्मण सहित दशरथ स्वर्ग को गये इन्द्र ने रामचन्द्र से कहा कि तुम्हारा हमको देखना आज खाली नहीं जाना चाहिये ॥ ६३ ॥ मेरे साथ वाले मरे हुए हैं उनको जिवा दो इन्द्र ने जिवा दिये ॥ ६४ ॥ देवताओं ने कहा कि हे रामचन्द्र अपने घर जाकर भाई और माता को देखो देवता अपने घर गये ॥ ६५ ॥ बल पूर्वक निवेदन किया (खींचकर अरज की) स्त्री सहित । ६६ । रामचन्द्र ने कहा कि भरत के विना ये सब खेदकारी हैं भूषण वस्त्र और वे (चामर छत्र) नहीं सुहाते । ६७ । १हे राक्षसों का राजा आज्ञा दी॥६८॥ वस्त्र सुन्दर मित्र ने पूजित किये॥६९॥

चले पुनि राघव बठि बिमान, दिखावत जानकिकौं सब थान ॥
लगे पुनि सिक्ख[1] समस्तन दैन, कह्यो तिन ह्वाँ चलिहैं[2] प्रभु ऐन ७०
सबै प्रभुको लखिहैं अभिसेक, बनैं पुनि आवन गेह[3] बिवेक ॥
सुही किय स्वीकृत[4] राम सिराहि, चढायलये सब पुष्पक चाहि ७१
दिखावत संगर[5]१ मग्ग२ असेस, बिदेहसुता लहि हंकिय देस ॥
विमान सु पुष्पक हंस[6]उपेत, पताकिंत[7] दिव्य उड्यो छविदेत ।७२।
कपीश्वरके पुरके ढिग जात, कह्यो प्रभुसौं हसिकैं जगमात[8] ॥
प्लवंगनकेहु[9] कलत्र[10] असेस, चलैं मम संग ममासय[11] एस ॥ ७३ ॥
गये तब राघव बानरद्रंग[12], लये सकलत्र[13] सबै कपिसंग ॥
चउत्थि४निसा रहि ह्वाँ रघुराय, चले पुनि पुष्पक सर्ब चढाय ।७४।

पादाकुलकम्

ऋष्यमूक१पंपा२पद्धति[14] रुख, जंतु[15] कबंध १बिराध२नास मुख[16]॥
जे जे कर्म बनैं जब आवत, ते सीता कँहँ सबहि दिखावत॥७५॥
पहुँचे चैत बिसद[17] पंचमि५दिन, भरद्वाज आश्रम राघवइन[18]॥
पुच्छिय करि बंदन मुनिसौं पहु[19],सजननि[20] भरत२कुसल पुरअक्खहु७६
भरद्वाज अक्खिय कुसली सब,पै अतिदुक्ख भरत पावत अब ॥
जटिल[21]१मलिन२कृस[22]३रामहि चाहत,पुच्छि पांदुका[23] राज्य निवाहत७७
दरसन देहु जाय तिहिं सत्वर[24], बर कछु लेहु मोहुसौं रघुवर ॥
प्रभु तब कपिन अभीष्ट[25] असन[26] चहि, मंग्यो बर मुनिसौं असैं कहि ७८

१सबको विदा करनेलगे२अयोध्या में चलेंगे।७०।३पीछे अपने घरों को आने का विचार४रामचन्द्र ने स्वीकार किया और रुचि पूर्वक सबको पुष्पक विमान पर चढालिया ॥७१॥५युद्ध के स्थल और मार्ग दिखाते हुए ६ हंस सहित ७ ध्वजाओं सहित ॥ ७२ ॥ ८ सीता ने ९ वानरों की सब १० स्त्रियां भी मेरे साथ चले ऐसा ११ मेरा अभिप्राय है ॥ ७३ ॥ १२ वानरों के पुर (किष्किन्धा) में १३ स्त्रियों सहित वानरों को ॥ ७४ ॥१४मार्ग की ओर १५राक्षस१६आदि ॥ ७५ ॥ चैत्र१७सुदि पंचमी के दिन १८ रघुवंशियों के सूर्य भरद्वाज मुनि के आश्रम पर पहुंचे१९राजा रामचन्द्र ने २०माता सहित।७६। २१जटा रखाये हुए२२दुर्बल २३ रामचन्द्र की पादुका से पूछ पूछ कर राज्य कार्यको निवाहते हैं।७७।२४शीघ्र जाकर२५वानरों के इच्छानुसार२६भोजन

दोहा

स्वर्गतरुन सम फल१कुसुम२, मैं जावत जिहिं मग्ग[3] ॥
पादप[4] धारहु १होहु पुनि, अद्रि मधुश्रव[5]२अग्ग ॥७९॥
कहि तथास्तु तब मुनि करयो, पद्धति[6] बन फलपीन ॥
लंबमान[7] साकेत[8]लग, चोरो जोजन तीन ॥८०॥
पूरन अब्द[9] चउद्दहम४१४, इहिं आश्रम हुव आत ॥
पठयो[10] मारुति अग्ग प्रभु, भेटन माता१भ्रात२ ॥ ८१ ॥
चैत बिसद प्रतिपद१दिवस, किय रावन संस्कार[11] ॥
किय अभिसिक्क[12] बिभीखनहिं, दूजे१दिवस उदार ॥ ८२ ॥

(सोरठा)

जब सीता लैआय, दससिर धरी असोकबन ॥
तब देवन तँहँ आय, जननी[13] हित पायस[14] दयो ॥ ८३ ॥
लगी न ताकँहँ लैन, कहि पति विनु उपवास[15] क्रम ॥
विबुधन[16] तब हित बैन, कह्यो असन[17] याको करहु ॥ ८४ ॥
तस[18]१रु भूख२ए तोहि, व्यापै नहिं यातैं बहुरि ॥
सती खाय तब सोहि, वलि[19] अनसन[20] कह्यो बरस१ ॥८५॥

मांगा ॥ ७८ ॥ १ स्वर्ग के वृक्षों के समान फल और २ फूल हम जाते हैं जिस ३ मार्ग के ४ वृक्ष धारण करें और आगे के पर्वत ५सहत के बहानेवाले होजावें ॥ ७९ ॥ ६ मार्ग के वन को फलों से पुष्ट कर दिया ७ लंबाई में ८ अयोध्या तक और चौड़ाई में तीन जोजन (बारह कोश) ॥ ८० ॥ चौदहवां ९ वर्ष पूरा हुआ उसी दिन रामचन्द्र भरद्वाज के इस आश्रम में आये इसीकारण से (भरत ने कहा था कि चौदह वर्ष बीत जाने पर भी आप नहीं आवोगे तो मैं ज़लजाऊँगा) १० हनुमान को आगे भेजा ॥ ८१ ॥ चैत्र सुदि एकम के दिन को रावण का ११ अग्नि संस्कार (दग्ध) और दूज के दिन विभीषण का १२ राज्याभिषेक किया ॥ ८२ ॥ जब रावण ने सीता को लेजाकर अशोक वन में रक्खी तब देवताओं ने आकर १३ सीता को पीने के लिये १४ दूध दिया ॥ ८३ ॥ सो नहीं लेकर सीता ने कहा कि पति के विना १५ निराहार रहूंगी १६ देवताओं ने हित के वचन कहे कि इसका १७ भोजन कर जिससे तुझको ॥ ८४ ॥ १८ तृषा और भूख नहीं लगे तब सीता ने उसको खाकर १९ फिर २० निराहार वह वर्ष निकाला ॥ ८५ ॥

तीजे३दिन प्रभु ताहि, मिले परखि पावक[1] विमल ॥
चलि चउत्थि४दिन चाहि, किष्किंधा कट्टी रजनि ॥ ८६ ॥
सुग्रीवादि असेस[2], नारिनजुत लै संग निज ॥
अहँ[3] पंचमि५अखिलेस, भरद्वाज मुनि भिंटये[4] ॥८७॥
मानववपु[5] हनुमान, अग्ग सुनावन आगमहिं॥
पुव्वहि[6] विरचि प्रयान, गुह आलयँ[7] पहिले गये ॥ ८८ ॥
सुख किय कुसल सुनाय, शृंगबेरपति संकरै[8] ॥
गगनै[9] रामजस गाय, उड्यो बहुरि सुत अनलकौ[10] ॥ ८९ ॥

(षट्पात्)

रामतीर्थ१कपि लंघि सरित[11] बालुकिनी२संजुत ॥
वरूथिनी३पुनि गोमती४रु सालबन५लंघि द्रुत ॥
नंदिग्राम६जु इक्क१कोस साकेतनगर[12] सन ॥
भरत भिंटि तहँ जाय कह्यो सब वृत्त बन्यौं बनै[13] ॥
वह धरत अजिनै[14]१कासाँयपट[15]२कंद फलासनै[16]३जतिनै[17] व्रत ४॥
सुनि अग्रजात[18] आगम गिरयो इक१मुहूर्त मुद[19] मोहगत ॥ ९० ॥
पुनि लहि चेतन भरत विरचि मारुति[20] आलिंगन[21] ॥
अक्खिय दैहैं तोहि धेनु इकलक्ख१००००पयोधनै[22]॥
सत१००ग्राम रु सोलह१६ सुरूप कन्न्या गुनसुंदर ॥
कहि परंतु तू कोन सुर[23]१कि असुर२ कि नर३किन्नर४ ॥

१अग्नि में २ सबको ३ पंचमी के दिन ४ भरद्वाज से मिले ॥८७॥५मनुष्य का शरीर करके रामचन्द्र का आगम सुनाने के लिये रामचन्द्र से ६ पहिले गमन करके प्रथम गुह के ७ घर (शृंगवेरपुर) में गया ॥ ८८ ॥ ८ शंकर के अवतार (हनुमान) ने ९ आकाश मार्ग में १० पवन का पुत्र उडा ॥ ८९ ॥ ११ नदी १२ अयोध्या से एक कोश पर नन्दीग्राम में जाकर भरत से मिला और १३ वन में जो वृत्तान्त बना वह सब कहा वह (भरत) १४ मृगचर्म १५ भगवा वस्त्र धारण किये कंद फल का १६ भोजन करनेवाला१७यतियों के व्रत को रखनेवाला१८बडे भाई का आना सुनके१९हर्ष की मूर्छा में दो घड़ी तक भूमि पर गिर गये ॥ ९० ॥२०हनुमान से२१मिल२२दूध ही है धन जिनके ऐसी एक लक्ष गौ २३ देवता है किंवा

हुव किम अरराय[1] सीताहरण किम दसकंधर नास किय ॥
सह आदिअंत हनुमान सुनि कथा राम जयमय कहिय ॥९१॥

(दोहा)

छट्ठी[2]वासर कल्हि प्रभु, मिलिहैं तुमसौं आय ॥
सुनत एह सत्रुघ्नसौं, भरत कह्यो हितभाय ॥ ९२ ॥
शृंगारहु प्रासाद[3]१ पुर२, समुख चलहु दलसज्जि[4] ॥
सत्रुघ्न सु सह्यो हुकम, अतिघन हरख उपज्जि ॥ ९३ ॥
लगि जनतति[5] साकेत लग, चल्लिय मिलि चतुरंग ॥
जीवत पल्वल[6] भेक[7] जिम, सुचि[8] पहिले जलसंग ॥ ९४ ॥

(षटपात्)

कौसल्यादिक जननि ञ्रय[9]हि चढि चलिय नृजानन[10] ॥
सहित भरत१ सत्रुघ्न२ पाय नूतन[10] जिम प्रानन ॥
सम्मुह इम इत सेन चलिय सम्मद[11] अपुव्व चहि ॥
उतत[12] हँकिय अप्प[13] व्योम पुष्पक बिमान वहि ॥
मगविच मिलाप छठे[16]दिवस भ्रातन सह जननिन भयो ॥
साकेतनगर[14] बासिन सुखद अरक[15] महानिस[16] उग्गयो ॥९५॥

(दोहा)

जथाउचित[17] वंदन जननि, मिलि भ्रातन दुख मेटि ॥
स[18]विभीखन१ कपिपति[19]२ सबन, भरत मिल्यो उर भेटि९६

१वन में सीता कैसे हरी गई ॥ ९१ ॥ २कल छट्ठ के दिन ॥ ९२ ॥ ३ महल और पुर को सिणगारो ४ सेना सझकर ॥ ९३ ॥ अयोध्या तक मनुष्यों की ५ पंक्ति लगगई और चतुरंगिणी सेना चली अयोध्या के लिये रामचन्द्र का यह आना ६ छोटे तालावों में रहनेवाले ७ मैंडकों को ८ आषाढ मास की प्रथम वृष्टि के जलसंग के समान हुआ ॥ ९४ ॥ ९. पालखियों में १० नवीन प्राण पाया होवे जिस प्रकार ११ अपूर्व हर्ष चाह कर १२ रामचन्द्र चले १३ आकाश में १४ अयोध्या पुरवासियों को सुख देनेवाला मानो १६प्रलय के पीछे का १५सूर्य उदय हुआ १७माताओं को उचित रीति से नमस्कार करके १८ विभीषण सहित १९ सुग्रीव आदि सब से ॥ ९६ ॥

माता तीनन३ मुदितमन, नतिजुत करत प्रनाम ॥
लाये उर विसवासलहि, रुचिर सलक्खन१ राम२ ॥ ९७॥
प्रभु अग्गैं तें[४] पावरी, धरी भरत सुभ धोय ॥
कह्यो राज्य निज अब करहु,हमरे पति१ गति२ होय॥९८॥
बिरहदीन लखि भरतकों, अतिकृस[५] मलिन अधीर ॥
सविभीखन१ कपिपति२सवन, नयन छल्यो बढि नीर ९९।
अनुज भरत१ सत्रुघ्न२ उभर[६], अखिलईस धरि अंक[७] ॥
आये नंदिग्राम अब, राम निवाजत रंक[८] ॥ १०० ॥
सिक्ख तहाँसन पुष्पकहिं[९], दिन्नी प्रभु निजथान ॥
कहतहि वह अलकाँ[१०] गयो, बित्तंद[११] निलय[१२] बिमान ॥१०१॥
दृढ नामि वंदी देवरन, सीता सस्सुन पाय ॥
लज्जा१ मुद२ नतिजुत[१३] लगी, लिन्नी उन उरलाय ।१०२।
स्वीय पुरोहित जीवसमँ[१४], अक्षमालिका[१५] जानि ॥
वंदे राम वसिष्ट बिभुं[१६], लिय आसिख मुदमानि ॥ १०३ ॥

(षट्पात्)

कपिनारिन सनमानि कपिन१ रिच्छन२स्वागत[१७] करि ॥
लिय वधाय साकेत[१८] भरत सम्मदं[१९] अतीवभारि ॥
रहि सकुसल तिहिं रत्ति[२०] प्रात निगमोक्त[२१] साद्धि उरु ॥

१नम्रता सहित प्रणाम करके२लक्ष्मण सहित ३ सुन्दर रामचन्द्र को माताओं मे हृदय से लगा लिये ॥ ९७ ॥ रामचन्द्र ने चित्रकूट में भरत को दी थी ४ वे पावड़ियें धोकर भरत ने रामचन्द्र के आगे रक्खी ॥ ९८ ॥ ५ दुर्बल॥९९॥ ६ दोनों को ७ गोदी में बिठा कर. रामचन्द्र८दीनों को दान करते हुए आये ॥ १०० ॥ वहां से ही ९ पुष्पक विमान को रामचन्द्र ने अपने स्थान (कुबेर के पास) जाने की विदा दी १० कुबेर की राजधानी ११ कुबेर के १२ स्थान में गया ॥ १०१ ॥ १३ नम्रता सहित ॥१०२॥ १४ बृहस्पति के समान अपने पुरोहित १६ प्रभु वशिष्ट को उनकी स्त्री १५ अक्षमाला सहित रामचन्द्र ने नमस्कार किया ॥ १०३ ॥ १७ आये हुए का आदर करके १८ अयोध्या में भरत ने वधा कर लिये अत्यन्त १९ हर्ष में भरकर २० उस रात्रि को रहे और प्रभात ही २१ वेदोक्त बहुत कार्य करके

सप्तमि७दिन अभिसेक कियउ प्रभुके वसिष्ट गुरु ॥
तँहँ सब नदीन१सिंधुन२सलिल[1] कपि लाये भरि कनक[2]घट
अभिसिक्त[3] राम बैठे उचित भद्रासन गुन खुल्लि खट६ ॥ १०४ ॥

दोहा

आये नंदीग्रामतैं, रथ बैठे तब राम ॥
हंके सारथिभरथ हर्य,लाघव विहित ललाम॥१०५॥
निभीखन१रु लक्खन२दुहुन२,ढोरे चामर पोन ॥
छत्र लयो सत्रुघ्न कर, भर्म रुचिर छविभोन ॥१०६॥
नाम सत्रुजय नागपर, बैठायो कपिभूप ॥
नव हजार ९००० हस्थिन चढे, प्लवगन[10] अो नररूप॥१०७॥
आये पुर साकेत[11] इम, छट्ठी६दिन रघुनाथ ॥
पठये कपि लावन तबहि, पाथोनिधि[12] मुख पाथ[13] ॥१०८॥

षट्पात्

जांबवान१ हनुमान२ बेगदरसी३रु ऋषभ ४ इन ॥
सरित[14] पंचसत ५०० सलिल[15] कियउ हाजरि सेचन[16] खिन ॥
कपि सुसेन१ पुनि ऋषभ२ गवय३रु नल४ए४हू द्रुत[17] ॥
पूरब १ दक्खिन २ आदि जलधि[18] संवर[19] लाये नुत ॥
अभिसिक्त भद्रविष्टर[20] उपरि बैठे इम सप्तमि७दिवस॥
जातुप[21]१कपीस[22]१ किन्नैं चमर लियउ छत्र सत्रुघ्न तस१०९

१जल२सोने के घड़े भरलाये ३अभिषेक कराकर छह ही गुणों(सन्धि विग्रह यान संस्था आसन और द्वैधीभाव) को खोलकर (प्रकाश करके) सिंहासन पर बैठा. भरत ने सारथी होकरके ५ शीघ्रता सहित ६ सुन्दर ४ घोड़े हांके ७ स्वर्ण का रचाहुआ सुन्दरता का घर ८ हाथी पर ९ सुग्रीव को बिठाया १० वानर ॥ १०७ ॥ इसप्रकार ११ अयोध्या में आये १२ समुद्र आदि का १३ जल लाने के लिये वानरों को भेजे ॥ १०८ ॥ १४ नदियों का १५ जल १६ स्नान करने के लिये क्षणभर में १७ शीघ्र १८ समुद्रों के स्तुति योग्य १९ जल लाये २०भद्रासन पर बैठे २१ विभीषण और २२ सुग्रीव ने

दोहा

माला*पुरटसरोजमय, करी नजरि ÷पवमान१॥
आय इंद्र२ किय भेट यँहँ, मुक्ताहार महान ॥११०॥

षट्पात्

गंधर्वन१किय गान नट्टन[2] अच्छरिगन२मंडिय ॥
विमन तँहँ रघुवीर दान समुचित[3] अनेक दिय ॥
कार्नक[4] मुद्रा तीस कोटि३०००००००० वृखसत[5]१००विनीत[6] वर ॥
लक्ख१०००००तुरग[7] गोलक्ख[8]१०००००सिचय[9]१भूखन२वहु सुंदर
हाटक[10]सरोजमाला वह सु दिन्नी प्रभु कपिराज[11]१ हित ॥
वैदूर्य[12] विहित अंगद[13] उभय१अंगद२हित दिन्नैं उचित ॥१११॥

दोहा

जनकसुता[14]कौं प्रभु दयो, अप्प्यो[15] इंद सु हार ॥
तिहिं बुल्ल्यो[16] हनुमान तब, अतिहित पात्र उदार ॥११२॥
अरजवस्त्र[17]१जुग२जानकी, इतरहु[18] भूखन२सत्थ ॥
पति दिन्नौं सो हार३पुनि, ए३दिय मारुति[19] अत्थ ॥ ११३॥
कपि[20]१मर्कट[21]२भल्लुक[22]३सबहि, पट१भूखन२पहिराय ॥
करि अर्चित[23] किन्नैं बिदा, बहु लडाय उरलाय ॥ ११४ ॥
रक्खसपति लंका गयउ, राज्य कियउ इत राम ॥
समा[24] मानं[25] ग्यारह सहँस११०००त्रेतासमय ललाम[26] ॥११५॥

---

* स्वर्ण के कमलों की माला ÷ पवन ने भेट की १ मोतियों का हार इन्द्र ने भेट किया ॥ ११० ॥ २ नृत्य ३ उचित ४ स्वर्ण की मुद्रा (मोहरें) ५ शिक्षा पाये हुए श्रेष्ठ ५ बैल ७ घोड़े ८ गौ ९ वस्त्र १० पवन की भेट की हुई वह स्वर्ण कमलों की माला रामचन्द्र ने ११ सुग्रीव को दी और १२ वैदूर्यमणि [लहसणियों के बनेहुए १३ भुजबन्ध अंगद को दिये ॥ १११ ॥ १५ इन्द्र ने मोतियां का हार दिया था वह रामचन्द्र ने १४ सीता को दिया, सीता ने अत्यन्त हित करनेवाले उदार पात्र हनुमान् को १६ बुलाया।११२। १७ नवीन वस्त्र और रामचन्द्र का दियाहुआ वह मोतियों का हार ये दोनों ही १८ दूसरे भूषणों के साथ १९ हनुमान को दिये ॥ ११३ ॥ २० वानर २१ लंगूर २२ रींछ सबको वस्त्र और भूषण पहनाकर २३ पूजित करके विदा किये ॥ ११४ ॥ २४ वर्ष २५ प्रमाण २६ सुन्दर ॥ ११५ ॥

देनलगे जुवराजपन, हठि प्रभु लक्खन हेत ॥
तिहिं लयो न तब भरतहीं, अप्प्यो बिजय उपेत ॥११६॥
अश्वमेधमख१दस१०करे, पुंडरीक२बहुबेर ॥
इतरहु सत्र अनेक किय, जयरोधक किय जेर ॥ ११७ ॥
पसुनकेहु प्रभु न्याय किय, पुनि कहुँ सुनि अपबाद॥
बिपिन निकासी जानकी, गुर्वी रहित प्रमाद॥ ११८ ॥
जिहिं वल्मकभवमुनि उटज, रहि रु जनैं दुव२पुत्त ॥
पैठिगई भुव समयपर, जननि पतिव्रत जुत्त ॥११९ ॥
पुरजुत रामहु अवधिपर, धाम लगे जब जान ॥
जातुप प्रभुपहँ आयलिय, तब श्रीरंग विमान ॥ १२० ॥
कोटितीन३००००००००गंधर्व रन, भरत६०हनैं बिनु बिघ्न॥
मधुसुत लवणहिं मारि किय, मथुरानगर अरिघ्न ॥१२१॥

(षट्पात्)

सुतदुव२दुव२सबकेहि रामअंगज[3] हुव कुस६१।१लव६१।२॥
तक्षक६१।१पुष्कर६१।२भरत तनय[4] उपजे धरनीधव[5] ॥
सुत सुबाहु६१।१अरु सूरसेन६१।२सत्रुघ्नकेर जिम ॥

१लक्ष्मण को युवराज पद देनेलगे सो उनने नहीं लिया तब विजय सहित वह युवराजपद भरत को दिया॥११६॥अश्वमेध यज्ञ दश किये और पुंडरीक यज्ञ बहुत वार किये और भी यज्ञ किया अपनी विजय के रोकनेवाले शत्रुओं को अधिकार (काबू में करके दबालिये) में किये ॥ ११७॥ रामचन्द्र ने पशुओं के भी न्याय किये फिर कहीं पर अपनी निन्दा सुन कर सीता को वन में निकाल दी जो गर्भवती और प्रमाद से रहित थी ॥ ११८॥ वाल्मीकि मुनि की पर्णकुटी में रहकर दो पुत्र जने और सीता माता पतिव्रत धर्म के साथ समय पर भूमि में पैठगई ॥ ११९ ॥ जब राम अपने धाम (स्वर्ग में) जानेलगे तब राक्षसों के पति (विभीषण) ने पवित्र विमान लिया ॥ १२० ॥ १ लवणासुर को २ शत्रुघ्न ने मथुरा नगर बसाया ॥ १२१ ॥ ३ रामचन्द्र के पुत्र ४ भरत के पुत्र ५ भूपति हुए अथवा वसुदेव चहुवान को सम्बोधन करके कुंडक राजा का नड्वल नामक पुरोहित

प्रकटे अंगद६।१।१चित्रकेतु६।१।२लक्खनतनूज तिम ॥
इमें रामचरित नड्डल बरनि दुल्लह नृप वसुदेव६८प्रति ॥
रघुनाथ पुत्र पट्टेस कुस६।१वंस कहन लग्गो सुमति॥१२२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचतुर्भुजकुलकथने वसुदेव६८वेला६८।१ विबाहवेलावर्णनविषयकविवस्वद्वंशविवर्द्धकवैवस्वत ५ मनुतनुजनुरिक्ष्वाकु६पट्टपपुत्रविकुक्षि ७ जननोज्ज्वालकश्रीजानकीजानिचरित्रे संस्कारितदशग्रीवसमभिषिक्तविभीषणसमनुनीतपरीक्षितसीतासमुज्जीवितअमृतस्वयोधसरक्षोराजसस्त्रीकप्लवगादिपरिकरसहितश्रीरामसाकेताऽऽगमनसमभिषिक्तप्रभुसुग्रीवादिस्वस्वपस्त्यप्रस्थापनसमनुष्ठितराज्यकोशलोपेतश्रीरघुनाथस्वधामाऽऽरोहणंपञ्चपञ्चाशत्तमो ५५ मयूखः ॥ ५५ ॥ आदितः सप्तनवतितमः ॥ ९७ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(षट्पात्)

कुससुत अतिथि६२तदीय निष६३रु तस नल६४ताकै नभ६५॥

कहता है १ लक्ष्मण के पुत्र २ इसप्रकार नड्डल पुरोहित रामचरित्र वर्णन करके दुल्लह वसुदेव चहुवान से रामचन्द्र के पाटवी पुत्र कुश का वंश कहने लगा ॥ १२२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशिमें अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल को उज्वल करनेवाले श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में रावण का अग्निसंस्कार करके लंका के राज्य का अभिषेक पायेहुए विभीषण से लाईहुई और परीक्षा की हुई सीता का फिर जीवित होना, अपने योधों का जीवित होना, राक्षसराज और स्त्रियों सहित वानरों की परगह सहित श्रीरामचन्द्र का अयोध्या आना, अभिषेक हुए रामचन्द्र का सुग्रीव आदि को अपने अपने घरों को भेजना, सुखपूर्वक राज्य करके अयोध्या सहित रामचन्द्र के स्वर्ग जाने का पचपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५५॥ और आदि से सत्तानवे मयूख हुए ॥ ९७ ॥

१ उसके

पुंडरीक६६ तस तास क्षेमधन्वा६७हुव सुप्रभ[1]॥
देवानीक६८तदीय अहीनगु६९नाम तास सुव[2] ॥
ताके रुरु७०तस पारियात्र७१बल७२तस तस सल७३हुव ॥
तस उत्क७४वज्रनाभाख्य[3]७५तस तस शृंखन७६व्युषिताश्व७७तस॥
विश्वसह७८तास प्रकट्यो तनय सहिरण्यनाभ७९सुप्रज सुजस[4]॥१॥
नृप हिरण्यनाभसन योग लिय याज्ञवल्क्य मुनि ॥
सुत हिरण्यनाभभव[6] पुष्प८० ध्रुवसंधि८१ तास सुनि ॥
तास सुदर्शन८२ अग्निवर्ण८३ ताकै सुत जानहु ॥
ताके सीघ्रग८४ मरु८५ तदीय[7] तदुदंत[8] प्रमानहु ॥
सु[9]कलापग्राम संस्थित अबहु कठिन जोगसाधन करहिं ॥
कलिअंत बहुरि कृतजुग[10] लगत यासौं रविकुल बित्थरहिं[11]॥२॥
मरुके तनय[12] सुसंधि८६ तास आमर्ष८७ भयो सुत ॥
सहस्वान८८ अंगज[13] तदीय बल१ नीति २ धर्म जुत ॥
ताके विश्रुतवान८९ तास तनुजात[14] वृहद्बल ९० ॥
जो भारत रनमाँहिं हन्यों अभिमन्न्यु अकल्मल[15] ॥
हुव तास वृहत्क्षत्र९१सु तनय तास उरुक्षय९२ बीरवर ॥
तस वंस९३ नाम प्रकटे तनुज[16] ताके व्यूह९४ प्रभुत्व[17] पर ॥३॥
व्यूह तनय प्रतिव्योम९५ तास तनुजात दिवाकर ९६ ॥
ताके हुव सहदेव९७ तास वृहदश्व९८ धर्मधर ॥
ताके नय[18]१ जय[19]२ अतुल भयउ सुत नाम अश्वरथ९९ ॥
प्रतीताश्व१०० तस पुत्र तनुजतस हुव प्रतीक १०१ प्रथ ॥

---

१ श्रेष्ठ कान्तिवाला २ पुत्र ३ वज्रनाभ नामक ४ श्रेष्ठ सन्तानवाला ॥ १ ॥ ५ हिरण्यनाभ से ६ हिरण्यनाभ का पुत्र ७ उसके ८ उसका वृत्तान्त ९ वह अब भी कलाप ग्राम में स्थित कठिन योग साधता है कलियुग के अन्त में फिर १०सत्ययुग लगेगा तब इसी (मरु) से सूर्यवंश ११फैलेगा ॥२॥ १२पुत्र १३ पुत्र १४पुत्र १५पाप रहित १६पुत्र १७परम प्रभुतावाला ॥ ३ ॥ १८नीति और १९ विनय में समाप

मरुदेव१०२ तास बिक्रम सहित सु नक्षत्र१०३ तस तस तनय ॥
किन्नर १०४ सु गौड अर्जुन*दमन करन गोग चहुवान जय॥४॥

(पादाकुलकम्)

किन्नर+अंगज अंतरिक्ष१०५हुव, तास सुबर्ण१०६ तास अमित्र१०७सुव
तस वृहद्राज१०८ तास धर्म्मी१०९सुत, तास कृतंजय११०बाक्य, तासनुत
सुद्धोदन११२ताकै तस राहुल११३, तस प्रसेनजित११४हुव गुनबाहुल
क्षुद्रक११५तास तास कुंडक११६यह, विद्यमान तव स्वसुर महामह ॥
यासागर सन अतुल रत्न दुव२, तनय सुरथ११७।१तनया वेला११७।२हुव॥
जो बसुदेव६८ रावरी दुलहनि, होवहु यह रानिन चूडामनि ॥ ७ ॥
इम विकुक्षि७।१अन्वय तुम जानहु, अब निमि७।२अन्वय प्रथित प्रमानहु
निमि७इक्ष्वाकु६तनूजं धर्म हित, मखं आरंभिय अब्दं सहस१००मित
करन लग्यो गुरुकों होता जब, काहिय बसिष्ट स्वर्ग जैहों अब ॥
बरख पंचसत ५००मित मख रचितहँ, पहिलैं इंद्र बुलायो मोकहँ ॥
वह मखकरि पूरन इतैं ऐहों, विधिजुत पुनि तब सवहु बनैहों ॥
यह कहि गये बसिष्ट सुरालय, नृपहिं विलंब रुच्यो न रच्यो नय॥
गोतम मुनि बुलवाय सत्र किय, दिवस व करि गुरु आय सापदिय
मन्न्यों इतर मोहि तजि जातैं, होहु विदेह भूप निमि तातैं ॥ ११ ॥
नृप हो सुप्त सुनी न सु वानी, पुनि जगि इतरन कथित प्रमानी ॥

*अर्जुन गौड़ का दमन करनेवाला और गोग चहुवाण का विजय करनेवाला किन्नर हुआ।४।+पुत्र१पुत्र२स्तुतियोग्य।५।३बहुत गुणवाला क्षुद्रक के कुंडक हुआ सो हे वसुदेव चहुवाण यह तुम्हारा श्वसुर४वर्तमान है।६।५इस समुद्र से६पुत्री७ राणियों का मस्तक मणि होओ७इसप्रकार विकुक्षि का ८ वंश जानो ६ अब प्रसिद्ध निमि का वंश कहता हूं१०इक्ष्वाकु के पुत्र निमि ने धर्म के लिये हजार १२ वर्ष तक ११ यज्ञ करने का आरंभ किया ॥ ८ ॥ ६ ॥ इन्द्र का यज्ञ पूरा करके १३ शीघ्र आऊंगा। १४ तेरा यज्ञ कराऊंगा १५ स्वर्ग में गये १६ राजा निमि को इतना विलंब करना नहीं रुचा और यह १७ नीति रची ॥ १६ ॥ १८ यज्ञ किया फिर स्वर्ग का १८ यज्ञ करके वसिष्ट ने आकर श्राप दिया कि मुझको छोड़कर दूसरे को गुरु मानलिया इससे हे राजा निमि

कहिय साप पूछैं बिनु मोकौं, दयो सु मैंहु देत अब तोकौं ॥१२॥
तव उपघनंहु गिरहु मम तैसैं, निमि निज देह तज्यो कहि अैसैं ॥
इतै सत्वर तजि काय वसिष्ठहु, मित्रा१बरुन२ तेज प्रबिसे पहु३ १३
कोउक समय उर्वसी अच्छरि, पिक्खत तिनको सुक्र४ गयो परि ॥
लही वसिष्ट अपर तनु तासौं, इत रक्ख्यो निमिअंग क्रियासौं १४
तैल१सुगंधि आदि उपचारन, बिगरन जो न दयो द्विज बारन ॥
सुर मखभाग लैन आये जँहँ,ऋत्विज गोतम आदि कही तँहँ१५
दैनलगे निमिकौं बपु निर्जर, बुल्ल्यो अब न लहौं बसुधावर ॥
यह वर देहु रहौं सब लोचन, सुनि देवन दिन्नौं सुप्रीतिसन ॥१६॥
नैनन रहन लग्यो निमि७ जबतैं, उन्मीलन १ रु निमीलन२तवतैं
अरणी विच तस तदनु कलेवर,मथ्यो मुनिन तासौं हुव सिसुवर१७
बरनैं तास नाम त्रय३विप्रन, सुनहु तेहु वसुदेव६८ धराधन ॥
जननहेतुकरिजनक८कहायउ,अाव्हयमिथिल८मथनकरिपायउ१८
तनुज विदेहकेर बैदेह८सु, ताकै सुत हुव नाम उदारसु९ ॥

तू विना देह हो जा ॥ ११ ॥ उस समय राजा सोया हुआ था सो वह वाणी नहीं सुनी फिर जगकर दूसरों के कहने से प्रमाण किया और निमि ने वसिष्ठ से कहा कि मुझे पूछे विना तुमने श्राप दिया इसकारण वही श्राप मैं तुझको देता हूं ॥ १२ ॥ तेरा१ शरीर भी मेरे समान गिर जाओ,२इधर वसिष्ठ भी शीघ्र शरीर छोडकर३हे राजा वसुदेव॥१३॥४वीर्य गिरपड़ा जिससे वसिष्ठ ने दूसरा शरीर लिया और इधर राजा निमि का मृतक शरीर क्रिया से रक्खा ॥ १४ ॥ चिकित्सा (इलाज) से रोकके ब्राह्मणों ने नहीं विगड़ने दिया देवता जब यज्ञ में भाग लेने आये तब गोतम आदि ऋत्विजों ने कहा ॥ १५ ॥ जब निमि को देवता शरीर देनेलगे तब राजा(निमि) ने कहा कि अब शरीर तो नहीं लेनाचाहता परन्तु यह वर दो कि सबके नेत्रों में रहाकरूं ॥ १६ ॥ जबसे निमि नेत्रों में रहनेलगा तभी से नेत्रों का खुलना और बन्ध होना होनेलगा जिसपीछे मुनियों ने निमि के शरीर को अरणी में मथा जिससे श्रेष्ट वालक उत्पन्न हुआ ॥ १७ ॥ ब्राह्मणों ने उस वालक के तीन नाम दिये वे नाम हे राजा वसुदेव आप सुनो जन्म लेने(सृष्टि क्रम के विरुद्ध जन्म लेने) के कारण "जनक" कहाया और शरीर मथने से हुआ इससे "मिथिल" नाम हुआ ॥ १८ ॥ और विदेह के पुत्र होने से "वैदेह" क-

तास नंदिवर्धन१० सुकेतु११तस, ताकै देवरात१२ उज्जल जस१९

(पज्झटिका)

हुव तनय तास वृहदुक्थ१३नाम, तस पुत्र महावर्य१४ सु ललाम ॥
तस सुधृति१५तास हुव धृष्टकेतु१६,हर्यश्व१७तास जय१धर्म२हेतु२०
तस मरु१८प्रतिबंधक१९तास पुत्त,कृतिरथ२०तदीय बल१बीर्य२ जुत्त
तसदेवमीढ२१तसबिबुध२२जानिसुततासमहाधृति२३नाममानि२१
कृतिरात२४तास तस मूर्द्धरोम२५,तस स्वर्णरोम२६ कृतसत्रुहोम
हुव तास ह्रस्वरोमा२७नृपाल,सुव दुव२तदीय हुव बलबिसाल२२
प्रहिलोसीरध्वज२८।१गुनगरीय,अनुजातकुसध्वज२८।२पुनिद्वितीय
सीरध्वज२८।१सुतहितकरनसत्र,कुखनतहोहलकरिसहकलत्र२३
कन्न्या सीतासन कढिय तत्थ, सीता२९हि नाम तस दिय समत्थ॥
कन्न्या सु जनक रक्खी लडाय, जो पानि गही रघुनाथ जाय२४
रु कुसध्वजकै हुव भानुमान २९,सुत तास तस द्युम्नाऽभिधान३०
सुचि३१तासऊर्जबह३२तासजानि,सेनध्वज३३तसतसकुसि३४प्रमानि
तस रंजन३५ऋतुजित३६ नामतास,सुत तस अरिष्टनेमी३७सुभास
ताकै सतायु३८वैरिन बलीय,तस सुत सुपार्श्व३९संजय४०तदीय२६

(दोहा)

संजयकै क्षेमावि४१ हुव, तास अनेना४२ पुत्र ॥
तास मीनरथ४३ सत्यरथि४४, ताकै निगमतनुत्र ॥ २७ ॥

(षट्पात)

वीतहव्य४५ तस तनय तास उपगुरु४६ सुत जानहु ॥
तस अघसर्व४७ रु तससुभास४८ सुश्रुत४९तस मानहु ॥

कहलाया ॥ १६ ॥ १ पुत्र २ सुन्दर३ जय और धर्म का कारण ॥ २० ॥ ४उसके ॥ २१ ॥ ५ शत्रुओं का होम करनेवाला ॥ २२ ॥ ६ गुणों में भारी ७ उसका छोटाभाई, जब राजा शीरध्वज पुत्र होने के अर्थ ८ यज्ञ करता था सो हल से१०स्त्री सहित९पृथ्वी को खोदता था तब११ हल की चउ (चू) से कन्या निकली जिसका नाम ही सीता दिया१२जिस से रामचन्द्र ने विवाह किया ॥२४॥ २५ ॥१३ द्युम्न नामक१४उसके ॥२६॥ १५वेद का रक्षक (कवच)

जय५०ताकै तस बिजय५१ तास ऋत५२ ताकै सुतनय ५३ ॥
बलि ताकै हुव बीतभव्य५४ ताकै धृति५५ दुर्जय ॥
बहुलाश्व५६ तास कृति५७तास सुत यह बिदेह बंसहु भयो॥
रविबंस बरनि रविबंसगुरु इम नड्डल ग्रासिख दयो ।२८।

(दोहा)

किन्नर गोग सहाय सुनि, बुल्ल्यो दुल्लह६८ बीर ॥
तज्यो बपुहि सत्रुघ्न नृप, अग्ग उरुक्षय भीर ॥ २९ ॥
बरनैं नड्डलबिप्र इम, रामरचित१रबिबंस २ ॥
सुनहु राम नृप दै श्रवन, अब सुचिकुल अवतंस ॥ ३० ॥
कुंडकनृप११६ बसुदेव६८कँहँ, बेला६८।१ इम सु बिवाहि॥
सिक्खदई सनमानसह, नव नव प्रीति निबाहि ॥ ३१ ॥
सुंदर दासी इक सहँस १०००, हय बरं पंचहजार५००० ॥
सुरभी अयुत १०००० रु गज सहँस १००० दायज दिन्न उदार।३२।

(षट्पात्)

बहुरि कहिय तुमरो बिदर्भ जो लिय प्रद्योतन ॥
मारयो भूपति भीम६५ करहिँ तासहु उपाय घन ॥
नृपके सालक सुरथ कुमर तत्थहु बिसेसकरि ॥
संधा होन सहाय ले रु दिय सिक्ख नेह भरि ॥

---

१ पुनि २ सूर्य वंश के गुरु नड्डल ने सूर्य का वर्णन करके वसुदेव चहुवाण को आशीर्वाद दिया ॥ २८ ॥ सूर्यवंशी राजा किन्नर ने गोग चहुवाण की सहायता की सो सुन कर दुल्लह वसुदेव चहुवाण बोला कि आगे सूर्यवंशी राजा उरुक्षय की सहायता में चहुवाण शत्रुघ्न ने शरीर छोडा है अर्थात् इसीप्रकार परस्पर सहायता होती आई है ॥ २९ ॥ रामचन्द्र की रचना का और सूर्य वंश का वर्णन इसप्रकार नड्डलनामक ब्राह्मण ने किया, हे चहुवाणों के मुकुट रावराजा रामसिंह अब अग्नि वंश का वर्णन सुनो ॥ ३० ॥ ३१ ॥ २ श्रेष्ठ ४ गौवें. फिर कहा कि प्रद्योतन नामक राजा ने तुम्हारा विदर्भ नामक देश लेलिया था और राजा भीम को मार डाला था इसका भी उपाय करेंगे वसुदेव के शाले और कुंडक के पुत्र सुरथ कुमर ने सहाय करने की विशेष प्रतिज्ञा लेकर सीख दी

आये निकेत दुलही २ दुलह१ मच्यो हरख मिहिकावतिय
निगमोक्त पथिक वसुदेव ६८ नृप बलकरि भुग्गी वसुमतिय३३

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ विवाहवेलावर्णनविषयकविवस्वद्वंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पष्ठपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशश्रीजानकीजानिजननसमुद्देशननिमि ७ वंशवर्णनसमुपयतवसुदेव ६८ वेला ६८।१ युग्मर मिहिकावतीगमनं षट्पञ्चाशत्तमो५६ मयूखः ॥ ५६ ॥ आदितोऽष्टनवतितमः ॥ ९८ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा)

(षट्पात्)

प्रद्योतनके वंश नंदिवर्द्धन राजा हुव ॥
मारि ताहि सिसुनागभूप लिन्नी मागध भुव ॥
इहिँ अंतर वसुदेव ६८ सुरथ सालके निज संजुत ॥
बहुरि अमल बित्थरि विदर्भदेस सु लिन्नौं द्रुत ॥
यह सुनत चढ्यो सिसुनाग इत भोजकटेहि संगर भयो ॥
विनुमत्थजुज्झि वसुदेव६८नृप सुजसरक्खि सुरपुर गयो॥ १ ॥

(दोहा)

अपने घर मिहकावती नामक पुर में वेद के कहेहुए मार्ग में चलनेवाले ने भूमि को बल पूर्वक भोगी ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढ़ानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाठवाँ पुत्र विकुक्षि के कुलकलश श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के वंश का कथन और निमि के वंश का वर्णन, विवाह करके वसुदेव और वेला का जोड़ा सहित मिहकावती जाने का छप्पनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५६ ॥ और आदि से अठानवे मयूख हुए ॥ ९८ ॥

१मगध देश की भूमि अपने२शाला सुरथ सहित३शीघ्र. विदर्भ देश को लेकर अपना अधिकार फैलाया यह सुनकर इधर से ४ शिशुनाग नामक राजा लड़ा सो ५ भोजकट नामक नगर में ही युद्ध हुआ ॥ १ ॥

लिन्नौं इम सिसुनाग लरि, बंलि बिदर्भ तिहिंबेर ॥
रह्यो राज्य मिहिकावती, चहुवानन कुलकेर ॥ २ ॥
बेद तर्क बसु८६४मित बरस, गतकलिजुग हुव जत्थ ॥
नाक गयो बसुदेव६८नृप, तिलतिल व्है रन तत्थ॥ ३ ॥
बेला६८।१मैं बसुदेव६८सौं, स्यामदेव६९सुत जात ॥
दान१कृपान२प्रवीन दृढ, अडर किति अवदात ॥ ४ ॥

(पज्झटिका)

उज्जैनभूप प्रामार नंद, पद्मा६८।१तस तनया गुन अमंद ॥
आनी बिवाहि वह स्यामदेव६९, करगहि मनौं कि रति१कामदेव ।५।
हरिदास७०भयो ताकै गंहीर, बानैतै धर्म१नयं२दच्छ बीर ॥
सूकरथलपति रति नामधेयं, जिन दिनन रह्यो चालुक अजेय ।६।
दुहितौं तस रजनी७०।१गुनउदार, हरिदास७०व्याहि किय कंठहार
तस पुत्र महीधर७१हुव प्रबीन, जगके समस्त गुन जिहिं अधीन ।७।

(दोहा)

इत सुमित्र साकेतन्रृप, तज्यो जोगबल देह ॥
विश्वराज१कूरम२प्रमुख, हुव बहु सुत तस गेह ॥ ८ ॥
विश्वराजकोही विदित, अपर१विश्वबर नाम ॥
जाके सुतके पुलसौं, कुल रट्ठोर ललाम ॥ ९ ॥
कूर्म बिश्वबरको अनुज, जासौं कूरम बंस ॥

शिशुनाग ने विदर्भ देश१फिर लेलिया॥२॥२कलियुग के आठ सौ चौसठ वर्ष गये जहां पर ३ स्वर्ग गया॥ ३ ॥ ४ जन्म ५ खड्ग (वीरता) में ६ निर्भय७उज्वल कीर्तिवाला ॥ ४ ॥ ८ नन्द नामक ९ कामदेव ने रति को आनी ऐसे ॥ ५ ॥ १० गंभीर ११बाणविद्या, धर्म और १२ नीति में १३ चतुर, शूकरक्षेत्र का राजा १४ रति नामक. सोलंखी उन दिनों में किसीसे नहीं जीतने में आवें ऐसे थे ॥ ६ ॥ उसकी १५ पुत्री १६ गले का हार किया ॥ ७ ॥ इधर १७ अयोध्या में सुमित्र नामक राजा ने योगबल से शरीर छोडा जिसके विश्वराज और कूरम १८ आदि बहुत पुत्र हुए॥ ८ ॥ विश्वराज का१९ दूसरा नाम विश्ववर हुआ जिसके पोते से२० सुन्दर राठोड़ों का कुल उत्पन्न हुआ ॥ ९ ॥ विश्ववर के २१छोटे भाई कूरम से कूर्म वंश हुआ सो ही कूर्म

वजिहै सुहि कछवाह बलि, याके सुतके अंस ॥ १० ॥
विश्वराज कूरम प्रमुखं, भज्जे लरि गतभाग ॥
इनको पुर साकेत हू, छिन्निलयो सिसुनाग ॥ ११ ॥
कछुकछु भुवं पाई दुहुँनर, अंतरवेदी आय ॥
कन्न्या हुव या कुंम्मकैं, सुरसा७१।१गुनन निकायँ ॥१२॥
आयो ताहि विवाहि यह, सुपहु महीधर७१सूर ॥
स्वसुर कूर्म दायज दयो, पृथुल नेह वसु पूर ॥ १३ ॥
कलसबौंध हुव कूर्मके, तासौं कुल कछवाह ॥
विश्वराजकै पुत्र हुव, मलयराज नरनाह ॥ १४ ॥
रट्ठेश्वर सिव तुष्ट किय, मलयराज तपसिद्ध ॥
जिनके बर ताकै तनय, रट्ठकूट हुव इद्ध ॥ १५ ॥
तासौं कुल रट्ठोड़ यह, जानहु संभरराम ॥
सुरसा७१।१सहित महीधर७१हु, उत जस किय उद्दाम ॥ १६ ॥
भयो महीधरकै तनय, वामदेव७२अभिधान ॥
वज्र रिपुन सुरतरु कविन, आहव१दान२अमानं ॥ १७ ॥

के पुत्र से फिर कछवाहा वंश बजेगा ॥ १० ॥ विश्वराज और कूर्म १ आदि लड़कर विना चेत भागे और इनका २ अयोध्यापुर ३ शिशुनाग नामक राजा ने छीनलिया ॥ ११ ॥ ५ अन्तर्वेद में आकर (हरिद्वार से लेकर प्रयाग तक की भूमि को अन्तर्वेद कहते हैं)इन दोनों(विश्वराज और कूर्म)ने कुछ कुछ ४ भूमि पाई ६ इसी कूर्म के ७ गुणों की घर ॥ १२ ॥ ८ श्रेष्ठ राजा ९ बड़े नेह से १० धन से पूर्ण ॥ १३ ॥ इसी कूर्म के ११ कलसबांध नामक पुत्र हुआ जिससे कछवाहा कुल कहलाया और विश्वराज के मलयराज नामक पुत्र राजा हुआ ॥ १४ ॥ मलयराज ने १२ राष्ट्रेश्वर महादेव को तप करके प्रसन्न किया (जोधपुर की ख्यात में राष्ट्रश्येना कुलदेवी के नाम से राष्ट्रकूट वंश प्रसिद्ध होना लिखा है) जिनके वर से राष्ट्रश्येन नामक १३ कान्तिमान् पुत्र हुआ ॥ १५ ॥ १९ हे चहुवाण रामसिंह! इसी राष्ट्रश्येना से १४ राठोड़ों का कुल हुआ जानो १६ निरंकुश ॥ १६ ॥ १७ वामदेव नामवाला हुआ सो शत्रुओं के लिये वज्र, कवियों के लिये १८ कल्पवृक्ष १९ युद्ध में और दान में २० अमाप (प्रमाण रहित) ॥ १७ ॥

चित्रराज प्रतिहार नृप, चित्रस्थलपुर थान ॥
तास सुता राका७२।१ *रमनि, परन्यों यह चहुवान ॥१८॥
पौरानिक हरि×सूत कहँ, द्रव्यकोटि जिहिँ दत्त ॥
श्रीधर७३सुत ताके भयो, रन१वितरन२ अनुरत्त॥ १९ ॥

[षट्पात]

मिच्छराज तिन दिनन नूह ईरानधरावर ॥
जित्तन अज्जाउत्त बढ्यो अतिवल दल दुव्वर ॥
अटक लंघि इत आत अज्जभूपहु यह सुनि सब ॥
जुरिगँ जाय पंजाब तुमुल मच्चिग कराल तब ॥
परिभूत भज्यो म्लेच्छपति दल खपाय निज अयुतदस१०००० ॥
रन अज्जनृपहु बहुतहि रहे सुनहु तास नाम१रु सुजस२ ।२०।

दोहा

सत्रौजा१सिसुनाग कुल, संभव आयो काम ॥
वंगराज रविवंसभव, अंगद२पुनि अभिराम ॥२१॥

षट्पात

मालवपति प्रामार परयो ईश्वर३ अभिधानक ॥
रविकुलभव आनतराज नरनाह प्रतानक ४ ॥
चंद्रवंस अवतंस चंद्रमनि७ कासमीरपति ॥

---

*सुन्दर स्त्री॥१८॥ जिस वामदेव ने हरिसूत नामक×चारण को करोड़ रुपयों का धन१दिया २ दान में ३अनुरक्त॥१९॥४म्लेच्छों का राजा ईरान की भूमि का ५ पति नूह नामक उन दिनों में हुआ सो ६दुर्धर्ष सेना लेकर ७ आर्यावर्त को ६ विजय करने को चढ़ा ८ अटक नदी को लांघ कर इधर आता है यह वार्ता ९ आर्य राजाओं ने सुनी सो १० इकट्ठे होकर सबों ने पंजाब में भयंकर युद्ध किया तहां १२ म्लेच्छ देश का पति (नूह) ११ पराजित हुआ (हारा) और अपनी एक लक्ष सेना का १३ नाश कराया उस युद्ध में आर्य राजा भी बहुत मारेगये जिनके नाम और सुयश हे रावराजा रामसिंह! सुनो ॥ २० ॥ १४ शिशुनाग नामक राजा के वंश में १५ जन्म लेनेवाला १६ सूर्यवंश में उत्पन्न होनेवाला १७ सुन्दर ॥ २१ ॥ १८ ईश्वर नामवाला १९ प्रतानक नामवाला आनर्त देश का राजा २० चन्द्रवंशियों का मुकुट

रैवत मनुकुलजात पर्‍यो मरुराज महारतिद॥
लाहोरभूप मदनेस७ पुनि बाहुजकुलसंभव पर्‍यो ॥
ससिबंसि सल८हु पेसोरपति कलहँ काय तिलतिल पर्‍यो ।२२।
बामदेव९ चहुवान पर्‍यो करनाट नरेश्वर ॥
चित्रसेन१० नेपालराज रविकुलभव दुद्धर ॥
कंकटसेन११ कलिंगराज ससिकुल उज्जालक ॥
तस बंसहि रनधीर१२ देस कुंतल परिपालक ॥
सूकरनरेस पृथुदेव१३ पुनि चालुकअन्वय उद्धरन ॥
तोँवर नरेस कोसंबिपति पांडवकुलभव संवरन१४ ॥ २३ ॥

(दोहा)

नत्ती कूरमभूपको, पर्‍यो बीर बुधसेन १४ ॥
इत्यादिक इस अग्गसत११०, आये काम धरेन ॥ २४॥
जुद्ध भयो अतिघोर जिम, नृप तस सुनहु निदान ॥
भूपगये सब भीमकौं, मारनहित मुलतान ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

भीमनाम तिन दिनन हुतो मुलतान महीपति॥
अर्कजनन अंगार मलिन तक्की तिहिं दुर्मति ॥
दै मिच्छनपहँ दूत भनी इतउत हितभावहिं॥

१मनु के कुल में उत्पन्न हुआ २ब्रह्मा के हाथों से पैदा हुए चत्रिय कुल में जन्म लेनेवाला (चत्रियों के मुख्य पांच वंश मानेगये हैं अर्थात् सूर्यवंश १ चन्द्रवंश २ मनुवंश ३ बाहुजवंश ४ और५अग्निवंश) सल नामक ३ चन्द्रवंशी राजा ४ युद्ध में अपने शरीर को तिल तिल के समान करके गिरा ॥ २२ ॥ ५ कुन्तल देश की पालना करनेवाला ६ सूकर चेत्र का राजा ७ सोलंखी वंश का उद्धार करनेवाला ९ कौसांबी पुर का संबरण नामक पांडववंशी ८ तँवर राजा ॥ २३ ॥ राजा कूरम का १० पोता ११ राजा काम आये ॥ २४॥ जिसप्रकार यह घोर युद्ध हुआ है राजा रामसिंह उसका १२ कारण सुनो कि १३ भीम को मारने को सब राजा मुलतान में गये ॥२५॥ १४ सूर्यवंश का १५ अंगारा (जलानेवाले) उस १६ नीच ने १७ खोटी बुद्धि ताकी १८ म्लेच्छों के पास दूत भेजकर कहलाया कि हमारा और तुम्हारा दोनों का

लेहु आनि लाहोर अद्ध अद्ध सु अपनावहिं ॥
द्वै संग दुवरहि मदसेन हनि पुहवि बंटि दुव२ पारि हैं॥
अप्पनौं अटकतट३ लग अमल आवहु सहज उतारिहैं ।२६।

(दोहा)

सुता इक्क१ मदसेनकै, अतुल४ रूप१ गुन२ आहि ॥
अर्द्ध महीजुत आइ इत, तुम पावहु किंन ताहि ॥ २७ ॥

(षट्पात)

लग्गि सुनत इहिं लोभ सजव६ चल्लिय जवनेस्वर॥
सुनि सुवत्त७ मदसेन दये बंधुन घर कग्गर ॥
चढिग बंगपति स्वसुर१ चढिग मातुलि२ अवंतिपति ॥
वल्लिं९ उनके इम वहुत मिले पंजाब महामति ॥
लाहोर पहुँचि घेरा लगत कैद पकरि भीमंहिं करिय ॥
जियलक्ख१०००००सटि११ मुक्किय१२ जवन प्रचुर१३ भूप तिहिं रन परिय२८
जनकं१४ वामदेव७२जब सुन्यौं श्रीधर७३सुतं संगर ॥
मिहिकावति पुरनाहँ१६ भयो तब अप्प छत्रधर ॥
रविकुलसंभव१७ बंगराज अंगद तनुजा सो ॥
परन्यौं प्रतिभा७३।१नाम अधिप लक्खन अनुजा१९ सो ॥

हित चाहो तो यहां आकर लाहोर को लेलो सो हम और तुम आधा आधा अपना लेवेंगे, दोनों साथ होकर लाहोर के राजा मदसेन को मारकर १ भूमि का दो बंट करलेवेंगे २ अटक नदी उतार देवेंगे ॥ २६ ॥ ३ रूप और गुण में जिसकी बराबर कोई नहीं ऐसी है सो इधर आकर ४ आधी भूमि सहित तुम ५ क्यों नहीं लेते हो ॥ २७ ॥ ६ शीघ्र चला ७ यह वार्ता मदसेन ने सुनकर अपने सम्बन्धियों को कागज (पत्र) दिये ८ बंगाला का पति मदसेन का ससुरा और उज्जैन का पति मदसेन का मामा ९ फिर उन सम्बन्धियों के सम्बन्धी भी आये १० नूह को बुलाया था उस भीम को पकड़ कर कैद करलिया और लाख जीवों के ११ बदले में (लक्ष यवनों को मारकर) यवन (नूह) को १२ छोडा, वहां पर राजा भी १३ बहुत काम आये (मरे)१५ श्रीधर चहुवाण ने जब अपने१४पिता वामदेव को युद्ध में मरा सुना तब मिहकावती पुर का१६पति हुआ१७सूर्यवंशी १८ अंगद की पुत्री को, जो राजा लक्ष्मण की १९ छोटी बहिन थी

तामाँहिं भूप श्रीधर७३तनय[1] गंगाधर७४नामक भयो ॥
उत्तानदेव चालुकसुता प्रभा७४।१परनि जिहिं जस लयो ॥ २९॥

(दोहा)

दिष्ट[2] जोर तिनही दिनन, कनकसेन रठोर ॥
कान्यकुब्ज पत्तन[3] लयो, जत्थ रह्यो बरजोर ॥ ३० ॥

पादाकुलकम्

बसु[4] इकअर्ब[5]ज१०००००००००दयो गंगाधर७४,
कीनैं आढ्य[6] कवि१न बिबुध[7]२न घर ॥
वीस२०वेर बद्रीनारायन, जाय भूप पोखे उतके जर्न[8] ॥३१॥
धर्म[9]अवधि कालिकाल[10] कर्या ध्रुव, महादेव७५ताके तनूज[11] हुव ॥
लोकसेन कूरमकी तनुजा[12], लक्ष्मीसेन कुमरकी अनुजा ॥ ३२ ॥
रंभा७५।१नाम लोक अभिरामा[13], व्याही महादेव७५ वह बामा[14]॥
अश्वमेधमख[15] पुनि आरंभिय, दै भटसंग तुरंग छोरिदिय ॥ ३३ ॥
पैंसठि६५ नृपन[16] बिजय तिन पायो, इम हय फिरत मगधभुव आयो ॥
तँहँ दर्भक सिसुनागबंसभव, पाटलिपुत्र[17] नगर धरनीधव[18] ॥ ३४ ॥
जिहिं अतिबल मंडलपति[19] दुर्जय, हंकि सुभट पकरायलयो हय ॥
इतके बीर परे रनअंकुर[20], मिहिकावती कतिक आये मुरि ॥३५॥

१पुत्र२भाग्य के बल से३कान्यकुब्ज(कन्नोज)नामक पुर को लिया वहां बलवान् होकर रहा ॥३०॥ गंगाधर चहुवाण ने एक५अर्ब४धन दिया जिससे कवियों के और ७ पण्डितों के घर ६ धनवान होगये ८ उधर के मनुष्यों का पालन किया॥३१॥ गंगाधर के धर्म की ९ सीमा और कलियुग १० का निश्चै ही कर्ता. महादेव नामक ११ पुत्र हुआ १२ पुत्री ॥ ३२ ॥१३ संसार भर में मनोहर १४ स्त्री १५ यज्ञ ॥ ३३ ॥१६ पैंसठ राजाओं से जिसने विजय पाया और इसप्रकार वह घोड़ा फिरता हुआ मगधदेश की भूमि में आया वहां पर शिशुनाग नामक राजा के वंश में जन्म लेनेवाला दर्भक नामक १७ पटना का १८ राजा ॥ ३४ ॥ १९ मंडलीक " चतुर्योजनपर्यन्तमधिकारो नृपस्य च ॥ यो राजा तच्छतगुणः स एव मण्डलेश्वरः॥"(सोलह कोश वर्गात्मक भूमि जिसके अधिकार में होवे वह नृप तथा राजा कहलाता है इससे सौ गुणी भूमि जिसके अधिकार में होवे वह मंडलेश्वर है)२०युद्ध में

पिल्ल्यो सुनत कटक बहु भूपति, मार्‍यो सब दर्भक उद्धतमति ॥
सो सुनि जाय रच्यो नृप संगर, चरनंन डारि लज्जमय लंगर ३६
खग्गन बहु दर्भक दल खायो, रन बिनुसिर दुवरजाम रचायो ॥
मृत सुनि निजनायक रनमानी, रचि सहगमन गई ढिग रानी ३७

(दोहा)

रंभा७५।१ अरु रंभा लरी, महादेव७५ धव काज ॥
बुल्ली पुब्बहि मैं बर्‍यो, आई तू जरि आज ॥ ३८ ॥
सुरपति तिन्ह यह रारि सुनि, बासक दोउन२ बंधि ॥
भूपहि रक्रव्यो मित्र भनि, सघन नेह गुनसंधि ॥ ३९ ॥
भयो तनय सारंगधर७६, महादेव७५ नृपकेर ॥
द्वारकेस हरिके दरस, किन्नैं जिहिं बहुबेर ॥ ४० ॥
कराणउज्ज सुध्वज नृपति, रठ्ठोरन अवतंस ॥
कर्मध्वज हुव तसतनय, जिहिं करि कमधजवंस ॥ ४१ ॥
स्वसा तास सुध्वज सुता, ललिता७६।१ नाम ललाम ॥
सो व्याहिय सारंगधर७६, रमनी गुन अभिराम ॥ ४२ ॥
मानसिंह७७ ताकै तनय, ललिता औरस जात ॥
भजि स्वधर्म जो नृप भयो, खलन खंडि भुव ख्यात ।४३।

खड़े होकर ॥ ३५ ॥ यह सुनकर राजा महादेव ने फिर सेना भेजी उसको भी दर्भक नामक पटना के चंचल बुद्धि राजा ने मारली१पगों में लज्जा के लंगर डालकर ॥ ३६ ॥२दो पहर तक विना मस्तक युद्ध किया, युद्ध में मानी अपने पति को मराहुआ सुनकर रानी सती होकर पति पास गई ॥ ३७ ॥ रानी का नाम रंभा था वह और रंभा अप्सरा ये दोनों महादेव पति के लिये परस्पर लड़ीं और रंभा अप्सरा ने कहा कि तू तो जलकर आज आई है और मैंने पहिले ही बर लिया था ॥ ३८ ॥ इन दोनों की लड़ाई सुनकर इन्द्र ने दोनों के घर बांधकर राजा को मित्र कहकर२नेह के बहुत गुण जोड़कर ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४ कन्नोज में सुध्वज नामक राजा राठोड़ों का मुकुट था उसके कर्मध्वज नामक पुत्र हुआ जिसके नाम से राठोड़ कमधज कहलाये ॥ ४१ ॥ उस कर्मध्वज की बहिन और सुध्वज की पुत्री को सारंगधर ने व्याही वह स्त्री गुणों में मनोहर थी ॥४२॥ ललिता के५उदर से हुआ६भूमि पर प्रसिद्ध हुआ ॥ ४३ ॥

लेहु आनि लाहोर अद्ध अद्ध सु अपनावहिं ॥
ह्वै संग दुवरहि मदसेन हनि पुहवि[1] बंटि दुवर पारिहैं॥
अप्पनौं अटकतट[2] लग अमल आवहु सहज उतारिहैं ।२६।

(दोहा)

सुता इक्क१ मदसेनकै, अतुल[3] रूप१ गुन२ आहि ॥
अर्द्ध[4] महीजुत आइ इत, तुम पावहु किंन[5] ताहि ॥ २७ ॥

(षट्पात)

लग्गि सुनत इहिं लोभ सजव[6] चल्लिय जवनेस्वर॥
सुनि सुवत्त[7] मदसेन दये बंधुन घर कग्गर ॥
चढ्ढिग बंगपति[8] स्वसुर१ चढ्ढिग मातुलि२ अवंतिपति ॥
वल्लि[9] उनके इम वहुत मिले पंजाव महामति ॥
लाहोर पहुँचि घेरा लगत कैद पकरि भीमंहिं[10] करिय ॥
जियलक्ख१००००० सटि[11] मुक्किय[12] जवन प्रचुर[13] भूप तिहिं रन परिय२८
जनक[14] वामदेव७२जब सुन्यौं श्रीधर७३मृत[15] संगर ॥
मिहिकावति पुरनाह[16] भयो तब अप्प छत्रधर ॥
रविकुलसंभव[17] बंगराज अंगद तनुजा[18] सो ॥
परन्यौं प्रतिभा७३।१नाम अधिप लक्खन अनुजा[19] सो ॥

हित चाहो तो यहां आकर लाहोर को लेलो सो हम और तुम आधा आधा अपना लेवेंगे, दोनों साथ होकर लाहोर के राजा मदसेन को मारकर १ भूमि का दो बंट करलेवेंगे २ अटक नदी उतार देवेंगे ॥ २६ ॥ ३ रूप और गुण में जिसकी बराबर कोई नहीं ऐसी है सो इधर आकर ४ आधी भूमि सहित तुम ५ क्यों नहीं लेते हो ॥ २७ ॥ ६ शीघ्र चला ७ यह वार्ता मदसेन ने सुनकर अपने सम्बन्धियों को कागज (पत्र) दिये ८ बंगाला का पति मदसेन का ससुरा और उज्जैन का पति मदसेन का मामा ९ फिर उन सम्बन्धियों के सम्बन्धी भी आये १० नूह को बुलाया था उस भीम को पकड़ कर कैद करलिया और लाख जीवों के ११ बदले में (लक्ष यवनों को मारकर) यवन (नूह) को १२ छोडा, वहां पर राजा भी १३ बहुत काम आये (मरे) १५ श्रीधर चहुवाण ने जब अपने १४ पिता वामदेव को युद्ध में मरा सुना तब मिहकावती पुर का १६ पति हुआ १७ सूर्यवंशी १८ अंगद की पुत्री को, जो राजा लक्ष्मण की १९ छोटी बहिन थी

तामाँहिँ भूप श्रीधर७३तनय[1] गंगाधर७४नामक भयो ॥
उत्तानदेव चालुकसुता प्रभा७४।१परनि जिहिँ जस लयो ॥ २९॥

(दोहा)

दिष्ट[2] जोर तिनही दिनन, कनकसेन रठोर ॥
कान्यकुब्ज पत्तन[3] लयो, जत्थ रह्यो बरजोर ॥ ३० ॥

पादाकुलकम्

बसु[4] इकअब्ज[5]१०००००००००दयो गंगाधर७४,
कीनँ[6] आढ्य कविन[7] बिबुधन घर ॥
बीस२०बेर बद्रीनारायन, जाय भूप पोखे उतके जन[8] ॥३१॥
धर्मअवधि[9] कलिकाल[10] कर्यो ध्रुवं, महादेव७५ताके तनूज[11] हुव ॥
लोकसेन कूरमकी तनुजा[12], लक्ष्मीसेन कुमरकी अनुजा ॥ ३२ ॥
रंभा७५।१नाम लोक अभिरामा[13], व्याही महादेव७५ वह बामा[14]॥
अश्वमेधमख[15] पुनि आरंभिय, दै भटसंग तुरंग छोरिदिय ॥ ३३ ॥
पैंसाठि६५ नृपन[16] बिजय तिन पायो, इम हय फिरत मगधभुव आयो ॥
तँहँ दर्भक सिसुनागबंसभव, पाटलिपुत्र[17] नगर धरनीधव[18] ॥ ३४ ॥
जिहिँ अतिबल मंडलपति[19] दुर्जय, हंकि सुभट पकरायलयो हय ॥
इतके बीर परे रनअंकुर[20], मिहिकावती कतिक आये मुरि ॥३५॥

१पुत्र २भाग्य के बल से ३कान्यकुब्ज(कन्नोज)नामक पुर को लिया वहां बलवान् होकर रहा ॥३०॥ गंगाधर चहुवाण ने एक५अर्ब४धन दिया जिससे कवियों के और ७ पण्डितों के घर ६ धनवान होगये ८ उधर के मनुष्यों का पालन किया॥३१॥ गंगाधर के धर्म की ९ सीमा और कलियुग १० का निश्चै ही कर्या. महादेव नामक ११ पुत्र हुआ १२ पुत्री ॥ ३२ ॥१३ संसार भर में मनोहर १४ स्त्री १५ यज्ञ ॥ ३३ ॥१६ पैंसठ राजाओं से जिसने विजय पाया और इसप्रकार वह घोड़ा फिरता हुआ मगधदेश की भूमि में आया वहां पर शिशुनाग नामक राजा के वंश में जन्म लेनेवाला दर्भक नामक १७ पटना का १८ राजा ॥ ३४ ॥ १९ मंडलीक "चतुर्योजनपर्यन्तमधिकारो नृपस्य च ॥ यो राजा तच्छतगुणः स एव मण्डलेश्वरः॥"(सोलह कोश वर्गात्मक भूमि जिसके अधिकार में होवे वह नृप तथा राजा कहलाता है इससे सौ गुणी भूमि जिसके अधिकार में होवे वह मंडलेश्वर है)२०युद्ध में

पिल्ल्यो सुनत कटक बहु भूपति, मार्‍यो सब दर्भक उद्धतमति ॥
सो सुनि जाय रच्यो नृप संगर, चरनंन डारि लज्जमय लंगर ३६
खग्गन बहु दर्भक दल खायो, रन बिनुसिर दुवजामै रचायो ॥
मृत सुनि निजनायक रनमानी, रचि सहगमन गई ढिग रानी ३७

(दोहा)

रंभा७५।१ अरु रंभा लरी, महादेव७५ धव काज ॥
बुल्ली पुब्बहि मैं बर्‍यो, आई तू जरि आज ॥ ३८ ॥
सुरपति तिन्ह यह रारि सुनि, बासक दोउन बंधि ॥
भूपहि रक्ख्यो मित्र भनि, सघन नेह गुनसंधि ॥ ३९ ॥
भयो तनय सारंगधर७६, महादेव७५ नृपकेर ॥
द्वारकेस हरिके दरस, किन्नैं जिहिं बहुबेर ॥ ४० ॥
कराणउर्ज्ज सुध्वज नृपति, रट्ठोरन अवतंस ॥
कर्मध्वज हुव तसतनय, जिहिं करि कमधजवंस ॥ ४१ ॥
स्वसा तास सुध्वज सुता, ललिता७६।१ नाम ललाम ॥
सो व्याहिय सारंगधर७६, रमनी गुन अभिराम ॥ ४२ ॥
मानसिंह७७ ताकै तनय, ललिता औरस जात ॥
भजि स्वधर्म जो नृप भयो, खलन खंडि भुव ख्यात ।४३।

खड़े होकर ॥ ३५ ॥ यह सुनकर राजा महादेव ने फिर सेना भेजी उसको भी दर्भक नामक पटना के चंचल बुद्धि राजा ने मारली १पगों में लज्जा के लंगर डालकर ॥ ३६ ॥२दो पहर तक बिना मस्तक युद्ध किया, युद्ध में मानी अपने पति को मराहुआ सुनकर रानी सती होकर पति पास गई ॥ ३७ ॥ रानी का नाम रंभा था वह और रंभा अप्सरा ये दोनों महादेव पति के लिये परस्पर लड़ीं और रंभा अप्सरा ने कहा कि तू तो जलकर आज आई है और मैंने पहिले ही बर लिया था ॥ ३८ ॥ इन दोनों की लड़ाई सुनकर इन्द्र ने दोनों के घर बांधकर राजा को मित्र कहकर ३नेह के बहुत गुण जोड़कर ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४ कन्नोज में सुध्वज नामक राजा राठोड़ों का मुकुट था उसके कर्मध्वज नामक पुत्र हुआ जिसके नाम से राठोड़ कमधज कहलाये ॥ ४१ ॥ उस कर्मध्वज की बहिन और सुध्वज की पुत्री को सारंगधर ने व्याही वह स्त्री गुणों में मनोहर थी ॥४२॥ ललिता के५उदर से हुआ६भूमि पर प्रसिद्ध हुआ ॥ ४३ ॥

रविअन्वय नेपाल नृप, दुर्गसेन की दोय१ ॥
सुता स्वयंबरतैं हरी, हठी स्वयंबर२ होय ॥ ४४ ॥
बंगराज रविदेव मुख, जित्ते सब नृप जंग ॥
अर्प्प परनि दुव३अंगना, आयो निलय अभंग ॥ ४५ ॥
पहिली१मन्न्या७७।१नाम पटु, धन्न्या७७।२अपरा धन्य ॥
निपुन रम्याँ बहुकाल नृप, इनजुत रसिक अनन्य ॥ ४६ ॥
मन्न्यामैं नृप मान७७सौं, भयउ चक्रधर७८पुत्र ॥
अहित कडंगरको अनल, गो१द्विज२धर्म३तनुत्र ॥ ४७ ॥
सूकरपति चालुक्यनृप, मल्लदेव तनया सु ।
परनि राम राधा७८।१प्रिया, आयो निजगृह आसु ॥ ४८ ॥
उपयमतैं चोथी४निसहि, राधा७८।१धारिय गर्भ ॥
नहिंतो कुल अजपालके, रहतो इक्क१न अर्भ ॥ ४९ ॥

[पादाकुलकम्]

कुल सिसुनाग नंदिबर्द्धन सुव, मागधराज महानंदी हुव ॥
दासीजठरज नंद भयो तस, सो यँहँ करन लगो सबको बस ५०

(षट्पात्)

महापद्म उपटंक नंद मगधेस महाबल ॥
पाटलिपुत्र नरेस भयो तिन दिनन बिजैफल ॥
परसुराम यह अपर लग्यो छात्रियकुल मारन ॥

१सूर्यवंशी पुत्रियों को २ अपने मन से आपही पति हो कर ॥ ४४ ॥ ३बंगाले के राजा रविदेव को आदि देकर ४आप दोनों स्त्रियों को परण कर घर आया ॥ ४५ ॥ ५चतुर ६दूसरी ७अद्वितीय रसिक ॥ ४६ ॥ ८शत्रुओं रूपी तुस(तुस)का अग्नि ६कवच ॥ ४७ ॥ १०शीघ्र ॥ ४८ ॥ विवाह करने से चौथी रात्रि में ही गर्भ धारण करलिया नहीं तो अजयपाल के कुल में एक भी बालक नहीं रहता ॥ ४९ ॥ शिशुनाग राजा के वंश में नंदिवर्धन का पुत्र महानन्दी मगधदेश का राजा हुआ जिसके दासी के पेट से नन्द नामक पुत्र हुआ सो सब राजाओं को वश में करनेलगा ॥ ५० ॥ महापद्म की पदवी (खिताब)वाला मगधदेश का स्वामी यह नन्द बडा बलवान हुआ, वह पटना का राजा उन दिनों में विजय के फल कोप्राप्त करनेवाला हुआ, क्षत्रियों के कुल को नाश करने के लिये मानों यह दूसरा ही परशुराम

कंटकविनु निजराज्य करन सब सल्लय निवारन ॥
रन कराणाउज्ज पहिलैं रचिय रत्नध्वज रठोर जँहँ ॥
वहुदिन लरयो रु सिरविनु वहुरि तीन३पहर किय जंगतँहँ॥५१॥

(दोहा)

व्है कबंध तस१००गज हनैं, रत्नध्वज रन रोर ॥
तातैं भजत कबंध पद, अद्यावधि रठोर ॥ ५२ ॥

(षट्पात्)

पुनि दसार्ण१पंचाल२सूरसेन३रु मरु४डाहल५ ॥
सोरठ६रु गुज्जर७विदर्भ८केरल९टक१०कुंतल११ ॥
द्रविड१२कलिंग१३रु अंग१४बंग१५मैथिल१६नेपालक१७
अधिप खोजि इत्यादि अखिल मारे उत्तालक ॥
अर्भक छिपाय नारिन दये भज्जिगये कै उब्बरे ॥
तिहिंबेर नंद दासीतनय सब बाहुज इम संहरे ॥ ५३ ॥

(दोहा)

मल्लदेव१चालुक्य नृप, विलिखराज२प्रतिहार ॥
चीर्णराज३प्रासारपुनि, धीर चढे असिधार॥ ५४ ॥
महासेन४नृप कू रमहुं,किन्नौं तिलातिल काय ॥
करत विजय करनाट इम, पत्तो नंद सु आय ॥ ५५ ॥
द्वै२दिन पहिलैं चक्रधर७८, आयो परनि निकेत ॥
तीजे३दिन कंकन जुतहि, खिजि मंड्यो रनखेत ॥ ५६ ॥

हुआ अपने राज्य को निष्कंटक करने और सब साल मिटाने के अर्थ पहला युद्ध कन्नोज में रत्नध्वज नामक राठोड़ से रचा ॥ ५१ ॥ १ विना मस्तक युद्ध में भयंकर होकर रत्नध्वज ने सौ हाथी मारे इसीकारण से २ अब तक राठोड़ कवन्ध पद को धारण करते हैं अर्थात् कवन्ध कहलाते हैं ॥ ५२ ॥ ३ इत्यादि देशों के राजाओं को खोजकर ५ विकराल होकर ४ सबको मारे और स्त्रियों ने ६ बालकों को छिपादिये वे बचे ७ कितनेक भाग गये वे वचे ॥ ५३ ॥ मल्लदेव नामक ८ सोलंखी राजा ९ पड़िहार १० तरवारों को धारण करके चढे ॥ ५४ ॥ ११ कछवाहा १२ शरीर को, इसप्रकार कर्णाट देश को विजय करता हुआ वह नन्द सिद्दकावती में आपहुंचा ॥ ५५ ॥ १३ अपने घर आया था ॥ ५६ ॥

महापद्म१०००००००००००० दल१द्रव्य२पति;वहै नंद मगधेस ॥
जासौं रन तिन दिनन जुरि; जिय्यो कौन नरेस ॥ ५७ ॥
कंकन हान सक्यो न कारि, चक्रधर सु चहुवान ॥
चढि धारनं मागध चमू, अयुत१०००० हनी अति मान ॥ ५८ ॥
करनलगी वह सहगमन, राधा७८।१सुनि पति नास ॥
रोकी सब ननिहारि तँहँ, दोहदलंच्छन आस ॥ ५९ ॥
पाय समय प्रकटयो तनय, निडर सत्रुजित७९ नाम ॥
गर्भहिमैं नृपता गही, बिधि अक्खर गतिवाम ॥ ६० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचंडासिबंशबर्णने बसुदेव ६८ धारातीर्थनिमज्जनश्यामदेव ६९ पद्मा ६९।१ हरिदास ७० रजनी ७०।१ परियन्त कुलकथनलाहोरयुद्धमत्यन्तराजनूहपलायनवामदेवादिबहुलाऽऽर्यावर्तनरेन्द्रनिपतनश्रीधर ७३ प्रतिभा ७३।१ गङ्गाधर ७४ प्रभा ७४।१ महादेव ७५ रम्भा ७५।१ ऽवधिसन्ततिसमसनप्रारब्धवाजिमेधमहादेव७५दर्भकरणपतनरम्भा ७५।१ सहगमनशार्ङ्गधर ७६ ललिता ७६।१ मानसिंह ७७ मन्न्या ७७।१ धन्न्या ७७।२ चक्रधर ७८ राधा७८।१ऽवसानसन्तानसूचनमहापद्मनन्दनिमित्तकचक्रधरादित्त्रकुलबिन

राजा ने विजय नहीं पाया ॥ ५७ ॥ १ कंकण (विवाह समय में बांधा हुआ डोरड़ा) भी नहीं खोल सका २ तरवारों की धारों पर चढकर मगध देश की दश हजार सेना को मारी ॥ ५८ ॥ ३राधा सती होने लगी जिसके ४ गर्भ का लक्षण ५ हुआ जानकर सब ने रोकी ॥ ५९ ॥६पुत्र८ ब्रह्मा के अक्षरों की उलटी गति से उसने गर्भ में ही७ राजापन पाया ॥६०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव का धारातीर्थ में स्नान करना, श्यामदेव पद्मा, हरिदास रजनी पर्यन्त कुल का कथन, लाहोर के युद्ध में म्लेछ देश के राजा नूह का भागना और वामदेव आदि आर्यावर्त देश के बहुत राजाओं का रणभूमि में पड़ना, श्रीधर प्रतिभा, गङ्गाधर प्रभा, महादेव रंभा पर्यन्त सन्तान का संक्षेप, अश्वमेध का प्रारंभ करके महादेव का दर्भकरणक के युद्ध में पड़ना, रंभा का सती होना, शार्ङ्गधर ललिता, मानसिंह मन्या, चक्र

शनकुमारशत्रुजि ७९ दुद्भवनं सप्तपञ्चाशत्तमो५७ मयूखः ॥ ५७ ॥
आदितो नवनवतितमः ॥ ९९ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

समय सत्रुजित७९ प्रसवके, लक्खन द्रव्य लुटाय ॥
जातकर्म सद्ध्यो सकल, रुद्र पुरोहित राय ॥

(षट्पात्)

सुतहिं अन्नप्रासन कराय अप्प्यो भट१मंत्रिन ॥
राधा७८।१ करि सहगमन गई दिव जँहँ स्वकीय इन ॥
सत्रुजित७९ सु इत सूर बढ्यो जिम मकरबिभाकर ॥
सस्त्र१ सास्त्र२ पढि सकल दिप्यो जुव्वन लहि दुद्धर ॥
कैकेयराज रविकुल कलस जज्ञकेतु तनया जया ७९।१
परन्यों नरेस करनाटपति सतत पतिव्रतसंचयां ॥ २ ॥

(दोहा)

कति मागध याकों कहत, इंदुबंस अवतंस
वसुधातल जिहिंकरि बढ्यो, वसुधेस्वर भव बंस ॥ ३ ॥

(षट्पात्)

धर राधा के अन्त तक सन्तान की सूचना करना, महापद्म की पदवी वाले नन्द के निमित्त चक्रधर आदि क्षत्रियकुल का नाश होना, और कुमर शत्रुजित् के जन्म होने का सत्तावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५७ ॥ और आदि से निन्नानवे मयूख हुए ॥ ९९ ॥

१ जन्म होने के समय २ राजा के रुद्र नामक पुरोहित ने जन्म समय का कर्म किया ॥ १ ॥ पुत्र को ३ अन्नप्राशन (जन्म समय से पांचवें वा छठे मास में अथवा सातवें आठवें इनमें से किसी मास में बच्चे को प्रथम ही अन्न भक्षण कराया जावे उसको अन्नप्राशन कहते हैं)कराके४सौंपदिया राधा सती होकर जहां अपना५पति था वहां६स्वर्ग में गई७मकर राशि का सूर्य बढे इसप्रकार बढा ८ निरन्तर पतिव्रत ९ संचय करनेवाली ॥२॥ इस राधा को कितने ही१०भाट लोग चन्द्रवंश का मुकुट अर्थात्११चन्द्रवंश में पैदा हुई कहते हैं जिससे १२ भूमि तल पर १३ चहुवान वंश बढा है ॥ ३ ॥

इकसत१०० अग्निष्टोम१ त्रिसत३०० मख वाजिपेय२ किय
मख तिम चातुरमास३ च्यारि सहँस रु चउरासिय४०८४ ॥
पुंडरीक४ पंचास५० जजे भूपाल सत्रुजित ॥
पौर्णमास५ अरु दर्स६ सदा बिरचे बिधि संचित ॥
निगमोक्त सद्धि अप्पन निलय अग्निहोत्र धारन करयो ॥
सुत सावधान होतहि सुपहु बैखानस ब्रत आदरयो ॥ ४ ॥

(दोहा)

तनय सत्रुजितकै भयो, हलधर८०नाम गहीर॥
पितर१देव२द्विज३भक्तिपर, विदित दान१रन२बीर ॥ ५ ॥
लहि जुब्बन हलधरकुमर, सब निजराज्य सम्हारि॥
सत्रुजित७९हिं सम्मर्द दयो, सासन तस सिरधारि ॥ ६ ॥

(षट्पात्)

हलधरसिर अभिसेक बिरचि तब नृपति सत्रुजित ॥
पट्ट पंच५सिख आप्पि होय बंधुनकरि बंदित ॥
अग्निहोत्र लै संग सवन समुझाय आय१व्यय२ ॥
जया सहित बन जाय बस्यो बहु अब्द बीतभय ॥
अष्टांग जोग सद्धि रु उभय२भौतिक वपु छोरत भये ॥
गोरक्ष सिद्ध संगति सफल प्रकृति गंजि पारहि गये ॥७॥

१यज्ञ.पचांस पुण्डरीक यज्ञ.इसप्रकार राजा शत्रुजित् ने यज्ञ किये और पूर्णमासी और ४ अमावास्या का सदैव ही ५ वेदोक्त साधन करके अपने ६ घर में अग्निहोत्र धारण किया और पुत्र के सावधान होते ही उस श्रेष्ट राजा ने वानप्रस्थ व्रत को धारण किया ॥ ४ ॥ गंभीर ॥ ५ ॥ शत्रुजित् की आज्ञा शिर पर धारण करके उसको हर्ष दिया ॥ ६ ॥ सिंहासन देकर. आमद खरच समझाकर.स्त्री सहित.बहुत वर्षों तक निर्भय होकर बसा और योग के आठ अङ्ग हैं जिनको साधन करके दोनों भौतिक (स्थूल शरीर और लिङ्गशरीर को भौतिक शरीर कहते हैं) शरीरों को छोडा अर्थात् मुक्त होगया क्योंकि लिङ्गशरीर मुक्ति में ही जीव से जुदा होता है प्रकृति (जगत् का कारण जिससे जन्म मरण होता है) को लोपकर पार (मुक्त) होगया ।७।

यमहिं१जित्ति लिय नियम२जित्ति तिहिं आसन३सद्धिय ॥
ताहि जित्ति लहि प्रानरोध४कुंभक निश्चल किय ॥
प्रत्याहार५हिं जित्ति करन मोरे बिखयन सन ॥
बहुरि धारना६सद्धि कियउ चपलउ स्वतंत्र मन॥
एकत्र धरि सु करि ध्यान७जय बहुरि समाहित८तँहँ बनैं॥
अव्यय स्वरूपमय ते उभय९भूदेवन सत्तम भनैं ॥ ८ ॥

(दोहा)

तजे समय अवसान तिन, इमहि उपेक्षित अंग ॥
निर्विकल्प मैं भो नहीं, पुनि व्युत्थान प्रसंग ॥९॥
हलधर१०सुनि किय जाय तँहँ, हुत पावक२ सन दाह ॥
कर्म विमुक्त३तनको हु किय, रक्खि सनातन राह ॥ १० ॥

योगशास्त्र में योग के यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि ये आठ अंग हैं और प्रत्येक अङ्ग एक दूसरे के पीछे सिद्ध होते हैं तदनुसार उन दोनों स्त्रीपुरुषों ने यम (हिंसा न करना सत्य बोलना चोरी न करना ब्रह्मचर्य रखना विषयों का त्याग करना इसी प्रकार कुछ भी संग्रह न करना) को जीतकर नियम (शुद्धि रखना संतोष रखना तप करना वेदादि का पढाना सब कर्मों को परमात्मा में अर्पण करना) लिया और फिर नियम को जीतकर आसन (जिससे बहुत काल तक सुख पूर्वक स्थिर रहा जाय) को साधा फिर आसन को भी जीतकर प्राणायाम (श्वास प्रश्वास की गति को रोकना) को प्राप्त होकर कुंभक (वायु को उदर में स्थिर करना)को दृढ किया फिर प्रत्याहार (जिसमें चित्त और इन्द्रियां अपने विषय को त्याग कर शान्त अवस्था को प्राप्त होजाती हैं) को जीतकर इन्द्रियों को विषयों से फेरी और फिर धारणा (चित्त को नाभि आदि स्थानों में स्थिर करना) को साध कर चपल मन को भी वश में किया फिर एकाग्रता धारण करके ध्यान (नाभि आदि स्थानों में जो ध्येय का ज्ञान होता है) को भी जीतकर समाधि (जिसमें ध्यान का संस्कार मात्र रहजावे और स्वरूप शून्य के समान होजावे) स्थित हुए इसप्रकार परमात्मा में लीन होनेवाले उन दोनों को ब्राह्मणों ने भी अत्यन्त श्रेष्ठ कहे ॥ ८ ॥ उन्हों ने अन्त समय में उदासीन भाव से शरीर छोडे और निर्विकल्प योग में होने के कारण जीव को फिर स्वतन्त्र कर्म करने का प्रसङ्ग नहीं हुआ अर्थात् फिर जन्म नहीं हुआ मोक्ष होगया ॥ ९ ॥ १ होम करके २ अग्नि में दाह किया ३ कर्मों से छूट गये थे

सोरठा

ससिकुल¹ द्रविड नरेस, संभुसुता चित्रांगदा८०।१ ॥
वय१गुन२रूप३बिसेस, हलधर८०कर ताको गहिय ॥११॥
माघ अमा² जिहिं भूप, रवि उपराग³ प्रयोग गत ॥
उचित पात्र⁴ अनुरूप, द्विजन खर्ब१०००००००००००हाटक⁵ दयो
हलधर निर्भय हिंतु, जन्यौं तनय चित्रांगदा ॥
बभ्रुवाह जयहिंतु, ज्यौं मणिपुर चित्रांगदा ॥ १३ ॥
उचित तास अभिधान⁶, द्विजन महाधन्वा८१दयो ॥
नय१जय२धर्म३निधान, भयो यहहु बिख्यात भुव ॥ १४ ॥
ससिकुल उत्तम सूर, नृप कलिंग सासन करत ॥
पटुताकी गुन पूर, सुता उमा८१।१परन्यौं सु⁷ पहु ॥ १५ ॥

षट्पात्

चंद्रायन प्रामार नगर उज्जैन भूप इत ॥
गंगा न्हावन गयउ जई ऊखर सूकर जित ॥
कछु बासर रहि न्हाय दान नाना प्रकार करि ॥
मुख्य घट्ट⁸ खट६बेर श्राद्ध किन्नैं बिधि अनुसरि ॥
सत्तमी७बेर जावत तहाँ रोक्यो मग दुस्सलकुमर ॥
तुम गये छ६दिन कहि मुकलौ अज्ज हमहु जावत अडर१६

जिनका भी कर्म किया ॥ १० ॥ १ चन्द्रवंशी द्रविड़ देश के राजा शंभु की पुत्री ॥ ११ ॥ माघ मास की २ अमावास्या के ३ सूर्य ग्रहण पर प्रयाग में जाकर ४ पात्र के सदृश (जैसा पात्र था वैसा) दान दिया ५ सोने की मोहरें (शास्त्रों में सौलह मासों की स्वर्ण संज्ञा है)दीं ।१२।भयरहित हलधर से चित्रांगदा ने ऐसा पुत्र जना जैसा मणिपुर में अर्जुन से चित्रांगदा ने बभ्रुवाहन को जना था ॥ १३ ॥ ६ नाम ॥१४॥ ७वह राजा ॥१५॥ ऊखर क्षेत्र का जीतने वाला)"रेणुका शूकरःकाशी काली कालौ वटेश्वरौ॥ कालिञ्जरो महाकाल ऊखरा नव मुक्तिदाः"इति वराहपुराणे) उज्जैण का राजा चंद्रायण८जिधर सूकर (सोरमजी)है उधर गंगा न्हाने को गया६उस मुख्य घाट सोरमजीपर छै बेर जाकर श्राद्ध किये और सातवीं बेर जाते समय सूकर क्षेत्र के स्वामी दुस्सल कुमर ने रोका कि तुम तो आगे छः बेर गये हो आज सोरमघाट पर निर्भय हम जावेंगे

दोहा

चन्द्रायन अक्खिय गई, सामग्री मम तत्थ ॥
बिनु गयँ न तातैं बनैं, अटक देहु नन अत्थ ॥ १७ ॥
पहुँचे दुस्सलके प्रथम, न्हान१ दान२ उपहार[१] ॥
पिट्ठि[२] गये प्रामारके, बुल्ले ते अविचार ॥ १८ ॥
मालवेंद्र आवत इहाँ, द्रुतैं[३] तुम जावहु दूर ॥
भुम्मि हमारी उन भनीं, कितहैं मालव कूर ॥ १९ ॥

पादाकुलकम्

भन्नी नहि प्रामार सिपाहन, जुज्झे तब उतके रच्छक जन
मालवके सायुध[५] सब मारे, कुट्टि[६] इतर हतमान निकारे।२०।
इत दुस्सल रोकी असवारी, उन मिलि प्रमुख बनी सु उचारी
जिते गये ति[७] हने अप्पन जन, किय उपहार श्राद्धके कनकन।२१।

षट्पात्

स्वीय[९] सिपाहन मरन सुनत कुप्प्यो चंद्रायन ॥
बरज्यो दुस्सल बहुत मोरि तँदपि[१०] न लिन्नौं मन ॥
बाजिनकी[११] तब बग्ग उठी दुहुँ२ओर अचानक ॥
मिलि चालुक१ प्रामार२ओरे बज्जत रन आनके[१२] ॥
विनुसीस कुमर दुस्सल प्रबल फारि अनीकनें[१३] उप्फन्यौं ॥
संग्राम मिलत प्रामारसुत हत्थी चउ४संजुत हन्यौं ॥ २२ ॥

---

१ सामग्री २ पीछे से ॥ १८ ॥ ३ तुम शीघ्र दूर चलेजाओ ४ दुस्सल के मनुष्यों ने कहा कि यह भूमि हमारी है मालव मूर्ख किधर है ॥ १९ ॥ सोलंखी५शस्त्रधारी थे उनको मारलिये और दूसरों को ६ पीटकर निकाल दिये ॥ २० ॥ इधर दुस्सल कुमर ने मालवा के राजा चन्द्रायण की सवारी को रोक दी उधर चन्द्रायन के मनुष्य पीट खाकर गये थे जिन्होंने सामने मिलकर चंद्रायन से कहा कि ७ तेरे ८ श्राद्ध की सामग्री को विखेर दी ॥ २१ ॥ ९ अपने सिपाहियों का मरना सुनकर १० तो भी अपना मन नहीं मोड़ा तब ११ घोड़ों की वाग उठी (युद्ध के लिये घोड़े दौड़ाये) १२ युद्ध के नगारे बजते समय १३ सेना को फाड़कर चार हाथियों सहित चंद्रायण को मारलिया ॥ २२ ॥

दोहा

क्षेमदेव चालुक्क कुमर, बिनुसिर दुस्सल बीर ॥
चउ४गज अरु चंद्रायन सु, हनि रु पर्‍यो हमगीर ॥ २३ ॥
अविबाहित हो यह कुमर, अपज सूरवतंस ॥
ताहि मन्नि दुस्सल पितर, पुज्जत चालुक बंस ॥ २४ ॥

षट्पात्

कुमर मरन सुनि क्षेमदेव चतुरंग लज्ज करि ॥
वसु८सुत मोक्कलभानु आदि अप्पन हरोल धरि ॥
खिल प्रमार दल हनन चल्यो पद्धर गंगातट ॥
सुनि यह मालव सेन अखिल भग्गो बट उब्बट ॥
उज्जैन मयाधर नृपननृप चंद्रायन गद्दिय चढ्यो ॥
चालुक१प्रमार २ बंसन बिदित बैर असह तबतैं बढ्यो ॥२५॥

(दोहा)

मल्लिनाग मुनिराज इत, लहि अपमान बिसेस ॥
सुत अष्टक८ जुत संहर्‍यो, महापद्म मगधेस ॥ २६ ॥
सूद्र बरन ते जनक१ सुत८, नव९हि नामकरि नंद ॥
दुर्मद लखि दै साप द्रुत, किय चाणक्य निकंद ॥ २७ ॥

(पादाकुलकम्)

क्षेमदेव सोलंखी का दुस्सल नामक कुमर विना मस्तक चार हाथी और चन्द्रायण को मारकर खड़ा हुआ ।२३।विना विवाहा और विना संतान वीरों का मुकुट था जिसको दुस्सल नामक पितर मानकर सोलंखी वंश अब तक पूजते हैं।२४। चतुरंगसेना तैयार करके मोकल और भानु आदि आठ पुत्रों को आगे करके पॅवार की बाकी की सेना को मारने के लिये सीधा गंगा किनारे पर चला उप्रवट (विना मार्ग) उज्जैन में राजाओं के राजा चन्द्रायन की गद्दी पर मयाधर बैठा ॥ २५ ॥ इधर चाणक्य मुनि ने अपमान पाकर सम्पूर्ण आठ पुत्रों सहित मगध देश के राजा महापद्म (नन्द) को मारा ॥ २६ ॥ वे पिता पुत्र सब शूद्र वर्ण (नन्द, दासी के पेट से पैदा हुआ था इससे सब शूद्र थे) के और नव ही नन्द नाम के थे१चाणक्य मुनि ने नाश किया ॥ २७ ॥

कुल सिसुनाग महानंदी सुत, चंद्रगुप्त किन्नौं नृपताजुत ॥
बिरचि ग्रंथ चाणक्य नीतिमय, जाय पढाय कियो मुनि दुर्जय २८
अग्गैं नंदसचिव सकटालहिं, कूप अंध डारयो लहि कालहिं॥
सत१००हि हुते सकटालकेर सुत, सबहि गर्त गेरे पितृसंजुत ।२९।
परे कूप प्रतिदिन ते पालहिं, इक१ जलघट इक१ सक्तुसरावहिं॥
तनयन सन सकटाल कह्यो तब, सक्तु इते करि नन बचिहैं सब३०
अटके नंद अहेलन अप्पन, प्रतिफल याको ताहि समप्पन ॥
होउ समर्थ सक्तु सुहि खावहु, असन बिहीन और मरिजावहु ॥३१॥
सु तिहिं समर्थ कह्यो पुत्रन जब, खानलग्यो सकटाल सक्तु तब॥
याके लखत बिकलहिग अप्पन, सत१००हि तनूज मरे लंघनसन३२
कछु अब्दन अंतर बिच पारयो, बहुरि नंद सकटाल निकारयो ॥
कायस्थ सु सकटाल कजाकी, कढ्यो मारि पुत्रन एकाकी ।३३।
नृप किन्नौं पुनि सचिव सोहि नत, तासनास अवसर कँहँ तक्कत ॥

शिशुनाग राजा के वंश में महानन्दी नामक राजा के नन्द नामक पुत्र हुआ वह पटना का राजा हुआ जिसको पुत्रों सहित मारकर चन्द्रगुप्त को चाणक्य ने राजा बनाया और चाणक्य नाम का नीति का ग्रन्थ बनाकर उसको पढाकर दुर्जय बनाया ॥ २८ ॥ जिसकी आगे सविस्तर कथा कहते हैं कि आगे नन्द के सकटाल नामक कायस्थ जाति का एक मंत्री था जिस-को एक अन्धे (विना पानी के) कूए में डालदिया, इस सकटाल के सौ पुत्र थे जिन सबको पिता सहित खड्डे में डालदिये ॥ २९ ॥ उन कूप में गिरेहुओं को उनके पालन के लिये जल का एक घड़ा और सत्तू का सरावा (मृत्तिका पात्र विशेष)नन्द देता था तब सकटाल कायस्थ ने अपने पुत्रों से कहा कि इतने से सत्तू (सातू) से सब जने नहीं बचेंगे ॥ ३० ॥ विना अपराध अपने को नन्द ने कैद किया है इसका बदला उसको देने के लिये जो समर्थ होवे वही यह सत्तू खाओ और विना भोजन के अन्य सब मरजाओ ॥ ३१ ॥ उन पुत्रों ने उसी (सकटाल) को बदला देने के समर्थ कहा सौ ही पुत्र लंघन करने से मरगये ॥ ३२ ॥ कुछ वर्ष वीच में देकर नन्द ने उस सकटाल को उस कूए से निकाला वह छली अथवा होशियार सकटाल कायस्थ पुत्रों को मारकर अकेला निकला ॥ ३३ ॥ नम्र जानकर नन्द ने उसीको कामदार किया वह नन्द का नाश करने का समय देखता रहा, जब मरेहुए पुत्र याद

अंगज मृत सुमिरन जिम आवैं, सकटालहिं तिम नृप न सुहावैं।३४।
नंदहि नासकरन कछु हेरन, फिरैं बिपिन लै मिस हयफेरन॥
कबहु लखे चाणक्य बिहारत, दर्भमूल खनि तक्रहिं डारत॥३५॥
करहु कहा सकटाल कह्यो जहँ, मुनि कौटिल्य दयो उत्तर तहँ॥
है इहिंमग व्याहन मैं जावत, अटक्यो कुस चुभि चरन दुखावत।३६।
तरुबैद्यक बिच यह दिन्नी कहि, मिटैं दर्भनिजमूल तक्र लहि॥
चुभि पय मोहि लग्न च्युत किन्नौं, दर्भन मूल तक्र इम दिन्नौं।३७।
सचिव कह्यो न पढे तिहिं होते, तो तुम दर्भ कहाकरि खोते॥
बिप्र कह्यो मैं मुनि बच्छायन, करि अभिचार मिटातो कुसबन।३८।
सु सुनि मंत्र सकटाल बिचार्यो, जिहिं बदलो कुससौंहु न टार्यो॥
सो नरको हेलन नन सहिहैं, द्रुतहि सपुत्र नंदकों दहिहैं॥ ३९ ॥
यह आलोचि बिप्र प्रति बुल्ल्यो, श्राद्धकरन आसय नृप खुल्ल्यो॥
अधिकृत होहु तहाँ चलि अप्पहि, मुनिहि संग लै गो सु यहै कहि४०
श्राद्ध करन लग्गो सु नंद जँहँ, तँहँ कायस्थ लैगयो तिनकँहँ॥
पात्र कहि रु बैठारे आसन, रद१ नख२ कपिस धरत बच्छायन४१

आवे तब सकटाल को वह राजा नहीं सुहावै ॥ ३४ ॥ वन में घोड़ा फेरने के मिस से फिरै सो कभी फिरतेहुए ने डाभ के मूल को खोदकर उसकी जड़ में छाछ (गोरस) डालतेहुए चाणक्य मुनि को देखा॥ ३५ ॥१चाणक्य मुनि ने उत्तर दिया ॥ ३६ ॥ वृक्ष सम्बन्धी वैद्यक ग्रन्थों में यह लिखा है कि डाभ की जड़ में छाछ डालने से वह मिटजाता है२विवाह से च्युत कर दिया अर्थात् विवाह नहीं होने पाया इसकारण से मैंने डाभ की जड़ में छाछ दिया है ॥३७॥ जब सकटाल ने कहा कि तुम इतने नहीं पढे होते तो डाभ का नाश कैसे करते तब उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं वात्स्यायन नामक मुनि हूं सो ३ मारण मोहन आदि मंत्र तन्त्र (मंत्र तंत्र के मारण मोहन उच्चाटन में वात्स्यायन मुनि प्रसिद्ध थे और इस कार्य के आचार्य थे) से डाभ के वन को मिटादेता ॥ ३८ ॥ ४ वह मनुष्य का अपराध सहन नहीं करैगा सो नन्द को पुत्रों सहित शीघ्र ही भस्म करैगा ॥३९॥५विचार करके,६वहां चलके आप अधिकारी होओ ॥ ४० ॥ ७ वह नन्द १० वात्स्यायन (चाणक्य) के ८ दन्त और नख ९ पीले थे ॥ ४१ ॥

केस कपिल इम नंद निहारे, कहि अपात्र मुनि बेग बिडारे ॥
खुल्लि सिखा मुनि तब लिन्नौं पन, करौं ससुत नंदहिं गतजीवन ४२
बंधौं बहुरि सिखा मेरी जब, कहि इम हुत-अभिचार कर्यो तब॥
नँदहि नाम तस सुतनन धारे, इम नव१ नंद चणाकसुत मारे।४३।
महानंदि सिसुनाग पुव्व हुव, चंद्रगुप्त हो तस प्रवीन सुव ॥
ताहि कुसुमपुर तखत चढायो, नंदमंत्रि रक्खस निकसायो ।४४।
विषकन्न्या भेजी जब रक्खस, टारी सुहु पहिचानि रूप तस ॥
पर्वतराज ताहि करि मार्यो, बच्छायन पुनि मंत्र बिचार्यो ॥४५॥
सचिव होय रक्खस वह याकैं, तो न चंद्रगुप्तहिं अरि ताकैं ॥
यह बिचारि मुनि सुहि बुलवायो, भनि सपथ रु भय तास भगायो४६

केस भी देखकर अपात्र कहकर चाणक्य को निकाल दिया तब अपनी चोटी को खोलकर चाणक्य मुनि ने नियम लिया कि नन्द को पुत्रों सहित मारूंगा॥४२॥१मंत्र जंत्र किया, उस नन्द के आठ२पुत्रों के नाम भी नन्द ही थे इसप्रकार चणक ब्राह्मण के पुत्र (चाणक्य) ने नव नन्द मारे॥४३॥शिशुनाग नामक राजा के वंश में महानन्द नामक राजा हुआ जिसके बुद्धिमान् चन्द्रगुप्त नामक पुत्र था [किसी किसी के मत से महानन्द के सुनन्दा नामक स्त्री के पेट से "नन्द" और मुरा नामक शूद्रा स्त्री के पेट से मौर्य नामक पुत्र हुआ और इस मौर्य का पुत्र चन्द्रगुप्त हुआ इसीसे मौर्य वंश निकला है]जिसको पटना की गद्दी पर बिठाया और राक्षस नामक एक ब्राह्मण नन्द का मंत्री था जिसको निकलवादिया ॥ ४४ ॥ उस राक्षस ने चन्द्रगुप्त को मारने के अर्थ एक विषकन्या [मुद्राराक्षस नाटक में एक प्रकार की स्त्रियां लिखी हैं कि जिनके साथ प्रथम संभोग करनेवाला पुरुष मरजाता है] भेजी परन्तु उसको रूप पहिचान कर चाणक्य ने उसको टाल दी और उसी विषकन्या से पर्वतराज को [नन्द को मारने के लिये चन्द्रगुप्त की सहायता पर नैपाल के राजा को आधा राज्य देने का नियम करके चाणक्य चलालाया था उसके पास वह विषकन्या चाणक्य ने चन्द्रगुप्त की ओर से भेट भेज दी जिसके साथ भोग करने से पर्वतराज मरगया और चन्द्रगुप्त को आधा राज्य नहीं देना पड़ा] मारा फिर वात्स्यायन [चाणक्य] ने सलाह विचारी कि ॥ ४५ ॥यह राक्षस चन्द्रगुप्त का मंत्री होजावे तो उसके कोई शत्रु नहीं रहै यह विचार कर चाणक्य मुनि ने उस राक्षस को बुलाया और सोगन करके उसका भय भगाया ॥ ४६ ॥

मलयकेतु नृपकै यह रक्खस,जाय सचिव भो हो प्रकटित जस॥
सु इम बुल्लि मुनिबर हिय लायो, मंत्री रक्खस नाम बनायो॥४७॥
सकटालहु लै बैर नंद सन, कासी गयो तजन निज उपघन॥
चंद्रगुप्त१रक्खस२हुव हितमय, मगधं तिन्है दै मल्लिनाग गय४८
बच्छायन वे नंद९हनैं जब, पंद्रहसत१५००कलिबर्ष गये तब॥
चंद्रगुप्तकहँ नीति परायन, करि स्वच्छंद गये बच्छायन ॥४९॥

(दोहा)

गनित प्रबंधनमैं हु यह, तबसौं हुव संकेत ॥
नंद कहैं नव९जानियत, इम तिहिं अर्थ उपेत ॥५०॥
कामतंत्र१चाणक्य पुनि, नीतितंत्र चाणक्य२ ॥
न्यायभाष्य३इत्यादि मुनि, बिरचे इतर असक्य ॥ ५१ ॥
देवदत्त८२सुत इत भयो, महाधन्व नृपकेर ॥
जुद्ध करी नहि देर जिहिं, दैन करी नहि देर ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने दृष्टप्राशिताऽन्नपुत्रराधा ७८।१ ज्वलनस्नानकरणशत्रुजि ७९ जया ७९।१ ऽग्निष्टोमाऽऽदिप्रभूतसत्राऽनुष्ठानसाधितगार्हस्थ्यगृहीतवैखानसव्रतसमनुष्ठितयोगतद्रूपाति१देह

वह राक्षस मलयकेतु नामक (जो पर्वतराज का पुत्र था) नेपाल के राजा के पास जाकर उस का सचिव होगया था जिसको १इसप्रकार बुलाकर।४७।२नन्द से वैर लेकर ३शरीर४मगध का राज्य चन्द्रगुप्त को देकर चाणक्य मुनि भी गये।४८। ५चाणक्य ने उन नन्दों को मारे जब कलियुग के पन्द्रह सौ वर्ष गये थे६स्वतंत्र करके चाणक्य गये ॥४९ ॥ ज्योतिष के गणित के ग्रन्थों में जब से यह सङ्केत हुआ है कि नन्द के कहने से नव माने जाते हैं सो नन्द शब्द इस अर्थ सहित हुआ।५०॥ उसी चाणक्य ने कामशास्त्र (वात्स्यायन कामसूत्र के नाम से) और चाणक्यनीति के नाम से नीतिशास्त्र किये और न्यायशास्त्र पर भाष्य इत्यादि और भी दूसरों से नहीं होसके ऐसे किये ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में पुत्र का अन्नप्राशन देखकर राधा का अग्निस्नान करना (जलना) शत्रुजित् और जया का अग्निष्टोम आदि बहुत यज्ञों का अनुष्ठान

त्यजनहलधर ८० चित्राङ्गदा १ बिबहनतीर्थराजखर्वसुवर्णदानमहाधन्वो ८१ मा ८१।१ परिणायनप्रामारराजचन्द्रायण १चालुक्यराजकुमारदुश्शल २ शूकरक्षेत्रसन्निपतननिपातितनव ९ नन्दमहामुनिमल्लिनागकुसुमपुरस्कन्धावारमगधराज्यचन्द्रगुप्तायत्तीकरणचण्डासिराजमहाधन्वकुमारदेवदत्तो ८२ द्भवनमष्टपञ्चाशत्तमो ५८ मयूखः ॥ ५८ ॥ आदितः शततमः ॥ १०० ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(षट्पात्)

देवदत्त चउसट्ठि ६४ कला कोबिदं उदारमति ॥
जनकं अनंतर एह भयो करनाट महीपति ॥
गंगा१जमुना२मज्झ मुकुट पुर थान कुम्म पहु ॥
अमरसेन सुहि अभृतसेन नाम रु अजसेनहु ॥
अभिधान तीन३जाके विदित तनया कुसुमा८२।१नाम तस
चहुवानराज परन्यौं रुचिर जग प्रसारि बितरन सुजस॥१॥

(दोहा)

आनंदध्वज भूप इत, कान्यकुब्ज रट्ठोर ॥
भूतल इक्क उदार भो, करे मितंपचं और॥ २ ॥

करना, और गृहस्थ धर्म का साधन करके वानप्रस्थ व्रत में योग का अनुष्ठान करके उन स्त्री पुरुष का शरीर छोडना, हलधर का चित्रांगदा से विवाह करके प्रयाग में एक खर्व मोहरों का देना,महाधन्वा का उमा से विवाह करना, पँवार राजा चन्द्रायण और चालुक्य राजकुमार दुस्सल का शूकरक्षेत्र(सोरमघाट) के युद्ध में गिरना,नव नन्दों का नाश करके चाणक्य मुनि का पटना की राजधानी चन्द्रगुप्त के वंश में करना, चहुवानराजा महाधन्वा के कुमर देवदत्त के जन्म होने का अट्ठावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५८ ॥ और आदि से सौ १०० मयूख हुए ॥

१चौसठ कला में पंडित २ पिता के३ पीछे ४ कछवाहा राजा ५ जिसके तीन नाम प्रसिद्ध हैं ६ सुन्दर ७ दान से यश फैलाकर ॥ १ ॥ ८ कन्नोज में आनंदध्वज राठोड़ दूसरों को ९ कृपण करके भूमितल पर एक ही उदार हुआ

पौरांनिक[1] चारन सुकवि, उग्रश्रवकुल अर्क[2] ॥
वीततमा पूजे सविधि, तिनसों नृप सुनि तर्क[3] ॥ ३ ॥
सत१००सासन[4] गज इक१सत१००,हय वर तरल[5] हजार१००० ॥
कोटि१०००००००कनक[6] सत१००किंकरी[7], दये इतेक उदार ॥४॥
विप्र[8]१सूत[9]२मागध[10]३विबुध[11]४, सबहिं अजाचक थील[12] ॥
करे भूप जिहिं मोज[13] करि, कृपनन मुख जरि कील ॥५॥
देवदत्तकै पुत्र हुव, दामोदर८३नर ईस ॥
करि जिहिं भक्ति प्रसन्न किय, गिरिजा[14] सहित गिरीस[15] ॥६॥
पुष्करनाम त्रिगर्तपति[16], भूप भानुकुल भूत[17] ॥
सुगुणा८३।१तस तनया सची[18], परनी तिहिं पुरुहूत[19] ॥ ७ ॥

पट्पात्

करि उपयम[20] मुरि मग्ग देस चल्लत दामोदर८३ ॥
जंबुमार्गवन आय भानु उपरक्त[21] अमा[22] पर ॥
तँहँ पुर पट्टनि नाम सरित चम्मलि[23] तँहँ दंपति[24] ॥
दत्त[25] अयुत१००००गोदान सहित नानाविधि संहति ॥
दुल्लहनि उपेत[26] क्रीडत दुलह नानावन१उपबन२नदि३न ॥
इक१अब्द अंत मिहिकावतिय इम पत्तो चहुवान इन[28] ॥८॥

---

१ पुराण की वृत्ति को धारण करनेवाले अथवा पुराण जाननेवाले रोमहर्षण सूत के वंशवाले चारण श्रेष्ठ कवि उग्रश्रवा नामक सूत के वंश के. २ सूर्य. वीततमा से ३ न्यायशास्त्र सुनके उनको पूजा और ४ सौ उदक ग्राम एक सौ हाथी ५ चंचल श्रेष्ठ हजार घोड़े६ सोने की करोड़ मोहरें ७ सौ दासियें उस उदार ने वीततमा को दिये ॥ ४ ॥ ८ ब्राह्मण ९ चारण १०भाट और११पंडित सभी को याचक करके उसने१३दान(रीझ)से सबको १२ धनवान् करके कृपणों के मुख में कील जड़ दी ॥५॥ १४ पार्वती सहित १५ महादेव को प्रसन्न किये ॥ ६ ॥ १६ जालंधर देश का पति (सुशर्मा का देश) १७ हुआ १८ इन्द्राणी को १९ उस इन्द्र ने परनी ॥ ७ ॥ २० विवाह करके २१ अमावास्या के दिन२२ सूर्य ग्रहण पर २३ चामल नदी है जहां पर २४स्त्रीपुरुष ने जोड़ से दश हजार गौयें सहित नानाप्रकार के २६ इकट्ठे २५ दान दिये २७ सहित २८ चहुवाणों का राजा तथा सूर्य ॥ ८ ॥

कासीनाथ८४प्रबुद्ध[1] भयो दामोदरकै सुत ॥
धीर वीर नय१धर्म२विनय३बिक्रम४विद्या५जुत ॥
अर्पिं राज्य[2]भर याहि समय अवसर दामोदर ॥
गयो बिपिन[3] ताजि गेह हृदय अबिरत[4] चिंते हर[5]॥
प्रभु सिव प्रसन्न अवसान[6]पर दुर्लभ ताहि समीप्य[7] दिय ॥
चहुवानराज सुगुणा सहित नियत[8] वास कैलास किय ॥ ९

दोहा

नंदध्वज रठ्ठोर नृप, सोही संबर[9] नंद ॥
करांउज्ज[10] तिहिंकाल भो, मति१बल२दान३अमंद ॥१०॥
भव्य[11] सुता तस भावती८४।१,नृपबर कासीनाथ८४॥
परनि करे कवि प्रचुर[12] धन, पूरै जिम घन[13]पाथ ॥ ११ ॥

षट्पात्

परनि वाहुरत बेर आय ऊखर[14] कालंजर ॥
सुरभी[15] बिप्रन सँहस१०००दई बिधुबार अमा[16]पर ॥
तीरथराज प्रयाग जाय बहुबेर दान किय ॥
गंगाद्वार पधारि रजत[17]मुद्रा अर्बुद१०००००००दिय ॥
करि जंग बिजय ससिकुल[18] कलस कुंतल[19]पति श्रीधर हन्यौं
बलमैं प्रचंड यह नृप विदित भीम अपर[20] भूतल भन्यौं॥

दोहा

इम भूपति कुंतल[21] अधिप, श्रीधरकौं रन मारि ॥
दुहिता[22] तस आनी दया८१।२,निज सुतहित निर्द्धारि ॥१३॥

१पंडित२राज्य का भार३वन में४निरंतर५महादेव का चिन्तवन किया६अन्त में शिव ने ७ अपनी समीपता (मुक्ति) दी ८ निश्चय ॥ ९ ॥ ९ उसीका नाम शम्बर नंद भी था१०कन्नोज पर ॥ १० ॥११सुन्दर१२बहुत धनवान् कर दिये जैसे मेघ१३जल से पूर्ण करै तैसे ॥ ११ ॥ १४कालंजर नामक ऊपर क्षेत्र में १५गौवें१६सोमोती (सोमवारवाली) अमावास्या पर१७चांदी के रुपये१८चंद्र वंशियों के मुकुट १९ कामगिरि से लेकर द्वारका तक के प्रांत को कुन्तल कहते हैं २० दूसरा ही भीमसेन कहागया ॥ १२ ॥ २१ कुन्तल देश के राजा २२ उसकी पुत्री को अपने पुत्र के लिये लाया ॥ १३ ॥

(षट्पात्)

कासीनाथ८४तनूज[1] भयो कोबिद[2] लीलाधर८५ ॥
दया८५।१ताहि परिनाय लयो उपराम[3] दयापर ॥
सुतहिं अप्पि कर्णाट गयो भूपति वदरीबन॥
देह तज्यो भजि जोग गह्यो सत[4]१चित२आनँद३घन ॥
धरनी[5] भुजंग लीलाधर८५सु भुम्मि विदित विक्रम भयो ॥
जिहिं कोक[6] नाम बंदीजनहिं दोय अयुत२००००हाटक[7] दयो१४

(दोहा)

तंत्रन[8] बिच बिनु तोल, हाटक संख्या होय तँहँ॥
कोविद जानहु कोल, सोलह१६ मास सुवर्ण प्रति॥१५॥
हितमय सुरतरु[9] होय, विप्रहु सनमाने बहुत ॥
दिय सासन[10] सतदोय२००, पटु[11] पंडित श्रीकंठकहँ ॥१६॥

(दोहा)

लीलाधर८५कै सुत भयो, धरनीधर८६अभिधान[12] ॥
नीति१पढ्यो द्विज नंदसौं, सलसौं वेद२सुजान॥१७॥

(षट्पात)

श्रीधर सुत मदसेन सुपहु लीलाधर सालक[13] ॥
जनक[14] वैर इत जानि चढ्यो कुंतलभुवपालक[15] ॥
चहुवानहु चतुरंग सज्जि झेल्यो वह सम्मुख ॥
जामिप[16]१सालक२जुगल२रच्यो संगर अर्जुन रुख[17] ॥

१पुत्र२पण्डित३परम दया धारण करके विरक्त होगया ४सच्चिदानन्दघन (ब्रह्मस्वरूप)लिया५भूमि रूपी वेश्या का पति६कोक नामक भाट को७सोने की मोहरें दीं॥१४॥८शास्त्रों में जहां विना तोल स्वर्ण की संख्या होवे तहां पंडितों का नियम सोलह माषा सुवर्ण का जानो ॥१५॥ ९कल्पवृक्ष होकर १०उदक ग्राम११चतुर ॥१६॥१२धरनीधर नामवाला॥ १७ ॥१३लीलाधर का शाला१४पिता का वैर जानकर कुन्तल देश की भूमि को १५पालन करने-वाला चढा१६बहिनोई और शाला दोनों१७अर्जुन की भांति

तजि देह दुवरहि पत्ते त्रिदिवं[3] काबेरी उपकंठ भुव॥
धरि छत्र भयो धरनीधर८६सु धरनीधव[4] करनाट धुव॥१८॥

(दोहा)

लीलाधर८५मृत सुनि लघुंहि[5], चंदन निचिंत[6] कराय ॥
देह होमि पहुँची दया८५।१, जँहँ बल्लभं तँहँ जाय ॥१९॥
धरनीधर८६गो भुम्मिधव, पुष्कर धोवन पाप ॥
तँहँ उततैं आनर्तपति, पहुँच्यो न्हान प्रताप ॥ २० ॥
बाहुलमासं[9] निबाहि बिधि, दै तँहँ लक्खन दम्मं[10] ॥
मोदसहित दुवरनृप मिले,करि द्विज दुक्ख निकम्म ॥२१॥
नृप प्रताप ससिकुलकलसैं[11], स्वीयं[12] सुता संबंध ॥
करि संगहि चल्लहु कह्यो, व्याहहु सीघ्र सुसंधं[13] ॥ २२ ॥

(षट्पात)

धरनीधर८६सुहि कहिय अत्थ[14] आये तीरथ हित ॥
सुहृद[15]१बंधु२नहि संग मंत्रि१भट[16]२वर्ग तथा मितं[17] ॥
जातैं आलय[18] जाय व्याह करिहैं बिधि संजुत ॥
अक्खिय[19] सु सुनि प्रताप नियंत ससिकुल जानहु नुंत[20]॥
जाके सहाय लहि जय दुलभ भुग्गत तुम करनाटभुव ॥
न बिलंब करहु चिंतहु नृपति हुत अरिघाट[21]१रु बाल२दुव२।२३।
तनुजा सम्मति अग्ग सुंग आनर्त धराधवं[22] ॥

काबेरी नदी के ३ समीप भूमि में युद्ध रचकर २ स्वर्ग में १ पहुँचे ४ भूमिपति ॥ १८ ॥ ५ शीघ्र ६ चन्दन काष्ट को इकट्ठा कराकर ७ जहां पधारा था तहां ॥ १९ ॥ प्रताप नामक ८ द्वारका देश का पति स्नान करने को गया ॥ २० ॥ ९ कार्तिक मास में १० रुपये ॥ २१ ॥ ११ चन्द्रकुल का कलश प्रताप नामक राजा ने १२ अपनी पुत्री का सम्बन्ध करके कहा १३ हे श्रेष्ठप्रतिज्ञावाले ॥२२॥१४यहां१५मित्र१६उमराव भी१७कम है इस कारण से १८घर जाकर१९निश्चै ही चन्द्रवंश को२०स्तुतियोग्य जानो, इसी वंश की सहायता से दुर्लभ जय लेकर २१ अरिघाट नामक मामा ने और बाल नामक भाणेज ने सहायता की थी सो शीघ्र याद करो॥२३॥आनर्त देश के राजा

ब्याही नृप विक्रमहिं भयो सहदेव तत्र भव ॥
इंद्रप्रस्थ भुव छिन्नि जाहि कुरुपति निकासि दिय॥
तव मातुल[2] अरिघाट ताहि करनाट भूप किय ॥
मारयो सुनाभ हैहयमुकुट[3] पुनि जनपद[4] पुंड्रक लयो ॥
मातुल सहाय हरिसेन सुत बालहु तिम देहहि दयो॥२४॥

(दोहा)

यह प्रताप आनर्तपति, सब उदंत[5] सुनवाय ॥
कुल निज जो आसान[6] किय, दिय सो प्रकट दिखाय॥ २५ ॥
बह निमित्त[7] लै उच्चरिय, क्यों तहँ ब्याहन देर॥
रिस पचाय धरनीधर८६हु, बुल्ल्यो सुनि तिहिं बेर॥ २६ ॥
हन्यों जयद्धलनैं जबहि, नृप कृतबर्मा८५नाम ॥
सल नामक तस स्वसुर सन, कछु न सरयो तब काम२७
छिन्नि जयद्धलनैं लयो, हमसौं पुंड्रक देस ॥
जानहु इत उपकार जो, आनहु तो घर एस ॥ २८ ॥
सुनि सिटाय आनर्तपति, कह्यो बन्यौं सुहि अच्छ ॥
अकरनसौं अलपहि करन, कहत भलो नयदच्छ ॥ २९ ॥

सुंग ने सम्मति नामक पुत्री को विक्रम चहुवान को विवाही थी जिससे सहदेव का १ जन्म हुआ २ तब मामा ३ हैहय कुल के मुकुट सुनाभ को मारकर पुंड्रक ४ देश लिया और हरिसेन के पुत्र बाल ने भी मामा (गोग चहुवाण) की सहाय पर तिल तिल समान कट कर शरीर दिया है ॥ २४ ॥ ५ वृत्तान्त सुनाकर ६ अपने कुल ने जो चहुवाणों पर उपकार किये थे वे प्रकट करके दिखादिये ॥ २५ ॥ ७ वह कारण बताकर कह ॥ २६ ॥ कृतवर्मा चहुवान को जयद्धल ने मारा तब कृतवर्मा का स्वसुर सल नामक चन्द्रवंशी था जिससे कुछ कार्य नहीं सरा ॥ २७ ॥ जयद्धल ने हमारा पुंड्रक देश छीनलिया सो तुम हम पर उपकार किया चाहते हो तो वह पीछा हमको दिलाओ ॥ २८ ॥ आनर्त देश के राजा ने कहा कि जो कुछ हम से बना सो ही अच्छा है कुछ नहीं करनेवाले से न्यून करनेवाले को नीतिचतुर भला कहते हैं ॥ २९ ॥

षट्पात्

तँहँ धरनीधर८६नृपति स्वीयँ मंत्रिन समुझायो ॥
इन जिम किय उपकार अबहु अवसर तिम आयो ॥
जदपि अल्प दल² संग तदपि अप्पन प्रच्छन्न³ न॥
चलहु विवाहन वेग सु सुनि किय ग्रहन रूच्यर्पन ॥
निज स्वसुर संग प्रस्थान करि तनया सुखमा८६।१नाम तस॥
परन्यौं बढाय उच्छव प्रथित रह्यो अमित दुहुँ ओर रस।३०।

दोहा

आयो नृप चहुवान इम, सुखमा८६।१परनि सुरूप ॥
मख किय अग्निष्टोम दस१०,जिहिँ पुनि हाटक जूप॥३१॥
होताआदिकद्विजनहित,लक्ख१०००००लक्ख१०००००दियदम्मँ।
पौरानिकँ वंसहु प्रचुर, किय पूजित जस कम्म ॥३२॥
धरनीधरकैँ सुत भयो, रन दुस्सह रमनेस८७॥
नृप कवंधँ संवर सुता,उदिता८७।१परन्यौँ एस ॥३३॥
अध्वँर ज्योतिष्टोम इक१, किन्नौँ नृप चहुवान ॥
दये सूतँ बसुमित्रकौँ, सासनँ सट्ठि६० सुजान ॥३४॥

षट्पात्

नृप चालुक्य कुमारपाल इत विजयपाल सुत ॥
भयो जैनमत लीन नीच तजि धर्म निगँम नुँत ॥
उत्कल जनपदँ अवधि अमल किन्नौँ जिहिँ अप्पन

१अपने मंत्रियों ने२सेना साथ में कमती है तो भी आपन ३ छिपे हुए नहीं हैं ४ दूलह (बींद) पन ग्रहण किया ५ गमन करके ६ प्रसिद्ध७अपार रस (स्नेह) रहा ॥ ३० ॥ ८ स्वर्ण का खंभा खड़ा करके ॥ ३१ ॥ ९ होम करनेवाले ब्राह्मणों को १० रुपये दिये ११ चारणवंशी को भी यश के लिये बहुत पूजा ॥ ३२ ॥ सम्बर नामक १२ राठोड़ की पुत्री ॥ ३३ ॥ १३ यज्ञ १४ वसुमित्र नामा चारण को १५ साठ ग्राम उदक दिये ॥ ३४ ॥ १७ स्तुतियोग्य १६ वेद को छोडकर१८उड़ीसा देश की सीमा तक अपना अमल करालिया.

सट्ठि६०वरस वय इत सु भयो रमनेस८७*धराधन ॥
उपज्यो न**तदपि ताकौं तनय पन लिय तब कारि सिव प्रनुत॥
रावरे भेट सिर मम करौं संकर प्रभु जो देहु सुत॥३५॥

दोहा

दैवजोग पन लेत यह, तनय उपज्जिय तास॥
बाल छपाकर जिम बढिय, दिन प्रति भगवतदास८८॥३६॥
छन्नै नृप संधा लई, जानी इक्क१ न जाहि ॥
पुनि बुल्ल्यो अचलेस प्रभु, अर्बुद गिरि सिव आंहि॥३७॥
तिनके दरसन काज मैं,जावत सत्वरै जत्थ ॥
इक अप्पन कुल जन्मभुव१,तित्थ२बिदित पुनि तत्थ ॥३८॥

षट्पात्

इम कहि नृप रमसेन ८७ सचिव सामंत रक्खि तहँ ॥
सेना कछु लै संग गयो अर्बुद गिरीस जहँ ॥
सिव पूजन किय पुब्बं भक्ति १ उच्छव २ श्रद्धा ३ जुत ॥
पुनि तहँ तीरथ बहुत हुते तिन बिच न्हायो नुत ॥
अभिधानं सुकवि तिनके कहत वंदन करि अति नम्र बनि॥
एकाग्र श्रवन धारहु नृपति रामसिंह चहुवान मनि ॥३९॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

*राजा(भूमि ही है धन जिसके)**तो भी उसके पुत्र नहीं हुआ १ शिव से बहुत नम्र होकर यह प्रण लिया कि २हे महादेव मुझे पुत्र दो तो मैं आपके मस्तक भेट करूं ।३५। ३ द्वितीया के चन्द्र समान बढा॥३६॥यह४प्रतिज्ञा राजा ने ली थी ५ है ॥ ३७ ॥ जहां पर ६ शीघ्र जाता हूं, वह आबू एक तौ अपने कुल की जन्मभूमि (चहुवान वहां पर ही उत्पन्न हुआ था इससे) है फिर वह प्रसिद्ध ७ तीर्थ भी है ॥ ३८ ॥ कामदार और ८ उमराओं को राजधानी में रखकर ९ आबू पर्वतराज पर गया वहां १० प्रथम महादेव का पूजन किया ११ स्तुतियोग्य१२उन तीर्थों के नाम ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)कहते हैं सो १३ हे रामसिंह एकाग्र होकर सुनो ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में देवदत्त का कुसुमा से विवाह करना,कन्नोज के राजा

वीतिहोत्रचराडासिवंशवर्णने देवदत्त ८२कुसुमा ८२।१ परिणयन कान्यकुब्जनरेशाऽऽनन्दध्वजपौराणिकवीततमःपूजनादिवितरण वर्द्धनचाहुवाणनरेन्द्रदामोदर८३सुगुणा८३।१पाणिग्रहणकाशीनाथ ८४भावती८४।१विवहनकुंतलराजश्रीधरमारणतत्तनयलीलाधर ८५श्रीधरसुतोदया ८५।१ पयमनकुमारधरणीधरो८६द्भवनकुंतल राजमदनेशचाहुवाणलीलाधर८५निपातनधरणीधर८६सुखमा ८६ १पाणिपीडन दश१०यज्ञानुष्ठानकुमाररमणेशो८७द्गमनतद्व्यकव ध्यशाम्बरसुतोदिता ८७।१ परिणयनचालुक्यकुमारपालजैनमतधार णाकृतशिवशीर्षपरिणासन्धदृष्टतनुजभगवद्दास८८मुखरमणेशाऽर्बुदम स्थानमेकोनषष्टितमो ५९ मयूखः ॥५९॥ आदितएकोत्तरशततमः

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

अर्बुद नाग वसिष्ठसौं, कहि अग्गैं गिरि लाय ॥
नाग१तीर्थ१निज नाम करि, प्रकट कह्यो मुद पाय ॥१॥
अग्गैं सुत विधवा द्विजा, जन्यौं गोतमी जाय ॥
भद्दव सित पंचमि दिवस, नागतिर्त्थ विच न्हाय ॥२॥

आनन्दध्वज का वीततम नामक चारण को पूजन करके दान से बढाना, चहुवाण राजा दामोदर का सुगुणा से विवाह करना, काशीनाथ का भावती से विवाह करना, कुन्तल के राजा श्रीधर को मार कर काशीनाथ के पुत्र लीलाधर का श्रीधर की सुता उदया से विवाह करना, कुमर धरनीधर का जन्म, कुन्तल देश के राजा मदसेन का चहुवाण लीलाधर को मारना, धरणीधर का सुखमा से विवाह करना, दश यज्ञ का अनुष्ठान करना, कुमर रमणेश का जन्म, उसका दुल्लह होकर राठोड़ सम्बर की पुत्री उदिता से विवाह करना, सोलंखी कुमारपाल का जैनमत धारण करना, महादेव के मस्तक भेट करने की प्रतिज्ञा करके भगवतदास पुत्र को देख कर रमणेश के आबू पर जाने का उनसठवां मयूख समाप्त हुआ।५९।और आदि से एकसौ एक मयूख हुए ॥१०१॥

१अर्बुद नामा सर्प ने नन्दी पर्वत को लाकर वसिष्ट से कहकर नागतीर्थ अपने नामसे प्रकट किया ॥ १ ॥ वहां एक विधवा और बूढी २ गोतमी नामक ब्राह्मणी ने ४ नागतीर्थ में भादवा ३ सुदि पंचमी के दिन स्नान करके

लगी मरन वह गोतमी, बिधवा गर्भ निहारि ॥
*नभबानी कहि तीर्थ फल, दिन्नी तब सु निवारि ॥३॥

पज्झटिका

मुनिबर बसिष्टको कुंड२÷जत्थ,करि श्राद्ध भूप किय×न्हान तत्थ
अग्गैं जँहँ नारद मुनिहु न्हाय,सबसौं सु अधिक बरन्यौं सुभाय४
देवी अरुंधती१जुत बसिष्ट२, पूजे नरेस तहँ धर्मनिष्ट ॥
पुनि भद्रकर्ण३न्हद३भूप पत्त,करि न्हान श्राद्ध करि दान दत्त२॥५॥
तत्थहु पवित्र सिवलिंग आहि,बिधिसौं किय अर्चित४ प्रनमि ताहि
हुव भद्रकर्ण सिवगन जु अग्ग, तानैं सु तीर्थ बिरच्यो सुमग्ग५६
सिवकै असुरनकै भयउ जुद्ध, वढि तत्थ लरयो यह गन प्रबुद्ध६।
जहँ असुचि नाम दानव चलाय,गुह१बीरभद्र२मुख७ दिय भजाय७
तहँ भद्रकर्ण मारयो सु दुष्ट, बर मंगि कह्यो ह्वै संभु तुष्ट ॥
गन आखिय मैं अर्बुद अगेस,प्रभुंलिंग सहित न्हद किय सुवेस८
गिरिजाजुत११ निबसहु१२ तहँ समत्थ, हर कहिय सदा मम बास तत्थ
जहँ माघ चउद्दसि१४असित१३ जाय, न्हावैं सु रहैं ममलोक आय९
केदार तीर्थ४पुनि न्हाय आप, गंगा१रु सरस्वति२ के मिलाप॥
किय अर्चन१तर्पन२श्राद्ध३कर्म, भूदेवन१४ अप्पिय१५ भूमि भर्म१६ ॥१०॥
रविबंसि भूप अजपाल अग्ग, पूछ्यो बासिष्ट सन कर्म मग्ग ॥
किहिंपुण्यजोरममराज्य१७आहिं, महिषी१सुत२आदिहुहुकममांहिं१८११
पुनि कहिय सूद्र हो अग्ग राय, रानीहु सबर्णा ही सभाय॥
तुम दुव रहि छुधित१९ दुर्भिक्षकाल,भुव भ्रमत गये अर्बुद२० बिहाल१२

पुत्र जना ॥ २ ॥ * आकाश वाणी न ॥ ३ ॥ ÷ जहां पर × स्नान ॥ ४ ॥ १ पहुंचा २ दिया ॥ ५ ॥ ३ है ४ पूजित किया ५ श्रेष्ट मार्ग से ॥ ६ ॥ ६ पंडित ७ आदि ॥ ७ ॥ ८ शिव ने प्रसन्न होकर कहा ९ अर्बुद नामा पर्वतराज पर १० आके लिंग सहित एक द्रह (जलाशय) किया है ॥ ८ ॥ ११ पार्वती सहित वहां १२ वास करो १३ माघ वदि चवदस के दिन जाकर ॥ ९ ॥ १४ ब्राह्मणों को १५ दिया १६ सुवर्ण ॥ १० ॥ किस पुण्य के जोर से मुझे यह राज्य मिला १७ है १८ राणी पुत्र आदि सब मेरे हुकुम में हैं ॥ ११ ॥ बसिष्ट ने कहा कि हेराजा तू पहिले शूद्र था १९ भूखे २० आबू पर गये ॥ १२ ॥

जहँ कंजसरोवर[1] लखि प्रवीन, तुम न्हान१तर्पन२रु पान३कीन ॥
विक्रय[2] हित पंकज[3] तोरि राज, आने तुम दंपति[4] असन[5] काज१३
जब वारिजात[6] निवसथ[7] बिके न, भूखे तब सोये तुम धरेन[8] ॥
निसमाँहिं ईस केदार थान, जान्यौँ तुम जागर[9]१वाद्य२गान३ ।१४।
सिवरत्ति[10] समय हो वह समत्थ, लै कंज गये तब तुमहु तत्थ॥
कोउ कंज लग्यो मगमाँहिं लैन,कहि तुमहि तीन३पल रजत[11] देन१५
तिय कहिय लेहु पति अब न तार[12],उपवास भयो सहजहि सुढार[13] ॥
सिव सीस कंज दैहैं चढाय, उपवास एह नहि विफल जाय।१६।
सुहि मन्नि रु पूजे तव गिरीस[14], तिहिं रत्ति जगे दुव रहे महीस ॥
वह पुण्य पाय हुव भूप आय,तव तिय दसार्ण नृपजा[15] सुकाय१७
अजपाल सु सुहि अर्बुदहु पत्त[16], किन्नौं पुनि सुहि[17] व्रत भक्तिरत्त[18]॥
अभिसिक्क[19] पुत्र सिर करि नृपाल,तजि राज्य वस्यो तहँ सर्बकाल१८
व्रत कृष्णचतुर्दसि१४माघमास, यह सद्धि लहत सिवलोक बास।
तहँ चाहुवान रमनेस८७जाय, सब विधि उपेत[20] सद्ध्यो सुभाय।१९
अग्गैं जजाति पूछे पुलस्त्य, बरन्यौं तिन अर्बुद पुण्य पस्त्य[21] ॥
गंगा१सरस्वति२संग रूप, केदार४तत्थ सुनि कहिय भूप ॥ २० ॥
केदार सुनत हिमैवान माँहिं,तातैंहि[22] कढी गंगाहु आँहिं॥
त्यौंहीं तजि प्लक्षद्वीप थान, निकसी सरस्वती है सुजान॥ २१ ॥

१ कमलों का तालाब देख कर २ बेचने के लिये ३ कमल तोड़ कर तुम ४ स्त्री पुरुष ५ भोजन के लिये लाये ॥ १३ ॥ जब वे ६ कमल ७ ग्राम में नहीं बिके तब ८ हे राजा तुम भूखे सो रहे ९ जागरण जाना ॥ १४ ॥ वह १० शिवरात्रि का समय था ११ तीन पल चांदी देकर वे कमल तुमसे कोई लेनेलगा ॥ १५ ॥१२ अब चांदी मत लो १३ सहज में ही श्रेष्ठ उपवास होगया है ॥ १६ ॥ १४ महादेव का पूजन किया १५ तेरी स्त्री सुन्दर शरीर वाली दशार्ण देश के राजा की पुत्री हुई ॥ १७ ॥ १६ जाकर १७ वही शिवरात्रि का व्रत किया १८ भक्ति में रत होकर १९ पुत्र के अभिषेक करके ॥ १८ ॥ २० सब विधि सहित ॥ १९ ॥ आगे ययाति राजा ने पुलस्त्य मुनि से पूछा उन्होंने आबू को पुण्य का २१ घर वर्णन किया ॥ २० ॥ २२ राजा ने कहा कि केदार तो हिमालय पर्वत में है ॥ २१ ॥

गंगा तु पुब्बसायर पइट्ठ, दूजी२हुव पच्छिमसिंधु निट्ठ ॥
केदार सहित ए सरित दोय३, अर्बुद किम निवसतं इक्क होय।२२।
बोले पुलस्त्य इम समयपाय, ब्रह्मादि जुरे सब मेरु आय ॥
गंगा१प्रयाग२मुख तीर्थ सर्व, धरि देह गये महिमा अखर्व ॥२३॥
मघवाँ विरंचिसौं जोरि हत्थ, पूछे समस्त जुगधर्म सत्थ ॥
विधि कहिय जुगत्रय३पुराय बास,
कलिमाँहिं कह्यो सब तीर्थ नास ॥ २४ ॥
यह सुनत कंपि तीरथ असेस बुल्ले अगम्य कलिकै जु देस ॥
सो देहु अप्प हमकौं पसस्त, कलिमाँहि तहाँ रहिहैं समस्त।२५।
अर्बुद तब अक्खिय कंजजात,तँहँ सब स्वअंसं करि रहहु तात॥
कलिको बल अर्बुदपर चलै न,वह करहु जाय सब तीर्थ अैनं।२६।
आश्रय सु पाय तीरथ असेस, तबसौंहि रहत अर्बुद नगेसं ॥
गंगा१रु सरस्वति२इहिं निदान,नहिं द्वैहि उहाँ सब तीर्थ थान।२७।
संकणकनाम हुव बिप्र अग्ग, अर्बुद तप सद्ध्यो जिहिं उदग्ग ॥
चुभि दर्भ इक्क१दिन कर प्रवेस,सौ कर सु कढ्यो नहि रुधिर लेस।२८
सो देखत अप्पहिं जानि सिद्ध, नच्चन लगो सु मुनि मोदबिद्ध॥
तपके प्रभाव तस संग एस, अवनीहु लगी नच्चन असेस ॥२९॥
पठये तब देवन सिव पसस्त,तिन भस्म निकास्यो खनि स्वहस्त॥

गंगा तौ १ पूर्व समुद्र में पैठी और सरस्वती नदी पश्चिम समुद्र म २ नाश हुई ३ ये दोनों नदियें शामिल होकर आबू पर कैसे निवास करती हैं ४आदि सब तीर्थ५इन्द्र ने६ब्रह्मा से हाथ जोड़कर७सब युगों के धर्म पूछे८ सम्पूर्ण तीर्थ पूजकर९जिस देश में कलियुग नहीं जासके तिस देश को हमें बताओ वहां जाकर हम सब कलियुग में रहेंगे१०ब्रह्मा ने आबू को बताया कि वहां तुम सब११अपने अपने अंशों से जाकर रहो१२उसको सब तीर्थ अपना घर बनाओ ॥२६॥१३आबू पर्वतराज पर रहते हैं१४इस कारण से गंगा और सरस्वती वहां पर हैं१५ये दोनों ही नहीं किन्तु सभी तीर्थों का वहां स्थान है ॥२७॥१६उदग्र तप साधा उसके हाथ में एक दिन डाभ चुभ गया१७उस हाथ से लेश मात्र भी रुधिर नहीं निकला ॥ २८ ॥१८उसके साथ सम्पूर्ण भूमि भी नचने लगी १९ देवताओं ने शिव को मंगल(शुभ) करने को

तिहिं देखि भयो लज्जित सु बिप्र,सिव जानि परयो तिन पयन छिप्र३०
सिव कहिय न नच्चहु इष्ट लेहु, मुनि कहिय ईस बर एह देहु ॥
अर्बुदगँ तीर्थ केदार आय, गंगा१सरस्वती२संग न्हाय ॥ ३१ ॥
मखँ राजसूय१हयमेध२पुराय, पावै सु मनुज गुन अमित पुराय ॥
संकर तथास्तु कहि भूप राम, करि तीर्थ महाफल तब जगाम॥३२॥
तँहँ न्हाय भूप बिधिजुत प्रबीन, पुनि कोटीस्वर५सिव दरस कीन॥
द्विज कोटि१००००००अग्ग दक्खिन निकेतं ॥
आये अचलेस्वर दरस हेत ॥ ३३ ॥
मैं पुब्ब लखों लहि सिव प्रसाद, इम सबन परस्पर हुव बिबाद ॥
प्रत्येकँ भक्ति लखि तब बिसेस, सबके समक्षँ प्रकटे महेस॥३४॥
बर दैन लगे जब मुनिन रुद्र, उन कहिय सुनहु करुना समुद्र ॥
तव कोटि रूप यँहँ एकलिंग, प्रकटहु मित्रीकृत ऐंकपिंग ॥ ३५ ॥
जाके लखैंहि मनुजन सु पुराय,है तव दरसनफल कोटि पुराय ॥
सिव कहि तथास्तु बनि लिंगरूप, स्फुट हुव कोटीस्वरनाम भूप३६
तिन्ह पुज्जि रूप तीर्थ६सु जगामँ, सौभाग्य१रूप२देत जु सुधाम ॥
अग्गैं इक सूद्री रूपहीन, तरुफल निमित्त तहँ गमन कीन ॥३७॥
सो भ्रमत माघ सित तीज३काल, गिरि निर्झर माँहिं गिरी बिहाल
तँहँ गिरतमात्र हुव दिव्य देह, सुरराज लखी जँहँ आय एह ॥३८॥

भेजे उन्होंने तप करताहुआ वह ब्राह्मण भस्मी में दट गया था जिसको अपने हाथ से खोदकर निकाला १ शीघ्र ॥ ३० ॥ २ तुझको जो वांछित होवे सो ले ३ आबू पर गये हुए ॥ ३१ ॥ राजसूय ४ यज्ञ और ५ अश्वमेध का पुराय ६ वह मनुष्य पावे ७ हे रावराजा रामसिंह ! शिव उसको ८ ऐसा ही होवे यह कह कर ९ गये ॥ ३२ ॥ १० दक्षिण दिशा के स्थान में ॥ ३३ ॥ उन ब्राह्मणों में ११ मैं पहिले देखूं मैं पहिले देखूं यह विवाद पड़ा उन सबकी१२ एक एक की भक्ति देखकर सबके १३ सामने महादेव प्रकट हुए ॥ ३४ ॥ १४ हे कुबेर से १५ मित्रता करनेवाले आपके करोड़ स्वरूप इस एक ही लिंग में प्रकट करो ॥ ३५ ॥१६स्पष्ट ॥ ३६ ॥१७गया १८वृक्षों के फल लेने को वहां गई ॥ ३७ ॥१९माघ सुदि तीज को विव्हल होकर पर्वत के२०झरने में गिरगई २१वहां गिरते ही दिव्य शरीरवाली होगई जिसको

सब हेतु पुच्छि दै अंगसंग[1], वर लेहु कह्यो जो मन उमंग ॥
तिहिंकहियइहाँइहिंदिनजुन्हाय,सुरप्रिय[2]सुहोयलहिदिव्यकाय ।३९।
लैमोहि चलहु बर अपर[3] एस, लैगो तथास्तु कहि तिहिं सुरेस ॥
अर्बुदसौं इम वपु१रूप२थ्रेय,अच्छरि भई सु बपु नामधेय ॥ ४० ॥
अद्यावधि तिहिंदिन न्हान तत्थ, सो साँझ आत सुररमनि सत्थ ॥
तँहँ रूपतीर्थ ढिग पुव्व देस, अति दिग्घ उपलमय है गनेस१ ॥४१॥
इक तिलर्क रुक्ख१गजमुख समीप,इहिं तल अथाह इक बिल१महीप
जब स्वर्ग गयो बलि असुरराय, सुर१संक्र२दुरे जित तित पलाय१४२
तब अदिति जाय तिहिं बिवरमज्झ,तप करतभई हरिहित असज्ज[11]
हरि तुष्ट[12] बसे तस गर्भ आय, लिय जन्म माघसित तीज३पाय४३
तिहिं कारन इतरन[13]तैं बिसेस, हुव रूपतीर्थ६ अतिपुराय देस ॥
सित[14]स्वच्छअदितितपविवर[15]माँहिं,इकसंखरूपवरउपल[16]१आँहिं ।४४।
जल जास पानकरि तिलक जुत्त, बंझाँहु[17] वृद्ध पावत सुपुत्त ॥
यह रूपतीर्थ६ महिमा अमान[18], रमनेस करिय तँहँ न्हान दान ।४५।
पुनि अंबरीप आश्रम७ पधारि, किय बिधि समस्त तहँ पुरायकारि
जँहँ अंबरीस इक विष्णु तर्ष[19],अनसन[20]तपसाद्धियअयुत१००००बर्ष४६
व्है इंद[21] लगे वर दैन विष्णु,सो नृप लयो न तिन्ह जानि जिष्णु[22] ॥
खिजि इंद तबहि लिय बज्र हत्थ,तदपि सु डरयो न हरिभक्त तत्थ४७

इन्द्र ने आकर देखा ॥ ३८ ॥ १सब कारण पूछकर उससे आलिंगन करके कहा २ देवताओं को प्रिय ॥ ३९ ॥ ३दूसरा वह वपु४नामक अप्सरा हुई ॥४०॥५ अब तक ६ देवताओं की स्त्रियों के साथ संध्या को साथ आती है ७ पत्थर का बनाहुआ गणेश है ॥ ४१ ॥ ८ छिन्नरुह (वृक्ष विशेष) ९ इन्द्र १० भागकर उस विवर में छिपे थे ॥ ४२ ॥ ११ असह्य १२ विष्णु ने प्रसन्न होकर अदिति के गर्भ में वास किया और माघ सुदि तीज को जन्म लिया ॥ ४३ ॥ इसकारण से वह १३ अन्य तीर्थों से विशेष है अदिति ने जिस १५विवर में तप किया था वहां स्वच्छ और १४ श्वेत १६पत्थर का शंख है ॥ ४४ ॥ १७बांझ और बूढी स्त्री भी पुत्र पाती है १८ अमाप ॥ ४५ ॥ विष्णु के दर्शनों की १९इच्छावाले ने २०निराहार ॥ ४६ ॥ विष्णु २१इन्द्र का स्वरूप करके वर देने लगे २२उनको इन्द्र जानकर ॥ ४७ ॥

निजरूप गह्यो जब श्रीनिवास[1], ऐरावत नागहु गरुड आस[2] ॥
बंदनकरि चरनन नत बिसेस, तब सांख्य[3]१ जोग२ मंगे नरेस ४८
सबकाजक्रियाजोग३हुतृतीय३,पुनिहरिनिवास४आश्रमस्वकीय ॥
जँहँ बिष्णु बँसे दै इष्ट च्यारि[4]४, तँहँ भूप सबिधिपूजे मुरारि ॥४९॥
सिद्धेश्वर संकर८ नृप बहोरि, जाय रु किय अर्चित[5] पानि जोरि॥
अग्गैं बिश्वाबसुनाम सिद्ध, सिव अर्थ घोर तप किय प्रसिद्ध ॥५०॥
व्है तुष्ट[6] कहिय हर लेहु इष्ट, बुल्ल्यो वह मैं किय लिंग सिष्ट[7] ॥
वांछित बिचारि नर छुवहिं याहि, तुम व्है प्रसन्न सुहि देहु ताहि५१
अंगीकृत[8] किय तब अंधकारि, पुज्जिय सु लिंग नृप तँहँ पधारि ॥
सुक्रेश्वर९ अर्चन बहुरि कीन, जँहँ मृतसंजीवनि[10] सुक्र लीन ।५२।
रन अग्ग सुरासुर हुव दुरूहँ[11], जँहँ सुरन हनैं बहु असुर जूहँ[12] ॥
उसनाँ[13] तब अर्बुदअद्रि[14] आय, सिवलिंग तहाँ सुंदर बनाय ॥५३॥
तिहिं नित्य पुज्जि किय तप दुरंत[15],आये सिव हायनँ[16] सहँस१०००अंत॥
परि पयन सुक्र किय अरज एहु, संजीवनि बिद्या दुलभ देहु ।५४।
मम रचित लिंग पूजैं सु एस, संकल्प सिद्ध व्है तस असेसँ[17] ॥
अरु कुंड यहै सुचि[18] सलिलवानँ[19],नर व्है अपाप करि अत्र न्हान५५
दै सोहि ईस दिय बपु छिपाय[20], नृप किय तँहँ अर्चन१न्हान२जाय
पुनिगयमणिकर्णिक१०तीर्थतत्थ,मुनिबालखिल्ल्यकृतकुंडजत्थ[21]५६
अग्गैं पुलिंद तिय इक आस, मणिकर्णिकाहि अभिधान[22] जास.

१विष्णु ने जब अपना रूप धारण किया और ऐरावत भी गरुड़२होगया तब३ ज्ञान।४८।कर्मकांड में वृत्ति का लगा रहना और विष्णु के घर में अपना निवास करना ये चार वर मांगे सो देकर विष्णु ने भी वहीं (आबू पर)४ वास किया ॥ ४९ ॥ ५ पूजन किया हाथ जोड़कर ॥ ५० ॥ ६ प्रसन्न ७ श्रेष्ट ॥५१॥ ८ महादेव ने ८ स्वीकार किया१०जहां पर शुक्राचार्य ने मृतसंजीवनी विद्या पाई थी ॥ ५२ ॥ ११कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १२ असुरों के समूह१३शुक्राचार्य १४ आबू पर्वत पर आकर ॥५३॥ १५ दूर है अंत जिसका ऐसा व्रत किया १६ हजार वर्ष पीछे ॥ ५४ ॥ १७सब १८ पवित्र १९ जलवाले में स्नान करके ॥ ५५ ॥ २० अन्तर्धान होगये २१ बालखिल्य नामक मुनियों का कियाहुआ ॥ ५६ ॥ २२ जिसका नाम मणिकर्णिका था

कुटिला विरूप आकृति कराल, वनभ्रमत तृसित जल हित विहाल ॥५७॥
मध्यान्ह समय रविग्रहन होत, तिहिँ कुंड पैठि दिय सलिलगोत[1] ॥
ततकाल भई अतिदिव्यदेह, आई जलबाहिर निकसि एह ॥५८॥
तहँ बालखिल्ल्य छअयुत ६०००० मुनीस, आराधततप करि लोकईस[2] ॥
तसँ[3] पतिहु तदनु[4] बालक[5] उपेत, आयो पुलिंद वह विकल चेत ५९
पुच्छी पुलिंद बरबपु[6] भई सु, मम तिय इत आई कित गई सु ॥
सो सुनत कह्यो इहिँ कुंड न्हाय, मैं नाथ लयो यह रूप पाय ॥६०॥
जल ससुत[7] धस्यो यह सुनत जावँ[8], रवि तावँ तज्यो तमग्रस्तभाव[9] ॥
सुंदर भयो न ताको सरीर, मरिगो पुलिंद तब व्है अधीर ॥६१॥
मणिकर्णिका सु लखि चिति[10] बनाय, जरिबेहि लगी तस संग जाय
तब मुनिन यहै बरजी निहोरि, सु सती रही न पतिसंग छोरि ६२
तब मुनिन तास करि दिव्यकाय, दिन्नौं पुलिंद तपबल जिवाय ॥
किन्नौं तस पुत्तहु दिव्यदेह, आक्खिय पुलिंद प्रति वचन एह ॥६३॥
तू अग्ग विस्वजित नाम भूप, रमनी१ सुत१ जुत[11] हो दिव्यरूप ॥
वासर[12] इक१ तान३ हि चढि विमान, दिवँ[13] जानलगे तुम देहवान[14] ६४
मुनि संख[16] मिले मगविच विरत्त[15], तिन्ह लंघि यान तव अग्गपत्त[17] ॥
परि अबहि नारि सुत सहित पाप, सठ व्याध होहु दिय संख साप ६५
तैं कहिय कहहु उद्धार काल, मुनि कहिय भ्रमत बनबन विहाल
मारिहै तू अर्बुद आद्रि जाय, पुनि बालखिल्ल्य देहैं जिवाय ॥६६॥

---

१ जल में गोता लगाया ॥ ५८ ॥ २ विष्णु भगवान् की आराधना करते हैं ३ मणिकर्णिका का पति भी ४ जिस पीछे ५ बालक सहित आया ॥ ५९ ॥ ६ श्रेष्ठ शरीरवाली होगई थी जिससे पूछा ॥ ६० ॥ ७ पुत्र सहित ८ जब यह भीतर घुसा ९ तब सूर्यग्रहण मिटचुका था इसकारण से पुलिन्द का शरीर सुन्दर नहीं हुआ ॥ ६१ ॥ १० चिता बनाकर ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ मुनियों ने पुलिन्द से कहा कि ११ स्त्री और पुत्र सहित दिव्य रूपवाले थे १२ एक दिन १३ स्वर्ग जाने लगे १४ देह सहित [स्थूल शरीर से स्वर्ग में जाना दुर्लभ माना जाता है] ॥ ६४ ॥ १५ विरक्त १६ शंख नामक मुनि मार्ग में मिले उनको लांघकर तू आगे १७ गया ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

जब लेहु साप उद्धार जानि, बरनी सु बालखिल्ल्यन बखानि ॥
बर दैनलगे मणिकर्णिकाहिं, बुल्ली सती सु यह कुंड आँहिं ६७
सो ख्यात होय मम नाम धारि, बर मुनिन सोहि दिन्नों बिचारि
आयो बिमान इहिं बीच तत्थ, लैगो पुलिंद१सुत२नारि३सत्थ६८
बिख्यात तीर्थ मणिकर्णिका१०सु,कुरुक्षेत्र हिंतु फल त्रि३गुन तासु॥
पुनि पंगुतीर्थ११ रमनेस पत्त, करि पान१न्हान२बहुदान३ तत्त६९
हुव इक द्विज भार्गव पँगु दीन, बंधुन तज्यो सु कहि सत्वहीन॥
तब जाय विप्र अर्बुद अगेसँ,सिवलिंग थप्पि किय तप बिसेस७०
नित्यहि सिव पूजन निरँत एह, आहार लेत छट्ठेह अनेह ॥
सिव हुव प्रसन्न गिरिजा समेत,अक्खिय द्विज मंगहु हित उपेत७१
द्विज कहिय रहों यँह१ हेतु पाय२,मम नाम तीर्थ यह प्रकट जाय
स्वीकृत किय संकर विप्र बानि,रमनेस पुराय किय तत्थ आनि७२
पुनि नर्कतीर्थ१२ पहुँच्यो धरेसँ, अग्गैं जँह चित्रांगद नरेस ॥
अति मलिन दुष्ट खेलत सिकार,हेर्‌यो इक निर्झर बिसद बार७३
प्रविस्यो सु पिपासा बिकल तत्थ, ततकाल नर्कँ पकर्‌यो समत्थ
जमदूत गये लै मरत जाहि, जमराज कह्यो दूतं तजहु याहि।७४।
मैं तप किय अर्बुद द्रोनि माँहिं,याको तिहिं निर्झर मरन आँहिं॥
मैं नरकनाथ वह तीर्थ कीन,इम कहि छुराय जम ताहि दीन।७५।
सो गो बिमानचढि सुरनथान, चहुवान तत्थ किय न्हान१दान२॥
पहुँच्यो बराह न्हद१३बहुरि राय,जहँ नर कदापि दुर्गति न जाय।७६।

---

१ यह कुंड है सो।६७।मेरे नाम से२प्रसिद्ध होवे।६८।३कुरुक्षेत्र से जिसका तिगुना फल है।६९।४पांगला[चरणों से हीन]५पराक्रम हीन कहकर६आबू पर्वतराज पर॥७०॥७नियुक्त८समय[यहां लक्षणा से छठे दिन जानना चाहिये]९पार्वती सहित १० हित सहित॥ ७१ ॥ ११ कारण पाकर १२ स्वीकार ॥ ७२ ॥ १३ राजा रमनेस चहुवाण १४ झरना १५ स्वच्छ जल का॥ ७३ ॥ १६ प्यास से व्याकुल हुआ १७ मगर ने उसको तुरत पकड़ लिया १८ शीघ्र छोड़दे ॥ ७४ ॥ आबू की १९ खाड़ी (दरार) में मैंने तप किया था उसी झरने में इसका मरण हुआ है ॥ ७५ ॥ २० वहां पर मनुष्य कभी दुर्गति को नहीं

आनी बराह [2]अवनी उठाय,तिहिँ थप्पि कह्यो रहि अचल काय॥
भू[3] कहिय रहहु मम पिट्ठि नाह[4], तिय नेह तबहि बुल्ले बराह ।७७।
अर्बुदगिरि है इक सर[5] सुढार, बसिहौं तहाँहि तव कथितकार[6] ॥
इम कहि रु बसे अर्बुद बराह,अति पुराय भयो वह न्हद अथाह७८
तहँ सद्धि भूप बेदोक्त राह, पहुँच्यो प्रभास तीर्थ१४हु सचाह ॥
सहि[7] दच्छ प्रजापति दत्त[8] साप,ससि जहँ प्रभा[9] लही सिव प्रताप।७९।
अग्गैँ बनि दुल्लह[10] रजनिईस, व्याही दच्छसुता सत्तबीस२७ ॥
ससि तदपि[11] रोहिनीसौँ प्रसन्न,पितु सरन सोति तब खिल२६प्रपन्न[12]८०
सुनि दच्छ कुपित दिय घोर साप, तू चंद्र लेहु खयरोग ताप ॥
तब विकल चंद्र लहि घोर खैन[13],सद्धिय तप अर्बुदअद्रि अैन[14]।८१।
तहँ जाहि अयुत१००००हायन[15] बिताय, ईसान तुष्ट[16] दिय दरस आय॥
किय इंदु अरज बर दैन काल, जगदीस व्याधि[17] मेटहु जटाल[18]८२
बलि[19] तीर्थ यहै मम तप बिपाप, न्हद ख्यात होहु अघहर दुराप[20]॥
सिवकहियतोहिखयदियजुदच्छ[21], पच्छैसुघटिजावहुबढहुपच्छ[22]॥८३॥
तव अंग प्रभा[23] हुव अत्त तात, यह होहु प्रभासहि खेत्र ख्यात ॥
लहि चंद्रग्रहन१पुनि चंद्रबार२, यह श्राद्ध गयाफल दैनहार॥८४॥
सिव गुप्त भये करि इम निदेस, तहँ जाय कृत्य सब किय नरेस॥
पुंड्रोदक१५तीरथ बहुरि पत्त, किय पान१न्हान२बहुदान३तत्त।८५।

जाते ॥ ७६॥ २भूमि को ३ भूमि ने बराह से कहा कि४ हे पति मेरी पीठ पर रहो ॥ ७७ ॥ ५ सुन्दर तालाव ६ तेरा कहा करनेवाला ॥ ७८ ॥ दक्ष प्रजापति का ७दियाहुआ श्राप सहन करके८चन्द्रमा ने पीछी अपनी९कान्ति शिव के प्रताप से ली ॥ ७९ ॥ १० चन्द्रमा ने दुल्लह बनकर दक्ष की सत्ताईस पुत्रियां विवाही थीं११तोभी चन्द्रमा रोहिणी से ही प्रसन्न था तब बाकी की छब्बीस ही अपने पिता के शरण १२ आईं ॥ ८० ॥ १३ क्षय रोग लेकर आबू पर्वत के १४ स्थान पर तप साधा ॥ ८१ ॥ दश हजार १५ वर्ष बिताकर शिव ने १६ प्रसन्न होकर १८ हे जटाधारी जगदीश यह १७ रोग मेटो ॥ ८२ ॥ १९ पुनि२०दुर्लभ२१दक्ष ने जो क्षयरोग दिया है वह एक२२ पक्ष में घट जावेगा और एक पक्ष में बढेगा ॥ ८३ ॥ तेरे शरीर की२३ कान्ति यहां पर हुई है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

पुंड्रोदक द्विज हुव पूर्बकाल, आई न ताहि विद्या नृपाल ॥
गुरु जाहि पढावत हारिहारि, बालिस[1] कहि दिन्नो द्रुत[2] बिडारि[3]८६
अर्बुदगिरि दुर्मन तबहि आय, जरिबे लग्यो सु पावक[4] जराय ॥
सो आय गिरा[5] कह्यो सनेह, दीनों बर पंडित होहु एह ॥ ८७ ॥
तीर्थहु यह धारहु नाम तोर, जग बिदित मिटावहु पापजोर ॥
सब कृत्य साद्धि रमनेस तत्थ, पहुँच्यो श्रीमाता१६देवि जत्थ ॥८८।
कृतजुगमैं बाष्कलि[6] असुरराय, दुर्जेय[7] भयो सिव बर सहाय ॥
निर्जर[8] समस्त दीनैं निकारि, आये ते अर्बुद[9] अभय धारि॥ ८९ ॥
खनि गुप्त बिवर[10] तप तत्र कीन, सब हुव श्रीमाता भक्ति लीन ॥
वह विवर कहावत देवखात, प्रभु करत महापापन निपात[11]॥९०॥
तप सहँस१०००अब्द[12] किय सुरन तत्थ, श्रीमाता प्रकटी तब समत्थ
पठवाय दूत सुनि सुरन[13] पीर, बुल्ल्यो तहँ बाष्कलि[14] लरन बीर९१
श्रीमाता लखतहि जड भयो सु,दल[15] इतर जित्ति देवन लयो सु॥
सिव बर प्रभाव न हन्यो सु दुष्ट, देवी जड कीनों पापपुष्ट ॥९२॥
पुनि सुरन अरज किय यह सदप्प[16],न डिगैं इम अर्बुद रहहु अप्प॥
जगदंब कह्यो मोछत डिगै न,तब सुरन जाय किय स्वस्व[17] अैन९३
इत अब अघवान१रु पुण्यवान२, जन सर्ब लगे अर्बुदहि जान ॥
श्रीमाता दरसन प्रकट पाय, सब बसनलगे निर्जरनिकाय[19]॥९४॥

१मूर्ख कहकर२शीघ्र३निकाल दिया४अग्नि जलाकर५सरस्वती ने आकर उस को अग्नि से निकाला.रमनेस चहुवाण ने वहां सब कार्य करके सत्ययुग में ६वाष्कलि नामक असुरों का राजा७शिव के वर के प्रताप से किसीसे नहीं जीतने में आवे ऐसा हुआ जिसने स्वर्ग से सब८देवताओं को निकाल दिये वे ९ आबू पर आये ॥ ८९ ॥ गुप्त १० गुफा खोदकर ११ बडे पापों का नाश करता है ॥ ९० ॥ देवताओं ने तहां हजार १२ वर्ष तप किया१३ देवताओं की पीड़ा सुनकर दूत भेजकर१४वीर बाष्कलि दैत्य को लड़ने को बुलाया ॥ ९१ ॥ १५ दूसरी सेना को देवताओं ने जीत ली ॥ ९२ ॥१६घमंड सहित होकर यहां से नहीं डिग सके इसप्रकार आप आबू पर रहो१७ देवताओं ने अपने घर पीछे बनाये ॥ ९३ ॥१८पापी और पुण्यवान् सभी आबू पर जानेलगे १९ देवताओं का समुदाय बसने लगा ॥९४॥

मिटितीर्थन१नरकन२केर मग्ग, सुर इष्ट[1] थके मख सुख समग्ग॥
अमरन[2] तब अर्बुद बहुरि आय, देवी प्रति बिन्नति किय हिताय[3]।९५।
लखि तोहि सबहि सुरलोक जात,अब उचित इहाँ रहिबो न मात॥
ऐसो उपाय करि चलहु आप, जिम डिगसकै न बाष्कलि सपाप
सुनि तत्थ पादुका[4] थप्पि स्वीय,जड रक्खि तिमहि बाष्कलि बलीय
देवी पयानकिय स्वीय लोक,किय कृत्य भूप[6] तत्थहु विसोक।९७।
पुनि सुक्क तीर्थ१७चहुवान जाय,किय न्हान दान हिय भक्ति लाय॥
अग्गैं इक समिल रजक[8] दच्छ[7], लायो नृप वस्त्रन करन स्वच्छ॥९८॥
इक[9] सकुनि गयो लै तिन्ह उठाय, डारे सब नीलीकुंड[10] जाय॥
रजकहु[11] लगि सत्वर[12] पिट्ठि तास,नीलीगत देखे मलिन बास[13]।९९।
तिन्ह लै रु आय भरि खरन[14] भार,सकुटुंब सु भज्जन[15] भो तयार॥
इक कीर सुता[16] तहँ कहिय आय,क्यों भजहु सुनहु इनको उपाय १००
ममभ्रात१मैं२रु मम जनक[17]३मात४,देखहु तुम बपु करि हैं वदात[18]॥
अर्बुद इक पल्वल[19] जल उपेत[20], सब बस्तु होत जिहिं संग स्वेत१०१
धावक[21] सुनि तिहिं जल वस्त्र धोय, हुलस्यो[22] करि स्वच्छ सु अभय होय
नृप अग्ग निवेदे कहि निदान[23],प्रत्यक्ष जाय नृप लिय प्रमान।१०२।
दै सुतहिं राज्य तप साधि तत्थ, सकुटुंब गयो दिवि[24] वह समत्थ॥

इससे तीर्थों के और नरकों के मार्ग मिटगये और जब देवताओं का १प्रिय यज्ञ का सुख था सो मिटने लगा तब२देवताओं ने आकर३हित के अर्थ विनती की५अपनी ४ पावड़ियें स्थापन करके बलवान् वाष्कालि को जड़ रखकर देवी ने अपने लोक में गमन किया वहां पर ६ राजा रमनेस चहुवाण ने कृत्य किया ॥ ९७ ॥ ७ चतुर ८ धोबी हुआ सो ॥ ९८ ॥ एक ९ पक्षी उन वस्त्रों को लेगया सबको१०नील के कुंड में जाकर डालादिये११धोबी ने भी १२शीघ्र उस पक्षी के पीछे लगकर नील में गयेहुए१३वस्त्रों को मलीन देखे ॥ ९९ ॥१४गधों पर भरकर१५भागने को तैयार हुआ१६एक धीवर की पुत्री ने कहा ॥ १०० ॥१७पिता१८उज्ज्वल शरीरवाले हैं १९ तालाव २० जल सहित है ॥ १० ॥ २१ धोवी ने सुनकर २२ हर्षयुक्त हुआ २३ वस्त्र उज्ज्वल होने का कारण कहकर वस्त्र राजा के भेट किये और राजा ने भी जाकर प्रत्यक्ष प्रमाण लिया ॥ १०२ ॥ २४ स्वर्ग में गया ॥ १०३ ॥

तहँ न्हाय श्राद्ध करि नृप प्रवीन, कात्यायनि देवी१८दरस कीन १०३
जहँ सुंभ पराजित[1] सुरन अग्ग, दिन्नौ बर दुर्गाहित उदग्ग[2] ॥
हनि असुर गुफा बिच किन्न बास, आराधन किय रमनेस तास१०४
तदनंतर[3] कपिलातीर्थ१९जाय, सद्धी नरेस सब बिधि सुभाय ॥
अग्गैं हुव सुप्रभनाम भूप, अविरत[4] मृगयारत[5] व्याध रूप ॥१०५॥
वाके मन इतर[6] न भोग इष्ट[7], दइतां[8] इक हिंसा लहि कुदिष्ट[9] ॥
पापी प्रचंड धनु बान धार, सो कबहु गयो अर्बुद सिकार॥१०६॥
निजसिसुहिं पिवावत पय नरेस[10], देखी इक एनी[11] सानुदेस[12] ॥
करि ताहि बिद्ध खल पलल[13] कज्ज, सिसुपर[14] बहोरि किय बानसज्ज१०७
परि भुम्मि मृगी वह तजत प्रान, बुल्ली लखि सिसुपर जुरत बान॥
छत्राधम[15] तू सिर धरत छत्र, यह कोन धर्म सिसु हनन अत्र॥१०८॥
अर्भक[16] तृन खात न पयअधीन, है अबहि मरयो यह मो बिहीन ॥
ताकि दीनहिं मारत दुष्ट तोहु, हत्यामय निर्दय व्याघ्र होहु॥१०९॥
यह सुनत परयो तस पयन आय, बुल्ल्यो सु देहु अवधि[17] हु बताय ॥
वह बुल्ली कपिला धेनु अत्थ[18], मिलिहैं तब व्हैहैं नृप समत्थ॥११०॥
एनी[19] सु गई मरि आकिख एह, हुत व्याघ्र भयो नृप तजि स्वदेह ॥
खल गो अनीक[20] अपनौहि खाय, अवसेस[21] बचे निज दंग[22] आय१११
सो रहत पसुन खावत सदाहि, इकदिन मिली सु कपिलाहि याहि

१ शुंभासुर से हारे हुए देवताओं ने दुर्गा को २ उदग्र वर दिया था ॥१०४॥ ३ जिस पीछे ४ निरन्तर ५ शिकार में रत ॥ १०५ ॥ उसके मन में ६ दूसरा कोई भोग ७ प्रिय नहीं था ८ खोटे भाग्य से एक हिंसा ही ९ प्रिय थी ॥ १०६ ॥ १० उस राजा ने १२ पर्वत के शिखर पर बच्चे को दूध पिलाती हुई एक ११ हरिणी को देखी १३ मांस के लिये उसको बाण से बेधकर उसके १४ बच्चे पर बाण सजित किया ॥ १०७ ॥ १५ हे अधम क्षत्रिय ॥ १०८ ॥ १६ यह बच्चा तृण नहीं खाता केवल दूध ही पीता है वह मेरे बिना अब भी मरा हुआ ही है ॥ १०९ ॥ १७ साप छूटने की अवधि बता १८ यहां पर कपिला नामक गौ मिलेगी तब तू समर्थ राजा होवेगा ॥ ११० ॥ वह १९ हरिणी यह कहकर मरगई २० वह दुष्ट अपनी ही सेना को खागया २१ बाकी बचे जो २२ पुर में आये ॥ १११ ॥

द्वीपीहु लखत करि दुसह गज्ज,हत्थल प्रसारि हुव हनन सज्ज ११२
कटकट बजाय दंतन कराल, फुल्लाय सटा लिय उद्ध फाल ॥
लांगूल छत्रकरि सिर निसंक, तंड्यो प्रसारि नख बज्रटंक ११३
तहँ कहिय धेनु मम बाल बच्छ, दूर्बादि ग्रास परिचय अदच्छ॥
पय ताहि पिवावन सिक्ख देहु, ऐहौं पुनि जानहु सत्य एहु ११४
मन्नैं न व्याघ्र गिनि बिपति बैन, लग्गी तब सुरभी सपथ लैन॥
प्रतिभय द्विजहत्या आदि पाप, ते मोहि अनागम देहु ताप।११५।
सुनि सपथ बग्घ दिय सिक्ख ताहि,ब्रज निज गई सु संधा निबाहि
तर्णोक धपाय तँहँ निट्ठि रक्खि,आत्मीय सखिन तस त्रान अक्खि ११६
रोकीहु साधु तिनतैं रुकी न, आई सु बग्घपहँ पन अधीन॥
द्वीपीहु देखि आनी दयाहि, अक्खिय तू भगिनी धन्य आहि ११७
ब्रत ऋत निबाहि आई बहोरि, छलि मोहि गयैं देतो न छोरि ॥
अब जाहु बहिनि निर्भय निकाय,पोखहु जामेयहिँ छीर पाय ११८
यह कहत बग्घ धरि दिव्य अंग, सो भो नरेस कपिला प्रसंग ॥
सब भूत कहि रु सत्यहिँ सिराहि,तब को अभीष्ट नृप कहिय ताहि ११९

वह व्याघ्र मारने को तैयार हुआ. जब गर्दन ऊपर के केसों को फुलाकर ऊपर उछला और पूंछ का अपने मस्तक पर छत्र करके वज्रटंक के समान नखों को फैलाकर गर्जा ॥ ११३ ॥ तब गऊ ने कहा कि मेरा बछड़ा दूध आदि घास खाने के अभ्यास में चतुर नहीं है जिसको दूध पिलाने की सीख दे मैं पीछी आजाऊँगी यह सत्य जानो ॥ ११४ ॥ उस धेनु के विपत्ति के वचन (विपत्ति में झूठ बोला ही करते हैं) जानकर व्याघ्र ने नहीं माने तब वह गऊ सोगन करने लगी कि मैं पीछी नहीं आऊं तो ब्रह्महत्या आदि का मुझे भय होवे ॥ ११५ ॥ व्याघ्र ने उसको सीख दी. अपनी गो शाला में प्रतिज्ञा निवाह कर गई १ बच्छे को २ अपनी सखियों को उस बछड़े की ३ रक्षा करने को कहकर ॥ ११६ ॥ वह ४ उत्तम कुल में उत्पन्न रोकीहुई भी नहीं रुकी ५ व्याघ्र को भी देखकर दया आगई और कहा कि हे बहिन तू धन्य है ॥ ११७ ॥ व्रत को ६ सत्य निवाह कर ७ अपने घर जा और ८ भाणेज को ९ दूध पाकर पोख ॥ ११८ ॥ १० कपिला गऊ के प्रसंग से ११ बीता हुआ वृत्तान्त कहकर उस गो के सत्य की प्रशंसा करके कहा कि तुझे क्या १२ वांछित है सो कह ॥ ११९ ॥

जंपी वह जलबिनु प्रान जाय, आनहु नरेस जिहिं तिहिं उपाय॥
तब भूप भुम्भितल मारि तीर,निर्मल तिहिं पायो कढ्ढि नीर१२०
आक्खिय तँहँ बपु धरि धर्म आय, सुरभी बर मंगहु जो सुहाय ॥
बुल्ली सु तीर्थ यह बानबाँरि, अघहाँरि होहु ममनाम धारि ।१२१।
धर्म सु बर दिन्नौं हित निधान,बलि तँहँ अनेक आये बिमान ॥
सुप्रभ१नरेस सुरभी२समेत, पुनि गोपि१गोप२गोकुल३उपेत१२२
तिनमाँहिं बैठि बनि दिव्य बेस, अच्युतपद पहुँचे ते असेस॥
तबतैं सुभ कपिलातीर्थ१६तत्थ, सबतीर्थनको प्रतिभट समत्थ१२३
तँहँकरिनृपश्राद्ध१रुन्हान२दान३,पुनिअग्नितीर्थ२०बिरचियप्रयान
कुक्कुरहुतें जो रहि अप्रकास, अमरैन जँहँ लद्धो श्राद्धयास।१२४।
अतिसय अघोर पहिले अनेहँ, बरख्यो नहि वारह१२अब्द मेह॥
रहि सिंधुसेसें जितंतित निवान,हुव छार सुक्कि बिटपिन बितान१२५
निस्सेस क्रिया मखआदि नष्ट, कूकन जन लग्गे ताप कष्ट॥
पुनि कौसिककौं ओदन मिल्यो न,भूखे तब पहुँचे स्वपच भोन।१२६।
तासौं मृत मंडल पैलल पाय, आहुति तदीयँ दिय उटज आय ॥
प्राप्पित्त छुवत आहुति असुद्ध, मघवापर मानस किन्न क्रुद्ध ॥१२७॥
दुष्ट सक्र बरख्यो न बारि, दिय तब अमेध्य मोमाँहिं डारि ॥

गौ ने १कहा कि ॥ १२० ॥ वहां पर २ धर्मराज ने शरीर धारण करके आकर कहा कि हे ३ गौ जो तुझे सुहावे सो वर मांग तब वह बोली कि ४ बाण मारकर जो यह जल निकाला है यह ५ पापों को हरण करनेवाला मेरे नाम का तीर्थ होवे ॥ १२१ ॥ ६ पुनि वहां अनेक विमान आये जिनमें श्रेष्ट क्रान्तिवाला राजा गौ सहित ७ गौवों के कुल सहित ॥ १२२ ॥ ८ विष्णु के पद को पहुँचे ९ सामना करनेवाला ॥ १२३ ॥१०गमन११कुत्ते को होम करने के कारण १२ देवताओं को १३ अग्नि मिला था ॥१२४॥१४ सर्व भक्षी पहिले समय में १५ वर्ष१६जलाशयों में समुद्र ही बाकी रहे १७वृक्षों के फैलाव भी भस्म होगये ॥ १२५ ॥ क्रिया छूट जाने से१८ यज्ञ आदि नाश होगये १९ कौशिक (विश्वामित्र) को २० अन्न नहीं मिला तब २१ चांडाल के घर गये ॥ १२६ ॥ उससे मरेहुए२२कुत्ते का २३ मांस लेकर अपनी २४ पर्णकुटी में आकर २५ उसीकी आहुति दी २६ अग्नि ने२७इन्द्र पर २८ मन

मुनिकौं न दोस पुरहूत मंद, फैलायो तैं जग मृत्युफंद ॥ १२८ ॥
सुख मन्नि नीच भाखि तू असुद्ध, मैंतो त्रिलोक रहिहौं न मुद्ध ॥
यह कहि कृसानु समिट्यो असेस,लोकन रह्यो न संसर्ग लेस।१२९।
अब बिकल इंद्र अमरन उपेत, हेरन कृसानु निजवृत्तिहेत ॥
अर्बुद तिन्ह हेर्‌यो एक अन्हि,बिरुदायो नुतिकरि तत्थ बन्हि।१३०॥
सुनि प्रनति श्रमित सब सुरन जानि,बुल्ल्यो कृसानु रहि पिहितबानि
तैं इंद्र अदयँ नहिँ बृष्टि किन्न,मोबिच अमेध्य तब मुनिन दिन्न१३१
सुनि इंद्र कह्यो देवापि१नाम, जेठो प्रतीपसुत धर्मधाम ॥
तपकरत वहै अरु अनुज तास, अवनी लहि संतनु२भूप आस१३२
प्रतिलोम धर्मपथ इक्खि एस, दिन्नौं न घनन बुट्ठन निदेस॥
तुम गुप्त भये जो इहिँ निदान,तो चलहु कथित करिहैं प्रमान१३३
इम इक्खि पुष्करावर्त्त अभ्र,भेजे ति भुम्मि बरखे अदभ्र॥
जिहिँ निज्झर अर्बुद अंगप्रदेस,प्रकट्यो कृसानु नंत लखि सुरेस१३४
तबतैं सु अग्नितीर्थ२०हि कहात, जँहँ होत महापापन निपात ॥
रमनेस सद्धि तँहँ उचित रीति, पिंडारक तीरथ२१गो सप्रीति।१३५।

में क्रोध किया ॥ १२७ ॥ १ हे मूर्ख २ इन्द्र ॥ १२८ ॥ ३ हे मूर्ख मैं इस त्रिलोकी में नहीं रहूंगा ४ अग्नि सब जगह से खिंचकर इकट्ठा होगया और लोकों में उस का लेशमात्र भी संग नहीं रहा ॥ १२९ ॥ देवताओं ५ सहित इन्द्र विकल हुआ और अपनी ६ जीविका (यज्ञ ही देवताओं की जीविका है) के अर्थ एक दिन उन्होंने आबू पर आकर हे राजा स्तुति करके अग्नि को विरुदाया (उसका उत्साह बढाया) ॥ १३० ॥ देवताओं को श्रम युक्त जानकर गुप्त रहकर अग्नि बोला ७ निर्दय होकर ८ अशुद्ध ॥ १३१ ॥ इन्द्र ने कहा कि देवापि नामक राजा का प्रतीप नामक बडा पुत्र जो धर्म का धाम है वह तो तप करता है और उसका छोटा भाई शन्तनु उसकी भूमि लेकर राजा होगया है ॥ १३२ ॥ सो धर्म के मार्ग में यह उलटा लोभ देखकर मेघों को वर्षा करने को आज्ञा नहीं दी और तुम जो इसी (वर्षा नहीं होने के) कारण से गुप्त होगये हो तो चलो तुम्हारा कहना करेंगे ॥ १३३ ॥ इसप्रकार कहकर पुष्करावर्त नामक मेघ को भेजा सो वह ९ बहुत वर्षा. आबू १० पर्वत के जिस झरने में ११ इन्द्र को १२ नम्र देखकर अग्नि प्रकट हुआ ॥ १३४ ॥ १३ नाश ॥ १३५ ॥

सिवसौं अभिष्ट लहि मंगि जत्थ,सो तीर्थ कह्यो अघहर समत्थ ॥
हुव अग्ग मूढ द्विज मंकिनाम,लिन्नैं जिहिं तर्णक दुव२ललाम।१३६।
बंधे उभै३हि इक१रज्जु बंध, उरभे कहुँ कुद्दत करभ कंध ॥
उठ्यो सु अचानक भोलि भुल्लि,भिचिकंठ मरे दुव२बच्छ झुल्लि ॥
लखि मंकि दुमन उपराम लाय, अर्बुद तप सद्धिय तबहि आय
इक निज्झर न्हाय रु सुद्धचेत, बहु अब्द बिताये दम उपेत १३८
तपकरत लख्यो सिव कबहु ताहि, चिंतित बरमंगहु कहिय चाहि
द्विज बुल्ल्यो द्वै२बर मोहि देहु, गन मोहि करहु निज इक्क एहु।१३९।
दूजो२ यह निर्झर तीर्थ सोहु, पिंडाकरनामक विदित होहु ॥
इच्छित दुव२दै हुव पिहित ईस,जँहँ जाय कृत्य सब किय महीस१४०
पहुँच्यो पुनि कनखलन्हद२२प्रदेस, जँहँ दत्त होत अक्खय असेस
नृप इक्क अग्ग हुव सुमतिनाम, अर्बुद वह आयो पुण्यकाम१४१
उपरक्त भानु लखि तीर्थ औन,हेम सु बहु लायो द्विजन दैन ॥
सो कनखल जलबिच कनक सर्व,परिगो नृप न्हावत समय पर्व१४२
सु मिल्यो न जदपि खोज्यो बिसेस, दै और दान गृह गो नरेस
अब्दन बिताय रविग्रहन पाय,वह नृप पुनि कनखल न्हानआय१४३
सुमिरंत हुव अग्ग जु हेम हानि, ततकाल कह्यो इम व्योम बानि
सुन कनक नष्ट जानहु सुजान, प्रत्युत बढिजावत अप्रमान १४४
या तीर्थमाँहिं महिमा यहैहि, व्है बसु जु नष्ट अक्षय सु व्हैहि ॥

१वर२सुन्दर दो बछड़े(गौ के बच्चे)।१३६।दोनों को एक३ रस्सी में बांधादिये वे कूदते हुए कहीं ४ ऊँट के कंधे में उलझ गये सो जब यकायक ५ ऊँट उठा तब कंठ दबकर वे बछड़े मरगये ॥ १३७ ॥ ६ विरक्त होगया ७ एक झरने में स्नान करके ८ बहुत वर्ष बिताये ९ इन्द्रियों को रोक कर ॥ १३८ । १३९ ॥१० शिव गुप्त होगये ॥ १४० ॥ ११ जहां का दियाहुआ सब१२अक्षय होता है ॥ १४१ ॥ १३ सूर्यग्रहण देख कर १४ स्वर्ण ॥१४२॥ १४३॥ आगे सोना खोया गया था उसको १५ याद किया १६ आकाशवाणी ने कहा १७ उलटा बढता जाता है ॥ १४४ ॥ इसमें जो १८ धन नाश होता है वह अक्षय होजाता है

सोच्यो परंतु तू गिरत हेम, अक्षय भयो न वह द्रव्य एम ।१४५।
भो कोटिगुनित अब कहिलेहु, अवनीस हिरायो सुनत एहु ॥
निकस्यो सु पुरट[1] निगदित[2] प्रमान, सब द्विजन दयो नृप सावधान१४६
तिहिँ पुराय धनद[3] हुव नृप अधीन, दिनप्रति वहु इच्छित पुरट दीन
तवतैं भुव कनखलतीर्थ२२ख्यात, चहुवान दये तँहँ बसु[4] व्रात[5]।१४७।
पुनि चक्रतीर्थ२३पहुँच्यो नरेस, किय न्हाय श्राद्ध१ बितरन[6]२बिसेस
जिहिँतीर्थअग्गहरिवपुँपखारि, निजचक्रतज्योसबदैत्यमारि ॥१४८॥
हरि अंगसंगकरि वह सु तोय, मानुसन्हद२४ गो नृप तत्थ होय
जँहँ न्हाय पुराय परिचित[10] अखर्ब, नर[11]जोनि लहत पसु पच्छि सर्ब१४९
अग्गँ मृग व्याधन[12] वेढ़मान, प्रबिसे तदीय[13] जल विकल प्रान ॥
ततकाल भये नर ते कुरंगे, पुच्छे पुनि मृगयुन[15] लहि प्रसंग १५०
तुम देहु गये मृग कित बताय, उन कहिय भये नर अत्थ आय॥
तजि एनभाव[16]१ अरु एनभाव[17]२, पूरुष[18] हम पूरुषन्हद प्रभाव १५१

नभाव१ प्रभाव२अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

यह सुनत व्याध सर१चाप२डारि, प्रबिसे समस्त तस विमल[20] वारि
धरि सुद्धभाव तँहँ पाप धोय, हिंसाधन[21] निकसे सिद्ध होय ।१५२।
यह लखि प्रभाव तँहँ भीत आय, रज डारि सु मुंद्यो देवराय[22] ॥
अष्टमि८तथापिवुध४वार सत्थ,पसु१पच्छि२हैं[23]नरजायजत्थ१५३

परन्तु सोना गिरा उसकी तू ने चिन्ता की थी इससे वह धन अक्षय नहीं हुआ ॥ १४५ ॥ १ सोना २ ऊपर कहे प्रमाण से कढा ॥ १४६ ॥ ३ कुबेर उस राजा के अधीन होगया ४ धन के ५समूह दिये ॥१४७॥ ६ दान ७ विष्णु मे स्नान करके ॥ १४८ ॥ ८ विष्णु के शरीर का स्पर्श होने से वह ९ जल १० परिचय सहित ११मनुष्य योनि पाते हैं ॥ १४९ ॥ शिकारियों के १२ घेरेहुए मृग व्याकुल होकर उस १३ न्हद के जल में घुसे वे१४ मृग तुरन्त मनुष्य होगये १५ शिकारियों ने पूछा ॥ १५० ॥ १६ मृगपन को और १७ पापभाव को छोडकर १८ मानुष न्हद के प्रभाव से हम १८ पुरुष होगये हैं ॥ १५१ ॥ २० निर्मल जल में घुसे २१ हिंसा ही है धन जिनके ऐसे वे शिकारी सिद्ध होकर निकले ॥ १५२ ॥ २२ इन्द्र ने न्हद को धूल डालकर भर दिया २३मनुष्य होने को तहां जाते हैं ॥ १५३ ॥

तँहँ व्है रु तीर्थ रक्तानुबंध४, सद्धन विधेय पहुँच्यो सुसंध ॥
इक इंद्रसेन नृप अग्ग आसं, तिय मंजु सुनंदा नाम तास १५४
आसा जित किन्नी जिहिं असेस,आसा जित किन्नी जिहिं असेस
बलि लै बहु सत्रुन वसुन व्रात,बलि लै बहु सत्रुन बसुन व्रात१५५
मुरर्यो सु लयो गहि जंगमग्ग, मुरर्यो सु लयो अब द्रंगमग्ग ॥
तँहँ अग्ग सुनंदा पास चार, पठयो नृप निर्दय कपटकार ।१५६।
अरु अक्खिय रानी निकट जाय मम मृत्यु देहु ताकँहँ सुनाय ॥
निश्चितजोइच्छहिंमरननारि,तो देहुनर्मअक्खिरुनिवारि ॥१५७ ॥
सुनि दूत जाय रानी समीप, बुल्ल्यो सु अग्नि मार्यो महीप ॥
कटुवचन वज्र यह परत कान,पुद्गल तजि निकसे त्वरित प्रान१५८
तदनंतर भूपहु तत्थ आय, सोच्यो सुनि रानी त्यक्तकाय ॥
भो मलिन रंग ततकाल भूप, वँपुपैं दुवरछाया हुव बिरूप ।१५९।
दुर्मन अतेज दुर्गंधि देह, आपर्न्न दसा नृप एह एह ॥
बिप्रनबुलायकरिबहुबिलाप,पुच्छियउपायजिहिंजायपाप ॥ १६० ॥
तब तीर्थ बताये द्विजन ताहि, चल्ल्यो सुनि हत्या हेय चाहि ॥
बाराणसी१सुपहिलैंजंगाम,कारिन्हान१दान२दियदिव्यधाम ॥१६१॥

१श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाला रमनेस चहुवान वहां गया २हुआ ३सुन्दर स्त्री।१५४।उस राजा ने सब दिशाओं को विजय की और आ(आ समन्तात् अर्थात्सम्पूर्ण) शा (लक्ष्मी)को जीतकर उस लक्ष्मी से सब दिशाओं को अशेष(शून्य)कर दी.खिराज में अथवा उस बलवान् ने बहुत शत्रुओं से धन का समूह लेकर बलि(पुनि)बहुत शत्रु बसु(राजा)ओं के समूहों को साथ लिया अर्थात् बहुत शत्रु राजाओं के समूह को अपने आश्रित बनाकर सेवा में साथ लिये ॥ १५५ ॥ इस राजा से जो मुरड़कर रहा उसको युद्ध में पकड़ लिया और अब पीछा फिरकर उस इन्द्रसेन राजा ने अपने पुर का मार्ग लिया, उस निर्दय और कपट करनेवाले ने अपनी स्त्री सुनन्दा के पास हलकारे को भेजा ॥ १५६ ॥ उससे कहा कि रानी के पास जाकर मेरा मरना सुना देना वह स्त्री जो निश्चै ही मरना चाहै तो यह कहकर उसको रोकदेना कि मैं तो हसी करता हूं ॥ १५७ ॥ ४ शरीर को छोडकर ॥ १५८॥ ५ जिस पीछे ६ राणी का शरीर छोड़ना सुनकर ७ शरीर पर ॥ १५९ ॥इस८आपत्ति की दशा में ॥ १६० ॥ ९ हत्या छूटने की चाहना से पहले काशी १० गया

तत्थहि कपालमोचन जु छेत्र, अब्रह्महत्य हुव जँहँ त्रिनेत्र ॥
तँहँकियबिधेयथिरचिरंतथापि,छायाद्वितीयरनमिटीतदापि ॥१६२॥
इम सोमतीर्थ२ पुष्कर३ प्रभास४, कुरुखेत५अमरकंटक६ सुभास
कनखल७दमजंगल८एकहंस९,पंचनद१०परिप्लव११सुप्रसंस॥१६३॥
जिम पत्त विरूपाक्ष१२हु जनेस, बलि रुद्रकोटि१३अघहर बिसेस
बिरचतइत्यादिकतीर्थबार,हायनइमवीतेइकहजार१००० ॥१६४॥
आयो पुनि अर्बुद इंद्रसेन, आयतन१ तीर्थ२ परसे अनेन ॥
बिधिक्रम गयो सुरक्तानुबंध२५,गेरयोस्वदेहतसजलकुगंध ॥१६५
सो हुव सुगंध तहँ कढत न्हाय, छाया द्वितीय२ मिटि तेजछाय ॥
सब दान तत्थ दै इंद्रसेन, अति मुदित चल्यो निज गृह अनेन१६६
रक्तानुबंधकी तजत सीम, भो पुनि कुगंध द्वि२च्छाय भीम ॥
आयो तिहिं तीरथ बहुरि एह, भो तबहि पुब्बजिम दिव्यदेह ।१६७।
तीरथ प्रभाव यह नृप बिचारि, प्रबिस्यो चिता सु पावक मजारि
बपु भस्महोत आयो बिमान,सिवलोक गयो चढि नृप सुजान।१६८।
नारदमुनि लखि नृप मुक्ति एस, रक्तानुबंध बरन्यों बिसेस ॥
अनुबद्ध करैं नर विषयरक्त, रक्तानुबंध२५इम भुव प्रसक्त ॥ १६९॥
जँहँ श्राद्ध१होत गयेसिर समान, दैरुद्रलोक गति न्हान१दान२ ॥
॥ १७० ॥

जहां पर३शिव२ब्रह्म हत्या से छूटे थे४बहुत समय तक उचित कार्य किये५तो भी दूसरी छाया नहीं मिटी॥१६२॥ ६श्रेष्ठ प्रशंसा वाले॥१६३॥७गया८ राजा ९पुनि१०समय११वर्ष॥१६४॥१२तीर्थों के ठहरने का स्थान(आबू)को१३निर्दोषी होने के अर्थ परसा॥१६५॥१४निर्दोषी होकर॥१६६॥रक्तानुबंध तीर्थ की सीमा से बाहर निकलते ही१५भयंकर छाया और दुर्गन्धवाला शरीर होगया१६ पहिले निर्मल देह होगया था वैसा ही फिर होगया ॥ १६७ ॥ १७ विचार के १८ अग्नि जलाकर ॥ १६८ ॥ जो मनुष्य विषय में आसक्त होकर १९दोष उत्पादन करें वेभी इस तीर्थ में प्रीति रक्खें तो उनको वांछित फल देता है इसकारण से भूमि पर यह रक्तानुबंध२०प्रसिद्ध है॥१६९॥२१ गया के समान

तिम उचित सद्धि रमनेस तत्त,सु महादिबिनायक२६धाम पत्त॥
पहिलैं उद्वर्तन लेप पाय, सिसु इक्क१रच्यो गिरिजा सुकाय।१७१।
अभिरूप बनैं तस सर्वअंग, अवसेस रह्यो सिसु उत्तमंग॥
लेपहु रह्यो न तब गुह बुलाय, अक्खिय सुत अप्पहु लेप लाय१७२
सिर याको जिहिं करि होय सिद्ध, यह पूर्ण बनैं तव भ्रात इद्ध॥
पायो न लेप गुह आस पास, तब जोर्‌यो गजसिर कट्टि तास ।१७३।
सो बाल सिवा किन्नौं सजीव, उठ्यो सु धारि बपु छबि अतीव
चउ४न्हस्वत्रि३बिस्तृतसप्त७रक्तत्रि३गभीरछ६उन्नतबपुविभक्त१७४
मित पंच५सुच्छम रु पंच५दिग्घ,सय जोरि कुमर बुल्ल्यो सु सिग्घ ॥

महाशब्द है आदि में जिसके ऐसा विनायक (महाविनायक) पहुंचा. उबटन (शरीर सुगन्धित करने का लेप) के लेप से पार्वती ने एक सुन्दर बालक रचा ॥ १७१ ॥ उस बालक के सब अंग सुन्दर बने परन्तु मस्तक बाकी रहा और वह लेप खूटगया तब स्वामिकार्तिक को बुलाकर कहा कि हे पुत्र! फिर लेप लादे ॥ १७२ ॥ जिससे इसका मस्तक बनजावे और तेरा यह दीप्तिमान् भाई पूर्ण होजावे, गुह को समीप में लेप नहीं मिला तब हाथी का मस्तक काटकर उसके चिपका दिया ॥ १७३ ॥ पार्वती ने उस बालक को सजीव करदिया सो शरीर की अत्यन्त छवि को धारण करके वह उठा " अब आगे पुरुष के शुभ लक्षण बताते हैं " लिङ्ग, पीठ, ग्रीवा और जंघा ये चार अङ्ग न्हस्व (छोटे); और छाती, ललाट और बदन (चहरा) ये तीन अङ्ग विस्तृत (विस्तारवाले यानी चौड़े) और नेत्रों के अन्त (कोये), पादतल (पगतली),हाथ, तालु, नीचे का ओठ, जिव्हा, नख, ये सात अङ्ग रक्तवर्ण (लाल रंग) के, और नाभि, शब्द, सत्त्व (स्वभाव अथवा पराक्रम) ये तीन गंभीर (गहरे), और छाती, कक्षा (शरीर का मध्यभाग) नख, नासिका, मुख कृकाटिका (घेटू गला और शिर की सन्धि) ये छै अङ्ग उन्नत (ऊंचे), और सब शरीर बराबर बंटेहुए अर्थात् आंख, कान, हाथ, स्तन, नितम्ब, जंघा, पग, ये सब निश्चय करके बराबर के, यह नहीं कि एक ओर का छोटा और एक ओर का मोटा होवे ॥ १७४ ॥ दन्त, अंगुलियों के पर्व (पेरवे) केश, त्वचा (चर्म) नख, ये पांच सूक्ष्म (पतले) और हनु (ठोडी), नेत्र, भुजा, नासिका, दोनों स्तनों के बीच का मध्यभाग ये पांच अङ्ग जिसके दीर्घ (लंबे) हैं " ये पुरुष के शुभलक्षण कहे.इस प्रकरण को विशेष देखना होवे तो सामुद्रिक

जननी तुम अप्पहु जो निदेस, सिरधारि सोहि सद्धौं असेस।१७५।
पर्वतजा लै सिसु ईस पास, अक्खिय उदंत जिम पुत्र आस ॥
ईसानकहियसिरमहत्त१आहि,बपुनायकत्व२सबगुननिबाहि।१७६।
अभिधा महाबिनायक उपेत, ह्वैहैं यह चिंतितसिद्धिहेत ॥
अधिकारमुख्यपुनिअप्पिईस,इभतुंडकरयोनिजगनअधीस ॥१७७॥
अरि निखिल विघ्न किन्नैं अधीन, सब पुब्ब दयो पूजन प्रवीन ॥
इम लंबउदर महिमा अपार, हुव विघ्ननिघ्न सुखकरनहार १७८।
तिहिंसस्त्रउमादियस्वधिति१तत्त,असुअसनअर्थमोदक१अमत्र२ ॥
इहिंगंधखनकभुवभेदिआय,खिरिखिरिगिरेतितसरेणुखाय ॥१७९॥
सहसा दिपाय अमरत्व सिष्ट, इभमुखके बाहन हुव सु इष्ट ॥
इमहूगनेसप्रकटनप्रतीति,रुदसम१०पुरानबिचअन्यरीति ॥ १८० ॥
तँहँ संभुसुक्र भव एकदंत, यँहँ इम सु भेद कल्पन अनंत ॥
सु महादिबिनायक मूर्त्ति सुद्ध, प्रकटित अगअर्बुद है प्रबुद्ध ।१८१।

शास्त्र में अथवा वाराहीसंहिता नामक ज्योतिष के ग्रन्थ में सविस्तर है सो वहां देखो". वह कुमर हाथ जोड़कर शीघ्र बोला कि हे माता तुम जो आज्ञा करो सो ही मस्तक पर धरकर सब करूं ॥१७५॥ उस बालक को पार्वती शिव के पास लेगई और जिसप्रकार बालक हुआ वह वृत्तान्त कहा, महादेव ने कहा कि इस का माथा बड़ा है और शरीर से भी नायक (प्रधान) पन का निर्वाह करेगा इससे ॥ १७६ ॥ १ महाविनायक नाम सहित इसको चिन्तवन करने से सिद्धि देनेवाला होवेगा २ गजानन को १ गणों का स्वामी किया ॥ १७७ ॥ और अधीश (शिव) ने सम्पूर्ण विघ्नों का उसको शत्रु बनाया सब से पहिले पूजन दिया, इसप्रकार गणेश की अपार महिमा है वह विघ्नों का नाश और सुख करनेवाला हुआ ॥ १७८ ॥ पार्वती ने कुठार का शस्त्र दिया और भोजन के लिये लड्डू और पात्र दिया,इस लड्डू की गन्ध से भूमि को फोड़ कर चूहा आया ४ लड्डू के कण खाये ॥ १७९ ॥ अचानक श्रेष्ठ देवतापन को प्रकाशमान करके गजानन के प्रिय वाहन हुआ, इसप्रकार भी गणेश की उत्पत्ति विश्वास दायक है. और दशम (ब्रह्मवैवर्त) पुराण में गणेश की उत्पत्ति और प्रकार से लिखी है ॥ १८० ॥ तहां पर गणेश का जन्म महादेव के वीर्य से है सो इसप्रकार कल्पों के भेद से अनेक कथा है सो महाबिनायक की मूर्ति है पंडित रामसिंह आबू पर्वत पर

निकटहि तस कुंडहु बिमलनीर, बिधि तँहँ निबाहि रमनेस बीर
पाथेश्वर२७ संकर धाम पॆत्त[1], निज्झरै[2] जल न्हाय रु देयँ[3] दत्त१८२
अग्गैं मुनि देवल सदनँ[4] श्रेय, पतनी हुव पाथा[5] नामधेय॥
बंझा[6] सु चहत संतति बिसेस, तप तपिय आनि अर्बुद प्रदेस१८३
अनसनँ[7] लखि हायर्न सहँस[8]१०००उद्ध, सिवलिंग कढ्यो भुवभेदि सुद्ध
बुल्लिय तदनंतर[9] गंगनबानि[10], यह लिंग पुज्जि दृढभक्ति आनि१८४
अबतैं पाथेश्वरनाम अत्थ, संज्ञा[11] तव गहि हैं सिव समत्थ ॥
पाथा सु अर्चि निगदितैं[12] प्रमान, सत१००पुत्र लहे सब गुन सुजान१८५
निर्झर जँहँ सीतल बिमल नीर, बिधि तँहँ निबाहि रमनेस बीर
पुनि कृष्णा तीर्थ २८ किन्नौं प्रयान,
किय न्हान १ श्राद्ध २ जप ३ होम ४ दान ५ ॥ १८६ ॥
अग्गैं चतुराननँ मोहनिष्ठँ[13], हरिसौं[14] इम अक्खिय मैं[15] गरिष्ठ ॥
तोसेहु बनाये जिहिँ कितेक, ऐसो समर्थ मैं द्रुहिनँ[16] एक ॥१८७॥
हसि बिष्णु कह्यो मम सर्गमाँहिँ[17], अंबुजभवँ[18] तोसे बहुत आँहिँ[19] ॥
किय रन बिरंचि[20] यह सुनत कुंप्पि[21], हायनँ[22] हजार१०००दृढरोख रुप्पि
तँहँ दुहुन२बीच लखि होत जुद्ध, भुंव भेदि[23] गयो इक लिंग उँद्ध[24] ॥
आकासगिरौं[25] हुव तिहिँ अनेहँ[26], अनुचित रन व्यर्थ न करहु एह१८९
यह दिव्यलिंग तस पाय अंत, मुरैं सु होय तुमबिच महंत[27] ॥
अजँ[28] जाहु उँद्ध[29] हरि जाहु हिट्ठँ[30], पाताल बिष्णु यह सुनि पइठ१९०

प्रकट हुई ॥ १८१ ॥ १गया २झरने के जल से ३दान दिया ॥ १८२ ॥ ४देवल मुनि के ४ घर में ५ पाथा नामवाली स्त्री हुई वह ६ वन्ध्या (बांझ) थी ॥ १८३ ॥ ७ उपवास ८ हजार वर्ष से उपरान्त ९ जिस पीछे १० आकाशवाणी ॥ १८४ ॥ ११तेरा नाम ग्रहण करेगा १२ कहने के अनुसार ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १३ ब्रह्मा ने भूल से १४विष्णु से कहा कि मैं १५बड़ा हूं १६ ब्रह्मा ॥१८७॥ १७मेरी सृष्टि में १८कमल से उत्पन्न होनेवाले (ब्रह्मा) १९ हैं २० ब्रह्मा ने युद्ध किया २१ क्रोध करके २२ वर्ष ॥ १८८ ॥ २३ भूमि को फोड़कर एक लिंग २४ ऊपर को गया उस २५ समय में २६ आकाशवाणी हुई ॥१८९॥ इस लिंग का अंत लेकर पीछा आवेगा वही तुममें २७ बडा मानाजावेगा २८ ब्रह्मा २९ ऊपर को जाओ और, विष्णु ३०नीचे जाओ ३१ विष्णु पाताल

बिक्खे बिल सत्त७हि लिंग बिद्ध[1], अध जानलगे प्रभु बेद इद्ध[2] ॥
कालाग्नि रुद्द तँहँ किय प्रकास, अर्चिन[3] तचि[4] हरि छबि कृष्ण[5] आस
महिमा दिखाय तस पाय मोह, छिति[6] पिट्ठि आय केसव सछोह ॥
बेदोक्त सूक्तँ[7] जपि निर्विकार, वह लिंग पुज्जि किय नुति[8] उदार
बिधि उद्ध[9] चढे अति बिरचि ताय, जिहिं अंत तदपि पिक्ख्यो न जाय ॥
जँहँ इक्क सुममाला[10] कंजजात[11], इक्खी क्रकचच्छदमय[12] सु आत
पुच्छियस्रज[13] हे अज[14] कित पयान; सुनि कहिय लखन लिंगावसान[15]
स्रज कहिय मैंहु तजि लिंग सीस, आवत चिरंतरतैं[16] लोकईस
उतरत जुग कोटिन हुव अतीत[17], पायो न तदपि छितितल[18] पुनीत
जोजनइक१ताव[19]कं हंसजात, तोलौं सत१००जोजन मैं बितात
मम बेग जदपि यह तदपि मग्ग, आयतपन[20] धारत अग्ग अग्ग ॥
मोरहु मराल[21] यह मंत्र पाय, तुम अंत कहहु मो कँहँ[22] बताय १९६
सुनिमुरिबिरिंचिस्रजसंगलाय, तँहँआयसहँस१०००हायनबिताय ॥
छलि[23] कहिय लह्यो हम लिंगछेह, अतिदूर सु प्रत्यय[24] स्रजहि एह
अच्युतकह्योकिनलह्योसुअंत, नलह्योहिकह्योयहसुनि अनंत[25] ॥
सिव कुपित तत्थ दिय बिधिहिं[26] साप, तवपूजक[27] पैं हैं नरक ताप

में घुसे ॥ १९० ॥ १ लिंग से वेधेहुए २ वेद से वृद्धि पायेहुए विष्णु भगवान् नीचे जाने लगे वहां शिव ने काल अग्नि का प्रकाश किया उसकी ३ज्वाला से ४तपकर विष्णु का रंग५श्याम होगया ॥ १९१ ॥ ६ भूमि की पीठ पर७वेद के कहे हुए मंत्रों से८स्तुति की॥१९२॥समृद्धिमान् ब्रह्मा उस लिंग के९ऊपर चढे११ब्रह्मा ने एक१०पुष्पों की माला देखी जो १२केतकी के पुष्पों से शोभायमान थी ॥ १९३ ॥ उस १३माला ने पूछा कि हे१४ब्रह्मा कहां जाते हो१५इस लिंग का अन्त देखने को१६अत्यन्त चिर काल से आती हूं ॥ १९४ ॥ क्रोड़ों जुग १७ बीत गये तोभी १८ भूमि तल नहीं पाया, हे ब्रह्मा १९ तुम्हारा वेग एक जोजन जाने का है ॥ १९५ ॥ २० आगे से आगे लंबेपन को धारण करता है २१ तुम्हारे वाहन हंस को पीछा मोड़ दो २२ मुझको साक्षी बताकर कहदेना कि मैं लिंग का अन्त देखआया ॥ १९६ ॥ २३ छल करके कहा, यह माला इसका २४ विश्वास करानेवाला (सुबूत) है ॥ १९७ ॥ २५विष्णु ने कहा कि मैंने तो अन्त नहीं पाया २६ ब्रह्मा को महादेवने श्राप दिया कि तुमको २७ पूजनेवाले नरक पावेंगे ॥ १९८ ॥

*केतक सुम सूचित साक्खि÷कूर, दुष्ट सु अब हम सन रहहु दूर॥
हरिसौँहु कहिय सब लेहु+सिष्ट, उन कहिय लिंग यह ×अल्प इष्ट
तब लिंग अल्पतम[1] करि त्रि[3]नैन, बुल्लिय मुकुंद सन मधुर बैन ॥
थप्पहु इहिँ लिंगहि मेध्य[4] थान, पूजहु दामोदर[5] विधि प्रमान ।२००।
दुति तुव[6] कृष्णा मम तेजदग्द्ध, वजिहो अब कृष्णाहि ख्यातिबद्ध॥
हर पिहित[7] भयेँ थप्यो हिताय, लिंग सु गिरिअर्बुद कृष्णालाय।२०१।
निज्झर इकअंतिक तस निवास, इम कृष्णातीर्थ२८भुव बिदित आस
जन लिंग लखैं वह न्हाय जत्थ, सबतीर्थ पुराय सु लहैं समत्थ२०२
क्रम बिहित सद्धि तँहँ उचित काल, पहुँच्यो मामुंन्हद२९तब नृपाल
मुद्गलमुनि अग्गैं जँहँ महंत, सद्धिय तप दुस्सह परम संत॥ २०३ ॥
इयलखि सुरेस बनि त्रासवान, बलि तँहँ संदूत पठयो बिमान॥
बुल्ल्यो सु तजहु मुनि कष्ट ब्रात, लहु स्वर्ग चलहु सुरपति बुलात
उन कहिय पुब्ब गुन१दोस२आक्खि, रुचि है तो चलिहैं चाह रक्खि॥
तब दूत कहिय गुन १ दोस २ तास,
नंदनमुखँ उपबन १ सुख निवास ॥ २०५ ॥
नानाप्रकार बेर जल निधान, बीनाहि१ताल२बापि३न विधान२ ॥
आलस १ तस २ भूख न आत्ति ४ आहि ३,
सोलह १६ संवत्सर वय ४ सदाहि ॥ २०६ ॥

---

*केतकी के पुष्प ने ÷ झूठी साक्षी दी है सो यह दुष्ट हमसे दूर रहै(इसीका रण से केतकी का पुष्प पूजा में नहीं रक्खाजाता और ब्रह्मा की मूर्ति पूजी नहीं जाती)विष्णु से कहा कि+श्रेठ वरमांगो × यह लिंग छोटा होजाये यही प्रिय है ॥ १९६ ॥ महादेव लिंग १ बहुत छोटा करके २विष्णु से बोले३ पवित्र स्थान दो ४ हे विष्णु ॥ २०० ॥ मेरे तेज से ६ दग्ध होकर ५ तुम्हारी कान्ति श्याम होगई है सो अब कृष्ण नाम से ही प्रसिद्ध होओगे ७ गुप्त ॥ २०१ ॥ एक झरने के ८ पास ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ ९ इन्द्र १० दूत सहित ११ कष्ट का समूह छोड दो १२शीघ्र स्वर्ग में चलो ॥२०४॥ मुद्गल मुनि ने कहा कि तुम १३ पहिले स्वर्ग के गुण दोष कहो १४ नन्दन को आदि लेकर वहां बाग हैं ॥ २०५ ॥ १५ श्रेष्ठजलाशय१६ईंटों से बन्धेहुए कुए१७आर्ति (पीड़ा) १८ सौलह वर्ष की सदैव अवस्था रहती है ॥ २०६ ॥

गंधर्व१ अच्छरि२न*मंजु गीत५, नाना बिमान वाहन६**पुनीत॥
कामदु१धेनु२।७पीयूख पान८, हिंसा१न धर्म२निद्रा३न हान४।९ ॥
जव पुण्य रहत जँहँ बित्तिजाय, पावत नृपत्व१तब अवनि[4] आय॥
असुरहु निज अवसर[5] बलउपेत[6], दिवँ[7] छिन्नि निर्जरन[8] कढ्ढिदेत।२०८।
तिन कहिय पुण्यखय होत तहिं, मामुंन्हद२९ मेहि त्वं पुंनर्हि ॥
जवतैं मामुंन्हद ख्यात जत्थ, चहुवान जाय किय उचित तत्थ२०९
पुनि निकट चंडिकाश्रम३०पधारि,सङ्किय बिधेयँ[12] श्रुति[13] वच सम्हारि
पहिलैं बिधि[14] सौं वर महिष[15] पाय,हुव त्रि३भुवनपति देवन हटाय२१०
मिलि अमर[16] तवहि गुरु[17]मंत्र मानि, अर्बुद[18] लगे ति तपकरन आनि।
पढि सक्तिमंत्र पूजन पुनीत, आराधत हायन[19] चउ४अतीत[20]।२११।
तिन अग्ग मास खट६पुनि बिताय,हुव दीप[21] हेति वह प्रकट आय
जिम जिम वह कीला[22] बढिग जत्थ,तिम बढिग अमरत्यन[23] ओज तत्थ
इहिं क्रम ६छमासलग वढिअनेजँ[24],त्रिदसन[25]हुवद्वादस १२तपन[26]तेज॥
वाचस्पति[27] तव करि भुव पवित्र, विधि उचित रचिय मंडल विचित्र
साक्तेय[28] मंत्र जपि विदित सिष्ट,पुनि किय सु तेज मंडल प्रविष्ट
एकत्र तेज तँहँ सवन आय, कन्न्या इक प्रकटी रम्म्य काय

*सुन्दर**पवित्र १कल्पवृक्ष २कामधेनु ३अमृत पीने के लिये.जब तक पुण्य रहता है तब तक ये भोगते हैं और पुण्य बीतजाता है तब४भूमि पर आकर राजापन अपना५समय आने पर६बल सहित असुर लोग७स्वर्ग को छीन कर८देवताओं को निकाल देते हैं॥२०८॥मुनि ने कहा कि स्वर्ग में पुण्य का क्षय होजाता है तो पाते हैं स्वर्ग की अपेक्षा मामुंन्हद में सुख अधिक है इससे हम स्वर्ग जाना नहीं चाहते सो तुम हमको लेने यहां फिर मत आना अर्थात् अमुं(इस)न्हद पर पुनः (फिर) हि (निश्चै करके) त्वं (तू) मा (मत) एहि (आव) ॥२०९॥ १२ कर्तव्य कर्म १३ वेद के वचनों को सम्हाल कर १४ ब्रह्मा से १५ महिषासुर वर पाकर ॥ २१० ॥ १६ देवताओं ने १७ बृहस्पति की सलाह मान कर १८ आबू पर्वत पर, आराधना करते चार १९ वर्ष २० बिता कर॥२११॥दीपक की २१ ज्वाला (लोय) में वह (देवी) प्रकट हुई २२ ज्वाला बढी त्यों ही २३ देवताओं का तेज बढा २४ अचल २५ देवताओं का २६ बारह सूर्यों के समान तेज होगया२७ बृहस्पति ने॥ २१२ ॥ २८ शक्ति सम्बन्धी मन्त्र जपकर उस तेज को उस मंडल में प्रवेश किया

सब सुरन सुवंदी आदिसक्कि, भाखे स्तव बहु विध प्रकटि भक्ति ॥
त्रि[2]दसनपट[1]भूखन[2]सब्ब[3]ताहि, सब आप्पिकहिय जयजय सिराहि
बाहन मृगेंद्र[3] हुव हव्यवाह[4], लेख[5]न इम पायो सक्कि लाह ॥
अंबा प्रसन्न किय हुकम एहु, लखि उचित इष्ट[6] सिर मंगिलेहु२१६
तिन कहिय दये हम महिष [7]टारि, माता तुम ताकहँ लेहु मारि॥
दुर्गा निदेस दिय हित दिखाय, अब जाहु अमर[8] निज निजनिकाय[9]२१७
निर्भीत रहहु संदेह नाँहिं, मैं हनिहौं दुष्टहिं काल माँहिं ॥
देवन इम अक्खिरु सिक्खदिन्न, का[11]त्यायनि अर्बुदबास किन्न२१८
सब तीर्थ विचरि नारद सुजान, पुनि कबहु त्रिविष्टप[12] किय प्रयान
सनमा[13]नि महिष पुच्छिय असेस, देख्योहु चित्र[14] कछु भू प्रदेस२१९
सुनि कहिय सर्बलोकन महान, नगअर्बुद[15] जानहु सुखनिधान ॥
कन्न्या इक पिक्खी तँहँ सुकाय,प्रमदा[16] न बिस्व तस रूप पाय२२०
इक्खतहि भयो मैं स्मर[17] अधीर, इतकौं भजिआयो विकल बीर
अब सत्यलोक जैहौं उदार,मिटिहै न उहाँ बिनु मार[18] मार ।२२१।
दानव सुनि पठये तत्थ दूत, अर्बुदगिरि पिक्ख्यो तिन्ह अभूत[19]॥
दस१०जोजन लंबित रम्यदेस,बिसतार पंच५जोजन सुवेस॥२२२॥
उ[20]च्छ्रित इतो५हि भूस्वर्ग[21] अच्छ, द्रुत[22] दूत गये तँहँ कथनदच्छ[23] ॥
तिन कहिय त्रिदिवँ[24] चल्लहु हिता[25]य,क्यौं सहहु देवि तप कष्ट काय२२३

उन सब देवताओं का तेज एकत्रित होकर सुंदर शरीरवाली एक कन्या प्रकट हुई ॥२१४॥ उस आदिशक्ति से देवताओं ने नमस्कार करके १ स्तोत्र कहे २ देवताओं ने ॥ २१५ ॥ ३ सिंह का स्वरूप करके ४ अग्नि वाहन हुआ ५ देवताओं ने इस प्रकार शक्ति का लाभ पाया ६ मुख्य प्रिय होवे सो मांगो ॥ २१६ ॥ महिषासुर ने हमको ७ निकाल दिये ८ हे देवताओ अपने अपने ९ घर जाओ ॥ २१७ ॥ १० कुछ समय में ११ देवी॥२१८॥नारद मुनि सब तीर्थों में फिर कर कभी १२ स्वर्ग में गये १३ आदर करके महिषासुर ने सब पूछा १४ आश्चर्यदायक वस्तु भूमि पर देखी है॥२१९॥१५ पर्वत, संसार में उसके जैसी रूपवान् कोई १६ स्त्री नहीं है ॥ २२० ॥ उसको देखते ही मैं १७ कामदेव से अधीर होगया १८ कामदेव की मारी ॥ २२१॥ १९ अविद्यमान(जो इस समय उतना नहीं है)॥२२२॥२० ऊंचा पांच योजन २१ भूमि का स्वर्ग २२ शीघ्र २३ कहने में चतुर २४ स्वर्ग में चल २५ हित के लिये

बुल्ली[1] न सिवा तँहँ मुनिन व्रात[2],खलके दूतन प्रति कहिय ख्यात॥
वर[3]वृद्ध महिष मारन बिचार, सद्धत इम अंबा[4] तप सुढार ॥२२४॥
दूतन डरि अक्खिय सुहि उदंत[5], आसुर सुनि कुप्प्यो चहत अंत ॥
बलि दूत बिचच्छन[6] नाम बुल्लि,खल अनुचित आसय कहिय खुल्लि
तिहिँ लैन बिचच्छन जाहु तत्थ,सजि साम१भेद२बितरन[7]३समत्थ॥
तिन बिरचि दंड४कचगहि[8] प्रतर्जि, आनहु तिहिँ सासन धर्म अर्जि[9]
बुल्ल्यो सु जाय खल तिम बहोरि, जुं[10] दयो बिडारि[11] रिस नैन जोरि
सुहि जाय बिचच्छन अक्खि सर्ब, आन्यौं कुपाय महिषहिँ अखर्ब

स्यंदन[12] त्रिलक्ख३०००००हुव संग सज्ज,
गज इक्कलक्ख १००००० जीमूत[13] गज्ज ॥

हयतीसलक्ख३००००००हंकियगहीर,बानैतअमितपाँइक्क[14]बीर२२८
कंपात धरनि डुंगर[15] डिगात,बनि आयो दानव प्रलय बात[16] ॥
गरदायँ[17] कटकँ[18] अर्बुद गिरीस,सह सचिव अप्प गो तास सीस२२९
दुर्गा समाधि थित जिहिँ प्रदेस, अक्खिय बिनम्म्र[19] तँहँ जाय एस ॥
जग अतुल भीरु[20] तव रूप जानि, मैं आयो उपयम[21] उचित मानि
गंधर्ब व्याह[22] सह जोरि गंठि, सुख भुग्गि मोहि भजि[23] प्रीत संठि[24]॥
तिय सहँस सट्ठि६००००सम गेह तास,बनि करहु पट्टरानी बिलास

१देवी नहीं बोली तब २ मुनियों के समूह ने दूत से कहा ३वर से बढे हुए महिषासुर को मारने के विचार से४देवी श्रेष्ठ तप करती है ॥ २२४ ॥ ५ वृत्तान्त ६ विचक्षण नामक दूत को बुलाकर ॥२२५॥ ७ दान, ८ धमकाकर बाल पकड़ कर, ह आज्ञा के धर्म को ९ संचय करनेवाले दूत ॥ २२६ ॥ देवी ने क्रोध के नेत्रों से देखकर १० उसको ११ निकाल दिया ॥ २२७ ॥ १२ रथ १३ मेघ के समान गर्जना करनेवाले १४पैदल ।२२८। १५ पर्वतों को डिगाते हुए १६ प्रलय के पवन के समान होकर १७ सेना से आबू पर्वत राज को १८ घेरकर मंत्री के साथ आप पर्वत के मस्तक पर गया १९ विशेष नम्र होकर बोला २० हे सुन्दर स्त्री२१विवाह ॥ २३० ॥२२ वर कन्या परस्पर प्रसन्न होकर विवाह करलेवें उसको गन्धर्व विवाह कहते हैं २३ मुझको सेवन करके २४ प्रीति के बदले में सुख भोग ॥ २३१ ॥

दुर्गा तथापि उत्तर दयो न, गो तब समीप खल सीघ्र गोन ॥
तब सुमिरि सिंह अंबा अरोहि, छित्वरं[2] भजि जावहु कहिय[3] छोहि २३२
बेढ़न जब लग्गो रोकि[5] बट्ट, अंबा हसी सु तब अट्टअट्ट[6] ॥
सन्नद्ध[7] वीर तिहिं हास संग, लक्खन कढे रु लिय रन मलंग २३३
दुर्गा इम तिनप्रति दिय निदेस, उद्धत खल दानव हनहु एस ॥
तिन गनन सुनत सासन तमंकि[8], हनि दुष्ट सचिव किय तुमुल[9] हंकि
दल तब अधित्यका[10] बुल्लि दुष्ट, रन घोर रच्यो रहि गनन रुष्ट[11] ॥
तब सक्कि कहिय नहि बल त्वदीय[12], विधिको[13] वर जानहु कछु वलीय
महिमा तदीय[14] ब्रहमंड मध्य, विनु नारि[15] भयो खल तू अवध्य ॥
देवी सर[16] इम कहि अठ दिन्न, लघु[17] चउ४करि चउ४हय मारि दिन्न
किय कुणाप[18] सूत दै इक१कलंब[19], पुनि कट्टिय इक१करि ध्वज प्रलंब
तिम प्रदर[20] दोय २।८हनि उदर तास, दुष्ट सु किय मूर्छित जिय दुरास[21]
पुनि बान दये खल लहि प्रबोध[22], कात्यायनीहु[23] किय तबहि क्रोध
दै इक१छुरप्र[24] जनु कालदंड, खलको कोदंड[25] सु किय दु२खंड ॥
असि१खेटक[26]२लै तब महिष अप्प, दोर्यो खल सम्मुह अतुल दप्प[27]
देवी तस मुक्किय बान दोय२, असि१चर्म२गिरे भुव खंडहोय २३९
तब ब्रह्मअस्त्र१जपि असुर तत्थ, सक्रोध[28] तज्यो तृन इक१समत्थ

१ लोभी २ शीघ्र ३ क्रोध करके ॥ २३२ ॥ ५ मार्ग रोककर जब ४ घेरने लगा तब देवी ६ अट्टाट्ट करके (उच्चस्वर से) हसी उस हास्य से ७ सजे हुए लाखों वीर निकले ॥ २३३ ॥ उन गणों ने आज्ञा सुनकर ८ क्रोध करके महिषासुर के मंत्री को मारकर ९ भयङ्कर युद्ध किया ॥२३४॥ तब सेना को १० पर्वत के ऊपर बुलाकर ११ क्रोध से १२ यह तेरा बल नहीं है १३ ब्रह्मा के वर को बलवान् जान ॥२३५॥ १४ उस वर की महिमा ब्रह्मांड में है उससे तू १५ विना स्त्री के अन्यों से अवध्य हुआ है स्त्री से अवध्य नहीं हुआ है यह कह कर १६ बाण १७ शीघ्रता से ॥ २३६ ॥ एक १८ बाण देकर सारथी को १९ मुर्दा (मृतक) कर दिया २० दो बाण २१ खोटी आशावाले को ॥ २३७ ॥ दुष्ट ने २२ चेत पाकर २३ देवी ने भी मानों कालदंड के समान २४ खुरपा के आकारवाला बाण देकर २५ धनुष के दो टुकड़े कर दिये ॥ २३८ ॥ २६ ढाल २७ घमंड से ॥ २३९ ॥ २८ क्रोध सहित एक तिनका लेकर छोड़ा है राजा

आलिंगनादितिन्हकियस्वअर्थ, सिवतदपि टरे द्विजांगनि समर्थ[1]२५७
जो[2] सुद्धभाव सिवको न जानि, तहँ मुनिन सापदिय कोप तानि॥
अर्बुद अचलेस्वर लिंग एस, द्रुत[3] गिरहु टूक व्है भूप्रदेस ॥ २५८
लग्गे यह अक्खंत[4] गिरन लोक, सांकंप[5] भुम्मि हुव सबन सोक॥
दै जान लगे पब्बय दरार, देवन गन पहुँचे द्रुहिन[6] द्वार ॥ २५९ ॥
अज[7] कहिय चलहु मो जुत असेस, मिलि तुष्ट[8] करहु कोपित महेस[9] ॥
जोलौं न लोक व्है प्रलय जाय, अंर[10] चलहु करैं तोलौं उपाय ॥२६०॥
ब्रह्मादि अमर तब सब बिहाल, करि सर्ग[11] सोक आये कृपाल ॥
अचलेश्वर नुति[12] कर व्है अधीन, कछुकाल कछि सिव तुष्टकीन[13]२६१
बुल्ल्ये हर मोमन निर्बिकार, दिय साप तदपि बिप्रन उदार॥
मम लिंग छुयो[14] लिय तदपि मौन, कामातुर[15] रोकी स्वकिय[16] क्यौन२६२
मैं दहन बालखिल्ल्यन समर्थ, पै बिप्र हनैं व्है बेद व्यर्थ॥
तुम अब उपाय यह करहु त्रस्त, मम लिंग अमर अर्चहु[17] समस्त२६३
तब लिंग विष्णु१ धाता[18]२ समेत, पूज्यो सब देवन हित उपेत[19]॥
मुनि बालखिल्ल्य मुख[20] उचित मानि, अर्चन हुव लिंगहिं तदनु[21] आनि
पुनि कहि सत१००रुद्रक जप प्रसिद्ध, उतपात लगे तब मिटन इद्ध[22]
तहँ लिंग बहुरि थप्पिय त्रि३नैनं[23], देवन पुनि लग्गे इष्ट दैन२६५
तब सुनत कहिय यह लिंग तोर, दलिहै प्रभु छुवतहि पाप दोर[24]॥

१वालखिल्य मुनियों को समर्थ जानकर शिव उन स्त्रियों से टलगये॥२५७॥शिव के२ उस शुद्धभाव को नहीं जानकर ३ शीघ्र गिरजाओ ॥२५८ ॥४यह कहते ही ५ भूमि धूजने लगी ६ देवता ब्रह्मा के द्वार पर गये ॥ २५९ ॥ ७ ब्रह्मा ने कहा ९ कोप किये हुए महादेव को ८ प्रसन्न करो १० शीघ्र चलो ॥ २६० ॥ ११ सृष्टि का शोक करके१२स्तुति करके१३शिव को प्रसन्न किये१४स्त्रियों ने मेरे लिङ्ग का स्पर्श किया तब तक मैं मौन रहा उन मुनियों ने१५काम से आतुर हुई १६ अपनी स्त्रियों को क्यों नहीं रोकी ॥२६२ ॥ हे देवताओ तुम सब मेरे लिङ्ग की१७ पूजा करो ॥ २६३ ॥ १८ब्रह्मा१९हित सहित २० आदि २१ जिस पीछे शिवलिङ्ग का पूजन होनेलगा है॥२६४॥ २२ बढे हुए उत्पात मिटनेलगे २३ महादेव ने ॥ २६५ ॥ पापों के२४ फैलाव का नाश करैगा

मख[1]दान[2]आदि सब होय मोघ, उद्धरिहै पापिन संतत ओघ २६६
मत इक्क रुचै तबतो महेस, इहिँ ढंकै[3] पविकरि इंद्र एस॥
स्वीकृत[4] सुहि किन्नी हर समत्थ,तव ढंक्यो पवि करि लिंग तत्थ
सो वज्र तदपि[5] लहि लिंग संग, कर छुवत करत भव[6] पाप भंग॥
जो तँहँ तपस्य[7] सिवरत्ति जाय, नैवेद्य नये[8] जवमय चढाय ॥२६८॥
सो वहुरि[9] जन्म न लहैं सुजान, वलि तँहँ द्विजभोजन जव विधान
जव जिहिँ[10] प्रमान द्विज उदर जाय, पूरुख तितेहि जुग स्वर्ग पाय२६९
जवसत्तू[11] दानहु उचित जत्थ, सब पुण्य निदानन[12]तैं समत्थ ॥
पापी इक अग्गैं भीख पत्त, इक[13]कुडव सक्तु[14] किन्नैं इकत्त॥२७०॥
कुष्टादि[15] रोग वहु तास काय,खल इम सक्यो न वह सक्तु खाय ॥
अचलेसलिंग ढिग जल निवान,बिनु भक्ति न्हाय तँहँ वह विज्ञान[16]
करि सक्तु गंठि उपधान[17] कूर, परिगो वह निद्रा पाप पूर ॥
घृत गंध खोजि मग सुंघि घ्रेय[18], सक्तुन तिन्ह लैगो सारमेय[19]२७२
वह पुण्य सक्तुभव[20] हुव अछेह, जगि दुष्ट लख्यो निज दिव्यदेह ॥
उपज्यो विस्मय करि अति अनंद,मरिगो सु अतुल[21] लहि हर्ष मंद२७३
नृप[22] सो विदर्भ हुव भीम नाम, लीनौं जातिस्मर[23] वपु ललाम ॥

---

१ व्यर्थ होकर यह लिंग पापियों के समूहों का २ निरन्तर उद्धार करैगा ॥ २६६ ॥ हे महादेव आपके मत में रुचै तो इस लिंग को इन्द्र ३ वज्र से ढकदेवै ४ स्वीकार किया ॥ २६७ ॥ वज्र है ५ तोभी लिंग के संग से ६ संसार के पापों को नाश करता है ७ फागुण मास में ८ नवीन जवों का नैवेद्य चढावें ॥ २६८ ॥ ९ पुनि १० जितनी गिनती के जव ब्राह्मणों के पेट में जायें ॥ २६९ ॥ ११ जवों के सातू का दान भी जहां पर उचित है. पुण्यों के सब १२ कारणों से यह बलवान है. एक पापी आगे भीख मांगता हुआ वहां पुगा १३ चारमुष्टि अथवा दो पस्सी (बत्तीस तोला भर वस्तु को कुडव कहते हैं) भर १४ सत्तू उसने इकट्ठा किया॥२७०॥ उसके शरीर में १५ कोढ आदि रोग थे इससे वह सातू नहीं खासका १६ विना ज्ञान॥२७१॥ सातू की गांठ को १७ उसीसा (तकिया) बनाकर १८ जिसकी गन्ध आती थी उसको सोधकर १९ कुत्ता ले गया ॥ २७२ ॥ २० सातू से पैदा होनेवाला २१ अत्यन्त हर्ष से वह मूर्ख मरगया॥२७३॥ २२ वह कुष्टी विदर्भ देश का भीम नामक राजा हुआ २३ पूर्व जन्म को स्मरण करनेवाले ने सुन्दर शरीर पाया

दमयंतिजनक[1] जिहिँ नृप उदार, सुमिरयो सु पूर्व[2]भव पुराय सार २७४
अर्बुद प्रति फग्गुन सतत[3] आय, सव्रत भयो सु सिवव्रत सुहाय ॥
उपवास निसा जागर[4] उपेत, सो जवन सक्तु हाटक[5] समेत २७५
दै द्विजन बहुरि पसु पच्छि पुष्ट[6], तँहँ करतभयो सब सक्तु तुष्ट[7] ॥
यह लखि गालवमुनिप्रमुख[8] आय, पुच्छ्यो नृप विस्मयसवन पाय २७६
तव सक्ति अवनि धन दैन[9] ताम, कहि सक्तुदान तँहँ[10] कोन काम॥
नृपकथित[11] पूर्वभव[12] सुनि निदान[13], सब सक्तु दैन लग्गो सुजान २७७
ऐसैं अचलेश्वर[14] तत्थ आहि, चिंतिय तिन गंगा मिलनचाहि ॥
गिरिजाहु[15] न जानैं जिम प्रगूढ[16], रचि जन्हुसुता[17] विच प्रीतिरूढ २७८
आक्खिय नंदीमुख[18] गनन एह, इक कुंड सुजल विरचहु अछेह ॥
करिहौं तप जलविच कतिक काल, वहु जाहु रचहु तातैं विसाल २७९
सुनि गनन रच्यो तँहँ कुंड स्वच्छ, हुंत[19] सिव[20] प्रविष्ट हुव कपटदच्छ[21]॥
करि तप मिस गंगा भोगकाम[22], जलमग्न भये हर अष्ट जाम[23] २८०
गिरिजा[24] भय संकित गुप्तवास, लग्गे ति[25] करन गंगा विलास ॥
सिव चिंतित गंगा तँहँ सुभाय, अनुभूत[26] सुरत सुख कियउ आय २८१
मुनि नारद कोउक काल माँहिं, निरखे तँहँ आय रु रुद्र नाँहिं॥
करि जोगध्यान तव लखि त्रिकाल, जल देखे गंगारत जटाल[27] २८२

दमयंती (नलकी स्त्री) का १ पिता उस राजा ने २ पूर्व जन्म के पुराय को याद करके ॥ २७४ ॥ आबू पर फाल्गुन महीने में ३ निरन्तर आकर ४ जागरण सहित ५ स्वर्ण सहित जव का सत्तू ॥ २७५ ॥ ६ ताजे मोटे करके ७ सत्तू से प्रसन्न किये ८ आदि आकर राजा से पूछा ॥ २७६ ॥ कि तेरी शक्ति ९ भूमि और धन देने की है १० तहां सत्तू देने का क्या काम है ११ राजा का कहाहुआ १२ पूर्वजन्म का १३ कारण सुनकर ॥ २७७ ॥ १४ अचलेश्वर नामक शिव तहां हैं उन्हों ने गंगा से मिलना चाहा १५ पार्वती नहीं जाने ऐसे १६ बहुत गुप्त १७ गंगा में प्रसिद्ध प्रीति रचकर ॥ २७८ ॥ नन्दी को १८ आदि लेकर गणों से कहा ॥ २७९ ॥ २१ कपट करने में चतुर २० महादेव उस कुंड में १९ शीघ्र घुसे २२ गंगा से भोग करने की कामना से तप का मिस करके २३ आठों पहर ॥ २८० ॥ २४ पार्वती के भय से २५ वे (शिव) २६ अनुभव करके ॥ २८१ ॥ २७ शिव को गंगा में रत देखे ॥ २८२ ॥

दुर्गा[1] सन सो सब कहि उदंत[2], स्वच्छंद[3] गये अजसूनु[4] संत ॥
त्रिनयन[5] गंगारत सुनत तामैं[6], गिरिजाहु कुंड अंतर जँगाम[7] ।२८३।
जब कुपित उमाकौं आत जानि, बुल्ले गंगाप्रति सिव सुवानि ॥
जान्हवि[8] तू याके सम्मुख जाय, नुति[9] विरचि लेहु जिमतिम मनाय ।
मन क्रुद्ध नतो यह तोहि मोहि, छिप्रंहि[10] कछु देहैं साप छोहि ॥
तब गंगा सम्मुह जाय तास, करजोरि कह्यो करि नुति[11] प्रकास ।
दुर्गा मैं जानी तव निदेस[12]१, मन२लै रु बुलाई यहँ महेस ॥
जो मैं तव सम्मत जानती न, आती न इहाँ तो व्है अधीन ।२८६।
यह सुनत दया गिरिजाँहु[13] आनि, जाँन्हवि सन आक्खिय दीन[14] जानि ।
भगिनी[15] इक कंपटी[16] गर्भ टारि, वर और लेहु इच्छित विचारि २८७
तब देवनदी[17] करि प्रनति ताहिं, सय[18] जोरि कह्यो बहुविधि सिराहिं ॥
मैं जदपि देवि दुर्भग[19] अमत्र, कथनीय तदपि तव पतिकलत्र[20] २८८
यामैं प्रसाद[21] तुम करहु एहु, दयितहिं[22] इकदिन तो मोहि देहु ॥
मधुसुक्ल[23] चउद्दसि१४ द्युनिसँ[24] माँहिं, अप्पहु त्रिनैन१ इक१ इष्ट[25] आँहिं
इहिं कुंड रमे मोसंग ईस[26], उत्तम सु होहु तीर्थन अधीस२ ॥
यामाँहिं सदा अब मम निवास, सुनिह्वै२वर दुर्गा दिय सहास[27] २९०
मिलिकैं गंगासन मोदमान, थिर ताहि करी तिहिं कुंडथान ॥
ईसहिं[28] लखि लज्जित गौंडरि[29] एह, गहि लाई गज्जित स्वीय[30] गेह २९१

१पार्वती से सब २ वृत्तान्त कह कर ३ स्वतंत्र विहार करनेवाले ४ ब्रह्मा के पुत्र (नारद) ५ शिव को गंगा में रत सुनकर ६ तहां पार्वती भी कुंड में ७ गई ॥ २८३ ॥ ८ हे गंगा ९ स्तुति करके ॥२८४॥ १० शीघ्र ही ११ स्तुति करके ॥ २८५ ॥१२मैंने जाना कि तेरी आज्ञा लेकर महादेव ने मुझे बुलाई है ॥२८६॥१३पार्वती को दया आकर१४दीन जानकर गंगा से कहा कि१५हे बहिन १६ पति (महादेव)से गर्भ रहने के वर को छोड़कर अन्य जो वर तुझ को वांछित होवे सो ले ॥२८७॥१७गंगा ने नम्रता करके१८हाथ जोड़ कर१९ दुहाग (दुर्भाग्य) का पात्र हूं तो भी तेरे पति की २०स्त्री कहलाती हूं॥२८८। २१ प्रसन्नता कर कि वर्ष भर में एक दिन तो २२ पति मुझे दे २३ चैत्र सुदि चतुर्दशी को२४दिनरात शिव मुझे दे यही मुझे२५प्रिय है॥२८९॥२६शिव२७हास्यपूर्वक॥२९०॥२८शिवको लज्जित देखकर२९पार्वती३०अपने घर में

जवतैं सिव गंगाकुंड३३जत्थ, सद्धिय विधेय तँहँ प्रीतिसत्थ ॥
पुनिनृपकामेस्वरलिंग३४पत्त[1], त्र्यंबक[2]हिँपुजिकियबिहिततत्त ।२९२।
पहिलैं जब दर्पक[3] संभु पुट्ठि, लगि लोल[4] दये सब रोप[5] रुट्ठि ॥
गंगाधर[6] कासी[7]१तव जगाँम, करिसंग तदपि[8] छोरे न काम ॥२९३
इहिँ क्रम प्रयाग२केदार३आय, नैमिस४रु भद्रकर्णक५निकाय[9] ॥
पुनि जंवुमार्ग६पुष्कर७प्रभास८,दमजंगल९आये सिवउदास२९४
गोकर्ण१०रु गंगाद्वार११गैल, वालि पत्त वटेस्वर१२चलिय वैल[10] ॥
गयसिर[11]१२इम भजिभाजि तीर्थ ग्राम[12], त्रिनयन[13] स्मर देख्यो संग ताम
अर्बुद जव आये श्रमित आप, पहुँच्यो तँहँ धँनु[14] करि सज्ज्य चाप॥
उपविष्ट[15] अवनि दै जानु[16] एक१,संधाय विसिख[17] ग्रैंच्यो सटेक२९६
त्रिनयन[18] जब जान्यों यह तजै न, नासन तव खोल्यो गोधिनैन[19] ॥
तासौं कढि पावक[20] जाय ताहि,द्रुत भस्म कर्यो यह सब दाहि२९७
पतिकौं रति यौं तब जानि प्लुष्ट[21], तपकारि अखंड किय ईस तुष्ट॥
हायन[22] हजार१०००वित्तत महेस, बुल्ले रति मंगहु वर विसेस।२९८।
भाखिय रति मोपति भस्म भान[23], वपु अक्षत[24] उठ्ठहु सधनु१बान२॥
तब ताहि दयो वर यह त्रिनैन, उठ्यो जगि सोवत मनहु मैन[25]।२९९

कर धनु १ सर २ लहि निज रूप १ काय २,
परिगो उठि लज्जित संभु पाय ॥

---

१ गया २ महादेव को पूज कर ॥ २९२ ॥ ३ कामदेव ने शिव के पीछे लगकर क्रोध करके ४ चपल ५ बाण दिये ६ शिव ७ काशी गये ८ तोभी कामदेव ने साथ नहीं छोडा ॥ २९३ ॥ ९स्थान ॥२९४॥१०शिव का वाहन ११गयातीर्थ१२तीर्थों के समूहों में१३शिव ने कामदेव को तहां भी साथ ही देखा ॥ २९५ ॥ १४ पुष्पधनु (कामदेव) ने धनुष सज्ज करके१५भूमि के आसन पर एक १६ घुटना देकर१७ बाण को सन्धान करके खैंचा ॥ २९६ ॥ १८ शिव ने जाना कि १९ ललाट का (तीसरा) नेत्र खोला २० अग्नि निकलकर ॥ २९७ ॥ २१ दग्ध जानकर २२ वर्ष ॥ २९८ ॥ रति ने कहा कि मेरा पति भस्म २३ प्रतीत होता है सो२४ घाव रहित शरीर होकर धनुष बाण सहित उठै २५ कामदेव मानों सोकर उठा होवे ऐसे उठा ॥ २९९ ॥

सिव तब निदेस दिय प्रीति संग, अधिकार भजहु निज जाहु *अंग
**स्मर तहँ बनाय सिवलिंग सुद्ध, प्रभु प्रीति अर्थ थप्यो+प्रबुद्ध ॥
इम तँहँ कामेस्वर३४ख्यात ईस, मनलाय तेहु पूजे महीस ॥३०१॥
इक१बेर लह्यो जरि काम अंग, आग्रहवस दूजैं२भो अनंग ॥
पुनि मार्कंडेयाश्रम३५नृपाल, किय सब बिधेय लखि देस काल॥
अग्गैं मृकंडमुनिकै अलुद्ध३, सुत हुव मार्कंडेयाख्य४ सुद्ध ॥
बालक सो हायनँ पंच५बेस, देख्यो अभ्यागत इक१द्विजेस।३०३।
सामुद्रिक६ जानतहो जु सर्ब, अँर्भहिं७ निहारि सुहस्यो अखर्ब८ ॥
आक्खिय मृकंड किम हसन ओस९, तब अतिथि कह्यो सब हेतु तास३०४
सामुद्रिकमैं हौं मैं सुजान१०, अँर्भक तव देख्यो रूपवान ॥
लच्छन१२ याके बपु वे लखात, जिनतैं अजरा१३अमर१४होयजात३०५
किय इक्क१कुलच्छन बिधि१५ कुभा१६सैं, मरिहै सिसु तातैं१७छट्ठ६मास॥
द्विज गो सु यहै कहि इष्ट देस, सोचे मृकंड लहि दुख बिसेस३०६
आक्खिय मुनिबालकसौं उदंत१९, सबको अभिवादन२० करहु संत ॥
२१धी धारि सोहि सबकौं सुधाम, पटु२२ बाल करनलग्गो प्रनाम।३०७।
इक समय सप्त७ऋषि तत्थ आय, परिगो सु बाल तिन्ह प्रनमिपाय
तिन्ह कहिय होहु दीर्घायु तात, पुनि चलनलगे रहि रत्ति२३ प्रात३०८

* हर्ष के साथ अथवा सम्बोधन अर्थ में हे कामदेव. **कामदेव ने+पंडित१ इसकारण वह कामेश्वर प्रसिद्ध हुआ. कामदेव ने एक बेर जलकर पीछा शरीर लिया परन्तु२हठ के वश होकर दूसरी बेर जलकर अङ्ग रहित हुआ. ३निर्लोभ ४ मार्कंडेय नामक पुत्र हुआ ५ पांच वर्ष की अवस्था में. वह अभ्यागत ६ सामुद्रिक शास्त्र जानता था जो ७ बालक को देखकर ८ बहुत हसा ९ हसना क्यों हुआ ॥ ३०४ ॥ १० श्रेष्ट जाननेवाला ११ तुम्हारे बालक को रूपवान देखा १२ इसके शरीर पर वे लक्षण दीखने हैं कि जिनसे १३ जरा (बुढापा) रहित और १४ अमर होजावे ॥ ३०५ ॥ १५ ब्रह्मा ने १६ खोटी कान्तिवाला एक कुलक्षण करदिया है जिससे यह बालक १७ अब से छठे महीने मरजावेगा १८ जहां अपनी इच्छा थी वहां गया ॥ ३०६ ॥ मृकंड मुनि ने बालक से यह १९ वृत्तान्त कहकर कहा कि हे सन्त तू सब को २० प्रणाम कियाकर २१ इस बात को बुद्धि में धारण करके २२ चतुर बालक ॥ ३०७ ॥ २३रात्रि वहां रहकर प्रभात को जानेलगे ॥ ३०८ ॥

धरि ताहि अंगिरा जोगध्यान, पंचम५दिन जान्यौं सिसु अप्रान[1]॥
कहि सबन दयो तिन्ह लखि त्रिकाल[2],बुल्ले तुम जावहु बहुत बाल३०९
छिप्रहि[3] तस आयो आयु छेह, दिनच्यारि४कढ्ढि तजिहै सु देह ॥
सप्त७हि मुनि सुनि करि बाल सोक,लै ताहि गये तब सत्यलोक३१०
सप्त७न प्रनाम किय प्रथम सुद्ध, पुनि किय उ बाल बंदन प्रबुद्ध॥
बहुजीवन आसिख दिय बिरंचि[4],सुनि बैठे ते हिय अमृत सिंचि३११
विधि पुच्छिय आगम[5] हेतु[6] बत्त,तिन प्रनति[7] पुव्व किय अरज तत्त॥
यह सिसु मृकंड द्विजको अनाथ,सोवैं सु कालके उदर साथ३१२
हम भुल्लि[8] कह्यो चिरजीवि होहु,सुरज्येष्ठ[9] अप्पं किय हुकम सोहु॥
मित्थ्यापन तातैं निज मिटाय,पोतक[10] बचैं सु करिये उपाय।३१३।
सुनि द्रुहिन[11] कहिय अब तजहु सोक,लहिहै यह जीवन ज्यौं त्रिलोक
इक१कल्प आयु इम तिहिं दिवाय,पहुँचायो पोतैं[12] सु निजनिकाय३१४
द्विज सौं हुव मार्कंडेय दच्छ[13], अर्बुद[14] तप सद्धिय संतत[15] अच्छ ॥
जिहिं आश्रम नृप रमनेस जाय,करि सब विधेय किय पूतकाय[16]३१५
उद्दालक थप्पिय लिंग३६एक, बलि तत्थ गयो नृप सह विवेक॥

उनमें से अंगिरा ने योगध्यान से जाना कि आज से पांचवें दिन यह बालक १मरजावेगा२भूत,वर्तमान और भविष्यत् के ज्ञानवाले ने अन्य ऋषियों से कहा कि तुमने तो बालक को बहुत जीवी होने का आशीर्वाद दिया है।३०९। और इसकी आयु का छेह तो ३ शीघ्र ही आगया ॥ ३१० ॥ ४ ब्रह्मा ने उस बालक को बहुत जीने का आशीर्वाद दिया जिसको सुनकर सप्तऋषि अपने हृदय को मानों अमृत से सींचकर बैठे ॥ ३११ ॥ ब्रह्मा ने ५ आने का ६ कारण पूछा ७ नम्रता पूर्वक ॥ ३१२ ॥ ८ हे ब्रह्मा ९ आपने भी यही आज्ञा की है १० बालक बचै सो उपाय करो ॥ ३१३ ॥ ११ ब्रह्मा ने कहा कि अब शोक छोड दो जैसे तीन लोक आयु लेते हैं तैसे ही यह लेवेगा (शास्त्रों में नित्य नैमित्तिक और महा ये तीन प्रकार का प्रलय माना है इनमें मनुष्यों का जीवन मरण तो नित्य प्रलय है और तीनों लोकों का मिटजाना नैमित्तिक प्रलय है और सम्पूर्ण ब्रह्मांड का नाश होकर प्रकृति रूप होजाने को महाप्रलय कहते हैं सो यहां त्रिलोकी के समान आयु कहने से प्रलयान्त अर्थात् एक कल्प की आयु होना कहा) १२ बालक को अपने घर पहुँचाया ॥ ३१४ ॥ १३ चतुर १४ आबू पर्वत पर १५ निरन्तर १६ शरीर को पवित्र

रुचिसौं तँहँ संकर पुज्जि राय, तिम सिद्धलिंग३७पहुँच्यो हिताय
सिद्धन वह थप्पिय परम सुद्ध, पूज्यो सु भूप विधि जुत प्रबुद्ध ॥
तस निकट कुंड इक विमल तोय,हितकारि तँहँ न्हायो प्रनत होय
रमनेस गयो गजद्रह३८बहोरि, जँहँ न्हान१दान२किय प्रीति जोरि ॥
अग्गैं सब दिग्गज व्है इकत्त, तप किय ऐरावत प्रमुख तत्त॥३१८॥
पुनि देवखात३९भूपति पधारि, किय न्हान१दान२अति पुण्यकारि
खोद्यो सब देवन पुण्य खातँ, जँहँ व्है तदनंतर अग्ग जात॥३१९॥
श्रीकंठलिंग इक अग्ग सुद्ध, व्यासावतार थप्पिय प्रबुद्ध ॥
अघ सप्त७भवजे व्है जँहँ अतीतँ, पुज्जिय वह व्यासेस्वर४०पुनीत
वलि पत्त गोतमाश्रम४१प्रवीर, धी सुद्ध करे तँहँ उचित धीर ॥
अर्बुद मुनि गोतम अग्ग आय, सिवहित किय दुस्सह तप सुभाय
वहु अब्द कष्ट इम सहत विप्र, छिति भेदि कढ्यो इक लिंग छिप्र
दिय गुप्तगिरा तँहँ यह निदेस, आराधहु मुनिवर लिंग एस ।३२२।
आक्खिय मुनि सो सुनि भक्ति आस,वृषकेतु करहु यँहँ सततँ वास
किन्नी सुहि स्वीकृतँ व्योमकेस,अधिपति तँहँ सज्जिय विधि असेस
प्रतिमा१तँहँ गोतमकी हु पुण्य, अर्चतँ जिहिँ पावत फल अगुण्य॥
सुभ विमल कुंड२ताकै समीप, मज्जनँ मुख तत्थहु किय समीप
व्है श्राद्ध गयाफल दैनहार, इम इंदुग्रहनँ बिच फल अपार ॥
अरु देत तत्थ जो तिल उमाहि, तिलसंख्या हायनँ स्वर्ग ताहि ३२५
रमनेस सबै करि प्रीति रत्त, पुनि कुलसंतारन४२ तीर्थ पत्त ॥

क्रिया ॥ ३१५ ॥ ३१६ ॥ १ पंडित ने २ निर्मल जल ॥ ३१७ ॥ ३ ऐरावत आदि ने ॥ ३१८ ॥ ४पवित्र खड्डा ॥ ३१९ ॥ ५ सात जन्मों के पाप जहां६ बीतते हैं ॥ ३२० ॥ ७ बुद्धि को शुद्ध करके ॥ ३२१ ॥ ८ वर्ष ९ भूमि को भेद कर १० शीघ्र ११ आकाशवाणी ने यह आज्ञा की ॥ ३२२ ॥ १२ हे महादेव १३ निरन्तर वास करो १४ स्वीकार की१५ महादेव ने १६ राजा रमनेस चहुवान ने ॥ ३२३ ॥ १७ मूर्त्ति १८ पूजते हैं वे १९ स्नान आदि॥ ३२४ ॥ २०चन्द्रग्रहण में स्नान करने से२१जितने तिल होवें उतने वर्ष स्वर्ग में वास करता है ॥ ३२५ ॥

जँहँ न्हान बनैं जो पुरायतोय, इकबीस२१ पुरुख उद्धार होय॥३२६॥
इक भो अप्रस्तुतनाम अग्ग, महिपाल सु लग्गो पाप मग्ग ॥
नहिँ पढन१दान२जप३जजन४नीति५,परधनकौं जिमतिम लैन प्रीति
विप्रादि बरन ललना बुलाय, रक्खैं तिन लोलुप नीचराय ॥
इकनिस दिय पितरन स्वप्न याहि,चंडाल न डारहु नरक चाहि३२८
सुख स्वर्ग लयो हम करि सुकर्म, वह क्यों बे बिगारन भजि अधर्म॥
यह सुनत भूप हिय बोध आय, प्रातहि जागि रोयो कष्टपाय॥३२९॥
अक्खिय बुलाय विप्रन उदंत,मम पितरन व्है किम दिवं महंत॥
द्विज मुनिन कहिय है यह दुराप, पापिष्ट करयो तैं सततं पाप ३३०
करि तीर्थ पूत व्है सह कलत्र, सुभ करहु तदनु पितृमेध सत्र ॥
जो सुनत चल्यो तीर्थन जनेसैं,द्रुत न्हाय परसि सब पुरायदेस३३१
आयो पुनि अर्बुद तजि अधर्म, किय कुल संतारन उचित कर्म ॥
ततकाल विमानन बैठि तास,सब पितर करत हुव स्वर्गबास३३२
निजदेह सहित सोहू नरेस, अमरालय गो लहि पुरायएस ॥
रमनेस तत्थ चहुवानराय, विधि श्राद्ध१ दान२ मुख सब बनाय३३३
पुनि रामतीर्थ४३ पहुँच्यो पुनीत, पहुँ सद्धन भो तँहँ विहित प्रीत॥
अर्जुन जदुवंसी भूप अग्ग, आत्रेयदत्त लै वर उदग्ग ॥ ३३४ ॥
पुनि धेनु अर्थ जमदग्नि मारि, गो खल लगाय निजबंस गारि ॥
मुनि नारि रेनुका राम माय,सहँ गोन करयो साध्वी सुभाय३३५

१पवित्र जल में २राजा ३स्त्रियों को बुलाकर ४कामी. उसको ५अब क्यों मिटाता है ६ज्ञान आकर ७ स्वप्न का वृत्तान्त कहा कि हे महन्तो मेरे पितरों को ८ स्वर्ग कैसे मिले ९ दुर्लभ है १०तूने निरंतर पापकर्म किया है ॥ ३३० ॥ ११ पवित्र होकर १२ स्त्री सहित शुभ कार्य करके १३ जिस पीछे पितृमेध नामक १४ यज्ञ कर १५ नरेस ॥ ३३१ ॥१६ कुल का उद्धार करने को१७तुरन्त ॥ ३३२ ॥ १८ स्वर्ग में गया॥ ३३३ ॥१९राजा रमनेस२०दत्तात्रेय से वर लेकर ॥ ३३४ ॥२१गौ के अर्थ जमदग्नि मुनि को मारकर२२ परशुराम की माता २४पतिव्रता के स्वभाव से २३ पति के साथ जल गई॥ ३३५ ॥

पुनि राम आय अर्बुद महंत, सद्धिय तप सिवहित पुनत संत ॥
सत१००अब्द जात व्है सिव प्रसन्न,पुच्छिय मुनि क्यों यँहँ तप प्रपन्न
सुनि राम कहिय मैं आरि असेस, मारों सु अस्त्र अप्पहु महेस ॥
तव दिन्न पासुपत अस्त्र ताहि,इतरहु सिव अक्खिय हित उमाहि३३७
इहिँ अस्त्र जोर तू व्है अजेय, सत्रुन हनि सद्दहु इष्ट श्रेय॥
पुनि तव आश्रम ढिग यह निपानँ,सुभ रामतीर्थ४३वजिहै सुजान३३८
मिलि अत्थ पुण्णिमा१५उर्ज मास,जे श्राद्ध करैं सुनि पुराय जास॥
पितृमेध सत्रफल मनुज पाय, जे व्है अजेय स्वर्लोक जाय ।३३९।
करि रामतीर्थ४३सब विहित काज, गो कोटितीर्थ४४कर्णाटराज॥
त्रयकोटिलक्खपंचास३५०००००० जुक्त,एअज्जछेलसबतीर्थउक्त
पुहवी जब होवत कलि प्रचार,भजिजाततीर्थ तव पापभार॥
ठहरैं नहिं कलिजुग च्यारि४ठाम,पुष्कर१अरु अर्बुद२पुराय धाम३४१
कुरुखेत्र३ तथा कासी४ प्रदेस, लग्गैं न इहाँ कलिकाल लेस ॥

तव अर्धकोटि५००००००कासी रहंत,
कुरुखेत कोटि इक१००००००तिथि कहंत ॥ ३४२ ॥
त्यों निवसत पुष्कर कोटि१००००००तित्थ,
अर्बुद पुनि जावत कोटि१००००००इत्थ, ॥

थिल ते रहंत जिहिं पुरायथान,सो कोटितीर्थ४४कहिपे सुजान३४३
करि तँहँ विधेय फल कोटि पुराय,पहुँच्यो नृप चंद्रोद्भव४५पुराय॥
पहिलैं सँसि१दिनकर२सैन पाय, हरि राहु सीस कट्टिय हिताय३४४
गहिकैं पन दोउन२करन ग्रास, यह जानि विधुंतुद सज्ज ग्रैास ॥

१विशेष नम्र होकर२सौ वर्ष गये शिव ने प्रसन्न होकर पूछा कि हे मुनि तप में क्यों लगा है ॥ ३३६ ॥ ३ परशुराम ने कहा कि मैं ४ सब शत्रुओं को मारूं ५ और भी ॥ ३३७ ॥ ६ अपना श्रेष्ठ प्रिय कार्य सोधना ७ जलाशय ॥ ३३८ ॥ ८ कार्तिक मास की पूर्णमासी के दिन ९ यज्ञ का । ३३९ । १० चन्द्रमा और ११ सूर्य की सैन से विष्णु ने देवताओं के हित के लिये राहु का मस्तक काटा था ॥ ३४४ ॥ जब चन्द्र सूर्य का ग्रास करने का प्रण लेकर १२ राहु सज्ज १३ हुआ

लै कछु उद्वर्तन[1] लेप पानि, उपजावहु अंगज[2] जत्न आनि ॥३६२॥
रचिहै जिम जैसो रूपवान, सुत तैसो व्हैहैं अति सुजान ॥
औरससौं[3] जामैं गुन अपुब्ब, पूजा वह लहिहै सबन पुब्ब[4] ॥३६३॥
मृड[5] इम अनेक कहि लिय मनाय, लाये निकाय[6] सुत हरख लाय॥
तबतैं वह तुंग[7] रु तीर्थ धाम, नगपर[8] ईसानीसिखर४६नाम॥३६४॥
तहँ द्विजन पुज्जि मिहिकावतीस[9], आयो सु ब्रह्मपद४७लै असीस॥
पहिलैं पधारि अर्बुद मजेस, अचलेस दरसहित सुर[11] असेस॥३६५॥
सुर१मुनिन२सबन तहँ नाय सीस, अकिखय विरंचि[12] सन हे अधीस॥
जासौं अकष्ट[13] व्है मुक्ति जाय, उपदिष्ट[14] करहु ऐसो उपाय ॥ ३६६॥
विधि[15] रोप्यो वह सुनि सह बिबेक, अर्बुदपर अप्पन चरन एक॥
अरु कहिय छुवहु याकौं उदार, है बिनु प्रयास गति दैनहार३६७॥
अध्वर[16]१ ब्रत२ दान३ रु जप४ अनंत, मम[17] अंघ्रि गिनहु तिनतैं महंत
अर्चै[18] इहिं पुण्णिम उर्जमास[19], बहुरि न लहैं सु जन गर्भबास३६८
व्हैहै सित१कृत[20]जुग२मिति विहीन[21], लोहित[22]१त्रेता जुग२[23]मिति लीन३
पीवल[24]१पुनिद्वापर२लघुप्रमान३, भौं[25]असित[26]१कलि२रुअतिअल्पभान[27]
करिश्रवनबचनयह[28]द्रुहिन कोहि, सबहुव कृतार्थ[29]पयपुज्जि सोहि ॥
तबतैं सु ब्रह्मपदतीर्थ४८ तत्त, रमनेसहु पुज्जिय भावरत्त ॥३७०॥

दिन होवेगा १ उबटन का लेप हाथ में लेकर २ पुत्र उपजा ॥ ३६२ ॥ ३ उदर से पैदा होनेवाले से भी उसमें अपूर्व गुण होवेंगे और सब से ४ पहिले पूजा लेवेगा ॥ ३६३ ॥ ५ महादेव इस प्रकार अनेक बातें कहकर ६ अपने घर लाये ७ ऊंचा ८ पर्वत पर ॥ ३६४ ॥ ९मिहिकावती पुर का स्वामी रमनेश चहुवान १०ब्रह्मा ११सब देवता ॥ ६५ ॥१२ब्रह्मा से कहा कि हे स्वामी १३विना कष्ट किये ही जिससे मुक्ति होजावे ऐसा १४ उपदेश करो ॥ ३६६ ॥ यह सुनकर विचार के साथ १५ ब्रह्मा ने आबू पर अपना एक चरण रोपा ॥ ३६७ ॥ १६ यज्ञ, इन सबसे मेरे १७ चरण को बडा जानो १९ कार्तिक की पूर्णिमासी को इसका १८ पूजन करैं ॥ ३६८ ॥ यह चरण २० सत्ययुग में श्वेत रंग का और २१ प्रमाण रहित होवेगा, त्रेतायुग में २२ लाल रंग और २३ प्रमाणवाला, द्वापर में २४ पीला रंग और छोटे प्रमाणवाला, कलियुग में २६ श्याम २५ कान्ति और बहुत अल्प २७ जान पडेगा ।३६९। २८ ब्रह्मा का यह वचन सुनकर उस पग को पूज कर सब २९ कृतकार्य हो-

*बसुधेस त्रिपुष्कर४८गो बहोरि,जँहँ किय बिधेय हिय प्रेम जोरि
पहिलैं बसिष्टके मख पुनीत, आये ब्रह्मादिक सुर अभीत ।३७१॥
बिधि पन लिय अर्बुद रहहिं जावँ,हम संध्या पुष्कर करहिं तावँ॥
चंवि इम बिरंचि पुष्कर चलंत, अटके बसिष्ट कहि यह उदंत॥
तुम चिर करि ऐहो जाय तत्र, अतिसन्य समीप मख कर्म अत्र
तातैं यह पुष्कर बुल्लि तीन३, प्रभु करहु नित्य संध्या अधीन३७३
बुल्ले तब दुर्मन लखि बसिष्ट, पुष्करहि ज्येष्ट१मध्य२ रु कनिष्ट३
तबतैं गिरि अर्बुद जानि ताहि, चहुवान त्रि३पुष्कर ४८ पत्त आहि
सावित्रीकुंड४६ हु तस समीप, मुद सह बिधेय किय तहँ महीप ॥
किय तदनु रुद्रन्हद५० बिधि बिसेस, हनि अंधकैं न्हाये जहँ महेस
पुनि पत्त गुहेस्वर५१ पुण्यथान, जँहँ लिंग गुहाबिच राजमान ॥
सिद्धन जो थप्पिय अग्ग सुद्ध, पुज्ज्यो सु भक्त भूपति प्रबुद्ध ।३७६
अविमुक्त बिपिन५२ पुनि जाय आप, वहु सब बिधेय सल्लिय अपाप
जब अग्ग नहुष हुव स्वर्गईस, तब आय सची अर्बुद गिरीस ।३७७।
अवि सुक्त बिपिन करि तप उदार, पुनि इंद्र लह्यो लहि दुक्ख पार
तब बर पुलोमजा दिन्न ताहि, अबिमुक्त होहु जन पुज्जि याहि३७८
भर्त्ता बिमुक्त मैं लहिय जेम, पावहु असेस नर१नारि२ तेम ॥
वन सोहु पूजि अविमुक्त नाम, दुर्गा महेस्वर ५३नृप जगाम।३७९॥

गये ॥ ३७० ॥ * चहुवाण १ पावत्र २ देवता निर्भय होकर ॥ ३७१ ॥ ३ ब्रह्मा ने नियम लिया कि ४ जबतक हम आबू पर रहेंगे ५ तबतक सन्ध्या पुष्कर में करेंगे यह ६ कहकर ७ ब्रह्मा पुष्कर जानेलगे जिनको यह८वृत्तान्त कहकर वसिष्ट ने रोका ॥ ३७२ ॥ ९ देरी करके आओगे और यज्ञ का काम १० अत्यन्त समीप है इसकारण से तीनों पुष्करों को यहां ११ बुलाकर सन्ध्या करो ॥ ३७३ ॥ वसिष्ट को उदास देखकर तीनों पुष्करों को आबू पर बुलालिये १२ पुष्कर को ॥ ३७४ ॥ १३ अन्धक असुर को मारकर । ३७५ ॥ १४ पवित्रस्थान १५ गुफा में १६ शोभायमान ॥ ३७६ ॥ १७ अविमुक्त वन १८ आगे जब नहुष १९ स्वर्ग का स्वामी (इन्द्र) होगया था तब २०इन्द्राणी ने॥३७७॥२१इन्द्राणीने उस वन को वर दिया कि इसका पूजन करके मनुष्य २२मुक्त होजाओ २३छूटेहुए पति को मैंने पाया इसीप्रकार २४ सब २५ गया

थप्यो जु लिंग नृप धुंधुमार, पुज्ज्यो सु सद्धि सबविधि प्रकार ॥
पुनि जाय महौजसन्हद५४प्रवीन, करि न्हान१श्राद्ध२तप३दान४कीन ॥
हनि वृत्त[1] इंद भो छबि विहीन, लहि घोर ब्रह्महत्या मलीन ॥
तब जीव[2] कह्यो करि तीर्थ सक्र, निज तेज लहहु अटि अवनिचक्र[3]
तब तीर्थ करत अर्बुद पधारि, न्हायो सु महौजसन्हद बलारि[4] ॥
छिप्रहि[5] कुभा१रु दुर्गंध२छोरि[6], बासव[7] स्वकांति पाई बहोरि ।३८२।
तँहँ न्हाय रु जंबूतीर्थ५५ आय, सद्धिय बिधेय पद्धति[8] सुभाय ॥
निमि हुव बिदेह अग्गैं नरेस, आयो सु वृद्ध अर्बुद प्रदेस ॥३८३॥
सुनि ताहि गये मुनिजनहु सर्ब, एकत्र भये गिरिवर अखर्ब ॥
तिनमैं मुनि लोमस भक्ति जुत्त, तीर्थन प्रभाव वरन्यौं बहुत्त३८४।
बुल्ल्यो सु सुनत भूपति बिदेह, सठ मैं न तीर्थ परसे सनेह ॥
अब रूढ[9] भयो जरठत्व[10] आय, ह्वै कौनरीति सब तीर्थ हाय।३८५
सो सुनि मुनि लोमस सदय[11] सुद्ध, सब तीर्थ बुलाये अद्रि उद्ध[12] ॥
अक्खिय निमिसौं पुनि बचन एह, होवहु न दुखित न्हावहु विदेह
जे तीरथ जंबूद्वीप माँहिं, एकत्र करे ते अत्थ[13] आँहिं ॥
न्हायो प्रसन्न यह सुनि नरेस, तबतैं सु तीर्थ अर्बुद प्रदेस॥३८७॥
ततकाल दैन निमिकौं प्रतीति, तँहँ उग्गो जंबू[14] तरु सुरीति ॥
तबतैं सु जंबुतीर्थहि५५कहात, तँहँ न्हाय१दान२किय खूब ख्यात॥
पुनि गंगाद्वार५६ हु भूप पत्त, करि ध्यान१न्हान२ बहु दान३दत्त
अचलेस बुलाई जाहि अग्ग, मंदाकिनी[15] सु तँहँ सग्ग[16] मग्ग[17]३८९

१ वृत्रासुर को मारकर २ बृहस्पति ने कहा ३ भूमि चक्र पर फिरकर ॥ ३८१ ॥ ४ बल दैत्य का शत्रु (इन्द्र) ५ शीघ्र ही ६ खोटी कान्ति ७ इन्द्र ने फिर अपनी कान्ति पाई ॥ ३८२ ॥ ८ उचित मार्ग साधकर ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ अब १० बुढापा ९ सवार होगया । ३८५ । ११ दया सहित १२ आबू पर्वत के ऊपर सब तीर्थों को बुलाये ॥ ४८६ ॥ १३ यहां पर हैं ॥ ३८७ ॥ १४ जांबू का वृक्ष ऊगा ॥ ३८८ ॥ १५ गंगा को १६ संगम करने के १७ मार्ग से अचलेश्वर ने पहिले बुलाई थी ॥ ३८९ ॥

आयो कंठेस्वर५७ बहुरि आप, देवी उमा[1] जु थप्पिय दुराप[2] ॥
सो लिंग पुज्जि मन१ काय२ सुद्ध, पहुँच्यो गंगेस्वर५८ पुनि प्रबुद्ध
अग्गैं उमा१ रु गंगा२अखर्व, सौभाग्य[3] होड थप्पिय सगर्व ॥
बुल्ली यह१ मैं वह२ मैं बिसेस, उपज्योहि परस्पर वाद एस ३९१
हिमगिरिजाअक्खियपर्णैंनहोहि,सिवलिंगमिलैजिहिंअधिकसोहि ॥
लग्गी तब खोजन लिंग नव्य[5], भूधरजा पायो प्रथम भव्य[6]३९२
बुल्लिय मिलि मंगहु वामदेव[7], इच्छित तिहिं जच्चे उभय२ एव ॥
व्है लिंग विदित यह पापहार, अप्पहु अभीष्ट सो इक १ उदार ॥
प्रमदा सउत्तिभव दुक्खपाय, अच्चैं इहिं लिंगहिं प्रनत आय ॥
सौभाग्य१पुत्र पावैं सु अंघ, अप्पहु द्वितीय२वर एह सद्य ।३९४।
जंपिय तथास्तु भूतेस जत्थ, तवतैं कंठेस्वर५७ बिदित तत्थ ॥
आये बहोरि सुरसरित अैनैं, ताकेहु इष्ट बखसे त्रि३नैन॥ ३९५ ॥
तवतैं कंठेस्वर ढिगहि तत्थ, प्रकटे गंगेस्वर५८ हू समत्थ ॥
करि पूजन तँहँ नृप सुद्धकाय, अर्चन किय कोटीलिंग५९ आय॥
इत्यादि तीर्थ अर्बुद असेस, नमि भक्ति सुद्ध परसे नरेस ॥
सुबरनं जिम सोलह१६ ताव सुद्ध, इम दिव्यदेह व्है नृप अलुद्ध ॥
अब श्रीअचलेश्वर८० धाम आय, पूजन बहोरि किय मोद पाय
अर्बुद पवित्र१थिर२होन अग्ग, मुनिवर बसिष्ट तप किय सुमग्ग
सत१००अब्दतैंपेफलअसनपाय,पुनिद्वैसत२००जीरनपत्रखायैं ॥

१पार्वती ने२दुर्लभ लिंग को स्थापन किया था उसको पूजा ३ सुहाग में कौन बड़ी है इस बात की होड स्थापी ॥ ३९१ ॥ ५ पार्वती ने कहा ६ नवीन लिंग ढूंढने लगी सो कान्तिमान लिंग ६ पार्वती को मिला ॥३९२॥ ७ जब महादेव ने मिलकर कहा कि मांग तब पार्वती ने दो वांछित मांगे ॥ ३९३ ॥ सोक से ९ पैदाहुए दुःख को पाकर जो ८स्त्री ११ नम्रता से इस लिंग को १० पूजै १२ तुरन्त (शीघ्र)१३तुरन्त ॥३९४॥१४कहा१५स्थान पर आये जिसको भी महादेव ने वर दिया था ॥ ३९५ ॥ ३९६ ॥१६सोलह बार तपाने से जैसे सोना शुद्ध (कुन्दन) होजाता है तैसे१७निर्लोभी राजा रमनेस दिव्यदेह होगया ॥ ३९७ ॥ ३९८॥ सौ १८ वर्ष तक फल भोजन किया१९ सूखे पत्ते खाये

सतपंच५००पानकियजलहिस्वच्छ,हायनेहजार१०००पुनिपोनभच्छ
सहि पंच५अग्गि१आतप१अनेहैं, हेमंत२सलिल२बरखा३बिगेहै३
किन्नौं तव दारुन दमि स्वकाय, ईसान भये तव प्रकट आय४००
तँहँ लिंग कढ्यो भुव भेदि तूर्ण, दिन्नौं निदेस पुनि प्रीति पूर्ण
वर इष्ट चित्त तव सो बसिष्ट, निस्संसय मंगहु धर्मनिष्ट ४०१
द्विज तबहि कह्यो परि ज्यौं द्रुदंड, इहिं लिंग वास मंडहु अखंड
पुनि ईस कह्यो अब यँहँ सदाहि,बसिहौं बसिष्ठ तव हित निबाहि
इसें असितें चउद्दसि१४कोउ आय,तव कृत नुति पढिहै प्रनत ताय
थिर सुख मदीयँ लहिहै सु थान, धरिहै न जन्म पुनि सावधान
मम लिंग कढ्यो अचलहिं बिदारि, अचलेसनाम भजिहै अघारि
चलिहै न छाँह याकी कदापि,थिर ईस दयो इम लिंग थापि
इस मास चउद्दसि१४असित आय,त्यौंही तपस्य गततिथि१४सुभाय
जो श्राद्धकरैं तहँ भक्ति जोरि, बसिवो सु गर्भ न लहैं बहोरि४०५
रहिकैं दिस दक्खिन जँहँ जटाल, पूजैं जु पुष्यनक्षत्र काल ॥
तस पितर तृप्ति पावैं अनंत, हयमेध सत्रफल सो लहंत ।४०६।
वह लिंग पञ्चअमृतनें न्हवाय, जन धन्य लहैं सिवलोक जाय ॥
पुनि अर्द्ध प्रदक्खिन१अरु प्रनाम२,करि ताहि लहैं नर सर्व काम

हजार वर्ष तक१पवन भक्षण किया२ग्रीष्म ऋतु के४समय३पंच अग्नि सही (पांच जगह गोलाकार अग्नि लगाकर बीच में बैठकर तपने को पंचाग्नि तप कहते हैं)हेमन्त ऋतु में जल में बैठकर तप किया और वर्षा में५विना घर रहा। ६ शिव प्रकट हुए ७ शीघ्र, हे ९ धर्म की निष्ठावाले बसिष्ठ तुम्हारे चित्त में जो ८ प्रिय होवे वह मांग ॥४०१॥ १० काष्ठ के दंड के समान पड़कर११ शिव ने फिर कहा ॥ ४०२ ॥१२आश्विन१३ कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को१४तुम्हारी की हुई स्तुति को नम्र होकर १५ मेरा स्थान पावेगा ॥ ४०३ ॥१६ पर्वत को फोड़कर१७पापों को हरण करनेवाला१८ इसकी छाया कभी नहीं हिलेगी ॥ ४०४ ॥ इसीप्रकार १९ फाल्गुन वदि चतुर्दशी को ॥४०५॥ २० महादेव को पुष्य नक्षत्र में लिंग के दक्षिण दिशा में रहकर पूजें २१ अश्वमेध यज्ञ का फल लेता है ॥ ४०६ ॥ २२ पंचामृत (दूध, दही, घृत, खांड और सहत) से स्नान कराकर २३ आधी प्रदक्षिणा (शिव लिंग के पूरी प्रदक्षिणा नहीं देते) और नमस्कार करके सब समय में शिवलोक लेते हैं ॥ ४०७ ॥

अग्गैं अचलेस्वर निकट आय, किन्नौं सुक[1] पच्छी निज कुलाय[2]॥
पानी हित आवैं सुक सु पास, तब अर्द्ध प्रदक्खिन होय तास४०८
किन्नौं न जदपि मति[3] पुव्व कर्म, सिव तदपि ताहि दिय अतुल सर्म[4]॥
पच्छी मर्यो सु जब काल पाय, वह भो तब भूपति वेणु आय४०९
सो सुमिरि पूर्वभव[5] वत्त सर्व, आयो नृप अर्बुद नति अखर्व[6]॥
पूजे न ईस[7] धरि चित्त चाह, लग्गो सु प्रदक्खिनकेहि लाह।४१०।
पुनि जनन[8] तत्थ पुच्छिय महीस, अर्चत तू बिधिजुत क्यों न ईस॥
नहिं करत श्राद्ध१जप२दान३न्हान, ४इढदेत प्रदक्खिन कहि निदान[10]
अक्खिय तब पुराय[11] जु हुव अखर्व, लग्गे ति[12] प्रदक्खिन करन सर्व॥
ऐसे अचलेस्वर६२जँहँ उदार, धरनीसैं[13] गयो तँहँ भक्ति धार।४१२।
भँव[14] पूजि प्रदक्खिन करि सुभाइ, किन्नौं करार चिंतन[15] कराइ॥
प्रभु भेट कट्टि सिर करि प्रबुद्ध, सिवलोक्क गयो नृप सत्थ सुद्ध४१३
अग्गैं जजाति अर्बुद प्रभाव, पुच्छिय पुलस्त्य मुनि सन सचाव॥
अक्खिय मुनि सो क्रम सद्धि आप, पहुँच्यो नरेस सिवढिग बिपाप[16]४१४

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचरणडासिवंशवर्णने समष्टिताऽर्बुदाचलसर्वतीर्थकर्णाटरा

१सूवा (तोता) पच्छी ने २ घुरसाला बनाया ॥ ४०८ ॥ आधी प्रदक्षिणा का यह कार्य उसने ३ बुद्धि पूर्वक नहीं किया था तोभी शिव ने उसको अतुल ४ सुख दिया, वह पच्छी मरे पीछे वेणु नामक राजा हुआ ५ पूर्वजन्म की सब वार्ता याद करके ६ बहुत नम्रता के साथ आबू पर आया ७ शिव का पूजन तो नहीं किया ॥ ४१० ॥ ८ मनुष्यों ने पूछा कि हे राजा तू विधि पूर्वक महादेव को क्यों नहीं ९ पूजता १० किसकारण से प्रदक्षिणा ही देता है ॥ ४११ ॥ ११जो बड़ा पुण्य पहिले हूआ था यह कहा १२ वे पूछनेवाले भी१३भूपति रमनेस चहुवाण ॥ ४१२॥ १४ महादेव को पूजकर १५ मस्तक भेट करने का करार किया था उसको याद किया ॥४१३॥ आगे ययाति राजा ने पुलस्त्य मुनि से आबू का प्रभाव पूछा था और मुनि ने कहा था वह क्रम साधकर १६ पाप रहित होकर राजा रमनेस शिव के पास गया।४१४।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में तीर्थों के समष्टि (समूह) रूप आबू पर कर्णाट देश के

जरमणेश८७श्रीमदचलेश्वरार्थशीर्षार्पणं षष्टितमो६०मयूखः।६०।

आदितो द्व्युत्तरशततमः ॥ १०२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सिवहिँ अप्पि रमनेस८७सिर, लहु[1] पत्तो सिवलोक ॥
मच्यो सुनत मिहकावती, सबन अपूरब सोक ॥ १ ॥
प्रेतकर्म सब सद्धि पुनि, भट१सचिव२न अतिभास ॥
धर्यो तखत तव उदय[2] धर, दिनकर[3] भगवतदास ॥ २ ॥

षट्पात्

भगवतदास नरेस[4] भयो करनाट धराधर ॥
सस्त्र१सास्त्र२पढि सकल प्रथित[5] लिन्नों उदारपन ॥
मथुरापति जद्दव महीप बसुसेन महाबल ॥
तनया बिंदा८८।१तास एह परन्यौं गुन उज्जल ॥
इक१वाजपेय१दुव२मख चयन[6]२कुंडपाय[7]२दुव२जिहिँ करे ॥
हाटक[8] समप्पि सूतन[9] सहित भूदेवन[10] आलय[11] भरे ॥ ३ ॥
प्रतिष्ठानपुर[12] भयउ सातवाहन नरेस इत ॥
कुंतल रट्ठ[13] अधीस पाय ससि[14] बंस प्रतिष्ठित ॥
सर्ववर्म अभिधान[15] सचिव जाके गुनसागर[16] ॥
द्विज गुनाढ्य[17] तिनंदिनन भयो कवि विबुध[18] धुरंधर ॥

राजा रमणेश का श्रीमान् अचलेश्वर के अर्थ मस्तक भेट करने का साठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६० ॥ और आदि से एक सौ दो मयूख हुए ॥१०२॥
१ शीघ्र गया ॥ १ ॥ २ उदयगिरि रूपी तखत पर ३ भगवतदास रूपी सूर्य को धरा ॥ २ ॥ ४ राजा ५ प्रसिद्ध ६ सोमयज्ञ की ७ यज्ञ विशेष ८ स्वर्ण से ९ चारणों सहित १० ब्राह्मणों के ११ घर भर दिये ॥ ३॥ १२ पुरूरवा की राजधानी जो अब विठूर के नाम से प्रसिद्ध है, कुन्तल देश के १३ राष्ट्र (राज्य) का स्वामी १४ चन्द्रवंश को प्राप्त होकर १६ जिसके गुणों का समुद्र सर्ववर्म १५ नामक मंत्री था उन दिनों में १७ गुणाढ्य नामक ब्राह्मण १८ पंडितों में मुख्य.

जीवते व्यास अवलौं न जो तो तिनको अवतार तिहिं ॥
कहते परंतु अति आयुकारि कविजसहारयोदोसकिहिं ।४।

(दोहा)

सव पढि सास्त्र गुनाढ्य सो, प्रतिष्ठान पुर पत्त ॥
तजि कोकिल जिम अन्यतरु, अंब होत अनुरत्त ॥ ५ ॥
मिलत सातवाहन मुदित, पाटव[2] लखि गुन पूर ॥
सुकविगुनाढ्य१ हु किय सचिव, सर्ववर्म२ सम सूर ॥ ६ ॥
पहिलैं या नृपको पिता, विदित भयो रन बीर ॥
द्वीपिकर्ण१ सतकर्ण२दुव, धरे नाम जिहिं धीर ॥ ७ ॥
तास सातवाहन[3] तनय, मति१ नय२ विजय३ महंत४ ॥
पै न अमरवानी[5] पढ्यो, हानि रही यह हंत[6] ॥ ८ ॥
सात नाम धनपतिसखा, जो मृगपति हुव जच्छ ॥
तानैं सत१००कर्णहिं तनय, दिन्नौं जो मतिदच्छ ॥९॥

(षट्पात्)

प्रतिष्ठानपुर प्रथित[11] सातवाहन नृप सो यह ॥
विलसत सुख निज विभव सर्ववर्म१ रु गुणाढ्य२ सह ॥
कवहु सुरभि[12] ऋतु काल जाय रानिन संजुत वन ॥

---

१ इस समय वेदव्यास जीवित थे नहीं तो यह गुणाढ्य व्यास का अवतार कहलाता परन्तु व्यास की आयु अधिक होने के कारण गुणाढ्य इस यश को हार गया सो किसको दोष है ॥ ४ ॥ कोयल पक्षी जैसे अन्य वृक्षों को छोडकर आम्र पर जाता है तैसे गुणाढ्य भी सब शास्त्र पढकर अन्य राजाओं को छोडकर सातवाहन के प्रतिष्टान पुर में गया ॥५॥ २ चतुर और गुणों से पूर्ण देखकर गुणाढ्य को सर्ववर्म के समान मंत्री बनाया ॥ ६ ॥ ७ ॥ उस शतकर्ण का शातवाहन नामक ३ पुत्र बुद्धि नीति और विजय में ४ सबसे बडा हुआ परन्तु ६ खेद का विषय है कि ५ संस्कृत नहीं पढा सो यह हानि रही ॥ ८ ॥ सात नामक ९ यक्ष ७ कुबेर का सखा था सो शाप के कारण ८ सिंह होगया उसने शतकर्ण को यह १० चतुर बुद्धिवाला पुत्र दिया ॥ ९ ॥ ११ प्रसिद्ध १२ वसन्त ऋतु के समय में राणियों सहित वन में जाकर

मंजुल वापी मज्झ करन लग्गो जलक्रीडन॥
जिम बहु करेनु अंतर अजित केलि मत्तवारन करत ॥
सो इम जनीन छिरकत सलिल रह्यो अटाकि चिरकाल रत ।१०।

(शुद्धप्राकृतभाषा गीई)

तह विराहुसत्तिदुहिआ एक्का राणी कहीअ रायाणं ॥
मं सिअ मोअएहिं कम्पिज्जइ मइ हु सीअलत्तणओ ॥ ११ ॥

गीर्वाणभाषा उपजातिः

श्रुत्वा तयोक्तं त्वरया चिकीर्षुर्मां मोदकैस्ताडय मानदेति ॥
आनीय सद्योभवलड्डुकांस्तैरताडयत्स स्वरसन्धिमूढः ॥१२॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(पादाकुलकम्)

इम पतनी रुचि जानि अनारत, पतिकों पिक्खि मोदकन मारत
बुल्ली तव रानी सु हीनबल, क्यों लड्डुन मारहु बपु कोमल ।१३।

सुन्दर बावड़ी में जलक्रीड़ा करनेलगा जैसे बहुत हथनियों में विजय पायाहुआ मस्त हाथी क्रीड़ा करे तैसे स्त्रियों में जल छिड़कता हुआ बहुत समय तक प्रीति पूर्वक वहां रहा ॥ १० ॥ भाषानुवाद ॥ वहां विष्णुशक्ति की पुत्री एक राणी ने राजा से कहा कि मेरा शरीर शीत से कांपता है इससे मेरे पर जल मत छिड़को ॥ ११ ॥ जलक्रीड़ा में पानी की मार से घबराई हुई राणी ने कहा हे मान देनेवाले मुझे "मोदकैः ताडय" इसका अन्वय होता है" उदकैः मा ताडय" अर्थात् पानी से मत पीटो. यह सुनकर प्यारी के कहने को शीघ्र करने की इच्छावाले व्याकरण की स्वरसन्धि के जानने में मूर्ख (स्वरसन्धि को नहीं जाननेवाले) उस राजा ने "मोदकैः ताडय" इसका अर्थ लड्डुओं से पीटो ऐसा समझ कर तुरत के बनेहुए लड्डू लाकर उनसे उस राणीको पीटी, यहां स्वरसन्धि यह है कि मा शब्द का आकार और उदक शब्द का उकार मिलकर ओकार होने से मोदक शब्द हुआ है ॥ १२ ॥ इसप्रकार स्त्री की रुचि जानकर मारने लगा सो पति को निरंतर लड्डुओं से मारताहुआ देखकर राणी बोली कि कोमल शरीर को लड्डुओं से

संस्कृत अनुवाद ॥ तत्र विष्णुशक्तिदुहिता एका राज्ञी अकथयत् राजानम् ॥ मां सिञ्च मोदकैः कम्प्यते मया खलु शीतलत्वतः ॥११॥

मैं आक्खिय छिरकहु तुम मोहि न, यह सरलहु समुझे तुम आहि न
जिम मा¹सब्द रु उदक²सब्द जुरि, मोदक होत सु बोध रह्यो मुरि१४
पुहवीसन इतनौं अजानपन, धूरि करत जस चूरि धराधन ॥
सुनि यह लज्जित बहुत सिटायो, आलय सातवाहन सु आयो१५
तजि तब भोग नृपति नृपताके, करि पछितावन अमरगिराके ॥
दुमन रहैं कितहु न चित दोरैं, निज भट¹सचिव²हु जदपि निहोरैं
सो गुनाढ्य इम नृपहिं बिमन सुनि, पुच्छन लग्यो सर्बबर्महिं पुनि
सर्बबर्म तब हेतु सुनायो, भूपहिं अब न मूढपन भायो ॥ १७ ॥
पटु रानी याके इक पंडित, वाकी सुनि लिय सोक अखंडित ॥
यह सुनि पुनि नृप ढिग दुव²आये, सांत्वन बैन गुनाढ्य सुनाये ॥
अवनीपति न दयो कछु उत्तर, बुल्ल्यो सर्बबर्म तब पटुबर ॥
अधिपति मोहि स्वप्न इक आयो, दिव्य पुरुख सितकमल दिखायो
तरुनी दिव्य कढी इक तासौं, सितपट धरत अतुल सुखमासौं ॥
सप तस पुस्तक¹ बीन² सुहावन, प्रविसी मुख सु रावरे पावन२०

क्यों मारते हो ॥ १३ ॥ मैंने कहा था कि तुम मुझे जल से मत छिड़को सो आश्चर्य है कि यह सीधा संस्कृत भी तुम नहीं समझे जैसे "मा" शब्द और "उदक" शब्द मिलकर स्वर सन्धि होने से मोदक शब्द होता है सो नहीं समझे ॥ १४ ॥ १ राजाओं को २ हे राजा ३ अपने भवन में आया ॥ १५ ॥ ४ राजापन के भोग छोड़कर ५ संस्कृत नहीं पढ़ने का पश्चात्ताप करने लगा ॥ १६ ॥ इसप्रकार राजा को ६ उदास सुनकर गुणाढ्य ने शर्ववर्मा से पूछा तब शर्ववर्मा ने कारण सुनाया कि अब मूर्ख रहना राजा को अच्छा नहीं लगता ॥ १७ ॥ ७ चतुर ८ समझाने के वचन ॥ १८ ॥ भूपति ने कुछ उत्तर नहीं दिया तब श्रेष्ठ चतुर शर्ववर्मा बोला कि हे राजा एक दिव्य पुरुष ने स्वेत कमल दिखाया । १९ । उस कमल से एक स्त्री निकली जो अत्यन्त परमशोभा (ये दोनों एकार्थवाची शब्द अत्यन्त के बोधक हैं अर्थात् जहां अतिशय अर्थ जनाना होवे वहां एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग कियाजाता है) के साथ स्वेत वस्त्रों को धारण कियेहुई थी उसके हाथ में पुस्तक और वीणा थी वह आपके पवित्र मुख में घुस गई ॥ २० ॥

मैं प्रभु ताहि भारती मानी, अति उत्तम विद्या जिहिं आनी ॥
जो सुनि नृप अक्खिय गुनाढ्यजित, पढि कतिकालें होत नर पंडित
सुनि गुनाढ्य कवि कहिय प्रीति सन, विद्याको मुख प्रथम१०व्याकरन
वारह१२वरस पढत तिहिं वित्ते, जो छंद्मैंहि मोसों प्रभु जित्तैं२२
सर्ववर्म अक्खिय तँहँ धीसन, उचित इतो काल न अवनीसन ॥
मैं पढाइ प्रभुकों खट६मासन, संगत करौं सब्द अनुसासन ॥२३॥
कह्यो गुनाढ्य सुनत यह सक्रुध, विरचैं जो तू नृपहिं छ६मैं बुध
तो प्राकृत१ देशीय गिरा२ जुत, देवगिरा३ कहिवोहि तजों द्रुत
सर्ववर्म तब कह्यो प्रसभ सन, पूरन जो न करौं लिन्नों पन ॥
तव पादुका गुनाढ्य लहौं तो, वारह१२ हायन स्वसिर वहौंतो
यह संधा दुव २ कारि गृह आये, जंपित होन हेतु उपजाये, ॥
सर्ववर्म हठ संग कही सो, सोक डारि चुभि चित्त रही सो ॥२६॥
संधा दुष्कर कही नारिसन, अवला कह्यो वनैं किम अप्पन ॥
करैं प्रसाद देव विधि कोहू, सिद्ध होय संधा तव सोहू ॥ २७ ॥
स्वामिकुमार इष्ट तव स्वामी, करहु प्रसन्न तिन्हैं पनकामी ॥
सर्ववर्म लेकैं तव अनसन, घोर कर्‍यो तप पाइ कष्ट घन ॥२८॥

१सरस्वती२कितने समय में पढकर मनुष्य पंडित होसक्ता है३जो छै वर्ष में व्याकरण पढादेवें. वही मुझसे विजय पावे अर्थात् उससे मैं हारा बुद्धिपूर्वक शर्ववर्म बोला कि इतना समय राजाओं के लिये उचित नहीं ४ शब्दों के अर्थ और अन्वय जानने में कुशल करदूं क्रोधित होकर गुणाढ्य ने कहा कि तू राजा को छै महीनों में पंडित बनादेवै तो प्राकृत और देशभाषा के साथ संस्कृत बोलना ही छोड दूं ॥ २४ ॥ शर्ववर्मा ने हठ करके कहा कि मैंने जो प्रण लिया है इसको पूरा नहीं करूं तो हे गुणाढ्य तेरी पावडियें लेकर बारह वर्ष तक मस्तक पर रक्खूं ॥ २५ ॥ यह १ प्रतिज्ञा करके दोनों घर आये २ अपने कथन को सत्य करने के कारण ३ डाल कर ॥ २६ ॥ यह कठिन प्रतिज्ञा शर्ववर्म ने अपनी स्त्री से कही, स्त्री ने कहा कि यह अपने से कैसे होसक्ता है, किसीप्रकार देवता कृपा करे तब यह प्रतिज्ञा सिद्ध होसक्ती है ॥ २७ ॥ हे पति स्वामिकार्तिक तुम्हारा इष्ट है जिनको प्रण पूर्ण करने की कामना से प्रसन्न करो८उपवास करके

तदपि दुराप जानि अति त्रस्तक, कट्टन वह लग्गो निज मस्तक॥
मासनमैं हि ताहि खटद्१मातर, तुष्टभये भक्तन दुख कातर॥२९॥
स्कंद कह्यो मो सिखि कलाप सन, कढ्यो सरन कालाप व्याकरन॥
सो निजभूपहिं जाइ सिखावहु, पन करि सत्य उचित फल पावहु
सूत्र सहज इम अखिल सिखाये, भये पिहित२ पुनि भक्तन भाये॥
दुर्गम सर्बवर्म मति दीसी, त्रिदस प्रसाद करैं न कितीसी ॥३१॥
प्रमुदित आर्य नरेस पढायो, बानी त्रितय३गुनाढ्य बिहायो ॥
मोद सातवाहन नृप मान्यौं, जन्म सफल व्है पंडित जान्यौं ॥३२॥
रानी जिंहिं यह रंग रचायो, पंडित तिंहिं महिखीपन पायो ॥
कोउक समय काम कोतूहल, बिकखी नहिं रसअंध सुदुर्बल॥३३॥
कपर प्रयुक्त कर्तरी कीनी, दइता मृदुल तनू तजि दीनी ॥
[illegible] सतकर्ण तनूजे महामति, भयो सातवाहन इम भूपति ॥३४॥
[illegible] तीन३गुनाढ्य बिहाई, पट्ठ पिसल्ल भाखा पुनि पाई ॥

॥ २८ ॥ तोभी अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करना अथवा स्वामिकुमार के दर्शन ने दुर्लभ जानकर भय से कांपता हुआ अपना मस्तक काटने लगा क के दुःख से कायर होनेवाले स्वामिकार्तिक (शिव के ज्येष्ठ पुत्र) न्न हुए ॥ २९ ॥ स्वामिकुमार ने कहा कि मेरे मयूर (स्वामिका-क का वाहन मयूर है) के १ पांखों से ॥ ३० ॥ २ अन्तर्धान होगये ३ चार में नहीं आवे ऐसी देवता का प्रसन्न होना क्या नहीं करता अ-तू सबकुछ करसक्ता है॥३१॥४गुणाढ्य ने तीनों भाषा (प्राकृत, देशभाषा र संस्कृत) का बोलना छोडदिया ॥ ३२ ॥ जिस राणी ने राजा सा-हन के संस्कृत का रंग लगाया था उसने पटरानीपन पाया का-ड़ा के रस में अंधे हुए राजा ने उस राणी की दुर्बलता को नहीं ना अर्थात् वह बहुत ही दुर्बल थी सो नहीं देखकर ॥ ३३ ॥ रति समय कपाल में कर्तरी का प्रयोग किया, अर्थात् प्रीति से सीमंत (केशपा-के अग्रभाग में चिटी अंगुलि से प्रहार किया (यह कर्तरी तीन प्रकार है जिसका विशद वृत्तान्त देखना होतो मुंबई के निर्णयसागर छापा खा-में छपेहुए वात्स्यायन प्रणीत कामसूत्र के पृष्ठ१५३ में देखो) जिससे उ-कोमल प्यारी स्त्री ने शरीर छोड़दिया५शतकर्ण का पुत्र । ३४ । तीनों भाषा का बोलना छोडदिया ७ पैशाची भाषा

*काणभूति क्रव्याद मित्र चहि, भयो पिसाच कुबेर साप लहि ३५

दोहा

धनद[1] दास इक जच्छ[2] हो, सुप्रतीक अभिधान[3] ॥
थूलसिरा क्रव्याद[4] जिँहिँ, सखा करयो असमान[5] ॥ ३६ ॥
नरबाहन[6] तब सापदिय, संगति नीच निहारि ॥
सँत्वर[7] होहु पिसाच सठ, धी[8] अनुचित अवधारि[9] ॥ ३७ ॥
काणभुति नामक भयो, तब पिसँल्ल[10] वह जच्छ ॥
बिंध्यबासिनी[11] बिपिन जो, मिल्यो गुनाढ्य समच्छ[12] ॥ ३८ ॥
गृह सकुटुम्ब गुनाढय तजि, बीतराग[13] तँहँ आइ ॥
काणभूतिसौं इक कथा, ललित सुनी मन लाइ ॥ ३९ ॥
जो बिद्याधर सप्तमय, अग्ग उमा[14] प्रति ईस[15] ॥
बरनी सो सुंदर कथा, किन्नी श्रवन कवीस ॥ ४० ॥
पन जबतैं पूरन करयो, सर्ववर्म मतिसूर ॥
मूक[16] भयो तबतैं दुमन[17], कवि गुनाढ्य जिम कूर[18] ॥ ४१ ॥
काणभूतिके संग करि, अब सु बिंध्यबनि[19] आइ ॥
बुध[20] पैसाची बानिमैं, बंद[21] भो मौन बिहाइ ॥ ४२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कथासप्त७बिद्याधर[22]मय जो, सुकवि गुंफि[23] पैसाची[24]

*काण भूति नामक राक्षस को मित्र पाकर १ कुबेर का सेवक सुप्रतीक ३ एक २ यक्ष था जिसने स्थूलशिरा नामक ४ राक्षस को अपना सखा बनाया उसके ५ समान नहीं था (राक्षस और मनुष्य में समता नहीं होसक्ती) ६ ने ७ शीघ्र अनुचित ८ बुद्धि को ९ धारण करके ॥ ३७ ॥ वह यक्ष नामक १० पिशाच हुआ सो विंध्यवासिनी ११ वन में गुणाढ्य से १२ मिला ॥ ३८ ॥ १३ विरक्त होकर जहां वह पिसाच था वहां आया। १४ पार्वती को १५ शिव ने कहा था सो उस पिशाच (काणभूति) ने की वह गुणाढ्य ने सुनी ॥ ४० ॥ १६ मौन रखनेवाला १७ उदास होकर गुणाढ्य कवि १८ मूर्ख के समान होगया ॥ ४१ ॥ १९ विन्ध्याचल के वन आकर वह २० पंडित मौन छोडकर पैशाची भाषा में २१ वक्ता (नेवाला) हुआ ॥ ४२ ॥ २२ सात विद्याधरों की कथा २४ पैसाची भाषा में २०

सत्तलक्ख७०००००मित ग्रंथ सुहायो,बृहत्कथा अभिधान बनायो
विबुध पढाइ उभैर्रहि छात्र वर, इक गुनदेव१नंदिदेव२अपर ॥
ग्रंथसहित लै पुनि छात्रन कहँ, गो कवि भूप सातवाहन पहँ ४४
अप्प प्रतिष्ठितपुर बाहिर रहि, नृप ढिग पठये छात्र यहै कहि ॥
जाहु ग्रन्थ भूपहि यह अप्पहु, कहहु ख्याति याकी थिर थप्पहु ।४५।
यहै गुनाढ्य रच्यो अति उत्तम, रक्खहु भूपति ग्रन्थ मनोरम ॥
नंदिदेव१गुनदेव२यहै सुनि, पहुँचि नृपालय सोहि कही पुनि ।४६।
नृप सुनि कह्यो पिसाची नीरस, तातैं आदर कोन करैं तस ॥
उभय२सिस्य गुरुढिग तब आये, कह्यो ग्रैर्व यामैं ठहराये॥४७॥
तब कवि सोचि इक्क गिरि ऊपर, बिरच्यो आंपत वन्हिकुंड बर ॥
पावक करि तामाँहि प्रज्वलित, होमन किय प्रारंभ सुरन हित।४८।
इक१इक१पत्र उच्चस्वर पढि पढि, अग्गाँहि दैनलगो आग्रह चढि
सुनैं छात्र दुव२सजल नैंन जुत, निर्मित ग्रंथ गुनाढ्य करैं हुत४९
होमैंन पत्र पढ्यो पहिलो जब,सुनि ध्वनि तास पसु१रु पच्छी२सब
वा बनके इक्कत व्हे आये, सुनिबे संतत वृत्त सुहाये ॥ ५० ॥
भुल्ले खान१पान२भय३भोग४न, मृग१खग२लग्गे सुनन इक्क मन॥
प्रथम उमाँ प्रति कही पुरारी१, कवि तिम सक्ति सु रोचक डारी५१

१ बृहत्कथा नामक ग्रन्थ बनाया ॥ ४३ ॥ २ उस पंडित ने श्रेष्ठ दो शिष्यों को पढाया ३ दूसरा ४ शिष्यों को ॥ ४४ ॥ ५ जिसप्रकार यह ग्रन्थ बना यह ख्याल करकर अथवा राजा से कहना कि इस ग्रन्थ को स्थिर करके इसको प्रसिद्ध करो ॥ ४५ ॥ ६ सुन्दर ७ राजभवन में ॥ ४६ ॥ गुरु से कहा कि राजा ने इस ग्रन्थ में पैशाचीभाषा नीरस होने का८दोष लगाया है ॥४७॥९पर्वत पर ११अग्नि का१०चौड़ा कुंड रचा जिसमें१२अग्नि लगाकर १३ देवताओं के अर्थ होम प्रारंभ किया ॥ ४८ ॥ उस ग्रन्थ के एक एक पत्र को ऊंचे स्वर से पढ पढ कर १५ हठ पर चढा हुआ १४ अग्नि में डालने लगा १६ दोनों शिष्य नेत्रों में जल भरकर १७ अपने बनाये हुए ग्रन्थ को गुणाढ्य होमनेलगा१८होम करने के लिये पहला पत्र पढा.जब १९ शब्द सुनकर२०सुहावने वृत्तों को २१ निरंतर सुनने के लिये ॥ ५० ॥ २२ पार्वती से २३महादेव ने पहले कही थी इसीप्रकार कवि (गुणाढ्य) ने २४ रुचिकारी शक्ति उसमें रक्खी

पुनि विंद्याधर[1] चरित अपूरब२, क्यों नहिं कान परैं सु सुनैं सब ॥
लैन लगो अंग्गिहु[2] प्रसन्न जिंहिं, अतिकृस[3] भये मृगादि सुनत तिंहिं
कछुक सातवाहनके हुव गदं, पुच्छिय वैद्य बुलाइ हेतु१हद२ ॥
भूपति अतिकृस मृगपल[8] चक्खिय, इम यह रोग चिकिच्छक अक्खिय
त्वरित बुलाइ बंधिक पुच्छे तब, उन अक्खिय वन पसु अति कृस सब
गिरि उप्पर इक सिद्ध महामन, करत होम पढिपढि कछु पत्रन।५४।
सुनत ताहि खग१मृग२ जुरि सारे, बिचरन१खान२रु पान३बिसारे
सूको मिलत हमैं पल यातैं, बधिकन मुख यह सुनि नृप बातैं ५५।
सत्वर[12] उठि तिहिं सैल[13] सिधायो, पलन होमकरत वह पायो ॥
हुतभुंक[14] कथा छलक्ख६०००००करी हुतें[15],
नृप पाई खिल[16] लक्ख१०००००रही नुतं[17] ॥ ५६ ॥
नरबाहन दत्तको चरित वर, जामैं कह्यो गुनाढ्य सु धीधर[18] ॥
सो अवसेस रहत नृप पत्तो, परि पायन मंग्यो वह तत्तो ॥ ५७ ॥
जब गुनाढ्य बानी पहिचानी, पैसाची[20] तब रम्य[21] प्रमानी ॥
कह्यो गुनाढ्य अब न पछितावहु, जुग२ मम छात्र[22] संग लैजावहु
नव्य[23] कथा ए२ तुमहिं सुनैहैं, पैसाची मज्झहु रस पैहैं ॥
नंदिदेव१ गुनदेव२ दये तब, नृपके संग रु सेस[24] कथा३ सब ॥५९॥
इम गृह सातवाहन सु आयो, कथन वहै पुहवी[25] प्रकटायो ॥

है ॥ ५१ ॥ १ विद्याधरों (देवयोनि विशेष) का २ अग्नि भी प्रसन्नता से लेने-लगा इस ग्रंथ को सुनने से खाना पीना छोड देने के कारण मृग आदि ३ दु-र्बल होगये ॥ ५२ ॥ सातवाहन राजा के कुछ ४ रोग होगया था जिसका ५ कारण वैद्यों से पूछा ६ हे राजा आपने दुबले ७ मृगों का मांस खाया है ८ इ-सकारण से यह रोग हुआ है. यह ९ वैद्यों ने कहा ॥ ५३ ॥ १० शिकारियों को बुलाकर पूछा ११ मांस १२ शीघ्र उठकर उस १३ पर्वत पर गया १४ अग्नि में १५ होमदी १६ बाकी एक लक्ष १७ स्तुति योग्य रही १८ श्रेष्ठ बुद्धि को धारण करनेवाले ने १९ पहुंचा २० पैशाची भाषा को २१ सुन्दर मानी २२ मेरे दोनों शिष्यों को २३ यह नवीन कथा २४ बाकी कथा भी सब राजा को दी २५ इस कथा को पृथ्वी में.

देह गुनाढ्य जोगबल डारयो,बिदित सुजस निज अतुल[2] बिचारयो६०
भगवतदास८८ बली इम भूपति, किन्नौं राज्य धर्म१ नय१ संगति
उपज्यो कृष्णादास८९ सुत याकै, जुद्ध१ रु दान२रहे नव[3] जाकै६१

(दोहा)

धीरपाल उत्कलधरा[4], नृपचालुक पटुनीति[5] ॥
ताकै गुन आकर[6] सुता, प्रथित[7] नाम करि प्रीति८९।१।६२।
कृष्णादास८९सौं तब करन, सु नृप तास संबंध ॥
दूत पठावत भो मुदित, सुनि बर सूर सुसंध[8], ॥ ६३ ॥

(षट्पात्)

चालुक नृपके चार[9] आइ पत्तन[10] मिहिकावति ॥
सचिवनसौं मिलि सजव[11] कह्यो आसय करि सम्मति ॥
तिम नृप भगवतदास८९ जाइ सचिवन[12] संबोध्यो[13] ॥
कृष्णादास८९ प्रभु[14]को कुमार सो उन बर सोध्यो ॥
करनाटराज सो सुनि कह्यो धीरपाल नास्तिक[15] निपट ॥
हम कुल स्वसीस[16] बेदन बहत बहत[17] तुल्लय संबंध बट॥६४॥

(दोहा)

इम सुनि किय सचिवन अरज, कन्या मतसैं[18] न काम ॥
सो पतिकुलकी रीति सब, अनुसरिहै अभिराम[19] ॥ ६५ ॥

प्रसिद्ध की २ तुलना रहित यश फैलाया ॥ ६० ॥ ३ नवीन ही रहे ॥ ६१ ॥ ४ उडीसा देश की भूमि का राजा ५ नीति में चतुर ६ गुणों की खान ७ प्रसिद्ध ॥ ६२ ॥ ८ श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाला ॥ ६३ ॥ सोलंखी राजा के ९ हलकारे १० मिहिकावती पुर में आये ११ शीघ्र १२ कामदारों ने भगवतदास नामक राजा को १३ समझाया कि १४ हे स्वामी आपके कुमर कृष्णदास को सोलंखियों ने वर तलाश किया है १५ धीरपाल सोलंखी अत्यन्त नास्तिक (ईश्वर को नहीं माननेवाले जैनमत में) है और हमारे कुल में १६ अपने मस्तक पर वेदों को धारण करते हैं सो समान मार्ग में ही संबंधीपन १७ प्राप्त होता है ॥६४॥ कन्या के मत १८ से कोई काम नहीं है यह पति के कुल की १९ सुन्दर रीति के साथ चलेगी ॥६५॥

जैनभाव उनकै जदपि, तदपि[2] सुद्ध संतान ॥
जनन[3] छोरि पिक्खहु जैनन[4], प्रभु यह करहु प्रमान ॥ ६६ ॥
सचिवनके ए बैन सुनि, किन्नी नृप स्वीकार ॥
पठयो चालुक भूप पुर, करन बिवाह कुमार ॥ ६७ ॥
धीरपाल तब धरनिधव[5], बिधि सब सज्ज बनाइ ॥
कुमर कृष्णदास८९ हिं कुमरि, प्रीति८६।१ दई परिनाइ ॥ ६८ ॥
बुधन[6]१ कविन२ दै यह बिविध, स्वापतेय[7] गुन[8] सूरि[9] ॥
आयो आलय परनि इम, पुहवीतल[10] जस पूरि ॥ ६९ ॥
कृष्णदासकै हू कुमर, सूर भयो सिवदास९० ॥
बालवैयहिं[11] गुनवृद्ध जिहिं, पायो स्वमति प्रकास ॥ ७० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने भगवद्दास८८विंदा८८।१विवहनयज्ञाऽनुष्ठानसातवाहनविद्याप्रापणशर्ववर्ममानवर्द्धनत्यक्तसंस्कृतादिभाषात्रय३समभ्यस्तपैशाचीकगुणाढ्यबृहत्कथानिर्माणज्ञाततदनादरतत्स्वकृतिहव्यवाहहवनसातवाहनखिललक्षकथाप्रतिष्ठापनचण्डासिराजभगवद्दासकुमारकृष्णदास८९प्रीति८९।१परिणयनतत्कुमारशिवदासो९०द्गमनमेकषष्टितमो मयूखः ॥ ६१ ॥ आदितस्त्र्युत्तरशततमः ॥

२तोभी सन्तान तो शुद्ध है३ मनुष्यों को छोडकर ४कुल को देखो ॥६६॥ ॥६७॥५ भूपति ने ॥६८॥ ६पडितों को ७ धन ८ गुणों में पंडित ९ अपने घर आया१०भूमि तल को यश से पूर्ण करके॥६९॥बालक११अवस्था में ही उस गुणों में वृद्ध ने अपना बुद्धि का प्रकाश पाया ॥ ७० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में भगवतदास विन्दा का विवाह, और यज्ञ का अनुष्ठान, सातवाहन राजा को विद्या प्राप्त होना, शर्ववर्म का मान बढाना, संस्कृत आदि तीनों भाषाओं का छोडकर पैशाची भाषा का अभ्यास करके गुणाढ्य का बृहत्कथा बनाना, और उसका अनादर जानकर उस अपने किये ग्रन्थ को अग्नि में होमना, बाकी की एक लक्ष कथा को सातवाहन का स्थापन करना, चहुवाण राजा भगवतदास के कुमर कृष्णदास का प्रीति नामक स्त्री से विवाह करना, इसके शिवदास कुमर का जन्म होने का इकसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥६१॥ और आदि से एक सौ तीन मयूख हुए ॥ १०३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पात्

सूर सातबाहन नरेस कुंतल अधीस इत ॥
अखिल अज्जभुव[1] जित्ति दई ओदंक[2] जितहीतित ॥
बलवाननको बैर सुन्यौं पचतो न सदाही ॥
काहुक पिसुन[3] कही सु सुनत दुस्सह हठ साही ॥
नृपकासिनाथ श्रीधर नृपहिं समर[4] दब्बि जित संहरयो[5] ॥
गो बैरलैन मदसेन पुनि जामिप[6] जुत जुज्झि सु परयो ॥१॥
सातबाहनहु कहिय गयो उततैं लीलाधर ॥
श्रीधर१अरु मदसेन२उभय२इततैं बसुधावर[7] ॥
इक्क१बैर उनमांहिं रहत अप्पन अब यातैं ॥
[8]व्याजसहित बाहुरत चलहु चहुवान निपातैं[9] ॥
बल[10] अतुल साज्जि इम अक्खि बल[11] घन[12] भद्दवघन घाटसौं[13]॥
दरकुंच जाय मंडिग दुसह कुंतल रन करनाटसौं[14] ॥२॥

सचरणगद्यम्

कुन्तलराज मदसेनके बैर पर लक्ख सात७००००वाहिनीसौं[15] सातबाहननैं कालरूप काल[16] काकोदरलौं कुराडल[17] करि मिहिकावती बेढिलई[18] ॥ अरु कुमार कृष्णदास सहित भूपाल भगवद्दासहू देह व्यर्थ[19]

१ आर्यावर्त की सब भूमि जीतकर २ आतंक ३ किसी चुगल ने कही सो, ४ युद्ध में दबाकर ५ मारा ६ बहिनोई सहित ॥ १ ॥ ७ भूपति ८ सूद (मूल धन की वृद्धि, कला) सहित ९ मारें १० सेना ११ उस बलवान् ने १२ भाद्रपद के मेघ के १३ अधिक रूप से १४ यहां कुन्तल ने कर्णाट से युद्ध रचा लिखा है सो लक्षणा से कुन्तल देश के राजा ने कर्णाट देश के राजा से युद्ध रचा ऐसा जानना चाहिये ॥ २ ॥१५सेना१६ काले सर्प के समान १७ घेरा डालकर मिहिकावती पुरी को १८ घेर ली १९ यदि युद्ध में मरना नहीं हुआ तो यह देह व्यर्थ जावेगा इस शोक को छोड़कर

जाइबेको सोक तजि कुंकुमी[1] कर्पट[2] करि घोरनं[3] सहित पुरतोरन[4] खुलाइ अनी उठाइबेकी आज्ञा दई ॥

दोहू २ दलनके मिलिबेमैं अनेक पुद्गल[5] १ प्रानन २ को बिछुरिबो भयो ॥

अरु द्विगुसमासके[6] सूत्रके समान कितेक कातरन[7] संख्याही देखिबेको बिबेक लयो ॥ ३ ॥

कुलटाके अपांगलौं बीरनके भुजदण्ड प्रहारके प्रस्तार[10] रचनलगे॥

अरु भीरुनकी[11] भामिनीके[12] सौभाग्यसमेत सारदीके[13] ससिके[14] समान सूरनके सुजस बचनलगे ॥

तहाँ राजकुमार कृष्णदासनैं कुंतलराजके सेनानी[15] सत्रुजित सौं जाइ प्रानबाजी लगाई ॥

अरु जीवांके[16] टंकारकरि समरकी[17] सोभा१नागराजके[18] नैन२जोगिनीनकी निद्रा३जुत संकरकी समाधि४जगाई ॥ ४ ॥

एक मुहूर्तके[19] आहवमैं[20] सत्रुजितके प्रानतो चहुवानके बानकौं अभ्युत्थान[21] दैकैं महामार्गके पथिक[22] भये ॥

अरु कृष्णदासनैं दाहिनीदिसा बाजी[23] बढाइ सातबाहनके सचिवें[24]-

---

१ केसरिया २ वस्त्र ३ घोड़ों पर चढकर ४ पुर के दरवाजे खुलाकर सेना को आगे बढने की आज्ञा दी ५ अनेक शरीरों से प्राण बिछुड़े और कितने ही ७ कायरों ने ६ द्विगु समास के सूत्र (संख्यापूर्वो द्विगुः) के समान संख्या देखने का ही विवेक लिया अर्थात् द्विगु समास के सूत्र ने जैसे मुख्य कर-के८संख्या को ग्रहण किया है ऐसे कायरों ने युद्ध करने का कार्य छोडकर सुभटों की संख्या करने का ही कार्य किया ॥ ३ ॥ कुलटा नायिका के ९ कटाक्ष के समान वीरों के भुजदंड शस्त्र प्रहार के १० विस्तार रचने लगे और ११ कायरों की १२ स्त्रियों के सुहाग के सहित १३ शरद पूर्णिमा के १४ चन्द्रमा के समान वीरों के यश बाकी रहने लगे १५ सेनापति १६ धनुष की प्रत्यञ्चा के टंकार से १७ युद्ध की शोभा १८ शेषनाग के नेत्रों ने योगनियों (देवी की दासियों) की निद्रा सहित महादेव की समाधि जगाई ॥ ४ ॥ १९ दो घड़ी के २० युद्ध में २१ ताजीम देकर (उठकर) बड़े मार्ग(परलोक मार्ग) के २२ पन्थी (मार्ग चलनेवाले) हुए २३ घोड़ा बढाकर २४मंत्री.

राज सर्वबर्माकैं कलंब[1] दये॥

देखतही मंत्रीनैं याकौं समुखभेलि बुंधनकी[2] बुद्धिसी सितं[3] सक्ति चलाइ मूर्खनके मानलौं[4] कुमारको तुरंग गिरायो ॥

तोहू पाइक्क[5] होय बाननकी बुद्धि तैं मंत्रीकौं मोह[6] दैकैं सत्रुके सामंत[7] सिंहगुप्तके समीप आयो ॥ ५ ॥

तहाँ सिंहगुप्तनैं स्वर्गके सोपानसो[8] मंडलाग्र[9] मारि कर्णाटराजके कुमारकौं सुरराजको सभ्य[10] कीनौं॥

अरु चंडासिराज[11] भगवद्दासनैं पंच५गज तेरह १३ तुरंग पंचसत ५०० पाइक्क मारि कुंतलराजपैं दावदीनौं ॥

तहाँसातवाहनकेसामंतसंभुदेवनैंराजापैंअचानकआयप्रहारकस्यो॥

तासौं छिन्न[12]मस्तकभो तथापि चहुवाननैं पचावन ५५ अराँतिनके[13] प्रानसहित तिनकी गजगामिनिनको[14] गुनगोरिको गैंबो[15] हस्यो ।६।

ऐसैं मिहिकावती रनजीति कुंतलराज सातबाहनतो प्रतिष्ठानपुर प्रविष्ट[16]भयो ॥

अरु बिंदा८८।१तथा प्रीति८९।१इन दोउनर सहगमन[17]करि आप आपके स्वामिनको लोक लयो ॥

बाल वयमैं ही चंडासिवंसके अवतंस[18] सिवदास ९० नैं कर्णाटकी गद्दी पाइ छत्रधस्यो ॥

अरु ससिवंसी[19] चेदिराज[20] दृढमित्रकी कन्या चंद्रकला९०।१कौं

१ बाण २ पंडितों की बुद्धि के समान ३ तीक्ष्ण वरछी चलाई जिसने मूर्खों के ४ मान सदृश कुमर के घोड़े को गिरादिया ५ पैदल होकर ६ मूर्छा देकर ७ उमराव ॥ ५ ॥ ८ स्वर्ग के जीना (सीढी) के समान ९ खड्ग मारकर इन्द्र का१०सभासद बनाया अर्थात् स्वर्ग भेजादिया११चहुवाण राजा १२ मस्तक कटगया१३ शत्रुओं के प्राण सहित उनकी१४हाथी की चाल के समान चलनेवाली स्त्रियों का गुणगोरि के गीतों का१५गाना मिटाया(सुहागण स्त्रियें ही गुनगोरि के गीत गाती हैं) ॥६॥१६प्रवेश हुआ१७सती होकर(जहां कहीं सती होना लिखाजावे उसका अभिप्राय पति के साथ अग्नि में जलना जानना चाहिये)१८चहुवाणवंश के मुकुट१९चन्द्रवंश२०चन्देरी के राजा

बिवाहि राजधर्म बिदितकरयो ॥ ७ ॥

(दोहा)

सत्त७ करे चउमास[1] सब, इक१ इक१ उकथ[2]१ रु याम[3]१ ॥
द्विजन भूरि हाटक[4] दयो, नृप सिवदास१० सुनाम ॥ ८ ॥
कुमर भूप सिवदासके, पटु[5] उपज्यो हरिपूर्ण९१ ॥
पीछैं यह भुवपालभो, चंड[6] अरिन करि चूर्ण ॥९॥
इत चालुक प्रद्युम्नसुत, इंद्रद्युम्न नरेस ॥
वैष्णाव व्है किन्नौं सुबुध[7], दूर जैन उपदेस ॥ १० ॥

(षट्पात्)

इंद्रद्युम्नहि देस भयो वैष्णाव सब उत्तम ॥
स्वप्नमाँहिं जगदीस मिलै जाकौं जाग्रत[8] सम ॥
मूरति स्वीय[9] बताइ कह्यो विरचहु मम मंदिर ॥
जगि प्रातहि नृप जाइ स्वप्नगत[10] चिन्ह लखे थिर ॥
मूरति कढाइ खुदवाइ भुव नियति[11] भक्ति चालुक नच्यो ॥
पूरवसमुद्र उपकंठ[12] पर रम्य[13] पृथुल मंदिर रच्यो ॥ ११ ॥

(दोहा)

पुण्यधाम[14] चउ४मैं प्रथित[15], जानत आस्तिक[16] जाहि ॥
पधराये तँहँ विष्णुप्रभु, विधि वेदोक्त[17] निबाहि ॥ १२ ॥
जाके बपु[18] परसे जलहि, करे संकुष्ट[19] अकुष्ट[20] ॥

---

१ चातुर्मास्य यज्ञ २ महाव्रत नामक यज्ञ करके ३ आप्तोर्याम नामक यज्ञ विशेष ४ सुवर्ण दिया ॥ ८ ॥ ५ चतुर ६ भयंकर शत्रुओं का ॥ ९ ॥ ७ श्रेष्ठ पंडित ने ॥ १० ॥ ८ जगतेहुए को मिले जैसे ९ अपनी मूर्ति को बता करके कि अमुक स्थान पर है १०स्वप्न में जो चिन्ह देखे थे वेही वहां जाकर देखे ११नियम पूर्वक भक्ति करके १२ पूर्वसमुद्र के समीप (किनारे) मोटा और १३सुन्दर मन्दिर रचा ॥ ११ ॥ जिसको १६ वेद मत माननेवाले लोग १४ पवित्र चार धामों (बद्रीनाथ १ द्वारका २ रामेश्वर ३ जगदीश४) में १५ प्रसिद्ध मानते हैं वहां १७ वेद की कहीहुई बिधि को निभाकर विष्णु भगवान् को पधराये ॥ १२ ॥ उनके १८ शरीर से स्पर्श हुए जल से इन्द्रद्युम्न राजा का शरीर १९ कोढ सहित था सो २० कोढ रहित

भये दुलभ ता भूपसौं, त्रि३गुननाथ इम तुष्ट ॥ १३ ॥
जगदीस१ रु बल्लभद्र२ जहँ, जाँमि सुभद्रा३जुत्त ॥
करे प्रतिष्ठित सांति करि, रहि संतत हरि उत्त ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

जो चालुक्य कुमारपाल किय पुष्ट जैनमत ॥
इंद्रद्युम्न नरेस ग्रंथ ते सर्व करे गर्त ॥
छपनकँ जनन बुलाय दयो तुलसी चरनोदक ॥
जैन जनितें जिततितहि असह पाई भाजि ओदक॥
करि द्विजन मान बहु दान करि श्रुति अनुसरि प्रद्युम्न सुव
बुड्डत अथाह वैष्णव धरम इम चालुक अवलंब हुव ॥१५॥
पुहवीपति हरिपूर्ण१ उचित नयं१ धर्म२ पढ्यो इत ॥
कूरमनृप सूरमय सुता चम्पा१।१हित संहित ॥
परन्यौं वह चहुवान कस्यो इक मख अग्निष्टुत१ ॥
इक१बिरचि अतिरात्र१हव्य समुचित महर्घ हुत ॥
याकै तनूज चम्पा१।१उदर देवीदास१२दुरूह हुव ॥
हरिपूर्ण१२जुज्झि कुन्तल समर भूप बस्यो पुनि स्वर्गभुव॥१६॥

दोहा

कुंतल सन करनाटकै, बढिगो विसम विरोध ॥
व्है तिम तिम सुमिरन हृदय, जिम जिम गज्जैं जोध ॥ १७ ॥

होगया और १ सत, रज, तम तीनों गुणों के स्वामी उस राजा से इसप्रकार २ प्रसन्न हुए ॥ १३ ॥ श्रीकृष्ण को, बलदेव और ३ बहिन सुभद्रा सहित स्थापित किये वहां विष्णु भगवान् ४ निरन्तर रहते हैं ॥ १४ ॥ कुमारपाल ५ सोलंखी ने जैनमत को पुष्ट किया था उन ग्रन्थों को इन्द्रद्युम्न ने ६ समाप्त (नाश) कर दिये और ७ श्वेताम्बरी (जैनमत के साधु) ८ लोगों को बुलाकर उनको तुलसी और विष्णु का ९ चरणामृत १० जैन से उत्पन्न हुए लोगों ने ११त्रास पाई १२वेद के पीछे चला १३ प्रद्युम्न का त्रपु १४ सहारा॥ १५ ॥ १५ नीति १६हित सहित १७अग्निष्टोम यज्ञ १८यज्ञ विशेष १९ होमने के पदार्थ २०महंगे होमे २१कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा २२ कुन्तल देश के युद्ध में लड़कर स्वर्ग को प्राप्त होकर वहां बसा ॥ १६ ॥ १७ ॥

हरिपूर्णाहु यातैं हठी, कढ्ढन बैर अकाल[1] ॥
कुन्तलपति सन रंग रुपि, सोयो रन अरिसाल ॥ १८ ॥
नृपति सातवाहन तनय, कुन्तलपति वसुमित्र ॥
हरिपूरन जानैं हन्यौं, करि रन चक्रन[2] चित्र ॥ १९ ॥

षट्पात

बलवानन सन बैर निह्वि कढ्ढत बीरहु नर ॥
चहुवाननकी दौर[3] रहैं अविरत[4] कुन्तलपर[5] ॥
देवीदास९२उदार भयो करनाट महीपति ॥
हरि जदुकुल मरहट्ट[6] सुता परन्यौं यह कीरति९२।१ ॥
हुव कर्मचंद्र९३ताकै तनय सो रविकुल[7] सिंधुल सुता ॥
सोरठ आय परन्यौं सुपहु जया९३।१नाम सब गुनजुता।२०।

दोहा

उत नरेस वसुमित्र सुत, कुन्तलपति दृढसेन ॥
अर्ज्जमहीमैं[8] इक१भो, जासौं अपर[9] जुरे न ॥ २१ ॥

पादाकुलकम्॥

नंत्ती[10] सु नृप सातवाहनको, धरा१कटक[12]र२आँकर[13] पति धन३को॥
चरम[14]उदय[15]विच आँन[16] चलावन, रक्खैं हौंस बढैं जिम रावन२२।
तप्यो न सातवाहनहू तैसो, यह दृढसेन सक्तित्रय[17]ऐसो ॥
गंर्जन[18] ताहि कोन रन गज्जैं, भेजा भचकि सुनत अरि भज्जैं २३

दोहा

---

१ विना समय वैर लेने से ॥ १७ ॥ २ सेनाओं में आश्चर्य उत्पन्न कराके ॥ १९ ॥ ३ दौड़ (धावा मारना) ४ निरन्तर ५ कुंतल देश पर, यदुवंशी श्रीकृष्ण के वंश में ६ महाराष्ट्र देश के राजा की ७ सूर्यवंशी ॥ ८ ॥ ८ आर्यावर्त की भूमि में एक ही हुआ जिससे कोई ९ अन्य युद्ध में नहीं जुआ ॥ २१ ॥ ११ वह. सातवाहन राजा का १० पोता १२ सेना १३ खान १४ जो अस्ताचल और १५ उदयाचल के बीच में १६ आण चलाने के लिये रावण के समान इच्छा रक्खें ॥ २२ ॥ १७ प्रभुशक्ति, उत्साहशक्ति और मन्त्रशक्ति इन तीनों शक्तियों में १८ इसको जीतने के लिये गर्जना करें ऐसा कौन

कर्मचंद्र९३पट्टप[1] कुमर, सह नृप देवीदास९३ ॥
सहँस असी८०००निज सेनसौं, लरनगयो रनलास[2] ॥२४॥
देवीदास९२स्वपुत्रकै,[3] लगो करन अभिषेक ॥
कर्मचन्द्र मन्त्री न सो, करी अग्ग कुलटेक[4] ॥ २५ ॥
कर्मचन्द्र९३को तब कुमर, रामदास९४अभिधान[5] ॥
तात[6]९२तनय९३दोउन२तखत, बाल धरयो सविधान॥२६॥

षट्पात्

पिता१पुत्र२चहुवान बीर कुलवैर बहोरन ॥
कुन्तल[7] हंकिय कटक रटक[8] इकटक[9] रन रोरन[10] ॥
सुनत भूप दृढसेन अनख[11] नख१सिख२उफनायो ॥
सत्तलक्ख७००००००करि संग चराड चतुरंग[12] चलायो ॥
कुन्तल अधीसके भट कलह[13] चहुवानन मारे बहुत ॥
पै अति अवृष्टि[14] सिंधुन सुसत हुव असिपावक[15] उभयरहुत[16] ॥२७॥
बहुत१पहुत२अन्त्यानुप्रासः[17] ॥ १ ॥
भगवतदास१रु कृष्णादास२जुज्झे अपुब्ब[18] जिम ॥
देवीदास१रु कर्मचन्द्र२अरि अमित[19] मार इम ॥
व्है मंदर[20] दृढसेन सेन करि करि पयसागर[21] ॥

मनुष्य है ॥ २३ ॥ १ पाटवी कुमर २ युद्ध में नृत्य करने को अथवा क्रीड़ा करने को ॥ २४ ॥ ३ अपने पुत्र के ४ युद्ध नहीं तजने की अपने कुल की पहिले की टेक (हठ) करी ॥ २५ ॥ ५ नाम ६ पिता और पुत्र दोनों की गद्दी पर बालक पोते को विधि पूर्वक रक्खा ॥ २६ ॥ अपने कुल का वैर पीछा लेनेको ६ निरन्तर १० भयंकर ८ टक्कर लेने को ७ कुंतल देश को सेना सहित चले ११ क्रोध १२चारप्रकार (रथ, हाथी, घोड़े, पैदल) की सेना को १३ युद्ध में बहुत मारे परन्तु अत्यन्त १४ अनावृष्टि में समुद्र सूखजावैं ऐसे खड्ग रूपी १५ अग्नि में दोनों सेना १६ होम होगई ॥२७॥ १७अभङ्गपद और सभङ्गपद दो प्रकार के पदों से अन्त्यानुप्रास होते हैं जिनका लक्ष्य लक्षण प्रथमराशि में कर आये हैं उनमें से सभङ्गपद से अन्त्यानुप्रास आते हैं वहां पर मूल में ऐसा लिखाहुआ है १८ अपूर्व लड़े १९ अमाप शत्रु मारे और२०मन्दराचल के समान होकर दृढसेन की सेना को२१क्षीरसागर करके

तिल तिल खग्गन[1] तुट्टि वसे सुरलोक बीरबर ॥
विंदा१रु प्रीति२जस सुनि बिहित[2] कीर्ति१जया२सहगोन किय
दृढसेन तनय हरिसेन इत प्रतिष्टान[3] गद्दिय गहिय ॥ २८ ॥

(दोहा)

रामदास९४ नरनाह इत, करत राज्य करनाट ॥
भवन[4]रूप बामन[5]१ भजत, बलि[6] रनरूप बिराट२ ॥ २९ ॥
सुव बिदर्भपति भीमकी, सुता पद्मिनी९४।१ सूर ॥
ससिकुलभव संकेत[7]पुर, परन्यौं पाटव[8]पूर ॥ ३० ॥
देवदत्त१ बिप्रहिं दये, सासन[9] नवति९०[10]समंद्ध ॥
पंद्रह१५ जय२ पौरा[11]निकहिं, गहि काव्यन रस गेंद्ध[12] ॥३१॥
दिय चारन धनदेव३कौं, द्वि२अयुत२०००० हाटक[13] दम्म ॥
निज पुरुखन जस काव्यसुनि, कुंतल्ल सन रन कम्म[14] ॥३२॥
नृप सत्रुघ्न४३ अनेहतैं[15], सूतकुलहिं[16] हुव साप ॥
पाई[17] भववृख चारि पुनि, छिज्जत[18] चारन छाप ॥ ३३ ॥
आर्यमित्र लहि हर हुकम, पटु[19] तब विदित प्रसंस[20] ॥
बासुकि[21] तनया व्याहिकैं, बाढयो पुनि निज बंस ॥ ३४ ॥
रचि हैं अष्टम८ राशिमैं, निजकुल सो सनिदान॥

---

१ खड्गों से टूटकर २ उचित यश सुनकर राजा देवीदास के साथ विन्दा और प्रीति, और कर्मचन्द्र कुमर के साथ कीर्ति और जया नामक स्त्रियां सती हुईं ३ प्रतिष्ठान पुर की गद्दी पर बैठा ॥ २८ ॥ अपने घर में ४ बावन (ठिंगने) रूप को ५ पुनि ६ युद्ध में विराट स्वरूप को धारण करता है ॥ २९ ॥ ७ पुर विशेष ८ पूर्ण चतुर ॥ ३० ॥ ९ उदक ग्राम १० समृद्धिवाले ११ जय नामक चारण को १२ काव्य का दृढ रसग्रहण करके ॥ ३१ ॥ १३ सोने की मोहरें १४ कुन्तल देश में युद्धकार्य किया था उसका कार्य सुनकर ॥ ३२ ॥ १५ समय से १६ लोमहर्षण नामक सूत के कुल को श्राप हुआ था सो १७ महादेव के वृषभ को चराकर १८ छीजते हुओं ने चारण पदवी पाई ॥ ३३ ॥ आर्यमित्र नामक सूत ने शिव की आज्ञा लेकर १९ चतुर और २० प्रशंसा योग्य २१ वासुकि नाग की अवरी नामक कन्या को व्याहकर फिर अपने वंश को बढाया ॥ ३४ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि पुराण वृत्ति को

पौरानिक चारनपदहिँ, जिम यह भजत सुजान ॥ ३५ ॥
रामदास९४कविता रसिक, कर्मचन्द९३जसकन्न[1] ॥
सुनि चाहै कुन्तल समर[2], छकि रसबीर अछन्न[3] ॥३६ ॥
भूपति भगवतदास८८सौं, इक१सिवदास९विहाय[4] ॥
कुन्तल रन सबहि कटे, जनक[5] वैर धक जाय ॥ ३७ ॥
रामदास९४के हुव कुमर, महानंद९५वय बाल ॥
संलैं[6] वैर नरेस हिय, करैं जतन करि काल ॥ ३८ ॥
नृपति रामदास९४हु निडर, करि सुत मासन्न[7] कर्म ॥
होय राहु हरिसेनकै, धकि[8] लग्गो कहि धर्म ॥ ३९ ॥

षट्पात्

अनी[9] च्यारि४करि अप्प रहैं अरि बिभव बिगारत ॥
दब्बत कुन्तलदेस निखिल[10] हैलकर्म[11] निवारत ॥
द्वैरधा[12]को संभव न वैर मन्नैं न संधिमुख[13]४ ॥
यातैं बिग्रह१एक रुट्ठि मंडिय रावन रुख ॥
इम बित्ति अट्ठन्हायन[14] गये कोप अतुल हरिसेन किय ॥
वाँरको[15] मुलक करनाट कछु लागि साहस पुनि दब्बिलिय॥४०॥

दोहा

कुन्तलपति लरिबो चहैं, चहैं दाव चहुवान ॥

धारण करनेवाले (सूत) जिसप्रकार चारणपद को धारण करते हैं उस हमारे कुल को कारण सहित अष्टमराशि में कहेंगे ॥ ३५ ॥ १ कानों में २ कुन्तलदेश के युद्ध का ३ प्रसिद्ध वीर रस ॥ ३६ ॥ ४ छोडकर ५ पिता का वैर लेने के क्रोध में जाकर ॥ ३७ ॥ राजा का वैर हृदय में ६ सालता (चुभता) है इससे शत्रु के काल का यत्न करता है ॥ ३८ ॥ पुत्र का ७ अन्नप्राशन संस्कार (बालक को प्रथम ही अन्न खिलाने का कार्य) करके ८ क्रोध करके वैर लेना अपना धर्म कहकर राहु होकर लगा ॥ ३९ ॥ ९ अपनी सेना के चार भाग करके १० सम्पूर्ण ११ खेती के कार्य को मिटाकर १२ दोनों ओर मिलावट रखना तो संभव नहीं और सन्धि १३ आदि उपाय वैर लेने की अवस्था में माने नहीं जाते इसकारण से रावण की भांति हठ करके विग्रह ही ठाना १४ आठ वर्ष बीत गये १५ इस तरफ का ॥ ४० ॥ ४१ ॥

अरि मिहिकावति उप्परहि,पुनि किय कुप्पि प्रयान ॥४१॥
लैन रामदासहु लख्यो, जब अरि निजपुर जात ॥
आय जुरयो तब अध्वमैं, घल्लि अचानक घात ॥ ४२ ॥

षट्पात्

रामदास९४नरराज भूप हरिसेन सेनैभट ॥
जिम सिचान खैरकोन वहुत किन्नैं बट उब्बटै ॥
वहु सत्रुन रन व्याह दई अच्छरि नव दुलहनि ॥
तनु तजि अप्पहु त्रिदिव वस्यो सुरराज सभ्य बनि ॥
निज वैर लैन चाह्यो नृपति विधिजोग सु उलटो बढ्यो ॥
करनाटईस दारुन कलह चाहि टेक धारनै चढ्यो ॥ ४३ ॥

दोहा

रामदास९४कौं मारि रन, सत्रु प्रबल हरिसेन ॥
गज्जि महानंद९५हिं गहन, धायो सजवे धरेनं ॥४४॥
जान्यों सात्रव मूल जब, रंचहु भुम्मि रहैं न ॥
मैं तिमकरि कुंतल सुरौं, चाहौं निस१दिन२चैन ॥४५॥

षट्पात्

मन्त्रि नियत यह मंत्र प्रबल हंकिय कुंतलपति ॥
रिपु आवन१ नृप मरन२सुन्यों पैत्तन मिहिकावति ॥
अग्गिकुलहिं करनाट अंखि बदलि रु दिय उत्तर ॥

१मार्ग में॥४२॥रामदास चहुवान ने हरिसेन की२सेना के वीरों को जैसे शिकरा पक्षी ३ तीतर पक्षियों को बिखेर देता है तैसे मार्ग और ४ विना मार्ग बिखेर दिये ५ शरीर छोडकर ६ आप भी ७ इन्द्र का सभासद होकर स्वर्ग में बसा ८ तरवारों की धारों पर चढा अर्थात् कटगया ॥ ४३ ॥ ९ शीघ्र१०भूपति ॥४४॥ भूमि पर शत्रु का ११मूल (जड़) कुछ भी नहीं रहै ऐसा करके मैं१२कुन्तल देश को पीछा जाऊं ॥ ४५ ॥ १३निश्चय यह सलाह मानकर १४मिहिकावती पुरी में १५ जब अग्निकुलवाले (चहुवाणों) को कर्णाट देश ने नेत्र बदल कर(क्रोध से) उत्तर दिया तब हित करनेवाले राज्य

लैलै वित्त पलाये अंग पलटे हित अवसर ॥
पद्मिनी तवहि लै पुत्र निज भजि विदर्भ पीहर गई॥
इम दिष्ट जोग मिहिकावती प्रतिष्टान पत्नी भई॥४६॥

दोहा

लछमन वाला सीमलारि, रामदास नरराय ॥
परयो जुज्झि छट्ठो पुरुष, कुंतल रन तजि काय॥४७॥
हरिसैनहु दरकुंचकरि, गरद विछावत गैन ॥
मिहिकावति करि निज अमल, लख्यो वाल असु लैन४८
महानंद जब नहिं मिल्यो,तब तहँ सेन सम्हारि॥
पकरन अरि संकेतपुर, रचन विचारी रारि ॥४९॥
प्रतिष्टान प्रति आय पुनि, दिय अग्गहि लिपिदूत ॥
देहु भीम दौहित्र कौ, रन मंडहु रजपूत ॥५०॥
पुत्र करन१जुत भीम२पहु, सुनि यह भो रन सज्ज ॥
वलवाननकों बुल्लिकैं, करे उचित सव कज्जं॥५१॥
पुत्रसहित तब पद्मिनी९४।१, निजपीहर१कुल२ नास॥
निरखि छन्न कढि निक्खसी, उत्तर दिस धरि आसं॥५२॥
जावतकलिजुग छदसत६००जुत, हायनं इक्कहजार१०००
महानंद तजि इम मही, आयो चम्मलिवार ॥५३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीति-

के अंग थे वे भी समय पर पलटगये और १ धन ले ले कर २ भागगये ३ भाग्य के योग से मिहिकावती पुरी प्रतिष्टानपुर की ४ स्त्री हुई ॥ ४६ ॥ ५आकाश में॥४७॥ महानन्द नामक बालक का ६प्राण लेना चाहा ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ७ पत्र दिया कि हे भीम तुम्हारे दौहित्र (महानन्द) को हमें देदो ८ अथवा रजपूतों के साथ युद्ध करो ॥ ५० ॥ ९ राजा १० उचित कार्य किये ॥ ५१ ॥ पद्मिनी अपने पीहर के ११कुल का नाश होता देखकर उत्तर दिशा की ओर १२आश करके चली ॥ ५२ ॥ कलियुग के सोलह सौ१३वर्ष जाते समय महानन्द इसप्रकार अपनी भूमि (कर्णाटदेश) को छोडकर१४ चम्मल नदी के इस पार आया ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-

होत्रचरडासिबंशबर्णने कुन्तलराज सातवाहन चहुवाणराजकुमार कृष्णदास ८९ सहितभूपालभगवद्दास ८८ मारणप्रीति८६।१सहितविन्दा ८८।१ सहगमनकर्णाटराजशिवदास ९० चंद्रकला ९०।१ परिणयनयज्ञानुष्ठानकुमारहरिपूर्ण ९१द्भवनोत्कलपतिचालुक्यराडिन्द्रद्युम्नश्रीजगदीशमन्दिरप्रतिष्ठापनहरिपूर्ण ९१ चम्पा ९१।१ विवहनकुमारदेवीदास ९२ जननकुंतलराजरणहरिपूर्णबीरशय्याशयनदेवीदास ९२ कीर्ति९२।१ कर्मचन्द्र ९३ जया ९३।१ पाणिग्रहणकुमाररामदास ९४ प्रादुर्भवनसपुत्रकर्मचन्द्र ९४ नरेशदेवीदास ९२ दृढसेनसमित्तनुत्यजनजयो ९३।१ पेतकीर्ति ९२।१ पावकस्नानहरिषेणकुंतलच्छत्रधरणरामदास ९४ पद्मिनी९४।१परिणयनसमनुभूतकाव्यरसकबिजनशासनवितरणपौराणिकचारणपदप्रापणसूचनकर्णाटराजकुमारमहानन्दो९५द्भवनहरिसेनरामदास ९४ मारणमिहिकावतीस्वगेहसमानयनसपुत्रपद्मिनी ९४।१ सङ्केतपुरपलायनहरिषेणबिदर्भराजभीमत्रासनश्रुतैतद्विग्रहसपरिकरसपु-

---

राण वंशवर्णन में कुन्तलदेश के राजा सातवाहन का राजकुमार कृष्णदास सहित राजा भगवतदास को मारना, प्रीति सहित बिन्दा नामक दोनों सास बहू का सती होना, कर्णाटदेश के राजा शिवदास का चन्द्रकला को व्याहना, यज्ञ का अनुष्ठान करना, कुमार हरिपूर्ण का जन्म, उत्कलदेश के पति चालुक्यराज इन्द्रद्युम्न का श्रीजगदीश के मन्दिर की प्रतिष्ठा करना, हरिपूर्ण का चम्पा से विवाह करना, कुमर देवीदास का जन्म, कुन्तलदेश के राजा के युद्ध में हरिपूर्ण का वीरशय्या में सोना, देवीदास का कीर्ति से और कर्मचन्द्र का जया से विवाह होना, कुमर रामदास का जन्म, पुत्र सहित कर्मचन्द्र और राजा देवीदास का दृढसेन के युद्ध में शरीर छोडना, जया सहित कीर्ति नामक दोनों सास बहू का सती होना, हरिसेन का कुन्तल के छत्र को धारण करना, रामदास का पद्मिनी से विवाह करना, काव्यरस का अनुभव करके कविलोगों को उदकग्राम देना, पुराण की वृत्ति धारण करनेवाले सूतों को चारण पद प्राप्त होने की सूचना, कर्णाटदेश के राजा के महानन्द कुमार का जन्म, हरिसेन का रामदास को मारना, अपने घर मिहिकावती से पुत्र को लाकर पद्मावती का संकेतपुर भागना, हरिषेण का विदर्भदेश के राजा भीम को त्रास देना; यह विग्रह सुनकर अपनी परगह

त्रपद्मिन्युदीचीप्रस्थानचर्मरावतीसमुल्लङ्घनं द्विषष्टितमो ६२ मयूखः ॥ ६२ ॥ आदितश्चतुरुत्तरशततमः ॥ १० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

(षट्पात्)

स्वामिधर्मरत[1] रहिय सुभट नृप संग पंचसत५०० ॥
इक्क१वनिक[2] कायत्थ इक्क१ दुव२ सचिव मंत्रमत ॥
द्रविड[3] बिप्र[4] बुध दोय२ सूत[5] संकर३ तृतीय३ तिम ॥
बंदीजन[6] बलभद्र१ इक्क१ मागध[7] प्रसेन१इम ॥
धावर खनित्र[8]१ धात्री[9]२ सहित सबदास१ रु सुद्धांतजन[10] २॥
दुव२द्वास्थ[11]२इक्क१नापित[12]१इते छायोपम[13] लग्गे चलन ॥ १ ॥

(दोहा)

नये सुभट रक्खे इतर[14], सल[15]१सकट[16]२न भरि साज ॥
इम नृप चर्म्मलि[17] उत्तरिग, लै जननी१ भुवलाज२ ॥ २ ॥

(षट्पात्)

टोडापुर तिनदिनन तपैं पांडवकुल तोमर[18] ॥
इंद्रसेन अभिधान[19] सुन्यौं यह वृत्त[20] प्रीति पर ॥
पत्र समुख पठवाय महानंद९५हिं बुलाय घर ॥
रुमा९५।१ नाम तनया स्वकीय[21] दिन्नी बिबाहि वर ॥

पुत्र सहित पद्मिनीका उत्तरादिशा में गमन करना, और चामल नदी को लांघने का बासठवां मयूख समाप्त हुआ।६२।और आदि से एकसौ चार१०४मयूख हुए॥

स्वामिधर्म में १ प्रीति रखनेवाले २ बनिया ३ द्रविड़वंश के दो ब्राह्मण ४ पंडित और तीसरा पंडित संकर नामक ५ चारण ६ प्रातःकाल में स्तुतिपाठ करके राजाओं को जगानेवाले भाट ७ वंशावली लिखनेवाले बड़वाभाट ८ खोदने की वृत्ति करनेवाला (बेलदार) अथवा खोदने के आयुध (कुदाली) धाऊ (धाय का पति) ९ धाय सहित १० जनाने लोग ११ दो द्वारपाल १२ नाई इतने १३ छाया की उपमा रखनेवाले अर्थात् शरीर के साथ छाया चलती है ऐसे साथ चलनेलगे ॥ १ ॥ १४ दूसरे १५ ऊटों पर और १६ छकड़ों में सामान भर कर १७ चामल नदी को उतरे ॥ २ ॥ १८ तँवर जाति के क्षत्रिय १९ नामवाले. यह २० वृत्तान्त सुना २१ रुमा नामक अपनी

सकुटुंब नृपहिँ रक्ख्यो सहित बरख सत्त७करि करि विनय
चहुवानराज तत्थहि लयो वालापन१तजि तरुन बय२ ॥३॥

(दोहा)

जामातहिँ[2] अद्धी अवनि[3], लग्गो तोवँर दैन ॥
स्वसुर ग्रास अनुचित समुझि, लुब्भ्यो[4] नहिँ नृप लैन ॥४॥

(षट्पात्)

निस इक१ सोवत नृपहिँ स्वप्न दिन्नौँ साकंभरि[5] ॥
करि रन बिंदन[6] कदन सदन[7] यह लेहु अमल करि ॥
गोधि तिलक सिंदूर पुत्र पिक्खहु जब प्रातहि[9] ॥
साजि आवहु तब सेन अवनि पावहु हुंत आतहि ॥
नृप जग्गि स्वप्न सुमिरन नियंत[11] रत्त[12] तिलक हेरत रहैं ॥
बिंदन बिडारि[13] उतकी अवनि चाहुवान भुग्गन चहैं ॥५॥

(दोहा)

नागज[14] तिलक ललाट निज, जगि इकदिन नृप जानि ॥
तकि साकंभरि[15] इष्ट तब, प्रत्यय[16] लिन्न प्रमानि ॥ ६ ॥

षट्पात्

जननी[17] पहँ नृप जाय स्वप्न कारन सुनाय सब ॥
दल[18] रक्खन कछु द्रव्य तनय मंगिय बिनीत[19] तब ॥
मुद्रा प्रयुत[20]१००००००प्रमेय कंठभूखन[21] माता दिय ॥

पुत्री को १ युवा अवस्था ॥ ३ ॥ २ जमाई को आधी ३ भूमि ४ लोभ नहीं किया ॥ ४ ॥ ५ शाकंभरी देवी ने स्वप्न दिया युद्ध में ६ विन्दा जाति के क्षत्रियों का नाश करके ७ इस घर (सांभर) में अधिकार करलै और हे पुत्र ६ जब प्रभात में उठते ही अपने ८ ललाड़ में सिन्दूर का तिलक देखै तब सेना सझ कर आना सो आते ही १० शीघ्र भूमि पावेगा ११ निश्चय ही १२ लाल तिलक १३ निकाल कर॥ ५ ॥१४सिन्दूर का १५शाकंभरी देवी को इष्ट जानकर यह १६ सुबूत पाया ॥ ६ ॥ महानन्द ने १७ माता के पास जाकर१८सेना रखने को १९बहुत नम्र होकर पुत्र ने धन मांगा २०दश लक्ष रुपयों के समान प्रमाण रखनेवाला२१गले का भूषण माता ने

च्यारि अयुत४००००चतुरंग कलह चहुवान सज्ज किय ॥
वंबन[2] बजाय धरि सक्ति[3] वल रारि लैन बिंदन रटकं[4] ॥
उफनाय विजयदसमी१०दिवस महानंद हंकिय कटक[5]॥७॥

पादाकुलकम्

साकंभरी सक्ति जनपद[6] जँहँ,राज्य करैं रजपूत बिंद तँहँ॥
नरवाहन अभिधान नरेस्वर, बज्जैं वह संभर अवनीबर॥८॥
जो अन्वय[10] चाक्षुष६मनुजायो[11], सो तँहँ धारत छत्र सुनायो॥
कुंच नृपति तापैं इम किन्नौं, लरन बेग बीरन पन लिन्नौं॥९॥

दोहा

साकंभरि व्रत करि सुपहु[12], रहि टोडा नवधरत्त ॥
सत्रह१७हायन[13] वय समय, मन रन रंगिय मत्त ॥ १० ॥

सारङ्गः ॥

चल्ल्यो महानंदलै बाहिनी[14] चंड,बढ्ढ पताकौ[15] छये मत्त बेतंड[16]॥
आदित्य[17] ढंक्यो मच्यो खेह अंधार,काली लगी संगही बुल्लि जैकार[18]
यौं कुश्चपैं कुश्च मंडे महानंद९५,डारयोहि साकम्भरी[19] देसपैं फंद ॥
पिल्ली[20] चमू[21] सम्मुही बिंद भूपाल,किन्नी सबै टूक सो व्है प्रलैकाल
जान्यो न चोहानकौं रोकनौं सत्थ[22],राजा गजरूढ[23]भो बिंदही तत्थ[24]॥
आयो सु हत्थीघटा[25] संग आरोपि,कच्छी[26] महानंदहू नक्खये कोपि

दिया १ सेना २ नगारे बजाकर ३ देवी का वल धारण करके युद्ध में बींदा क्षत्रियों से ४ टक्कर लेने को ५ महानन्द की सेना चली ॥ ७ ॥ शाकंभरी देवी का ६ देश है जहां पर ७ बींदा पदवीवाले ८ नरवाहन नामक ९ सांभर का भूपति ॥ ८ ॥ चाक्षुष मनु से ११ उत्पन्न हुए १० वंश में छत्र धारण करता हुआ सुना ॥ ९ ॥ १२ राजा १३ सब हर्ष की अवस्था में ॥ १० ॥ १४ भयंकर सेना लेकर चला १५ध्वजायें बढ़ाकर मस्त १६हाथियों को छाया १७ सूर्य ढकगया १८ जय हो ऐसा शब्द करके कालिका साथ हुई॥११॥१९ सांभर देश पर २० सेना साम्हने २१ भेजी ॥१२॥२२जो साथ साम्हने भेजा था वह चोहान को रोकने में समर्थ नहीं ऐसा जानकर२३हाथी पर चढकर२४तहां पर२५ हाथियों की घटा साथ में करके बीन्दों का राजा ही आया तब महानन्द ने२६घोड़े डाले(शत्रुकी सेना के सामने दौड़ाये.)

चंडी रिझाते मिले बिंद१चोहान२,दंडी मनौं फग्गके चच्चरी[3] दान॥
ताली[3] खुली ईसकी रीसकी रारि,नैबेलगी[4] सेसके सीसकी बारि
खैबेलगी जुग्गिनी टूक के टारि, गैबेलगी[6] डाकिनी प्रेतकौं गारि॥
कट्टैं कलावा खुलैं के करीकंध, तुट्टैं उडैं रीति के बीति[9] के बंध१५
भेजाकढैं खुप्परी उच्छटैं भिन्न, खुल्लैं दहीसाँर[10]ज्यौं गग्गरी खिन्न
बज्जैं मनौं प्रातकी झल्लरी तेग, गज्जैं घनैं वैरकौं बाहुरैं वेग।१६
पीवैं भरैं साकिनी अस्त्रसौं[11] टोप,जीवैं भजैं भीरु[12] के अर्जुनी[13] ओप॥
झूलैं करी[14] अंत्रके हिंडुलौ[15] प्रेत, खिल्लैं[16] भरी हेतसौं खेचरी खेत।१७
जैपाल व्हाँ बिंदु भूपालको पुत्त[17], आयो रिसायो महानंदके हुत्त[18]॥
तापैं भयो भूपके हत्थको वार, जैपालको व्हैं पर्‍यो मत्थ चो४फार
चडौसिको[19] बंस जुज्झे महाकाल,मार्‍यो महानंद यौं बिंदु भूपाल॥
फेरी तहाँ संगही जित्ति चोहान,साकंभरी देसमैं अप्पनी आन१९

(दोहा)

नरबाहन१मार्‍यो नृपति, सुत जयपाल२समेत ॥
साकंभरि जनपद सकल, पायो विजय उपेत[21] ॥ २० ॥

पादाकुलकम्

साकंभरि[22] मंदिर१अति सुंदर, बनवायो नूतन[23] धरनीवर[24] ॥

देवी को १ प्रसन्न करते हुए, फाल्गुन मास में गेहर (पुरुषों का नृत्य विशेष) खेलनेवाले २डांडिये देवें जैसे तरवारों के प्रहार करते हुए विन्दें और चहुवाण मिले जिससे शिव की ३ समाधि खुलगई और शेषनाग के मस्तकों की ५ वाड़ ४ नमनेलगी ॥ १४ ॥ ६ गानेलगी ७ गाली ८ हाथियों के कन्धे, बंध (तंगआदि) तूटकर रीते होकर कितने ही ९ घोड़े उडते हैं ॥ १५ ॥ गागर फूटकर १०मक्खन निकले ऐसे ॥ १६ ॥ टोप में ११ रुधिर भरकर, कितने ही १२ कायर १३ गौवों के समान भागकर जीते हैं १४ हाथियों की आँतों के १५ हिंडोले बनाकर प्रेत झूलते हैं १६ प्रसन्न होती हैं ॥ १७॥१७पुत्र. क्रोध करके महानन्द को१८होम करने आया ॥ १८ ॥ १९ चहुवाण वंशी ॥ १९ ॥ २० .विजय२१सहित पाया ॥ २० ॥२२ साक　　का २१

बलि साकंभर१नगर बसायो, गढ संभर सब जग जो गायो॥२१॥
ए उभयरहि जीरन उद्धारे, सकल बिंद संगर संहारे ॥
साकम्भर पहिले उष्मासह, संस्कृतबानि सिद्ध जो पद यह॥२२॥
सो प्राकृत परि ह्वै साम्रंभर, सोही अपभ्रंस परि सम्भर ॥
जापुरके आवत जग ठायो, चहुवानन सम्भर पद पायो ॥२३॥
महानंद९५जो पुर इम लैकैं, किन्नौं अमल प्रजा सुख दैकैं ॥
सवित्री१६ रानी२टोडा सन, पाय अवनि बुल्ली निज पत्तन ॥२४॥

(दोहा)

सो निज अज्जू संगही, पितुसन दायज पाय ॥
रुमानगर पहुँचो रुमा९५।१, सबलै बसु समुदाय ॥ २५ ॥
सुनि प्रसन्न तोवँर सुपहु, सुत निज दिन्नौं संग ॥
रानी इम संभरनगर, पेत्ती पति रसरंग ॥ २६ ॥

मनोहरम्

चक्खुस मनूके कुलके जे बिंद छत्रिय,
सबही रन मारि आन फेरी निज छंद यौं ॥
साकम्भरी इष्ट करि सक्ति व्रत साध्यो बेद,

महानन्द ने बनवाया१फिर सांभर नगर बसाया ॥ २१ ॥ कितनों का मत है कि साकंभरी देवी का मंदिर और सांभर नगर प्राचीन थे जिनका जीर्णोद्धार किया और सब विंदा क्षत्रियों को युद्ध में मार. गर्मी सहित होवे उसको संस्कृत में साकंभर कहते हैं इसकारण से संस्कृत भाषा में यह सिद्ध हुआ शब्द है ॥ २२ ॥ प्राकृत भाषा में पड़कर वही शब्द 'साम्रंभर' हुआ और वही शब्द अपभ्रंश भाषा में संभर प्रसिद्ध हुआ. उस पुर के आने से चहुवाणों ने प्रसिद्ध संभर पद पाया अर्थात् चहुवाण भी संभर संभरीक कहलाने लगे ॥ २३ ॥२माता और राणी को भूमि पाकर टोडा से अपने पुर में बुलाई ॥ २४ ॥३वह रुमा नामक राणी पिता से दहेज पाकर सास के साथ ही धन का समूह लेकर संभर पुर गई ॥२५॥४तँवर राजा ने५गई॥२६॥ ६चाक्षुष मनु के वंश के सब विन्दा क्षत्रियों को रण में मारकर अपनी स्वतंत्र आण फेरी. साकंभरी देवी को अपना इष्ट करके फैलाया, जैन आदि नीच मत को मिटाया जिसके सुनने से कुन्तल देश के राजा ने भी त्रास पाया

धर्म विथरायो मेटि छुद्रमत मंद यौं ॥
कुन्तल नरेस हु सुनैं तैं त्रासपायो जाहि,
दूरकीनैं देसके असेस दुख१दंद२यौं ॥
छोरि करनाट चम्मलीके वार आवतही,
रानी रुमा९५।१पाई रुमा२पाई महानंद यौं ॥ २७ ॥

षट्पात्

नृप बिदर्भ पति करन१सुनत आयो पुर सम्भर ॥
इंद्रसेन२तोमर अधीस टोडापति दुद्धर ॥
इक१मातुल२इक१स्वसुर१मिले जामिज१जामात२हिं ॥
समय पाय अभिसिक्त नृपन किन्नौं नृप गातहिं ॥
द्विजवरन दम्म३ लक्खन दये नियॅत पाय जनपद नयो ॥
इम महानंद९५संभर सहर भद्रासन राजत भयो ॥ २८ ॥

दोहा

भुम्मिगई पुनि भूपतिन, आवत निठ्ठि अगार ॥
संग रहत लग्गी सदा, बसुधेश्वर कुल वार ॥ २९ ॥
करन१इंद्रसेन२हु कतिक, मासन रहि अति मोद ॥
नृप आये निज निज निलय, करत भीत चउ४कोद॥३०॥
महानंदकै हुव तनय, विष्णुदास९६अधिवीर ॥

(कुन्तल देशवालों ने चहुवाणों को मारकर कर्णाट देश छीन लिया था इससे उनको भय हुआ कि चहुवाण प्रबल हुए हैं तो हमसे पीछा बदला लेवेंगे) १ सम्पूर्ण दुःख भूख तिस आदि २ चम्मल नदी के इस पार आते ही महानन्द ने इसप्रकार रुमा नामक राणी और रुमा (सांभर) नामक पुरी को पाई ॥ २७ ॥ तँवरों का पति विदर्भ देश का राजा करण तो मामा और टोडा का राजा इन्द्रसेन स्वसुरा सांभर में जाकर भाणेज और जमाई से मिले और समय पाकर राजा महानन्द के शरीर पर अभिषेक किया ३ रुपये ४ निश्चै ही नया देश पाकर सिंहासन पर शोभायमान हुआ ॥ २८ ॥ गईहुई भूमि राजाओं के घर में फिर कठिनाई से आती है परन्तु चहुवाण कुल के द्वार पर यह साथ ही लगी रहती है ॥ २९ ॥ ५ चारों दिशाओं में भय उपजाते हुए अपने अपने घर आये ॥ ३० ॥ शत्रुओं की भूमि दबाने और

परपक्खन दब्बन पुहवि, निज कुल रक्खन नीर ॥ ३१ ॥
दिग्घसेन नृप तिन दिनन, धरत छत्त मरुधाम ॥
जो गोहिल लवभव जनन, जस खट्टत बसु८जाम ॥ ३२ ॥
रैवतमनुके बंस सब, दै पहिलैं निज दाव ॥
लिन्नी मरुभुव गोहिलन, अति राजस उपनाव ॥३३॥
दिग्घसेन तनया बिदित, निपुन सुभद्रा९६।१नाम ॥
बिष्णुदास९६कौं व्याह करि, दई गुनन उद्दाम ॥ ३४ ॥

(षट्पात्)

महाराम९७महिपाल सूर हुव बिष्णुदास९६सुत ॥
धर्म१चतुर नय२धीर जुद्ध१पंडित बितरन२जुत ॥
नृप प्रमार गांधारदेस अनुबिंद बंसभंव ॥
चंद्रदेव अभिधान दुसह सालव अटवी दव ॥
ससिप्रभा९७।१नाम ताकी सुता संभरपति लायो परनि ॥
ताकै उदार उपज्यो तनय देवादास९८कुमारमनि ॥ ३५ ॥

[दोहा]

भानुबंस सोरठभुव, नंदध्वज नरनाह ॥
इंदुमती९८।१तस अंगजा, लायो नृप बयलाह ॥ ३६ ॥

[षट्पात्]

देवादास तनूज धरनिधव अमरसिंह९९हुव ॥
बडगुर्ज्जर लवबंस भूप श्रीधर दसार्ण भुव ॥

अपने कुल का पराक्रम बढाने में विशेष वीर हुआ ॥ ३१ ॥ दीर्घसेन राजा मारवाड़ का छत्र धारण करके लव से पैदा हुए वंश में गोहिल पदवी वाला क्षत्री आठों पहर यश पैदा करता है ॥ ३२ ॥ रैवत मनु के वंशवालों पर दाव देकर रजोगुण के उफाण में मारवाड़ की भूमि गोहिलों ने ली ॥ ३३ ॥ १ गुणों में निरंकुश ॥ ३४ ॥ २ दान सहित ३ कन्धार देश में अनुबिन्द के वंश में ४ उत्पन्न हुआ ५ शत्रुओं रूपी वन का दुस्सह अग्नि ॥ ३५ ॥ ६पुत्री ॥ ३६ ॥ ७ भूपति ८ बडगूजर पदवी के क्षत्रिय ९ दशार्ण देश का राजा (विन्ध्याचल के पूर्व और दक्षिण प्रान्त को दशार्ण कहते हैं)

नाम मंजुला९९।१तास सुता आकृति१गुन२सुंदरि ॥
चित्तउदधि चहुवान वीर संभर लायो वरि ॥
हुव तास वास सत्रुन हरन गंगादास१००सुभास सुत ॥
जद्दव प्रसक्त तनया रमा१००।१पुरवयान परन्यौं प्रनुत।३७।

[दोहा]

गंगादास तनूज हुव, मानसिंह१०१मतिमान ॥
नृपजद्दवकै श्रीनगर, व्याहयो यह सविधान ॥३८॥
सुता त्रिलोचनकी सुघर, नववय जमुना१०१।१नाम२॥
दंपति२सुख बिलसे दुलभ, क्रीडन जिम रति१कार्म२॥३९॥

[षट्पात्]

मानसिंह१०१सुत सूर विदित प्रकट्यो विश्वंभर१०२ ॥
मूलदेव कछवाह सुता स्यामा१०२।१व्याह्यो वर ॥
जाय कच्छ बुगलान अंडर दुलहनि यह आनी ॥
मथुरादास१०३महीप तनय ताकै हुव दानी ॥
द्वारका भूप जयदेवकी सुता यहै परन्यौं सुमति१०३।१ ॥
भाखिये कौन अन्वयभव सु ग्रंथन बिच पाई न गति ।४०।

दोहा

जाको कुल१न लिख्यो लिख्यो, नगर२जनक३अरु नाम४
किम हम तँहँ कल्पित लिखैं, जानैं धर्महिं जाम ॥ ४१ ॥

१स्वरूप से और गुण से सुन्दर२समुद्र के समान चित्तवाला चहुवाण परण लाया जिसके शत्रुओं का पास हरनेवाला ३ श्रेष्ठ कान्तिवाला गंगादास नामक पुत्र हुआ ४ विशेष स्तुतियोग्य ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ५ सुघट् (श्रेष्ठ घड़नावाली अथवा बुद्धिमान) ६ नवीन अवस्थावाली ७ स्त्री पुरुष ने जोड़ा से सुख विलसे और जैसे रति के साथ ८ कामदेव क्रीड़ा करै तैसे क्रीड़ा करी ९ बुगलान पुर में जाकर१०निर्भय११इसका जन्म किस वंश में था जिसकी गति ग्रंथों में नहीं पाई ॥ ४० ॥ ग्रन्थों में इस कन्या का नाम, इस के पिता और पुर का नाम तो१२लिखा है परन्तु कुल नहीं लिखा तब ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि हम मन से ही१३कल्पना करके कैसे लिखें१४ जहां धर्म को जानते हैं तहां झूठ कैसे लिखैं ॥ ४१ ॥

बिंबत्थल अलराज नृप, प्रतप्यो इत प्रतिहार ॥
सुत पचीस२५ताकै भये, जंग सबहि जुज्झार[1] ॥ ४२ ॥
हंसराज तिनमैं बडो, सो जद्दव दृढ दंस[2] ॥
मृगयामैं[3] अप्रज[4] हन्यौं, गिन्यौं पितर तस बंस ॥ ४३ ॥
सुमतिहु मथुरादास१०३सन, उपजायो सुत एक१ ॥
सबन द्वारकादास१०४सो, बरन्यौं बिहित बिबेक[5] ॥ ४४ ॥
जीवापुर दिनकर[6] जनन, बीरसेन नरनाह ॥
तास सुता पद्मावती१०४।१लायो यह बरि ब्याह ॥ ४५ ॥
तनय द्वारकादास१०४कै, हुव नृप माधवदास१०५ ॥
कलि[7] सत्रुन चूरन करन, अर्थिन[8] पूरन आस ॥ ४६ ॥
मदनपुरी[9] जद्दव नृपति, ससिकुल[10] भूखन सूर ॥
तास सुता चन्द्रावती१०५।१,परन्यौं नृप गुन पूर ॥ ४७ ॥
सुत हुव माधवदासकै, सूरन[11] मुकुट सुदास १०६ ॥
गंज्यो तिहिं दंतालगढ, वैरिन दै बनवास ॥ ४८ ॥
नृप चालुक हरनाथकी, सुता सुप्रभा१०६।१नाम ॥
संभरपति परन्यौं सुमति, धन्वंतरिपुर[12] धाम ॥४९॥
इत चालुक मोहन नृपति, सूकर१ उत्कल२नाह[13] ॥
पूरबधर पट्टनि पुरी, रची सिल्पमत राह ॥५०॥

पादाकुलकम्॥

भयो महीप राजमोहन सुत, तनय तीन३ताकै हुव नयजुत ॥
जेठो महाकर्ण१खट्टन[14] जस, बीरभानु २सुरकर्ण३अनुज तस॥५१॥
बीरभानु१पाई पट्टनि[15] भुव, जाकै कुल झाला[16]२चालुक हुव ॥

१वीर(युद्ध करनेवाले)॥४२॥२दृढ कवचवाला३शिकार में४बिना सन्तान मरा जिस को उसके वंशवाले पितर मानते हैं ॥४३॥५उचित ज्ञानवाला ॥४४ ॥ ६ सूर्यवंशी ॥ ४५ ॥ ७ युद्ध में ८ याचकों की ॥ ४६ ॥ ९ मैनपुरी में १० चन्द्रवंश का भूषण ॥ ४७ ॥ ११वीरों का मुकुट ॥ ४८ ॥१२काशीपुर ॥४९॥ उत्कल देश का१३पति ॥ ५० ॥ यश१४पैदा करनेवाला ॥ ५१ ॥ १५ पाटणपुर की भूमि १६ झाला पदवीवाले सोलंखी हुए

सुरकर्ण१हिंकिलराजनगर दिय,अन्वयतास भुरटिया२अक्खिय५२।
महाकर्ण १उत्कल१निवास तजि, रहनलगो सूकरगंगा३ भजि ॥
नृप सुदास१०६संभरपतिकै इत,सुत दस१०भये बीररस वंदित५३

(षट्पात्)

बीरभद्र१०७।१अरुकासिनाथ१०७।२मधुसूदन१०७।३बामन१०७।४
बलि मुरारि१०७।५बाराह१०७।६हृषीकेस१०७।७हुउदारमन ॥
केसव१०७।८पुनि बलभद्र१०७।९कमलनयन१०७।१०हु सर्बानुज३॥
ए१०सुदास अंग४भव भये आजानुबाहु भुज॥
जान्यौं न सकल अनुजन जनन५ बीरभद्र१०७।१ अग्रज बली॥
रुक्मिनी१०७।१०्याहि लायो रसिक कुल जद्दव पंकजकली६५४

दोहा

सेनपाल नृपकी सुता, जो कंवलपुर जाय ॥
गृह आनी यह पानि गहि, रानी संभरराय ॥ ५५ ॥
संभरकी करनाटसौं, अवनी चोथे४अंस ॥
सो अब बढत सुदाससौं, वसुधेश्वरके बंस॥ ५६ ॥

[षट्पात्]

बीरभद्र सुत भयउ धारि गोपाल१०८धर्मधुर ॥
सल चालुक्क तनया पृथा१०८।१सु परन्यौं कौंकनपुर॥
नृप गोपाल तनूज भयो गोविंददास१०९पुनि॥
सो तोवँर संकर सुता सु परन्यौं समता९ सुनि ॥
अभिधान जास राधा१०८।१बिदित हुव सुपुत्त तामैं कुमर॥
मानिक्यराज११०नामक सुमति कैंलि१०जिहिं लिन्नौं सबनकर५७

१उसका वंश२सोरम घाटपर गंगा का सेवन करके।५३।३सबसे छोटा ४ सुदास के पुत्र ५ इनमें छोटे पुत्रों का वंश कितना चला और कहां रहा सो नहीं जाना ६ यादवों के वंश रूपी कमल की कली ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कर्णाट देश से सांभर की ७ भूमि चौथी पांती थी सो ८ चहुवाण वंश में सुदास से बढनेलगी ॥ ५६ ॥ ९ अपने समान(बराबरीवाला) सुनकर १०युद्ध में जिसने सबसे खिराज लिया ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ बीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने महानन्द ९५टोडेश्वरतोमरकन्यारुमा ९५।१ परिणयनसमवगतशाकम्भरीस्वप्नहतबिन्दशाकम्भरनगर-स्कन्धावारस्थापनशक्तिमन्दिर१तत्पुर२जीर्णोद्धरणविष्णुदास ९६ सुभद्रा९६।१महाराज९७शशिप्रभा ९७।१ रेवादासे९८न्दुमत्य९८।१ ऽमरसिंह९९बञ्जुला९९।१गङ्गादास१००रुमा१००।१मानसिंह१०१ यमुना१०१।१विश्वम्भर१०२श्यामा १०२।१ मथुरादास१०३सुमति १०३।१द्वारकादास१०४पद्मावती१०४।१माधवदास १०५चन्द्रावती १०५।१सुदास१०६सुप्रभा १०६।१समुद्वहनसुदासराजकुमारबीरभद्रा १०७ऽऽदिदशको१०द्भवनतज्ज्यायोबीरभद्र १०७ रुक्मिणी १०७।१ गोपाल१०८पृथा१०८।१गोविंददास १०९राधो१०९।१परिणयनतन्मा-णिक्यराज११०समुद्भवनं त्रिषष्टि६३तमो मयूखः॥ ६३ ॥

आदितः पञ्चोत्तरशततमः ॥ १०५ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पादाकुलकम्

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में महानन्द का टोडा के पति तँवर की कन्या रुमा से विवाह करना, साकंभरी देवी का स्वप्न में श्रेष्ठ रीति से जलाये हुए बिन्दा क्षत्रियों को मारकर सांभर नगर में राजधानी स्थापन करना, और शक्ति के मन्दिर और उसके पुर का जीर्णोद्धार करना, विष्णुदास का सुभद्रा को महाराज का शशिप्रभा को रेवादास का इन्दुमती को अमरसिंह का वंजुला को गंगादास का रुमा को मानसिंह का यमुना को विश्वंभर का श्यामा को मथुरादास का सुमति को द्वारकादास का पद्मावती को माधवदास का चन्द्रावती को सुदास का सुप्रभा को विवाहना, और सुदास के वीरभद्र आदि दश कुमरों का जन्म होना, जिनमें ज्येष्ठ वीरभद्र का रुक्मिणी को गोपाल का पृथा को गोविंददास का राधा को विवाहना, उससे माणिक्यराज का जन्म होने का तिरसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६३ ॥ और आदि से एक सौ पांच मयूख हुए ॥ १०५ ॥

नृप गोविंददास१०९कै हुव सुत, जो माणिक्यराज११०सव गुन जुत॥
एकछत्र प्रतप्यो संभर यह, अधिपति भयो मंडलेस्वर यह ॥ १ ॥
भरयह१स्वरयह२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

[दोहा]

इत नृप गोकुलराजसौं, छुट्टो सूकर देस ॥
लयो जोरकरि जद्दवन, गयो निकसि तन एस ॥ २ ॥
सो चालुक दक्खिन अवनि, धरि विदर्भ निज धाम ॥
जदुन दरित निवस्यो जहाँ, गंजि लये कछु ग्राम ॥ ३ ॥

[एकांत्यानुप्रासिनी]

(रोला)

इत संभर मानिक्यराज११०भो अविरत दानी ॥
बढती भुम्मि सुदास पहुहु जिहिं अधिक बढानी ॥
लये विजैपुर१देवदुर्ग२ऊखापुर३धानी४ ॥
चंदावारी५वहुरि लुट्टि निज अमल लगानी ॥ ४ ॥
सत्तलपुर६अरु नागनैर७जित्ते जुरि मानी ॥
व्रध्ननगर८वलभी९समेत सिवपुर१०सिंहानी११ ॥
जयतारँन१२जालोर१३दुर्ग सुझंति१४सिखरानी१५ ॥
पेल१६तिजारा१७सुकताल१८मेरट१९बुगलानी२० ॥ ५ ॥
पानीपथ२१अजमेर२२जील२३अब्बू२४धरआनी ॥
धरनीधर२५संचोर२६सीम निज आन फिरानी ॥
पव्वागढ२७किरनाल२८दुर्ग रत्ता२९रजधानी ॥
सिंगानाँ३०कानौंड३१मैंम३२वौंद३३रु भीवानी३४ ॥ ६ ॥
अंतीला३५अर नारनोल३६जज्झर३७तिरभानी३८ ॥

---

१ चार योजन भूमि पर राज करनेवाले को राजा कहते हैं और ऐसे सौ राजा जिसके आधीन होवें उसको मंडलेश्वर कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ २ दक्षिण की भूमि में ३ यादवों से डराहुआ ॥ ३ ॥ ४ निरन्तर दान देनेवाला हुआ ५ देवगढ ६ नगर विशेष ७ जैतारण ८ सोजत ॥ ५ ॥ ९ अरु

खरसिंदू३९अरु सामरैन४०चरखी४१चिकलानी४२ ॥
पट्टालय४३कुरुखेत४४सीम छिति[1] सर्व छुरानी ॥
इत प०वपसर४५डिड्डवान४६परैं[2] आन भगानी ॥ ७ ॥
नारायनपुर४७जुब्बनैरै[3]४८दब्बे इत दानी ॥
फग्गी४९कालख५०पटल५१ फाक५२लागि चाक५३लवानी५४ ॥
टोडा५५डग्गी५६नगर५७टौंक५८बरवाड५९बुधानी६० ॥
लोँचनपुर६१दुन्नी६२वडोद६३घट्टी६४घरआनी ॥ ८ ॥
गढबयान६५हिँडौंनि६६दुर्ग व्रजअंत बखानी ॥
इत खट्टू६७हिंसार६८चंग६९जंगल लग जानी ॥
रेवाडी७०जाजव७१अटेर७२अब स्वीयँ कहानी ॥
इत्यादिक नृप नगर१दुर्ग२जित्त्यो जुरि मानी ॥ ९ ॥
सत्त७गुनी करनाटसौंहु अवनी अधिकानी ॥
यौं सम्भर मानिक्यराज११०बंधी रजधानी ॥
मारे जद्दव १ गहिरवार २ गोहिल ३ मह्वानी४ ॥
चालुक५तोमर६सुकवार७मेहर८मुलतानी ॥ १० ॥
वडगुज्जर९चंदेल१०चाच११सैंगर१२धर आनी ॥
जित्त्यो रन इतनैं नरेस करि तुष्ट मृडानी ॥
मथुरापति जद्दव मुकुंद तैंनया जगजानी ॥
हेमा११०११नाम सु चाहुवान परनी पटरानी ॥११॥
आनी वह संभरनिकेतैं[12] इन्द[13] कि इन्द्रानी ॥
पंचपकरे मख कुराडपायँ५चउ४चैयन४विधानी ॥
सौत्रामणि१मैं सहँस१०००भौंर किय घृत कीलानी ॥

१भूमि२शत्रुओं की प्राण को भगादी ॥ ६ ॥७॥ ३जोधनेर४फागी५नैणसा नामक ग्राम ॥ ८ ॥ ६ रेगिस्तान (थळी) तक ७ अपनी कहलाने लगी ॥ ६ ॥ ८ भूमि ९ गहरवाल पदवी के क्षत्रियों की जाति विशेष ॥ १० ॥ १०देवी को प्रसन्न करके ११पुत्री ॥ ११ ॥ १२इन्द्र इन्द्रानी को लाने जैसे चहुवाण ने उस हेमा को अपने १३घर में लानी १४ सोमयज्ञ १५ यज्ञ विशेष १६ तोल विशेष १७ अग्नि की ज्वाला में

साकम्भरि मन१वचन२सुद्ध सेई सुररानी ॥ १२ ॥
अठ्ठ८दिसानैं भागधेय२ अप्पी चउ४आनी३ ॥
ऐसी भूतल प्रबल आन मच्ची चहुवाँनी४ ॥
पिन्नौं गड्डरि१ सारदूल२ इक१ घट्टैं पानी५ ॥
जे हत्थन धरते कमान६ तिन्ह कंठ गिरानी ॥ १३ ॥
कतिकन भौंहन बिछुरि मुच्छ चिबुकँन७ चिपकानी ॥
कर जिनके तजते न मुट्ठि८ तिन मत्थ गहानी ॥
जिन मानी ग्रीखम अनेह९ निज गेह हिमानी ॥
तिन भूपनकी तपँत१० जेठ सम्भर११ थिति जानी ॥ १४ ॥
सिंघनके १ देखे न देस २ मेघनके १ पानी २ ॥
रक्खी यह मानिक्यराज११०करि सत्य कहानी ॥
किन्नौं संगर समरसिंह निज दल सेनानी१२ ॥
दै सत २०० सासन१३ द्विजन अत्थ१४ दिन्नैं दिन दानी ॥ १५ ॥
पौरानिक१५ प्रद्युम्नकाज दस१०सौं घड़वानी११ ॥ १६
चारन केसव१कौं बडोद२मधुकौं१ छग्गानी२ ॥ १७
वंदीजन१८ मेघ१रु मुरारि२किन्नैं धनमानी ॥
बसुधा१९ बाला सबन छोरि नृप हत्थ बिकानी ॥ १६ ॥

१ देवी को २ खिराज ३ एक रुपये में से चार आने (चतुर्थांश) ४ चहुवान की ५ भेड़ और सिंह ने एक घाट पर पानी पिया ६ जो हाथों में धनुष धारण करते थे उनके गले में डालदिया ॥१३॥ कितनों की मूंछें भौंहों से उलटी मुड़कर ७ ठोडी से चिपकगईं अर्थात् मूंछें नीची होगईं (मूंछ नीची करलेना पराजय का लक्षण है) जिनके हाथ खड्ग की ८ मूँठ नहीं छोडते थे उन्होंने खड्ग मस्तक पर रख लिया जिन राजाओं ने माणिक्यराज के ९ समय को ग्रीष्म ऋतु जानी उनके घर में १० शीतलता रही और जिन राजाओं ने जाना कि ग्रीष्म क्या है उनके लिये ११ चहुवान की स्थिति ज्येष्ठमास के सूर्य समान रही ॥ १४ ॥ अपनी सेना का १२ सेनापति १३ ब्राह्मणों को दो सौ १४ उदकग्राम दिये ॥ १५ ॥ प्रद्युम्न नामक १५ चारण को १६ दश ग्रामों के साथ घड़वानी नगर दिया १७ छांगाणी नामक ग्राम दिया १८ भाट १९ भूमि रूपी स्त्री सबको छोड़कर माणिक्यराज के ही हाथ में बेचीगई अर्थात् इसकी मोल लीहुई होगई ।१६।

अज्जानी१अज्जी सुहाग लज्जी तुरकानी ॥
को गंजैं चहुवान वंस बढ्ढी यह बानी ॥
सहँसबाहु अर्जुन समान जग आन प्रमानी ॥
मित्रन१ठानी अचल ऋद्धि२सत्रुन१घर हानी२ ॥ १७ ॥
कलिजुगकी मानी अनेक बत्तैं पलटानी ॥
द्वापर१त्रेता२कृत३कथाहि सव्वन सुमिरानी ॥
राज्य करत मानिक्यराज संभर सुखधानी ॥
बसुधेस्वरँ१पैंतीस३५वंस अग्गैं डग्ग आनी ॥ १८ ॥

पादाकुलकम्

इम मानिक्यराज११०सम्भरपति,तप्यो सवन सिर मिहिर महामति
प्रभुपन विस्वविजित करि पायो,सु पुनि विस्वपति११२नाम कहायो

दोहा

पाडव सक सर नाग नभ, जामल२०८५तिम कलिजात॥
पुरसंभर मानिक्य११०पहु,विदित करी जस बात ॥२०॥

सोरठा

हेमामैं हनुमान१११।१, प्रथम विश्वपतिसौं भयो ॥
पुनि सुग्रीव१११।२सुजान, एसोदर प्रकटे उभय२ ॥२१॥

दोहा

लई जनक अवनी सु लखि, मन अनिच्छ हनुमान१११।१
खैहैं निज भुज खट्टिकैं, चिंती यह चहुवान ॥२२॥

---

१ आर्यावर्त की भूमि ने सुहाग २संचय किया और ३ तुर्किस्थान की भूमि लज्जित हुई (नूह आदि के हमले आर्यावर्त पर पहिले होचुके थे इससे तुरकानी का लज्जित होना लिखागया) ४ चहुवान वंश को कौन जीतसक्ता है ॥ १७ ॥ ५ बातें ६ सत्ययुग की कथा सबको याद कराई ७ चहुवाण ने पैंतीस वंश के आगे ८ पैंड दिया (क्षत्रियों के छत्तीस वंश माने जाते हैं) ॥ १८ ॥ ९ सूर्य १० संसार को जीतकर युधिष्ठिर के सम्वत के और ११ कलियुग के दो हजार पचीस वर्ष जातेहुए १२राजा माणिक्यराज ॥ २० ॥ १३सहोदर (सगेभाई) ॥ २१ ॥ १४पिता की लीहुई भूमि को देखकर उसकी १५इच्छा नहीं करके हनुमान ने विचारकिया कि अपने भुजों की १६उपार्जन

पिता जबहि जुवराजपद, लग्गो याकौंहैं दैन॥
कुमर नट्यो तब अरज करि, नये देस लरि लैन ॥२३॥

षट्पात्

किय हनुमान११११कुमार प्रनतं यह अरज पिता प्रति ॥
सिक्खदेहु प्रभु सुतहिं सदा छत्रन रन संगति ॥
राजकुल१रु मृगराज२बसत सुहि देस बिचारत॥
मिलैं छिति न तब मोहि असन अप्पहु लखि आरत ॥
निज जनक धाम पावत निखिल विनु श्रम यह पद्धति बहत ॥
नव भव गहैं न भूपन तनय किंमहु पुत्त ताहि न कहत २४

दोहा

सोदर मम सुग्रीव यह, भुग्गहु संभर भोग ॥
पृथक देस हम पायहैं, जय१नय२समुदयं जोग ॥२५॥

षट्पात्

सु सुनि बिस्वपति११०सुपहु खंध थप्पालि सिराहि खिन॥
जंपियँ दलं लैजाहु यह हु मन्नी न कुमर इंन ॥
जननी निज जैंद्दोनि इक्क१अप्पिय मनिभूखन ॥
सो लहि मातुलं निलँय अप्प पत्तो मधुपत्तन ॥
भूपति मुकुंद सुत रुक्मरथ धरत छत्त मथुरा नगर॥
जँहँ जाइ बंटि भूखन वह रु कटक नव्य रक्खिय कुमर।२६।

की हुई भूमि भोगेंगे ॥ २२ ॥ २३ ॥ १ विशेष नम्र होकर क्षत्रियों के सदैव युद्ध ही २संगम है ३ सिंह ४ मुझे अन्य जगह भूमि नहीं मिले तब ५ पीडित जानकर आप भोजन दीजिये ६ अपने पिता का घर ७ सभी पाते हैं यह बिना परिश्रम के ८ मार्ग में चलना है परन्तु राजाओं के पुत्र नवीन भूमि नहीं लेवें उनको ९ किसीप्रकार से पुत्र नहीं कहते ॥ २४ ॥ १ विजय और नीति के १० श्रेष्ठ उदय के योग से ॥ २५ ॥ ११ कहा कि १२ सेना लेजा सो १३ कुमरों के सूर्य ने यह भी नहीं माना १४ कुमर की माता जादवाणी ने १५ मणियों का एक भूषण दिया १६ मामा के १७ घर १८ मथुरा पुरी में गया १९ नवीन सेना रक्खी ॥ २६ ॥

दोहा

मधुपुरतैं हनुमान१११इम, सज्जे अतुल सिपाह ॥
प्राचीदिस चलिबो प्रथम, रुच्यो कुमारहिं राह ॥ २७ ॥

षट्पात्

सूकर१ गंगान्हाइ पिंड समुचित प्रयाग२ करि ॥
कासी३सद्धि विधेय गया४ भूदेवं भर्म भरि ॥
अवनी पिक्खन अग्ग चित्त जगदीस५अवधि किय॥
निज दूतन तँहँ आय कुसुमपुर सुद्धि निवेदिय ॥
जँहँ राज्य करत रविकुल चटुल सो सचिवन रुट्ठो रहत॥
परदार संग गहि जारपन वट१ उव्वट२ उद्धत बहत॥२८॥

सोरठा

तातैं छह प्रकृति तास, अधिप करयो चाहत इतर ॥
चढयो कुमर इहिं चास, कुसुमद्रंग संगर करन ॥२९॥

षट्पात्

हंकि कटक हनुमान कुसुमपत्तन प्रयान किय ॥
चटुल सज्जि चतुरंग दाव सुनतहि सम्मुह दिय ॥
जुद्ध भयउ दुव२जाम परे नर१तुरग२हजारन ॥
पै सचिवादिक पलटि कह्यो कुमरहिं दुख कारन ॥
विसवासि सवन करि चटुल वध जित्ति कुसुमपत्तन लयो॥
तँहँ स्वीय राजधानी बिरचि मोद जनक१भ्रात२हिं दयो॥३०॥

---

१ पूर्व दिशा में ॥ २७ ॥ २ सोरमघाट पर ३ ब्राह्मणों को सोना से पूर्ण करके अगली ४ भूमि देखने के लिये जगदीश तक जाने का विचार किया ५ पटना की ६ खबर सुनाई ७ चटुल नामक सूर्यवंशी राजा वहां राज्य करता है ८ पराई स्त्रियों के साथ ९ अनम्र होकर चलता है ॥ २८ ॥ राज्य की सात प्रकृति हैं जिनमें राजा को छोडकर बाकी की छै१० प्रकृति ११ दूसरा राजा करना चाहती हैं १२ इस खबर पर १३ पटना में युद्ध करने को कुमर चढा ॥ २९ ॥ १४ दो पहर तक युद्ध हुआ परंतु १५ मंत्री आदि ने चटुल से पलट कर हनुमान कुमर को अपने दुःख का कारण कहा १६ पटना पुर को जीतलिया १७अपनी १८पिता

(दोहा)

लै पुरपाटलिपुत्र इम, हुव भूपति हनुमान१।१।२॥
पायो सम्मंद विश्वपति, बिक्खि सुतहिं बलवान ॥ ३१ ॥

(पादाकुलकम्)

अवन राम नरनाह धरहु सब, चहुवाननकुल भेद फटत अब॥
वंसपुरुख जे प्रथम गिनाये, तिनकै इक१इक१पुत्रहि पाये ॥३२॥
काहूकै न होय दूजो२सुत, यहहु असंभव गिनहु नरननुत ॥
प्रमति साप रक्खैं जो कारन, इक्क१कैहु व्है तव विस्तार न॥३३॥
तो तेरह१३अजपाल तनय किम, तनय तीन३भटदलनकैहु तिम॥
पुनि इकबीस२१अनंगराज सुव, दसक१०सुदासकैहु कैसैं हुव ३४
प्रमति कह्यो अंतर कछु पैहो, जब चहुवान बहुत बढि जैहो ॥
बहुत प्रजा कतिकनकै ताँतैं, चहिये सोहु सुनी नहिं यातैं॥३५॥
काहूको न चल्यो कुल१जानहु, अल्पहु बढ्यो काहुको मानहु॥
अबलौं बंस रह्यो नहि जिनको, लोभिनैं कर्यो अनादर तिनको३६
कारन द्वै२कविबुद्धि बिचारैं, व्है ते मागध जनन निकारे॥

१पटना को लेकर२हर्ष पाया३देख कर४हे राजा रामसिंह! सुनो५पहिले पीढियें गिनाईं उनमें एक एक ही पुत्र होना पायाजाता है६हे मनुष्यों में स्तुतियोग्य रामसिंह ! किसीके भी दूसरा पुत्र नहीं हुआ यह७नहीं मानने योग्य है८ प्रमति ने पहिले श्राप दिया था वह जो सन्तान नहीं बढने का कारण माना जावे तो एक के भी ९ सन्तान का विस्तार नहीं होना चाहिये ॥ ३३ ॥ १० पुत्र ॥ ३४ ॥ ११ इसकारण से कितनों के बहुत सन्तान चाहिये सो भी नहीं हुए ॥ ३५ ॥ अथ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) अपनी सम्मति लिखते हैं कि किसीका तो वंश चला ही नहीं और किसीका वंश कम बढा उनका अनादर करके १२ लोभी १३ बड़वा भाटों ने उनके नाम अपनी पुस्तकों से निकाल दिये इसकारण से ऊपर की पीढियों में एक एक ही पुत्र होना पाया जाता है. (ग्रन्थकर्ता ने बड़वाभाटों की पुस्तकों पर पूर्ण विश्वास करलिया इसीकारण से इस ग्रन्थ के इतिहास में सम्वतों में और पीढियों के नामों में भूलें रही हैं सो हम दिग्दर्शन न्याय से कहीं कहीं दिखाते जावेंगे और इस टीका की पूर्वपीठिका लिखेंगे वहां पर भी इस विषय में हम अपनी संमति

इत हनुमान कुसुमपुरं लिन्नौं, कुमर राज्य पूरबधर किन्नौं॥ ३७॥
ते चहुवान तास कुल जाये,ते पूरबिया१प्रथम१कहाये॥
कुसुमदंग ताहीके अन्वय, भयो विक्रमादित्य बीतिभय॥ ३८॥
चंद्रावती जास हुव रानी, वैजलदेव तास हुव मानी॥
जो नृप सकल सास्त्र पारंगत, बिस्मरि मंगलमैं न लिख्यो वत॥
ताकै तनय श्रीहराधर हुव, जिहिं सिसु लखि उपदेस धारि ध्रुवँ।
सुगम व्याकरन छंटि सुहायो, ग्रंथ प्रबोधचंद्रिका गायो॥ ४०॥
ऐसो वैजलदेव भयो पँहु, बिस्तर ताके वंस लह्यो बहु॥
पूरबियाहु भेद बहु पावैं, नृप सुनिये ते सुकवि गिनावैं॥ ४१॥
आल१बील२सागर३आसावर४, अरु तोगी५पप्पडिया६आमर७॥
असिमेरी८भाकर९सावरिया१०, है इंग११रु जहेचक१२हरिया१३
नम्मसवाल१४भंगासिक,नामक, समरांचक,समरूप,सुधामक॥
मुकराना१८भावड१९तिम मानहु,यौं पुनि गोगसेन२०उर आनहु४३
सामवाल२१तोसीनाँ२२संभर, बहुरि गुरावा२३धामनेच२४बर॥

लिखेंगे परन्तु यहां इतना लिखदेना अवश्य समझते हैं कि बड़वा भाटों की पोथियों में दो सौ वर्ष इधर के नाम और संवत तो सही मिलते हैं और आगे के नामों में और सम्वतों में गड़बड़ है सो तीन सौ वर्ष तक तो फिर भी कुछ सही और कुछ गलत मिलते हैं परन्तु पन्द्रह सौ के शतक से आगे के तो निरे मनउपंग लिखेहुए हैं इसका कारण यह मालूम होता है कि बड़वाभाटों में वंशावली लिखने की पहिले प्रथा ही नहीं थी और जो प्रथा थी तो बीच में छोड़ बैठे और पन्द्रह सौ के शतक में अथवा इससे भी कुछ पीछे वंशावली लिखना प्रारंभ करके अपने पुस्तकों को प्रामाणिक करने के लिये कल्पित नाम और कल्पित सम्वत लिखकर पूर्वापर संगति मिला दी है इसीसे इतिहासकर्ताओं ने भूलें खाई हैं) १ पटना में उसीके २ वंश में॥ ३८॥ ३ सब शास्त्रों का जाननेवाला हुआ जिसको ४ भूलकर ५ मंगलाचरण में नहीं लिखा॥ ३९॥ उस हरधरा ध्रुव को ६ बालक जानकर उसको पढ़ाने के अर्थ ७ निश्चै ही सुगम व्याकरण ८ छांटकर प्रबोधचन्द्रिका नाम ग्रन्थ बनाया॥४०॥ ९ राजा हुआ जिसके वंश ने बहुत १० विस्तार पाया ११ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) गिनाते हैं॥ ४१॥ १२ श्रेष्ठ धामवाले १३ चहुवान.

मारू२५मंत्री२६भवर२७महामन, हव्वासी२८दानिक२९अरातिहन्‌
कलेचा३०रु बग्गड३१इत्यादिक, वंसभेद तिनमैं गन बादिक ॥
पूरबिया१इतहू कछु पाये, राने सुभट जे सुनहु सुहाये ॥ ४५ ॥

[दोहा]

वेदला१रु कोठारिया२, बहुरि पालसोली३हु ॥
पूरबिया चहुवान ए, करहु श्रवन खिलकौ हु ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचरडासिवंशवर्णने च्युतराज्यचालुक्यगोकुलराजविदर्भनिवसनकृतदिग्विजयमाणिक्यराज ११० यादवीहेमा ११०।१ परिणयन सत्रदानादिसमनुष्ठानराजकुमारहनुमत्‌ १११।१ सुग्रीव १११।२ समुद्भवनत्यक्तशाकम्भरज्येष्ठकुमारमागधराज्यसमासादनपूर्वपुरुषसन्तानाऽभावशङ्कासमाधानहनुमत्सन्ततिचाहुवाणपौर्विकपदमापणौकलिंश३१त्तद्भेदप्रकटनं चतुःषष्टितमो६४मयूखः ॥ ६४ ॥

आदितः षडुत्तरशततमः ॥ १०६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

---

१ शत्रुओं को मारनेवाले ॥ ४४ ॥ २ उदयपुर के महाराणा के उमराव ॥ ४५ ॥ वेदला, कोठारिया और पारसोली नामक ग्रामों के पति पूरबिया चोहान हैं और ३ बाकी रहे जिनकी भी कथा सुनो ॥ ४६ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाणवंश वर्णन में गोकुलपाल सोलंखी का राज्य छूटकर विदर्भदेश में बसना, माणिक्यराज का दिग्विजय करके यादवी हेमा से विवाह करना, और यज्ञ और दान आदि का अनुष्ठान करना, राजकुमार हनुमान्‌ और सुग्रीव का जन्म, बडे कुमार हनुमान्‌ का सांभर को छोडकर मगधदेश के राज्य को प्राप्त करना, पूर्वपुरुषों में सन्तान के अभाव की शंका का समाधान करना, हनुमान्‌ के वंश के चहुवाणों को पूरबिया चहुवाणों की पदवी प्राप्त होना और उनके इकतीस भेद प्रकट होने का चौसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६४ ॥ और आदि से एक सौ छै मयूख हुए ॥ १०६ ॥

विश्वपतिहु१२सुग्रीव१११कै, करि सम्भरं अभिसेक ॥
वास कियउ वारानसी, बिधिसह सद्धि विवेक१ ॥ १ ॥
तिनदिवसन लग्गो मिटन, दंपति२विपिनै४ प्रयान ॥
वैखानस५३आश्रम कठिन, हेरैं कलिं तस हान ॥ २ ॥

[षट्पात्]

सुनहु राम नरनाह अहो दारुन कलि आगम ॥
धर्म घटन घटि सकलँ होत प्रतिकूल समागम ॥
याके प्रथम१सहस्र१०००लोभ दुस्सह जोरयो जग ॥
मग रक्खन व्यय मेटि नृपन जलकरि तोरे मग ॥
जिम कन्हअग्ग गजनैरतजि मिजल पंच५करि निजनयर ॥
पहुँचे सु वत्त सुपनन परिग हुव दुर्गम उद्यानधर ॥ ३ ॥

[दोहा]

दुवसहस्र२०००कलिके बरस, बित्तत होय निसेस ॥
चलि कृतघ्न१चोर२न चलन, बरत्यो त्रास बिसेस ॥ ४ ॥
नियतहु छोरैं कबहु जड, पै पल१अन्न२तजैं न॥
काम१क्रोध२मद३मोह४करि, इक्क चहैं निज अैंन ॥ ५ ॥

---

१ सांभर के राज्य का अभिषेक करके २ काशीवास किया ॥ १ ॥ उन दिनों से ३ स्त्रीपुरुष का जोडा से तप करने को ४ वन में जाना मिटनेलगा ५ वानप्रस्थ आश्रम कठिन है जिसको कलियुग नाश करना चाहता है ॥ २ ॥ ६ आश्चर्यकारक कलियुग का आना ७ सब. इस कलियुग के प्रथम हजार १००० वर्ष जाने पर संसार ने दुस्सह लोभ जोड़ा और राजाओं ने मार्ग (सड़क) की रक्षा के खर्च मिटाकर परस्पर जलकर अथवा वर्षा के जल से मार्ग को तोड़ दिया. जिसप्रकार आगे हस्तिनापुर को छोड़कर श्रीकृष्ण पांच मंजिल में अपने नगर (द्वारका) पहुंचे थे वह वार्ता तो स्वप्न की सी होगई क्योंकि रस्ता टूटजाने से वन की भूमि दुर्गम होगई ॥ ३ ॥ कलियुग के पूरे दो हजार वर्ष बीतजाने पर कृतघ्न (कियेहुए उपकार को न माननेवाले) और चोरों का चलन चला जिससे विशेष त्रास वरता ॥ ४ ॥ कभी मूर्खलोग नित्यकर्मों को (संध्यावंदनादिकों को) भी छोड़देते हैं परंतु मांस खाना नहीं छोड़ते और काम, क्रोध, मद, मोह करके एक अपने ही घर को चाहते हैं

कलि सहँस्र१०००तीजो३लगत, रुद्धो दंपति१गोन ॥
पापसमय रचिकैँ रहैं, वैखानस विधि कोन ॥ ६ ॥
पुंज सुता बिमला११२।१परनि, बडगुज्जरि सिवदंग ॥
संभरनृप सुग्रीव१११इत, भुग्गी अवनि अभंग ॥ ७ ॥

[षट्पात्]

नृपसुग्रीव तनूज भयो अंगद११२अजेय कलि ॥
सो कलिपुर जद्दव सुमित्र तनया बिंझावलि११३।१ ॥
आयो परनि उदार गेह सद्ध्यो श्रुति संगति ॥
तनय केसरी११३तास भयो संभरपुर भूपति ॥
त्र्यंबक प्रमार दसपुर नृपति तनयाँ कमला११३।१नाम तस
परन्यौं नरेस हुव तास पटु सुत जयंत११४खट्टन सुजस ॥८॥

(दोहा)

नृप चालुक बडवानगर, संकरदास सुमंत ॥
सीता११४।१ तस तनया सती, परन्यौं भूप जयंत ॥ ९ ॥
चालुक्क गोकुलराजके, कुल इत गोकुलपाल ॥
पच्छो आय बिदर्भसौं, सूकर लिय अरिसाल ॥ १० ॥

(षट्पात्)

नृप जयंतके तनय भयो जगदीस११५ महाबल ॥
सो परन्यौं जद्दोनि दुर्ग रनथंभ सज्जि दल ॥
नृप रनधीर सुता रु नाम रंभा११५।१गुन आगर ॥
जिहिं जाठरैं जयराम११६ सूनु प्रकट्यो मतिसागर ॥
परन्यौं सु भूप गोपालपुर गहिरवार सत्तल सुता ॥
रुक्मिनी११६।१ नाम पतिभक्तिरत सील१रूप२वय३संजुता ॥११॥

॥ ५ ॥ १ स्त्रीपुरुष का वन में जाना भी रुक गया २ वानप्रस्थ विधि को रच कर इस पाप समय में कौन रहे ॥ ६ ॥ ३ शिवगढ ॥ ७ ॥ ४ युद्ध में अजेय ५ वेद का साथ ६ मंदसोर पुर का पति ७ पुत्री ८ चतुर ९ यश पैदा करने वाला ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ १० पेट से ११ पुत्र ॥ ११ ॥

(दोहा)

विजयराम११७ जयरामकै, नृप हुव संभरनाह[1] ॥
जिहिं तोवँर जदुनाथकी, वरी सुता विधिब्याह ॥ १२ ॥
प्रभा११७।१ नाम पायो प्रथित[2], रानी जिहिं सुभरूप ॥
तामैं नृपसौं कृष्ण११८सुत, भो संभरकुलभूप ॥ १३ ॥

(षट्पात्)

भूप कृष्ण११८ चहुवान भयो नय१ धर्म२ धुरंधर ॥
नृप गिरधर प्रामार सुता परन्यौं यह संभर[3] ॥
लच्छी११८।१ नाम ललाम तास जाठर समुद्र हुव ॥
रत्न भूप जितजुद्ध११९ धीर चहुवान अर्क ध्रुव ॥
राधिका११९।१ नाम परन्यौं रसिक सो चालुक अर्जुन सुता
पुर कटकनाम किय ब्याह पहु नारि लहिय कुलतियनुता[5] ॥

[दोहा]

राधामैं जितजुद्धसौं, प्रकट्यो सुभग कुमार ॥
गोवर्द्धन१२०अभिधान[7] जो, हुव संभर रखवार ॥ १५ ॥

[षट्पात्]

भीमसुता जद्दोनि दया१२०।१ परन्यौं गोवर्द्धन१२० ॥
ताकै हुव मोहन१२१ तनूज[9] आलस१ प्रमाद२ पन ॥
नृप गोहिल हल्लूक सुता बिजया१२१।१परन्यौं यह ॥
ताकै गिरधर१२२ तनय भयो महिपाल[10] महामह ॥
सँगर प्रताप बंधूनगर कर तराज्य रविकुल तरनि[11] ॥
सुरता१२२।१तदीय[12] तनयाँ[13] सुंघर[14] परन्यौं यह चहुवानमनि१६

दोहा

---

१ सांभर पुर का पति ॥१२॥ २ प्रसिद्ध ॥ १३ ॥ ३ चहुवान ४ चहुवान ५ चहुवानों का सूर्य ६ कुल में और स्त्रियों में स्तुतियोग्य ॥ १४ ॥ ७नाम ८ सांभर पुर की रक्षा करनेवाला हुआ ॥ १५ ॥ ९ पुत्र १०बड़ा तेजस्वी ११ सूर्य कुल का सूर्य १२उसकी १३पुत्री १४ सुन्दर ॥१६॥

पांडव सक नभ अद्रि जिन२४७०, कारि कलि अब्द अतीत[1] ॥
गिरिधर१२२सद्धी जोग गति, पुत्रहिँ दै भुव प्रीत ॥ १७ ॥
इत उज्जैन नरेसको, गौरिल्ल कुमर प्रमार ॥
मार्‌यो अप्रज[2] गोहिलन, कारन सहज सिकार ॥ १८ ॥

षट्पात्

यह प्रमार गौरिल्ल कुमार अतसेन भूप सुत ॥
कढ्यो लखन निज़देस करन अलसन प्रवृत्तिजुत[3] ॥
नगर नाम गुग्गैर हुतो व्यय[4]१आय[5]२ सम्हारन ॥
एकाकी[6] दिन इक्क बाँजि[7] फेरत पत्तो[8] बन ॥
मदसेन नगर भद्दोरपति नृप गोहिल्ल कछु सत्थ सह ॥
वाराहँ[9] पिट्ठि निधरकँ[10] बहत आयो फैंकत तुरंग[11] तह ॥१९॥
सूकर[12] गौरिल्ल अग्ग आत ठड्ढो[13] रह्यो सु थकि ॥
कह्यो कुमर परकीय[14] धाम न करहु विरोध धकि ॥
सूकर अब हम सरन पुहवि[15] सीमा प्रामारन ॥
हनहिं याहि नहि हमहु करहिँ पालन लखि कारन ॥
मदसेन अप्प छोरहु प्रसंभ[16] जग गोहिल्ल रक्खहु सुजस ॥
भद्दोरभूप तदपि[17] न रुक्यो मार्‌यो तोमर[18] पिट्ठि तस ॥२०॥
बहत कुंत[19] गौरिल्ल कुमार झपटाय तुरंगम ॥
अंसं[20] झारि तरवारि कर्‌यो मदसेन अजंगम[21] ॥

युधिष्ठिर के सम्वत् के दो हज़ार चार सौ सत्तर वर्ष जाते और वही कलियुग के वर्ष १ बिताकर ॥ १७ ॥ २ बिना सन्तान ॥ १८ ॥ ३ आलसी मनुष्यों को उद्यम में लगाने के अर्थ निकला ४ खर्च ५ आमद सम्हालने के लिये ६ अकेला ७ घोड़ा फेरने को बन में ८ गया ९ सूवर के पीछे १० निश्शंक दौड़ाताहुआ ११ घोड़े को झपटाकर आया ॥१९॥ वह सूवर १२ गौरिल कुमर के सामने आकर थककर १३ खड़ा होगया १४ पराये घर में १५ यह भूमि भी प्रामारों की सीमा में है १६ हे मदसेन आप इस सूवर को मारने का हठ छोड दो १७ भदोर का राजा तोभी नहीं रुका और उस सूवर के पीठ पर १८ भाला मारा ॥२०॥ १९ भाला बहते ही २० कन्धे पर तरवार मार

गोहिलके सामंत मारि [2]असिबर याको सिर ॥
तोरयो तदपि कुमार रुंड हनि झुंड लरयो चिर[3]॥
[4]अप्रज सु मरयो संगर असह प्रामारन मन्न्यो पितर॥
जंतुन निमित्त इम बैर जग उट्ठे कलि मेटत इतर ॥ २१ ॥

[दोहा]

लगि प्रामारन१गोहिलन२, बहु पीढिन यह बैर॥
उज्जैन१रु भद्दोर२ए, नियत[5] लरे दुव२नैर[6] ॥
नृप गोहिलको इत तनय, उदयराम१२३अभिधान ॥
प्रतप्यो संभर उँदय[7] पर, चंडधाम[8] चहुवान ॥ २३ ॥
चंद्रसेन रविकुल कलस, इत गोतम उंपटंक[9] ॥
राज्य करत नृप रामपुर, सत्रुन डारत संक ॥ २४ ॥
भानुमती१२३।१ताकी सुता, परन्यौं संभररराय[10] ॥
आलस इभ[11] अंकुस भयो, सबन प्रमाद नसाय ॥ २५ ॥
करवाये जिहिं बुद्धि करि, अद्रिन[12] उप्पर अन्न ॥
निज बलसौं त्रि३गुनैं नृपन, पायो बिजय प्रसन्न ॥ २६ ॥
बसुंधा[13] भुग्गी नीति बल, उद्यम करि चहुवान ॥
पायो सफल द्वितीय२धुनि, उद्यम१२३यह अभिधान[14] ॥२७॥
भानुमती१२३।१बपु भस्म किय, स्वामि कलेवर संग ॥
भो उद्यम१२३सुत नृप भरत१२४, जित्त्यो बहु अरि जंग॥२८॥

(षटपात्)

बर्तुलपुर[15] रविवंस बैस उपटंक[16] महीपति ॥

कर जड़ (मृतक) करदिया १उमरावों ने २तरवार मारकर गोरिल का मस्तक तोड़ दिया ३ बहुत देर तक ४ विना सन्तान युद्ध में मरा ॥ २१ ॥ ५ नित्य (सदैव) दोनों ६नगर लड़े (यहां लक्षणा से दोनों नगरोंवालों का लड़ना जानना चाहिये) ॥ २२ ॥ ७ उदय गिरि पर ८ सूर्यरूपी ॥ २३ ॥ ९ गोतम पंदवीवाला ॥ २४ ॥ १०सांभर का राजा ११आलस्य रूपी हाथी का अंकुश हुआ ॥ २५ ॥ १२पर्वतों के ऊपर ॥ २६ ॥ १३ भूमि को नीति के बल से भोगी १४उद्यम नाम पाया ॥२७॥२८॥ १५गोलकुंडा नामक नगर में सूर्यवंशी १६बैस

रुद्रसेन अभिधान नाम तनया तस कीरति१२४।१ ॥
संभर भरत१२४सुबुद्धि सती परनी वह सुंदरि ॥
ताकै अर्जुन१२५तनय धीर प्रकट्यो स्वधर्म धरि ॥
नृप करन बिनाफर[1] जदु[2]जननछबर[3] मऊपुर पति सुता ॥
जूथिका१२५।१नाम परन्यौं उचित नृप सुनारि नारिन[4]नुता॥२९॥

(पादाकुलकम्)

जयत्पाल प्रतिहार भूप सन, बिंबस्थल छिन्न्यौं इत विंदन[5] ॥
तत्थ मर्‌यो न गयो जुरि तासौं, इत आयो भजि स्वीय इला[6]सौं॥३०॥
मरु[7] जनपद पत्तन मंडोउर[8], धरत छत्र नृप गोहिल कुलधुर ॥
लखि खिन रत्ति[9] पैठि तासौं लरि, कढ्ढि सबन[10] निज अमल लयो करि
गोहिल खिल भाजिगय जयतारन[11], पुनि इम मरु पायो प्रतिहारन॥
सम्भर इत अर्जुन नृपकै सुत, नाम सत्रुजित१२६भो वीरन[12]नुत३२
चालुक भीम सुता सो सम्भर[13], कनकप्रभा१२६।१परन्यौं पुर कक्कर॥
सोमदत्त १२७ भो नृप ताको सुत,
जरी सु कनकप्रभा १२६।१ पति वपु[14]जुत ॥ ३३ ॥

दोहा

सैंगर नृप सिवराजकी, तनया नंदा१२७।१नाम ॥
अब्भपुर सु संभर अधिप, यह परन्यौं अभिराम ॥ ३४ ॥
सस्सू जिम नंदा१२७।१सती, किय पतिजुत हुत[15] काय ॥
तिनको सुत दुक्खंत१२८तँहँ, हुव प्रभु खग्ग[16] सहाय ॥३५॥

पदवीवाले क्षत्रिय १ विनाफर नामक २यदुवंशी ३ छवड़ा और मऊ के पति की पुत्री ४ स्त्रियों में स्तुतियोग्य ॥ २९ ॥ जयत्पाल प्रतिहार से ५ विंदा जाति के क्षत्रियों ने विंबस्थल छीन लिया ६ अपनी भूमि से भागकर इधर आया ॥ ३० ॥ ७ मारवाड़ देश में ८ मंडोवर पुर में ९ रात्रि का १० समय देखकर ॥ ३१ ॥ गोहिल सब भागकर ११ जैतारण चलेगये और मारवाड़ पडिहारों ने पाया १२ वीरों में स्तुतियोग्य ॥ ३२ ॥ १३ चहुवान १४ पति के शरीर के साथ जली ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ पति के साथ शरीर को १५ होमदिया १६ खड्ग की सहायता से ॥ ३५ ॥

षट्पात्

बिंदभूप बलिराज सुता ललिता१२८कालंजर ॥
परन्यो यह दुक्खंत१२८भीम१२९तस सुत हुव सम्थर ॥
तोमर भूप त्रिलोकचन्द्र तनयाँ चंद्रावलि१२९।१ ॥
व्याह्यो यह मगबीच मारि रवि१ससि२कुल सम्मलि ॥
सुनि अतुल रूप तोवँर सुता बैसँ अमर१जद्दवँ करन२ ॥
कन्न्या सु लेन हनि भीम१२९कँहँ रन दोउ२न पायो मरन३६

दोहा

परन्यौं भीम१२९सु इम प्रिया, मगविच दुव२नृप मारि ॥
ताकैं हुव लक्खन१३०तनय, रक्खन नव नवँ रारि॥३७॥
सो प्रमार बसुरथ सुता, रमा१३०।१नाम हितरंग ॥
परन्यौं जिहिं अवसानँ पर, स्वर्ग कह्यो पति संग ॥ ३८ ॥
लक्खन सुत सम्भर लस्यो, परसुराम१३१क्षितिपाल ॥
सो जद्दव अर्जुन सुता श्री१३१।१परन्यौं रिपुसाल ॥ ३९ ॥
परसुराम अवसानपरँ, श्रीहु कर्यो पति सत्थ ॥
सुत याको रघुराम१३२सो, तब भूपति हुव तत्थ ॥ ४० ॥

षट्पात्

परसुरामको पुत्र मूढ रघुराम१३२प्रमादी ॥
बरज्यो जिन दै बोधँ बन्यौं तिनको प्रतिवादी ॥
रत्ति१दिवस२आराधि कापिसायँन गुरु किन्नौं ॥
इंद्रिय सुख भँजि इक्क देस भारहु तजि दिन्नौं ॥

१पुत्री२अमर नामक बैसजाति का क्षत्री और३यादव करण, भीम को मार कर कन्या लेने आये थे सो दोनों मारेगये ४ लक्ष्मण नामक पुत्र ५ युद्ध को नवीन रखनेवाला ॥ ३७ ॥ ६अन्त समय में पति के साथ स्वर्ग गई ७ शोभायमान हुआ ८ भूपति ॥ ३९ ॥ ९ परशुराम के अन्त समय पर ॥ ४० ॥ १०जिन्हों ने शिक्षा देकर बुरे कामों से उसको रोका उन्हींका उलटा ११विरोधी होगया१२रात्रिदिन१३मदिरा सेवन करके उसीको गुरु बनाया १४ केवल इन्द्रियों के सुख का सेवन करके देशभार (राज्यकार्य) को छोडदिया

सुद्धांत छोरि निकस्यो न सठ भ्रमि कुलपद्धति भुल्लयो ॥
तिहिँ लखि अचेत जिततित तकत दाव दुसह द्रोहिनं दयो॥४१॥
जयतपाल नृप जन्नन बढ्यो मरु अमल बिथारन ॥
पुष्कर लग जिन दिनन, पुहवि छाई प्रतिहारन ॥
दुद्धर दिस दिस दोरि लुट्टि परधन जे लावत ॥
पावत जोहि प्रमत्त छिप्र छिति तास छुरावत ॥
उनमाँहिँ नाम मंगल अडर प्रातिहार मारोट पति ॥
तिँहिँ आय नेर सम्भर तबहि गरदायउ परिवेख गति॥४२॥
लगी भरत सन घटन विस्वपति छिति" जु वढाई ॥
रहत जात रघुराम अठ्ठ८जोजन अपनाई ॥
ताकोँ मंगल तक्कि सहर घेर्यो साकम्भर ॥
जंत्रमुक्त आयुधन समर किन्नों खट६वासर ॥
करि हल्ल दिवस सत्तम७कर्यो पुर प्रवेस मंगल सजव ॥
न मर्यो गयो सु रघुराम नृप भज्ज्यो तजि अर्जित बिभव४३

दोहा

निंदित निंदा आधुनिक, मागधलोक लिखैँन ॥
जो कुपुत्र पुव्वहु भये, तो हम जानेँ हैँ न ॥४४॥

वह मूर्ख १ जनाने को छोडकर बाहर नहीं निकला और भ्रम में पड़कर अपने कुल के २ मार्ग को भूलगया ३ शत्रुओं ने दाव दिया ॥ ४१ ॥ जयतपाल पड़िहार का ४ वंश ५ मारवाड़ में अधिकार बढाने को निकला ६ भूमि को दबाली ७ जिनको उन्मत्त अथवा आलसी देखें उसीकी भूमि ८ शीघ्र छुडालेवें, जैसे सूर्य चन्द्रमा के चारों ओर १० परिधि (कुंडली) फिरजाती है तैसे ९ सांभर नगर को मंगल नामक पड़िहार ने घेरलिया ॥ ४२ ॥ विश्वपति ने ११ भूमि बढाई थी वह भरत से घटने लगी १२ सांभर को १३ बाण आदि यंत्र से चलनेवाले आयुधों से छै १४ दिन युद्ध किया और सातवें दिन हल्ला करके १५ शीघ्र सांभर में घुसा १६ अपने संचित किये विभव को छोडकर भागा ॥ ४३ ॥ इस समय के बड़वाभाट निन्दनीय पुरुष की निन्दा नहीं लिखते इसकारण से पहिले भी जो कोई कुपुत्र हुआ होगा तो उसको हम ने नहीं जाना ॥ ४४ ॥

बुरे१भले२सब बंसमैं, होत राम नरनाह ॥
पै बिनु जानैं काहुपर, रक्खन ऐब न राह ॥४५॥
कानि चहै नहिं काहुकी, सुकबि कहै इक सत्य ॥
भनिदैबो दुष्टहिं भलो, ब्हैबो सद्विजहत्य ॥४६॥
काव्य कथित रघुरामकी, जानी यह जड ताहि ॥
मंगलके प्रबिसत कुमति, चल्यो निकसि असु चाहि॥४७॥
बिधुकुल[2] तोवँर[3] ब्रध्नपुर[4], नृप हो अर्जुन नाम ॥
दुहिता तस परन्यौं दया१३२।१,राजा यह रघुराम१३२।४८।
लरि मंगल संभर लयो, तब सो भजि भजि त्रास ॥
स्वसुर गेह गो संगभरि, आतुर सह रनवास ॥४९॥
स्वसुर ग्राम आधार सठ, कढ्यो आउसकाल ॥
तज्यो न आसव देस तजि, चहुवानन तजि चाल ॥ ५० ॥
ब्रध्नपुरहि रघुराजकै, समरसिंह१३३हुव पुत्त ॥
तज्यो जनक मग जिहिं तदपि, करैं राज्य अब कुत्र ।५१।

[षटपात्]

स्वायंभुव मनु जंनन गौड उपटंक त्रिविक्रम ॥
जो भुग्गैं करहाटनैर निवसथँ सप्तक७सम ॥
ताकी तनया बिंदुमती१३३।१परन्यौं यह सम्भर॥

हे राजा रामसिंह विना जाने किसी पर दोष रखना श्रेष्ठ पुरुषों का मार्ग नहीं है ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)कहते हैं कि मैं किसीकी शंका(भय)नहीं रखता केवल सत्य ही कहता हूं क्योंकि जो अधम (नीच) हुए हैं उनका नीचपन कहदेना अच्छा है परन्तु असत्य कहना तो ब्रह्महत्या केपाप भोगने के समान है रघुराम की यह मूर्खता बड़वाभाटों से नहीं मिली काव्यग्रन्थों में मिली है१प्राण की चाहना करके निकलभागा२चन्द्रवंशी३तँवर४नगरविशेष५पुत्री ॥ ४८ ॥ स्वसुर के घर में रहकर भी अपना समय मदिरा में बिताया और देश छोडकर भी मदिरा नहीं छोडी ॥ ५० ॥ समरसिंह ने अपने पिता के कुमार्ग छोडदिये थे तोभी राज्य कहां करे अर्थात् राज्य करने को जगह नहीं रही ॥ ५१ ॥ स्वायंभुव मनु के ६ वंश में गोड़ पदवीवाले त्रिक्रम नामक क्षत्रिय ७ सात ग्रामों के साथ ८ यह चोहान

भूमी विनु को भूप देत दुहिता दरिद्रघर ॥
तामाँहिं भयो अरिउडु तपन समरसिंहकै वीर सुत ॥
मानिक्यराज१ ३४अभिधानधर जो बालहि गुन सर्व जुत५२

दोहा

अर्जुन तोमर अप्पये, जामातहिं दस१०गाम॥
तत्थहि खोयो आयु तिहिं, राज्य हीन रघुराम ॥ ५३ ॥

षट्पात्

समरसिंह बय तँहँ सम्हारि उपयाम विरचि इम ॥
तनय पाय कुलतंतु जतन भुव काज रचे जिम ॥
सुपहु राम तिम सुनहु दोर मंडिय भुव कारन ॥
लिय मारव धर लुट्टि परिय ओदक प्रतिहारन ॥
सतसत्त७००पद्दग सादी त्रिसत३००धीर बीर भट संग धरि
बहुबेर नैर सम्भर बिभव लायो संभर लूटकरि ॥ ५४ ॥
समरसिंह इकसमय घेरि सम्भरपुर गोधन ॥
बंधि धनिक बहु वनिक चल्यो प्रेरत निज जोधन ॥
मंगल सुत प्रतिहार नाम नाहर जिहिं जाहिर ॥
सो तिसहँस३०००दल सज्जि लग्यो वाहर कढि वाहिर ॥
अवमर्द जुद्ध मिलि दल उभय२कोस तीन३उप्पर कर्‌यो॥
चहुवान मारि नाहर सन्चमुं पहर जुज्झि अप्पहु पर्‌यो॥५५॥

दोहा

१पुत्री २तारों रूपी शत्रुओं पर ३सूर्य रूपी माणिक्यराज ४नाम को धारण करनेवाला५जमाई को६विवाह७कुल का सहारा रूप (कुलभर में एक ही पुत्र था इससे कुलतन्तु कहागया) ८ हे श्रेष्ठ राजा रामसिंह सुनो ९दौड़ा दौड़ना (धाड़ाडालना) १० मारवाड़ की भूमि का ११ त्रास पड़ी १२पैदल १३ घोड़ों के सवार १४ सांभरपुर के विभव को१५चहुवान लूटलाया॥५४॥ १६ धनवान १७ वनियां को १८ अपने लोगों की सहायता और शत्रुओं का पीछा करने को देशभाषा में वाहर कहते हैं १९ दोनों सेनाओं ने मिलकर धाड़ाकारी युद्ध किया २० नाहर चहुवाण की सेना को मारकर २१ आप भी

मंगल पुत्तहिँ मारि इम, समरसिंह१३३बिनु सीस ॥
पारि प्रहर² अंतर परयो, आनव९३भट हय तीस३० ॥५६॥
ही पीहर करहाटकी³, बिंदुमती१३३।१सुत सत्थ ॥
जरन बिलंब⁴ सह्यो न जिहिँ, तज्यो सुनत वपु तत्थ ।५७।

पादाकुलकम्॥

मंडोवर प्रतिहार भूप इत,अनुपमपाल व्याह बहु⁵ अर्जित ॥
जो इक१ग्रामपतिहु तनुजा⁶ दिय,लगिहठ न⁷ न करि परानिसोहुलिय
नवनव नारि अनारत⁸ चाहिय,बालिस⁹ त्रिसत पचास३५०बिबाहिय
तदपि इक१जयसिंह भयो सुव¹⁰, अरु इक१चंद्रवती तनयो¹¹हुव।५९।
अमरचंद मथुरा पति जद्दव, ताहि दई यह धन्वधराधव¹² ॥
तवतैं जदुन¹³ पाल पद पायो, प्रतिहारन पद रान कहायो ॥ ६० ॥
सोमानिक्यराज१३४इत संभर¹⁴, पुर करहाट रह्यो मातुल¹⁵ घर ॥
जिहिँ बालहिँ उद्यम बर जान्यौं, सस्त्र१सास्त्र२जुग२पढन प्रमान्यौं

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने कृतसुताभिषेकमाणिक्यराज११०काशीनिवसनशाकम्भराधिराजसुग्रीव१११विमला १११।१अङ्गद११२विंध्यावली ११२।१ केशरि ११३ कमला ११३।१ जयन्त११४ सीता

गिरा ॥ ५५ ॥ इसप्रकार मंगल प्रतिहार के १ पुत्र को मारकर २ एक पहर पीछे पड़ा ३ करहाट पुर के पति की पुत्री ४ जलकर पति के साथ जाने में विलम्ब होता था सो सहन नहीं किया और पति का मरना सुनते ही शरीर छोड़दिया ॥ ५७ ॥ ५ बहुत विवाह इकट्ठे किये ६ पुत्री ७ इनकार नहीं किया ॥ ५८ ॥ ८ निरंतर नवीन नवीन स्त्रियें चाहीं ९ उस मूर्ख ने साढ़ा तीन सौ स्त्रियें विवाहीं तोभी जयसिंह नामक एक ही १०पुत्र हुआ ११ पुत्री ॥ ५९ ॥१२मारवाड़ के पति ने मथुरा के राजा यादव अमरचन्द्र को परणाई जब से १३ यादवों ने पाल पद और प्रतिहारों ने राणा पद पाया ॥६०॥ १४ चहुवान १५ मामा के घर में ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में पुत्र के अभिषेक करके माणिक्यराज का काशी में वास करना, सांभर के राजा सुग्रीव-विमला, अंगद-विंध्यावली, केशरीर-कमला

११४।१बंशसमसनचालुक्यगोवलपालपुनःशूकरराज्यानुष्ठानजाय-
न्तिजगदीश ११५ रम्भा ११५।१ जयराम ११६ रुक्मिणी ११६।१
विजयराम प्रभा, कृष्ण ११८ लक्ष्मी ११८।१ जितयुद्ध ११९ रा-
धिका ११९।१ गोबर्द्धन १२० दया १२०।१ मोहन १२१ बिजया१२
१।२ गिरधर १२२ सुरता १२२।१ जननपरम्पराकथनपुत्रदत्तराज्य-
गिरधरयोगसाधनप्रामारगौरिल १ गोभिलबंशमदसेन १ मिथोमर
णाऽवन्ती १ भद्रपुर २ तद्वैरवर्द्धनगौरिधर्युदयराम १२३ भानुमती-
१२३।१ भरत १२४ कीर्त्य १२४।१ ऽर्जुन १२५ यूथिका १२५।१ न्त
सन्ततिसूचनत्यक्ताविन्दाक्रान्तबिम्बस्थलप्रतिहारजयत्पालपुनर्मरुरा
ज्यसमासादनगोभिलजयतारणपुरपलायनशाकम्भरराडाऽऽर्जुनि
शत्रुजित१२६कनकप्रभा१२६।१सोमदत्त१२७नन्दा १२७।१ दुःखन्त
१२८ ललिता १२८।१ ऽन्तवंशवर्णनहतबैसामर१ यादवकर्णारदौ
कखान्तिभीम १२९ चन्द्रावली १२९।१ परिणायनतत्सन्ततिलक्ष्मण
१३० रमा १३०।१ पर्शुराम १३१ श्री १३१।१ रघुराम १३२ दया
१३२।१ कुलपारम्पर्यकथनप्रतिहारमङ्गलशाकम्भरस्वीकरणरघुरा

जयन्त सीता के वंश का संक्षेप से कहना, चालुक्य गोवलपाल का फिर शूकर क्षेत्र पर राज्यानुष्ठान होना, जयन्त का पुत्र जगदीश-रंभा जयराम रुक्मिणी-विजयराम-प्रभा कृष्ण-लक्ष्मी जितयुद्ध-राधिका गोवर्धन-दया मोहन-बिजया गिरधर-सुरता के वंश की परम्परा का कथन,पुत्र को राज्य देकर गिरधर का योग साधना,पँवार गौरिल और गोभिल वंशी मदसेन का परस्पर माराजाना और उज्जीण भद्रपुर में उस वैर का बढना, गोरिधरि उदयराम-भानुमती भरत-कीर्ति अर्जुन-यूथिका के अन्त तक सन्तान की सूचना विन्दाक्रान्त से बिम्बस्थल छूटकर प्रतिहार जयत्पाल को फिर मारवाड़ राज्य का प्राप्त होना, गोभिलों का जैतारण पुर को भागना,सांभर के राजा अर्जुन के पुत्र शत्रुजित्-कनकप्रभा सोमदत्त-नन्दा दुक्खन्त ललिता के अन्त तक वंश का वर्णन, बंस अमर और यादव करण का माराजाना, दुक्खन्त के पुत्र भीम का चन्द्रावलि से विवाह करना उसकी सन्तान लक्ष्मण रमा परसुराम-श्री रघुराम,दया के कुल की परंपरा को कथन, मंगल प्रतिहार का सांभर को लेना, रघुराम का अधनपुर (भाणपुरा अथवा वधनोर)

मन्नध्वनपुरपलायनरघुरामिसमरसिंहो१३१द्भवनतद्विन्दुमती१२३१पा णिग्रहणमाणिक्यराज१२४जन्मलुण्टितप्रतिहारदेशहतमाङ्गलिना हरसमरसिंहशाकम्भरसमरणतच्छ्रवणमात्रविन्दुमतीवर्ष्मविहान-प्रतिहाराऽनुपमपालकन्याचन्द्रवतीयादवाऽमरचन्द्रविवहनमाणि क्यराज१३४शस्त्र१शास्त्रा२ध्ययनप्रारम्भणं पञ्चषष्टितमोमयूखः६५ आदितः सप्तोत्तरशततमः ॥ १०७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

[षट्पात्]

बालप्पन मानिक्यराज१३४विद्या सब सद्दिय ॥
पाटवें१समर२प्रगल्भ सकल कृतकृत्य सस्त्र किय ॥
बय जुव्वन लहि बीर रम्यों मृगयों कति वासर ॥
भुजन भेटि मृगराज चीरि डारे बल दुद्धर ॥
कोलनि थकाय पकरे पदग बनलुलायँ मुट्ठिन हनैं ॥
सुनि सुनि तँदीय पोरुख असह प्रातिहार व्याकुल बनैं ॥१

दोहा

गौडन पुरजन१बंधुजन२, दये बरजि दे ताव ॥

भागना, रघुराम के पुत्र समरसिंह का जन्म होना, उसका बिन्दुमती से विवाह होना, और माणिक्यराज का जन्म होना, प्रतिहार के देश को लूटना, मंगल के पुत्र नाहर प्रतिहार को मारकर समरसिंह का सांभर के युद्ध में माराजाना, इसके सुनते ही बिन्दुमती का शरीर छोडना, प्रतिहार अनुपमपाल की कन्या चन्द्रावती का यादव अमरचन्द्र से विवाह होना, माणिक्यराज के शस्त्र और शास्त्र के अध्ययन करने का पैंसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६५ ॥ और आदि से एक सौ सात मयूख हुए ॥ १०७॥

१बालकपन में२चतुर३युद्ध में धीठ४कृतार्थ५शिकार६कितने दिन७सिंहों से बा हुयुद्ध करके८सूअरों को थकाकर९पैदल ने१०जंगली भैंसों(आरणे भैंसों)को मुक्कियों से मारे११उसका असह्य पराक्रम सुनकर मंडोवर के प्रतिहार क्षत्रिय जिन्होंने चहुवाणों से सांभर छीन लिया था वे व्याकुल हुए कि यह सांभर पीछा लेवेगा ॥ १ ॥ माणिक्यराज के ननसाल के गोड़ क्षत्रियों ने अपने पुर के लोगों को और बान्धव लोगों को ताव देकर मना करादिये कि हम

सुमिरावहु इहिं बैर नन,जामिज ज्वलन स्वभाव ॥ २ ॥
बंधि प्रबंध करोल बहु, दये स्वसासुत संग ॥
प्रचुर रचायो तिन पटुन, रस आखेटक रंग ॥ ३ ॥
नाहर जिम हत्थन हनैं, गंजि नाहरन ग्राम ॥
अक्खिय जग याको अपर, नाहरराज१२३४हु नाम ॥ ४ ॥

[षट्पात्]

इक दिवस चहुवान तुरग आरूढ विखम वन ॥
एकाकी१अतिदूर गयो मृगयारस सद्दन ॥
रहि पद्धति दुव२रत्ति अद्रि अर्बुद तीजे३दिन ॥
मारत मत्त मइंद अप्प पहुँच्यो सम्भर इन ॥
तँहँ ताहि अधिक लग्गिय छुहा हयजुत भोजन ध्येयहुव॥
उत्तरयो तबहि हनि कोल इक सुभ ईसानीसिखर भुव॥५॥
अप्प उचित कछु रक्खि सेस तुरगहिं खवाय पल ॥
संध्यावंदन सद्धि पितर१सुर२मुनिन३अप्पि जल ॥
पावकसिद्ध सु पलल करयो सुचि सूलप्रोत करि ॥
वैश्वदेव विधि बिरचि खानलग्गो द्रोनन भरि॥
पिट्ठिसौं हत्थ कढि अग्ग इक ओड्यो काहुक सूल्य हित॥

का वैर याद मत करना क्योंकि भाणेज का स्वभाव अग्नि के समान है ॥ २ ॥ यह प्रबन्ध करके शिकार खिलानेवाले (शिकार की खबर देनेवाले) लोगों को बहिन के पुत्र की साथ करदिये जिन चतुरों ने शिकार का बहुत रंग लगादिया ॥ ३ ॥ जैसे सिंह अन्य पशुओं को मारता है इसप्रकार हाथों से सिंहों के समूह मारे इसकारण से इसका दूसरा नाम लोक में नाहरराज कहागया ॥ ४ ॥ घोड़े पर चढाहुआ अकेला शिकार करने गया सो मार्ग में दो रात्रि रहकर तीजे दिन आबू पर्वत पर सिंहों को मारता आबू पर चहुवाणों का राजा गया१क्षुधा२कर्तव्य३सूवर. को मारकर४आबू पर ईशानी शिखर है उसकी भूमि पर ५बाकी का मांस घोड़े को खिलाकर ६अग्नि पर सुनाहुआ मांस जो सूल में पिरोकर अग्नि पर सेकागया उससे वैश्वदेव (अन्न से होम, बलिदान, अतिथिभोजन करने को वैश्वदेव कर्म कहते हैं) करके७दूना (वृक्ष के पत्रों से बनायाहुआ पात्र) में भरकर खानेलगा

चहुवान बीर देखैं बिनुहि दिय निसंक वाकों उचित ॥ ६ ॥
पुनि पुनि हत्थ कढ्यो सु दयो पुनि पुनि ताको पल ॥
अद्ध असन किय अप्प बंटि इम अद्ध महाबल ॥
निकस्यो कर पुनि निरखि मुट्ठि तापर खिजि मारिय ॥
ईसानी तब तुष्ट आय अग्ग रु उच्चारिय ॥
कछु मंगि मंगि चहुवान बर सोहु सुनि न बंदन करयो ॥
मन्नी न ताहि सहसा सकति मत्यय लहि पायन परयो ७
इम अक्खिय मानिक्यराज करजोरि उमा प्रति ॥
श्रुति पद्धति सन कबहु माइ मामक डिगैं न मति॥
अरु तव भक्ति उदार देहु ए बर दुव दासहिं ॥
सुनि तथास्तु कहि सक्ति बदिय तव अरिहु बिनासहिं ॥
पावहिं स्वकीयं कुल राज्य पुनि कित्ति पुहवि पूरित करहिं॥
तनयंहु प्रबीर दस१०पाय तू बसुधेस्वरकुल बित्थरहिं ॥८॥

पादाकुलकम्

भई पिहित इम अक्खि भवानी, मातुलगृह आयो यह मानी॥
संकरदास रायपुर स्वामी, गोहिलकुल भुग्गैं दस१०ग्रामी ॥ ९ ॥
सुता तास आव्हयकरि स्यामां१३४१२,वह सम्भरं परनी अभिरामा॥
अब चहुवान ब्रध्नपुर आयो, बहु तोमर नृप मोद बढायो ॥१०॥
अर्जुन तनय नरेस चक्रधर, सनमान्यों जामिज सुत सम्भर ॥
अक्खिय भुम्मि उपाय करहु अब,सेना मम भजिहै सहाय सब॥११॥

सूला (कबाब) लेने के लिये ॥६॥१मांस२ आधा मांस तो आपने खाया और आधा बांटदिया जिस पीछे भी मांस लेने को फिर हाथ निकला जिस पर क्रोध करके मुक्की मारी तब देवी प्रसन्न हुई३नमस्कार नहीं किया क्योंकि अचानक उसको शक्ति नहीं मानी परन्तु सुबूत लेकर फिर पैरों में पड़ा ॥ ७ ॥ ४ देवी से कहा कि हे माता वेदमार्ग से मेरी बुद्धि कभी नहीं डिगै ५ऐसा ही होओ यह कहकर देवी ने कहा कि तेरे शत्रु भी मारूंगी६अपनी राज्य कीर्ति से भूमि को पूर्ण करेगा७पुत्र भी चहुवाण के कुल को फैलावेगा ८ गुप्त९मामा के घर१०श्यामा नामवाली११चहुवान ने ॥ ९ ॥ १० ॥ अर्जुन के पुत्र चक्रधर ने भाणेज के पुत्र का सन्मान किया और कहा कि अब भूमि लेने का उपाय करो मेरी सब सेना तुम्हारी सहाय करेगी ॥ ११ ॥

दया कह्यो सुतसुत भुव दव्वहु, गुन बहु पाय वृथा जिन गव्वहु॥
पुत्रक कै बीरन गति पावहु, कै साकम्भर भूप कहावहु ॥१२॥
समरसिंह मारयो मंगलसुत, निर्जरलोक गयो अप्पहु नुत ॥
जनत तनूज छत्रिया जाको, तुम अब लाल कुमावहु ताको॥१३॥
चिरतैं गूढ रोकि हम रक्खी, उचित निहारि अज्ज यह अक्खी ॥
सूकर१सिंह२हनैं हि न सरिहैं, प्रतिहारन गंजे कल परिहैं ॥१४॥
वय तव लग्यो सत्रहम१७बच्छर३, मंडहु बासुदेवसम मच्छर ॥
वंसहिं मच्छरीक जिहिं बज्जत, जो नहि वैरगयोकरि गज्जत१५
पितामही सासन इम पावत, नत्ती कहिय बीर उफनावत ॥
जननी चिरंकरि मोहि जनाई, वेस बनन भ्रमि मोघ बिताई।१६
श्रीदुर्गा गर्त देस१सुनायो, पिता हन्यो२सु बैर अब पायो ॥
करिवो पोरुख अवधि मुज्झपर, नियति अधीन फलहिं पावत नर१७
इम निज पितामही सन अक्खिय, रनबुध बीर बीर पुनि रक्खिय॥
दम्मैं दुलक्ख३००००० चक्रधरसौं लहि,

दया नामक माणिक्यराज की दादी ने कहा कि हे पौत्र!तुम्हारी भूमि को दबाओ और वीरता के गुण पाकर वृथा गर्व मत करो. हे पुत्र!यातो वीरोंकी गति को पाओ (युद्ध करके मारे जाओ)अथवा सांभर का राजा कहाओ(सांभर पीछा लो)मंगल के पुत्र ने तुम्हारे पिता समरसिंह को मारा है वह स्तुतियोग्य देवलोक में गया है सो जिस कार्य के लिये क्षत्रिया स्त्रियें पुत्र जनती हैं हे लाल तू भी वह कार्य कर, अर्थात् पिता का वैर ले ॥ १३ ॥ इस वार्ता को हम ने बहुत समय से छिपा रक्खी थी आज वह कही है१सूवर२प्रतिहारों को विजय करेगा जब चैन पड़ेगा३वर्ष४वासुदेव चहुवान ने श्रीकृष्ण के साथ मत्सरता की थी ऐसे करो(पराये उत्कर्ष को नहीं चाहकर अपना उत्कर्ष चाहने को मत्सरता कहते हैं)इसीकारण से चहुवाणों के वंश को मच्छरीक कहते हैं. वे चहुवान वैर को गयाहुआ जानकर गर्जना नहीं करते५दादी की आज्ञा६वीर रस में उफनते हुए पोते ने कहा.७देरी से जनाई इससे वनों में भ्रमकर आयु वृथा विता दी ॥१६॥८गयाहुआ देश तो देवी ने सुनाया९. अवधि पर्यन्त पराक्रम करना मेरे हाथ है और मनुष्यों को फल भाग्य से मिलते हैं॥१७॥१०युद्ध में पंडित उस वीर ने फिर वीरों को नौकर रक्खे११रुपये चक्रधर तँवर से लेकर सेना सजी ॥ १८ ॥

चक्र सज्यो अरिजन गंजन सहि ॥ १८ ॥
तोमरकेहु सुभट बहु टारे, प्रतिहारन सिर कटक[1] प्रचारे ॥
सत्तसहँस७०००सादी[2] हुव सत्थैं,वाहतजे न रुकैं विनुमत्थैं।१९।

दोहा

चक्रधरहु चहुवान प्रति, भनिय ब्रध्नपुर भूप ॥
महानंदसौं तोमरन, किन्नी सो गत कूप ॥ २० ॥

षट्पात्

टोडापुर पति इन्द्रसेन अग्गैं नृप तोमर ॥
रुमा[3] सुता परिनाय महानंदहिं रक्खयो घर ॥
नहितो सम्भरनैर रम्य लेतो सु कहाँ रहि ॥
विनु सहाय वसुधाहु गहत न सुनैं विपत्ति गहि ॥
मानिक्यराज[4] पहिले नृपति तस यह प्रत्युपकार किय ॥
टोडा१रु विजैपुर२ब्रध्नपुर३सिवपुर४मुख छिति छिन्निलिय

[दोहा)

तुम अवनी इम तोमरन, अग्ग रहे अपनाय ॥
वलि मोहन छत ब्रध्नपुर, एह लयो हम आय ॥ २२ ॥

(षट्पात्)

तव नामहु मानिक्यराज१३४जामेयं तनय जगं ॥
गदतें[12] रु वर दुर्गाहि तोहि अप्पिय अव्वूअग[13] ॥

१सेना चलाई२घोड़ों के सवार ब्रध्नपुर के पति चक्रधर ने माणिक्यराज चहुवान से कहा कि महानन्द के साथ तँवरों ने उपकार किया था वह सब कुए में गया(जिसकी कथा आगे कहते हैं)३रुमा नामक अपनी पुत्री को परणा कर महानन्द चहुवान को अपने घर में रक्खा था४सुन्दर सांभरपुर५भूमि पीछे लेने नहीं सुना६पहिले माणिक्यराज हुआ था उसने इस उपकार के पलटे में पीछा यह प्रत्युपकार किया ७ आदि ८ भूमि तँवरों से छीन ली९तँवरों की भूमि को तुम (चहुवाणों) ने आगे अपना ली थी ॥२२॥१० भाणेज का पुत्र ११संसार१२कहती है और१३आबू पर्वत पर तुमको दुर्गा ने वर भी दिया है इससे तुम भी वैसी मत तकना(वैसी मत करना)और हम ने तुम्हारे

तातैं वह जिन तकहु करहु मोघ न उपकारहि ॥
करिहैं संभर कहिय अप्प सासन अनुसारहि ॥
विस्वपति लये टोडादि तँहँ संबंध सु जीरन परयो ॥
जिम जनक१जनक मातुल२तिमहि किम अकांड संसय करयो

॥ सारङ्गः ॥

यौं तोमराधीससौं अक्खि चोहान,हंकी चमू भद्द३ कादंबिनी मान
खुल्ले करी धुज्जिबो दै धराकाज,बाजी चले झंपि ज्यौं लावपैं बाज
बैरीनकौं बंटते विप्फुरे बीर, माये नही दंस ज्यौं उप्फनैं छीर ॥
छायो सबै खेहके मेहसौं गैन, व्युत्थान५है उग्घरे ईसके नैन।२५।
डारी पुरानी करी खल्लरी ईस, चिंती नई बैलपै बाहिबे बीस ॥
चंडीहुनैं चक्खिबे बीर६ कालेज, आन्यौं स्वयं सिंहमैं बेग आमेज
लै लै लगे अप्पनैं अप्पनैं बाह, हेरंब१औ अग्गिभू२बप्पकी राह
व्हैतीचली साकिनी पानपैं प्रीत, गैतीचली डाकिनी जुग्गिनी गीत
प्रारब्धकौं पुज्जिकैं पत्थरे प्रेत, चिंती वर्पा गिद्धनी चिल्हनी चेत॥
सुंडीर४कौं सिक्खिबे पिक्खिबे सेन, वज्जी अकस्मातही नारदीबेन

साथ उपकार किया है उसको वृथा मत करना.चहुवान ने कहा कि आपकी आज्ञा के अनुसार ही करेंगे१वह संबन्ध जीर्ण होगया था२जैसे पिता हैं तैसे ही पिता का मामा हैं ऐसी अवस्था में आपने विना प्रकरण अथवा विना समय यह सन्देह क्यों किया ॥ २३॥भाद्रपद की मेघमाला के समान सेना चली और भूमि को धुजाते हुए हाथी खुले और लवा पत्ती पर बाज जाता है उस वेग से घोड़े चले ॥ २४ ॥ जैसे उफनता हुआ दूध पात्र में नहीं समाता तैसे वीरों के शरीर कवचों में नहीं समाये३आकाश४समाधि खुलकर शिव के नेत्र खुलगये ॥२५ ॥ पुरानी५गजचर्म को डाल कर बैल पर नई चर्म लादने को शिव ने चाहा६वीरों के कलेजे चखने के लिये७सिंह पैं पलाण किया ॥ २६ ॥ अपने अपने वाहन ले ले कर गणेश और स्वामिकार्तिक पिता (महादेव) के पीछे लगे. रुधिर पीने पर साकिनी (देवी की दासियों)की प्रीति होती चली और डाकिनी व योगिनी (देवी की दासियें) गीत गाती चलीं ॥ २७ ॥ भाग्य की प्रशंसा करके प्रेत(देवयोनि विशेष) फैले८मज्जा को९वीरता को सीखने और सेना को देखने को अचानक नारद की वीणा बजी॥२८॥

इत्यादिकौं न्यौंतिकैं संभरी[1] अग्ग,बाजीनकी[2] आँचिकैं उप्परयो बग्ग
आये अरातीनके[3] मग्गमैं नैर, चल्ल्यो तिन्हैं लेतही बंधिकैं वैर ॥
लै मेरभू१लैलयो अल्हनावास२,श्रीनैर३त्यों पुष्करारण्य[4]के पास।
लै डिड्डुवानौ४सरानौ५रु मारोट६, किन्नौं रुमानैर[5]लौं वाहिनीकोट
यासौं अरी[6] मग्गमैं जे जुरे जंग,टारयो तिन्हैंत्रासासौंस्वास[7]सौंसंग॥
साकंभरी[8] दंग यों बिंटियो वीर,धायो प्रतीहारहू सम्मुहो धीर॥३१॥
सो मंगलाऽऽख्यानके पुत्तको पुत्त, हाको सुनैं बेगही हंकियो हुत्त
बज्जे तहाँ द्वैरघरी[9] रत्तिसौं बाढ, गज्जे उभैरओरके जोरके गाढ॥
होवेलगे लुत्थिपैं लुत्थिसौं चित्र, मानौं घनैंकालके बिच्छुरे मित्र
कोदंड[10] टंकारिकै सिंजनी कान, आनैं मनौं केनके पुच्छिबे प्रान
हल्लै मही नागके भोगपैं लोल, झुल्लैं मनौं तीजनी मत्त हिंडोल॥
इक्खैं[11] अरी लोह छाके कहाँ आप, डारैं कहाँ प्रेतके कंठमैं थाप
झारैं गदा टोपके आनि उच्छाह,ठ्योंकारके[12] कूट ज्यौं लोहपैं बाह ॥
गहैं कहाँ हत्थलै हत्थके फंद, कहैं करीदंत[13] ज्यौं मालिनी कंद
रोकैं बली एक१ही संकुले[14] सत्थ, रेवा मनौं हैहयाधीस[15]के हत्थ

१चहुवान२ घोड़ों की ३शत्रुओं के जितने नगर मार्ग में आये ४ पुष्कर वन के समीप५सांभर तक सेना का कोट कर दिया ॥ ३० ॥६शत्रु मार्ग में लड़े ७श्वास का साथ छुडादिया(मारडाले)८सांभरपुर को ॥ ३१॥ मंगल नामक राजा का पौत्र हाक सुनकर होम होने को शीघ्र ही चला.९दो घड़ी रात बाकी रहे तरवारों के बाढ बजे ॥३२॥ लोथ (मृतक शरीर) पर लोथ गिरकर आश्चर्य होने लगा.१०धनुष को टंकार कर प्रत्यंचा को कान के समीप लाते हैं सो मानों वह यह पूछने आती है कि किनके प्राण लाऊँ॥३३॥ शेषनाग के फणों पर (यहां सामान्य नाग शब्द के साथ भूमि का सम्बंध होने से शेषनाग के अर्थ का बोध होता है)भूमि चंचल होकर हिलती है सो मानों श्रावण सुदि तीज के उत्सव में झूला झूलनेवाली स्त्रियें हिण्डोले में झूलती हैं११देखते हैं १२लोहार के ऐरण पर घण पड़े जैसे१३हाथियों के दन्तों को ऐसे निकालते हैं जैसे मालिन मूले आदि जमीकन्दों को निकाले१४मिले हुए साथ को एक ही बलवान् इसप्रकार रोकलेता है कि जिसप्रकार नर्मदा नदी के प्रवाह को जलक्रीड़ा करते हुए १५ सहस्रार्जुन ने अपने हाथों से रोकलिया था।

दोरैं लगे पिट्ठिके वेरमैं दच्छ, ईसानज्यों अर्कपैं रच्छके पच्छ ३६
सादीनके पाय के झंझटैं सूर, चंपैं बली कन्ह ज्यों चंड चाणूर॥
केते चढैं केतुपैं टारिबे काय, जानौं नटी मत्त ज्यों बंसपैं जाय
बुल्लैं कटारीनतैं फट्टते बच्छ, रेजा मनौं दोहरे दारिबे दच्छ ॥
तक्राटतैं कै दही मंथनीमांहिं, पारावती बानिकैं निब्बली नांहिं
अच्छी बरच्छी लगैं सुंडिके आय, पच्छीसकी त्रोटि ज्यों पन्नगैं पाय
छुट्टैं कहौं देहतैं प्रानकी रोक, ज्यों भूप बैदेहतैं नारकी लोक३९
कंपे कहौं भीरु कुक्कै सुरे मग्ग, सिद्धी मनौं अट्ठ८गाधेयके अग्ग॥
बाराहकी दट्ठ१ओ कुम्भकी पिट्ठिर, नैबेलगी भारतैं धारतैं निट्ठि
फुट्टैं करी उच्छटैं के महामत्त, गैगत्त१ठौं ओर२व्है ओर१ठौं गत्त२
चोफार२व्है भद्रजातीनके मत्थ, मुत्ती झरैं भाद्रके मेघ ज्यों तत्थ
बाहित्थतैं निक्खसैं रत्तकी धार, ज्यों सांवरे सैलतैं गैरिकासार॥
जासौं डरैं भीरु तापैं किते जाय, गाधेयपैं ज्यों हरिश्चन्द्र भूराय॥

१समय में चतुर२कितनेक लोग पीठ पर लगकर दौड़ते हैं जैसे राक्षस के पक्ष में होकर महादेव सूर्य के पीछे दौड़े थे (यह एक प्राचीन कथा है.)घोड़ों के सवारों के पैर पकड़कर शूर झटकते हैं सो मानों बलदेव और श्रीकृष्ण चंड और चाणूर मल्लों को झटकते हैं३ध्वजा पर चढते हैं ॥३७॥ ४कटारियों से हृदय फटते हैं सो मानों चतुर लोग दोहरे रेजा (वस्त्र विशेष) को चीरते हैं किंधों दही की गागर में मन्थान दंड (रई) का शब्द होता है किंधों बल पूर्वक कपोत की बोली होती है ॥ ३८ ॥५हाथी की सुंड में बरछी लगती है सो मानों गरुड़ की चंचू में सर्प लटकता है ॥ ३९॥६मार्ग से मुड़कर कायर ऐसे कांपते हैं जैसे विश्वामित्र के आगे आठों सिद्धियां कांपैं७नमने लगी ॥ ४० ॥ बाणों से हाथी फूटकर महावत उछटते हैं और हाथियों के अंग और के और जगह होजाते हैं अथवा हाथियों के शरीरों के स्थान में अन्य होजाते हैं और उन अन्यों के स्थान पर गात्र (सकट) जाखड़े होते हैं. भद्रजाति हाथियों के मस्तक चौफाड़ होकर भाद्रपद मास के मेघ के समान मोतियों का झड़ होता है ॥ ४१ ॥ हाथियों के ललाट के अधोभाग (पीतवान) से रुधिर की धारा निकलती है जैसे काले पर्वत से गेरों का रस निकलता है उससे कितने ही कायर डरते हैं और कितने ही उस पर ऐसे जाते हैं जैसे विश्वामित्र पैं हरिश्चद्र भूपति गया था ॥४२॥

रत्ती भई सैन द्वै२सोनके संग, रंगी मनौं राजसी वृत्तिके रंग ॥
अंगारको बिंबही कै परयो तुट्टि, मानिक्यको गंज कै बिग्गरयो छुट्टि
पानीचढै केनपै केनके जाय, रित्ते१ भरे२ताालि ज्यौं पालिकौं पाय॥
बाजीलगी प्रानकी मानकी बेर, चोहानकी आनकी को कहै देर४४
केते करैं लाघवी हत्थतैं वार, भीजैं नहीं अस्त्रहू सस्त्रकी धार ॥
मानिक्यके बानके पच्छके गान, वेतण्डव्है बक्करी उत्तरैं दान४५
पत्री कटी सुण्डमैं जात यौं पैठि, लीलैं मनौं पन्नगी बालकौं बैठि॥
हत्थीनपै एक१हत्थी किते झारि, कुम्भारलौं कुम्भकौं लेत उत्तारि
पाइक्कपै कै परैं पीलुतैं झंपि, पाठीनपै किल्किला चोट ज्यौं चंपि॥
ऊर्णायुकी फेटलौं मुण्डके मारि, सद्दैं बिना सस्त्रही रीझकी रारि४७
बुक्कों कटैं उच्छटैं क्लोम संघट्ट, बंटैं मनौं कुण्डली फेनके बट्ट ॥
काली बडे बीरके अंत्रही धारि, गिद्धीनसौं उच्चरैं लेहु यौं टारि ४८

दोनों सेना रुधिर के संग से लाल होगई सो मानों रजोगुण की वृत्ति के रंग में रंगीगई है किंवा अग्नि के अंगार का बिम्ब टूटपड़ा है अथवा माणिक मणि का समूह बिखरगया है ॥ ४३ ॥ कितने वीरों पर नीर (पराक्रम अथवा) रूप चढता है और कितनों का नीर (लज्जा) जाता है जैसे बन्ध बंधा रहने से तालाब भरे रहते हैं और बन्ध टूट जाने से रीते होजाते हैं १चहुवाण की आण फिरने की देरी कौन कहै ॥ ४४ ॥ शीघ्रता के हाथ से वार करते हैं सो शस्त्र की धार के रुधिर भी नहीं लगता. माणिक्यराज चहुवान के बाणों के पंखों के गान से हाथियों के दान(मद)उतरकर वे बकरी के समान होजाते हैं ॥ ४५ ॥ हाथियों की कटीहुई सुंड में बाण घुसते हैं सो मानों सर्पिणी बच्चे को गिटती है (सर्पिणी अपने होते हुए बच्चों को गिटजाती है) एक हाथ से तरवार मार कर जैसे कुम्हार घड़े को उतार लेता है तैसे कुंभस्थलों को उतार लेते हैं ॥ ४६ ॥ कितने ही हाथियों के ऊपर से कूदकर पैदलों पर गिरते हैं सो मानों छोटी मच्छियों को किलकिला पक्षी चोट करके दबालेता है. मींढा की फेट के समान कितने ही मस्तक की टक्कर लगाकर ॥ ४७ ॥ २ बूकड (गुर्दे) कटते हैं और३तिल्लियां (पेट के भीतर के काले रंग के मांस पिंडों) के समूह उछटते हैं सो मानों अफीमची अहिफेन (अमल) की बट्टियें बांटते हैं४बडे वीरों की आंतों

जुज्झारकी मुच्छ भूसौं करैं बत्त,बुल्लैं किती बक्र तू मैं जिती मत्त॥
कोदंडकी जंघद्वै२यौं नमैं काल,मत्ती नटी लेत ज्यौं फीलपैं फाल४९
बुल्लंत ज्या प्रानकी गाहकी घत्ति, चल्लैं चटठ्ठैं घटीजंत्र ज्यौं रत्ति॥
भिंटैं नही रत्तहू बानके पच्छ,अच्छे गिनैं अठ्ठ८ज्यौं टारि बीभच्छ५०
बुल्लैं किते खग्ग३ यौं आकरेपान,गोबिंदकें४ अग्ग ज्यौं झल्लरी गान॥
के छिंछि छुट्टैं हबक्कैं घनैं घाय,धारा मनौं जावकी जंत्रकी जाय५१
बाजारमैं मत्त ज्यौं साकिनी सत्थ, घल्लैं घनी घुम्मिकैं बीरसौं बत्थ॥
लोटैं लगे इक्कपैं इक्क बेहोस, खोले मनौं देवनैं मृत्युके कोस५५२।
वैखानसी वृत्ति लौं के महाबीर,संचैं नही आयुहू कल्हिके सीर॥
चल्लैं गदा १ तोत्र६ २ कत्ती ३ छुरी ४ चक्र ५,
झारैं खरे खग्ग८के सँब ज्यौं सक्र ॥ ५३ ॥
के कत्तरी ७ ऊन ८ त्यौं सूल ९ कट्टार १०,
पत्री ११ बरच्छी १२ इल्ली १३ निक्खसैं पार॥
झेलैं कटे सीस यौं उद्ध कामारि११,गैंदा गहैं बाल ज्यौं ओरकौं टारि

को धारण करके ॥ ४८ ॥ वीरों की मूँछें भौंहों से बातें करती हैं कि तू कितनी टेढी है अर्थात् कुछ टेढी नहीं है जैसी कि मैं मस्त होकर टेढी हूं१धनुष की२हाथी पर॥४९॥प्राणों की ग्राहकी रखकर प्रत्यंचा बोलती है कि जैसे रात्रि में अरहट चरराट शब्द करके चलता है. बाण इतने वेग से चलते हैं कि अपने पंखों के रुधिर लगने ही नहीं देते हैं सो मानों नव ही रसों में बीभत्स रस को छोड़कर बाकी के आठ रसों को उत्तम समझते हैं (रुधिर लगने से बीभत्स रस होजाता है इससे रुधिर को लगने ही नहीं देते)॥५०। तरवार के तेज पाण लगने से३विष्णु भगवान् के आगे४जावक के रंग से भरे हुए जल के फुँहारे की धार जावे जैसे ॥ ५१ ॥५मानों मृत्यु के खजाने खोलदिये हैं ॥ ५२ ॥ वानप्रस्थ वृत्ति के समान कल के सूर्य के लिये अपनी आयु का संचय नहीं करते.वानप्रस्थ आश्रम वाले आगामी दिन के लिये किसी वस्तु का संचय नहीं करते हैं ऐसे ही वीर लोक भी अपनी आयु आगामी दिन के लिये नहीं रखते६भाला७इन्द्र वज्र पटके जैसे ॥५३॥ ८खड्ग विशेष९बाण१० गुप्ती (शस्त्रविशेष). कटेहुए मस्तकों को११महादेव ऊपर ही झेलते हैं

भोरैं लगैं हत्थ जो भीरुको मत्थ, डारैं बडे वेग ज्यौं दानको अत्थ
बेताल के सीसको मंडि व्यापार, बेचैं वपा संटि लै प्रेतकी लार५५
अग्गेबढो सूर के ज्यौं कहैं एम, पच्छेलगैं पाय त्यौं प्रानके प्रेम
चक्खैं बिनाँ बीरकौं बच्छपैं बाढ, मज्जैं घनैं भोनको गेरतैं गाढ५६
खालीकरैं प्रान के प्रानपैं खेलि, काली करैं तान के गानपैं केलि
लोटे करी कोहि कट्टैं कहाँ सीस, हेरंबकै जोरिबे ज्यौं त्रिलोकीस
मत्थौं गिरैं ढालके फूलकौं दब्बि, चैंक्यो रह्यो राहु ज्यौं चंदकौं चब्बि
ठड्ढे रहे तद्दिनाँ सूर१ओ सूत२, भा अप्पनी पिक्खि लोही पराभूत५८
काबूतरी लोटके बक्करी कूद, सद्दैं किते के बनैं साकिनी सूद॥
आघातकौं पायके उब्बरैं बाह, राधेयके बानपैं पत्थकी राह।५९।
सिंधूनके संग ढक्का भनैं भीर, मंजीर बज्जैं मनौं दार मंजीर॥
केते गिरेही उडैं तुट्टिकैं तेग, बिच्छी डसे वग्घ ज्यौं उच्छरैं बेग६०
जुज्झारकौं टारिवे अच्छरी आय, देखैं चले हत्थ लग्गैं कहाँ दाय
दोरैं कहाँ झग्गरैं इक्क१पैं दोय२, जोरैं कहाँ अंचलैं हारिनी होय६१

१कायर का मस्तक. दान के लिये२धन को शीघ्र हाथ से डालदेते हैं ऐसे कितने ही बेताल (शिव के द्वारपाल) मस्तकों का व्यापार मांडकर इसके बदले में प्रेतों से मज्जा(गूद) लेते हैं ३कितने ही शूर कहते हैं कि आगे को बढो४वीरों के हृदय पर तरवारों के बाढ चखाये विना ही५क्रीडा६जैसे गणेश के धड़ पर लगाने को शिव काटे तैसे गिरेहुए हाथियों के कहीं मस्तक काटते हैं ॥५७॥ ढाल के चन्द्राकार फूलों को दबाकर मस्तक ऐसे गिरता है जैसे चन्द्रमा को दबाकर राहु क्रोध करता है. अपनी कान्ति अथवा छाया को रुधिर में पराजित (मलिन हुई अथवा वीरों के पगों में) देखकर उस दिन सूर्य और सारथि (अरुण) खड़े होरहे ॥ ५८ ॥ कबूतर के समान लोटते हैं और कितने ही बकरे के समान कूदते हैं और कितने ही साकिनियों के व्यंजन (भोजन की वस्तुएं) बनते हैं. जैसे कर्ण के बाण से रथ भूमि में धुसकर अर्जुन बचगया था तैसे ही प्रहार पाकर वाहन बचते हैं ॥ ५९ ॥ सिन्धु राग के साथ सहायक होकर ढोल अथवा नगारे बजते हैं और स्त्रियों के नूपुरों (बिछियों) के समान मंजीर (वाद्यविशेष) बजते हैं७बीछू के डसेहुए सिंह के समान॥६०॥८गले के हार के समान होकर८अंचलग्रंथि(गंठजोड़ा)

चोरैं कहाँ ओरसौं सूरको चेत, हौरैं कहाँ जोरसौं उफ्फनैं हेत ॥
मोरैं कहाँ ऊढ ज्यौं बाँहसौं बाँह, छोरैं कहाँ गूढ ज्यौं कूपकीछाँह ६२
घालैं कहाँ अंखिमैं अंखि अट्ठीहि, झालैं कहौं हत्थसौं दूर ठट्ठीहि
अट्ठीहि डारैं कहाँ अप्पनी माल, गट्ठीहि डारैं मनौं मोहके जाल ६३
यौंयौं बिमानावली बीर बैठारि, जैबेलगी नाककौं नाकिनी नारि
साकंभरीमच्छरीयौंजुर्‌यो जंग, खायो प्रतीहारकोचक्र चो४अंग।६४।
भाई हने रुद्र११ही वेनुं वंसीय, सौं धीरके पुत्र तीनौं३प्रसंसीय॥
काका उभै२थालके बंधु पंचास,
चालीससै ४००० बाँहिनी ओर त्याँतास ॥ ६५ ॥
रक्खे इते त्यागमैं मच्छरीराय, नीकै सुनौं जो बन्यो वच्छरीन्याय
केतो वढो सौरसौं चांद्र जो मान, आवैंनहीं काम सो अग्ग अक्ख्यान
ज्यौंअब्द१मैंरुद्र११संख्यातिथीह्रास, अग्गैंघटीतीन३हूनित्यव्हैनास।

जोड़ती है ॥ ६१ ॥ दूसरी ओर से शूरों के चित्त को चोरती है और कहीं उफने हुए स्नेह से निहोरती है १ विवाहे हुए के समान ॥ ६२॥ वीरों के नेत्रों में अपने २ तुलेहुए नेत्र डालती है और अपने हाथों में तुली (तोली) हुई माला को वीरों के गले में डालती है सो मानों मोह की दृढ जाल डालती है ॥ ६३ ॥ ३ विमानों की पंक्ति में वीरों को बिठाकर स्वर्ग की स्त्रियें स्वर्ग को जानेलगीं. सांभरवाल और चहुवाण इस प्रकार जुड़े और प्रतिहार की चतुरंग सेना को चहुवान खागया।६४। ४वेणु के वंशवालों को५प्रशंसा योग्य६एक थाल में शामिल भोजन करनेवाले पचास भाई ७ सेना ॥६५॥ ८ चहुवाणों के राजा ने इतने त्याग में (संसार से त्याग दिये) रक्खे ९ यहां पर सम्वत्सरी न्याय बनगया है सो श्रेष्ट रीति से सुनो कि सौरवर्ष से चान्द्रवर्ष का मान (प्रमाण) कितना ही बडा है (कल्प के वर्षों की गणना करने में सौरवर्षों से चान्द्रवर्ष अधिक होते हैं. यथा सूर्य की एक संक्रान्ति के तीस अंश होते हैं जिसमें चन्द्रमा की तिथियें कभी इकतीस कभी बत्तीस और कभी इससे भी अधिक भोगजाती हैं सो धान्यराशि नाप के उदाहरण से अर्थात् धान्य की राशि को सौ रुपये भर सेर से तोलोगे तो नाप में कम उतरैगी और पचास रुपये भर नाप से तोलोगे तो अधिक उतरैगी इसीप्रकार सौरमान से चान्द्रमान बडा है) सो यह तो आगे के आख्यान में काम नहीं आता

देअग्ग पंचास५२पूरी पलैं दंस, अोरैं चमू ताहुकौं साठिमो अंस ॥
मानिक्य यौं चंद्रके मानसे मारि, डारे प्रतीहार संसारतैं टारि ॥
नामावली तासहू रामभूपाल, केती कहौं सर्वही संहरे काल॥६८॥

[षटपात्]

समरसिंह रन अग्ग हन्यौं मंगलसुत नाहर ॥
ताके ग्यारह११तनय धीर१सब मुख्यधुरंधर ॥
ताके अनुज प्रताप२भीम३अर्जुन४हरि५लक्खन६ ॥
वीरराज७रनधीर८कन्ह९संकर१०गोवर्द्धन११ ॥
ए भ्रात धीरके अब तनय बिक्रम१संभु२किसोर३त्रय३ ॥
पंचास५०अोर बंधव परे रतन१स्याम२ काका उभय२॥६९॥

[दोहा]

भ्राता ग्यारह११तिथिभये, त्रय३घटिका तनुजात ॥
पलबावन५२हुव बंधु पुनि, विपल अोर भट व्रात ॥ ७० ॥
मच्छरीक रन अब्दमैं, अारि करि अवस इतेक ॥

परन्तु सौरवर्ष में चन्द्रमा की तिथियें चय होकर वर्ष पूर्ण होता है यह सम्वत्सरी न्याय यहां मिलगया है सो लिखते हैं कि जैसे एक वर्ष में ग्यारह तिथि चय होती हैं और आगे तीन घड़ी बावन पल का ग्रास होता है और उस (पल) का साठवां अंश विपल के समान अन्य सेना मारीगई सो जानो. इस उदाहरण को आगे स्पष्ट रीति से घटावेंगे ॥६७॥ इसप्रकार माणिक्यराज चौहाण ने चान्द्रमान से मारकर प्रतिहारों को संसार से टालदिये जिनके नामों की पंक्ति है रामसिंह राजा कहांतक कहूं काल ने सभी का संहार कर दिया आगे समरसिंह ने मंगल प्रतिहार के पुत्र नाहर को युद्ध में मारा था जिसके ग्यारह पुत्र हुए जिनमें१बडा धीर२और धीर के छोटे भाई ॥ ६९ ॥ अब उस संवत्सरी न्याय को यहां पर घटाते हैं कि धीर सहित ग्यारह भाई तो वर्ष में टूटनेवाली तिथियें हुए और धीर के तीन पुत्र मारेगये वे तीन घड़ी हुए और एक थाल के भोजन करनेवाले पचास भाई और दो काका ये बावन बान्धव (सम्बन्धी) बावन पल हुए और अन्य वीरों का समूह मरा सो विपल हुए ॥ ७० ॥ चहुवाण के रण रूपी सम्वत् में इतने टूटे (टूटी तिथियों को अवम कहते हैं) हुए करके

सत्रह१७हायन वय समय, बिजय लह्यो सबिबेक ॥ ७१ ॥
गगन बान हय पच्छ२७५०गत, जुगकलि हायन जत्थ ॥
२नाहर हनि नाहर३सुतन, संभर लिय बलसत्थ ॥ ७२ ॥

[षट्पात्]

पुर साकंभर४ राज्य बिश्वपति अग्ग बढायउ ॥
तासौं नाहरराज अधिक बिस्तृत५ अपनायउ ॥
चक्रधरहिं दिय कछुक ऋन१रु उपकार२निवारन ॥
लंघि नगर पिप्पाड आन न दये प्रतिहारन ॥
सततीन३००तीन३००कोसन परिधि६ अवँनि७ भयो संभर अमल ॥
मंडोवरेस८ जयसिंहसौं बलि९बलि१० लिय वंलि दब्बि बल ॥ ७३ ॥

दोहा

पितामही१२१अरु निज प्रिया२, ब्रध्ननगर सन बुल्लि ॥
नाहर१३४इम स्यामा१३४१निरंत, भुग्गी भुव फलिफुल्लि ७४

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने माणिक्यराजदेवीवरप्रापणगोभिल्लशंकरदाससुताश्यामा १३४१ परिणायनब्रध्नपुरागमनव्यूढवाहिनीनाहरराजरुमारणविरचनप्रतिहारमङ्गलवंशविध्वंसनप्राप्तविजयशाकम्भरराज्यपुनःसमुद्धरणं षट्षष्टितमो६६मयूखः ॥ ६६ ॥

वर्ष की १अवस्था में॥७१॥२नाहर प्रतिहार के पुत्रों को मारकर३माणिक्यराज (इसका दूसरा नाम नाहर था) ने बल पूर्वक सांभर को लिया॥७२॥४सांभरपुर के राज्य को५फैलाहुआ६तीन तीन सौ कोस के घेरवाली७भूमि ८ मंडोवर के पति११बल से९बारंबार१०दबाकर खिराज लिया॥७३॥१२दादी और राणी को १३नियुक्त होकर ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में माणिक्यराज को देवी का वर प्राप्त होना, गोभिल शंकरदास की पुत्री श्यामा से विवाह करना, और ब्रध्नपुर में आकर व्यूह रचना सहित अथवा बड़ी सेना से नाहरराज का सांभर में युद्ध करना, और मंगल प्रतिहार के वंश का नाश करना, और विजय पाकर सांभर के राज्य का फिर उद्धार करने का छासठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६६ ॥ और आदि

आदितोऽष्टोत्तरशततमः ॥ १०८ ॥

मायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पात्

लै सम्भरपुर बहुरि भूप मानिक्यराज इम ॥
दव्वन लग्गो देस जोर उद्धत अर्जुन जिम ॥
त्रिसत३००कोस चोतर्फ आन फेरी भुव अप्पन ॥
इतर नृपन कर लहि सु भयो थप्पन उत्थप्पन॥
लोहाभिसार जाको सततं भूमिपतिन भीतिदं भयो ॥
प्रतिसरद जुद्ध खेती पकरि लरिलरि जिंहिं इत्तो लयो॥१॥

पादाकुलकम्

गंगाद्वार पार दिस उत्तर, धर्मांगद तोमर धरनीवर ॥
मतपं नाम श्रीनगर पत्तन,सुता तास अनुजा हुव सत्तन७ ।२।
आसावरी१३४१नाम गुन उत्तम, रानी नृप परनी सु मनोरम ॥
सिंहपाल जद्दव तनया पुनि,सती नाम जपमा१३४३सुन्दर सुनि३
चंपक नगरजाय वर आही, तीजी३यह मांनिक्य विवाही ॥
भुव पंजाव आदि मनुकुलभव, नगर कोटकंगुर धरनीधव ॥४॥
जल्हननाम सुता अब जाकी, सीता१३४४नाम खानि सुखमाकी
पट्ट अनुसरि उपयम विधि पुत्थिय, यह परनी चहुवान चउत्थिय
तँहँ कंगुर जावत मग अंतर, जित मिलोन दये नृप संभर ॥
उनमें ग्राम१नगर२जे आये, ति सबै तंबपत्तन खुदवाये ॥ ६ ॥

से एक सौ आठ मयूख हुआ ॥ १०८ ॥

१ अर्जुन के समान उद्धत होकर२दूसरे राजाओं से खिराज लेकर३जिसका शस्त्र पूजन (आश्विन शुक्ला दशमी को राजा लोग शस्त्रपूजा करते हैं) राजाओं को४निरन्तर५भय देनेवाला हुआ६प्रत्येक वर्ष की शरद् ऋतु में युद्ध रूपी खेती (कृषि) को पाकर ॥ १ ॥ ७ नंबर राजा ८ पुर में सत्तन की छोटी बहिन ॥२॥ ९चम्पकपुर (भागलपुर) १० माणिक्यराज ने११ मनु के कुल में जन्मे हुए१२भूपति१३परम शोभा की खान१४विवाह की१५पुत्थिय (पकाशि की पुस्तक)अर्थात् पोथी१६मुताबिक१७चहुवान ने१८ये सब तांबापत्रों में खुदवाये

विप्र[१]१सूत[२]२मागध[३]३बंदीजन[४]४,धाम बखसि सब करे धराधन[५] ॥
पहिलैं द्विजन१चारनन२पाई, इहिँक्रम लई सबन अधिकाई ॥७॥
लालित धाम जिन्ह जिन्ह जे जे लिय,रीति सु मंडि मागधन[६] रक्खिय।
रचि समाँस[७] बरनैं रविमल्लहु, पितरन[८] अंहति[९] सुनहु रामपहु ॥८॥

(षट्पात्)

प्रथम१मिजल रामगढ१मिजल दूजी२पलसानौं २ ॥
इहिं क्रम लोहग्गल३रु गूढ४खेलट५सिंगानो६ ॥
कालुंड७रु भीवानि८दद्दुरी९मैंम१०सामरन११ ॥
बाँद१२रामपुर१३बहुरि प्रथित[१०] खरासिंदू१४पत्तन ॥
दिय ए निकेत[११] चउदह १४ द्विजन सूतन[१२] अब अप्पिय समंद[१३] ॥
पहिलैं कलात१रम्माट२पुर रामराज३पुनि रामन्हद४ ॥९॥
सुकगुफा५रु सिंघाट६बहुरि पत्तन[१४] पट्टालय७ ॥
कुंडालिका८रु कुहार९जिमहिं निवसंथ[१५] धानंजय१० ॥
रीवाँ११मच्छीबाट१२इक्क सतलंज धारजह[१६] ॥
कालेंद्रिय१३रु सतद्रुसेव्य[१७] रुप्पड१४गढून१५सह ॥
दसपंच१५उचित ए चारनन द्रंग[१८] द्रव्य आकर[१९] दये ॥
नृपराम सुनहु मागधजनन अग्गैं पंच५हि अप्पिये ॥१०॥

[दोहा]

मार्दवपुर१जेजिम२महत, हितदुलत्तहट्टी३रु ॥
दाधिक४संतिल५ए दये, बखसि मागधन वीरु ॥ ११ ॥
पहिलो ठट्ठिल अप्पयो, भट्टन पुनि भूपाल ॥
कलेश्वर१रु ज्वाला२नगर३, तिम चउत्थ४ऋनताल ॥१२॥

---

१ ब्राह्मण २ चारण ३ बड़वाभाट ४ स्तुतिपाठक भाटों को धरा दे दे कर ५ राजा धनादिये ॥७॥ ६ बड़वाभाटों ने सब लिख रक्खी है ७ उसको संक्षेप से ८ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल भी कहते हैं राजा रामसिंह आप के पितरों का ९ दान सुनो॥८॥ १० प्रसिद्ध ११ ये चौदह स्थान ब्राह्मणों को दिये १२ चारणों को १३ मद सहित ॥ ९ ॥ १४ पुर १५ ग्राम १६ जहां पर सतलज नदी की एक धारा है १७ शतद्रु नदी से सेवा जानेवाला १८ नगर १९ द्रव्यों की खान दिये

(षट्पात्]

नवरु तीस३९इम मिजल[1] करी नाहर१३४संभर[2] सन ॥
पुर१वहु निबसथं[3]२अल्प दये ते सब कवि१विबुध[4]२न ॥
संप्रदान[5] तिहिं समय बिप्र तक्किय[6] गंगाधर१ ॥
सद्दिय बुध श्रीकंठ२सांख्यआकर[7] द्विज संकर३ ॥
बेदांत उदधि त्र्यंबक४बिदित मंठ५सुकवि साहित्यमय ॥
गोविंद६भट्ट पटु जोगगति जैमिनिमत मूरति बिजय७॥१३॥

(दोहा)

दये प्रथम इतिमुख[10] द्विजन, रीझि चउद्दह१४राय ॥
सिसुपनसौं[11] बिद्या बिभव, अप्प रह्यो अपनाय ॥ १४ ॥
सुपंहु[12] अनी[13]१बिच सूर जिम, सम बानी२बिच सूर ॥
कोस१व्याकरन२काव्य३करि, पढ्यो निगम[14]४मतिपूर॥१५॥
हमकौं सुमिरन[15] पुब्बही, नृप यह आयो नाँहिं ॥
बिरधाँ[16] नतो धर्मी१रु बुध२, लिखते मंगल[17]माँहिं ॥१६॥
बुधजन देस बिदेसके, सुनि मति१धर्म२प्रकास ॥
आश्रित हुव चहुवानके, बिरचि रुमापुर[18] बास ॥ १७ ॥
उपयम[19] कारन जात इम, मिजल धाम कछु मानि ॥
द्विजन इते भूपति दये, अतुल रीझ छक आनि ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

संप्रदान सौतेयँ[20] सुनहु अब रामनरेस्वर ॥

१मुकाम२सांभर से ३ ग्राम ४ पंडितों को उस समय के ५ दान ६न्याय शास्त्र का पंडित ७ सांख्य शास्त्र की खान ८ वेदान्त शास्त्र का समुद्र ९ मीमांसा शास्त्र की मूर्ति ॥ १३ ॥ १० इत्यादि ब्राह्मणों को दिये ११बालकपन से ही विद्या रूपी विभव को आप(माणिक्यराज)ने अपनालिया था॥१४॥१२वह श्रेष्ठ राजा१३सेना के बीच में वीर था उसीके समान वाणी में शूर था१४वेद ॥१५॥१५पहिले स्मरण नहीं आया नहीं तो धर्मात्माओं में और पंडितों में१६दोनों और१७मंगलाचरण में लिखते ॥१६॥१८सांभर में वास करके ॥१७॥१९विवाह करने के लिये जाते समय २०सूतपुत्रों(चारणों)

चंडकोटि तिनदिनन अम्ह परपुरुख धुरंधर ॥
दिय पौरानिक कुलहिं साप अग्गैं अकृतव्रन ॥
आर्यमित्र तब वेहि विहित वंदे कुलवर्द्धन ॥
मुनि कहिय लहहु करि तुष्ट मृड तिन कुल रक्खिय तिमहि करि॥
प्रभुचरितमाँहिं कहिहैं सु सब कछुक लेहु अब कन्नधरि ॥१९॥
व्यास सिस्य हुव पंच५पैल१अरु वैसंपायन२ ॥
मुनि जैमिनि३रु सुमंतु४लोमहरखन५सिंच्छायन ॥
छात्र सूतकै छ६मुनि सुमति१मित्रयुर२अकृतव्रन३ ॥
जाको कास्यप३यहहु अपर अभिधान पुरानन ॥
सावर्णि४सांसपायन५सुबुध अग्निवर्च६ए सबभये ॥
उग्रश्रवा७हु सप्तम७स्वसुत सूत पठित ए सिक्खये॥ २० ॥

(दोहा)

इम सत्त७न निजछात्र१अरु, सुत२नत्ती३सिखयेहि ॥
जब गुरुकुलकी जीविका, भूसुर लेत भयेहि ॥ २१ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

उग्रश्रव आत्मज उपजे दुव२, पुराश्रवा१बडे तिनमैं हुव ॥

में दानपात्र हमारे पुरुषा चंडकोटि नामक उन दिनों में धुरंधर थे "अब आगे चारणों की कुछ कथा कहते हैं" लोमहर्षण वंश के सूत कुल को आगे अकृतव्रण (कारयप) नामक मुनि ने शाप दिया था तब आर्यमित्र नामक सूत ने अपने कुल की वृद्धि करने के अर्थ उन्हीं अकृतव्रण से नमस्कार किया सो सुनकर अकृतव्रण ने कहा कि महादेव को प्रसन्न करके वंशवृद्धि पाओ तब आर्यमित्र ने शिव को प्रसन्न करके अपने कुल को रक्खा वह सब चरित्र हे स्वामी रामसिंह आप के चरित्र में कहेंगे परन्तु कुछ यहां भी कहते हैं सो श्रवण करो ॥ १९ ॥ १वेदव्यास के२शिक्षा के घर पांच शिष्य हुए३जिसका दूसरा नाम पुराणों में कारयप है,४इन छै मुनियों के सिवाय अपना (लोमहर्षण का) पुत्र उग्रश्रवा ये सातों ही लोहमर्षण सूत से पढकर शिक्षित हुए ॥ २० ॥ इसप्रकार इन सातों ने भी अपने शिष्य, पुत्र और पौत्रों को पढाये तब गुरुकुल (सूत पौराणिकों) की जीविका (पुराणादिक की कथा करने की जीविका) ब्राह्मणों ने ली ॥ २१ ॥ लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा के दो पुत्र हुए जिनमें बडा पुण्यश्रवा और छोटा सगा भाई

भद्रश्रवा२सहोदर भ्राता, बिद्या१तप२जुग२जुग२हि बिधाता॥२२॥
पुण्यश्रवा सुता इक पाई, किय अगूढ जिहिँ जोग कुमाई ॥
भद्रश्रवा लह्यो तनुज त्रय३,बडे तहाँ बसुमित्र१वीतभय ॥ २३ ॥
प्रभुभूमित्र२रु आर्यमित्र३पुनि, चतुर भये दिग्गज बुध सबचुनि॥
तर्क१सब्द२आदिक पृथु तंत्रन,मुख भिच्छुक किय दैकि निमंत्रन
हुव भूमित्र तिनहु बिच कोपन, उद्धत गह्यो ऊह आरोपन ॥
बाद१जल्प२वेतण्डा२कल्पक,ओक ओक दिय रोक अनल्पक२५
उग्रश्रव सुतता तिन्ह उज्झैं, सम१दमा२ऽऽदि नैंक न मति सुज्झैं
बहु बिप्रन इम मान बिगारे, रंक समर्थन पास पुकारे ॥ २६ ॥

भद्रश्रवा. विद्या और तप इन दोनों में ये दोनों ब्रह्मा के समान हुए ॥ २२॥ पुण्यश्रवा के एक पुत्री हुई जिसने प्रसिद्ध योग किया और भद्रश्रवा के तीन पुत्र हुए जिनमें बडा वसुमित्र निर्भय हुआ ॥२३॥ हे प्रभु रामसिंह ! भूमित्र और आर्यमित्र ये दोनों सब में चुनेहुए दिग्गज(दिशाओं को जीतने वाले अथवा दिशाओं के हाथियों के समान बडे)पण्डित हुए जिन्होंको न्यायशास्त्र और व्याकरण आदि बडे शास्त्रों(वेदशाखा विशेष॥"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च मन्त्रनिर्णय एव च॥ देवतानां च संस्थानं तीर्थानां चैव वर्णनम् ॥१॥तथैवाश्रमधर्मश्च विप्रसंस्थानमेवच॥संस्थानं चैव भूतानां यन्त्राणां चैव निर्णयः ॥ २ ॥ उत्पत्तिर्विबुधानां च तरूणां कल्पसंज्ञितम् ॥ संस्थानं ज्योतिषां चैव पुराणाख्यानमेव च ॥ ३ ॥ कोषस्य कथनं चैव वृत्तानां परिभाषणम्॥ शौचाशौचस्य चाख्यानं नरकाणां च वर्णनम् ॥ ४ ॥ हरचक्रस्य चाख्यानं स्त्रीपुंसोश्चैव लक्षणम्॥राजधर्मो दानधर्मो युगधर्मस्तथैव च ॥ ५ ॥ व्यवहारः कथ्यते च तथा चाध्यात्मवर्णनम्॥ इत्यादिलक्षणैर्युक्तं तन्त्रमित्यभिधीयते ॥६॥) ने मानों निमन्त्रण देकर अपने मुख्य भिक्षुक बना लिया अर्थात् इन शास्त्रों ने अपना सर्वस्व इन्हींको दिया ॥२४॥ इनमें भूमित्र क्रोधी हुए जिन्होंने प्रगल्भ होकर अपनी तर्कना का आरोपण किया और वाद (यथार्थज्ञान के वचन को वाद कहते हैं) जल्प (अपने पक्ष को स्थापन करके परपक्ष को दूषण युक्त ठहरानेवाले विजय के वचन को जल्प कहते हैं. यथोक्तोपपन्नश्छलः। जातिनिग्रहस्थानसाधनोपालम्भो जल्पः) वितंडा (परपक्ष को स्थापन नहीं होने देने को वितंडा कहते हैं) के रचनेवाले भूमित्र ने बडों बडों को घर घर में रोकदिया ॥२५॥इन्होंने उग्रश्रवा के पुत्रपन को छोडदिया अर्थात् उग्रश्रवा जैसे शीलवान् और सतोगुणी थे ऐसे ये नहीं हुए और इनको शम दम

कासी इक नृप खिन नवमा९ऽऽवृति, वैष्णवव्रतन पुरान सुनैं धृति१८
जाको नाम———————जान्यौं, पारायन श्रुति उचित प्रमान्यौं २७
कास्यप तनय छात्र पाठक जँहँ, कास्यप आदि मुनिहु श्रोता तँहँ
अटत अटत भूमित्रहु आये, लखि सु व्यास आसन रिसलाये २८
ऊँचो कर करि सूत कही यह, अहो बढत बिप्रन अब आग्रह ॥
जिनसौं दुर्घट सास्त्र गये जब, पौरानिक जीवन जीवत अब।२९।
वक्ता तँहँ संकास यहै सुनि, कह्यो गह न तुमकौंहि दई मुनि॥
बिप्रहु कहे इहाँ अधिकारी, तुम जो वृत्ति भिन्न किम टारी॥३०॥
सुनि भूमित्र कह्यो धिक रे सठ, व्है परचौर बहुरि मंडै हठ ॥
को गुरु मूढ रही जँहँ कच्ची, सुनि संकास सिटि न कहि सच्ची३१
अकृतव्रन अवलौं सु पचाई, उर गुरु सुत सुतसुत सुधि आई ॥

आदि कुछ नहीं सूझा. बहुतसे दीन ब्राह्मण वलवानों (तपोबलीऔर विद्या वलियो) से जाकर पुकारे ॥ २६ ॥ काशी में एक समय राजा वैष्णव व्रतों में स्थित होकर अठारह पुराणों की नवमी आवृत्ति (आठ वार पहिले सुन लिये थे अब नवमी वार सुनना प्रारंभ किया) सुनता था जिसका नाम ( ) था उसने पारायण सुनना उचित जाना ॥२७॥ वहां पर काश्यप मुनि का पुत्र जो काश्यप का शिष्य भी था वह राजा को सुनानेवाला हुआ और काश्यप मुनि आदि सुननेवाले हुए वहां पर फिरते हुए भूमित्र आये जिन्हों ने व्यासासन (कथा करने के आसन पर) काश्यप के पुत्र(संकास नामक मुनि) को देखकर क्रोध किया ॥२८॥ ऊंचा हाथ करके भूमित्र नामक सूत ने कहा कि आश्चर्य की वात है कि अब ब्राह्मणों का आग्रह बढता है. जिन ब्राह्मणों से जब कठिनाई आनेवाले शास्त्र चलेगये तब पुराण सुनाने की (हमारी) वृत्ति से जीने लगे हैं ॥ २९ ॥ संकास नामक कथा करनेवाले ब्राह्मण ने कहा कि वेदव्यास मुनि ने पुराण वृत्ति केवल तुमको ही नहीं दी है ब्राह्मण भी इस कार्य के अधिकारी हैं फिर इस वृत्ति को तुम ने ही जुदी कैसे टाली है।३०। भूमित्र ने क्रोध करके कहा कि अरे मूर्ख पराई वस्तु को चुरानेवाला होकर फिर हठ करता है, कौन मूर्ख तेरा गुरु है कि जिससे तेरी बुद्धि इसप्रकार कच्ची रहगई है, यह सुनकर संकास लज्जित होगया और सच्ची वात पीछी नहीं कहसका ॥ ३१ ॥ अकृतव्रण (काश्यप) ने अब तक सहन किया और उर में अपने गुरु (लोमहर्षण) के पुत्र के दौहित्र का

निंदे इन्ह संकास गुरुहि जव, साप दयो दुस्सह कास्यप तव३२
जे बिप्रन करि दया गिनें सम, ते ब कहत कोउ न हमही हम॥
कूर मूढ कहि मुनिन कुपाये, जाहु खयहिँ पौरानिकजाये॥३३॥
बचन बज्र कास्यप यह डार्‌यो, सूतनं जिततित मरन सम्हार्‌यो॥
आर्यमित्र यह सुनि आतुर अति,कास्यप पयन गिरे विनीत मति३४
आकृतव्रन करुना द्रुत आनी, बुल्ले सजलनयन हित बानी॥
उग्रश्रवा महामुनि अन्वय, जन्महिँ पाय धन्य तुम दुर्जय ॥३५॥
भूमित्रहिँ तरज्यो संकासहिँ, हमहु मूढ वरने करि हासहिँ ॥
कोप बढ्यो सहसा इहिँकारन, उचित दंड किम होय निवारन३६
पै गोधूम कुसंगहिँ पावत, जंत्र घरट्ट कृमिहु पिसिजावत ॥
इम तुमपैँहु भार यह आयो, मंजु एक १करि कुलहिँ गुमायो॥३७॥
पीछैँ हमहु वहुत पछिताये, करैँ कहा तव भ्रात कुपाये ॥
बहुद्विज मान हरे करि बादहिँ,पुनि वक्यो सु यँहँ आनि प्रमादहिँ३८
राजसँभा कानि न कछु रक्खी,अहि द्विजकोप जगाय रु अक्खी॥
चित्त हमहु कछु रिस इम चाही,साप असह निकर्‌यो सहसाही३९

स्मरण हुआ अर्थात् यह जाना कि यह भूमित्र हमारे गुरु के पुत्र (उग्रश्रवा) के दौहित्र हैं जिनने जब संकास के गुरु की निन्दा की तब काश्यप ने दुस्सह श्राप दिया॥ ३२ ॥ ब्राह्मणोंने दया करके जिनको अपने समान(बराबरीवाले) माने हैं वे अब कहते हैं कि जो कुछ है सो हम ही हैं हमारे समान अन्य कोई नहीं है और मुनियों को मूर्ख कहकर क्रोध कराया है इसकारण पौराणिक (लोमहर्षण) के वंशवाले क्षय होजाओ ॥ ३३ ॥१लोमहर्षण के वंशवाले२काश्यप के पगों में नम्र होकर गिरे तब आकृतव्रण ने शीघ्र करुणा लाकर नेत्रों में जल भरकर हित के वचन कहे कि हे दुर्जय (आर्यमित्र) महामुनि उग्रश्रवा के वंश में जन्म पाकर तुम धन्य हो ॥ ३५ ॥ भूमित्र ने संकास को धमकाया और हसी करके हम को भी मूर्ख कहा ॥ ३६ ॥ परन्तु गेहूँ के संग से कीड़े भी घरटी यंत्र में पिसजाते हैं इसप्रकार इस श्राप का भार तुम पर भी आया है और एक ने अपराध करके मनोहर कुल का नाश कराया है ॥ ३७ ॥३उसने शास्त्रार्थ करके बहुत ब्राह्मणों के मान हरे थे ॥ ३८ ॥४राजसभा की शंका भी कुछ नहीं रक्खी५सर्प रूपी ब्राह्मण के क्रोध

कथित सु विप्रन मोघ होय कब, उरग गयो रु रही लेखा अब॥
कुप्पि रु गुरुकुल पाप कुमायो, अब भावी अैसो सुधि आयो॥४०॥
तुम द्रुत जाहु अद्रितुहिनाचल, आराधहु भव भक्ति अनर्गल ॥
वृखसेवन हर तुमहिं बतैहैं, द्रुत वृख तुष्ट वृद्धि वर दैहैं ॥ ४१ ॥
ताके वर अन्वय बढिहै तव, भव करिहै हरिहै चिंता भव ॥
यासौं हमहु प्रसन्न अनाग्रह, उत्क्रमिटहु गुरु बंस रहहु यह ॥४२॥
वासुकिनागसुता अवरी बलि, दैहैं तुमहिं रुद्र संसय दलि ॥
तनय होहिं वीस रु सत१२०तामैं, इम बढिहैं गुरुवंस इलामैं॥४३॥
साप असह इतरन संहारहिं, तुमकौं आर्यमित्र अब टारहिं ॥
आर्यमित्र यह सुनि गृह आये, पुनि जिततित मृत कुल सुनिपाये
कास्यप कथित तबहि आतुर करि, सेये हर अकपट तप अनुसरि
देह उपरि वलमक उपदेही, अर्जन लगी गही अति एही ॥ ४५ ॥
सदय उमा लखि सिवहिं सुनाई, रक्खहु प्रभु न यहै निठुराई ॥
प्रान लयैं बालहिं कैसो पय, सूकैं खेत कहा घन संचय॥ ४६ ॥

को जगाकर१ यकायक॥ ३९ ॥ब्राह्मणों का कहाहुआ वृथा नहीं होता इसकारण वह लोकोक्ति सत्य हुई कि सर्प तो निकल गया और लकीर बाकी रहगई. क्रोध के वश गुरु के कुल का नाश करके हम ने भी यह पापकर्म किया है परन्तु अब आगे के लिये यह स्मरण हुआ है कि ॥ ४०॥ शीघ्र हिमाचल पर्वत पर जाकर निरन्तर भक्ति से महादेव की आराधना करो वहां महादेव तुमको बैल (महादेव का वाहन) की सेवा करना बतावेंगे वह वृषभ प्रसन्न होकर शीघ्र ही तुम्हारे वंश के बढने का वर देवेगा ॥ ४१ ॥ उसके वर से तुम्हारा वंश बढैगा महादेव चिन्ता हरेंगे और भव (कुशल) करेंगे इस में हठ छोडकर हम भी प्रसन्न हैं कि हमारा कहाहुआ (शाप) मिटजाओ और हमारे गुरु का यह वंश बनारहो ॥ ४२ ॥ पुनि सन्देह मेटकर शिव तुमको वासुकि नाग की अवरी नामक पुत्री देवेंगे१पृथ्वी में ॥ ४३ ॥ हमारा शाप औरोंका नाश करैगा और हे आर्यमित्र तुमको बचादेवेंगे२कुल का मरना सुना ॥ ४४ ॥ आर्यमित्र ने कास्यप का कहना शीघ्र करके कपट रहित होकर महादेव का सेवन किया, जब देह के ऊपर उदेही दूसरी देह इकट्ठी करनेलगी, यह गति होगई तब ॥ ४५ ॥ दया सहित पार्वती ने प्राणगये पीछे बालक को दूध पाना किस काम का है और खेत सूखने पीछे मेघ

देव इष्ट भक्तहिँ द्रुत दीजै, लय कुल होत रक्खि अब लीजै ॥
देखि दया सु कह्यो हर देवहु, सूत मदीय वृखभ यह सेवहु॥४७॥
आर्यमित्र तब प्रीति परायन, हर वृख जेंज्यो द्वै रु दस१२हायन॥
भजी दिलीप नंदिनी जा भति, सूतहु भद्र भज्यो हित संगति४८
संग रहे छाया सम नतिसन, वारह१२अब्द चरायो बन बन ॥
वृख व्है तुष्ट दयो सूतहिँ वर,तवकुल वढहु फुल्लि फलि बहुतर४९
गिरिस दत्त अब धारि परिग्रह, सुगुन प्रजा तुम रचहु सक्ति सह॥
करि हित मोहि चरावन कारन,चतुर भजहु उपपद अब चारन५०
सु सुनि सूत आये वृख संगहि,कुलवर्द्धन हुव बर सु दयो कहि॥
भक्ति प्रसन्न निदेस कर्‌यो भव,तिय बिनु किम बढिहै संतति तव५१
सूत जाति निस्सेस मिटी सव, इक्क करहु आनर्त जाहु अब ॥
जो पृथुभूप तुमहिँ दिय जनपद, है अतिपुराय तीर्थ पावन ह्रद।५२।
छम मम लिंग जहाँ छबि पावत, सोमनाथ अभिधान कहावत॥
तिहिँ मंदिर वासुकिकी तनया, अवरीनाम सती हतअनया।५३।
उभय२घटी निस रहत सु आवत,रचि हित पूजन मोहि रिझावत॥
नटन१गान२आदिक करि नवनव,भनत प्रनामि पति उचित देहु भव
तँहँ तू जाय भजहु बरि ताकौं, जँनिहै वह कुल वढन प्रजाकौं॥

का सींचना क्या है ॥४३॥ हे देव ! भक्त को वांछित वर शीघ्र दीजिये और नाश होते कुल की रक्षा कीजिये,१हे सूत मेरे वृषभ की सेवा कर २सेवन किया३बारह वर्ष पर्यन्त राजा दिलीप ने नन्दिनी नामक गऊ की सेवा की थी उस भांति सूत(आर्यमित्र)ने वृषभ का हित सहित सेवन किया ४ नम्रता से शिव की दीहुई परगह(परिजन)को धारण करके श्रेष्ठ गुणवाले सन्तान रचो और मुझको हित के साथ चराने के कारण चारण उपपद धारण करो।५०। ५महादेव ने आज्ञा की कि स्त्री के विना तेरा वंश कैसे बढेगा॥५१॥सूत जाति तो सम्पूर्ण मिट गई इसकारण से एक हमारा कहना करके आनर्त देश (द्वारका प्रान्त) में जा. वह देश सूत [सूत कुल के आदि पुरुष] को राजा पृथु ने दिया था ॥५२॥ वहां पर मेरा समर्थ लिंग शोभित है. सोमनाथ नाम कहलाता है६वासुकि नाग की पुत्री विपदा मिटानेवाली७नृत्य८नवीन नवीन करके कहती है कि हे महादेव मेरे योग्य पति दे९सेवन कर१०सन्तान

सो जातहि सिर धरि मम सासन, आदर तव करिहै तजि आसन
अग्गैं सैन तुमरोहि देस वह, सरजहु प्रजा तहाँ रहि सुख सह ॥
पौरानिक तव जपत पुँरारे, स्वीय देस आनर्त सिधारे ॥ ५६॥
तँहँ तैसँहि पाय अवॅरी तिय, करि गेहाश्रम प्रजा प्रकट किय॥
सत रु वीस १२० उपजे तिनके सुत,
जिनतैं चारन खरवि १२० भेदजुत ॥ ५७ ॥
तिनमैं नवम१भेद वैरोचन, जामैं हम सबही मिश्रणाजन ॥
हमरे पुव्वपुरुख कातरकटु, चराडकोटि१तिनदिनन हुते पटु।५८।
बुल्लत मिश्रित गुंफि छ६वानी, जिन्ह अभिधा मिश्रन जगजानी
प्रकटि वादँ दिसदिस जय पायो, वाँदिविहण्डन विरुद कहायो५९
है जिनकेहि नाम मिश्रन हम, वे तिहिं समय हुते जयँ उद्यम॥
पायो तिन नृपसौँ पट्टालय, जु इतरँ नृपन राज्य सम कृतजय६०
इतरँहु वहु चारन नृप आश्रित, है तिन्ह नाम सुनहु प्रभु करि हित
संभुदेव२उद्धव३संकरखन४, कासीनाथ५अमर६विद्याधन ॥ ६१ ॥
चन्द्रदेव७भास्कर८वाचस्पति९, देवीदास१०मुरारि११महामति ॥
इत्यादिक पौरानिक सूरिनैं, दये धाम पन्द्रह१५पन्द्रह१५दिन ६२
पुनि मागध हरिसेन१प्रभाकर२,ईश्वर३चन्द्र४विजय५गुनआकर ॥
च्यारि४भट्ट धनदेव१देवमनि२, खेमपाल३भैरव४विद्याखँनि॥६३॥
इनकौँ पुर पंच५रु चउ४अप्पिय,मिजलन इम कंगुर भुव मप्पिय

जनेगी १ उठकर ॥ ५५ ॥ २ पहिले से वह देश तुम्हारा ही है ३ महादेव के यह कहते ही वह पौराणिक (आर्यमित्र) अपने आनर्त देश में गया ॥५६॥ ऊपर कहे अनुसार४अवरी नामक स्त्री को पाकर५गृहस्थाश्रम करके सन्तान उत्पन्न की ॥५७॥६ग्रंथकर्ता [सूर्यमल्ल]७कटु बोलने में कायर ॥५८॥८ छहों भाषा को मिलीहुई गूंथकर बोलते थे इससे उनका९नाम मिश्रण हुआ १०शास्त्रार्थ करके११वादिविहंडन ऐसी स्तुति कहाई(मिश्रणों को चारणों के याचक लोग वादविहंडन कहते हैं)॥५९॥१२उद्यम को जीतनेवाले१३दूसरे राजाओं के राज्य की १४ और भी १५पंडितों को १६ विद्या की खान ॥ ६३ ॥

दानसील ऐसो कहुँ दीसैं, हितकरि तो बरनैं हसि दीसैं ॥ ६४ ॥

दोहा

पथ आये जे ग्राम१पुर२, मिजलन अवधि मुकाम ॥
तकि सहजहि मानिक्य³ ते, दिय दुल्लह धुर धाम ॥६५॥
सम्भर अहो उदारता, यह काके⁴ अनुरूप ॥
पट्टालयसे अप्पि पुर, भुवँ किय चारन भूप ॥ ६६ ॥
तदनु चढ्यो पुर तालसौं, दुल्लह करि बहु दान ॥
कंगुर जाय विवाह किय, चोथो४इम चहुवान ॥ ६७ ॥
मनुस्वायंभुव कुल खर्मनि, जल्हन भूपति जत्थ ॥
सीता१२३४।४वरि ताकी सुता, अधिक दयो पुनि अत्थ॥६८॥
वैवस्वत मनुवंस भव, तिन दिवसन लाहोर ॥
करत राज्य केदार नृप, जो उद्धत दल जोर ॥ ६९ ॥
जल्हनके लरि पुब्ब जिहिं, दब्बिलये दुवरदेस ॥
तस बिन्नति जामातसौं, अब मानव किय एस ॥ ७० ॥
कर आब्दिक देनौं कर्‌यो, दुष्ट तदपि केदार ॥
छिति अप्पन वहु छिन्निलिय, उचित तुमहिं उपकार॥७१॥

[षट्पात्]

स्वसुर¹⁰ उक्त यह सुनत चढ्यो चहुवान पुरंदर¹¹ ॥

ऐसा दानी कोई दीखे तो वर्णन करें नहीं तो वर्णन करने में हसी दीखती है ॥ ६४ ॥ १ मार्ग में २ माणिक्यराज ने ॥ ६५ ॥ इस चोहाण की ३ आश्चर्य देनेवाली उदारता है सो किसके४सदृश है अर्थात् इस उदारता के समान यही उदारता है ५ भूमि पर चारणों को राजा करदिये ॥ ६६ ॥ ६ जिस पीछे ॥ ६७ ॥ स्वायंभू कुल का ७ सूर्य ८ धन दिया ॥ ६८ ॥ ९ सेना के बल से उद्धत था किन्तु अपने बल से नहीं था ॥ ६९ ॥ उस केदार ने पहिले लड़ कर जल्हन राजा के दो देश जीतलिये थे जिनको पीछे लेदने के अर्थ मनु वंशवाले जल्हण ने जमाई से विनती की ॥ ७० ॥ सालाना खिराज देना किया तोभी दुष्ट केदार ने अपनी भूमि छीन ली जिसका तुमको उपकार करना चाहिये ॥ ७१ ॥ १० सुसर का कहाहुआ ११ इन्द्र

बिंटि नगर लाहोर घोर मंडिय घन संगर ॥
केदारहिं करि जेर स्वसुर जनपद[1] दुवरछिन्नैं ॥
दुवरसिवाय लिखवाय च्यारि४कंगुर बस किन्नैं ॥
दिन कछु तदीय[2] अरि ओर दमि[3] सिक्खपाय सिर दिवघसंत[4] ॥
नाहरनरेस संभर[5]नगर लै दुलहनि आयो लसंत[6] ॥७२॥
त्रिसत३००विप्र[7]बुध तत्थ तीस३०पंडित पौरानिक ॥
खट६मागध[9] चउ४भट्ट[10] बिदित बिद्या बल बानिक ॥
तीनलक्ख३०००००पाइक्क[11] लक्ख१०००००सु बिनीत[12] तुरंगम
मत्त सहँस१०००मातंग[13] जानि पब्बय हुव जंगम[14] ॥
ए जाहि सतत[15] सेवत रहैं बहैं दुलभ जस बीतभय[16] ॥
मानिक्यराज लाहोर इम कंकन[17]सह किन्नौं विजय ॥७३॥

[दोहा]

स्वीय[18] स्वसुरकी सीममैं, लग्गे अठ८मिलान[19] ॥
तिन संटैं निवसथ[20] इतर, दैनकहे चहुवान ॥ ७४ ॥
न लये ते जल्हन नृपति, दै दायज सब द्रव्य ॥
करे बिदा बर१कन्यका२, भुव छुराय निज भव्य[21] ॥ ७५ ॥
इम नृप संभर आयकै, कियउ राज्य दुख कढ्ढि॥
धर्म अनुग[22] भुग्गी धरा, बैरीगन रन्न बढ्ढि[23] ॥७६ ॥
सौत्रामणि पंद्रह१५सैवन[24], बाजपेय[25] मख बीस२० ॥

१स्वसुरा के देश२उस जल्हन के अन्य शत्रुओं को३दंड देकर४मस्तक से आकाश को घिसता हुआ(यह लोकोक्ति है कि विजय पाकर ऊपर को उठेहुए का मस्तक ऐसे जाता है कि जैसे मस्तक से ब्रह्मांड को घिसता हुआ जाता होवे)५सांभर नगर में६शोभायमान होताहुआ७ब्राह्मण जाति के पंडित८चारण जाति के पंडित९वड़वा भाट१०स्तुतिपाठ करनेवाले भाट११पैदल१२शिक्षा पायेहुए घोड़े१३हाथी मानों१४चलतेहुए पर्वत हैं ऐसे१५निरन्तर१६निर्भय होकर यश को धारण करता है१७कंकण डोरड़ों सहित विजय किया॥७३॥१८अपने ससुर की सीम में आठ१९मुकाम हुए थे वे ग्राम दान करादिये जिनके बदले में दूसरे २०ग्राम चहुवाण ने देने कहे ॥ ७४ ॥२१राजा केदार से अपनी सुन्दर भूमि छुडाकर ॥ ७५ ॥२२धर्म के साथ२३काटकर ॥ ७६ ॥ २४ यज्ञ २५ यज्ञविशेष

चयारि४बृहस्पति सव चेयनें, अट्ठ८करे अवनीस ॥ ७७ ॥
ईडरपति जयमल्ल१नृप, दसपुरपतिँ रतधीर२ ॥
पद्मसेन३गुग्गैरपति, हंसीपति हम्मीर४ ॥ ७८ ॥
नीलकेतु५ग्वालेर नृप, पट्टनिपति हरपाल६ ॥
सुपहुँ इते रक्खे समरँ, नाहर काल कराल ॥७९॥

षट्पात्

प्रकटे दस१०गुन पूर सूर मानिक्यराज सुत ॥
सुनहु मुहुकर्मा १३५।१रु लाल१३५।२हरिसिंह१३५।३नीतिजुत॥
सुत चउत्थ४सद्दूल१३५।४पूर्णराज१३५।५सु हुव पंचम५ ॥
छठो६मौक्तिकराज१३५।६अनुज निर्वान१३५।७वीतंभ्रम ॥
पुनिकृष्णराज१३५।८अष्टम८पँथितलसनराज१३५।९अतिबलनवम
सब लघु प्रबालराज१३५।१०हु सुमति कथित एह अनुंरीति क्रम८०

दोहा

प्रथम१द्वितीय२तृतीय३पुनि, चउम४पंचम५रु छठ्ठ६॥
स्यामा औरसं ए छ६सुत,कीलाकंर अरिकठ्ठ ॥८१॥
उभय२जनैं आसावरी,अष्टम८नवम९उदार॥
सीता सुत सप्तम७दसम१०, वाढन कुल विस्तार ॥ ८२ ॥

पादाकुलकम्

इत केदार पुनि सु कंगुर गय,लरिलरि थक्यो जिहिं न लहो जय
जल्लहन प्रबल पाय चउ४जनपद, चहुवानन संबंध महामद॥८३॥

१यज्ञविशेष२राजा३मन्दसोर का पति ॥७८॥ ४ श्रेष्ठ राजा नाहर ने काल के समान भयंकर होकर इतनों को ५ युद्ध में रक्खे (मारे) ॥ ७९ ॥ ६ भ्रम रहित ७ प्रसिद्ध ८ पिछली रीति के क्रम से हुए ॥ ८० ॥ ९ स्यामा के उर से शत्रुओं रूपी ११ काष्ठ के ऊपर १०अग्नि रूपी हुए ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ लाहोर का राजा केदार कांगरे जाकर लड़ लड़ कर थकगया परन्तु जय नहीं पाया क्योंकि राजा जल्हण चार देश पाकर प्रबल होगया था और चहुवाणों से सम्बन्ध होजाने के कारण मदयुक्त था ॥ ८३ ॥

भिरि तानैं केदार भजायो, असुंलोभी लाहोर सु आयो ॥
जिहिं निज नंक कटन नन जान्यो, पर सहाय करि नास प्रमान्यों ८४

दोहा

इक पत्तन मकदूनियाँ, इत जनपद यूनान ॥
जवन सिकंदर नाम जँहँ, सूर भयो सुलतान ॥ ८५ ॥
पुनि तिंहिं संगर रूमपति, संहरि दारासाह ॥
रूम तखत पायो रुचिर, दै सत्रुन उर दाह ॥ ८६ ॥
नोसावौं बेगम निपुन, अरु दुवरतास वजीर ॥
इक बली नास१रु अपर, विदित अरस्तू२वीर ॥ ८७ ॥

षट्पात्

अर्ब१वलख२ईरान३आदि मंडल करि अप्पन ॥
आयो गजनी अवधि थिरा हाकिम निज थप्पन ॥
अटकें लंघि तस इतहु अमल करिबो मन आयो ॥
पावनं आसय पत्र प्रथम लाहोर पठायो ॥
अब आत हमहु केदार उत कैसी तुम चाहत कहहु ॥
कै होहु अनुग आदाब करि रन के सज्जहु दृढ रहहु॥८८॥
दुमति स्यार केदार हुतो बिरचैं यह चाहत ॥
मिलैं कबहु मृगराज करैं पीलुहिं प्रतलाहत ॥
हमहु चर्म१कछु हड्ड२पलल३पूतिहु तब पावैं ॥
दलि जल्हन तस देस अखिल जिंहिं बल अपनावैं ॥

प्राण का लोभी२उसने अपना नाक कटना नहीं जाना॥८४॥मकदूनिया नामक पुर यूनान देश में था जहां सिकंदर नामक यवन बहादुर ने बादशाह दाराशाह को युद्ध में मारकर रूम का सुन्दर तखत पाया॥८६॥उसके ३नोसाबा नामक चतुर बेगम (स्त्री) थी४दूसरा ॥८७॥५भूमि पर६अटक नदी उतर कर७लाहोरवालों का क्या अभिप्राय है इसको जानने के लिये८सेवक॥८८॥दुर्बुद्धि गीदड़ राजा केदार पहिले से यही करना चाहता था कि जो कभी सिंह मिलजावे तो अपनी हाथल (थप्पड़) से हाथी को मारैं उनमें से कुछ चमड़ी हड्डी मांस और दुर्गन्ध हमको भी मिले इसप्रकार उस बलवान के बल से

इम चित्ति सिकंदर पत्र वह जान्यौं सेवधि रंक जिम ॥
कन्या स्वकीय व्याहन कहि रु इत बुल्लिय जवनेस इम ८९

दोहा

इक्खहु कलि जुग घोर यह, रनदुल्लह नृपराम ॥
कन्या मिच्छहिं दैन करि, किय खल अनुचित काम।९०।
सजातीयकै देस जो, सो जिहिं अधम सह्यो न ॥
दुहिता जवनहु अत्थदै, भंड्यो कुलहि त्रि३भोन ॥ ९१ ॥

षट्पात्

सहसा भिंटत सिंह करत जिम प्रनति कंपि खिखि ॥
द्विरद१लुलाय२दिखात लेह यागति अनेक लिखि ॥
दै कग्गर केदार सजव बुल्ल्यो सु सिकंदर ॥
अक्खी तुम इत आय करहु जल्हन हमरे कर ॥
तनया मदीय तो दै तुमहिं जाति सबहि करिहै जवन ॥
तुम सहि धरहु सब सिर तुजक[1] भुग्गहिं हम कंगुर भवन ॥९२॥
करि आयउ दरकुंच सुनत दल[2] प्रबल सिकंदर ॥
जल्हन नृप यह जानि सुतर[3] पठयो पुरसम्भर ॥
इतर[4] नृपहु अनुकूल बिहित जानैं ति बुलाये ॥

जल्हन को मारकर उसका देश हम ले लेवें यह विचार कर सिकंदर के उस पत्र को जैसे रंक के हाथ धन लगै तैसे जानकर, अपनी कन्या को उसके साथ व्याह देना कहकर सिकंदर को इसप्रकार बुलाया ॥ ८६ ॥ हे रण के दुल्लह रावराजा रामसिंह इस घोर कलियुग को देखो कि म्लेच्छ (नीचजाति) को कन्या देना करके उस दुष्ट ने अनुचित कर्म किया ॥ ६० ॥ अपनी जातिवाले के वह देश था सो नहीं सहकर यवन के अर्थ पुत्री देकर तीनों लोकों में अपने कुल की निन्दा कराई ॥ ६१ ॥ सिंह के अचानक मिलजाने से जैसे लौंमड़ी (लोंगती) धूजकर हाथी और भैंसों को पता देती है तैसे अनेक लेख लिखकर केदार ने पत्र देकर सिकंदर को शीघ्र बुलाया. जल्हन को हमारे हाथ में देदो तो मेरी पुत्री तुमको देकर हमारी सब जाति (क्षत्रियों) को यवन करदेवेंगे १ यह तुर्की शब्द है जिसका अर्थ दबदबा अथवा बंदोबस्त है ॥९२॥ २ प्रबल सेना के साथ ३ सुतर सवार (खबर देनेवाला ऊँट का सवार) ४ अन्य राजा भी जो अपने अनुकूल थे उनमें से उचित समझे तिनको

सुनत मिच्छ* संक्रमन इते सम्मलि चढि आये ॥
पट्टनिनरेस हरपालसुत करन१नाम जदुकुल तरनि+ ॥
तोमर÷प्रताप२श्रीनैरपति चंदेरीपति चन्द्रमनि३ ॥ ९३ ॥
पब्बागढ छितिपाल गंगदेव४हु बडगुज्जर ॥
चंदाबारी अधिप चंदकुल कलस गदाधर५ ॥
भुजपति गोहिल अमर६भीम७सैंगर भरेहपति ॥
चाहिल गोकुल चन्द्र८सहित हंसीपति सम्मति ॥
मानिक्यराज९सम्भरमुकुट बैस[2] अमर१०सिवगढ सुपहु ॥
चित्रांग११गोर[3] सिंधुप चढे बिरचन रन इत्यादि बहु ॥९४॥
अटक[4] लंघि इत जवन कटक[5] हंकिय दरकुंचन ॥
ताजी[6] तुरग[7] त्रिलक्ख३०००००लक्ख पंचक५०००००पदाति[8] गन॥
प्रथम फेट मुलतानराज लिन्नी जयमंगल ॥
चढि धारन लरि चंड पर्‍यो तिलतिल करि अरिदल ॥
लाहोर तदनु[9] पहुचंत जवन समुख जाय केदार[10] सठ ॥
करि प्रनति भेट उपहार[11] करि स्वीय[12] निलय लायउ सहठ[13]९५

दोहा

नर[14]कर पूपी[15] जानि जिम, व्है नत[16] लूम[17] हलाय ॥
उदर दिखावत स्वान[18] इम, हुव केदारहु हाय ॥९६॥
कन्या निज दिय मिच्छकँहँ, सो तिहिं रच्छक[19] संग ॥
पठनि पठाई रूमपुर, जवन सज्ज हुव जंग ॥ ९७ ॥

षट्पात्

*म्लेच्छ का चलना सुनकर+यदुकुल का सूर्य÷तँवर॥९३॥ १राजा २बैस जाति का क्षत्री ३ गोड़ ॥ ९४ ॥ ४ अटक नदी को लांघ कर ५ सेना ६ ताजी देश के उत्पन्न हुए ७ घोड़े ८ पैदल ९ जिस पीछे १० केदार नामक मूर्ख राजा ११ सामग्री भेट करके नम्रता सहित १३ हठ पूर्वक १२ अपने घर में लाया ॥ ९५ ॥ १४ जैसे मनुष्य के हाथ में १५ पुड़ी (रोटी) देखकर १६ नम्र होकर १७ पूँछ को हिलाता हुआ १८कुत्ता पेट दिखाता (पगों में पड़ता) है तैसे ही खेद का विषय है कि केदार होगया ॥ ९६ ॥ १९ सिकंदर ने अपने रक्षक साथ देकर ॥ ९७ ॥

कंगुरपर अब कटक[1] सज्जि किय कुंच सिकंदर ॥
जल्हनके माहिमान भये सम्मुह सह[2] सम्भर॥
हुव आहव[3] आरंभ लगे हय[4]१गय[5]२नर३लोटन ॥
लरि दिनदिन[6] छकि लोह रत्ति[7] सुरैं[8] पटकोटन ॥
नाहर[9] नरेस जल्हन निलय[10] क्रमि निसीथ[11] भोजन करैं ॥
पुनि कछु अनेह[12] लै सब नृपन उचित मंत्र तँहँ उद्दरैं॥९८॥

दोहा

इक अमंत्र[13] सब नृप असन[14], करि समंत्र[15] कछुकाल ॥
सोवैं सिविरन[16] प्रात पुनि, जुज्झैं रचि दल जाल ॥ ९९ ॥
अचलभानु प्रतिहार इक, सो जल्हन सामंत[17] ॥
पंहु[18] मंगल कुल बैरपैं, इच्छैं सम्भर[19] अंत ॥ १०० ॥
कुल जद्दव भूपति करन१, चाँहिल[20] गोकुल चन्द२ ॥
सम्भर अग्गैं संहरे, इनके१जनक२अतन्द्र[21] ॥ १०१ ॥
सो चिंतत दोउ२न सिविर, प्रविसि छन्न प्रतिहार ॥
बुल्ल्यो अवसर बैरको, अब जिन टरहु उदार ॥
हरपाल१रु हम्मीर२हनि, भाखत तुमकों भीत ॥
तक्कहु भोजन संग तस, धिक नय[22] उभय२अधीत[23] ॥१०३॥

षट्पात्

---

१ सेना २ चहुवान सहित ३ युद्ध प्रारंभ हुआ ४ घोड़े ५ हाथी गुड़ने लगे६दिन में शस्त्रों से छककर ७ रात्रि को ८ डेरों में आजावें ९ माणिक्यराज चहुवान जल्हण के१०महलों में जाकर११आधीरात को१२कुछ समय ॥ ९८ ॥ १३ एकपात्र में सब राजा सलाह सहित सामिल १४ भोजन करके१५मंत्र सहित१६डेरों में शयन करें ॥ ९९ ॥ १७ जल्हन का उमराव १८ राजा मंगल (मंडोवर के पड़िहार मंगल को चहुवाणों ने मारलिया था उस) के वैर में १९ माणिक्यराज चहुवाण को मारना चाहता था ॥ १०० ॥ २०चाहिल जाति का क्षत्रिय. इनके पिताओं को चहुवान ने आगे २१निरालसी होकर मारा था ॥ १०१ ॥ उस बात को याद करके इन दोनों के डेरे में जाकर प्रतिहार अचलभानु ने कहा कि वैर लेने का यह समय है सो अब नहीं टलना चाहिये ॥ १०२ ॥ तुम दोनों के २२ नीति २३ पढने को धिक्कार

अचलभानु प्रतिहार भेद पटकत इन अन्तर॥
चाहिल१जद्दव२चविर्यं अवहि ताको नहिं औसर ॥
माँहि माँहिं लरि मरन बुरो नयसूरि बतावत ॥
जब टरिहै यह जवन उचित यह तब उर आवत ॥
यह कंगुरेस बांधव अखिल आये हम मिच्छन लरैं ॥
भीरकी बेर व्है अरि भनहु किम जल्हन अपकृत करैं १०४

दोहा

सबल बहुरि नृप सम्भरी, जो किम दव्यो जाय ॥
जीतैं पुनि अज्जन जवन,नीको सोहु न न्याय ॥१०५॥
अचलभानु तब उच्चरी, सिविरं रही तस सेन ॥
सद्दहु किन रजनी समय, तकि जल्हन गृह तेन ॥१०६॥
जवनेस हु यह जानिकैं,मिलि तुमकौं करि मित्त ॥
लंघि अटक जैहैं लघुंहि, चुक्कहु यह सुहि चित्त ॥१०७॥
अज्जन१जवनन२घोर इम, समर भयो दिन सत्त७॥
अचलभानु दिन अठम८हि, घल्ली खल्ल पद्द घंत्त॥१०८॥

षट्पात्

दिन हिंदुन विपरीत बहुत प्रतिहार कही जब ॥
जद्दव१चाहिल२जुगल२भये मारन तयार तब ॥
अहं लरि सब अवनीपं रत्ति आये जल्हन घर॥

है ॥ १०३ ॥ १ कहा २ बैर लेने का यह समय नहीं है ३ नीति के पंडित लोग माहोमाह लड़ने को बुरा कहते हैं ४ म्लेच्छ से लड़ने को ५ जल्हन का अपकार कैसे करें ॥ १०४ ॥ फिर यहां पर ६ चहुवान सेना सहित है सो कैसे दबाया जासक्ता है फिर चहुवाण को मार लेने से सिकंदर ७ आर्यों के घर (आर्यावर्त) को जीत लेवे सो भी उचित नहीं है ॥१०५॥ ८ चहुवाण की सेना तो डेरों में रहती है और उसको जल्हन के घर में अकेला देख कर ९ रात्रि में क्यों नहीं मारते ॥ १०६ ॥ १० शीघ्र ही चलाजावे ११ यह चूकते हो सो आश्चर्य है ॥ १०७ ॥ १२ आर्यों में और यवनों में १३ घात॥१०८॥ १४ दिन में सब १५ राजा लड़कर १६ रात्रि को

इक्क थाल करि असन[1] बैठि मंडिय रहस्य[2] बर ॥
तँहँ दृग बचाय चहुवान उर दृढ बल करन[3] कटार दिय॥
उट्ठिय समाज[4] भैचकि[5] अखिल चूक चूक जितातित चविय[6]१०९
छत[7] लग्गत चहुवान उलटि अरिमुख कर झारिय ॥
कृकं[8] समेत सिर तास मोरि प्रतिमुख[9] इम मारिय ॥
चाहिल गोकुलचंद्र गदां[10] पटकी तदनंतर[11] ॥
अचलभानु प्रतिहार भयो सम्मलि कृपान[12] कर ॥
सिर दुव[13]फिराय फोरे नृपहु गहि चाहिल१प्रतिहार२गल॥
सत अग्ग तीस१३०तिनके सुभट महत्त[14] किन्न दैदै मतल[15]११०

[दोहा]

सौधन[16] बिच हुव चूक सुनि, सबके बंधु१सिपाह२ ॥
अंदर पैठे ऐँचि[17] आँसि, रचत परस्पर बाह ॥ १११ ॥

[षट्पात्]

करन भ्रात जद्दव मुकुंद सम्मुह बढि आयउ ॥
नृप सालक[18] तोमर प्रताप हनि ताहि गिरायउ ॥
अंधकार निस[19]अतुल भयो अप्पन१पर२भान[20] न ॥
सह जल्हन सब सुपहु[21] परे गेहहि बिनु प्रानन ॥
चितांग गोर[22]१गोहिल अमर२तीजो तोमर चंद्रमानि३ ॥

१भोजन २ श्रेष्ट सलाह करने लगे ३यादव करण४राजाओं का समूह५भय से चकित होकर ६ कहा॥१०९॥७ घाव लगते ही ८ गला सहित मस्तक मरोड़ (बल दे) कर ९ उलटे मुख (पीठ पीछे) १० गुरज ११ जिस पीछे १२ तरवार हाथ में लेकर शामिल हुआ. चाहिल और प्रतिहार इन दोनों के १३ गले (कंठ) पकड़ कर फिराकर राजा माणिक्यराज ने शिर फोड़दिये और इनके एक सौ तीस सुभटों को १५थप्पड़ों की दे दे कर१४ मारडाले १६महलों में चूक हुआ सुनकर १७ तरवारें खींच कर ॥१११॥ १८ माणिक्यराज के शाले ने १९ रात्रि के अत्यन्त अन्धेरे में २० अपने पराये का ज्ञान नहीं हुआ २१ सब राजा घर में ही बिना प्राण होकर गिरे२२गोड़

उव्वरि इतेहि भोननं भंजिग इतर भूप पोढे अवनि॥११

[दोहा]

बिनु भूपन अवसेस बल, रचैं कहाँलग रारि ॥
आये आलय अप्पनैं, ते चखाय तरवारि ॥ ११३ ॥
सिद्धहि जय जवनेसकौं, दिन्नौं यह जगदीस ॥
अग्गैं आवन अहरयो, उमडि रूपपुर ईस ॥ ११४ ॥

[षट्पात्]

केदारहिं कंगुर दिवाय सुलतान सिकंदर ॥
किय सम्मुह दरकुंच धनी अज्जनं जित्तन धर ॥
लघु दिल्लियपुर लंघि अग्ग पूरबदिस आवत ॥
बहुरि अज्जनृप बहुत भये अड्डे उफनावत॥
स्फुरसेन१प्रथम सैंगरनृपति कालंजरपति रोध के
इतरहुं बुलाय ढिगके आधिप दुव२अवसर दि
कनउजपति वसुदेव२भूप रठ्ठोर सज्ज हँ॥
दतियापति रनमल्ल३भंडं भूपति ४तँहँ ॥
सूकरराज प्रताप५तोगद्दुग्गैर म ति ॥
मथुरापति मधुपाल७कुपित जुरे कति ॥
रन तुमुल मास इक१लग रह्यो दई विजय जवनन
इक संग नृपन पटके अरव भनि उपाय निप्फल भयो ॥११

दोहा

तिलतिल चढि धारन तवहि, समर भयो ॥
कालंजर जल चढ्ढिकैं, निवस्यो त्रिदिवं अनेनं ॥ १

१अपने घरों को भागे२अन्य राजा भूमि पर सोगये (मारेगये) ॥१ , २॥३
की सेना४अपने घर आये ॥ ११३ ॥ ५ वनावनाया (साधा) ॥ ११
६आर्यों की भूमि जीतकर धनी (स्वामी) होने को ७ शीघ्र ८ ६
भी समीप के राजाओं को बुलाकर १० रात्रि में सोतीहुई सेना र
मारा ॥ ११५ ॥११ नगर विशेष१२सूकरक्षेत्र का राजा१३घोर संग्राम१४
साथ घोड़े उठाये ॥ ११६ ॥१५ स्वर्ग में बास किया१६पाप रहित ॥ ११७

चालुकराज प्रताप२पुनि, नृप गोतम रनमल्ल३ ॥
तोग४बिंद ए४रनतल्प[1], ढेहि[2] सोये धरढल्लै[3] ॥ ११८ ॥

[षट्पात्]

समर[4] परत फुरसेन करत उज्जल कालंजर ॥
इक्खि[5] समय नृप इतर घेर तजि तजि पत्ते घर ॥
मरत च्यारि४महिपाल हिंदु कोउ न अड्डो हुव ॥
अज्जन[6] की अबला[7] सु भिंटि मिच्छन चंपी भुव ॥
प्रत्यंतराज[8] जयमत्त पुनि दिन कछु अंतरवेद[9] रहि ॥
तजि पुब्ब सरंनि[10] तिब्बत तरफ चल्यो पलटि दरकुंच चहि ११९
पूरब जावत पाहि लगे जब नटन नजूमी[11] ॥
मुररि गयो वह[12] मिच्छ रट्ठ[13] तिब्बत तव रूमी ॥
दिन कितेक तिहिं देस रह्यो बिहरत मृगयारंत[14] ॥
प्रचुर[15] एन[16] पुष्कलक[17] सरन बेधे बन संहत ॥
बल असह पुच्छि गणाकन[18] बहुरि जनपद[19] चीन सु जातभे ॥
इत उतहु बैठि पोतन[20] उदधि[21] दिस दिस सुगम दिखातभे १२०

[दोहा]

किते कहत दक्खिन दिसहु, पोतन[22] बिरचि प्रयान ॥
गयो सिकंदर दूर लग, इक्ख्यो उदधि अमान[23] ॥ १२१ ॥
भयकारक अग्गैं भ्रमन[24]१, बहु जलसत्व[25]२बिलोकि ॥

---

३ भूमि की ढाल थे सो२गिरकर १ रणशय्या में सोये ॥ ११८ ॥ ४ युद्ध में ५ समय देखकर६आर्यों की भूमि रूपी ७स्त्री को म्लेच्छों ने मिलकर दबाई ८ म्लेच्छ देश का राजा कुछ दिन ९ अन्तर्वेद (गंगायमुना के बीच में रहा १० पूर्वदिशा के मार्ग को छोडकर ॥ ११९ ॥ ११ ज्योतिषियों ने इसको पूर्व में जाने से मना किया तब १२ वह रूम का बादशाह मुड़ कर तिब्बत के १३ राज्य में गया १४ शिकार में रत होकर १५ बहुत १६ हरिण और १७ कस्तूरिये हरिणों (गन्धमृगों) को१८ज्योतिषियों को फिर पूछ कर १९ चीन देश में गया २० नावों में बैठकर २१ समुद्र को सुगम दिखादिया ॥ १२० ॥२२नौकाओं में बैठकर गमन करके२३अमाप (प्रमाण रहित) देखा ॥ १२१ ॥२४जल के भँवर (गोलाकार फिरना) २५ जल के जीव ॥ १२२ ॥

मग वह जान्यौं कालमुख, रह्यो सबन तब रोकि ॥१२२॥

[षट्पात्]

मुरतबेर नल इक्क[1]कांत अयमय बनवायो ॥
पारद[2] जिहिं बिच पूरि प्रथित[3] तिहिं ठाम रुपायो ॥
सालभंजिका[4] इक्क रुचिर[5] ताके सिर रक्खिय ॥
चरननसौं भुजअंत कठिन कलजंत्र[6] तत्थ किय ॥
जब आत निकट बाडवज्वलन[7] वह रसेंद्र[8] तब उच्छलत ॥
तसं[9] जोर आनि जिम जिम लगत तिम तिम पुत्तलि कर हलत ॥१२३॥

[दोहा]

यह प्रबंध करि मिच्छ वह, चलि आयउ पुनि चीन ॥
सुनी खबर तँहँ सदनकी[10], कलि[11] रूसिन जिम कीन ॥१२४॥

[सौराष्ट्री]

(दोहा)

नोसाबा जिहिं नाम, सो बेगम याकी पकरि ॥
धंकि[12] लैगो निज धाम, मुलक रूसको मिच्छपति[13] ॥१२५॥
सु सुनि सिकंदरसाह, सजवँ[14] कुंच करि चीन सन ॥
रूस अटक नदि राह, गंजन अरि नल जुतगयो ॥१२६॥
रूसी बहु हनि रारि, देस जारि करि छार[15] द्रुत[16] ॥

पीछे फिरते समय १ लोहे का मनोहर नल बनवाकर उसमें २ पारा भर दिया वह ३ प्रसिद्ध नल वहां पर रुपवा दिया उसके ऊपर एक ५ सुन्दर ४ पुतली रख दी ६ कल यंत्र लगादिया (कल का यन्त्र कहने का प्रयोजन यह है कि आप से आप चलने वाला यन्त्र) ७ बड़वाग्नि जब समीप आवे तब वह ८ पारा उफनता है ९ उस (पारे का) जोर ज्यों ज्यों लगे त्यों त्यों उस पुतली का हाथ हिलता है वह यह जनाता है कि इधर कोई मत आओ ॥ १२३ ॥ रूसियों ने रूम में जाकर ११ युद्ध किया वह अपने १० घर की खबर सुनी ॥ १२४ ॥ १२ क्रोध करके १३ म्लेच्छपति) आर्यावर्त के बाहर जितने रहनेवाले हैं उन सबको प्राचीन ग्रन्थकारों ने म्लेच्छ और यवन लिखे हैं इसी कारण से इस ग्रन्थ में भी अन्य देशवासियों के लिये ये शब्द लगाये गये हैं)॥ १२५ ॥ १४ शीघ्र ॥ १२६ ॥ १५ भस्म करके १६ शीघ्र ॥ १२७ ॥

लायो गृह निज नारि, जो प्रसारि जितत्ति जसहिं॥१२७॥

दोहा

इत संभर रानी चउ४हि, सुनि मृत नाहर१३४सूर ॥
गई त्रिदिव करि सहगमन, पति सेवन मतिपूर ॥१२८॥
भूप मुहुकर्मा१३५भयो, छंम संभर धरि छत्र ॥
सिक्ख्यो सब गुन जनक सम, मति१नय२धर्म३अमत्र१२९
किय कुकृत्य केदार जो, अभिधा धरि उपचार ॥
अनुचित कर्महिं जग अबहु, कहतजात केदार॥१३०॥
गयो जवहि जवनेस गृह, रन तव रचि अनुरूप ॥
केदारहु किन्नों कुणपं, भीम सिंधुपति भूप ॥१३१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे१ तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने माणिक्यराज१३४प्रतिशरदस्त्रोहाऽभिसरणपुनर्नीतशाकम्भरराज्यवर्द्धनद्वितीयद्वितीयाऽऽशावरी १३४।२ तृतीयजयमा१३४।३चतुर्थसीतो१३४।४पयमनप्रतिशिविरपुर१ग्रामा

---

२ सती होकर १ स्वर्ग गई ॥ १२८ ॥ ३ समर्थ ४ पिता के समान ५ पात्र ॥ १२९ ॥ लाहोर के राजा के ६ दान ने यह बुरा कार्य किया इससे ८ व्यवहार में उसी ७ नाम को धारण करके अनुचित कार्य करने में ९ केदार कहाजाता है अर्थात् अनुचित कार्य करने की अवस्था में राजपूताना में अब तक यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि "ओ केदारो क्यों कर पार जासी" इसका भावार्थ यह है कि लाहोर के राजा केदार ने सिकंदर को बुलाकर अपनी जाति का नाश किया था ऐसे यह पुरुष भी करता है अथवा केदार के समान अधम काम छेड़ा है सो कैसे पूर्ण होगा ॥१३०॥ सिकंदर अपने घर को चलागया जिस पीछे सिन्धु देश के राजा भीम ने अपने सदृश(भयंकर)युद्ध रचके केदार को भी १०मारलिया॥१३१॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में माणिक्यराज का प्रति शरद ऋतु में शस्त्र पूजा करके शत्रुओं का विजय करना, और प्राप्त हुए सांभर के राज्य को बढाना, द्वितीय विवाह में दूसरी आशावरी तीसरी जयमा चौथी सीता से विवाह करना, प्रति मुकाम पुर ग्राम आदि ब्राह्मण और चारणों को देना, अकृतव्रण मुनि का मृत के वंश को श्राप देना, और अष्टप्रकार से आराधन करके पार्वती

२ऽऽदिविप्र १ पौराणिका२ऽऽर्य्यपर्ण्णाऽकृतब्रणसूतसन्ततिशपनस मारांधितसाम्बशिवसेविततद्वृषभदत्तवरपौराणिकाऽऽर्य्यमित्रपुनः स्ववंशवर्द्धनसमाससूचनसमुपयतसीतश्वाशुर्य्यशुभशक्तदान्तलाहो-रराजकेदारमत्सारिकतद्देशचतुष्क ४ समुद्धरणजयमल्लादि ६ भूभुजङ्गनिपातनमुहुःकर्म्मा १३५ दिसम्भरकुमारदशको १० ढ्ढवनकझ्रेशजल्हणादोर्दमितपलायितकेदारसमात्तरूमयूनानिसिकन्दरमत्यन्तेन्द्रसमाव्हानसम्भर १ यादवा २ऽऽद्याऽऽर्य्यनृपजल्हणसहाय्यकरणरूमप्रेषितपरिणीतकेदारदुहितृकसिकन्दरयुद्धाऽभिसरणप्रतिहाराऽचलभानुप्रतियुद्धप्रारब्धविक्रमाऽऽर्य्यभूपसमूहभेदनकर्णगोकुलचन्द्रा२ऽऽदिभूरिभूमीशपरस्परसमापनम्लेच्छराडार्य्यावर्तसमभिसरणपुनःसंसृष्टसम्पातवहुनृपमारण १ विजयन २ कृतानेककौतुकसम्भुक्तचीनादिविषयविभवप्रकुपितगतयवनेन्द्ररूसराणनिपातनदग्धतद्देशरूपराजपत्नीप्रत्यानयनमाणिक्यराज १३४राज्ञीचतुष्क ४ सहगमनमुहुःकर्म १३५ शाकम्भराऽधिपत्यप्रापणं सप्तषष्टितमो मयूखः ॥ ६७ ॥ आदितो नवक्रोत्तरशततमः ॥१०१॥

सहित शिव की सेवा करना, और शिव के वृषभ के दिये हुए वर से पौराणिक आर्यमित्र का फिर अपने वंश को बढाने की संक्षेप से सूचना, विवाही है सीता जिसने ऐसे सुसर का शुभ करने में समर्थ और लाहोर के राजा केदार को दमन करनेवाले चहुवाण का उस (श्वसुर) के चार देशों को निकालना, जयमल्ल आदि राजाओं को मारना, चहुवान राजा के मुहुःकर्मा आदि दश पुत्रों का जन्म होना, कांगुरा के पति जल्हण के भुजों से दंडित होकर भागे हुए केदार का ले ली है रूम जिसने ऐसे यूनानी म्लेच्छ देश के पति सिकंदर को बुलाना, चहुवान और यादव आदि आर्य राजाओं का जल्हण की सहायता करना, केदार की पुत्री से विवाह करके उसको रूम भेज कर सिकंदर का युद्ध को चलना, प्रतिहार अचलभानु से युद्ध प्रारंभ करना, विक्रम का आर्यभूपों के समूह को भेदना, कर्ण गोकुलचन्द्र आदि बहुत राजाओं का परस्पर कटना (समास) होकर म्लेच्छराजा का आर्यावर्त में आना, फिर रचा है समूह जिन्हों ने ऐसे बहुत राजाओं को मारना और विजय करना, अनेक कौतुक करके चीन आदि देशों के वैभव को भोगकर क्रोध करके गये हुए यवनेन्द्र (सिकंदर) का रूस के बादशाह को मारना,

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिंदमुखरितचरणाचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटाङ्कमहाराजाऽधिराजमहारावराजेन्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽज्ञयागीर्वाणगीरादिषड्भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गकाव्याऽकूपारकर्णधारवीररसविग्रहपौराणिकवंशविरोचनचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांऽशुचण्डीदानाऽत्मजामिश्रणसुकविसूर्यमल्लविहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयो राशिः समाप्तः ॥

उसके देश को जलाकर रूपराज नामक स्त्री को पीछी लाना, माणिक्यराज की चारों रानियों का सती होना, दुःकर्मा का सांभर का पति होने का सड़सठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६७ ॥ और आदि से एक सौ नव मयूख हुए ॥

श्रीमान्, सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प संबंधी मकरंद (पुष्परस) रूप मद्य में मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण करके चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुंदीपुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्, हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्रीरामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृतभाषा आदि छै भाषा रूपी गणिकाओं के पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिये), वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के चरणारविन्द के भ्रमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारणगण के सूर्य, चण्डीदान के पुत्र मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचेहुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण में तृतीय राशि समाप्त हुआ॥

इतिश्री-नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदावारहठ-चारणकुलाऽवतंस-शाहपुरप्रतोलीपात्र-सुयोग्यपितुरऽचनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, पितृष्वाःशृङ्गारनामजनन्या:प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह किसोरसिंह- जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराज-श्यामलदासादाऽऽप्तकाव्यशिक्षेण,सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसम्पन्न-विप्रच्छिरोमणि-परमवैष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनःश्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽह्वयगुरोराऽऽसादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिप-राजाधिराजोपटङ्क नाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-

रघुवंशीय-गुहिलोत्त- मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराधीशसज्जनतादिसद्गुणस-म्पन्न-महाराणा सज्जनसिंहवर्म्म, तथैव तदुत्तराधिकारि-महाराणा-फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि- तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालक-मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ-कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां तृतीयो राशिः समाप्तः ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति धीर उदार (दातार) सोदा बारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग[दस्तूर] लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता श्रीनाहड़ (अनमू) सिंह के पुत्र , पण्डिता शृङ्गारबाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किशोरसिंह और जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमान् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणावत शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदय पुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा फतहसिंह वर्म्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यसवंतसिंह वर्मा से पाया है दान, बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में तृतीय राशि समाप्त हुआ ॥